एला-गोरस

स्याह मिथकों की रहस्यगाथा

कुमार पंकज

एल्गा-गोरस

स्याह मिथकों की रहस्यगाथा

कुमार पंकज

शालीन के लिए...

जो मेरे लिखे हरेक हर्फ़ की रोशनाई में घुली है...

आभार

एल्गा–गोरसः स्याह मिथकों की रहस्यगाथा

आभार

उन सब अपनो के प्रति, जो इस कृति के सश्जन–काल में, मेरी सर्द हथेली, अपनी गुनगुनी हथेली में थामे रहे...

उन सब पाँवों के प्रति, जो इस कृति के हरेक अक्षर, हरेक शब्द के साथ तलवों से तलवे मिलाकर चले...

उन सब अकुलाहटों के प्रति, जो इस कृति के लिए, मुझसे ज्यादा, मेरे प्रियजनों के भीतर कसमसाती रहीं...

उन सब पलकों के प्रति, जो इस कृति का, एक–एक चरण पूरा होने के लिए हर पल प्रतीक्षा में उठी रहीं...

उन सब हृदयों के प्रति, जो इस कृति की सम्पूर्णता तक, मंगलकामनाओं से भरी अपनी कलाइयाँ उठाए खड़े रहे...

प्राक्कथन

एल्गा-गोरसः स्याह मिथकों की रहस्यगाथा

बिल्कुल आरम्भ में, ये दास्तान सदियों तक काठ के कुछ संदूकों में कैद रही, जिसकी हिफाजत का जिम्मा एक संगतराश को सौंपा गया, जो लगभग तीन सदियों तक इसे नष्ट होने से बचाता रहा। जीभ की नोक से लिखी जाने वाली प्राचीन 'क्यूटिन' लिपि में इसके कुछ शुरुआती वर्क़ लिखे गए मगर बाद में इसे चाँदी की दहकती सलाइयों से मोम के चौकोर टुकड़ों पर उकेरने का फैसला लिया गया। काठ के सन्दूकों में बन्द ये दन्तकथा कभी दुनिया को पढ़ने के लिए नहीं दी गई। सदियों तक इसे 'जुबानी' ही, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपा गया। उन तमाम प्रजातियों, जातियों, वंशों और कबीलों का रहस्यमय, प्राचीन इतिहास यकीनन न लिखा जाता, यदि इसे 'अमिट' बनाने के लिए 'कैल्टिकस' की गुफाओं की दीवारों पर छेनी–हथौड़ी से न खोदा गया होता। मोम के बहुत सारे चौखटे तो नष्ट हो गए, उन पर लिखी घ टनाएँ कभी नहीं जानी जा सकीं मगर बहुत बड़ा हिस्सा वक़्त की घुन नहीं चाट सकी।

मोम के जो चौखटे बचाए जा सके, उन पर लिखे इतिहास को पथरीली दीवारों पर खोद दिया गया। रहस्यदर्शियों और स्वप्नद्रष्टाओं ने इस दास्तान को अँधेरी, खुफ़िया जगहों पर छुपा दिया था–वरना दुनिया न तो एक महान कलाकृति के स्याह मिथकों की पौराणिक युग–गाथा और योद्धाओं की उस तिलिस्मी धरती के बारे में जान पाती, जो बौनों और दानवों की गुप्त फुसफुसाहटों के नीचे कहीं दफ़न थी, न ही रहस्यवादी ताक़तों और पुरातन प्राणियों का वो करिश्माई जगत सामने आ पाता, जिसमें एक रहस्यमय 'जल–गरुड़' और 'गायब–गिद्ध' के पंखों के नीचे शताब्दियों पुराना एक दुष्ट–षडयन्त्र फड़फड़ा रहा था।

कैल्टिकस की गुफाओं में खुदे वो गुप्त मिथक पढ़कर किसी की भी पलकें जम जातीं, जिन पर उस हैरतअंगेज जंगबाज़ की दास्तान है, जो दुनिया–का–सबसे बुजुर्ग–शिशु था और उस अजीब प्राणी की बेमिसाल शक्तियाँ, जो 'लगभग–अमर' था। एक तीव्र आग्रह हमेशा ये किया गया कि उस नन्ही प्रजाति का चमत्कारिक इतिहास, कभी दुनिया को न बताया जाए, 'बौने' भी जिन्हें 'बौना' कहते थे...चूँकि ऐसा करने से इसका एक हिस्सा टूटकर गिर जाता, इसीलिए उस प्राचीन–आग्रह को नज़रअंदाज़ कर, वो सब भी लिखा गया, जो अनकहा छोड़ना था।

शायद इस दास्तान को दुनिया को पूरी तरह जानना चाहिए, यही उत्तरदायित्वबोध उन सब होठों पर हमेशा रहा, जिन्होंने किसी से भी इसका जिक्र किया। कोई भी इससे कभी मुक्त नहीं हो सका। वैसे ये जिम्मेदारी, एक रहस्यमय अहसास भी है कि आपके सीने में कुछ ऐसा अद्भुत दफ़न हो, जिसे सदियों तक खुफिया रखा गया...मगर अब शायद 'ये' सब छोड़ कर 'वो' सुनना चाहिए, जो बूढ़ा संगतराश कह रहा है...

पथहीन नक्शा

अध्याय एक

अब तो इस बात को सदियाँ गुजर गईं। जाने कितनी सदियाँ...क्योंकि पिछले तीन सौ पच्चीस सालों से तो मैं ही उस किताब की हिफाजत कर रहा हूँ, जिसमें ये दास्तान लिखी हुई है। किताब...जो मोम के हजारों चौकोर टुकड़ों पर, चाँदी की दहकती सलाइयों से उकेरी गई, जिसके कुछ शुरुआती वर्क, जीभ की नोक से लिखी जाने वाली, प्राचीन **क्यूटिन** लिपि में लिखे गए। रहस्यदर्शियों और स्वप्नद्रष्टाओं ने, जिसे सदियों तक खुफिया जगहों पर छुपा कर रखा।

किताब, जो मेरे बचपन से लेकर इस बूढ़े जिस्म तक, हमेशा साथ रही। मुझे वो दिन भी याद हैं, जब मेरी लम्बी दाढ़ी, बर्फ जैसी सफेद नहीं थी। न चेहरे पर इतनी झुर्रियाँ थीं और न ही जिस्म इतना बूढ़ा। तब मैं **कैल्टिकस** की पहाड़ियों में अकेला नहीं रहता था। इन हजारों कोस लम्बी विशाल गुफाओं की भूलभुलैयाँ में, जिनकी लम्बाई और फैलाव का पता, मैं पिछले तीन सौ बरस में भी नहीं लगा सका लेकिन गुफाओं के इस जाल में अब वो किताब भीतर तक पैवस्त हो गई है क्योंकि मेरे काँपते, बूढ़े हाथों ने, इस किताब का हरेक हर्फ और सारे अल्फाज़, इन गुफाओं की सख्त, पथरीली दीवारों पर खोद दिये हैं। जायदाद के नाम पर मेरे पास केवल चार चीजें हैं, एक लोहे की छेनी, पत्थर काटने की टाँकी, एक वजनी हथौड़ा और ऊन का बना, मोटे कपड़े का मेरा लबादा।

पत्थर तराशने का हुनर मुझे अपने पुरखों से ऐसे ही विरासत में मिला, जैसे मोम की पट्टियों पर लिखी, लकड़ी के *तीन* नक्काशीदार सन्दूकों में बन्द ये किताब, जिसकी हिफ़ाज़त का वादा मेरे पिता ने अपने पिता से किया और उन्होंने अपने पूर्वजों से। सदियों तक मैं इस किताब को सूरज से बचाता रहा क्योंकि तेज़ धूप में इसके पिघल कर बह जाने का डर था, जिसके बारे में मेरे संगतराश पुरखों ने वचन दिया कि वो इस दास्तान को आने वाली नस्लों तक हिफ़ाज़त से पहुँचाएँगे। किताब को गुफा की दीवारों पर खोदने का फ़ैसला क्यों लेना पड़ा, ये मैं बाद में बताऊँगा। फिलहाल उस कहानी की बात करूँगा, जिसकी परतों में, अपने दो सौ गुरुओं की हत्या करने वाले शागिर्द की बू तैर रही है, जो मोम की पहली पट्टी से कुछ ऐसे शुरू होती है...

घने जंगल के बीचोबीच बसा, वो छोटा–सा गाँव, उतना ही छोटा था, जितना किसी सूदखोर महाजन का दिल। *सुपारी* और *जायफल* के पेड़ों के बीच बनी, पफूस और लकड़ी की झोंपड़ियों को जंगली कोहरा ऐसे घेरे रहता जैसे परदेश जाने वाले बेटे को माँ की बाँहें। गाँव के निवासी आपस में बातें करते कि जंगल से कोसों दूर, एक बस्ती है, जिसमें लोग लकड़ी के मकानों में नहीं, पत्थर से बने घरों में रहते हैं। वहाँ आज तक केवल तीन बच्चे गए थे, जो पिछले बीस सालों से लौटकर वापस नहीं आए।

बस एक बूढ़ा फ़कीर, कभी बरसों में उस गाँव में आता, जिसकी सफेद पलकें देखने के लिए, सारे गाँव के बच्चे इकट्ठा हो जाते। गाँव के सबसे बूढ़े लोगों ने भी, फकीर को हमेशा उतना ही बूढ़ा देखा, जितना गाँव के बच्चों ने, लगता जैसे उसने *उम्रबन्ध-तावीज़* पहन रखा हो, जिसके कारण उसकी उम्र थम गई थी। लेकिन एक फ़र्क हमेशा दिखता, हर साल, जब भी वो आता, एक बरस उसका क़द पूरा होता और अगले बरस आधा रह जाता। जब उसका क़द छोटा होता, उस वक़्त वो बिल्कुल एक छोटे बौने की तरह दिखता। बूढ़ा, अपने–आप को उसी तरह बहुत तजुर्बेकार समझता, जैसा कि ज्यादातर बुजुर्ग खुद को समझते हैं।

एक बेहद अजीब बात ये थी, बूढ़ा जब भी गाँव में आता, उसके पीछे–पीछे नीले चींटों की एक कतार चलती रहती लेकिन वो कतार, हमेशा गाँव की सरहद के बाहर रुक जाती। बूढ़ा, उन्हें अपने साथ, गाँव के भीतर नहीं आने देता।

बस्ती और गाँव, दोनों के बीच जैसे एक अदृश्य–सा पुल था, जिसे बुजुर्गों ने गर्म अलावों के पास बैठकर, अपनी सुनाई कहानियों से बनाया था। कई साल पहले गाँव का एक बूढ़ा, कोहरे भरी रात में अलाव के पास बैठकर, नौजवानों

को बता रहा था–**'जिम्मेदारी कभी किसी को 'सौंपने' से पूरी नहीं होती, वो हमेशा किसी के 'स्वीकारने' से अंजाम तक पहुँचती है।'**

तभी एक नौजवान ने आकर बताया कि जंगली नदी के पास, बाँसों के झुरमुट में, *केंचुए* की एक *रूह* और एक बूढ़ी औरत रहती है, जिसके आधे जिस्म पर झुर्रियाँ पड़ी हैं और आधा जिस्म किसी खूबसूरत औरत की तरह जवान है।

किसी ने बीच में सवालिया तर्क किया *'केंचुए-की-रूह*...आधी जवान बुढ़िया?' लेकिन बाकी सबकी आँखों में अपने लिए गुस्से के भाव देखकर वो भी चुप हो गया। भीड़ से अलग होकर अपना मत देने की जुरअत, वहाँ गाँव का अनादर माना जाता। जंगल की छत पर फैली बेलें, आने वाले सालों में इतनी घनी हो गईं कि ओलों के मौसम में अब कोई ओला जमीन तक नहीं पहुँचता था। घने, फैले हुए छतरीदार, हरे पेड़ों की छत पर सफेद बर्फ की चादर बिछ जाती।

चूँकि तीनों बच्चों की माँ, उनके जन्म के कुछ बरस बाद नहीं रही, इसलिए उनकी परवरिश, पिता ने ही की थी। एक बहुत अजीब बात ये थी, तीनों के जन्म के दिन, आसमान से उल्काओं की एक बरसात हुई, जो जमीन पर पहुँचने से पहले ही जलकर राख हो गई। बच्चे जब खेलने लायक हुए, तभी से उनके पिता को लगता कि कोई है, जो लगातार उनकी *निगरानी* कर रहा है मगर इस सन्देह का कारण क्या था, ये वो खुद भी कभी नहीं समझ सका। घने जंगल के बीच बसे, उस गाँव के बाहर, कभी–कभी किसी जीव के पाँवों के निशान मिलते, जो लगते तो कछुए जैसे थे लेकिन उनका आकार इतना बड़ा होता जैसे किसी हाथी ने अपने वजन से जमीन को दबा दिया हो। इस रहस्य को कभी किसी ने इसीलिए जानने की कोशिश नहीं की, क्योंकि किसी को इसकी जरूरत भी नहीं थी।

अब तो इतने बरस निकल गए कि वो तीनों बच्चे किसी को याद भी नहीं थे। उनके जाने के कुछ दिन बाद तक तो यादों के उकाब, गाँव के हर घर के ऊपर मँडराए मगर धीरे–धीरे सब अपने घोंसलों में चले गए। बस एक बूढ़ा उन्हें कभी नहीं भूला। गाँव की सबसे शानदार और सजीली झोंपड़ी का स्वामी, गाँव का पुरोहित **संथाल**। वो तो उन्हें भूल भी नहीं सकता था, क्योंकि वो तीनों उसी के बेटे थे। संथाल को गाँव का सबसे बुद्धिमान, धर्मिक और विद्वान आदमी माना जाता।

उसी के पास अपने पुरखों से मिली हुई, ताड़ के चौड़े पत्तों पर लिखी, वो पुरानी धर्मिक किताबें थीं, जिन्हें गाँव वालों ने कभी नहीं पढ़ा था, मगर और बातों की तरह ही, यह भी माना जाता कि उनके भीतर सारे जंगल का दिव्य ज्ञान समाया हुआ है। अपने पुरखों से मिली वो किताबें, संथाल का सबसे अनमोल ख़ज़ाना थीं। गाँववाले संथाल के प्रति उतनी ही भयभीत श्रद्धा रखते, जितनी ईश्वर के प्रति। वो अपने हँसिये से अपनी गर्दन काट सकते मगर संथाल की बात नहीं। उसके प्रति इतनी इज्जत की एक और ख़ास वजह भी थी। उन्हें उन युद्धों और लड़ाइयों के बारे में जानकारी थी, जिन्हें संथाल ने अपनी जवानी में लड़ा। वो हौलनाक और हैरतअंगेज़ जंग...जिनका ज़िक्र, उनकी पुतलियों में, रोमांच के रोएँ खड़े कर देता।

गाँव में आने वाले उस फकीर ने संथाल को उन महान गुरुओं के बारे में बताया, जिनके बारे में किंवदंती थी कि वो पिछले तीन सौ पच्चीस साल से ज़िन्दा हैं। उनमें से एक दुनिया का मशहूर नुजूमी था, जो तलवारबाज़ी के हुनर में अनूठा था, जिसकी भविष्यवाणियों की धर, उसकी तलवार की तरह ही तेज़ थी। दूसरा विख्यात दार्शनिक और महान तीरंदाज़, जिसके तर्क उसके तीरों से भी अधिक नुकीले और तीखे थे और तीसरा महान संगीतकार और छुरेबाज़ी का उस्ताद।

संथाल ने गाँव में आने वाले उस बूढ़े से वादा किया कि अगर वो उसके बेटों को उस सफ़र पर सही सलामत ले जा सका और वापस ला सका तो वो उसकी रहबरी के लिए मुँहमाँगी कीमत देगा। उसकी बात पर बूढ़ा ऐसे मुस्कराया जैसे किसी सरल कबूतर ने शातिर गरुड़ को अपने घोंसले में न्यौता दे दिया हो।

गाँव के लोगों को एक बात अपने पुरखों से विरासत में मिली थी, वो सहज आदिवासी, वायदे के पक्के थे और दूसरों को भी उसी तरह समझते। उनकी नज़र में *'वचन'*, ज़िन्दगी देकर भी पूरा करने वाली चीज़ थी। वो सब कुछ कर सकते मगर अपने दिए वायदे को तोड़ने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

यही कारण था, संथाल को पूरा भरोसा था कि वो बूढ़ा, उसके बेटों को लेकर ज़रूर आएगा। उसे लगता, आख़िर हर इन्सान अपना वादा पूरा करता है, वो भी करेगा। इसमें सन्देह या शवफ की कोई बात ही नहीं थी। जंगल की धुँध, कभी उसकी बूढ़ी आँखों में बसे उस चित्रा को धुँधला नहीं कर पाई, जब संथाल बच्चों को उस बूढ़े फ़कीर के साथ, एक दबी–ढँकी पगडण्डी तक छोड़कर आया। संथाल उन चारों की पीठ तब तक देखता रहा, जब तक *अंजीर* और *बादाम* के पेड़ों ने उन्हें पूरी तरह नहीं ढँक लिया। उसे बूढ़े बौने के कहे आख़िरी अल्फ़ाज़ हमेशा याद रहे, मगर वो कभी उनका मतलब नहीं समझ पाया कि–

'लोगों की बुद्धिमानी पर हमेशा सन्देह करना, मगर उनकी मूर्खताओं पर पूरा भरोसा रखना।'

संथाल की आँखों में हमेशा वो तस्वीर तैरती रहती, जब बीस साल पहले उसने अपने तीनों बेटों को, सैकड़ों मील दूर, बस्ती के तीन मशहूर गुरुओं के पास भेजा था। पिछले सालों में एक दिन भी ऐसा नहीं था, जब वो घने जंगल के बीच गुम होती, उस पतली पगडण्डी पर जाकर न खड़ा हुआ हो, जिसके दोनों तरफ, *सर्पगन्धा* और *नागकेसर* के छोटे–छोटे पौधे थे। इंतज़ार की बारीक–बारीक मजबूत बेलों ने, संथाल के वटवृक्ष जैसे बूढ़े जिस्म को पूरी तरह जकड़ लिया। संथाल किसी दयालु कसाई की तरह एक–एक दिन काटता जा रहा था। उसे विश्वास था, वो जरूर आएँगे क्योंकि बूढ़े फकीर ने वचन दिया था कि वो उन्हें सही–सलामत वापस लेकर आएगा। फिर एक दिन, जब इंतजार पूरा करके, वो वापस अपनी गर्वीली झोंपड़ी में आया, रहस्यमयी पगडण्डी ने अपने अजगर जैसे बदन पर चढ़ी, कोहरे की केंचुली आहिस्ता से उतार दी।

अंजीर और बादाम की पत्तियों के बीच से सफेद पलकों और बर्फ–सी दाढ़ी वाला, एक बौना फकीर बाहर आया, जिसके पीछे तीन मजबूत नौजवान भी थे। तीनों युवकों के चेहरे इल्म की रोशनी से ऐसे चमक रहे थे जैसे *देवदार* के ऊँचे पेड़ों के बीच से, कभी–कभी सूरज तेजी से चमक जाता। उनकी आँखें, उस जंगल में बहने वाली नदी के पानी से भी अधिक स्वच्छ और पारदर्शी थीं। उनमें से एक का जिस्म *ताँबई* रंग का हो गया था, दूसरे का *चाँदी* की तरह सफेद और चमकदार और तीसरे की काया *सोने* की तरह दमक रही थी। तीनों के कन्धों पर मोटे कपड़े की भारी–भरकम झोलियाँ लटकी थीं, जो उनकी कमर पर बँधे कपड़े से कसी थीं।

गाँव के लोगों को काफी बाद में पता चला कि उनमें चमड़े की जिल्द चढ़ी मोटी–मोटी किताबें और भोजपत्रों पर लिखे दुर्लभ ग्रन्थ थे। कुछ किताबें तो उनमें ऐसी थीं जो लकड़ी की पट्टियों पर अजीब–सी भाषा में लिखी हुई थीं। कुछ पकी हुई मिट्टी के चपटे ठीकरे जैसे थे, जिन्हें वो तीनों नौजवान प्राचीन पुस्तकें ही बताते थे। कुछ मोम के चौकोर चौखटे, जिन पर विचित्रा से चित्रा गुदे हुए थे, जिनके बारे में गाँव वालों में कानाफूसी थी कि वो भी किताबें ही हैं, बस उन्हें चाँदनी रातों में पढ़ा जाता है क्योंकि सूरज की रोशनी में, वो पिघल जाती हैं।

उन्हें पता चला कि तीनों भाई, अपने गुरुओं के पास बेहद प्राचीन लिपियाँ सीखकर लौटे हैं। दुनिया की सबसे कठिन चित्रालिपि **गैरोगन–ग्लीफ**, जिसमें केवल बारह चित्रा थे, उन्हीं की मदद से हर शब्द और वाक्य बनता था। प्राचीन **गैडीग्लास्ट** लिपि और साथ ही **कैमीन** पठारों की लुप्त लिपि **ग्लाफ़ोरीस** और बहुत सारी दूसरी भाषाएँ भी। किताबों में गाँव वालों की ज्यादा दिलचस्पी कभी रही भी नहीं थी। उन्हें ज़्यादा अच्छी वो बात लगती, जो संथाल अक्सर कहा करता–**'किसी किताब में, चाहे जो भी लिखा हो, पढ़ने वाला वही पढ़ता है, जो वो पढ़ना चाहता है।'**

पिछली बार जब बूढ़ा फकीर गाँव में आया, उस वक़्त जिन बच्चों ने उसे देखा, अब उनके भी बच्चे हो चुके थे। मगर वो अब भी उतना ही बूढ़ा था, जितना पिछली बार। बस एक फर्क आया, आश्चर्यजनक रूप से इस बार उसका कद पहले से लगभग आधा रह गया था। वो एक बूढ़े बौने से अधिक कुछ नहीं लग रहा था, जिसकी लम्बी दाढ़ी, उसके घुटनों तक आ रही थी। गाँव वालों की हैरत भरी भीड़, उसके पीछे ऐसे चल रही थी, जैसे किसी कमज़ोर झींगुर के पीछे चींटियों का झुण्ड। यह हुजूम संथाल की झोंपड़ी के सामने पहुँचा। झोंपड़ी का टूटा–फूटा एकमात्रा दरवाज़ा बन्द था।

बौने फक़ीर ने आगे बढ़कर संथाल की झोंपड़ी का सरकण्डी दरवाज़ा भीतर की तरफ़ खोल दिया। गाँववालों ने उसके बाद संथाल को दो दिन तक झोंपड़ी से बाहर आते नहीं देखा। तीसरे दिन संथाल तीनों बेटों और फक़ीर के साथ बाहर आया। उसके गर्व के बाँस, फूलों से लदे हुए दिख रहे थे।

वो गाँव के बीचोबीच, उस ख़ाली जगह पर आया, जहाँ *मुल्तानी मिट्टी* का एक चबूतरा बना था। उसने गाँववालों की तरफ़ ऐसी दृष्टि से देखा जैसे साहूकार, क़र्ज़दार की तरफ़ देखता है। वो ताँबई रंग वाले भाई के गठीले कन्धे पर अपनी खुरदरी हथेली रख, खँखारकर बोला–

'...तो मैं अपनी बात कहाँ से शुरू करूँ? शायद यहाँ से कि ये मेरा सबसे बड़ा बेटा **जरूस** है। जो दुनिया के सबसे मशहूर, तलवारबाज़–नुजूमी से ऐसा हुनर सीखकर आया है, जिसकी मदद से ये सितारों के साथ–साथ, जंगल की रूह से भी बातें कर सकता है। ये नदियों के हाथ संदेशे भेज सकता है और हवाओं के कपड़ों से ख़त हासिल कर सकता है। जरूस, हुनरमंद तलवारबाज़ है।'

संथाल का गर्वित सीना, कामातुर मेंढक के गले की तरह फूल गया। भीड़, मन्त्राकीलित साँप की तरह जड़वत् खड़ी थी।

'...क्यों न मैं एक और परिचय सबसे करा दूँ, ये मेरा मंझला बेटा **सलार**। उसने चाँदी जैसे जिस्म वाले पुत्रा की मांसल कलाई पकड़ी' और बोला, 'ये दुनिया के सबसे महान, तीरंदाज़–दार्शनिक से जीवन के उन गहरे रहस्यों को जानकर

लौटा है, जिनकी मदद से रूहानी दुनिया से लेकर आसमानी बस्ती तक, ये हर उलझी पहेली का कवच अपने फलसफे से भेद सकता है। इसका ज्ञान सत्य के तीर में लगे तीतर के उस हल्के पंख की तरह है, जो रहस्य के मश्गछौने को पलभर में बींध सकता है। सलार, शानदार तीरंदाज है।'

गाँववालों के लिए उसके शब्द उतने ही नए और अजनबी थे, जितने उसके तीनों बेटे। संथाल ने सोनई रंग वाले बेटे को अपने बूढ़े हाथ से ऐसे थोड़ा आगे किया जैसे पहली बार मायके आई ब्याहता, अपना नौलखा हार कुँआरी सहेली के सामने रख रही हो।

'अहहा...ये **मकास** है, मेरा सबसे छोटा बेटा।' स्वर्ण–प्रतिमा से उसके बदन को भावुक गर्व से निहारते हुए संथाल ने गला साफ करके कहा। 'इसने दुनिया के सबसे हुनरमंद छुरेबाज–संगीतकार से वो जादुई संगीत सीखा है, जिसकी धुनों से ये बहती नदी को बर्फ में जमा सकता है। अपनी बाँसुरी से छोटे से बीज को कुछ ही पलों में विशाल वृक्ष में बदल सकता है और किसी भी विशाल वृक्ष को अपनी बाँसुरी की धुन से, बीज में तब्दील कर सकता है। इसका छुरा, हवा को भी काटकर लहुलुहान करने का हुनर रखता है। आज से ये सब यहीं मेरे साथ रहेंगे और पूरे गाँव को इल्म की रोशनी बाँटेंगे।'

बौने फकीर ने अपनी खरखराती हुई, रहस्यमयी, बूढ़ी आवाज में कहा, 'हम्मम...मगर तुमने मेरी रहबरी की कीमत भी देने का वायदा किया है। क्या तुम उसे भूल गए? क्या तुम भी बिना मोल चुकाए अनमोल को खरीदना चाहते हो?'

संथाल ने रौबीले ढंग से न्योछावर होकर कहा, 'बोलो, मेरे बुजुर्ग रहबर, तुम्हारी इस नरमदिली और बरसों लम्बे अहसान के लिए मैं तुम्हारे कदमों पर क्या रख सकता हूँ?'

फकीर ने संथाल के ऊपर लापरवाह नजर डालकर अपनी लम्बी–लम्बी सफेद भौंहे ऊपर चढ़ाई और दुष्टता से बोला, '...तो क्या एक महान सरदार को मुझे ये साधारण बात भी समझानी होगी कि **अहसान, अनगिन छेद वाली उस डोंगी की तरह होते हैं, जिसमें बैठकर कोई भी सुख जिन्दगी की झील के पार नहीं जा सकता।** लेकिन मेरी रहबरी की कीमत तुम नहीं, तुम्हारे तीनों बेटे अदा करेंगे।'

संथाल ने अपनी अधिकारपूर्ण हथेली बौने फकीर के झुर्रीदार हाथ पर रखी और बोला, 'तुम जो कहोगे, उसे मेरे बेटे पूरा करेंगे, ये मेरा *'कौल'* है।'

अजीब, फुसफुसाती हुई शातिर आवाज में बूढ़े ने धीरे से कहा, '...और ये महान वचन तब पूरा होगा, जब ये मेरे लिए एक सुराही ऐसा पानी ला दें, जिसमें *'गीलापन'* न हो। जब तक ये तीनों उसे नहीं ले आते, तब तक मेरी रहबरी का कर्ज इन पर बाकी रहेगा।'

जंगल का सन्नाटा इतना वजनी हो गया कि ख़ामोशी की पतली परत उसका बोझ नहीं संभाल पा रही थी। भोले आदिवासियों की भीड़ उस अजीब बौने की उलझी हुई बातें ऐसे सुन रही थी, जैसे **मैगाबोलियन** कबीले का कोई बच्चा, **अरेमिकस** भाषा की लोरी सुन रहा हो।

संथाल की बूढ़ी जबान ने केवल इतना कहा, 'वचन, *'ज़रूर'* पूरा किया जाएगा।'

फकीर के पतले होंठों पर एक बारीक–सी मुस्कान, ऐसे तैरकर गायब हो गई जैसे पानी की सतह पर तैरता, पतला **साडीन** साँप। उसकी लम्बी, सपेफद दाढ़ी के बाल, हवा के साथ लहरा रहे थे। बौने ने अपने चोगे के भीतर हाथ डाला और जब हाथ बाहर आया तो उसमें टेढ़ी–मेढ़ी लकड़ी और शीशे से बनी एक *रेत-घड़ी* दबी थी। उसने उसे एक बार उल्टा करके सीधा किया और मुल्तानी मिट्टी के चबूतरे पर रख दिया।

वो गम्भीर और रहस्य भरी आवाज में बोला, 'तो क्यों न मैं ये ज़रूरी जानकारी भी दे दूँ कि तुम्हें अपना वायदा, तय शुदा वक्त में पूरा करना होगा। इस रेत–घड़ी का एक–एक कण तुम्हारे दिए हुए वक्त में से रिस रहा है। ये रेत कब ख़त्म हो जाएगा, ये बात, न तो मैं जानता हूँ और न ही तुम्हें बताऊँगा मगर याद रखना, गुज़रने वाला हर पल, तुम्हारे हिस्से के समय में से कम हो रहा है। इसका रेत ख़त्म होने से पहले, तुम्हें अपना वादा पूरा करना है। ये एक महीने में भी ख़त्म हो सकता है और हो सकता है, दस बरस में भी न हो' उसने चलने के लिए अपनी मुड़ी–तुड़ी वज़नी छड़ी उठाई और तीनों बेटों की तरफ़ गहरी नज़र से देखा और बोला, '**पथहीन–नक़्शा** तुम्हें वहाँ तक पहुँचाएगा, मगर याद रखना, सभी नक़्शे इंसान को भटकाने के लिए शापित हैं। छेदरहित बाँसुरी बजाने वाले पाँच बूढ़े संगीतकार जहाँ मिलें, वहीं से शुरुआत करना और ये रहस्य कभी किसी को मत बताना कि तुम्हें *'किसने'* इस सफ़र पर भेजा है।'

बौना फ़कीर, *सत्यानाशी* के, पीले फूल वाले पौधों के बीच से होता हुआ, जंगली झाड़ियों के बीच गुम हो गया। सरल

गाँववालों की भीड़, बाप–बेटों की तरफ यूँ देख रही थी जैसे कोई तितली, सरकते हुए कछुए को हैरत से देख रही हो। संथाल बिना कुछ कहे तीनों बेटों के साथ झोंपड़ी के भीतर चला गया। गाँववालों को संथाल पर पूरी आस्था थी और उसे अपनी संतानों पर।

आज की रात, बहुत रहस्यमयी थी। जंगल को एक गुमनाम नीले कोहरे ने अपनी जकड़न में कस लिया। गाँव की झोंपड़ियों के बीच की खाली जगह पर, सन्नाटा धूनी रमाए बैठा था। बीच–बीच में बस किसी भेड़िये का विलाप, उस खामोशी की शान में गुस्ताखी कर जाता।

रात ने ठण्डी हवा का लबादा अपने चारों तरफ कसकर लपेट लिया। जंगल की धरती पर जगह–जगह चाँदनी की थेगलियाँ नजर आ रही थीं। संथाल की झोंपड़ी का सरकण्डी दरवाजा चरमराकर ऐसे खुला जैसे किसी बाघ ने अपने नुकीले नाखूनों से हाथी की मोटी चमड़ी फाड़ दी हो। जरूस, सलार और मकास तीनों झुककर छोटे दरवाज़े से ऐसे बाहर आए, जैसे किसी ने रात के शान्त, स्याह तालाब में तीन कंकरियाँ डाल दी हों। कोहरा, लबादेदार प्रेत की तरह जंगल के ऊपर मँडरा रहा था।

तीनों भाई एक पतली–सी पगडण्डी पर नदी की तरफ बढ़ गए। उनके कन्धों पर लटकी, मोटे कपड़े की झोलियाँ सुबह के मुकाबले बहुत हल्की थीं, जिन्हें उन्होंने कपड़े की बनी छोटी रस्सियों से, अपनी कमर से कसकर बाँध हुआ था। सलार के बलिष्ठ कंधे पर वो नक्काशीदार धनुष और तरकस टँगा था, जो बरसों से उसका साथी था।

जरूस की कमर में बँधी, *गोह* के चमड़े की एक पेटी से, उसकी दुधारी तलवार लटकी थी और मकास की कमर से बँधी, *मगरमच्छ* की चमड़ी से बनी कमरपट्टी से, बहुत सारे तेज छुरे झूल रहे थे। बाँसों के झुरमुट के पास जाकर उन्हें लगा जैसे कोई उनके आसपास ही कहीं है। एक काली परछाई उन्हें लम्बे बाँसों के बीच लहराती–सी दिखी।

चाँदी जैसी रंगत वाले सलार ने जोर से कहा, 'हम संथाल के बेटे...जरूस, सलार और मकास, तुम जो भी हो, सामने आओ। अँधेरा कभी इतना घना नहीं होगा कि भय को गोदी में छुपा सके और रात कभी इतनी काली नहीं होगी कि शंकाओं की ओट बन सके।'

सलार की बात पर बाँस ऐसे खड़खड़ाए जैसे किसी लकड़बग्घे ने हड्डी चबाई हो। एक पतली, कमजोर–सी छाया झुरमुट से बाहर निकली। छनकर आती चाँदनी में उन्होंने देखा, एक औरत उनके सामने खड़ी है, जिसके सिर से लेकर पाँव तक, आधा जिस्म किसी बेहद बूढ़ी औरत का था और आधा जिस्म इतना कसा हुआ और सुन्दर जैसे रात भर शहद में डुबोकर रखी गई, पूफल की पाँखुरी। उसके काले–सफेद, लम्बे बाल जंगल की धरती को छू रहे थे। आधे चेहरे पर अनगिन झुर्रियाँ ऐसे फैली थीं, जैसे बारिश के बाद ज़मीन पर बारीक़–बारीक़ केंचुए रेंग रहे हों।

जरूस ने सख्ती से कहा, 'तुम कौन हो, बूढ़ी औरत?'

चाँदनी कुछ गाढ़ी हो गई। उन्होंने उसके रक्तहीन–से निस्तेज होठों को हिलते हुए महसूस किया, 'कोई भी कभी बूढ़ा नहीं होता।'

वो ठण्डे स्वर में बोली, 'कोई भी आज तक बूढ़ा नहीं हुआ, फिर **यैन्गोल्डा** कैसे हो सकती है। मैंने पिछले चार सौ सालों में कभी इस धरती पर कोई बूढ़ा नहीं देखा। तुम *जो* हो, वो कभी बूढ़ा नहीं होगा और *जो* तुम नहीं हो, उसकी उम्र कुछ भी हो, क्या फ़र्क पड़ता है मगर पहले तुम बताओ, मेरी शान्ति में ख़लल डालने का अधिकार तुम्हें किसने दिया?'

'हम संथाल के बेटे...जरूस, सलार और मकास। हम छेदरहित बाँसुरी बजाने वाले पाँच संगीतकारों से मिलने निकले हैं। हमें एक सुराही पानी चाहिए, जिसमें गीलापन न हो।' जरूस ने उसकी तरफ़ देखा।

'बाँसुरी हवा से नहीं, हृदय से बजती है और उसी से सुनी जाती है, क्या तुम्हारे दिल इतने पाक हैं कि तुम छेदरहित बाँसुरी का संगीत सुन सको। तुम किताबी–इल्म से भरे हुए संदूक जैसे हो।'

मकास ने जवान बुढ़िया के लम्बे बालों में चिपके, कुछ चमकते जुगनुओं को ग़ौर से देखा और बोला, 'मैं संथाल–पुत्रा मकास, किसी भी रूह के सबसे अँधेरे कोनों में झाँक सकता हूँ। मैं साफ़ देखता हूँ कि तुम्हारी रूह रोशनी से इस तरह लबालब भरी है जैसे किसी दिये की लौ के बाहरी किनारे। ओ बुजुर्गवार! हमें हमारे सफ़र के सही इशारे दो, हम तुम्हारे अहसानमंद होंगे।'

यैन्गोल्डा ने अपनी चाँदी–सी चमकदार पोशाक को झटका और एक चमकीला जुगनू छिटककर, पौधों पर जा गिरा।

'तुम्हारी ज़बान तुम्हारे पिता की कसैली ज़बान से ज़्यादा मीठी है। लफ़्ज़ किसी भी दिल की खिड़कियों को खोल सकते हैं और बन्द कर सकते हैं। मैं उन पाँच बूढ़े संगीतकारों का पता जानती हूँ, मगर तुम्हें वहाँ तक केवल

पथहीन–नक्शा पहुँचा सकता है। लेकिन हर नक्शा, भटकाने के लिए अभिशप्त होता है। वहाँ तक पहुँचने के रास्ते पर झूठ जगह–जगह अपनी प्याऊ लगाकर बैठा है, तुमने अगर उसका एक घूँट पानी भी पी लिया तो तुम हमेशा के लिए, **कीलीस** नाम की पहाड़ी छिपकली में बदल जाओगे, जिसकी टाँगें हिरन जैसी हैं और पूँछ ऊदबिलाव जैसी। फिर तुम जीवन भर बस मरीचिकाओं के पीछे दौड़ते रहोगे।'

सलार ने दो कदम आगे बढ़कर उसके झुर्रीदार कमज़ोर हाथ को अपनी आँखों से लगाया और बोला, 'ओ खूबसूरती की परछाई! मैं संथाल का बेटा सलार, क्या तुम हमें बताओगी कि तुम बाँसों के इस झुरमुट में क्यों छिपी हुई हो?'

यैन्गोल्डा की बूढ़ी और जवान, दोनों आँखों से आँसू की एक–एक बूँद ढलक गई।

'आह...संथाल के अक्लमंद बेटो! अल्फाज़ों की पोशाक के नीचे, हर दर्द लगभग गूँगा ही होता है। पिछले कुछ सालों से मैं सारी दुनिया से छिपकर यहाँ बाँसों के झुरमुट में रहती हूँ। एक दुष्ट बौना, जो मुझसे अपना एक शाप दूर कराना चाहता था, मेरे इन्कार करने पर उसने अपनी रूहानी ताकत से मुझे आधा बूढ़ा और आधा जवान बना दिया और इस झुरमुट में रहने के लिए शापित कर दिया। मैं जब भी इन बाँसों से निकलने की कोशिश करती हूँ, मेरे लम्बे बालों को ये बाँस जकड़ लेते हैं। आज पूर्णमासी की रात है, मेरी दोस्त, *केंचुए-की-रूह*, चाँदनी में बाहर नहीं निकल पाती, इसलिए आज वो यहाँ नहीं है, वरना वही मेरे लिए कुछ खाने का इंतज़ाम करती है।'

'ओह...' मकास के होठों से निकला।

'हम तुम्हारे लिए कुछ *ज़रूर* कर सकते हैं।' जरूस ने मकास की तरफ़ देखते हुए कहा।

सोने जैसे रंग वाले भाई ने झोले के भीतर अपना हाथ सरकाया और उसकी बाँसुरी उसकी उँगलियों वेफ बीच आ गई। यह बहुत अजीब–सी बाँसुरी थी। सीधी नहीं, टेढ़ी–मेढ़ी, तिरछी...लगता जैसे बाँस की न होकर किसी पेड़ की मुड़ी–तुड़ी जड़ की बनी हो।

उसके होंठ बाँसुरी पर टिक गए और उसकी बारीक और मीठी जादुई धुन, हवा के कालीन पर सवार होकर आहिस्ता–आहिस्ता जैसे सारे जंगल को अपने आग़ोश में लेने लगी। मदहोशी, अपने भीतर का एक–एक बूँद सत्त्व उड़ेलकर रख देना चाहती थी। दोनों भाइयों को ऐसा लग रहा था जैसे बाँसुरी का स्वर उनके दिलों को रेशम की रस्सियों में बाँधकर धीरे–धीरे बाहर खींच रहा हो। उस सम्मोहक धुन ने, उनके पूरे वजूद को विशाल **ग्रिपिस** अजगर की तरह निगल लिया।

लम्बे–लम्बे बाँस, हैरतअंगेज़ ढँग से छोटे होते जा रहे थे। खड़–खड़ की आवाज़ जंगल की शान्ति को भंग कर रही थी। घटते–घटते बाँस इतने छोटे हो गए कि वो अब यैन्गोल्डा के कन्धे तक ही रह गए। उसने हैरत भरी नज़रों से मकास को देखा। कुछ ही पलों में बाँस के ढेर सारे बीज, यैन्गोल्डा के पाँवों के पास पड़े हुए थे, झुरमुट ग़ायब हो चुका था।

यैन्गोल्डा की आँखें, अमरता देने वाले शर्बत, **ब्रोसेनिया** से भरे, दो पारदर्शी प्यालों की तरह दिख रही थीं। वो अब पूरी तरह आज़ाद हो चुकी थी, उसके ज़मीन को छूने वाले लम्बे बाल जैसे आज़ादी की हवा में साँस ले रहे थे। खुशी, उसके चेहरे पर शामियाने और झालरें लगा रही थी। धीमी आवाज़ में अपना परिचय देने के लिए उसने मुँह खोला मगर एक पैर वाले **स्लॉपी** झींगुरों की आवाज़ ने उसकी आवाज़ दबा दी।

जरूस अदब से, थोड़ी तेज़ आवाज़ में बोला, 'मैं संथाल–पुत्रा जरूस, मैंने दुनिया के सबसे मशहूर, तलवारबाज़–नुजूमी से ऐसा हुनर हासिल किया है, जिसकी मदद से मैं सितारों के साथ–साथ, जंगल की रूह से भी बातें कर सकता हूँ, नदियों के हाथ संदेशे भेज सकता हूँ और हवाओं के कपड़ों से ख़त हासिल कर सकता हूँ मगर सितारों से बात करने के बाद भी मैं *पथहीन-नक़्शे* का पता नहीं लगा पा रहा। जंगल की रूह जिस भाषा में फुसफुसा रही है, वो मेरे लिए बिल्कुल अन्जान है। आसमान पर जो इबारतें उभर रही हैं, उनके हर्फ़ मेरे लिए उतने ही अजीब हैं, जितना गाँववालों के लिए मेरे पिता की झोंपड़ी में रखी *ताड़* के पत्तों पर लिखी प्राचीन किताबें। हवाओं के कपड़ों से मिले ख़त की लिपि, मुझे उतनी ही अजनबी लग रही है, जितना किसी लुहार को ज्योतिष–विद्या का कालचक्र–यन्त्रा।'

जंगल की पूरी चादर पर चाँदनी बिछ गई। बस उस पेड़ के नीचे परछाई का अँधेरा था, जिसके नीचे वो चारों खड़े थे। दूर किसी सियार की आवाज़ ने उन्हें ये अहसास कराया कि वो अकेले नहीं हैं।

यैन्गोल्डा के मोतिया दाँत, उसकी हल्की–सी मुस्कराहट से दिखे, वो मख़मल–सी मुलायम आवाज़ में बोली, 'तुमने मेरी मदद की है संथाल के बेटों, मगर पथहीन–नक़्शा उतना ही दूर हो जाता है, जितना उसे ढूँढने की कोशिश होती है। उसे पाने से पहले तुम्हें उसकी खोज बन्द करनी पड़ेगी।'

मकास के सपाट चेहरे पर कोई भाव नहीं आया। उसने सावधानी से पूछा, 'फिर हम उसे कैसे हासिल करेंगे?'

काले–सफेद बालों वाली जवान–बुढ़िया ने अपनी दोनों हथेलियाँ आपस में रगड़ी और बोली, 'हासिल करने की जरूरत नहीं, क्योंकि वो पहले से ही तुम्हारे पास मौजूद है। मगर वो उसी तरह छिपा रहता है जैसे चाँदनी से नहाए पेड़ के नीचे का अँधेरा।'

तीनों भाइयों की ख़ामोशी का पतंगा, यैन्गोल्डा की आवाज़ की गरम लौ में भभक कर मर गया, **'तुम्हारे पाँव के तलवों की सतह पर गुदा नक़्शा तुम्हें मंजिल तक लेकर जाता है, जिसे तुम्हारे भीतर की चाह रास्ता दिखाती है। जिन रास्तों और मंजिलों तक तुम्हें जाना है, वो सब पहले ही तुम्हारे तलवों में छाप दिए गए हैं मगर ये बेरहम चेतावनी याद रखना, यह *'तक़दीर'* या *'क़िस्मत'* कतई नहीं है।'**

सलार ने कुछ कहने के लिए अपने होंठ खोले, लेकिन यैन्गोल्डा ने उसे रोक दिया, 'पथहीन–नक़्शा हम सभी के पास होता है। हमारे पाँवों में हमारे जीवन की हर मंज़िल के दस्तावेज मौजूद हैं। लेकिन हम अपने पाँवों में खुदे नक़्शे की जगह, हाथों में थमे नक़्शे पर भरोसा करते हैं। उस आदिम–चाह की पुकार को हमेशा अनसुना, अनदेखा करते हैं, जो एक पागल सम्मोहन की तरह, हर समय हमें मंजिल की तरफ खींचती रहती है।'

जरूस ने ताँबे जैसी रंगत वाले, अपने बदन को हल्की–सी जुम्बिश दी और गम्भीरता से उसकी तरफ देखा। वह धीरे से मुस्कराई और अपनी बात जारी रखी, 'संथाल के बहादुर और अक़्लमंद बेटो! ये पथहीन–नक़्शा ही है, जो खुद तुम्हें बाँसों के इस झुरमुट तक लेकर आया, **जो पथहीन–नक़्शे को पढ़ना सीख जाते हैं, उनके रहबर केवल उनके पाँव होते हैं और जो इसके अल्फ़ाज़ों को नहीं समझते, वो जिन्दगी भर दूसरों के तलवे में गुदे नक़्शों का पीछा करते रहते हैं। मगर भूलना मत, हर नक़्शा भटकाने के लिए शापित है, चाहे वो किसी दुष्ट व्यक्ति ने तुम्हे सौंपा हो या किसी महान आत्मा ने।'**

मकास का एक हाथ मोटे कपड़े की उसकी झोली के भीतर था। रेत–घड़ी पर उसकी पसीने से भीगी हथेली की पकड़ सख़्त हो गई। दिलवफ़श आवाज़ में यैन्गोल्डा ने मकास से कहा, 'मैं तुम्हारी रूह के भीतर झाँक सकती हूँ मकास... मगर ग़ौर से सुनो, ये रेत–घड़ी केवल तुम्हारी हथेली में नहीं दबी है। ये पिछले चार सौ सालों से मेरी हथेली में भी दबी है, तुम्हारे पिता, तुम्हारे भाई, वो तीन बूढ़े फ़कीर, जिनसे तुमने इल्म की रोशनी हासिल की है, तीन सौ पच्चीस साल से उनकी झोली में रखी है। जिन ज़िन्दा लोगों से तुम मिल चुके हो और जिनसे अभी मिलना बाक़ी है, वो सब महज एक चलती–फिरती रेत–घड़ी हैं, जिसका रेत, एक–एक कण करके रिस रहा है।'

जंगल की ख़ामोशी को अब केवल उस जवान–बुढ़िया की आवाज़ तोड़ रही थी। तीनों भाई इस तरह सब कुछ सुन रहे थे जैसे उसके एक–एक लफ़्ज़ के पानी को उनके जिस्म का रेगिस्तान पी जाना चाहता हो। यैन्गोल्डा के चाँदी जैसे बालों से अब एक दूधिया रोशनी फूटने लगी। ऐसा लगा जैसे आहिस्ता–आहिस्ता वो चाँदनी में घुलती जा रही हो। वो एक पल के लिए रुकी और दोबारा बोली, 'जाओ, छेदरहित बाँसुरी बजाने वाले पाँच बूढ़े संगीतकारों को खोजो। अगर तुम वाक़ई उन्हें खोज रहे हो, तो पथहीन–नक़्शा तुम्हे वहाँ तक पहुँचा ही देगा।'

यैन्गोल्डा का जिस्म अब पूरी तरह चाँदनी में घुलता जा रहा था। एक दूधिया रोशनी ने उसके पूरे वजूद को पीना शुरू कर दिया। अब उसके जिस्म के आरपार पीछे खड़े पेड़ साफ़ दिखने लगे। उसके आख़िरी अल्फ़ाज़ उनके कानों में पड़े, 'अपनी रूह की आवाष अनसुनी मत करना, क्योंकि जिसे तुम अनसुना करते हो, वो भी तुम्हे अनसुना करने लगता है। कोई है, जिसने अपने साथियों को धेखा दिया है और अपने दो सौ गुरुओं की हत्या की है, वो तुम्हें भी धेख़ा देकर अपना मक़सद हल करना चाहता है, उससे होशियार रहना। मैं उसकी मौजूदगी महसूस कर रही हूँ।'

पास खड़े *एरण्ड* के पेड़ पर, वो छोटे–छोटे चमकदार जुगनू मँडरा रहे थे, जो कुछ देर पहले यैन्गोल्डा की सफ़ेद पोशाक पर चिपक कर उसे हल्का–हल्का रोशन कर रहे थे।

उस रात के बारे में गाँव वाले अक्सर आपस में बरसों तक बातें करते रहे। कुछ लोग कहते कि सबसे बड़े भाई जरूस ने यैन्गोल्डा से विवाह कर लिया और बाक़ी दोनों भाई छेदरहित बाँसुरी बजाने वाले पाँच बूढ़े फ़क़ीरों की तलाश में पहाड़ों की तरफ़ निकल गए। कुछ का ये कहना था कि यैन्गोल्डा ने उस रात उन्हें तीन जोड़ी जूते दिए, जो जूँओं के बालों में रहने वाली, **कैलोकच** नाम की नन्ही जूँ की, पतली ख़ाल से बने थे। वो तीन जोड़ी जूते तीनों भाइयों को उन पाँच फ़क़ीरों तक पल भर में ही ले गए लेकिन ये सब अफ़वाहें थीं, कोरी अफ़वाहें।

सच तो ये था, उस रात के बाद उनके रहस्यमय सफ़र की बस शुरुआत हुई थी। यैन्गोल्डा ने उन्हें बस सही रास्ता बताया और पथहीन–नक़्शे की उनकी तलाश को पूरा किया। जूते उसने उन्हें ज़रूर दिए, मगर वो कैलोकच की खाल से

बने हुए नहीं थे, बल्कि लोहे के बने थे, बर्फ–सी ठण्डी *लौह-पादुका,* जिन्हें पहनकर किसी रेगिस्तान, जमीन, पहाड़ या पठार पर सफर करना, अपने पैरों को बैसाखी का मोहताज बनाने जैसा था।

उस रात, जब यैन्गोल्डा वहाँ से गायब हो गई, ताँबई रंग वाले जरूस ने जंगल की रूह से बात की। घने जंगल में कोसों दूर तक फैली मोटी–मोटी बेलें और जमीन के भीतर गहराई तक गई हुई जड़ें, जैसे सब जिन्दा होकर धड़कने लगीं। पल भर के लिए जैसे सारा जंगल साँस लेने लगा। एक ऐसी अजीब–सी भिनभिनाहट हर पत्ते, हर तने के भीतर से आ रही थी, जो बाकी दोनों भाइयों ने पहले भी कई बार सुनी थी और जरूस तो उन आवाजों को बहुत बार, उस बूढ़े फकीर के साथ सुन चुका था, जिसने उसे वो हुनर सिखाया था।

फिर एक फुसफुसाती हुई आवाज़ उसके कानों में पड़ी, जैसे हवाएँ उसके कानों में सरगोशियाँ कर रही हों, जैसे एक साथ सैंकड़ों रूहें उसके कानों के पास इकट्ठा हो गई हों।

'ज...रू...स! ज...रू...स'

वो आवाज़ जरूस को ऐसी लग रही थी जैसे किसी पातालतोड़ कुएँ की तली में बैठकर, कोई प्राचीन पुरोहित, **मायाना** मन्त्रों का जाप कर रहा हो। फिर आवाजों के उस रेवड़ के बीच उसे कुछ सुनाई दिया–

'नदी के घोड़े पर लगाम कसो, बर्फ़ की रकाबों में अपने पाँव फँसाओ, लकड़ी की काठी पर सवार हो मगर चाह का चाबुक अपने हाथों में रखना।'

उसके बाद वो अजीब भिनभिनाहट और सनसनाहट की आवाज़ बढ़ती चली गई। फिर एक झटके के साथ सब ऐसे शान्त हो गया जैसे भिनभिन करते किसी बड़े भौंरे को अचानक, किसी गिद्ध ने सटक लिया हो।

'हमें तेजी से सफ़र पर जाना होगा। रेत–घड़ी साँसों से तेज़ चलती है।' जरूस ने दोनों भाइयों की तरफ़ देखकर कहा।

'मगर किस दिशा में?' सोने जैसे रंग वाले मकास ने पूछा।

'जंगल की रूह ने अपना संदेश दे दिया है। हमें नदी के रास्ते आगे बढ़ना होगा मगर पानी पर तैरकर या कश्ती से नहीं।' जरूस ने ठहरे हुए स्वर में उत्तर दिया।

'तो सफ़र पर निकल पड़ो।' सलार की आवाज़ अपने पिता की तरह शान्त लग रही थी।

मकास ने बाँसुरी को अपने होठों पर टिका लिया और फिर दोनों भाइयों ने वो देखा, जिसके बारे में उन्होंने केवल अन्दाज़ा लगाया था या बस सुना था। नदी की सतह बर्फ़ में तब्दील होने लगी। चाँदनी रात में वो सफ़ेद बर्फ़ की दूधिया चादर की तरह लग रही थी। पूरी नदी जमती जा रही थी। बर्फ़ के चटखने और जमने की आवाज़ जंगल की खामोशी के दरवाज़े पर हौले–हौले थाप दे रही थी।

तीनों भाइयो ने अपने–अपने जूते निकालकर अपनी कपड़े की झोली में रख लिए और यैन्गोल्डा की दी हुई लौह–पादुका अपने पैरों में पहन लीं। लोहे की सर्द छुअन, उस ठण्डी रात में उनकी रीढ़ की हड्डी तक को सिहरा गई। उन्होंने अपने मोटे ऊनी लबादे कसकर अपने बदन से लपेट लिए और जमी हुई बर्फ़ीली नदी के ऊपर खड़े हो गए। सबसे पहले जरूस ने मकास का हाथ मज़बूती से पकड़ा और फिर मकास ने सलार की बाँह में अपनी बाँह कसकर लपेट ली।

'क्या तुम बता सकते हो, उसने ऐसा क्यों कहा–'कोई है, जिसने अपने साथियों को धोखा दिया है और अपने दो सौ गुरुओं की हत्या की है, वो तुम्हें भी धोखा देकर अपना मक़सद हल करना चाहता है?' सलार ने बारी–बारी से दोनों की तरफ़ देखते हुए पूछा।

'शायद नहीं...' जरूस ने बेपरवाही से उसकी बात का जवाब दिया।

सलार ने इस उम्मीद में सबसे छोटे भाई की तरफ़ देखा, शायद वो उसे इस बात का जवाब दे सके लेकिन उसने बिना कुछ कहे इन्कार में गर्दन हिलाई।

सर्द हवा, उनके चेहरों को ऐसे छूकर गुज़र रही थी जैसे किसी जलपरी की पूँछ, पानी में उगी **हाइयासिन्थ** घास को छूती है। बर्फ़ की सफ़ेद चादर पर संथाल के तीनों बेटे आगे फिसले और फिर उनकी गति बढ़ती ही चली गई। उनकी लौह–पादुकाओं की रगड़ से बर्फ़ के बारीक़–बारीक़ क़तरे ऐसे उड़ रहे थे जैसे बढ़ई के रन्दे से, लकड़ी का बुरादा। इस सफ़र पर वो लगातार चलते रहे। दिन को वो पैदल सफ़र करते और रात को लौह–पादुकाओं पर। इस बीच खाने के लिए **बैक्टिन** मधुमक्खी के एक छत्ते के सिवा उन्हें वुफछ नहीं मिला।

लकड़ी के तीन सन्दूकों में बन्द, इस किताब के हर वर्वफ को, मैं कैल्टिकस की गुफाओं की पथरीली दीवारों पर खोद

रहा हूँ। मोम की इन चौकोर पट्टियों को मैंने सदियों तक बहुत हिफाज़त से रखा। कुदरत ही शायद इस दास्तान को लोगों तक पहुँचाना चाहती है। संथाल के बेटों से ज़्यादा, मैं इस किस्से के बारे में जानता हूँ क्योंकि उन्हें तो पता तक नहीं था कि आने वाले दिनों में क्या–क्या होने वाला है। लेकिन मुझे इसका हर शब्द ज़बानी याद है। उन ख़तरों के बारे में भी, जिनकी उन्हें भनक तक नहीं थी और उन प्राणियों के बारे में भी, जिनसे उन्हें अभी मिलना है।

मैं उन्हें, हवा में सैंकड़ों गज़ ऊपर लटकी, उन झोंपड़ियों में भी देख पाता हूँ, जिनका ज़मीन से कोई वास्ता नहीं था और अँगूठे के आकार के, उन प्राणियों के पवित्रा भाले की चुभन, अपने नाखून के नीचे महसूस कर सकता हूँ, जो खुद के लिए *'मैं'* नहीं *'तुम'* शब्द का इस्तेमाल करते थे। जिन्होंने संथाल के बेटों को उन **केश–वृक्षों** से बचाया, जिनके शिकंजे में फँसने पर, हड्डियाँ तक चूस ली जातीं।

मेरी छेनी की धार अब कुछ कुन्द हो गई है, इसलिए कुछ पश्ष्ठों को पत्थर पर खोदने में कई दिन लग गए। ये वो पट्टियाँ हैं, जिन पर संथाल के बेटों की उस हौलनाक मुठभेड़ का ज़िक्र है, जो उससे हुई, जिसकी आँखों में देखने वाले का सम्मोहन, मौत के बाद ही टूटता। वो चौखटे, जिन पर लिखा है *'उनके'* बारे में, जो झुण्ड बनाकर, अपने ही जीवित साथी के *पेट* में रहते।

साथ ही वो भी, जिन्होंने रेत–विद्या को इतनी गहराई से हासिल किया कि विशाल रेगिस्तान भी, उनकी उँगलियों के इशारे पर ऐसे नाचते, जैसे किसी खिलन्दरे बच्चे के चाबुक पर, लट्टू। उन बहादुर युवकों के सफर का वो हिस्सा, जिसे सोचकर ही, मेरा बूढ़ा कलेजा ऐसे लरजने लगता है, जैसे हाथी के पाँव के नीचे दबी गिलहरी का दिल।

पाँच बूढ़े फ़क़ीर

अध्याय दो

'बर्फ की सतह के नीचे, एक **जल–गरुड़**, हमारा *आगा* कर रहा है।' तीसरी रात, जरूस ने बर्फ की मोटी और चमकीली परत के तले बहते, नदी के पानी पर नजर गड़ाकर कहा।

जिस तेज रफ़्तार से संथाल के तीनों बेटे बर्फ के कालीन पर सफर कर रहे थे, कोई भी नौका, पानी पर उससे तेज़ नहीं ले जा सकती थी। चौदह शिलाओं को एक साथ काट देने वाली, प्राचीन **टैलासोल्ट** तलवार की तरह, हवा उनके चेहरे चीरने को व्याकुल थी। नदी के दोनों तरफ जंगल इतना घना था कि उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे किसी अँधेरी सुरंग में तेजी से बहे जा रहे हों।

'वो शुरू से ही हमसे आगे–आगे बर्फ के नीचे चल रहा है।' मकास ने उड़ते हुए अपने लम्बे बाल चेहरे से हटाकर धीमी मुस्कराहट के साथ कहा।

'जल–गरुड़ उन तरंगों को महसूस कर सकते हैं, जो हमारे वज़न और रफ़्तार की वजह से हमसे सैंकड़ों गज़ आगे चलती हैं। वो पानी में उससे भी तेज़ उड़ सकते हैं, जितना कोई जलपरी तैर सकती है।' सलार ने हवा में फड़फड़ाते अपने लबादे को खुद से कसकर लपेटते हुए कहा।

तीनों भाइयों की मोटे कपड़े की झोलियाँ, हवा भर जाने के कारण फूलकर दोगुनी हो गईं।

'ये परिन्दा खुद ऐसा नहीं कर सकता। रात के इस वक़्त, जब सारे पंखदार, पेट की गर्मी से अपने चितकबरे अण्डों को गर्म कर रहे होंगे, तब ये क्यों *लैट्यूस* के पौधों से बने अपने घोंसले से बाहर है?' जरूस हवा में उड़ती अपनी फूली हुई झोली को खुद से चिपकाते हुए बोला।

वो अब तक बहुत दूर निकल आए थे। दूर काले आसमान में सुबह के सूरज की इतनी हल्की लाली नज़र आ रही थी जैसे किसी गुबरैले के काले पंखों के नीचे, पतली–सी सुर्ख रक्त–धमनी। सर्द हवा, उनकी हड्डियाँ जमा देने के लिए रस्सियाँ तुड़ा रही थी। नदी के किनारों पर *नरसल* के झुके हुए पौधे अब काफी पीछे छूट चुके थे, उनकी जगह अब इतने घ ने और ऊँचे पेड़ों ने ले ली, जो पेड़ कम, बेलों और लताओं का काला जाल अधिक लग रहे थे।

तभी मकास को अपने से लगभग बीस गज़ दूर, एक भारी–भरकम पेड़ का तना, नदी के ऊपर से होकर दूसरी तरफ़ तक गया हुआ दिखा। बर्फीली सतह से वो बस थोड़ा ही ऊपर था। इससे पहले मकास चीखकर उन्हें सचेत कर पाता, या वो अपनी रफ़्तार को रोक पाते, तीनों पूरी ताक़त से उससे टकराए। उसके बाद उन्हें कुछ याद नहीं रहा। अँधेरे ने उनके ज़ेहन को ऐसे दबोच लिया जैसे विशाल **मैसोडा–मोडस** पक्षी, अपने पंजों में हाथी को दबोचकर उड़ जाता है।

जब मकास की आँखें खुलीं, तो *गोखरू-घास* के ऊपर पड़ा, उसका सोने–सा सुनहरा बदन धूप में दमक रहा था। उसने मिचमिचाकर चारों तरफ़ देखा, दीमक की एक ऊँची बाँबी के पास, सलार और जरूस के बेसुध जिस्म पड़े दिखे। सूरज कई बाँस ऊपर चढ़ गया था। पता नहीं क्यों, उसे ऐसा लगा जैसे कोई छोटा मगर वज़नी कीड़ा, उसके जिस्म पर चल रहा हो।

उसने अपने बदन पर निगाह दौड़ाई मगर कहीं कुछ नहीं दिखा। उसे अपने बेहोश होने से पहले की घटना याद आई। पेड़ के उस भारी–भरकम तने से बचने के लिए वह *'बचो'* भी नहीं कह पाया था। जब तक कोई कुछ कर पाता, तेज़ टक्कर हो गई। वह लड़खड़ाता हुआ दोनों भाइयों के बेहोश जिस्मों तक पहुँचा। लोहे के भारी जूते उसके पैरों में शिकंजे की तरह गड़ रहे थे। मकास, घास पर उनके नज़दीक बैठ गया।

तीनों की मोटे कपड़े वाली झोलियाँ, यूँ हरी दूब पर पड़ी थीं, जैसे छत्ता टूटने के बाद मधुमक्खी के अण्डे। उसने

ताँबई रंग वाले भाई का गठीला बदन अपनी गीली हथेली से हिलाया, 'जरूस...जरूस।' और आहिस्ता से उसके पैरों में कसी लौह–पादुकाएँ उतारकर एक तरफ रख दीं। यही सलार के साथ भी किया। इस कोशिश में वो दोनों कराहते हुए उठ बैठे। मकास को फिर ऐसा लगा जैसे कोई छोटी–सी चीज़ दौड़कर जरूस के लबादे की जेब में घुसी हो मगर दिखाई कुछ नहीं दिया।

नदी का साफ़ पानी अपनी पुरानी गति से बह रहा था। वो किनारे तक पहुँचा और खोंच भरकर पानी पिया। *वाटर-लिली* के थाल से चौड़े पत्ते में पानी भरकर, वो वापस लौटा। दोनों भाइयों ने गटागट सारा पानी निपटा दिया। हरी घास में पड़ी अपनी झोली उसे हिलती–सी लगी तो उसने गौर से देखा। कहीं कुछ नहीं दिखा, लेकिन तीन–तीन बार तो वहम नहीं हो सकता। उसने जरूस और सलार की झोलियाँ उठाईं और दीमक की उस ऊँची बाँबी के पास टिका दीं।

कुछ दूरी पर उसे अजीब पेड़ों का विशाल जंगल नज़र आ रहा था। ऊँचे–ऊँचे पेड़ों से, ज़मीन तक लम्बे–लम्बे केश लटके हुए थे। पत्तों की जगह, हर डाल से केवल काले, घने बाल लटक रहे थे। लता जैसे उन केशों के बीच से जाती एक–दो छोटी पगडण्डी नज़र आ रही थी।

'ये तो पूरा भूलभुलैयाँ है।' सलार ने पेड़ों से लटकते केशों की तरफ़ आश्चर्य से देखते हुए कहा।

'हर भूलभुलैयाँ का निकास–द्वार उसके प्रवेश–द्वार के नज़दीक ही होता है, बशर्ते उसे खोजने की अन्तर्दृष्टि मौजूद हो।' मकास, तीनों लौह–पादुकाएँ झोली के अन्दर रखते हुए बोला।

'नज़दीकी ही देखने में सबसे बड़ी रुकावट होती है। आँख की पुतली कभी बिना आईने के पलकों को नहीं देख पाती।' सितारों का माथा पढ़कर भविष्यवाणी करने वाले, ताँबई बदन जरूस ने कहा।

बोलते–बोलते मकास एक पल के लिए ठहरा और उसने तेज़ी से लपक कर अपनी मोटे कपड़े की झोली के ऊपर अपनी हथेली ऐसे रखी जैसे उसके नीचे कुछ चल रहा हो और उसने उसे दबोच लिया हो। उसने कसकर अपनी दोनों हथेलियाँ कपड़े पर दबा लीं, जिसके नीचे से अजीब–सी बारीक़–बारीक़ ऐसी आवाज़ें आ रही थीं जैसे कोई बच्चा नाक में बोल रहा हो।

सलार और जरूस ने ताज़्जुब से उसे देखा, आख़िर वो कर क्या रहा है। मकास ने झोली का कपड़ा हटाया, उसने अपनी तर्जनी उँगली और अँगूठे के बीच, छोटा–सा कुछ दबा रखा था, जो बार–बार छूटने की कोशिश कर रहा था। वो लगभग अँगूठे के आकार का था। एक **सेण्टीड्राफ़**, जिसका कमर से नीचे का हिस्सा कनखजूरे का और कमर से ऊपर इंसान जैसा था। वो अपनी अजीब भाषा में, पता नहीं क्या–क्या चिल्ला रहा था।

उसके कनखजूरे जैसे छोटे–छोटे लिजलिजे पैर, मकास के अँगूठे में चिपक कर गड़ गए। उसने अपने नन्हे–नन्हे बलिष्ठ हाथों में लकड़ी का एक छोटा भाला पकड़ा हुआ था। हालाँकि उसका आकार मुश्किल से एक उँगली के बराबर रहा होगा लेकिन मकास को देखकर ऐसा लग रहा था, जैसे उसे संभालना मुश्किल हो रहा हो। उसने अपने पूँछनुमा निचले शरीर से मकास का अँगूठा कसकर जकड़ लिया। फिर मकास के मुँह से अचानक एक तेज़ 'आह' निकली और उसने चिंहुक कर सेण्टीड्राफ़ को छोड़ दिया।

हुआ ये था, उस नन्हे शैतान ने लगभग दो इंच लम्बे भाले का नुकीला पफल, मकास के अँगूठे के नाख़ून के नीचे घुसेड़ दिया। यह ठीक ऐसा था, जैसे कोई बारीक़ सुई से नाख़ून को कुरेद दे। जरूस ने झपटकर उसे अपनी उँगली के नीचे दबा लिया और उसके हाथों से छोटा भाला ऐसे खींच लिया, जैसे कोई ख़ाल में घुसी बारीक़ धँस खींचता है। मकास के अँगूठे पर रक्त की एक बहुत नन्ही बूँद छलछला आई। सेण्टीड्राफ़ अब भी अपनी नेंकनी आवाज़ में गुस्से से चिल्ला रहा था। कनखजूरे जैसे उसके ढेर सारे पैर, बेबसी में घास को जकड़ने की कोशिश कर रहे थे। वो बार–बार दीमक की उस विशाल बाँबी की तरफ़ भागने की कोशिश कर रहा था, मगर सफल नहीं हो पा रहा था।

'ये बहुत देर से हमारी पोशाकों और जिस्म पर घूम रहा था।' मकास ने अपने लबादे से, अँगूठे पर छलछला आई रक्त की बूँद को साफ़ करते हुए कहा।

'दफ़ा हो जाओ यहाँ से, दुष्ट *शाकाहारी।'* सलार को पहली बार उसकी मिनमिनाती हुई आवाज़ समझ में आई।

'शान्त हो जाओ, शान्त हो जाओ।' जरूस ने नरम आवाज़ में उसे तसल्ली दी लेकिन सेण्टीड्राफ़ अब भी मचलता रहा।

अपने कनखजूरे जैसे पाँवों से खींच–खींचकर, उसने *दुर्वा* घास के ढेर सारे तिनके, ऐसे उखाड़ दिए जैसे कोई बेरहम बादशाह, किसी गुलाम के सिर के बाल मुट्ठी में भरकर खींच ले।

'आह...*तुम्हें* छोड़ो बदमाशो, शैतानो, *तुम्हारी* पूँछ दर्द कर रही है।' सेण्टीड्राफ ने अपने जिस्म को पीछे मोड़कर जरूस की उँगली में अपने बारीक–बारीक दाँतों से काटने की नाकाम कोशिश करते हुए कहा।

सलार, दोनों भाइयों की तरफ देखते हुए बोला, 'ये सेण्टीड्राफ है। कई सदियों से ये माना जा रहा है कि ये छोटे जीव खत्म हो चुके हैं। ये कभी अकेले नहीं रहते, हमेशा सैकड़ों की तादाद में होते हैं। ये बौने और कनखजूरे का मिलाजुला रूप हैं। इन्हें, कमाल की ताकत, हिम्मत और बहादुरी के लिए जाना जाता है। सेण्टीड्राफ, बोलते वक्त अपने लिए *'हम'* या *'मैं'* का इस्तेमाल नहीं करते, बल्कि *'मैं'* की जगह *'तुम'* कहते हैं। इनकी बस्ती में केवल सरदार और कुलगुरु को ये हक होता है कि वो अपने लिए 'मैं' या 'हम' शब्द का इस्तेमाल कर सकें। ये झुण्ड में इकट्ठे होकर एक टाँग वाले झींगुर का शिकार करते है। जंगली कीड़ों के मांस के अलावा और कुछ नहीं खाते और गोश्त न खाने वालों को, तुच्छ नज़र से देखते हैं। जन्म से ही ये तिलिस्मी–विद्याओं और रूहानी–ताकतों के मालिक होते हैं। सेण्टीड्राफ की सारी ताकत, इनके छोटे भाले में समाई होती है। इनकी नाक में सूँघने वाली ग्रन्थियाँ नहीं होतीं, हो सकता है इसी वजह से ये नाक में बोलते हैं।' मकास ने जमीन पर पड़ा, तिनके जैसा भाला अपनी उँगली से उठाकर हथेली पर रख लिया।

'तुम अपनी ये कानाबाती बन्द करो, शाकाहारी! एक–दूसरे के कान में फुसफुसाओ मत...**फुसफुसाहट, बिना भीतरी बेईमानी के पैदा नहीं होती।** *तुम्हें* तुरन्त छोड़ो।' वो चीखा।

'पक्का हम तुम्हें छोड़ देंगे बहादुर सेण्टीड्राफ...लेकिन अगर तुम ये वादा करो कि हम पर हमला नहीं करोगे और हमें नुकसान नहीं पहुँचाओगे।' सलार उसकी तरफ देखकर मुस्कुराते हुए बोला।

तीनों को ऐसा लगा जैसे कोई छोटा बच्चा पूरी शक्ति से अपनी नाक में चिल्लाया हो, 'अरे...इन शाकाहारियों का घमण्ड तो देखो, खुद को *'हम'* कहने की हिम्मत करते हैं और खाते हैं घास और पेड़ की जड़ें। आखिर कौन हो तुम?अपने ये बड़े–बड़े कपड़े के तम्बू लेकर, तुम्हारी बस्ती में क्यों आए हो?'

'हम संथाल–पुत्रा...जरूस, मकास और सलार। हम अपने पिता का क़ौल पूरा करने के लिए, एक सुराही पानी की तलाश में निकले हैं, जिसमें *गीलापन* न हो। हमें छेदरहित बाँसुरी बजाने वाले पाँच बूढ़े संगीतकारों की खोज है, बहादुर योद्धा!' सलार ने सेण्टीड्राफ से पूरी इज्ज़त से कहा।

'कमबख़्तो! पहले तुम्हारी पूँछ से अपनी ये भद्दी उँगली हटाओ।' सेण्टीड्राफ़ ने गुस्से में कहा।

जरूस ने अपनी उँगली उसकी पूँछ से हटा ली। वह घास पर रेंगा और पूँछ के बल उसने अपना धड़ जमीन से ऐसे ऊपर उठा लिया जैसे कनखजूरा हमले के लिए तैयार होता है।

'तुम्हारा पवित्रा भाला, *तुम्हारा* पवित्रा भाला कहाँ गया?' वह अब बहुत व्याकुल और चिन्तित दिखा।

मकास ने अपनी हथेली खोलकर उसके सामने कर दी, जिस पर वह तिनके जैसा बारीक भाला रखा हुआ था। सेण्टीड्राफ तेज़ी से झपटा और मकास की हथेली से भाला ऐसे उठा लिया, जैसे अगर एक पल की भी देर हुई तो वह उसे हमेशा के लिए खो देगा।

भाला हाथ में आते ही, वो *भूतकेशी* के एक पौधे के पीछे गायब हो गया। तीनों भाई हैरत से चारों तरफ उसे देख रहे थे मगर वो ऐसे वहाँ से अदृश्य हो गया जैसे आदमी की पूँछ। सलार ने देखा, इस गहमागहमी में रेत–घड़ी निकलकर दीमक की बाँबी के पास गिर गई। उसने झुककर उसे उठाया तो ऐसा लगा जैसे बाँबी के भीतर भयंकर शोर हो रहा हो। अजीब–सी, अस्पष्ट आवाज़ें थीं, जो दीमक के उस अभेद्य, ऊँचे किले के ढेर सारे मुँहों से बाहर आ रही थीं। जब तक वो कुछ समझ पाते, मिट्टी की उस बाँबी से, छोटे–छोटे सेण्टीड्राफ़्स की एक विशाल सेना बाहर उमड़ पड़ी। वो बाँबी के हर मुँह से बाहर आ रहे थे।

ऐसा लग रहा था जैसे किसी किले के सैकड़ों दरवाज़ों से कोई अनन्त फ़ौज बाहर निकल रही हो। सबके हाथों में छोटे–छोटे लकड़ी के भाले थे। चींटियों का रेला भी उस विशाल फौज से शायद छोटा ही होता। सब अपनी नेंकनी आवाज़ में इतना शोर मचा रहे थे कि और कुछ सुनाई ही नहीं दे रहा था। कुछ ही पलों में वहाँ सेण्टीड्राफ़्स का विशाल हुजूम जमा हो गया, जो घास के उस मैदान पर दूर–दूर तक फैल गया।

सेण्टीड्राफ़्स ने तीनों भाइयों के चारों तरफ घेरा बना लिया। फिर दीमक की बाँबी के ऊँचे मुँह पर, सामान्य से कुछ बड़ा एक सेण्टीड्राफ दिखाई दिया। उसकी नन्हीं–नन्हीं, पतली भुजाओं की बलिष्ठ मांसपेशियाँ साफ़ दिखाई दे रही थीं। उसके छोटे सिर पर लम्बे घने बाल थे, जो उसकी कमर तक फैले थे। उसके दिखाई देते ही हज़ारों सेण्टीड्राफ़्स ने घास में भाला घोंपकर, अपनी पूँछ जमीन से ऐसे ऊपर उठाकर अभिवादन किया जैसे छोटे बच्चे लाठी से कूदते वक़्त, अपने पैर

ऊपर उठाते हैं।

'दुष्ट शाकाहारियो! तुमने बेवजह हमारे सैनिक पर जानलेवा हमला किया और अपने इन बदरंग, फटे–पुराने विशाल तम्बुओं से हमारी बस्ती की प्राणवायु रोकने की कोशिश की।' उसने सलार और जरूस की झोलियों की तरफ इशारा किया, जिन्हें मकास ने उठाकर दीमक की बाँबी के पास टिका दिया था। उसकी मिनमिनाती हुई नेंकनी आवाज, तेज़ हवा की वजह से बड़ी मुश्किल से उनके कानों तक आ पाई।

'और तो और, तुमने गलती करके हमारी बस्ती से भागने की भी कोशिश की। इससे तुम्हारा अपराध दोगुना हो जाता है, जंगली दानवो!' उसने अपने नन्हे भाले का चमकदार फल तीनों भाइयों की तरफ करते हुए गुस्से में कहा।

मकास ने ज़रा–सा झुक कर, अदब से कहा, 'ओ विलक्षण सेण्टीड्राफ! हमने जो कुछ भी किया, वो अनजाने में हमसे हुआ। हमारी कोशिश तुम्हारे बहादुर सैनिक को चोट पहुँचाने की नहीं थी। हम मुसाफिर हैं, हमने बदनीयती में वुफछ नहीं किया। फिर भी अगर हमारी किसी बात से या हरकत से तुम्हें या तुम्हारी बस्ती को कोई नुकसान हुआ है तो हम संथाल–पुत्रा सलार, जरूस और मकास तुमसे माफी चाहते हैं।''

मकास की नरमजबानी से बाँबी के मुहाने पर बैठा सेण्टीड्राफ कुछ प्रभावित दिखा। यह देखकर उसने अपनी बात जारी रखी, 'ओ साहसी योद्धा! मेरे बूढ़े गुरु ने मुझे बताया था कि वो बहादुर सेण्टीड्राफ्रस ही थे, जिन्होंने *बिल्ली-लोटन* घास में छिपे, एक टाँग वाले ख़तरनाक झींगुरों का शिकार किया, जिन्होंने खून जैसे सुर्ख टिड्डों की असंख्य फौज को अपने तीखे भालों से इस तरह बींधकर रख दिया जैसे कोई सेही, अपने नुकीले काँटों से दुश्मन को बींध देती है। जिन्होंने दीमकों के उन हजारों अभेद्य किलों पर कब्ज़ा किया, जिनकी भूलभुलैयाँ में पतले साडीन साँप भी रास्ता भूल जाते हैं।' हजारों सेण्टीड्राफ्रस की वो भीड अब शान्ति से उसकी बात सुन रही थी।

'उन्होंने मुझे उस महान सेण्टीड्राफ के बारे में भी बताया, जिसने सदियों पहले, अकेले ही एक छछुन्दर का शिकार किया था। वो वीर योद्धा **पोसायफ़न**, जिसकी शक्तिशाली मांसपेशियों में इतनी ताकत थी कि चूहे को पूँछ से पकड़कर, आसमान में उछाल सकता था। साथ ही वो ख़तरनाक सैनिक **डस्टीपीड** भी, जिसने दीमक की बाँबियों पर कब्जे के दौरान, उसमें घुसी, खतरनाक **पोजन** मकड़ी का मुकाबला किया था और सबसे अनूठा और यादगार, वो महान योद्धा **सैंक्टीलैग**, जिसने टिड्डियों के हमले के वक़्त, चौंसठ टिड्डों की गर्दन, अपने धरदार भाले से चीर दी थी।' तीनों भाइयों ने साफ देखा, सेण्टीड्राफ्रस की भीड़ अब हैरत और शान्ति से सुन रही थी। बाँबी के ऊँचे मुँह पर बैठा सरदार भी अब बहुत खुश नजर आ रहा था।

मकास को अपने बूढ़े गुरु के कहे अल्फ़ाज़ याद आ रहे थे–'**पुरखों की तारीफ़, षेहन को ऐसे ही ख़ुशी देती है, जैसे किसी महल के कंगूरे से गिरी ईंट को, महल की भव्यता, शानोशौकत और वैभव का जिक्र ख़ुशी देता है, चाहे वो महल वक़्त के थपेड़ों से खण्डहर ही क्यों न हो चुका हो।**'

'हम्मम...तुमने अक़्लमंदी और हुनर से **गैल्जीडान** का दिल जीत लिया नौजवान' बाँबी के ऊपर बैठे हुए सरदार ने कहा। तीनों भाइयों को पहली बार पता चला कि उसका नाम *गैल्जीडान* था।

'तुम्हारी गुस्ताख़ियों और गुनाह के लिए हम तुम्हें यक़ीनन मौत का तोहफ़ा ही देते, मगर तुम बहादुर होने के साथ–साथ बहादुरी की इज़्ज़त करना भी जानते हो। अजाने में की गई तुम्हारी ग़लती को हम माफ़ करते हैं और तुम्हें सेंटीड्राफ़्रस की बस्ती का *मेहमान* मानते हैं' सरदार ने नेंकनी आवाज़ में, ज़ोर से कहा।

भारी शोर के बीच हज़ारों सेण्टीड्राफ़्रस ने ज़मीन पर गड़े भाले पर हाथों के बल झूलकर, अपनी पूँछ ऊपर उठाई और तीनों का अभिवादन किया।

'शुक्रिया गैल्जीडान।' जरूस अदब से झुकते हुए बोला, 'तुम्हारी इस दोस्ताना मेहमान–नवाज़ी का शुक्रिया मगर ठहराव की कोई भी चिट्ठी पढ़ना हमारे लिए संभव नहीं है। हमें तयशुदा वक़्त में वापस अपने पिता के पास पहुँचना है। हमें पाँच बूढ़े संगीतकारों से मिलना है, जो छेदरहित बाँसुरी बजाने का हुनर जानते हैं।'

गैल्जीडान ने अपनी बाँबी के सबसे बूढ़े सेण्टीड्राफ़ को मशविरा करने के लिए बुलवाया। वो इतना बूढ़ा था कि चार जवान सेण्टीड्राफ, छोटी–छोटी लकड़ियों से बने एक अजीब–से सिंहासन पर उठाकर लाए। वह बमुश्किल बोल पा रहा था। मगर अपने वँफपवँफपाते हाथों से, उसने तब भी अपना पतला भाला, कसकर पकड़ रखा था। उसकी ख़ाल लटकने लगी थी और झुर्रियाँ चेहरे पर ऐसे छाई हुई थीं जैसे किसी प्राचीन शिलालेख पर लिखी, दुर्लभ **इकोइ–चामन** भाषा, जिसके बोलने और पढ़ने वाले दुनिया में बस एक–दो ही लोग हैं। सबसे ख़ास लग रहा था, लकड़ी का वो चौड़ा ताबीज़, जो उसके गले में लटका था।

उसके बाँबी से बाहर आते ही पूरी बस्ती ने पीठ के बल लेटकर, अपने बारीक–बारीक पैर आसमान की तरफ करके अभिवादन किया। यहाँ तक कि सरदार गैल्जीडान ने भी। वो **रुआन** था, बस्ती का कुलगुरु। उसकी वँफपवँफपाती बूढ़ी आवाज़ को समझना, तीनों भाइयों के लिए बहुत मुश्किल काम था।

'मैं उन पाँचों से मिल चुका हूँ। अब तो इस बात को सदियाँ गुज़र गईं क्योंकि पिछले दो सौ सालों से तो मैं भी उनसे नहीं मिला। मुझे वो दिन याद हैं, जब मेरे चेहरे पर इतनी झुर्रियाँ नहीं थीं और न जिस्म इतना बूढ़ा था। तब मैं **बरनाल** की इन पहाडियों में अकेले रहता था, जबकि कोई सेण्टीड्राफ़ कभी अकेला नहीं रहता।' रुआन की बात सभी साँस रोके सुन रहे थे।

'वो पाँचों अब भी वहीं रहते हैं, ये संदेश, लोगों के कपड़े चुराकर पहन लेने वाली, नीली **बैलाडबोल्ग** चिड़िया ने मुझे दिया, जो पचास साल पहले वहाँ गई थी। लेकिन वहाँ पहुँचने के लिए, तुम्हें पहले **केश–वृक्षों** का ये खूनी जंगल पार करना होगा। केश–वृक्षों का जंगल पार करने के लिए तुम्हारे पास अब थोड़ा ही समय है। क्योंकि शाम होते ही वो बेचैन होने लगते हैं। उसके बाद उनके पास भी फटकना, मौत को दावत देना है। दिन में वो कुछ नहीं खाते लेकिन अगर रात होने से पहले तुमने उन्हें पार नहीं किया तो दुनिया की कोई ताक़त तुम्हें वहाँ से ज़िन्दा बाहर नहीं निकाल सकेगी नौजवानो!'

सलार के माथे पर पहली बार शिकन उभरी। उसका चाँदी जैसा चमकीला बदन जड़वत् खड़ा था। रुआन ने दोबारा बोलना शुरू किया, 'हमारी बस्ती यहाँ केवल इसलिए हिफ़ाज़त से है क्योंकि केश–वृक्षों के लिए हम इतने छोटे हैं कि उन्हें हमारे यहाँ होने का अहसास तक नहीं है।'

मकास ने कहा, 'लेकिन इस जंगल को पार करने का कोई तो रास्ता होगा?'

'रास्ता है।' रुआन ने ऐसी आवाज़ में कहा जैसे किसी गहरी सोच में डूबा हो।

'तुम्हें अपने पूरे बदन पर प्राचीन **एरोमाहैल** पौधे का रस लगाना होगा। ये दुनिया का सबसे बदबूदार पौध है। इसके भीतर से ऐसी दुर्गन्ध आती है जैसे सड़ा हुआ मांस। केश–वक्ष, किसी भी जीव की गंध पकड़कर उसकी हड्डियों को चूस जाते हैं, मांस और रक्त को ऐसे ही छोड़ देते हैं। केश–वक्ष, *अस्थिहारी* होते हैं लेकिन एरोमाहैल का रस अगर तुम्हारी त्वचा पर लगा होगा तो वो तुम्हारे पास फटकेंगे भी नहीं। दिलचस्प बात ये है, केश–वक्ष वहीं होते हैं, जहाँ एरोमाहैल के पौधे होते हैं।'

रुआन की बात सुनकर गैल्जीडान ने इशारा किया और दो सेण्टीड्राफ़ नदी के किनारे की झाड़ियों की तरफ रेंग गए। झाड़ियों में गए दोनों सैनिक कुछ ही पलों में वापस लौट आए। उनके पास आते ही ऐसा लगा जैसे किसी ने क़ब्र में दबे, सड़े हुए मुर्दे को खोदकर बाहर निकाल दिया हो। भयंकर दुर्गन्ध ने हवा को अपने सींखचों में कस लिया था। इस बार उनके छोटे–छोटे बदन, अपने आकार से दस गुना बड़े एरोमाहैल के पौधों को खींचते हुए ला रहे थे, जिन्हें उन्होंने पता नहीं कैसे जड़ से उखाड़ लिया था।

अब कई सेण्टीड्राफ़, तीनों भाइयों के जिस्मों पर उन पत्तियों को मल रहे थे। रुआन उन सबको निर्देशित कर रहा था कि कहाँ, कितना रस लगाना है। सलार को लग रहा था जैसे उस भयंकर बदबू से उसका सिर दर्द से फट जाएगा। दुर्गन्ध इतनी असहनीय थी, ऐसा लग रहा था जैसे उनकी गंध–ग्रन्थियों में हर पल शक्तिशाली विस्पफोट हो रहे हों। नन्हे सेण्टीड्राफ़, दौड़–दौड़कर उन तीनों के जिस्मों को एरोमाहैल की पत्तियों के रस से ढँक देना चाहते थे। ताज्जुब की बात ये थी कि उनमें से किसी को भी जैसे दुर्गन्ध महसूस ही नहीं हो रही थी। तीनों समझ गए कि इसका कारण, उनकी नाक में सूँघने वाली ग्रन्थियों का न होना है।

जरूस ने काफ़ी देर से अपनी साँस रोक रखी थी मगर जब गंध असहनीय हो गई तो उसने अपने लबादे में मुँह छिपाते हुए कहा, 'हम केशवृक्षों से मरें या न मरें, लेकिन इस भयंकर दुर्गन्ध से अवश्य मर जाएँगे।'

'**प्रैफगोडाइष** का फूल तुम्हें मरने नहीं देगा।' गैल्जीडान ने अपनी नेंकनी आवाज़ में मिनमिनाते हुए कहा।

मकास ने देखा, तीन सैनिक अपने कन्धें पर एक–एक छोटा फूल ढोकर ला रहे थे लेकिन उनके आकार के हिसाब से वो इतना बड़ा था कि उसे कन्धे पर रखकर, उनके लिए रेंगना मुश्किल हो रहा था।

रुआन ने तीनों भाइयों की तरफ़ देखा और बोला, 'नौजवानो! ये दुर्लभ प्रैफगोडाइज़ का फूल दुनिया के सबसे खुशबूदार फूलों में से एक है। इसका दो–दो बूँद रस अपनी नाक में टपका लो। फिर ये दुर्गन्ध तुम्हें परेशान नहीं करेगी और केश–वृक्षों को तुमसे दूर रखेगी, लेकिन एरोमाहैल के पौधे का असर केवल कुछ ही समय तक रहेगा। इसलिए तुम्हें

समय रहते केश–वृक्षों को पार कर लेना होगा।'

जरूस, मकास और सलार ने जल्दी–जल्दी प्रैफगोडाइज के फूल का रस अपनी–अपनी नाक में टपकाया, उन्हें ऐसा लगा जैसे किसी ने उनका दिमाग बाहर निकालकर, तेज इत्र के कटोरे में डुबा दिया हो। उनका पूरा वजूद, खुशबू की झील में गर्वफ होता जा रहा था।

अपने सफर पर चलते वक्त रुआन के ये लफ़्ज़, उन तीनों के कानों में, सैंकड़ों पाँव वाली कानसलाई की तरह घूम रहे थे–'**कुदरत की दी हुई चुनौतियाँ, बहुत परम्परागत और साधरण होती हैं, जो लगभग सभी को, थोड़े बहुत फ़र्क के साथ, एक जैसी ही मिलती हैं। तुम्हारे होने के मायने, इस बात पर निर्भर हैं कि तुम खुद अपने लिए कितनी बड़ी चुनौतियाँ पैदा करके, उन पर फ़तह हासिल करते हो। अगर कुदरत की दी हुई रोज़मर्रा की चुनौतियों को अपने लिए नाकाफ़ी मानकर, तुम नई कसौटियों की तलाश में नहीं निकलते तो यक़ीनन तुम्हारे भीतर संभावनाओं का बहुत बड़ा हिस्सा अनछुआ रह जाता है। किसी भी वजूद की सबसे करारी शिकस्त केवल एक होती है...कि उसके भीतर अनजले ईंधन का ढेर, बाक़ी बचा रह जाए।'**

सेण्टीड्राफ़्स से विदा लेते वक्त तीनों के मन, उन शानदार प्राणियों के लिए इज्जत से भर गए। रुआन ने आखिरी पल में अपने गले में लटके चौड़े ताबीज को खोल कर उसमें से एक लाल सुर्ख़ बीज निकाला और वो जरूस की तरफ़ बढ़ाया, 'इसे रख लो नौजवान, जब केश–वृक्षों से बचने का कोई चारा न रह जाए, तब इसे मिट्टी पर डाल देना। जंगल को पार करने के बाद **नैण्टाकॉर्नस** से बचना, नरक की भट्टी जैसे उसके पेट में सब कुछ समा जाता है। एक ख़ास बात और है...अपने दो सौ गुरुओं की हत्या करने वाले *गुरुहंता* से होशियार रहना, तुम्हारे आसपास की हवा में उसकी दुष्ट मौजूदगी की महक है।' बस यही आखिरी बात थी, जो उनके बीच हुई।

संथाल–पुत्रों के इस तिलिस्मी सफ़र की दास्तान, गाँव के गर्म अलावों के पास बैठकर, हर नौजवान पीढ़ी ने बुजुर्गों के होठों से सुनी। जलती हुई लकड़ी की पीली रोशनी में दमकते, हैरतभरे चेहरे, सारी–सारी रात...उन बहादुर नौजवानों की कहानी सुनते। गाँव के लोगों ने उससे पहले या तो जंगल की अफ़वाहें सुनी थीं या जंगल के बेलिखे क़ायदे। उनके सफर की ये दास्तान, गाँव की पहली साहित्यिक–पूँजी थी, जिसे भोले आदिवासियों का समूह हमेशा ज़िन्दा रखना चाहता था। इसमें वो सफल भी हुए।

सदियों तक उन्होंने इस दास्तान की हिफ़ाज़त के लिए केवल *बोलती-किताबों* का सहारा लिया। गाँव के बुजुर्ग और बच्चे, जिनमें से ज़्यादातर को वो ज़बानी याद हो गई थी। पीढ़ी दर पीढ़ी ये विरासत हर आने वाली नस्ल ने सहेजी और अगली नस्ल को सौंपी। गाँव की रूह में ये इतनी पैवस्त हो गई कि कई नंगे खेलते बच्चों के नाम की जगह, *रुआन* और *गैल्जीडान* की पुकार सुनी जा सकती थी।

संथाल के बेटे, जैसे ही केश–वृक्षों के जंगल के नज़दीक पहुँचे, उनके कलेजे ख़रगोश की तरह उछलने लगे। जैसे–जैसे वो आगे बढ़े, केश–वश्क्ष और मोटे तने वाले होते जा रहे थे। अंदर चारों तरफ़ जानवरों की गली हुई ख़ालों और खून के सूखे हुए बड़े–बड़े ध्ब्बों की तादाद, बढ़ती जा रही थी। यक़ीनन वहाँ बहुत बदबू रही होगी लेकिन प्रैफगोडाइज़ के फूलों के रस के कारण उन्हें वो महसूस नहीं हो रही थी।

कई बार, केश–वृक्षों से लटकते लम्बे–लम्बे बाल, उनके बदन के बिल्कुल पास से रेंगते हुई निकल जाते, लेकिन हर बार वो एक आवश्यक दूरी बनाए रखते। उस छत के नीचे सूरज की रोशनी का नामोनिशान तक नहीं था। बस, उदासी के कपड़े पहने, एक मनहूस ठण्डी छाया नज़र आ रही थी। गैल्जीडान ने चलते वक़्त उन्हें सख़्त ताकीद की थी कि जब तक वो केश–वृक्षों को पार नहीं कर लेते, तीनों आपस में किसी तरह की कोई बात न करें। ख़ामोशी, किसी थके हुए मच्छर की तरह, चुपचाप बैठी थी।

काफी देर चलने के बाद, उन्हें ये अहसास हुआ कि केश–वृक्षों से लटकते भारी–भरकम बाल, अब उनके बहुत निकट से गुजर रहे हैं। अब पहले के मुकाबले, प्रैफगोडाइज़ फूल की खुशबू तो लगभग ख़त्म होती जा रही थी। उनके नथुनों से एरोमाहैल के पौधों की तीखी दुर्गन्ध टकराने लगी थी। आधे से ज़्यादा रास्ता वो पार कर चुके थे लेकिन अभी केश–वृक्षों का जंगल पूरी तरह पार नहीं हुआ था। भीतर कुछ अजीब जानवर, केश–वृक्षों की जकड़ में छटपटा रहे थे, जो पल भर में ख़ाल का ढेर हो गए।

मकास ने सबसे पहले इस बात को भाँप लिया कि दुर्गन्ध्युक्त पौधे का रस अब कमज़ोर पड़ने लगा है, इसी वजह से वो खूनी केश, उनके काफी पास रेंग रहे हैं। हालाँकि पौधे का रस अब पहले से बहुत कम दुर्गन्ध दे रहा था लेकिन ये अब भी इतनी तेज थी कि तीनों के सिर बदबू के मारे फटने को तैयार थे। अचानक उबकाई का बहाव, जरूस के हलक से

ऐसे बाहर उबल पड़ा, जैसे खड़ी हुई गर्भवती हिरनी, अचानक मशगछौने को जन्म दे दे।

रेंगने की आवाजें अब उन्हें अपने इतने पास सुनाई दे रही थीं कि वो उनकी छुअन अपने लबादों पर महसूस कर सकते थे। तीनों ने अपने ज़ेहन को एक बार फिर से टटोला, अब उसमें न एरोमाहैल की दुर्गन्ध थी और न प्रैफगोडाइज की खुशबू। अगर कुछ था तो बस जानवरों की सड़ी हुई खाल और खून की दुर्गन्ध का जानलेवा अहसास। दुनिया के सबसे लचीले साँप **कैरसटेस** की तरह, केश–वृक्षों से लटकते काले स्याह केश, तीनों के बदन को जकड़ते चले गए।

इससे पहले कि वो संभल पाते, उनके जिस्म हिलने लायक भी नहीं बचे थे। पैरों से लेकर सीने तक, बाँहों से गर्दन तक, केशों का शिकंजा कस चुका था। उन्हें अपनी पसलियों पर बढ़ता हुआ कसाव और वज़न साफ़ महसूस हो रहा था। धीरे–धीरे छाती के भीतर, दिल के धड़कने लायक जगह भी नहीं बची। दम घुटने के कारण जरूस की आँखें, बधिया किए गए सूअर के अण्डकोषों की तरह उबलकर बाहर आ रही थीं।

जरूस ने अपनी हथेली में दबा बीज, ज़मीन पर गिरा दिया। 'चट' की हल्की आवाज़ के साथ, बीज चटख गया। एक ही पल में उसमें से हरे रंग का कोमल–सा अंकुर बाहर निकला और पौधे में तब्दील होने लगा। चंद पलों में गहरे नीले रंग का एक पौध बाहर निकल आया। उसकी पत्तियाँ बैंगनी रंग की थीं। केश–वृक्षों से लटकते लम्बे केशों ने मकास का गला पकड़ने की कोशिश की लेकिन कामयाब नहीं हो पाए।

जरूस जैसे अंतिम साँसे लेने ही वाला था, तभी एक जानी पहचानी दुर्गन्ध उसके नथुनों से टकराई। ये एरोमाहैल के पौधे की दुर्गन्ध थी, जो अब बढ़कर मकास के कद के बराबर हो गया था। तेज़ और तीखी बदबू से सारी हवा गिनगिना उठी। पलक झपकते ही केश–वृक्षों के साँप जैसे लम्बे बाल, वापस सिमट गए। जरूस अब तक बेहोश हो चुका था। सलार उठने की कोशिश कर रहा था। पौधे से निकलकर भयंकर बदबू सारे इलाके में फैल गई।

मकास ने झपटकर एरोमाहैल का पौध उठा लिया। सड़े हुए मुर्दे जैसी दुर्गन्ध, सलार और मकास के दिमाग़ में घुस गई। लेकिन ये वक्त उस बारे में सोचने का नहीं था। सलार ने बेहोश जरूस को अपने कन्धे पर लादा और दोनों तेज़ी से उस तरफ जाने लगे, जिधर प्रकाश दिखाई दे रहा था। लम्बे–लम्बे बाल, अब भी सरसराते हुए, उनका पीछा कर रहे थे। अब दिखाई देने लगा था कि सामने एक खुला और बड़ा मैदान है, जो उनसे केवल कुछ गज की दूरी पर था।

किसी तरह घिसटते, चलते वो केश–वृक्षों की आख़िरी सीमा तक पहुँचे। एरोमाहैल का पौध, बढ़कर अब इतना बड़ा हो चुका था कि उसे संभाले रखना मकास के लिए बहुत मुश्किल हो गया था। सड़े हुए मुर्दे जैसी बदबू इतनी तेज़ हो गई थी कि उबकाइयाँ, भेड़ों के रेवड़ की तरह, उनके हलक के बाड़े से बाहर छलाँग लेने के लिए ताक़त लगा रही थीं। पौध अब भी उसके हाथ में ही था। अपने पीछे रेंगने की सैंकड़ों आवाज़ें, वो साफ़ सुन सकते थे। लड़खड़ाते हुए वो खुले मैदान में आ गए। मकास ने पौध पीछे फेंक दिया और जरूस को सहारा देकर घास पर लिटा दिया।

अब तीनों खुले में लेट गए। सामने दूर–दूर तक फैला था, दुर्लभ **रैटाटॉस्कर** घास का अंतहीन मैदान, जिसके बारे में कहा जाता कि ये घास किसी भी बीमारी और ज़ख़्म को ठीक करने की ताक़त रखती है।

जरूस को आहिस्ता–आहिस्ता होश आ गया। उसने आसमान की नीली छत की तरफ़ देखा, सितारे उससे बातें करने के लिए बेचैन थे। शाम कब की विदा ले चुकी थी, रात की स्याह चादर चारों तरफ फैल गई। वो आगे बढ़ने लगे, दूर तक फैले अँधेरिया मैदान में, कुछ नज़र आया, जो बहुत दूर था, पिघले हुए लावे जैसा कुछ, सुर्ख़ दहकता हुआ, जो मैदान में आहिस्ता–आहिस्ता चलता हुआ लग रहा था। उससे निकलने वाली रोशनी हालाँकि ज़मीन से हाथ भर ऊपर तक ही जा रही थी, लेकिन थी आग जैसी।

सलार ने देखा जरूस और मकास उसे हैरत से ताक रहे हैं। उसने उनकी तरफ़ देखते हुए कहा, 'वो **वायवॉर्न** हैं। उन्हें *अग्निकीट* भी कहते हैं। हज़ारों में कोई एक वायवॉर्न बड़ा होता है, बाक़ी सब बेहद छोटे। लेकिन सबसे बड़े वाले के पेट में बाक़ी सैंकड़ों वायवॉर्न रहते हैं। ये रहने के लिए बिल, घोंसला, माँद, गुफा या पेड़ों का इस्तेमाल नहीं करते बल्कि *अपने ही* साथी का करते हैं। वो अपनी प्रजाति के लिए अपनी बलि देना स्वीकार करता है। इनके जिस्म के भीतर चमकीला तरल भरा होता है, जो रात को बहुत दूर से भी रोशनी की तरह चमकता है। इस वक़्त रोशनी का जो समारोह तुम दूर मैदान पर देख रहे हो, वो हज़ारों बड़े–बड़े वायवॉर्न हैं, जिनके पेट में लाखों छोटे वायवॉर्न भरे हुए हैं। ये पूरी तरह शाकाहारी होते हैं। घास और पेड़ों की पत्तियों के सिवाय और कुछ नहीं खाते। ये हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाएँगे लेकिन इनकी मौजूदगी ख़तरनाक हो सकती है क्योंकि जहाँ वायवॉर्न होते हैं, वहाँ आसपास दूसरे हिंसक जीव मँडराते रहते हैं, इनके जिस्मों से निकलने वाली रोशनी का फ़ायदा उठाकर, शिकार करने के लिए।''

फिर उसने अपने सिर को झटका और तीनों आगे बढ़ गए। जैसे–जैसे वो वायवॉर्न के नजदीक पहुँचते जा रहे थे,

वैसे–वैसे रोशनी बढ़ती जा रही थी।

पास जाकर उन्होंने देखा, जैसे बोतलबन्द जुगनुओं की हज़ारों कतारें, घास के ऊपर एक बड़े हिस्से में जगमग–जगमग हो रही थीं। हज़ारों की तादाद में पारदर्शी वायवॉर्न का समूह, उनकी आँखों के सामने था। घास के ऊपर जो वायवॉर्न थे, उनका आकार मुश्किल से चार अंगुल उँफचा होगा। उनके पेट में हलचल करते, उनके ढेर सारे साथी, बाहर से साफ़ दिख रहे थे। जिस घास को *बड़े* वायवॉर्न खा रहे थे, पेट के भीतर जाने के बाद, उसी घास को भीतर भरे हुए उनके *छोटे* साथी खा रहे थे। उनके पारदर्शी पेटों के आरपार होती रोशनी का शानदार मंज़र देखकर, पल भर के लिए तो वो अपनी सारी थकान और भूख भूल गए।

सलार ने आगे बढ़कर उनमें से एक को अपनी हथेली पर उठा लिया। उसका झिलमिल–झिलमिल जिस्म देखकर वह मन्त्रामोहित–सा खड़ा रह गया। छोटा–सा वायवॉर्न अपनी लम्बी पलकें झपका कर टुकर–टुकर उसकी तरफ़ देख रहा था, जैसे समझने की कोशिश कर रहा हो कि ये इतना विशाल प्राणी कौन है?

सलार ने एक बार ऊपर आसमान की तरफ़ देखा और अपनी बात जारी रखी, 'इससे पहले, कोई ख़ूंख़्वार जंगली जीव यहाँ दिखाई दे, हमें इनमें से कुछ वायवॉर्न अपने पास रखने होंगे।'

जरूस ने चकित होकर पूछ, 'मगर क्यों?'

सलार ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया और चलने के लिए अपनी झोली उठा ली।

मकास ने उसकी तरफ़ हैरत से ताकते हुए वही सवाल पूछा तो उसने महज़ इतना कहा, 'वक़्त आने पर तुम्हें खुद पता चल जाएगा।'

जरूस ने अपनी झोली से काँच की एक चौडी बोतल बाहर निकाली और आहिस्ता से दो वायवॉर्न पकडकर, बोतल के भीतर डाल दिए। तब तक मकास और सलार भी एक–एक वायवॉर्न उठाकर ले आए थे। थोड़ी ही देर में उन्होंने काफ़ी इकट्ठे कर लिए। अब बोतल जगमग–जगमग चमक रही थी। जरूस ने उसके ढक्कन में, चावूफ से एक छोटा छेद किया और बोतल को वापस मोटे कपड़े की झोली में रख लिया।

'क्या तुमने उसकी बात पर ध्यान दिया?वो बूढ़ा सेण्टीड्राफ़, अपने दो सौ गुरुओं की हत्या करने वाला *गुरुहंता...*' जरूस ने अपनी बात बीच में ही छोड़ दी।

'हाँ, मगर ऐसा कैसे हो सकता है?' सलार ने उसके चेहरे को ग़ौर से देखते हुए कहा।

उनकी बात पूरी हो पाती, तभी मकास को ऐसा लगा जैसे ज़मीन के भीतर, कुछ दूरी बनाकर कोई चीज़ साथ–साथ सरक रही है। उसने हाथ से रुकने का इशारा किया और अपने आसपास छानबीन करने वाली निगाह से देखा। जब वो आगे बढ़ते तो उनसे थोड़ी दूरी पर रैटाटॉस्कर घास के नीचे कुछ सरकने लगता। जब वो रुक जाते तो वो चीज़ भी रुक जाती। ज़मीन के ऊपर उभरा हुआ घास का एक लम्बा कूबड़ उन्हें साफ़ दिखाई दे रहा था।

सलार ने उस चीज़ की तरफ़ देखते हुए, फुसफुसाती आवाज़ में कहा, **मत्स्य–नाग** है। हमारा *साथ* कर रहा है। ज़मीन के नीचे रहने वाली ज़हरीली मछली, ये इतनी तेज़ी से ज़मीन के नीचे–नीचे आगे बढ़ सकती है, जितना कोई प्राणी ज़मीन के ऊपर। ज़मीन पर रखे जाने वाले पाँवों की कम्पन पहचानकर, दूरी बनाए रखते हुए भी ये साथ–साथ चल सकता है। अगर हमला करना चाहता तो अब तक कर चुका होता लेकिन इसने खुद को घास के नीचे ज़मीन में छिपा रखा है। ये जीव *खुद* ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि इंसान इसके लिए बहुत बड़ा शिकार हैं। ये उन्हें निगल नहीं सकता।'

जरूस और मकास साँस रोके, उसकी बात सुन रहे थे। जरूस, इस वक़्त दो चीज़ों के बीच कोई अंतर्सम्बन्ध तलाशने की कोशिश कर रहा था। पहला, नदी के रास्ते सफ़र करते वक़्त दिखा *जल-गरुड़* और दूसरा ये *मत्स्य-नाग,* दोनों प्राणियों की हरकत संदेहास्पद थी।

तभी जैसे एक 'झपाका' हुआ। एक पल में पूरे मैदान में अँधेरा छा गया। अँधेरे में उन्हें महसूस हुआ जैसे वायवॉर्न के बीच भगदड़ मच गई हो। उनके सरसराने की आवाज़ें साफ़ सुनाई दे रही थीं। अब एक जुगनू के चमकने की रोशनी भी वहाँ नहीं थी। किसी अजीब कारण से वायवॉर्न ने रोशनी बुझा दी। दूर–दूर तक फैले अँधेरे में, मैदान में खड़े तीनों भाई, हद दर्जे की बदसूरत जंगली रूह, **कैलूगस** की तरह लग रहे थे। दहाड़ और चिंघाड़ की एक मिलीजुली, दहशतनाक आवाज़ ने उनकी रीढ़ की हड्डी को बर्फ़–सा सुन्न कर दिया।

अँधेरे के बीच से उभरता हुआ एक साया उन्हें अपनी तरफ़ बढ़ता हुआ दिखाई दिया। कुछ साफ़ नहीं दिख रहा था लेकिन चार पैरों पर चलता हुआ वो जीव तेज़ी से उनकी तरफ़ आ रहा था। चिंघाड़ और दहाड़ का मिलाजुला गुर्राना उन्हें

अब नजदीक आता महसूस हुआ। फिर अँधेरे के बीच, अलावों की तरह जलती दो सुर्ख आँखें नुमायां हुईं। परछाई अब इतनी नजदीक आ गई थी कि वो उसका कद साफ देख सकते थे।

वो जरूस से भी उँफचा था, विशाल, खतरनाक। चाँद के सामने से बादल का काला टुकडा हटा और चाँदनी ऐसे धरती पर आ गई जैसे पेड से कोई सफेद प्रेत नीचे कूदा हो। मटमैली रोशनी में संथाल के तीनों बेटों ने वो देखा, जिसका जिस्म नीले चीते का, सिर चिम्पैंजी का, उसके मजबूत कन्धें पर चमगादड जैसे पंख, सिर पर गैंडे जैसा खतरनाक सींग और पूँछ ऐसी थी, जैसे किसी चीते की पूँछ पर बिच्छू का डंक उग आया हो।

सलार ने फुसफुसाहट में कहा, '*नैण्टाकॉर्नस!* आँखें मत मिलाना, हिलना मत। ये अपने शिकार पर जहरीले डंकों की बरसात करता है। अपने शिकार का कोई हिस्सा खाए बिना नहीं छोड़ता। पैर के नाखून से लेकर सिर के बाल तक, सब नरक की भट्टी जैसे उसके भूखे पेट में समा जाते हैं। उन निगाहों में फँसने वाले का सम्मोहन, मौत के बाद ही टूटता है।'

अब वो बिच्छू के डंक वाली उसकी पूँछ और चमगादड जैसे पंखों को साफ देख सकते थे। उसके चिम्पैंजी जैसे मुँह से खून मिश्रित लार बह रही थी। 'सन्न' की एक आवाज के साथ नैण्टाकॉर्नस की पूँछ से छूटा एक डंक, जरूस की बाँह पर आकर गड गया। दोनों भाइयों ने ये तो देखा कि कुछ हुआ है, लेकिन क्या हुआ है, इस बात को समझने में उन्हें कुछ पल लग गए। जरूस के होशोहवास ने ऐसे उसका साथ छोड दिया जैसे आखिरी खूँटा उखड़ने के बाद, नाव किनारे को छोड़कर चल देती है।

मकास और सलार ने अपनी झोली जमीन पर टिका दी और नैण्टाकॉर्नस की तरफ देखा। सलार को पता भी नहीं चला कि मकास के हाथ में दबा तेज छुरा, कब उसकी हथेली से तीर की तरह छूटा और नैण्टाकॉर्नस की बगल में जाकर गड गया। छुरे की मूठ अब भी झनझना रही थी। बदबूदार साँस और उस खुले हुए भयानक मुँह के भीतर, दाँतों की तीखी पंक्ति, उन्हें अब साफ दिखाई दे रही थीं।

नैण्टाकॉर्नस की गर्म साँस वो अपने आसपास महसूस कर रहे थे। उँफट के पाँव जितने चौडे पंजे ने उनके जिस्म के पास घास को दबाया, गीली घास चरमराई नहीं। तब तक सलार के हाथ में दबे उसके धनुष की डोरी, कई तीखे तीरों को अलविदा कह चुकी थी। 'सन्न' की आवाज के साथ वो तीर, एक–एक करके नैण्टाकॉर्नस की जाँघ में धँस गए।

तभी नैण्टाकॉर्नस की पूँछ से छूटा एक और डंक सन्नाया और सलार के कान के पास से होता हुआ निकल गया। उसका उँफट के पाँव जैसा चौड़ा और धरदार नाख़ूनों वाला पंजा हवा में लहराया और मकास की बाँह को चीरता हुआ निकल गया। जख्म से भलभलाकर खून निकलने लगा। लेकिन उसकी बाँह ने एक झटका लिया और दूसरा खंजर सनसनाता हुआ नैण्टाकॉर्नस की गर्दन में धँस गया। नैण्टाकॉर्नस अब लड़खड़ाने लगा था। उसका चौड़ा पंजा एक बार फिर हवा में लहराया और सलार के सिर पर उसका वार पड़ा, अगर उसने झुकाई देकर खुद को बचाया न होता तो यकीनन उसका सिर, गर्दन से उखड जाता।

उसकी चेतना अँधेरे में डूबती चली गई। मकास ने अपनी झोली में हाथ डाला और एक लम्बा छुरा बाहर निकाला, झन्न की आवाज़ हुई और छुरा इतनी ताकत से नैण्टाकॉर्नस की गर्दन में घुसा कि आरपार निकल गया। चिंघाड और दहाड जैसी एक तेज़ आवाज के साथ वो एक तरफ ढह गया। मकास लड़खड़ाता हुआ उसके पास पहुँचा, तभी जैसे कयामत टूटी, नैण्टाकॉर्नस की पूँछ का जबरदस्त वार उसकी कनपटी पर पडा और वो जैसे अँधेरे की गर्त में गिरता चला गया।

. . . . . .

सलार की आँखें खुलीं तो उसने एक बेहद बूढ़े इन्सान को अपने चेहरे के ऊपर झुके पाया। उसके हाथ में रैटाटॉस्कर का एक गुच्छा था, जिसे वो सलार के होठों पर निचोड़कर उसका अर्क़ निकालने की कोशिश कर रहा था। बूढ़े के सिर के लम्बे सफेद बाल उसकी कमर तक फैले हुए थे। घनी दाढ़ी–मूँछ और पतले–पतले होठों वाले उसके चेहरे पर इतनी झुर्रियाँ थी, जितना किसी युद्ध–स्थल की कच्ची ज़मीन पर रथ के पहियों की लकीरों का जाल।

'होश आने के बाद इंसान दोबारा कभी बेहोश नहीं होता।' बूढ़े ने सलार की आँखों में गहरे तक झाँकते हुए कहा।

इससे पहले, सलार उसकी बात का कोई जवाब देता, उसने घास को मसलकर, अर्क़ उसके होठों पर निचोड दिया। एक कसैला स्वाद उसके हलक पर ऐसे क़ब्ज़ा करता चला गया जैसे टूटे बाँध का पानी किसी गाँव पर छा जाए। उसने अपने चारों तरफ नज़र दौड़ाई तो उसे ऐसा लगा जैसे वो घास की बनी, किसी बड़ी गेंद के भीतर लेटा हो, जिसका व्यास लगभग दस हाथ होगा। जिस पलंग पर वो लेटा हुआ था, वो त्रिभुजाकार था, वो पलंग कम, एक बड़ा त्रिभुज ज़्यादा लग

रहा था।

उसने अपने हाथों का सहारा लेकर उठने की कोशिश की तो घास की बनी वो गेंद, जोर से हिली और ऐसे लहराई कि उसका संतुलन बिगड़ गया। वो आराम से दोबारा पलंग पर बैठ गया। सलार को अब जरूस और मकास की चिन्ता, बरछा–सा चुभो रही थी। उसने घास की बनी गोल दीवारों को गौर से देखा। *नागरमोथा* और *गिलोय* से बनी दीवारों को, किसी अजीब चिपचिपे पदार्थ का लेप करके, एकदम चिकना कर दिया गया था।

'मेरे भाई?' उसने अपनी आवाज़ को सामान्य बनाने की कोशिश करते हुए बूढ़े से पूछा।

बूढ़े का लम्बा लबादा उसकी दाढ़ी के रंग से मेल खा रहा था। वो चलता हुआ घास की दीवार के पास गया और उस पर टँगी चमड़े की एक मशक उतारकर, *बेलपत्थर* के एक कटोरेनुमा खोल को, पानी से लबालब भर दिया। सलार ने गौर किया कि बूढ़े के दीवार तक जाने और आने के दौरान वो गेंदनुमा जगह कतई नहीं हिली। वो ऐसे चल रहा था जैसे जल की सतह पर तैरने वाले **सैल्टीना** कीट।

'वो हिफ़ाज़त से हैं, महफूज़ हैं।' बूढ़े ने पानी का कटोरा उसके हाथ में पकड़ाते हुए गम्भीर आवाज़ में कहा।

सलार के जेहन में अब भी, वहशी आँखों की एक लाल जोड़ी तैर रही थी। नैण्टार्कॉर्नस की गर्म साँस की छुअन उसने अपने चेहरे पर साफ महसूस की थी। वो एक साँस में गटागट सारा पानी पी गया।

'दुनिया के चौदह समन्दर, एक इंसान की भी प्यास बुझाने के लिए काफी नहीं हैं। वैसे एक बूँद पानी, पूरी धरती को डुबोकर भी बचा रह जाएगा।' बूढ़े ने चमड़े की मशक, दोबारा टाँगते हुए कहा।

सलार के जेहन में सैंकड़ों सवाल चक्कर काट रहे थे। बूढ़े ने बिना कुछ कहे दरवाज़ा खोला और बाहर निकल गया। घास की गेंद में अब वो निपट अकेला था। वो आहिस्ता से उठा और संतुलन बनाता हुआ दो क़दम चला। घास का फर्श ऐसे लहराया कि उसका खड़ा रहना मुश्किल हो गया। वो सधे हुए क़दमों से चलता हुआ दरवाज़े तक पहुँचा और धीरे से खोलकर बाहर निकलने के लिए क़दम बढ़ाया। जिस *बेख़ुदी* से उसने बाहर निकलने के लिए पाँव बढ़ाया था, उससे हजार गुना *होश* और भय के साथ उसने क़दम तेज़ी से पीछे

खींचा। उसकी रीढ़ की हड्डी में, डर किसी केंचुए की तरह रेंगने लगा। जिस्म के रोंगटे ऐसे खड़े हो गए जैसे किसी चौकन्ने हिरन के कान।

दरवाज़े के बाहर ज़मीन नहीं थी। उसने नीचे झाँक कर देखा। लगा जैसे सूखी साँस हलक़ में आसन बिछाकर बैठ गई हो। वो ज़मीन से लगभग सौ गज़ ऊपर था। एक ऊँचे, विशाल पेड़ के मज़बूत तने पर घास की वो गेंद लटकी हुई थी। जंगली लताओं और बेलों की मदद से वो ऐसे गुँथी हुई थी जैसे उसने वहीं जन्म लिया हो। नीचे ज़मीन इतनी दूर थी कि उसे कुछ साफ दिखाई नहीं दे रहा था। उसे अब फ़र्श के हिलने की वजह समझ आई। सलार ने बाहर झाँका, पेड़ बहुत बड़ा और विशाल था। उससे थोड़ी दूरी पर चार और घास के झोंपड़ीनुमा गोले हवा में लटके थे। एक गोले से दूसरे गोले तक लगभग बीस अंगुल चौड़ी लकड़ी की एक पट्टी, रास्ते के रूप में जा रही थी।

जरूस के बारे में सलार की चिन्ता बढ़ती जा रही थी। बूढ़ा भी, पता नहीं कहाँ चला गया था। उसे याद आया, जरूस को नैण्टार्कॉर्नस का डंक लगा था, बाँह पर। तभी कुछ दूरी पर लटके घास के एक गोले का दरवाज़ा खुला और वही बूढ़ा दिखाई दिया। उसने सलार को अपनी तरफ़ आने का इशारा किया। लेकिन इतनी कम चौड़ी लकड़ी की पट्टी पर इतनी उँफचाई पर सफ़र करने का ख़याल ही उसके जिस्म में सिहरन पैदा कर गया। उसने आहिस्ता से पट्टी पर अपना पाँव रखा। पट्टी ऐसे हिली जैसे कोई झूला हिलता है। बूढ़े ने उसके असमंजस को देख लिया। वो तेज़ी से उस रास्ते पर चलता हुआ आया। ताज्जुब की बात थी कि इस बार पट्टी ज़रा भी नहीं हिली। ऐसा लग रहा था जैसे उसका मोटा लबादा हवा में तैर रहा हो। लबादे के नीचे पैर भी हैं या नहीं, ये दिख ही नहीं रहा था।

वो सलार के पास आया और बोला, 'मेरे पीछे–पीछे आओ और अपनी आँखें बन्द कर लो।'

सलार हिचकिचाया। बूढ़े ने फिर कहा, 'दुनिया के सबसे बदनसीब लोग वो होते हैं, जो किसी दूसरे के पाँवों के निशान पर चलते हैं। लेकिन तुम बदक़िस्मत नहीं हो क्योंकि छेदरहित बाँसुरी बजाने वाले फ़कीर, चलते वक़्त पदचिन्ह नहीं छोड़ते। इसलिए तुम बेहिचक पीछे आ सकते हो।'

सलार की आँखें हैरत से ऐसे फैल गईं जैसे किसी बन्द पूफल ने एकदम अपनी पंखुड़ियाँ खोल दी हों। जिनकी उन्हें तलाश थी, वो मिल चुके, इस बात पर उसे एकदम भरोसा नहीं हुआ।

सलार ने वँफपवँफपाती आवाज़ में कहा, 'आप..आप ही छेदरहित बाँसुरी बजाने वाले, वो बूढ़े फ़कीर हैं?'

'शवफ, करने का मतलब है कि तुम अभी ज़िन्दा हो। मगर ये *सन्देह* कम, *हैरत* ज़्यादा दिख रही है, नौजवान।' बूढ़ा शान्त भाव से बोला।

सलार ने खुद पर काबू पाते हुए कहा, 'मगर आप तो अकेले हैं, आपके बाकी साथी?'

सलार की बात सुनकर वह धीरे से मुस्कराया।

'वो तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं।' उसके पतले होठों पर स्वर्गिक शान्ति थी।

वो मुड़ा और सलार का हाथ पकड़कर, लकड़ी की उस पट्टी पर आहिस्ता से चलने लगा। सलार ने महसूस किया कि अब हवा में झूलता वो तख्ता बिल्कुल नहीं हिल रहा था। कुछ ही पलों में वो घास के दूसरे गोले में पहुँच गए, जो पहले वाले के बनिस्पत ज़्यादा बड़ा था। उसने देखा, दो त्रिभुजाकार पलंगों पर जरूस और मकास लेटे हुए थे। दोनों के चेहरे पर दर्द या दहशत का अब कोई निशान नहीं था। पास ही शीशे के एक मर्तबान में बिच्छू जैसा एक काला डंक बंद था, जो रह–रहकर छटपटा रहा था। घास के गोले में, तिपाइयों पर एक जैसी ही सूरत वाले चार और बुज़ुर्ग बैठे हुए थे। वो आहिस्ता–आहिस्ता कदम बढ़ाता हुआ अंदर पहुँचा, ताकि गोला हिले नहीं।

उनमें से एक फकीर के होंठ हिले, 'अगर तुम वाकई हमें खोज रहे थे, तो पथहीन नक्शे ने तुम्हे यहाँ तक पहुँचा दिया है।'

संथाल के बेटे चकित थे। ये शब्द तो उस जवान–बुढ़िया यैन्गोल्डा ने उनसे कहे थे, जब वो इस सफर की शुरुआत करने वाले थे। हैरत की बात ये थी, उन पाँचों के चेहरे एक–दूसरे से इतना मिलते–जुलते थे जैसे एक ही पिता की सन्तान हों। मकास हैरत में था।

वही फकीर मुस्कराकर बोला, 'तुम बहुत असावधन और लापरवाह लगते हो, क्या तुमने अपने गुरु के पास ये नहीं पढ़ा कि वायवॉर्न सामूहिक रूप से अपनी रोशनी केवल एक दशा में बुझाते हैं, जब कोई नैण्टाकॉर्नस कहीं आसपास ही हो। नैण्टाकॉर्नस की गन्ध पाकर वो अँधेरे में छुप जाते हैं। वरना पूरा जंगल उनकी रोशनी से जगमगाता है...लेकिन इस मर्तबान से डंक की गंध बाहर नहीं आ सकती।'

जरूस, मकास और सलार, जड़वत् उसकी बात सुन रहे थे, 'लोगों के कपड़े चुराकर पहनने वाली, नीली *बैलाडवोल्गा* चिड़िया ने बता दिया था, तुम आ रहे हो। हमें तुम्हारा इंतज़ार था नौजवानो, तुमने काफ़ी तेज़ी से अपना सफ़र पूरा किया।'

जरूस ने दीवारों की तरफ देखा। घास की दीवारों पर टँगी काँच की बोतलों में घूम रहे वायवॉर्न के जिस्मों से निकलने वाली रोशनी, झोंपड़ी को जगमग कर रही थी।

मकास उठा तो घास का गोला तेज़ी से हिला। वही फ़कीर गुस्से से बोला, 'तुम्हारा संतुलन भी ज़्यादातर लोगों की तरह तुम्हारे केन्द्र पर नहीं है। तुम, एक तरफ़ वज़न रखे हुए तराजू के पलड़े जैसे हो, बैठ जाओ वहीं।'

मर्तबान में रखा नैण्टाकॉर्नस का डंक अब भी मचल रहा था।

'तुम सफ़र पर निकले, इसलिए ख़ास हो, संथाल के बेटो। तुम्हारे तलवों ने रास्ते की धूल चखी है, ध्न्यभागी हो, वरना ज़्यादातर पाँव भूखे पैदा होते हैं और ख़ाली पेट मर जाते हैं।' उसने सर्द लहज़े में कहा।

मकास ने कुछ कहने के लिए मुँह खोला तो वही बूढ़ा फिर बोला, 'कुछ मत कहो नौजवान, क्योंकि अभी तुम जो भी कहोगे, वो केवल उन जानकारियों और शब्दों की उल्टी से ज़्यादा कुछ नहीं होगा, जो ठूँस–ठूँसकर तुम्हारे दिमाग के आमाशय में भर दिए गए हैं। वो कचरा, जो किताबी ज्ञान इकट्ठा करके ज़्यादातर लोगों को घेर लेता है।' घास के गोले में सन्नाटा एकदम नग्न खड़ा था।

वही फ़कीर फिर बोला, 'बाँसुरी सबके पास है, संथाल के बहादुर बेटो।' शून्य को घूरती उसकी निगाहें पता नहीं क्या देख रही थीं। 'तुम जिसकी खोज में निकले हो उसे पाया नहीं जा सकता, जाना जा सकता है। उसने मकास की तरफ़ देखा, 'आदमज़ाद का जिस्म उसकी रूह का क़ैदख़ाना है। ये तुम हो, जो छेदरहित बाँसुरी हो और तुम्हारे जिस्म में छुपे द्वार, जो तुम्हारी रूह को उस क़ैद से आज़ाद कराएँगे। अंतिम दरवाज़ा तुम्हें उस आदिम–धुन तक ले जाएगा, जिसके लिए किसी वाद्ययन्त्रा, किसी बाँसुरी की ज़रूरत नहीं पड़ती। वो बस है, हमेशा से। वो पहली और आखिरी ध्वनि है। वो हर जिस्म के भीतर है, हर जिस्म के दरवाज़ों के पीछे है। ये वो स्थान हैं, जहाँ बाँसुरी के सारे स्वर अन्तिम नाद में बदल जाते हैं। जहाँ न कोई बाँसुरी होती है, न वादक। जिस्म और रूह की सीमाओं से परे, जहाँ मौजूदगी भी बाकी नहीं रहती'

फ़कीर ने अपने,चोग़े की आस्तीन को ऊपर चढ़ाते हुए कहा, 'यही वो हर्फ़ है, जिसे दुनिया की कोई वर्णमाला नहीं

समेट सकती। जब तुम बाहर की बाँसुरी बजाते हो, तब तुम्हारे भीतर की बाँसुरी बस हल्के से लरज कर रह जाती है।'

जरूस पलंग से उतरने की कोशिश में हिला तो हवा में लटका घास का गोला भी पूरा हिल गया।

बूढ़े फकीर ने मुस्कराकर कहा, 'भीतर लहर हो तो बाहर की लहरें कभी पीछा नहीं छोड़तीं। ये तुम्हारे सफर का पहला कदम है संथाल के बेटो, जो तुम्हें बाहर नहीं, भीतर की तरफ धरना होगा। हम तुम्हारे रहबर या रहनुमा नहीं हो सकते, बस शुरुआत भर हैं। आगे की यात्राा तुम्हें खुद तय करनी होगी, उन झलकियों के साथ, जो हम तुम्हें सौंप सकते हैं।'

उसके बाद संथाल के बेटे, हवा में लटकते उन घास के गोलों में एक दिन रुके। वो पाँचों बूढ़े फकीर हर पल उनके साथ थे। वो उनके पास बैठते, उन्हें महसूस करते रहे। उन्होंने बूढ़ों से, उन विधियों के बारे में बात करनी चाही, जो उन्होंने अपने महान गुरुओं के पास सीखी थीं लेकिन बूढ़े ने बस इतना कहा, **'विधियाँ, खूबसूरत तितलियों की तरह हैं, इन्हें पकड़ना, लेकिन इस तरह कि उनके पंखों का रंग, तुम्हारी हथेलियों पर न छूटे।'**

वहाँ उन्हें ये भी पता चला कि दुनिया में इस वक्त, रेत–विद्या का उनसे बड़ा जानकार दूसरा नहीं है, जबकि किसी झोंपड़ी में उन्होंने कभी रेत का एक कण तक नहीं देखा था।

फिर ताँबई बदन वाले जरूस, चाँदी जैसे जिस्म वाले सलार और सुनहरी रंगत वाले मकास ने बूढ़े फकीरों से विदा माँगी। उनके चेहरों पर ऐसी शान्ति थी जैसे जवान बेटी का विवाह करने के बाद किसी बेवा के मुँह पर होती है। वो पहले से अधिक शान्त और ठहरे हुए लग रहे थे। जिस पेड़ पर वो घास के गोले लटके हुए थे, पूरा दिन तीनों भाइयों ने उससे नीचे कदम नहीं रखा था। उन्हे पता चला, पाँचों में से केवल *एक* फकीर बोलता था, बाकी चार हमेशा मौन रहते थे।

उसी फकीर ने, जो बोलता था, उनकी झोलियाँ उन्हें सौंपीं और कहा, 'विदा का वक्त आ गया संथाल–पुत्राो।'

उसने घास की गोल झोंपड़ी के दरवाजे पर लटकती, पेड़ की उस जड़ को थपथपाया, जिससे घास का वो गोला गुँथा हुआ था। मकास की हैरत की इंतहा न रही। बूढ़े के थपथपाने भर से, वो मजबूत जड़ें तेजी से बढ़ने लगीं और घास का वो गोला नीचे धरती की तरफ जाने लगा।

मकास को आश्चर्य से तकते देख वो बोला, 'आश्चर्य मत करो नौजवान, इस वक्त मेरी हथेली की थपथपाहट में ये जड़ें उसी धुन को सुन रही हैं, जिस धुन को अपनी बाँसुरी से बजाकर तुम एक छोटे–से बीज को विशाल वृक्ष में बदल सकते हो। संगीत की हर धुन तुम्हारे भीतर होती है, उसे बाहर लाने के लिए माध्यम का चुनाव हम खुद करते हैं और वो माध्यम तुम्हारी ये बाँसुरी भी हो सकती है और मेरी ये हथेली भी। उसके लिए न होंठ की ज़रूरत है, न बाँसुरी की'

तीनों भाई पहले दिन से ही इस असमंजस में थे कि वो कमज़ोर बूढ़े, उन्हें उठाकर इतनी ऊँचाई पर आखिर लाए कैसे होंगे। घास के गोले में नीचे जाते वक़्त उनके इस सवाल ने अपने आप खुदकुशी कर ली।

सबसे ज्यादा बूढ़ा फकीर, जिसका नाम **फैंगुअस** था, उसने ताँबई रंग वाले जरूस को दो चकमक पत्थर दिए और बोला, **शब्दहीन–शब्दकोश** तक पहुँचो, इससे आगे का रास्ता तुम्हें उसी में मिलेगा। ये पत्थर वो सब जलाकर खाक कर सकते हैं, जो तुम हासिल करोगे। इसलिए इन्हें सावधनी से रखना। कोई हुनरमंद संगतराश किसी पत्थर को मूरत में बदल सकता है और कोई कमअक्ल किसी भी मूरत को पत्थर में, मगर दोनों के बीच, *दिखाई-न-देने-वाली* कोई चीज़ मौजूद होती है, जो पत्थर को मूरत और मूरत को पत्थर में तब्दील करती है, उसे खोजना। लेकिन होशियार रहना, इन पत्थरों को *बौनों* के हाथों से हमेशा बचाना। वो सदैव इनकी ताक में घूमते रहते हैं। यहाँ से मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और कुछ वक़्त तक अपना सफर, तुम्हारे साथ पूरा करूँगा। उसके बाद मैं अपना रास्ता लूँगा और तुम अपना।' तीनों भाइयों ने सहमति में सिर हिलाया।

वो फिर बोला, 'याद रखना, **कोई भी किसी के साथ नहीं चलता। जिसे तुम हमसफ़र समझते हो, दरहक़ीक़त वो अपनी निजी यात्राा पर जा रहा होता है। वो कहीं भी, किसी भी वक़्त अपनी राह पकड़ सकता है। चूँकि तुम उसके लिए तैयार नहीं होते, इसलिए धक्का लगता है। मुसाफ़िरों के किसी भी काफ़िले की आज तक कभी कोई एक मंजिल नहीं रही। बस, अपने हमक़दम और हमसफ़र की मौजूदगी का जश्न मनाओ, जब तक साथ रहो।** पता नहीं क्यों हमें अहसास हो रहा है, कोई चुराई हुई ताक़त के बल पर दुनिया को बदलना चाहता है। लगता है, वो तुम्हें मोहरा बनाना चाहता है मगर ये सन्देश अभी बहुत हल्का है, लेकिन अगर इसमें सच्चाई है तो *जंगल-युद्ध* की शुरुआत होने वाली है।' बस, इसके बाद उनके बीच कोई बातचीत नहीं हुई और वो *अडूसे* के पेड़ों के बीच बनी, एक पतली पगडण्डी पर आगे बढ़ गए।

संथाल के बेटे अपने इस सफ़र पर जितनी एहतियात से चल रहे थे, उतनी ही सावधनी मुझे इस बात के लिए रखनी

पड़ती है कि कहीं पत्थर खोदते वक्त, कोई नोकीली किरच आँख में न चली जाए। आज जब मैं गुफाओं के इस अंतहीन भूलभुलैयाँ में घूमता हूँ और हर दीवार में इस दास्तान के हिस्से खुदे नज़र आते हैं तो मुझे हमेशा लगता है कि मैं अपने पूर्वजों की जवाबदेही का सामना कर पाऊँफगा। अब तो मेरी बूढ़ी उँगलियाँ, अक्षरों को खोदने में काँपने भी लगी हैं लेकिन इस बात की तसल्ली हमेशा रहती है कि मैंने अपना काम काफी पूरा कर लिया लेकिन फ़िलहाल मैं वो वाकिया बताना चाहता हूँ, जिसने तीनों भाइयों में सबसे छोटे मकास को, दुनिया के सबसे पाक अहसास से रू–ब–रू कराया।

मुझे याद आती है, वो बर्बरता, जिसने एक खूनी जंग को जन्म दिया। *प्रकाश-स्तम्भ* का वो रक्षक, जिसके दिल में बरसों से बदले की आग ध्क्क रही थी। पिण्डलियों तक लम्बे अपने बाजुओं और **जैल्कोवा** की लकड़ी से बने मुगदर से, जिसने जंग की किस्मत तय कर दी। दो प्रजातियों के बीच की वो सदियों पुरानी दुश्मनी, जिसने एक ऐसी जंग पैदा की, जिसमें संथाल के बेटों को शामिल होना पड़ा। साथ ही वो *खुर्दबीन, बाँसुरी* और **बैलोबा–मैचस** चिड़िया के नाखूनों को पिघलाकर बनाए गए पासे, जो संथाल के बेटों के सफर में, उनके साथ शक्ति–स्तम्भ बनकर खड़े रहे। मैंने वो सब इन पथरीली दीवारों पर खोद दिया है, जिसे पढ़कर कई बार मेरे जिस्म के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। तब मैं अपनी सफेद पलकें बन्द करके, उनके सफर का साथी बनने की कोशिश करता हूँ। महसूस करता हूँ, जैसे सदियों पहले के उस सफर में, मैं उनके साथ चल रहा हूँ...

गीगा-टर्सिया

अध्याय तीन

बूढ़ा फकीर बार–बार उनसे जिक्र करता कि **कॉफीनस स्पिनडल** ही उन्हें ये जंगल पार कराएगा, मगर बहुत पूछने पर भी, उसने ये नहीं बताया कि ये स्पिनडल, कौन था। उसने बस इतना कहा, 'उसे अपना एक पुराना हिसाब किसी से पूरा करना है।'

तंग आकर संथाल के बेटों ने इस बारे में पूछना ही बन्द कर दिया। कई दिनों के सफर के बाद, अखरोट के इक्का–दुक्का पेड़ नजर आने लगे, उन्होंने कुछ कच्चे अखरोट तोड़कर खाए और *जलकुम्भी* से भरे एक छोटे पोखर से थोड़ा पानी पिया।

जंगल में हर रात, उन्होंने *रैडवुड* के ऊँचे पेड़ों की चोटियों पर चमकती रोशनी का एक बड़ा गोला देखा। ऐसा लगता जैसे कोई प्रकाश–स्तम्भ, दूर जंगल की सीमा को रोशन कर रहा हो लेकिन दिमाग पर ज़ोर डालने के बाद भी, वो नहीं समझ पाए कि वो आख़िर क्या था। रास्ते में फैगुअस ने उन्हें जंगल में रहने वाले **स्टैगाटॉर्स** के बारे में बताया, बुद्धिमान और बेरहम स्टैगाटॉर्स, जिनका कमर से नीचे का हिस्सा शक्तिशाली बारहसिंघे का और उस से ऊपर का जिस्म इंसान का होता है। उसने बताया कि कैसे ये पवित्र प्राणी सदियों से इन जंगलों में अपनी बस्तियाँ बनाकर रहते हैं। फैगुअस ने उन्हें बताया कैसे अपने युद्धकौशल और शक्तिशाली भुजाओं के कारण स्टैगाटॉर जंगल के सबसे अचूक धनुर्धर बन गए।

'ये **स्कॉर्पीडथ** का पेड़ है।' फैगुअस ने एक मोटे तने के अजीब से पेड़ की तरफ इशारा करते हुए कहा। 'स्कॉर्पीडथ की लकड़ी, बिच्छू और मकड़ी के ज़हर के लिए सबसे बड़ा ज़हर होती है। अगर इसकी नोक किसी बिच्छू या मकड़ी के जिस्म में चुभा भर दी जाए तो कुछ ही लम्हों में उसका जिस्म पानी की तरह पिघलकर बह जाएगा। लेकिन स्कॉर्पीडथ का फल इतना सख़्त और कड़वा होता है कि केवल एक जीव ही इसे खाकर पचा पाता है। वो है **कैमल्योफ़ैण्ट**, जिसके पेट में इतनी गरमी होती है कि स्कॉर्पीडथ का छिलका गलकर टूट जाता है और बीज, गोबर के साथ बाहर निकल जाते हैं। वही बीज दोबारा उगकर नए पेड़ को जन्म देते हैं।'

जगह–जगह फैगुअस उन्हें जंगली बूटियों और औषधियों की जानकारी देता जा रहा था। आहिस्ता–आहिस्ता जंगल बहुत घना होता जा रहा था। फिर झाड़ियाँ और पेड़ इतने सघन हो गए कि उन्हें उनके बीच से रास्ता बनाकर निकलना मुश्किल हो गया। उनके पाँवों के नीचे दबकर चरमराते सूखे पत्ते, ख़ामोशी के बेसुरे खर्राटों से अधिक कुछ नहीं लग रहे थे।

अचानक सनसनाता हुआ एक पंखदार तीर 'सॉंय' की आवाज़ के साथ उनके बीच से निकल गया। अगर फ़ैगुअस ने सलार को गर्दन पकड़कर नीचे न झुका दिया होता तो यक़ीनन वो उसकी कण्ठनलिका में धँस गया होता। इस अचानक हुए हमले से वो स्तब्ध रह गए।

फ़ैगुअस ने सीध होते हुए कहा, 'हम स्टैगाटॉर्स के इलाक़े में हैं। होशियार रहना, ज़रा–सी लापरवाही तुम्हारी जान ले सकती है।'

काई जमे हुए पेड़ों के मोटे तनों के बीच से, कुछ भी देख पाना मुश्किल था लेकिन उन्हें अपने आसपास हलचल साफ़ दिखाई दे रही थी। **फ़ारसीथिया** की घनी झाड़ियों और रैडवुड के उँफचे पेड़ों के बीच, ऐसी आवाज़ें आ रही थीं जैसे एक साथ कई भारी जीव, अपने सख़्त खुरों से सूखे पत्तों को कुचल रहे हों। एक और सनसनाता हुआ तीर मकास के कन्धे के पास से गुज़रा।

उसने खुद्दार तरीके से ललकारा, 'जंगल, हर छिपी हुई दुष्टता और ढँकी हुई कायरता को पी जाता है। योद्धाओं के खून से सभ्यताओं के बीज पनपते हैं। तुम जो भी हो, अगर वाक़ई साहसी हो तो सामने आकर हमला करो।'

कुछ नहीं हुआ। मकास की बात पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वो चारों एक–दूसरे की तरफ पीठ किए, सावधनी से हर तरफ देख रहे थे जैसे पता नहीं कब, किस दिशा से कोई तीर आकर पार निकल जाए। फिर हरी पत्तियों और तनों के बीच से एक आकृति नमूदार हुई। ये एक शक्तिशाली *स्टैगाटॉर* था, उसके हाथों में लचकदार सींग से बना हुआ, एक मजबूत धनुष था, जिसकी लम्बाई जरूस के कद से भी ज़्यादा थी। उसने धनुष का लम्बा सिरा, ज़मीन पर अपने सख़्त खुर के पास टिकाया। कमर तक लहराते अपने लम्बे और घने काले बालों को, उसने जंगली बेल से कसकर बाँध रखा था। बलिष्ठ मांसपेशियों और शक्तिशाली जिस्म के साथ, उसका मन्त्रामुग्ध कर देने वाला सौन्दर्य हैरत में डाल देने वाला था।

उसने अपने पतले गुलाबी होंठों पर लम्बी जीभ फिराते हुए कहा, 'इस पवित्रा जगह पर अजनबियों की आमद प्रतिबन्धित है, तीनों युवकों और अकेले बूढ़े। तुम्हें *दो* बार चेतावनी दी गई लेकिन तुमने उसे नज़रअंदाज कर दिया, यानि तुम दुश्मन के भेदिये हो।' उसने बारी–बारी से चारों की तरफ देखते हुए कहा।

फिर फ़ारसीथिया की झाड़ियों और रैडवुड के पेड़ों के बीच से एक–एक करके स्टैगाटॉर्स का जैसे पूरा जत्था निकल आया। उन्होंने चारों तरफ घेरा बना लिया।

हर स्टैगाटॉर के हाथों में अपने सिर जितना ऊँफचा, सींग का बना हुआ लम्बा धनुष था। एक लम्बा तरकश उनके बलिष्ठ कन्धे पर टँगा हुआ था, जिसमें हल्के पंखदार तीर भरे हुए थे। मकास ने पहली बार उसे गौर से देखा, उनमें से कुछ के हाथों में गोबर के बड़े–बड़े चौथ थे, जिनकी वजह से उनके हाथ कुहनियों तक सने हुए थे लेकिन बाकी सभी के लम्बे धनुष, उनकी तरफ तने हुए थे, जिन पर एक–एक नुकीला तीर खिंचा हुआ था।

फैगुअस ने आगे बढ़कर कहा, 'स्टैगाटॉर बेरहम होते हैं लेकिन बेवजह किसी की जान नहीं लेते नौजवान। हम दुश्मन नहीं हैं। शायद दोस्त भी नहीं हैं लेकिन इन दोनों के बीच भी बहुत कुछ होता है। लेकिन मैं तुमसे नहीं **ग्लैडीलस हूफ़** से बात करना चाहूँगा। शायद वो तुम्हें इस उद्दण्डता का सही दण्ड दे सके।' एक पल के लिए माहौल में पूरी तरह चुप्पी छा गई।

'...और तुम उन्हें कैसे जानते हो बुजुर्ग मुसाफ़िर?' सबसे आगे वाले उसी स्टैगाटॉर ने अपने खुर ज़मीन पर पटकते हुए पूछा।

'हम्मम...इसका जवाब तुम्हें उन चाबुकों की भाषा में मिलेगा, जिनके निशान ग्लैडीलस तुम्हारी चौड़ी पीठ पर छोड़ने वाला है।' फैगुअस ने निडरता से कहा। अब सारे स्टैगाटॉर हैरत से एक–दूसरे की तरफ़ देख रहे थे।

'तो अब जाओ, जाकर उससे कहो, फैगुअस आया है।' बूढ़े फ़कीर ने

गर्वीले स्वर में जैसे आदेश–सा दिया।

सबसे आगे वाला स्टैगाटॉर अब विचलित नज़र आ रहा था। उसने संकेत किया और बाक़ी सबने, अपने–अपने धनुष नीचे कर लिए।

तभी स्टैगाटॉर के समूह में से कोई एक चिल्लाया, **'याहून...याहून।'**

इस आवाज़ को सुनकर जैसे वहाँ अफ़रा–तफ़री मच गई। कई स्टैगाटॉर इस तरह से झाड़ियों के ऊपर चढ़ दौड़े, जैसे सोती हुई बिल्ली की पूँछ पर हाथी का पाँव पड़ गया हो। इस अचानक मची भगदड़ के कारण, वो चारों उनके खुरों के नीचे कुचलते–कुचलते बचे। तभी 'सन्न–सन्न' करते कुछ छोटे तीर, एक स्टैगाटॉर के पेट में धँस गए। एकदम जैसे ख़ून का फ़ौव्वारा छूट पड़ा। फैगुअस ने तीनों भाइयों को पेड़ के एक मोटे तने के पीछे घसीट लिया। बूढ़े की फुर्ती और ताक़त देखकर ऐसा लग रहा था जैसे उसके भीतर कोई शैतान समाया हो।

उन्होंने देखा स्टैगाटॉर्स पर चारों तरफ़ से तीरों की बौछार हो रही थी। झाड़ियों और घने पेड़ों के बीच उन्हें *वो* दिखे, जिन्होंने यह क़यामत बरपाई थी। वो *याहून* थे, जिनका जिस्म विशाल मकड़े का था, कमर से ऊपर इंसान और बिच्छू जैसी लम्बी पूँछ, जिस पर चमकता ख़तरनाक डंक हवा में ऐसे तना हुआ था जैसे कोई किसान, ज़मीन खोदने के लिए अपनी कुदाली सिर से ऊपर उठाए होता है। उनके हाथों में छोटे मगर शक्तिशाली धनुष थे, जिनसे वो लगातार तीरों की बरसात कर रहे थे। कई स्टैगाटॉर ज़मीन पर पड़े तड़प रहे थे। उनके मुँह से नीले झाग निकल रहे थे। यक़ीनन वो याहूनों के ज़हरीले डंकों के शिकार हो गए थे। कुछ के जिस्मों से रक्त की धार बह रही थीं।

'पिछली दो सदियों से याहूनों और स्टैगाटॉर्स के बीच की इस दुश्मनी को मैं भी देख रहा हूँ। मगर खून की ये अनबुझ प्यास हमेशा भड़कती ही दिखाई दी है, कभी शान्त नहीं हुई।' फैगुअस ने धीमे से फुसफुसाकर कहा।

उन्होंने चारों तरफ़ देखा। स्टैगाटॉर्स में भगदड़ मची थी। अचानक हुए इस हमले से वो संभल नहीं पाए थे। केवल वो

योद्धा, याहूनों पर अपने घातक तीरों की बौछार कर रहा था, जिसने उन चारों को ललकारा था।

जरूस ने महसूस किया कि वो उस युद्ध–स्थल से काफी पीछे आ गए हैं। उसे ताज्जुब हुआ, उनमें से किसी ने भी खुद को उस जगह से हिलते हुए नहीं महसूस किया था और वो वहाँ से इस वक्त काफी दूर खड़े होकर उस खूनी मंजर को देख रहे थे। उसने ऐसी नजर से सलार की तरफ देखा, जैसे पूछ रहा हो–'क्या तुमने भी वही महसूस किया, जो मैंने किया है?'

बूढ़ा फकीर उनकी तरफ देखकर मुस्कराया जैसे उनके मन की बात समझ गया हो। मारकाट की आवाजें इस वक्त काफी दूर से सुनाई दे रही थीं। बूढ़े ने उन तीनों की तरफ देखते हुए कहा, **'दुश्मनी, धतु के उस कँटीले कमरबन्द की तरह है, जिसे ष्यादातर लोग कपड़ों के नीचे छुपाकर पहनते हैं। उसमें बाहर कोई पच्चीकारी या नक्क़ाशी नहीं होती, बल्कि भीतर की तरफ़ चालबाषी, हिंसा और इंतक़ाम की धतु के नुकीले काँटे निकले होते हैं, जो रह–रहकर हिलते रहते हैं, घाव बनाते रहते हैं। अंत में ये षख़्म इतने सड़ जाते हैं कि पहनने वालों को खा ही जाते हैं।'**

अब तीरों की सनसनाहट और मारकाट की आवाजें एकदम शान्त हो गई थीं। बूढ़े फकीर ने उन्हें बताया कि कैसे सदियों से इन दोनों प्रजातियों के बीच जंग जारी थी। याहून केवल मजे के लिए स्टैगाटॉर्स पर हमला करते। स्टैगाटॉर्स उनका भोजन नहीं थे लेकिन याहून थोड़ा बहुत खाकर उनकी लाशों को जंगल में सड़ने के लिए छोड़ देते। उसने उन्हें ये भी बताया कि याहूनों के जिस झुण्ड के साथ स्टैगाटॉर्स की ये झड़प उन्होंने देखी, दरअसल वो उन हजारों याहूनों का एक छोटा–सा हिस्सा भर था, जो जंगल के दूसरे छोर पर रहते हैं। स्टैगाटॉर्स ने जितनी बार भी सुलह की कोशिशें कीं, सब नाकाम कर दी गईं। उसने उन्हें बताया कि बेरहमी और वहशीपन, याहूनों की नसों में जहर की तरह तैरता है। दगाबाजी और कपट उनकी नस–नस में भरा हुआ है।

फैगुअस ने मकास की तरफ देखते हुए, **नार्सीनस** के उस खुशबूदार फूल को तोड़कर अपने लबादे में रख लिया, जो उसके पास की झाड़ी पर खिला था। उसने दोबारा कहा, **'जंग कभी नहीं मरती, केवल योद्धा मरते हैं। वो समय कभी नहीं था, जब इस षमीन पर युद्ध नहीं था। वो वक़्त भी कभी नहीं होगा, जब इस षमीन पर युद्ध नहीं होगा। ये हमेशा मौजूद रहता है, किसी न किसी रूप में। बस जगह और लड़ने वाले बदलते हैं, बस हथियार और हाथ बदलते हैं।** मैंने इतनी लड़ाइयाँ देखीं, जितनी मेरी उम्र भी नहीं है। मेरी बूढ़ी आँखों ने बौनों और दानवों का वो भयानक युद्ध भी देखा है, जिसमें दानवों की हार केवल इस वजह से हुई क्योंकि उनके जिस्म इतने भारी थे कि वो अपने ही वज़न से उस दलदल में डूब गए, जिस तक बौनों का सरदार **पियोनी** उन्हें पीछे हटाता हुआ ले गया था और हाँ, ड्रैगन और अजगरों के बीच की वो जंग, जिसमें पूरे जंगल में केवल केंचुलियाँ और चमगादड़ जैसे पंख बिखर गए थे।'

फैगुअस ने उन्हें बताया कि जंगल से बाहर निकलने के महज़ दो रास्ते हैं। पहला स्टैगाटॉर्स की बस्ती से होकर गुजरता है और दूसरा याहूनों की बस्ती से। याहूनों की बेरहमी और हिंसा वो देख चुके थे। उन्होंने ये भी देखा कि स्टैगाटॉर्स केवल आत्मरक्षा के लिए लड़ रहे थे, उन पर पहले हमला भी याहूनों ने ही किया था। काफी सोचविचार के बाद उन्होंने स्टैगाटॉर्स की बस्ती से होकर गुज़रने का फ़ैसला किया।

बारहसिंघे जैसे वो प्राणी, उन्हें याहूनों से कम ख़तरनाक और रहमदिल प्रतीत हुए, जबकि फैगुअस ने उन्हें बताया था कि बेरहमी में स्टैगाटार्स किसी से कम नहीं है, लेकिन उन्हें लग रहा था, वो बेवजह खून बहाना शायद पसन्द न करते हों।

'याहून बहुत बेरहम और क्रूर है, हमें स्टैगाटार्स की बस्ती से होकर ही गुज़रना चाहिए।' सलार ने आहिस्ता से कहा।

फैगुअस ने माथे की सलवटों को खोलते हुए कहा, **'वुफछ बिच्छुओं की आदत इंसानों जैसी होती है और ष्यादातर इंसानों की फ़ितरत बिच्छू जैसी।'** बूढ़े की बात पर तीनों बस ख़ामोश रह गए।

काफी दूर तक चलने के बाद भी, उनके लफ़्ज़, ख़ामोशी की कुण्डली में ऐसे भिंचे रहे जैसे अजगर की पकड़ में हिरन का बच्चा। कोई कुछ नहीं बोल रहा था। फिर उन्हें एक बड़ा मैदान दिखाई दिया, जिसके बीच एक ऊँची पथरीली पहाड़ी थी। उस पहाड़ी में सैंकड़ों गुफाओं के खुले प्रवेश ऐसे नज़र आ रहे थे जैसे सौ सिर वाले कछुए ने अपना मुँह खोल दिया हो। लगभग हर द्वार के बाहर खड़े ऊँचे और क़द्दावर स्टैगाटॉर्स नज़र आ रहे थे, अपने लम्बे धनुषों के साथ। ये स्टैगाटॉर्स की बस्ती थी...**गीगा–टर्सिया**, जो एक अज्ञात भविष्य के साथ उनका इंतज़ार कर रही थी।

गाँववालों को उनके जाने के बाद कोई ख़बर नहीं मिली कि वो कहाँ और किस हाल में हैं। न तो उन्हें संथाल के बेटों की उस मुलाकात की कोई ख़बर थी, जो गीगा–टर्सिया के बूढ़े शासक ग्लैडीलस हूफ़ के साथ हुई, न ही उन्हें उस

युद्ध के बारे में पता था, जो तीनों भाइयों को अनचाहे ही लड़ना पड़ा। फिर ग्लैडीलस की बेटी, उस खूबसूरत और जवान मादा स्टैगाटॉर के बारे में तो क्या पता होता, जो स्वर्ण–प्रतिमा जैसे सुनहरे बदन वाले मकास के प्रेम में डूब गई थी।

किसी नर मानव और मादा अर्द्ध–मानव के बीच की इस अनोखी मुहब्बत से वो उतने ही अनजान थे, जितना कोई गुबरैला उँफटनी के दूध से। उन तक अगर तीनों भाइयों की कोई खबर आती तो वो बस उन हवाओं के माध्यम से, जिनके बारे में वो भोले आदिवासी महसूस करते थे कि वो ज़रूर उन्हें छूकर, उनकी खैरियत का परवाना लाई हैं।

पर्सीना पार्सो हूफ...यही नाम था उस खूबसूरत मादा स्टैगाटार का। पर्सीना की अक्लमन्दी और युद्धकौशल का लोहा पूरा गीगा–टर्सिया मानता। उसके धनुष से निकले तीर, याहूनों के जिस्म को ऐसे चीरते जैसे कोई बढ़ई अपने बसूले से बाँस चीरता है। मुझे याद है, रेत–घड़ी से रिसने वाला रेत बहुत धीमा हो गया था। किसी अज्ञात कारण से फैगुअस ने उन्हें अभी जंगल पार करने से मना किया था।

बीच–बीच में याहूनों के छोटे–मोटे हमले, उन स्टैगाटॉर्स पर हुए, जो जंगल में किसी वजह से अकेले थे। एक दिन उस बहादुर स्टैगाटॉर की लाश गीगा–टर्सिया में आई, जिस से सबसे पहले दिन तीनों भाइयों की मुलाकात जंगल में हुई थी...वो **लायलस हूफ** था, पर्सीना का बड़ा भाई, ग्लैडीलस का बेटा। उसका पूरा जिस्म जहर की वजह से काला पड़ गया था।

शव के चारों तरफ फुसफुसाहटें थीं–'उसे सन्धि के लिए भेजा गया था। ये दगाबाजी है।'

लायलस का शव अपने साथ युद्ध लेकर आया था।

पर्सीना की बारहसिंघे जैसी बड़ी–बड़ी आँखों का खारापन कम करने के लिए मकास ने उसे तसल्ली दी, 'आँसू की बूटियाँ, मौत के जहर को नहीं उतार सकतीं पर्सीना...खुशी के कवच पर दुःख का बाण हँसकर सहन करो।''

तीनों ने उससे पहले फैगुअस को कभी चीखते नहीं देखा था। वो सलार की तरफ देखकर गुर्राया–'क्या तुम भी उन्हीं पाखण्डियों की जमात में से एक हो, जो *सुख* और *दुःख* में एक समान रहने का बेहूदा फलसफा पढ़ाते हैं। जो हँसी और आँसू दोनों को एक जैसा जीकर, कुदरत का मज़ाक उड़ाते हैं। तुम दुख में हँसकर, अपने होठों के ताबूत में मुस्कान की लाश तो लिटा सकते हो लेकिन तुम भीतर से जानते हो कि मुस्कराहट के इस शव से दुर्गन्ध आ रही है। तो फिर क्यों नहीं अगवानी करते हँसी की ताकि खुलकर हँस सको, क्यों नहीं तहेदिल से स्वागत करते आँसुओं का ताकि डूबकर रो सको।'

कोई कुछ नहीं बोला, फैगुअस के होंठ भी अब सिल गए थे। लायलस के शव पर भिनभिनाती *ड्रोसेफिला* मक्खियों के नीले पंखों के सिवाय और कोई आवाज़ नहीं हो रही थी। ग्लैडीलस ने संथाल के बेटों को बताया, कैसे याहून अब तक स्टैगाटॉर्स की सैंकड़ों लाशों के लिए ज़िम्मेदार थे। अवसर मिलने पर उन्होंने छोटे–छोटे बच्चों तक को नहीं बख़्शा। पिछली यादों की कंकर, स्टैगाटॉर्स की आँखों में किरक–किरक कर, लहू–सी सुर्ख़ी पैदा कर रही थी।

सुबह होने में अभी देर थी। आसमान पर सितारों की हल्की चमक बरकरार थी। फिर युद्ध की रणभेरी का सीना गर्व से फूल गया। स्टैगाटॉर्स के लम्बे धनुषों और तीखे तीरों की अँगड़ाइयाँ खुल गईं। जंग, किसी नेवले की तरह दो पंजों पर उचक कर, उन्हें दूर से देख रही थी।

मकास ने पर्सीना की आँखों में झाँकते हुए कहा, 'उन्होंने धोखा किया है, दगाबाज़ी की सज़ा उन्हें ज़रूर मिलेगी पर्सीना, हम इस धर्मयुद्ध में तुम्हारे साथ हैं।'

पैफगुअस ने संथाल के बेटों के जिस्मों को निहारते हुए कहा, **'धर्मयुद्ध जैसी कोई चीज़ इस धरती पर कभी नहीं रही। तुम या तो युद्ध के पक्ष में होते हो या विपक्ष में। तुम तटस्थ भी हो सकते हो लेकिन अगर तुम्हें युद्ध का पता है और तुम तटस्थ हो तो भी तुम जंग का हिस्सा हो, उनसे कहीं अधिक, जो मर रहे हैं या मार रहे हैं।'**

चाँदी जैसी रंगत वाले सलार ने ऐसे उसकी तरफ़ देखा जैसे कुछ कहना चाहता हो मगर फिर चुप हो गया। मैदान के बीच उस गुफादार पहाड़ी के भीतर ऐसा माहौल था, जैसे किसी घड़े के भीतर अंधे भँवरों का झुण्ड भर दिया हो और वो उसकी दीवारों से सिर टकरा रहे हों।

सैंकड़ों गुफाद्वारों से स्टैगाटॉर्स की बड़ी तादाद बाहर निकल रही थी। उनके खुरों की सख़्त आवाज़, जंगली अमन के हुस्न पर बदनज़र डाल रही थी। उनके गठीले और मांसल कन्धे पर टँगे, लचीले सींग से बने धनुष, ज़मीन को छू रहे थे। हज़ारों तरकशों में भरे, लाखों नोकीले तीर, अभी समाधिस्थ योगियों की तरह शान्त थे। पर्सीना जंग की अगुवाई में थी।

कूच करने से पहले उसने अपने बूढ़े पिता ग्लैडीलस से इजाज़त ली, 'स्कॉर्पीडथ की लकड़ी से बने दुर्लभ तीर, उन बेरहम याहूनों का इंतजार कर रहे हैं।'

ग्लैडीलस ने केवल सहमति में अपना सिर हिलाया। जंग, किसी अज़दहे की तरह, जंगल के भीतर पेट के बल सरक गई। स्टैगार्टोर्स की फौज वूफच कर चुकी थी।

संथाल के तीनों बेटे फौज के साथ नहीं गए। उन्होंने जंग में हिस्सा लेने का फ़ैसला किया लेकिन फ़ैगुअस ने उन्हें थोड़ा रुकने को कहा। मकास से जब नहीं रहा गया तो उसने फ़ैगुअस से पूछा, 'आख़िर हम कायरों की तरह यहाँ क्यों रुके हुए हैं? जंग हमारा इंतजार कर रही है और हम यहाँ ठहरकर किसी और का इंतज़ार कर रहे हैं। क्या खूब...फ़ैगुअस! मैं पर्सीना की मदद के लिए जा रहा हूँ, आप लोग जब आना चाहें आएँ।'

फ़ैगुअस ने महज़ इतना कहा, 'उतावलेपन की डोरी पर रखकर छोड़ा गया जोश का तीर, लक्ष्य का दोस्त होता है, वो कभी अपने मित्रा को नहीं भेदता। प्रतीक्षा करो और उकताहट को, अपने जूते गाँठने का काम सौंप दो नौजवान...!'

मकास ने उसके बाद कुछ नहीं कहा। ग्लैडीलस और फ़ैगुअस की निगाहें, उस छोटी–सी पगडण्डी पर लगी थीं, जो जंगल की तरफ़ से गीगा–टर्सिया की ओर आ रही थी। एक–एक पल, ज़ख्मी कछुए की तरह खिसक रहा था।

फिर दूर पगडण्डी पर उन्हें एक परछाई आती हुई नजर आई। वो काफी दूर था, इसलिए कुछ साफ नहीं दिख रहा था। ग्लैडीलस और फ़ैगुअस के चेहरे पर सुवूफन जैसे चटाई बिछाकर लेट गया। संथाल के तीनों बेटों की आँखों में उत्सुकता और जिज्ञासा के इतने भाव तैर रहे थे जैसे किसी शान्त झील की सतह पर, भूसे की गठरी खुलकर तैर गई हो। वो लगभग इतना उँफचा था कि अपनी लम्बी टाँगों पर खड़ा ग्लैडीलस भी उसकी कमर तक ही आता।

हर कोई उसे सिर ऊपर उठाकर देख रहा था। सबसे ज़्यादा हैरतअंगेज़ थे उसके बाज़ू, जो इतने लम्बे थे कि ज़मीन पर उसकी एड़ी को छू रहे थे। शक्तिशाली भुजाएँ, जिन पर नेवले जैसे लम्बे–लम्बे सुनहरे बाल उगे थे। पूरा बदन घने, सुनहरे बालों से ढँका हुआ। जिस्म इंसान का मगर *गोरखमुण्डी* घास के ऊपर रखे पाँव, किसी मेंढक की तरह जालीदार और चौड़े थे। हाथों की उँफगलियाँ किसी चिम्पैंजी की तरह लम्बी और गठीली। बड़ी–बड़ी लाल–लाल आँखें और पतले होंठों के बीच लपलपाती, गोह जैसी लम्बी जीभ, जो बीच में से दो हिस्सों में चिरी हुई थी। तीखे, तेज़ नाखून और बेपनाह ताकत का मालिक। उसकी कमर पर *जैल्कोवा* की लकड़ी से बना हुआ, एक भारी–भरकम, कँटीला मुगदर बँध हुआ था, जो देखने भर से इतना वज़नी लग रहा था कि तीनों भाई मिलकर भी उसे हिला न पाते।

'आओ *कॉर्फ़ीनस स्पिनडल*...ये बूढ़ा ग्लैडीलस तुम्हारा स्वागत करता है। गीगा–टर्सिया की वादियाँ तुम्हारे नंगे पाँवों की कब से बाट जोह रही थीं।'

ग्लैडीलस ने उस विशालकाय बला की तरफ़ हक़ से देखते हुए कहा।

फ़ैगुअस ने अपने बूढ़े कण्ठ से जैसे किलकारी–सी भरी और स्पिनडल ने उसे अपनी लम्बी भुजाओं से उठाकर, अपने चौड़े कन्धे पर बैठा लिया। ऐसा लग रहा था जैसे जनम–जनम के बिछड़े यार अब जाकर मिले हों। संथाल के तीनों बेटे, ऐसे उन तीनों का मिलन देख रहे थे जैसे कोई बच्चा मैदान के किनारे बैठकर, बड़ों का खेल देखता है।

'तुम्हारी भेजी, *दीमक-की-रूह* ने जैसे ही सन्देश दिया, मैं प्रकाश–स्तम्भ की रोशनी बन्द करके तुरन्त चला आया।' स्पिनडल ने ग्लैडीलस की तरफ़ देखते हुए ऐसी आवाज़ में कहा जैसे दो चट्टानें आपस में रगड़ खा गई हों।

फ़ैगुअस ने स्पिनडल के सामने पहली बार अपनी बूढ़ी आवाज़ का विमोचन किया, 'हम बेसब्री से तुम्हारा इंतज़ार कर रहे थे। वक़्त बहुत कम है, जंग शुरू हो चुकी है। तुम आज अपना *पुराना हिसाब* चुकता कर लेना, स्पिनडल।'

स्पिनडल ने अपने चौड़े, जालीदार हाथ से, कमर पर बँध भारी–भरकम मुगदर उतार लिया जैसे याहूनों के सिर कुचलने के लिए व्याकुल हो रहा हो। फिर उसने पहली बार संथाल के तीनों बेटों की तरफ़ हैरानी से देखा जैसे पूछ रहा हो–'ये कौन हैं?' लेकिन उसने पूछा नहीं।

ग्लैडीलस उसकी आँखों में तैरते प्रश्नवाचक चिन्ह को समझ गया और बोला, 'इनके बारे में बाद में तुम्हे सब बताउँफगा, फ़िलहाल इतना समझ लो कि ये मित्रा हैं। अब हमें चलना चाहिए।'

डेल्टिन का मैदान, युद्धस्थल बन गया। ये जंगल के बीच, बहुत बड़ी खुली हुई घासदार जगह थी। याहूनों को स्टैगार्टोर्स के हमले की भनक लग गई। वो पूरी तैयारी के साथ आगे बढ़े और डेल्टिन के मैदान में दोनों सेनाओं का सामना हुआ। संथाल के तीनों बेटे और बूढ़ा फ़ैगुअस, एक–एक शक्तिशाली स्टैगार्टॉर की पीठ पर सवार हो गए। स्पिनडल की बीच में से चिरी हुई, गोह जैसी जीभ, बार–बार बाहर लपलपा रही थी। बालों से भरा उसका पूरा बदन और जमीन को

छूती लम्बी भुजाएँ, जंग तक पहुँचने के लिए बेताब नज़र आ रही थीं।

लैन्टाना की घनी झाड़ियों और **किप्टन** लताओं के बीच से गुजरते हुए, उन्हें कुछ ही देर हुई थी कि हथियारों की खनखनाहट ने उनका ध्यान ऐसे खींच लिया जैसे जेवरों की खनक, सुनार को अपनी तरफ़ खींच लेती है। डेल्टिन का मैदान...हजारों की तादाद में स्टैगाटॉर्स और याहून, एक–दूसरे से भिडे हुए थे। सनसनाते तीरों और तलवारों की खचाखच। जगह–जगह याहूनों के कटे हुए डंक और पूँछ पडी हुई थीं।

थोड़ी–थोड़ी दूरी पर उन स्टैगाटॉर्स के बेदम जिस्म पडे थे, जिनके मुँह से अब भी नीला झाग निकल रहा था। याहूनों के जिस्म से निकला चिपचिपा नीला पदार्थ हर तरफ़ पैफला था तो स्टैगाटॉर्स के जिस्मों से निकला सुर्ख़ रक्त भी ज़मीन पर ऐसे बिखरा हुआ था जैसे किसी चित्राकार ने लाल रंग में अपनी कूची डुबाकर, अनाड़ीपन से छिटक दी हो।

स्पिनडल ने अपनी लम्बी भुजाओं और चौडी जालीदार हथेली से, दो याहूनों की पूँछ एक साथ मुट्ठी में भरी और 'फच्च' की आवाज़ के साथ, उसके भारी मुगदर ने, उनके डंकों के चिथडे छितरा दिए। डंक के छोटे–छोटे टुकडे ऐसे हवा में बिखर गए जैसे किसी बच्चे ने जंगली खीरे पर भारी पत्थर पटक दिया हो। गोह की तरह लपलपाती, बीच में से चिरी हुई उसकी जीभ अब और भी खतरनाक लग रही थी। चार याहून तेज़ी से उसकी तरफ़ बढे और सनसनाते हुए कई तीरों ने उसके विशाल बदन को निशाना बनाया लेकिन वो बालों से भरे उसके जिस्म में गड नहीं सके। स्पिनडल ने अजगर जैसे अपने बाजुओं से, एक ही झपट्टे में चारों की पूँछ जकड ली और उन्हें तब तक बेरहमी से मरोड़ता रहा, जब तक वो टूटकर अलग नहीं हो गईं।

इस नए जत्थे के आ जाने से स्टैगाटॉर्स के भीतर जैसे नई जान आ गई। मकास तेज़ी से पर्सीना की तरफ़ बढ़ा, जिसके चारो पाँवों से इस वक्त एक पूँछकटा याहून चिपटा हुआ था, जो अपने हाथ में पकडे धरदार खंजर को पर्सीना की जाँघ में घुसाने की कोशिश कर रहा था। उसके हाथ से सनसनाते हुए दो खंजर, उस याहून के जिस्म में धँस गए। एक ही पल में वो ज़मीन पर ढेर हो गया। पर्सीना के गठीले जिस्म से जगह–जगह से ख़ून रिस रहा था। मगर वो मकास की तरफ़ देखकर, एक बहादुर योद्धा की तरह मुस्कराई।

तभी 'साँय' की आवाज़ के साथ एक तीखा तीर, मकास के कान की लौ को छूता हुआ गुजरा। वो स्तब्ध रह गया। उसने पलटकर देखा, उसकी पीठ के ठीक पीछे हमला करने वाले एक याहून की आँख में धँसा तीर काँप रहा था। उसने सामने देखा, पर्सीना के धनुष की डोरी अब भी झनझना रही थी। स्कॉरपीडथ की लकड़ी से बना तीर लगते ही, याहून का जिस्म पानी की तरह पिघलकर बह गया।

बूढ़ा फकीर फैंगुअस और ग्लैडीलस एक साथ मिलकर याहूनों का सामना कर रहे थे। ग्लैडीलस के हाथों में लोहे की एक लम्बी संडासी थी, जिसका आकार ऐसा था, जैसे झाड़ियाँ काटने वाली कैंची का होता है। उसने अपनी संडासी से क़यामत बरपा रखी थी। याहूनों की पूँछ को वो ऐसे कतर रहा था जैसे कोई माली, झाड़ियाँ और पौधे कतरता है। फैंगुअस एक लचीले धनुष के साथ याहूनों पर तीरों की बरसात कर रहा था।

मुझे याद है, ये जंग लगभग पूरा दिन चली। दोनों तरफ़ से योद्धाओं के जिस्म कटकर ज़मीन पर गिर रहे थे। थकान ने, दोनों ही पक्षों को ऐसे ढँक रखा था जैसे तीन सिर वाला **वैल्किन** गिद्ध, अपने चूज़ों को विशाल डैनों में छुपा लेता है। मगर वे लड़ रहे थे। इस जंग में भारी नुक़सान हुआ। याहून तो बस मुट्ठी भर ही बच पाए, वो भी केवल वो, जो जान बचाकर जंगल में भागकर छिप गए। पूरा मैदान याहूनों के शवों से पटा पड़ा था। लेकिन स्टैगाटॉर्स ने भी कम नुक़सान नहीं उठाया। काफ़ी तादाद में उनके शव चारों तरफ़ ऐसे बिखरे पड़े थे जैसे पेड़ के तने को काटने के बाद, कुल्हाड़ी से छितरे, लकड़ी के छोटे–छोटे टुकड़े फैल जाते हैं।

सबसे ज़्यादा कहर स्पिनडल ने बरपाया। उसके भारी मुगदर ने कितने याहूनों के डंक और खोपड़ी कुचली होगी, ये कोई नहीं गिन पाया, लेकिन इतना सभी ने देखा कि वो वहशीपन और बेरहमी की मिसाल बनकर उन पर टूट पड़ा था। स्टैगाटॉर्स और संथाल के तीनों बेटों ने भी ये साफ़ महसूस किया कि उसके हमलों में *बहादुरी* और *साहस* की जगह, *नफ़रत* और *गुस्से* का ऐसा भाव भरा हुआ था, जिसने उसे पागलपन की हद तक पहुँचा दिया। उसे कई बार याहूनों के शवों पर भी मुगदर बरसाते देखा गया। ऐसा लगता था जैसे वो उनकी लाशों की भी दुर्गति करके छोड़ना चाहता था। उसके जालीदार पाँव और मेंढक जैसी झिल्लीदार हथेलियाँ, याहूनों के मांस और रक्त से सनी हुई थीं।

कोई न जानता हो, लेकिन मेरे बूढ़े ज़ेहन और याद्दाश्त को, वो वजह भी पता है, जिसने स्पिनडल के भीतर याहूनों के लिए इतनी नफ़रत भर दी। इन पथरीली गुफाओं की ठण्डी दीवारों को भी मालूम है, स्पिनडल के इस वहशीपन का कारण, लेकिन वो सब बातें, मैं बाद में बताऊँगा, अभी तो जंग ने गीगा–टर्सिया की किस्मत का फैसला किया और मुझे वो

हैरतअंगेज़ घटनाएँ याद आ रही हैं, जो उस सफ़र में घटीं।

संथाल के तीनों बेटे उस युद्ध में बहुत बहादुरी से लड़े, मगर जंग का असली नायक तो स्पिनडल ही था। जंग ख़त्म होने के बाद, **बेल्टीपोर्न** के फलदार पेड़ के नीचे उसे फूट–फूटकर रोते देखा गया। ग्लैडीलस ने फ़ैगुअस को इशारा किया। बूढ़े फ़कीर ने बस अपनी झुर्रीदार हथेली उसकी झिल्लीदार हथेली पर रखी। शायद ये सांत्वना थी, या साथ होने का अहसास। सुबकता हुआ बेरहम दानव, आहिस्ता–आहिस्ता चुप हो गया।

पर्सीना ने अपने भाई लायलस की जगह ले ली थी। उसका ज्यादातर वक़्त अब सोने जैसे रंग वाले मकास के साथ ही जंगल में गुज़रता था। बड़ी अजीब–सी मुहब्बत थी ये। एक मादा स्टैगाटॉर और एक इंसान के बीच का प्रेम। रेत–घड़ी का रेत तो जैसे अब ठहर ही गया था। कभी एकाध कण अगर सरकता भी तो मुश्किल से। दोनों सारा–सारा दिन जंगल में साथ होते। उनका अधिकतर वक्त **लैवोलीसिया** के उन फूलों के पास गुज़रता, जिनके बारे में किंवदन्ती प्रचलित थी कि वो केवल उन प्रेमियों को ही दिखते हैं, जिनका प्रेम सच्चा होता है। पर्सीना और मकास को वो हमेशा दिखते रहे।

मकास ने पर्सीना के पूछने पर उसे बताया, कैसे तीनों भाइयों के बदन की रंगत औरों से अलग हो गई। उसने उन तीन बूढ़े गुरुओं के बारे में बताया, जिनके पास वो बचपन में ही भेज दिए गए थे। उनके बीच उन चुम्बकों के बारे में बातें हुई, जो सोने, चाँदी और ताँबे को अपनी तरफ़ ऐसे ही खींचती हैं जैसे काला चुम्बक लोहे को खींचता है। उसने बताया, जब वो अपने बूढ़े गुरु के पास था, शाम को खाने से पहले, एक कटोरा भरकर गूदेदार फल उसे खिलाए जाते लेकिन उससे पहले हमेशा, उसकी आँखों पर कसकर पट्टी बाँध दी जाती थी। पट्टी क्यों बाँधी गई है और उस फल का नाम क्या है, ऐसे सवाल पूछने की सख़्त मनाही थी।

मकास ने उससे उन विधियों के बारे में भी चर्चा की, जिनमें उन महान गुरुओं ने तीनों भाइयों के बदन, उन दुर्लभ चुम्बकों के बुरादे से ढँक दिए थे, जिन विधियों के बारे में वो अपनी गम्भीर आवाज़ में कहते थे कि–**'इंसान की अन्दरूनी दीवारों पर हषारों विषैली धतुओं के लेप चढ़े होते हैं। किसी भी तरह की कला को सीखने से पहले, जिस्म से सारे विष का बाहर आना षरूरी होता है। यदि षरा–सा षहर भी बदन के भीतर रह जाए तो सीखा गया हुनर या तो षहरीला होगा या बदसूरत।'**

पर्सीना उसकी हर बात को ऐसे सुनती जैसे बिल्ली, चूहे की पदचाप सुनने के लिए अपनी सारी इन्द्रियों को समेटकर अपने कान में इकट्ठा कर लेती है।

इस तरह पर्सीना को पता चला कि तीनों भाइयों के जिस्म में जिस धतु की अधिकता थी, उन रहस्यमयी चुम्बकों ने उनके बदन को उसी धतु का रंग दे दिया। मकास ने एक बार फुसफुसाकर उसे ये भी बताया कि तीनों बूढ़े गुरु अक्सर उनसे **जिस्मानी–कीमिया** और **रूहानी–कीमिया** का ज़िक्र किया करते। वो कहते–'जिस्मानी–कीमिया ख़ास है और रूहानी–कीमिया दुर्लभ और रहस्यमयी। हज़ारों में कोई एक इनका ज़िक्र सुनता है, लाखों में कोई एक इनके लिए सफ़र करता है और करोड़ों में एकाध इनसे होकर गुज़र पाता है।'

उसने पर्सीना से बताया कि विदा लेते वक़्त कैसे उन बूढ़े गुरुओं ने औपचारिकता तक पूरी नहीं की और केवल *'जाओ'* कहा।

गीगा–टर्सिया इन मायनों में स्वर्ग था कि वहाँ दिखावटी नैतिकता जैसी कोई चीज़ नहीं थी। किसी ने उन्हें कभी इस बात के लिए नहीं टोका कि वो दोनों सारा दिन जंगल में क्या करते रहते हैं या एक मादा स्टैगाटॉर और एक इंसान की मुहब्बत, मर्यादा से बाहर का आचरण है। न तो वहाँ बाहरी रिश्तों पर कोई बन्धन था और न रूहानी सम्बन्धें पर कोई पहरा। फ़ारसीथिया और लैन्टाना की झाड़ियाँ, क्रिप्टन लताओं के समूह, बेल्टीपोर्न के फलदार पेड़ और स्कॉरपीडथ के वृक्षों के विशाल तने, उनकी पाक मुहब्बत के गवाह बने। वो इतना नज़दीक आए कि उनके बीच से समय भी न बह सके।

स्पिनडल इन दिनों गीगा–टर्सिया का शाही मेहमान रहा। हर कोई उसकी ख़ातिरदारी में रहता। खाने में उसे, महज़ पंखदार मेंढक और दो टाँग वाले नीले चींटे ही पसन्द आते थे। ग्लैडीलस ने, चार तेज़–तर्रार स्टैगाटॉर्स को बस इसी काम के लिए तैनात किया था कि वो जंगल से स्पिनडल के भोजन का इंतज़ाम करते रहें। उसकी गोह जैसी लम्बी जीभ पल भर में सब कुछ चट कर जाती।

फिर एक दिन फ़ैगुअस ने सलार और जरूस से कहा, 'लकड़ी की काठी पर सवार होने का वक़्त आ गया है। हमें अपने सफ़र पर निकलना होगा।' दोनों ने केवल सहमति में सिर हिलाया।

उन्हें वो सन्देश याद आ गया, जो जंगल की रूह ने उन्हे दिया था–'नदी के घोड़े पर लगाम कसो, बर्फ़ की रकाबों में अपने पाँव फँसाओ, लकड़ी की काठी पर सवार हो, मगर चाह का चाबुक अपने हाथों में रखना।'

बूढ़े फ़कीर ने ग्लैडीलस को सन्देश भिजवा दिया कि सफ़र की धूल अब उनका इंतज़ार नहीं कर सकती। एक स्टैगाटॉर को जंगल में भेजा गया, पर्सीना और मकास को ढूँढने के लिए। वो उसे न फ़ारसीथिया और लैन्टाना की झाड़ियों के बीच मिले, न किप्टन लताओं के समूह में और न बेल्टीपोर्न के फलदार पेड़ और स्कॉरपीडथ के विशाल तनों के बीच। थक–हारकर उसने जंगल के बीच, एक गहरी अँधेरी गुफा के मुहाने पर अपने मजबूत खुरों से दस्तक दी। गुफा के भीतर जाते पर्सीना के खुर–चिन्ह उसने देख लिए थे, जिनके साथ इंसानी पाँवों के भी निशान थे।

वो वहीं थे। पर्सीना की खूबसूरती और पवित्राता, गुफा में रोशनी का काम कर रही थी। बूढ़े फ़कीर का संदेशा, उसने उन्हें सुना दिया। जिस रात वो जंगल से एक साथ वापस लौटे, वो पूनम की रात थी। रात के पूरे जिस्म पर, चाँदनी ऐसे मढ़ी हुई थी जैसे काले साँप के बदन पर सफ़ेद केंचुली। दोनों में से कोई रास्ते भर कुछ नहीं बोला। पर्सीना और मकास दोनों को मालूम था, जाना तो होगा लेकिन जुदाई का वो अहसास, उनके दिलों को, अजगर की कुण्डली में जकड़े तीतर की तरह भींच रहा था।

गीगा–टर्सिया की तरफ़ जाने वाली पगडण्डी उनका इंतज़ार कर रही थी। पर्सीना की बड़ी–बड़ी खूबसूरत आँखों में खारा पानी हिलोर ले रहा था। बस्ती के पास आकर पर्सीना ने झुककर, मकास को विदा का वो चुम्बन दिया, जिसका मख़मली अहसास, वो अपने सफ़र में हमेशा साथ रखने वाला था।

बस्ती में प्रवेश करते वक़्त पर्सीना ने महज़ इतना कहा, 'हम तुम्हारा इंतज़ार करेंगे।'

जब वो गीगा–टर्सिया की गुफाओं के नजदीक पहुँचे तो देखा, सब उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहे थे। ग्लैडीलस ने इस जंग में साथ देने के लिए संथाल के तीनों बेटों का शुक्रिया अदा किया और उसने मकास को बारहसिंघे के मुड़े–तुड़े सींग से बनी एक बाँसुरी देते हुए कहा, 'सींग की बनी ये बाँसुरी, मौत के नाख़ूनों से भी ज़्यादा सख़्त और ताक़तवर है। ये तुम्हारी रूह में छिपी उस धुन को बाहर लेकर आएगी, जिसे सुनने के लिए कानों की ज़रूरत नहीं पड़ती। इसमें सदियों से किसी ने साँस नहीं फूँकी। जब भी तुम इसे बजाओगे, ये तुम्हारे लिए *'उसका'* आह्वान करेगी, जो हर मुसीबत के डैने ऐसे तोड़ सकता है जैसे कोई महाबली, तितली के पंख नोचकर फेंक दे। वो दुनिया में अपने जैसा अकेला है, वो अपने भीतर ही *पैदा* होता है और अपने भीतर ही *मर* जाता है।'

गीगा–टर्सिया का हर वासी, उनको विदा देने के लिए गुफ़ाओं से बाहर आ गया था। ग्लैडीलस ने चाँदी जैसी रंगत वाले सलार को चार पासे देते हुए कहा, **बैलोबा–मैचस** चिड़िया के नाख़ूनों को पिघलाकर बनाए गए ये पासे, उस मुसीबत को सुलझाने में तुम्हारी मदद करेंगे, जिसे तुम्हारा हुनर और ज्ञान भी नहीं सुलझा पाएगा। अंक, हमारे हाथ की उँगलियों से ज़्यादा नहीं होते लेकिन

वो रेगिस्तान की रेत के कणों तक का हिसाब रखने की ताक़त रखते हैं। और एक सबसे ज़रूरी बात, जब भी इनका इस्तेमाल करो, गालियाँ खाने के लिए भी तैयार रहना। इनका इस्तेमाल तुम केवल एक बार ही कर पाओगे, उसके बाद *'उसे'* तुमसे विदा लेनी होगी।

उसके बाद ग्लैडीलस जरूस की तरफ़ मुड़ा और उसकी हथेली पर एक छोटी–सी खुर्दबीन रखकर बोला, 'ये *खोजी खुर्दबीन* है। इसकी मदद से तुम *'उन्हें'* भी देख सकते हो, जिन्हें नंगी आँखों से देखना संभव नहीं है। है तो ये खुर्दबीन, लेकिन ये दूर और पास, दोनों को ऐसे ही देख सकती है जैसे वैल्किन गिद्ध, चूहे के जिस्म पर रेंगते पिस्सू तक को आसमान की ऊँचाई से देख लेता है लेकिन आज के बाद इसे किसी और की हथेली में मत रखना, क्योंकि ये हथेली की रेखाओं को पहचानती है। इसे छूने वाले दूसरे व्यक्ति के लिए ये मुसीबत खड़ी कर सकती है। गीगा–टर्सिया के तोहफ़े, सफ़र में तुम्हारे काम आएँगे बहादुर नौजवानो।'

ग्लैडीलस की बात पर, बस्ती के हर स्टैगाटॉर ने अपने खुर, एक ख़ास अंदाज़ में ज़मीन पर पटककर, खुशी का इज़हार किया। पर्सीना ने अब खुद को संभाल लिया। बस, एक टीस थी, जो दो सिरे वाले बरछे की तरह...मुहब्बत करने वाले दो दिलों में एक साथ गड़ी हुई थी। वरना बाक़ी तो सब लगभग पुरसुकून ही था, या पुरसुकून दिख रहा था।

सूरज की रोशनी के साथ, ग्लैडीलस ने एक स्टैगाटॉर को ज़ोर से आदेश दिया, 'जाओ, *कैमल्योफैण्ट* की पीठ पर काठी कसकर, सवारी के लिए तैयार करो लेकिन होशियारी से, कहीं वो तुम्हारे सिर को तरबूज़ समझकर चबा न डाले।' वो अदब से खुर पटक कर वहाँ से चला गया।

फिर एक भयंकर चिंघाड़ सुनाई दी। जैसे कोई ऊँफट, अपने लंबे गले से गरम पानी के गरारे कर रहा हो। सारे स्टैगाटॉर्स पीछे हट गए। एक विशाल और ऊँफची गुफा के मुहाने से चिंघाड़ता हुआ एक भीमकाय प्राणी बाहर आ रहा था। उसकी गर्दन ऊँफट की तरह लम्बी और जिस्म हाथी की तरह भारी–भरकम और विशाल था। ऊँफट जैसे चौड़े पैरों से

'धप–धप' करता हुआ, वो आहिस्ता–आहिस्ता पास आता जा रहा था। एक ताक़तवर स्टैगाटॉर ने वो नकेल पकड़ी हुई थी, जो उसकी नाक को छेदती हुई, उसे नियन्त्रित कर रही थी।

जरूस, मकास और सलार, दो क़दम पीछे हट गए। उसके ऊँफट जैसे मुँह पर चमड़े का एक 'मछूका' लगा हुआ था, जो उसके चौड़े मुँह को खुलने से रोके हुए था। उसकी चौड़ी पीठ पर एक काठी कसी हुई थी, जिसमें आगे–पीछे तीन लोग एक साथ बैठ सकते थे।

ग्लैडीलस ने उनकी तरफ़ देखते हुए कहा, 'ये कैमल्योफ़ैण्ट है। ऊँफट और हाथी की मिली–जुली प्रजाति का जीव। गीगा–टर्सिया को ये अपने पुरखों से विरासत में मिला है। इसकी उम्र कितनी है, ये कोई नहीं जानता क्योंकि कई पीढ़ियों से ये वैसे का वैसा ही है। ये किसी के भी मन के अहसासों को महसूस कर सकता है। कैमल्योफ़ैण्ट, केवल उसे अपनी पीठ पर सवारी करने दे सकता है, जिसे गीगा–टर्सिया से मुहब्बत हो।'

दो पल रुककर वह फिर बोला, 'याहूनों के हमलों से स्टैगाटॉर्स को केवल स्कॉर्पीडथ के पेड़ बचा पाते हैं लेकिन स्कॉर्पीडथ के फल का छिलका इतना कड़ा और सख़्त होता है कि कोई जीव उसे खाकर पचा नहीं पाता, सिवाय कैमल्योफ़ैण्ट के। इसके पेट में भीषण गरमी होती है, जो छिलके को गला देती है और बीज नरम होकर गोबर में निकल जाता है। हम उस गोबर को सारे जंगल में फैलाते रहते हैं ताकि ज़्यादा से ज़्यादा स्कॉर्पीडथ के पेड़ उग सकें।'

सलार को याद आया, जब पहली बार जंगल में स्टैगाटॉर्स योद्धाओं से मुलाकात हुई थी तो उनमें से कुछ के हाथों में गोबर के चौथ थे, जिनकी वजह से उनके हाथ कुहनियों तक सने हुए थे लेकिन उस वक़्त वो आपाधपी में इसकी वजह नहीं समझ सके थे।

उस शक्तिशाली स्टैगाटॉर ने इशारा किया और कैमल्योफ़ैण्ट किसी आज्ञाकारी बच्चे की तरह ज़मीन पर बैठ गया। तीनों भाई कुछ हिचकते से उस पर चढ़े और पंक्तिबद्ध होकर एक–दूसरे के पीछे, उस काठी पर बैठ गए, जो कैमल्योफ़ैण्ट की पीठ पर कसी हुई थी। उनके बैठते ही, वो ऊँफट की तरह बलबलाता हुआ उठ खड़ा हुआ। स्पिनडल ने बूढ़े फ़क़ीर को अपने उँफचे और ताक़तवर कन्धे पर बैठा लिया। पर्सीना की ख़ूबसूरत आँखों में, दर्द और जुदाई की नसें, ख़ून–सी सुर्ख़ हो गई थीं। वो ऐसे मकास की तरफ़ देख रही थी जैसे कोई मल्लाह, बाढ़ के पानी में बहकर जाती इकलौती नाव को, किनारे पर बेबसी से खड़ा देखता है।

अब कैमल्योफ़ैण्ट की लगाम उनके हाथों में थी। ग्लैडीलस ने संथाल के तीनों बेटों की तरफ़ देखते हुए कहा–'ये बहुत तेज़ दौड़ता है, संभलकर बैठना। काठी में चाबुक लगा है लेकिन भूलकर भी उसका इस्तेमाल मत करना, उसे बस अपने हाथों में रखना, वही काफ़ी होगा। एक ख़ास बात याद रखना, हमें ऐसा लगता है, कोई तुम में दिलचस्पी ले रहा है और लगातार तुम्हारी निगरानी कर रहा है। वजह क्या है और वो कौन है, ये नहीं मालूम लेकिन हर क़दम फूँफक–फूँफक कर रखना। होशियार रहना, अपने चारों तरफ़ नज़र रखना।'

कैमल्योफ़ैण्ट आगे बढ़ गया। पर्सीना को ऐसा लग रहा था जैसे उसकी रूह को कैमल्योफ़ैण्ट के पिछले पैरों और गीगा–टर्सिया के बीच बाँध दिया गया हो और हर क़दम के साथ खिंचाव बढ़ता जा रहा हो। उदासी ने दर्द का खुरदरा लबादा पहनकर, पर्सीना को अपने सीने से ऐसे चिपटा लिया जैसे कोई कठोर माँ, आगे बढ़कर उपेक्षित बच्चे को गले से लगा ले।

मकास ने विदा लेने के बाद से अब तक कुछ नहीं कहा लेकिन उसकी ख़ामोश उदासी, बहुत ज़बानदराज़ी कर रही थी। इस बात को सभी समझ रहे थे लेकिन कहा किसी ने कुछ नहीं। कैमल्योफ़ैण्ट अब दूर होता जा रहा था। पर्सीना और गीगा–टर्सिया के वासी तब तक उन्हें देखते रहे, जब तक वो एक छोटे–से धुँधले बिन्दु में तब्दील नहीं हो गए। पर्सीना की आँखों से खारे पानी का एक क़तरा टपका और उसमें घुली मुहब्बत ने, गीगा–टर्सिया की आम ज़मीन को ख़ास बना दिया।

संथाल के तीनों बेटे जिस सफर पर बढ़ रहे थे, उसमें उन्हें अभी बहुत हैरतअंगेज़ और रहस्यमय वाक़ियात का सामना करना था। मैंने सदियों तक इस दास्तान की इसलिए हिफ़ाज़त की ताकि इसे महफ़ूज़ ढंग से आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचा सवूँफ क्योंकि मोम की हज़ारों पट्टियों पर, चाँदी की सलाईयों से उकेरी गई ये दास्तान केवल एक किताब भर नहीं है। ये भरोसा है पुरखों की उन कई पीढ़ियों का, जिन्होंने इस विश्वास को आने वाली नस्लों में व्यक्त किया कि वो इसे नष्ट नहीं होने देंगी। स्पिनडल के प्रकाश–स्तम्भ की बन्द रोशनियाँ, बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रही थीं। मकास, जरूस और सलार, *शब्दहीन-शब्दकोश* तक पहुँचने के लिए बेचैन थे। लेकिन मैं शान्त हूँ...क्योंकि मुझे वो भी पता है, जो न जरूस की खुर्दबीन देख सकती थी और न सलार के पासे।

मुझे याद है, कैसे महीनों बिना कुछ खाए–पिए, मैं इस दास्तान को अपनी लोहे की छेनी और टाँकी की मदद से, कैल्टिकस की इन गुफाओं की दीवारों पर खोदता रहा हूँ। कई बार तो मौसम बदलने का पता तब लगता, जब बाहर बर्फ पड़ने लगती और मेरा बूढ़ा जिस्म सर्दी से काँपने लगता, या बाहर लू चलती और मेरे भारी लबादे की आस्तीनें, पसीने से तर होने लगतीं। लेकिन अब मैं निश्चिन्त हूँ, क्योंकि काम काफी पूरा हो चुका।

अब उन खतरों का भी डर नहीं, जिनकी वजह से इस दास्तान को पत्थर की इन दीवारों पर खोदने का फैसला लेना पड़ा। बाहर सर्द, अँधेरी रात है और मैं एक बड़ी गुफा में, छोटे–से अलाव के पास बैठकर आग ताप रहा हूँ। हवा में अब बहुत नमी और ठण्डक है, यकीनन बाहर तेज़ बारिश हो रही है। इस वक्त मैं उन पट्टियों को पलट रहा हूँ, जिन पर संथाल के बेटों का, इससे आगे का सफ़र, जीभ की नोक से लिखी जाने वाली, प्राचीन क्यूटिन लिपि में उकेरा गया है।

वो सफर, जिसमें एक भाई की ज़िन्दगी को, उसने चाटने की कोशिश की, जो केवल इंसानी परछाइयाँ चाटकर पेट भरता था, जिसके पास *अपनी परछाई* तक नहीं थी, या यूँ भी कहा जा सकता है, जिसके पास *केवल परछाई* ही थी। एक ख़ास किरदार का ज़िक्र करना मैं कैसे भूल सकता हूँ, जो मेरा पसन्दीदा भी है और सबसे दिलचस्प भी...अपने ही नाखून खाकर पेट भरने वाला, **स्ट्रासोल** जो बाहर से जितना बदज़बान नज़र आता था, भीतर से उतना ही नरमदिल भी था। जिसकी लँगोटी के नेपेफ में, दुनिया भर की अजीबोगरीब और रहस्यमयी चीज़ें छुपी थीं।

मुझे उस प्रकाश–स्तम्भ तक भी चलना है, जिसके लिए स्पिनडल की कई पीढ़ियों ने कुर्बानियाँ दीं। साथ ही उड़ने वाले उन वहशी दरिन्दों का हमला, जिनका ध्ड़ भेड़िये का था और बाक़ी जिस्म मगरमच्छ जैसा। वो थकाऊ सफ़र, जिसने उन्हें बौनों के उस लालची सरदार तक पहुँचाया, जिसने अपने स्वार्थ की वजह से, वो रहस्य छुपा लिया, जो पूरी दुनिया को तबाह कर सकता था।

छुप्पाछाया

अध्याय चार

कब से नहीं नहाये हो तुम, स्पिनडल?' बूढ़े फ़कीर ने स्पिनडल के चौड़े कन्धे पर पहलू बदलते हुए, नाक चढ़ाकर पूछा। स्पिनडल ने चिढ़कर उसकी तरफ़ देखा।

फैगुअस ने अपने नितम्ब को खुजाते हुए कहा, 'और तुम्हारे इन गन्दे बालों में शायद सैंकड़ों पिस्सू हैं, जो काफ़ी देर से मुझे काट रहे हैं।' स्पिनडल ने ज़मीन तक लटकती अपनी लम्बी भुजा को मोड़ा और कन्धे को ज़रा–सा झुका दिया। फैगुअस लगभग गिरते–गिरते बचा। जरूस, उनकी इस छेड़छाड़ पर बस मुस्करा कर रह गया।

फैगुअस ने अचानक स्पिनडल के कान में धीरे से कहा, **छुप्पाछाया।'**

स्पिनडल, एक पल के लिए ठहरा लेकिन बिना कुछ बोले, उसने अपने जिस्म के कुछ बाल तोड़कर हवा में उड़ा दिए। तीनों भाइयों को इसका पता तक नहीं चल पाया। स्पिनडल ने अपने लम्बे पाँवों की रफ़्तार अब और बढ़ा दी थी। फैगुअस ने शुरू से ही उनसे ये तो कहा था कि स्पिनडल ही उन्हें जंगल को पार करने में मदद करेगा लेकिन उनकी अगली मंज़िल क्या और कहाँ होगी, ये उसने उन्हें नहीं बताया था।

बस इतना कहा–'उसे अपना एक पुराना हिसाब किसी से पूरा करना है।'

इतना तो संथाल के बेटे समझ गए थे कि स्पिनडल को अपना हिसाब याहूनों के साथ पूरा करना था। युद्ध में वो देख भी चुके थे कि कितनी बेरहमी और जुनून की हद तक जाकर स्पिनडल ने याहूनों के साथ हिसाब चुकता किया था। मगर इसके पीछे क्या रहस्य था, ये किसी ने उन्हें नहीं बताया।

सलार, पता नहीं कब से ये सोच रहा था कि आख़िर ऐसी क्या ख़ास बात है कि केवल स्पिनडल ही उन्हें जंगल के पार ले जा सकता है। उसकी समझ से ये बात भी बाहर थी कि जंग ख़त्म होने के बाद भी फैगुअस ने उन्हें चलने के लिए नहीं कहा, बल्कि वो पानी की सतह के नीचे छिपे अजगर की तरह, चुपचाप अजीब–सी प्रतीक्षा करता रहा। कैमल्योफैण्ट अब इतना तेज़ दौड़ रहा था कि तीनों के लम्बे बाल हवा में ऐसे उड़ रहे थे जैसे जड़ से उखड़ ही जाएँगे।

'आख़िर अब हम कहाँ जा रहे हैं?' जरूस ने झल्लाई आवाज़ में बूढ़े फ़कीर से पूछा।

फैगुअस ने हवा में उड़ता अपना भारी लबादा संभाला और गम्भीर स्वर में बोला, '*हम!* हम से तुम्हारा क्या मतलब है? केवल *तुम* अपने सफ़र पर जा रहे हो, संथाल के बेटो। मैं अपनी निजी यात्रा पर हूँ। कम से कम मैं तुम्हारे साथ कहीं नहीं जा रहा।'

तीनों ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी तरफ़ देखा। वह फिर बोला, 'मैं तुम्हारा रहबर, हमक़दम या हमसफ़र नहीं हूँ बच्चे। मैं अपने सफ़र पर हूँ, तुम अपने सफ़र पर हो।' सलार ने ऐसी नज़रों से फैगुअस की तरफ़ देखा जैसे किसी ने अचानक अपनी उँगली छुड़ा ली हो।

'मैं किसी भी पल, किसी भी दिशा में जाने या न जाने का फ़ैसला ले सकता हूँ। मैं अभी उसी पेड़ पर लटके घास के गोले की ओर वापस लौट सकता हूँ और बिना कोई वजह बताए दूर तक तुम्हारे साथ जाने के लिए स्वतन्त्रा हूँ।'

बूढ़ा फ़कीर जैसे उसी रहस्यमयी शख़्सियत में लौट आया था, जिसमें वो पहले दिन था।

वो फिर बोला, **'लोग अपनी परेशानियाँ, किसी अपने की उन हथेलियों को बेचना चाहते हैं, जो भुगतान के रूप में उन्हें मदद का आश्वासन दे सकें। लेकिन किसी के आश्वासन की कड़ाही में, अपनी समस्याओं का तेल खौलने के लिए मत छोड़ना। अगर तुम्हारे पोरवों में इतनी आग नहीं है कि हौसले की लकड़ी को, फ़ैसले के शहतीर पर घिसकर, चिंगारी पैदा कर सको तो जिन्दगी भर, समस्याओं की बर्फ़ीली रातें, तुम्हें समाधन के गर्म**

अलाव के बिना, काटनी पड़ेंगी।' बूढ़े फकीर का गुस्सैल रूप देखकर तीनों को चुप होना पड़ा।

वो सारा दिन चलते रहे। शाम ढलते–ढलते आसमान पर काले बादल छाने लगे। अँधेरे के साथ–साथ तेज हवाएँ चलने लगीं और बारिश ने अपनी पनीली चादर, सारे जंगल पर फैला दी। उनके बदन पानी से तर हो चुके थे। अँधेरे और पेड़ों के बीच सॉंय–सॉंय करता जंगल, डरावना दिख रहा था। अपने गीले लबादों और तर–बतर झोलियों को संभालते हुए, वो एक विशाल पेड़ के नीचे रुके। हवा, तेज छुरी की तरह जिस्म को चीर रही थी। एक–दूसरे से कुछ कहने के लिए भी उन्हें ज़ोर–ज़ोर से चीख कर कहना पड़ रहा था क्योंकि हवा और पानी का शोर आवाज को ऐसे दबा ले रहा था जैसे किसी टर्राते मेंढक को, बजते हुए नगाडे के भीतर डाल दिया गया हो।

कैमल्योफ़ैण्ट का पूरा जिस्म पानी से तर हो चुका था। स्पिनडल के बालोंदार बदन से पानी ऐसे टपक रहा था जैसे लम्बे बालों वाली किसी **यार्नायान** भेड़ को बारिश में खड़ा कर दिया गया हो। मकास ने, पानी और हवा के शोर के बीच, चीखकर फ़ैगुअस से कहा–'अगर...हम...ऐसे...ही...बारिश...में...भीगते... रहे...तो...सुबह...हमारे... *मुर्दा...जिस्म*...ही...कैमल्योफ़ैण्ट...की... पीठ... पर...रखे... मिलेंगे।'

बूढ़े फकीर ने अपने लम्बे बालों और बर्फ–सी सफेद दाढ़ी से पानी पोंछते हुए, शोर के बीच चीखकर कहा '...तब... मैं... स्पिनडल... से... कहूँगा... कि... तुम्हारे... मुर्दा...जिस्मों...को...पास... की... दलदल... में...डाल...आए... ताकि... उसमें... रहने... वाले... अन्धे... कीड़ों... को...भोजन...मिल...सके।'

संथाल के तीनों बेटों को तो नहीं मालूम था लेकिन फ़ैगुअस और स्पिनडल भली–भाँति जानते थे कि इस भयंकर बारिश से बचने के लिए उन्हें कहाँ जाना है। स्पिनडल ने तो जाने कितने बरस वहाँ गुजारे थे।

'पिछले...पचास...सालों... में... इतनी... जंगली... झाड़ियाँ... और... पेड़... यहाँ... उग... आए... हैं... कि... मैं... तो... तुम्हारे... प्रकाश–स्तम्भ... का... रास्ता... ही... भूल... गया, स्पिनडल।' बूढ़े फ़कीर ने, बारिश के शोर के बीच चिल्लाते हुए कहा।

स्पिनडल ने अपनी गोह जैसी लम्बी जीभ लपलपाई और चीखकर बोला, 'पेड़... और... लताएँ... तो... तुम्हारी... थपकियों... पर... चलते... हैं... फ़ैगुअस... कम... से... कम... तुम... उनकी... वजह... से... नहीं... भटक... सकते।' उसकी बात पर फ़ैगुअस के बूढ़े होंठ बस मुस्कराकर रह गए।

आसमान में चमकती बिजली की रोशनी, रास्ता दिखाने के लिए काफ़ी नहीं थी। पतली और रपटीली पगडण्डी पर चलना, दुनिया के सबसे चिकने साँप **स्मथनैक** की पीठ पर चलने जैसा लग रहा था। कैमल्योफ़ैण्ट बड़ी मुश्किल से उस पर पाँव जमा–जमा कर चल पा रहा था।

फ़ैगुअस ने मकास पर चिल्लाकर कहा, 'अपने... सपनों... के...जगत... से... बाहर... निकलो... नौजवान... और...वायवॉर्न... से... भरी... वो... बोतल... बाहर... निकालो, जो... तुमने... अपने... इस... बदबूदार... झोले... में... दफ़न... कर... रखी... है।'

मकास झटके से अपनी तन्द्रा से बाहर आया और उसने अपनी झोली में हाथ डालकर टटोला। एक पल बाद ही काँच की वो बोतल उसकी उँगलियों से टकराई, जिसमें उन तीनों ने वायवॉर्न भरे थे।

बोतल बाहर आते ही हर तरफ़ तेज़ रोशनी पैफल गई। बोतल के भीतर विचरते मासूम वायवॉर्न, टुकर–टुकर तेज बारिश को देख रहे थे। वायवार्न के जिस्मों से निकलती रोशनी, साँप की मणि की तरह, पानी से तर–बतर पेड़ों और झाड़ियों को रोशन कर रही थी। थोड़ी दूर चलने पर उन्हें, पत्थर की बनी एक उँफची और विशाल, मीनार जैसी नज़र आई, जिसकी दीवारें इतनी चिकनी थीं कि छिपकली भी चले तो फिसल जाए।

ये स्पिनडल का प्रकाश–स्तम्भ था। प्रकाश–स्तम्भ, जिसका वो बरसों से रक्षक था। वो प्रकाश–स्तम्भ, जिसे संथाल के तीनों बेटे, दूर जंगल से, रैडवुड के उँफचे पेड़ों की चोटियों को रोशन करते हुए देखते थे। तीनों भाई समझ गए कि फ़ैगुअस के साथ सफ़र करते वक़्त, दूर जंगल के ऊपर जो रोशनी का गोला उन्हे दिखता था, वो ये प्रकाश–स्तम्भ ही था लेकिन इस वक़्त हर तरफ़ गहरा अँधेरा था। स्पिनडल ने प्रकाश–स्तम्भ की दीवार के पास जाकर, अपनी लम्बी भुजा ऊपर उठाई। वो इतनी उँचाई तक चली गई कि अँधेरे में दिखनी बन्द हो गई।

अब वो अपने जालीदार पाँवों के बल उचक रहा था। फिर उसने अपनी दूसरी भुजा से, मीनार की जड़ में उभरे एक पत्थर को दबाया। मकास को साफ़ महसूस हो गया कि उसने ऊपर भी अँधेरे में किसी पत्थर को दबाया है तथा नीचे वाले और ऊपर वाले पत्थर को दबाने का काम एक साथ किया गया है। 'खट' की एक हल्की–सी आवाज़ हुई, जो बारिश के शोर में दबकर रह गई।

फिर घरघराहट की एक भारी आवाज़ के साथ, मीनार के पत्थर दाहिने–बाँये खिसकने लगे। हर तरफ़ अब 'खट–खट...

'खट–खट' की आवाज़ हो रही थी। कुछ ही देर में मीनार का एक बड़ा हिस्सा गायब हो गया और उसमें इतना बड़ा दरवाजा नज़र आने लगा, जिसमें होकर विशालकाय कैमल्योफैण्ट भी आसानी से भीतर जा सकता था।

फैगुअस ने अंदर जाते स्पिनडल की लम्बी भुजा को आहिस्ता से दबाया और फुसफुसाकर बोला, '*छुप्पाछाया*'

स्पिनडल ने एक बार मीनार के चारों तरफ देखा और अपने जिस्म के कुछ बाल उखाड़कर फिर बारिश के पानी में डाल दिए। इस बार सलार ने महसूस कर लिया कि फैगुअस ने स्पिनडल से वुफछ कहा है, मगर वो कुछ नहीं बोला।

प्रकाश–स्तम्भ की भीतरी दीवारें इतनी काली दिख रही थीं जैसे किसी ने अँधेरे की नदी का बहाव, गहरे कुएँ की तरफ काट दिया हो। वहाँ केवल एक छोटी मशाल जल रही थी, जो अब बस बुझने ही वाली थी। भीतरी दीवारों से लगी, पत्थर की गोल सीढ़ियाँ चढ़कर, संथाल के बेटे और फैगुअस ऊपर पहुँचे। सीढ़ियाँ इतनी ज़्यादा थीं कि चढ़ते–चढ़ते तीनों का दम फूल गया। स्पिनडल, एक बार में पाँच से आठ सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, वो उनसे पहले पहुँच गया। प्रकाश–स्तम्भ का ऊपरी हिस्सा इतना बड़ा था कि उसमें भेड़ों का एक विशाल रेवड़ समा सकता था। वो एक गोल कक्ष था, ऊँचा, जिसकी दीवारें और छत पुराने काँच की बनी हुई थीं। वायवॉर्न से भरी बोतल की रोशनी में उन्हें साफ दिख रहा था कि वो इस वक्त इतनी ऊँचाई पर हैं, जहाँ रैडवुड के उँफचे पेड़ों की फुनगियाँ भी समाप्त हो जाती हैं।

स्पिनडल ने अचानक गोल छत में लटकती एक सूखी लता को डोरी की तरह खींच दिया। रोशनी का एक 'झपाका' हुआ और पूरा गोल कक्ष और जंगल के पेड़ों के ऊपर दूर–दूर तक रोशनी की चादर बिछ गई। जरूस ने देखा, काँच की छत के ऊपर, शीशे का एक विशाल गुम्बद बना हुआ था, जिसके ऊपर से **नैटकॉर्ड** लताओं की एक बड़ी चटाई, उस सूखी लता को खींचने से हट गई। ऊपर काँच के गुम्बद में हजारों की तादाद में वायवॉर्न भरे हुए थे, जिनकी रोशनी से सारा जंगल जगमगा रहा था। उनके पारदर्शी जिस्मों के भीतर भरे छोटे–छोटे, उनके साथी चहलकदमी करते दिख रहे थे।

मकास, जरूस और सलार हैरत से उस शानदार नज़ारे को देख रहे थे। बाहर तेज बारिश और हवा, जंगल को झकझोर रही थी लेकिन प्रकाश–स्तम्भ के भीतर, काँच के उस गोल कमरे में पानी की एक बूँद तक नहीं पहुँच रही थी। हवा का शोर और पानी की आवाज़ें, बाहरी दीवारों पर ऐसे सिर टकरा रही थीं जैसे किसी नाग की मणि, कटोरे के नीचे दबा दी हो और वो उस पर अपना फन पटक रहा हो।

स्पिनडल ने उन्हें खाने के लिए **मैग्नीगैलिया एपलीकॉट** के कुछ स्वादिष्ट फल दिए और पीने के लिए **बर्टीब्रॉस** की मीठी जड़ों का शर्बत। उस रात स्पिनडल ने उन्हें वो भयावह कहानी सुनाई, जो सदियों तक उसके दिल में, संन्यासी की धूनी की तरह सुलगती रही। उसने उन्हें कहानी का वो शुरुआती हिस्सा भी बताया–'सदियों पहले जंगल पर **बसलाबार्क** का हमला हुआ था। ये उड़ने वाले वो बेरहम प्राणी थे, जिनका ध्ड़ से ऊपर का हिस्सा भेड़िये का और पिछला जिस्म मगरमच्छ जैसा होता है। कन्धें पर उगे चमगादड़ जैसे विशाल पंखों की मदद से, वो आसमान में उड़ते बादलों को झकझोर कर नीचे आते और जो जीव दिखता, उसे **हैल्विकॉस** गिद्ध जैसे अपने ताकतवर पंजो में दबाकर उड़ जाते।'

स्पिनडल ने उनकी ताक़त का भी ज़िक्र किया–'वो काजल–से अँधेरे में भी दिन के उजाले की तरह साफ देख सकते थे। केवल रोशनी उन्हें अंध बनाती। वो युद्ध में, कबूतर की एक रहस्यमय प्रजाति का इस्तेमाल दुश्मन की खबरें पाने के लिए करते, लेकिन ये कबूतर हमेशा *अदृश्य* होता। फिर जंगल के रक्षकों ने फैसला किया एक उँफचा प्रकाश–स्तम्भ बनाने का। बरसों तक निर्माण चला, जंगल के रक्षक, जितना निर्माण दिन में करते, बसलाबार्क रात को आकर उसे नष्ट कर देते। संघर्ष और लड़ाइयों के बाद प्रकाश–स्तम्भ बन ही गया। अब दिक्कत थी उसमें रोशनी का इंतज़ाम करने की। जंगल के एक सबसे बूढ़े रक्षक ने सुझाव दिया कि रोशनी ऐसी चीज़ से होनी चाहिए, जिसके लिए ईंधन की ज़रूरत न हो, इसलिए काँच के उस गुम्बद में वायवॉर्न के रहने की आरामदायक जगह बनाई गई।'

'प्रकाश–स्तम्भ की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी स्पिनडल के ताक़तवर पुरखों को सौंपी गई। **जैल्कीप्रफॉस**, प्रकाश–स्तम्भ का पहला जंगल–रक्षक था, स्पिनडल के पड़दादा का दादा।' फैगुअस ने बताया। 'उसके लम्बे बाजुओं में बेपनाह ताक़त थी। जैल्कोवा की लकड़ी से बना उसका मुगदर, बसलाबार्क पर मौत बनकर बरसता था। रोशनी के कारण, बसलाबार्वफ के हमले रात में होने बन्द हो गए और दिन में वे कुछ देख नहीं सकते थे। जंगल में शान्ति स्थापित हो गई। मगर क्या वाक़ई?

बसलाबार्क्स ने इस हार का बदला लेने का फैसला किया और याहूनों के साथ एक समझौता कर लिया। वो रोशनी में नहीं देख सकते थे लेकिन याहूनों के साथ ऐसी कोई दिक्कत नहीं थी। प्रकाश–स्तम्भ को नष्ट करने की ज़िम्मेदारी उन्होंने अपने कन्धें पर ले ली। धेखा और छल, प्रकाश–स्तम्भ की चिकनी मीनारों के पास ऐसे रेंगने लगे जैसे चींटियाँ, जख्मी टिड्डे के पास घेरा बनाती हैं।

एक रात, याहूनों ने धेखे से जैल्फीप्रफॉस को प्रकाश–स्तम्भ के नीचे घेर लिया। भयंकर जंग हुई। जैल्फीप्रफॉस ने अपने भारी मुगदर से उनके पूरे झुण्ड को लगभग तहस–नहस कर दिया। मीनार के पास हर तरफ कुचले हुए याहूनों के जिस्म पड़े थे। उसके लम्बे बाजुओं ने, उन्हें पास फटकने से पहले ही मसल डाला लेकिन कपट, सदियों से बहादुरी की पीठ में छुरा घोंपता आया है।

फारसीथिया की एक झाड़ी के पीछे से चलाए गए कई तीर, एक साथ उस बहादुर योद्धा की पीठ में आ गड़े। रूह को अलविदा कहने से पहले, उसने उन दोनों याहूनों के सिरों के चीथड़े, अपने मुगदर से उड़ा दिए, जिन्होंने छुपकर वार किया था। जंगल के रक्षकों तक ख़बर पहुँच गई थी। इससे पहले कि और याहून आकर प्रकाश–स्तम्भ पर कब्ज़ा करते, उन्होंने चंद पलों के लिए अनाथ हुए प्रकाश–स्तम्भ को अपनी सुपुर्दगी में ले लिया।'

स्पिनडल की पलकें, खारे आँसुओं के बोझ से ऐसे झुक गईं जैसे मधुमक्खी के छत्ते के बोझ से, पतली टहनी झुक जाती है। उसने बताया, कैसे धेखे से उसके दादा और पिता दोनों की हत्या तब की गई, जब वो बरसों बाद मीनार से नीचे इसलिए उतरे ताकि स्पिनडल की गर्भवती माँ से, एक बार मिल सकें। रास्ते में छुपकर घात लगाए बैठे याहूनों ने, छल से डंक का वार किया। कोई मदद मिलने से पहले ही, उनके जिस्म नीले पड़ गए।

फ़ैगुअस ने जोड़ा–'स्पिनडल तब पैदा भी नहीं हुआ था। दस साल का होने पर, उसकी माँ **स्पॉटीडल** ने उसे उन हत्याओं की बात बताई। तब से हर दिन, हर पल, वो केवल एक ही सपना देखते हुए बड़ा हुआ था और वो था याहूनों की तबाही, आर–पार की एक अंतिम जंग। स्टैगाटॉर्स ने उस बच्चे को पालने में स्पॉटीडल की मदद की। प्रकाश–स्तम्भ की सुरक्षा अब बहुत बढ़ा दी गई। पचास सालों तक केवल दो चीज़ें उसके साथ रहीं। जैल्कोवा की लकड़ी से बना, पुश्तैनी मुगदर और आख़िरी जंग का इंतज़ार।'

बाहर बारिश थमने का नाम नहीं ले रही थी। फ़ैगुअस, स्पिनडल की कहानी में, वो हिस्से भी जोड़ रहा था, जिन्हें वहाँ मौजूद पाँच लोगों में, शायद वही जानता था। फ़ैगुअस ने उन्हें उस दिन के बारे में बताया, जब बसलाबार्क्स का ख़ात्मा हुआ।

'जंगल की लगभग बीस प्राणी–प्रजातियों ने, मिलकर फ़ैसला किया कि उन दरिन्दों से निपटना होगा। उस रात प्रकाश–स्तम्भ के इस गोल गुम्बद के ऊपर और भीतर भी, हर जगह हथियारों से लैस योद्धा छिपे हुए थे। शाम से ही रोशनी बन्द थी। आधी रात होते–होते, टोह लेने के लिए एक बसलाबार्क, प्रकाश–स्तम्भ की मीनार के ऊपर मँडराया और चला गया। उन्हें वहम हुआ कि रोशनी में कुछ समस्या है, लेकिन ऐसा था नहीं। जंगल, उन्हें अपने बेरहम फन्दे में फँसा रहा था।

कुछ देर बाद सैंकड़ों की तादाद में, आसमान पर बसलाबार्क्स का झुण्ड, उड़ता हुआ नज़र आने लगा। वो मीनार के ऊपर ऐसे छाए हुए थे जैसे पशु के शव के ऊपर वैल्किन गिद्ध मँडराते हैं। अँधेरे में वो साफ़ देख पा रहे थे कि कहीं कोई हलचल नहीं थी। जंगल के रक्षक या प्रकाश–स्तम्भ का रखवाला, नज़र नहीं आ रहा था। हैरत और सावधनी दोनों के साथ, उनमें से एक, पहली बार, मीनार के ऊपर उतरा। कुछ नहीं हुआ, कुछ भी नहीं। फिर एक–एक करके सारे गुम्बद के ऊपर उतर आए।

जंगल के रक्षक और बाक़ी बीस प्राणी–प्रजातियों के सारे योद्धा, साँस रोके उस आख़िरी पल का इंतज़ार कर रहे थे, जब हमले का इशारा मिलना था। लेकिन आख़िरी पल में सब गड़बड़ हो गया। पता नहीं कैसे, नैटकॉर्ड की लताओं की बनी चटाई, ज़रा–सी खिसक गई और रोशनी की एक लकीर गुम्बद से बाहर आ गई। बसलाबार्क्स में उड़ान मच गई। सब के सब, पल भर में अपने चमगादड़ जैसे पंखों को हिलाते हुए, गुम्बद से उड़ गए।

फ़ैगुअस ने बताया कि मजबूरी में, हमले का नेतश्त्व कर रहे **बैम्बूस** प्रजाति के महाबली योद्धा, **नरसल नॉट** को हमले का हुक्म देना पड़ा। बैम्बूस लम्बाई में किसी बाँस की तरह लम्बे और तिनके की तरह पतले जिस्म वाला क़बीला था, जिनका एक हाथ हमेशा अपने धनुष पर रहता।

नॉट चीखा, **'हमला...हमला करो।'** और एक झटके के साथ, नैटकॉर्ड की लताओं से बनी वो चटाई खींच दी गई, जो वायवॉर्न के जिस्म से निकलने वाली रोशनी को रोके हुए थी। रोशनी का एक चौंधियाने वाला विस्पफोट और सारा जंगल जैसे जगमगा उठा।

बसलाबार्क्स को समझने या संभलने का भी मौका नहीं मिला। तेज़ रोशनी ने उन्हें अंध बना दिया। आसमान की तरफ आने वाली तीरों की बौछार, उनके बदन को ऐसे छलनी कर रही थी जैसे कोई मगरमच्छ, सेही के काँटेदार बदन पर चढ़ गया हो। कुछ ही पलों में हज़ारों की तादाद में ज़हरीले तीर, उनके जिस्म में इतने छेद कर चुके थे कि किसी भी घाव से

उनकी रूह, आसानी से निकलकर अपने सफ़र पर जा सके।

आसमान से गिरने वाले बसलाबार्क्स पर अंतिम वार, ज़मीन पर इंतज़ार कर रहे, स्पिनडल के पिता के दो भाई कर रहे थे। उनकी लम्बी भुजाओं में कसे भारी मुगदर, एक ही वार में बसलाबार्क्स की भेड़िये जैसी खोपड़ी का कचूमर बना दे रहे थे। थोड़ी ही देर में लड़ाई ख़त्म हो गई। ख़ून की एक भी बूँद अगर वहाँ थी तो महज़ बसलाबार्क्स के जिस्म से निकले हरे ख़ून की थी। जंगल के सारे रक्षक और योद्धा, पूरी तरह महफ़ूज़ थे। जंगल की ख़ामोशी को, चौड़े कंठ वाले स्लॉपी झींगुर और **हैंगी** तिलचट्टे की आवाज़ें ही भंग कर रही थीं।

उस रात सारे जंगल में जश्न और ख़ुशी का माहौल था, याहूनों की बस्ती में पसरी, उदासी को छोड़कर। बसलाबार्क्स ख़त्म हो चुके थे और याहून, धूर्तता की झाड़ियों में छिपकर कोई नया वार करने की फ़िराक़ में। कुछ महीनों बाद हमला हुआ भी, स्पिनडल के पिता के दोनों भाइयों पर। वो सावधन थे, इसलिए जान नहीं गई लेकिन लड़ाई में, एक को अपनी शक्तिशाली भुजा और दूसरे को टखने से नीचे अपना एक लम्बा, जालीदार पैर गँवाना पड़ा। बसलाबार्क्स तो ख़त्म हो चुके थे लेकिन प्रकाश–स्तम्भ को विजय–स्तम्भ के रूप में सुरक्षित रखने का फ़ैसला लिया गया। स्पिनडल के कुटुम्ब की क़ुर्बानियों और बहादुरी ने, उसे प्रकाश–स्तम्भ का रखवाला तैनात होने में मदद की।'

फ़ैगुअस और स्पिनडल ने जो कुछ बताया, संथाल के बेटों के जेहन पर ऐसे छप गया था जैसे **सिरमेटा** पेड़ के मुलायम तने पर, कोई छुरे से किसी का नाम गोद दे।

'तुम्हें अब थोड़ी देर सोना चाहिए, नौजवानो!' फ़ैगुअस ने उनकी तरफ़ देखते हुए कहा।

सलार ने उठकर, मीनार के नीचे वाले तल की तरफ़ झाँककर देखा। नीचे कैमल्योफ़ैण्ट आराम से बैठा हुआ जुगाली कर रहा था। उसका जिस्म एकदम सूखा था, कहीं ज़रा–सा गीलापन नहीं। वो समझ गया, कैमल्योफ़ैण्ट के पेट की भयंकर गर्मी ने उसके जिस्म को सुखा दिया है।

उस रात वो प्रकाश–स्तम्भ की उँफची मीनार पर, काँच के उस गोल कमरे में चैन से सोए। आसमान पर रह–रहकर बिजली चमकती रही और सारी रात मूसलाधार बारिश हुई। सुबह होते ही स्पिनडल ने नैटकॉर्ड लताओं से बनी चटाई की डोरी खींच दी और प्रकाश–स्तम्भ की रोशनी ऐसे गुम्बद के अन्दर चली गई जैसे गिरगिट की लम्बी जीभ, कीड़े को चिपकाने के बाद, पल भर में मुँह के भीतर ग़ायब हो जाती है।

'क्या तुम्हें मालूम है, तुम्हारा पीछा किया जा रहा है?' स्पिनडल ने मकास की तरफ़ देखते हुए पूछा।

मकास ने उसकी तरफ़ गहरी नज़रों से देखा और कुछ सोचकर बोला, 'नहीं।'

'एक *छुप्पाछाया* उसी दिन से हमारा पीछा कर रहा है, जबसे हम गीगा–टर्सिया से चले हैं। संथाल के बेटो!' फ़ैगुअस बातचीत के बीच में ऐसे वूफदा जैसे कोई **मॉलबैक** मेंढक, 'छपाक' से तालाब में वूफदा हो। 'पहले मुझे लगा, ये महज़ एक इत्तेफ़ाक हो सकता है। मगर वो लगातार एक तयशुदा दूरी बनाकर, तभी से चल रहा था।' स्पिनडल ने तीनों की तरफ़ चिन्तित नज़रों से देखकर कहा।

जरूस ने उसकी बड़ी–बड़ी आँखों में परेशानी के भाव देखे। स्पिनडल की गोह जैसी लम्बी जीभ, अब पहले से ज़्यादा लपलपा रही थी।

'तुम्हारी जान को ख़तरा है नौजवानो!' फ़ैगुअस ने अपनी बर्फ़–सी लम्बी दाढ़ी पर हाथ फिराते हुए कहा। संथाल के बेटे अब तक समझ नहीं पा रहे थे कि आख़िर वो दोनों सब कुछ साफ़–साफ़ क्यों नहीं बता रहे? उँफचाई पर टिके, काँच के उस गोल कमरे में इस वक़्त, गूँगे की ज़बान पर लेटे अल्फ़ाज़ों जितनी शान्ति थी।

'छुप्पाछाया न इन्सान होते हैं न जानवर, न वो मानव हैं और न ही अर्द्धमानव, न वो पक्षी हैं, न पेट के बल रेंगने वाले और न ही कोई प्रेतात्मा। वो महज़ एक छाया हैं, एक परछाई, जिसके पास कोई जिस्म नहीं होता। उसका आकार तो इंसानी परछाई जैसा ही होता है लेकिन उसके पास जिस्म नहीं होता। छुप्पाछाया, इंसानों की परछाइयों को चाट जाते हैं। वो बस इंसानी परछाइयाँ खाते हैं। एक बार जिसकी परछाई उन्होंने चाट ली, वो प्राणी एक हफ़्ते के भीतर बीमार होकर मर जाता है, लेकिन ये तब तक उसके पीछे ही रहता है, जब तक रूह पूरी तरह जिस्म का साथ न छोड़ दे। ये छिपकर पीछा करने में माहिर हैं। ये पदचिन्हों की गर्द उठा लेते हैं और उस धूल के सहारे उसकी परछाई को चाट जाते हैं। बदबूदार बालों से ये डरते हैं। रास्ते में स्पिनडल ने *दो* बार अपने बदबूदार बाल, पीछे पेंफककर उसे रोके रखा। इसलिए मैं स्पिनडल के कन्धें पर बैठकर यहाँ तक आया और तुम कैमल्योफ़ैण्ट की पीठ पर, ताकि तुम्हारे पाँवों के निशान, रास्ते की गर्द पर न पड़ें।' संथाल के बेटे हैरत से उसकी बात सुन रहे थे। उन्हे अब समझ आया कि जंग ख़त्म होने के बाद भी

फैगुअस क्यों गीगा–टर्सिया में रुका रहा।

एक पल चुप रहकर फैगुअस ने फिर कहना शुरू किया, 'तुम्हारा पहले भी पीछा किया गया है लेकिन वो पीछा करने वाले और इसमें भारी फर्क है। वो किसी के भेजे भेदिए थे और छुप्पाछाया खुद अपने शिकार का चुनाव करता है। ये बहुत ताकतवर होते हैं, इनकी शक्तियों का खुद इन्हें भी नहीं पता कि उनका फैलाव कहाँ तक है। अगर कोई इनसे बचने के लिए पेड़ की छाया में भी छुप जाए तो ये पूरे पेड़ की परछाई को चाट लेते हैं और उसमें घुली परछाई को अलग करने का भी हुनर रखते हैं। छुप्पाछाया को खत्म करने का केवल एक तरीका है, उसके ऊपर *पेशाब* करना, लेकिन ये इतने फुर्तीले होते हैं कि ऐसा करना असंभव ही है। इनके छद्मावरण को समझना बहुत मुश्किल है। ये तुम्हारे आसपास ही छुपकर होगा लेकिन तुम उसे पहचान भी नहीं पाओगे। ये चाँदनी रातों में सबसे ज़्यादा निकलते हैं, इसलिए मैं सफ़र के लिए मावस की रातों का इंतजार कर रहा था लेकिन शायद पिछले सौ सालों में इनकी ताकतों में बहुत बढ़ोत्तरी हुई है।' वो दम साधे फैगुअस की बातें सुन रहे थे।

फैगुअस ने उनकी सोच की रीढ़ को ये कहकर सुन्न कर दिया, 'इससे आगे मैं तुम्हारे साथ नहीं जाउँफगा, बहादुर युवको! मेरा सफ़र, तुम्हारे साथ बस यहीं तक था।'

जाने–अनजाने वो फैगुअस के मार्गदर्शन के आदी–से हो गए थे। अब अचानक उसका, ऐसे बीच राह में छोड़ देना, झकझोर देने वाला था।

फैगुअस ने अपने भारी लबादे की जेब में हाथ डालते हुए कहा, **'पहले तो कभी किसी के साथ के आदी मत होना, अगर हो जाओ तो उसे इसका अहसास मत होने देना। वरना वो तुमसे इसकी क़ीमत वसूलेगा। याद रखना, वो क़ीमत ऐसी होगी, जो तुम्हें भीतर तक तोड़ देगी।'**

तीनों भाई स्तब्ध से उसकी बात सुन रहे थे। 'लोगों के मामले में ये क़ीमत अलग–अलग हो सकती है लेकिन फैगुअस के मामले में ये केवल एक ही है, दूरी। अब तुमसे दूरी बनाने का वक़्त आ गया है संथाल के बेटो! जाओ, तुम्हारा सफर तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है।'

प्रकाश–स्तम्भ के कमरे में इस वक़्त, गर्भाशय के भीतर–सी चरम ख़ामोशी थी। स्पिनडल ने अपने जिस्म के कुछ बाल तोड़कर उन्हें सौंप दिए, 'मेरे जिस्म के बाल रख लो। ये छुप्पाछाया को तुमसे दूर रखने का काम करेंगे लेकिन ये केवल थोड़ी बहुत देर तक ही कारगर होगा।'

विदा लेते वक़्त फैगुअस ने उनसे महज़ इतना कहा, '*शब्दहीन–शब्दकोश* तुम्हें उनके पास मिलेगा, संथाल के बेटों, **बौने–भी–जिन्हें–बौना–कहते–हैं।** मैं कैमल्योफैण्ट को लेकर वापस गीगा–टर्सिया की तरफ़ जा रहा हूँ। क़ुदरत तुम्हें भयानक मुसीबतों में डाले ताकि तुम अपने भीतर की सारी संभावनाओं को खंगाल सको।'

इसके बाद उसने एक शब्द भी नहीं कहा। बूढ़ा फ़कीर, कैमल्योफैण्ट की पीठ पर बैठकर वापस चला गया। स्पिनडल, उन्हें प्रकाश–स्तम्भ के नीचे तक छोड़ने आया। वुफछ ही देर में जंगली रास्ते ने उन्हें अपने हरे लबादे में पूरी तरह से ढँक लिया।

मुझे याद पड़ता है, कई दिनों तक संथाल के बेटे, पतली–पतली पगडण्डियों पर चलते रहे। जैल्कोवा के चौड़े पेड़ों के पीछे छुपकर, एक परछाई लगातार उनका पीछा करती रही। कई रातें उन्होंने जागकर गुज़ारीं और कई रातें पहरा देते हुए। जब वो पीछे मुड़कर देखते, उन्हें कहीं कुछ नज़र नहीं आता लेकिन उन्हें पता था और महसूस भी हो रहा था कि वो हर वक़्त उनके पीछे ही है। ये अहसास उनके लिए बहुत चिड़चिड़ा बना देने वाला था कि कोई हर पल देख रहा है, हर समय पीछा कर रहा है। फैगुअस का साथ छूटने से वो ऐसा महसूस कर रहे थे जैसे कोई नवजात शिशु, नौ महीने का विलासितापूर्ण गर्भ–प्रवास ख़त्म करके, बेरहम दुनिया में आ गया हो।

छुप्पाछाया, हर वक़्त पीछे था। एक बार तो उन्हें वो इतना पास महसूस हुआ कि उसे हाथ बढ़ाकर छुआ जा सके लेकिन बस पल भर के लिए। उसके बाद वो इतनी फुर्ती से ग़ायब हुआ जैसे कभी वहाँ था ही नहीं। जरूस, उसकी हल्की–सी झलक ही देख पाया था। ज़मीन पर लेटी, तिरछी, काली परछाई, जो इस तरह इधर से उधर भाग रही थी जैसे कोई शरारती बच्चा, सूरज की रोशनी को, आईने से यहाँ–वहाँ प्रतिबिम्बित कर रहा हो। बाद में उन्हें अहसास हुआ कि जरूस कमज़ोरी महसूस कर रहा है। उन्हें समझने में पल भर नहीं लगा कि छुप्पाछाया, जरूस की परछाई *चाट* गया। पिछले दो दिन से वो दिखा भी बहुत कम था। कोई अंजाना भय, उनकी हिम्मत के नाखून खींचने को बेचैन दिख रहा था।

तीसरे दिन हालत ये हो गई कि वो खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। अब अगर वो तेज़ धूप में भी होता तो उसकी परछाई नहीं बन रहीं थी। उस रात जरूस ने, खुले आसमान के नीचे लेटकर, देर तक सितारों से बातें कीं। उसका इल्म

उसे सितारों के पास तो ले आया लेकिन वापसी में, उसकी सोच के जरीदार कपडों पर निराशा के ढेर सारे पैबन्द थे। सितारों का पैग़ाम कोई अच्छा न था। उसने सलार और मकास को आकर कुछ नहीं बताया। खामोशी ने उसके लफ़्ज़ों को, घुड़की देकर चुप कर दिया था। वो रात ऐसे कटी, जैसे किसी को सूई से, बरगद का पेड़ काटने का काम सौंप दिया हो। छुप्पाछाया का शिकार एक हफ़्ते से ज़्यादा जिन्दा नहीं रहता और तीन दिन बीत चुके थे। जरूस की *कमज़ोरी* अब बहुत *ताक़तवर* हो गई थी।

फिर उन्होंने फैसला किया, उनमें से एक जरूस के पास रहेगा और दूसरा बौनों की तलाश में निकलेगा। रास्ता खोजने के लिए सलार ने ग्लैडीलस के दिए पासे जमीन पर फेंके। नीचे गिरते ही चारों पासे एक–दूसरे के साथ गड्डमड्ड हो गए। पल भर के लिए ज़रा–सा काला धुआँ फैला और चारों पासे गायब थे। उनकी जगह, जो वहाँ खड़ा था, उसे देखकर मकास और सलार दोनों ऐसे उछल गए जैसे अचानक, तलवों को झुलसा देने वाली, **एम्बरलीफ** घास पर पैर पड़ गया हो।

वो मुश्किल से मकास के घुटने तक आ रहा था। जिस्म सींक की तरह बेहद पतला, इतना पतला कि मकास की सबसे छोटी उँगली भी उससे ज़्यादा मोटी लग रही थी। तिनके जैसे पतले–पतले बाज़ू, बदन पर केवल एक छोटी–सी लँगोटी। पूरा बदन इतना चिकना और रोमरहित जैसे किसी ने खरगोश के बाल उस्तरे से छील दिए हों। उसका मटमैला बदन, हवा की वजह से ऐसे लहरा रहा था जैसे बीच में से टूटकर गिर जाएगा। पतली गर्दन के ऊपर टिका मोटा सिर जैसे किसी ने पतली सींक पर मोटा टिंडा टाँग दिया हो। सिर पर एक बाल नहीं, एकदम सफाचट, मोटी–मोटी निर्दोष आँखें और मोटे भद्दे होंठ।

'तुम किसी लम्बे बाँस की तरह **गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फ़ैलीटस** के सिर पर क्यों खड़े हो, उँफट की लीद से निकले तरबूज के साबुत बीज। क्या तुम नहीं जानते किसी **स्ट्रासोल** का स्वागत *कैसे* किया जाता है, नामुराद लड़के!'

मकास हैरत से उसकी तरफ़ ताके जा रहा था। उसने अपने सींक जैसे पतले बदन को जुम्बिश दी और दौड़कर मकास की टाँग पर अपने छोटे–छोटे दाँत गड़ा दिए।

'आहह...' वो दर्द से चीख उठा।

उसने अपनी टाँग को तेज़ झटका दिया, जिसकी वजह से स्ट्रासोल छिटक कर दूर जा गिरा। मोटे लबादे के कारण उसके नन्हे दाँत चमड़ी तक तो नहीं पहुँच पाए थे लेकिन उसने मकास की पिण्डली के कुछ बाल ज़रूर उखाड़ दिए थे। सलार तब तक माज़रा समझ ही नहीं पाया था कि अचानक ये हो क्या रहा है। वो बस एक बार मकास की तरफ़ देख रहा था और फिर पतले सींकड़ी की तरफ़।

'ओफ़्फ...इस कमबख़्त छोकरे ने तो मेरी कमर ही तोड़ डाली। बूढ़े मेंढक के नाखून के मैल, तुम अपने–आप को समझते क्या हो? तुमने गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फ़ैलीटस को अपने इस भद्दे पैर से मारा?'

पतला सींकड़ी अब भी, **अहोआरा** पेड़ के सूखे पत्तों पर पड़ा अपनी पीठ सहला रहा था। हालाँकि मकास को अब भी समझ नहीं आ रहा था कि उस पतली सींक का, पेट, पीठ और सीना कहाँ से शुरू होकर कहाँ ख़त्म हो रहा है। वो अब भी चिल्ला रहा था, 'लंगड़ी छिपकली के सड़े हुए दाँत में पलने वाले कीड़े, अभी बताता हूँ तुम्हें कि एक स्ट्रासोल को लात मारने का अंजाम क्या होता है।'

वो उठकर दोबारा मकास के पैर की तरफ़ काटने दौड़ा लेकिन इस बार सलार ने उसे रास्ते में ही दबोच लिया।

'आ...ह...ह।' एक चीख सलार के मुँह से निकली और उसने तड़पकर उसे छोड़ दिया।

उसने अपने नन्हे दाँत, सलार की हथेली में गड़ा कर जोर से काट लिया था। पतला सींकड़ी छूटकर दोबारा मकास की टाँग की तरफ़ काटने भागा लेकिन वो होशियार था। जैसे ही वो मकास के पैर के पास पहुँचा, उसने झट से उसे अपनी बाँसुरी के नीचे दबा लिया। अब वो बाँसुरी के तले दबा हुआ छटपटा रहा था और मकास को अजीब–अजीब गालियाँ दे रहा था।

वो झट से मेंढक की तरह फिसला और सूखे पत्तों पर पीठ के बल लेटकर हाँफने लगा। उसकी बड़बड़ाहट अब न सलार की समझ में आ रही थी और न ही मकास की, लेकिन ये सुनाई दे रहा था कि जो कुछ भी वो कह रहा था, वो उनकी *तारीफ़* तो किसी भी कीमत पर नहीं लग रही थी।

मकास ने बड़ी मुश्किल से उसे शान्त किया। उसने मकास को बताया कि वो इस वजह से उससे नाराज हुआ क्योंकि मकास ने अपनी नाक पर अँगूठा रखकर और जीभ बाहर निकालकर उसका अभिवादन नहीं किया। उन्हें पता चला कि वो

एक स्ट्रासोल है, स्ट्रासोल्स की सूँघने की ताकत का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। खाने के लिए उन्हें केवल अपने नाखून ही पसन्द हैं, जो बहुत तेजी से हर दिन बढ़ते हैं। ये केवल उस चीज में ही जाकर सोते हैं, जिसे अपना घर मान लेते हैं। वो चाहे किसी घोंघे का खाली खोल ही क्यों न हो। खुद्दारी इनके भीतर कूट–कूटकर भरी होती है। हैरतअंगेज शक्तियों के स्वामी और बेहद जज्बाती भी। बात–बात पर विचित्रा गालियाँ देना इनकी आदत में शुमार होता है लेकिन दिल के उतने ही नरम। गम्पूग्रास वल्सटान नीमोक्रीड फैलीटस, यही नाम था उस स्ट्रासोल का, जिसका पतला जिस्म इस वक्त सूखी पत्तियों पर लेटा था। पहले के मुकाबले अब वो कुछ दोस्ताना नजर आ रहा था।

'अगर हम तुम्हें, तुम्हारे इस लम्बे नाम, *गम्पूग्रास वल्सटान नीमोक्रीड फैलीटस...*की जगह, केवल *स्ट्रासोल* कहकर पुकारें तो तुम नाराज तो नहीं होगे, मेरे पतले दोस्त?' मकास ने उसकी तरफ ऐसी नजरों से देखा जैसे उसे विश्वास दिलाना चाहता हो कि हम अब *दोस्त* हैं।

उसने अपना बारीक–सा मुँह खोला और बड़ी–बड़ी गोल आँखें घुमाकर बोला, 'ऊँफट के पाँव में छिपी जूँ के अण्डे, सड़े हुए अखरोट के छिलके, नामुराद लड़के...ये ठीक ऐसा ही होगा जैसे कोई किसी इन्सान को उसके नाम से पुकारने की जगह, महज *'इन्सान'* कहकर पुकारे। गम्पूग्रास को अपने खानदानी नाम पर गर्व है, बकरी की आँत में छिपे परजीवी...' उसने अपना सीना फुलाकर गर्व का भाव दिखाने की कोशिश की।

मकास जल्दी से जल्दी उससे ये पूछना चाहता था कि वो उन्हें बौनों तक पहुँचा दे ताकि वो अपने भाई की जिन्दगी बचा सकें लेकिन वो पतला सींकड़ी उन्हें इतना कहने का मौका ही नहीं दे रहा था।

बमुश्किल सलार और मकास ने उसे बताया कि पिछले कई दिनों से छुप्पाछाया उनका पीछा कर रहा था और इस वक्त उनका भाई जरूस, अपनी परछाई खो चुका है और उन्हें ऐसी मदद की जरूरत है, जो उनके भाई को ठीक कर सके और उन्हें बौनों तक पहुँचा सके। स्ट्रासोल ने ऐसी नज़रों से उनकी तरफ देखा जैसे ये उसका बाँए हाथ का खेल हो।

छुप्पाछाया का नाम आने पर वो थोड़ा दहशतज़दा दिखा लेकिन उसने बड़बड़ाना जारी रखा, 'उन नमकहराम *छुप्पो* को मैं खूब जानता हूँ, जंगल की आग की बची हुई कालिख हैं वो नामुराद, सड़े फल के भीतर का कालापन हैं वो बदज़ात, हमेशा काली बिल्ली के मल में सने गुबरैले जैसे लगते हैं लेकिन बौनों का सरदार *पियोनी*, तुम्हारे भाई की जान बचा सकता है क्योंकि बौनों और इन *छुप्पो* में खूनी दुश्मनी है।'

'हमें पियोनी को खोजना होगा।' मकास ने दृढ़ता से कहा।

'घुँघराले बालों वाला वो लालची ततैया मुझे ज़्यादा पसन्द नहीं है। दुर्लभ चीजों का संग्रह करने की उसकी लत ने उसे नशेड़ी बना दिया है मगर मुझे क्या! भाड़ में जाने दो उसे।' उसने कन्धे उचकाए।

वो उन्हें बौनों के सरदार पियोनी तक ले जाने के लिए तैयार हो गया। मकास को याद आया कि फैगुअस ने रास्ते में उन्हें उस जंग के बारे में बताया था, जो बौनों और दानवों के बीच हुई थी, जिसमें बौनों का सरदार पियोनी दानवों को पीछे हटाता हुआ, उस दलदल तक ले गया था, जिसमें दानव अपने ही वज़न से डूब गए।

इस बीच पतले सींकड़ी ने दो बार कहा, 'मुझे भूख लगी है आवारा, लफंगो, पल भर ठहरो, मैं कुछ खा लूँ।'

एक तरफ जाकर उसने अपने लम्बे नाखून चबाने शुरू कर दिए। 'कट–कट' की आवाज़ से उन दोनों को अजीब–सी मिसमिसी हो रही थी मगर उन्होंने इसे ज़ाहिर नहीं होने दिया।

फिर वो दौड़कर आया और बोला, 'चलो, गुठली वाले अंगूर के छिलके, क्या तुम मुझे बताओगे, तुम्हारा चेहरा फफूँदी लगे बाजरे के आटे की तरह क्यों दिखता है?' मकास ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। सलार को जरूस के पास छोड़ने से पहले, उसने चारों तरफ, स्पिनडल के बदबूदार बालों को फैला दिया। स्ट्रासोल ने उसे अपने पीछे आने का इशारा किया और वो ऐसे दौड़ने लगा जैसे रुई का बना फाहा हो।

घनी झाड़ियों और लताओं के बीच से, वो सर्र से ऐसे निकल जाता जैसे बना ही झाड़ियों में दौड़ने के लिए हो। अब जंगल धीरे–धीरे ख़त्म होता जा रहा था और झाड़ियों और पेड़ों की जगह, दूर तक पैफला बंजर मैदान नज़र आ रहा था। ऊँफचे–नीचे पत्थरों और टीलों पर स्ट्रासोल ऐसे सरपट भागा जा रहा था कि मकास के लिए उसका पीछा तक करना मुश्किल हो रहा था।

चलते–चलते मकास थककर चूर हो चुका था लेकिन पतला सींकड़ी था कि चलता ही जा रहा था। न तो उसकी साँस फूल रही थी और न ही उसे कोई थकान हो रही थी।

'गम्पूग्रास वल्सटान नीमोक्रीड फैलीटस के साथ दौड़ना दुनिया में किसी के बस की बात नहीं है, सपेफद गिंडार के

भीतर भरी गंदगी। तुम्हारा जिस्म किसी बैम्बूस की तरह लम्बा है लेकिन तुम्हारे भीतर, तीतर के बीमार चूजे जितनी भी ताकत नहीं है।'

मकास उसकी बकबक सुनकर बिल्कुल पक गया था। उसके दिमाग में चिड़चिड़ापन ऐसे खौल रहा था जैसे उबलते तेल में पड़ा, हैंगी तिलचट्टा।

वो उससे पूछना चाहता था कि अभी कितना और चलना होगा लेकिन हर बार ये सोचकर चुप हो जाता कि इस सवाल के जवाब में पता नहीं उसे कितनी और बकबक सुननी होगी। भूख के मारे अब उसका बुरा हाल हो रहा था। रास्ते में स्ट्रासोल ने **बैलीबोसिया** के एक सूखे पेड़ की जड़, अपने हाथों से खोदनी शुरू कर दी और कुछ पल बाद उसके सींक जैसे हाथों में, दो मटमैले अण्डे जैसे दबे हुए थे। जब तक वो खोद रहा था, मकास ने वो दूरी पूरी कर ली, जो स्ट्रासोल ने उससे आगे–आगे दौड़कर बनाई थी। उसने पास जाकर देखा, जिन्हें वो अण्डे समझ रहा था, वो दो मटमैले पत्थर थे, जो बिल्कुल अण्डे जैसे ही लग रहे थे।

पतले सींकड़ी ने मकास की तरफ देखा और बोला, 'लो, ये **एगस्टोन** खाकर, अपने पेट में बैठे भूखे दानव की भूख मिटा लो, हैल्विकॉस गिद्ध की बदबूदार बीट।'

मकास उन पत्थरों को देखकर एक पल के लिए हिचका।

'अब खा भी लो, ये पत्थर नहीं एगस्टोन है, बारिश में भीगे गोबर के चौथ। ये दुनिया का सबसे मुलायम और स्वादिष्ट पत्थर है, जिसे खाकर पचाया जा सकता है लेकिन इसे ढूँढना उतना ही मुश्किल है, जितना ये विश्वास करना कि तुम एक पत्थर को खाकर अपनी भूख मिटा सकते हो। लेकिन तुम्हारा दिमाग भी बाकी इंसानों की तरह, एक सीलन भरी कोठरी से ज्यादा कुछ नहीं है। मैं तो केवल अपने *नाखून* ही खाना पसन्द करता हूँ अगर तुम भी इन्हें चबाना चाहो, मुझे कोई एतराज नहीं है, खामोश राक्षस की लकवाग्रस्त जीभ।'

ये कहकर उसने अपनी पतली–पतली उँगलियाँ मकास के सामने कर दीं। उसके सफेद नाखून ऐसे लग रहे थे जैसे कोई चूहा उन्हें कुतर गया हो। पोरवों का गीलापन बता रहा था कि सींकड़ी भागते–भागते भी अपने नाखून चबा रहा था। मकास को उबकाई–सी आने को हुई लेकिन उसने अपने आप को रोक लिया। उसने आगे बढ़कर उसके हाथ से दोनों एगस्टोन ले लिए और उन्हें अपने लबादे की जेब में डाल लिया।

अब उसकी सहनशक्ति से बाहर हो गया था। चिढ़कर उसने व्यंग्य से पूछा, 'आखिर हमें और कितना चलना होगा, पाक रूह पर बँधी नापाक लँगोटी?'

पतले सींकड़ी ने बुरा–सा मुँह बनाकर उसकी तरफ़ देखा और फुसफुसाने जैसी आवाज़ में बोलने लगा, 'गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फैलीटस की नक़ल करता हुआ **कैचनच** बन्दर। अपने–आप को पता नहीं क्या समझता है, ये मरियल झींगुर।'

स्ट्रासोल अभी भी चले ही जा रहा था। आसमान, अब उस बंजर पहाड़ी इलावेफ के ऊपर, दस्तरखान बिछाकर, विश्राम को न्यौता देना चाह रहा था। मकास के लिए अब एक क़दम चलना भी दूभर था। थक कर वो वहीं एक पत्थर पर बैठ गया। पतले सींकड़ी ने पीछे मुड़कर देखा और बिना कुछ कहे, अपनी नाक से ऐसे कुछ सूँघने लगा जैसे नाक के अन्दर कोई मच्छर घुस गया हो।

'तुम्हारी मंज़िल आ चुकी है, ऊदबिलाव के अण्डे के छिलके। भीतर गुफा में वो झगड़ालू पियोनी तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है' उसने पत्थरों के बीच बनी, एक इतनी छोटी गुफा की तरफ़ इशारा किया, जिसमें मकास केवल पेट के बल रेंगकर ही घुस सकता था।

उसे गुफा कम, छेद कहना ज्यादा ठीक लगता। स्ट्रासोल ने अपनी पतली–पतली बाजुओं से एक पत्थर ऐसे उठा लिया जैसे वो मोम का बना हुआ हो और उसे गुफा के भीतर लुढ़का दिया। पत्थर कुछ दूर तक लुढ़का और फिर रुक गया। उसकी आवाज़ से ऐसी गड़गड़ाहट हुई जैसे लकड़ी का बना पहिया किसी पथरीली जगह पर चला हो। मकास एक पल के लिए ठिठका और फिर उसने फ़ैसला कर लिया कि वो पेट के बल रेंगकर गुफा के भीतर जाएगा।

परन्तु उसे गुफा के भीतर जाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। अन्दर से ऐसी भिनभिनाहट की आवाज़ें आने लगीं जैसे किसी ततैये को मकड़ी ने जकड़ लिया हो। मकास एक क़दम पीछे हट गया। स्ट्रासोल ने बोलना जारी रखा, 'आ रहा है बाहर, वो झगडालू पियोनी, दीमक की बाँबी का थका हुआ मज़दूर...अंधी मक्खी का गन्दा पंजा।'

कुछ पल बाद, गुफा के द्वार पर एक छोटा–सा, बौना नज़र आया, जिसका क़द मुश्किल से दस अंगुल रहा होग।

उसकी दाढ़ी एकदम काली थी और सिर के बाल घुँघराले। रंग एकदम तवे की तरह काला, जिस्म पर मजबूत लकड़ी का बना एक छोटा–सा कवच, एक नन्हा पफरसा, चमड़े के फीतों से कसे छोटे–छोटे जूते थे। उसका पूरा वजूद ऐसा लग रहा था जैसे अभी जंग लड़ने को तैयार हो। वो अन्दर से इतने गुस्से से बाहर आ रहा था जैसे उसके दिमाग में क्रोध की फदकियाँ पड़ रही हों।

'कौन है ये कमबख्त, जिसने पियोनी की गुफा के भीतर ये *चट्टान* लुढ़काने की हिम्मत की?' वो उस छोटे पत्थर को *चट्टान* कह रहा था, जिसे पतले सींकड़ी ने गुफा के भीतर फेंका था।

बाहर आते ही उसकी पहली नजर स्ट्रासोल पर पड़ी। उसे देखते ही वो हैरत से चौंक गया, 'तुम...तुम यहाँ क्या कर रहे हो, झाड़ू की टूटी हुई सींक? ढेर से अलग पड़े, भूसे के तिनके! ज़रूर ये तुम्हारी ही शरारत होगी। मैं तुम्हें छोड़ूँगा नहीं पतले शैतान!' ये कहकर वो स्ट्रासोल की तरफ अपना नन्हा फरसा लेकर भागा। सींकड़ी घबराकर पीछे हटा और उससे बचने के लिए इधर–उधर भागने लगा।

भागते–भागते वो चीख रहा था, 'रुक जा, रुक जा, चिम्पैंजी के सड़े हुए अँगूठे, बहरे अबाबील के कान के मैल, अजगर के पेट में पड़ी अधखाई मुर्गी। ठहर...ठहर...' मगर पियोनी ने उसका पीछा नहीं छोड़ा।

स्ट्रासोल कद में भी पियोनी से लगभग दो गुना था और फुर्ती तो उसमें गज़ब की भरी हुई थी। वो किसी भी तरह बौने के हाथ नहीं आ रहा था। मकास हैरत से खड़ा उनकी इस लुकाछिपी, भागदौड़ को देख रहा था। वो बिल्कुल नहीं समझ पा रहा था कि आखिर इस झगड़े को कैसे रोके।

बौने का फरसा बार–बार पथरीली ज़मीन से टकराकर 'टन–टन' की आवाज़ कर रहा था। फिर एक बार स्ट्रासोल तेज़ी से मकास का चक्कर काटकर निकला और पियोनी का छोटा पफरसा 'कच्च' की आवाज़ के साथ, मकास की जूते में धँस गया।

'आह...ह।' वो चीखा।

मकास की ऊँचाई के कारण बौना अब तक देख ही नहीं पाया था कि वहाँ पतले सींकड़ी और उसके अलावा, कोई तीसरा भी है।

उसने पहले हैरत से मकास के उस जूते की तरफ़ देखा, जिसमें पफरसा गड़ा हुआ था। फिर गर्दन उठाकर ऊपर आसमान की तरफ़ देखा, मकास के पैरों से होती हुई उसकी नज़र वहाँ तक चली गई, जहाँ उसका सिर था। उसने ताकत लगाकर अपना नन्हा पफरसा जूते से खींचा और कुछ क़दम पीछे हटकर थोड़ी दूरी बनाई, ताकि ठीक से उस विशाल दानव को देख सके।

अचानक जैसे ग़ज़ब हो गया।

'**दानवों का हमला**...दानवों का हमला हुआ है, सब तैयार हो जाओ, दौड़ो–दौड़ो, दानवों ने फिर हमला कर दिया।' चीखता–चिल्लाता हुआ वो वापस गुफा के भीतर भाग गया।

पतला सींकड़ी अब आराम से टाँग पर टाँग रखकर एक पत्थर पर लेटा मुस्करा रहा था। उसके पतले होठों के बीच ये पता ही नहीं चल रहा था कि मुस्कान किस जगह है।

'तुमने ये क्या हरकत की, हमारा सारा बना बनाया काम बिगड़ जाएगा।' वो गुस्से से स्ट्रासोल से बोला। सींकड़ी ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया।

कुछ ही पलों में गुफा के भीतर से सैंकड़ों बौनों की फ़ौज बाहर आने लगी। मकास ने देखा, सबके बाल इतने घुँघराले थे जैसे उनके सिर पर बालों के ढेर सारे छल्ले रखे हों। वो भारी तादाद में बाहर निकल रहे थे। सबके जिस्म लकड़ी के कवच से ढँके हुए थे। किसी के हाथों में छोटी तलवार थी तो किसी के हाथों में पफरसा, कुछ ने अपने कन्धें पर नन्हे–नन्हे धनुष टाँग रखे थे। ज़्यादातर के हाथों में वज़नी और अजीब–अजीब हथियार थे, जिन्हें मकास ने इससे पहले कभी सपने में भी नहीं देखा था। उस ज़रा–सी पथरीली दरार के भीतर इतनी भारी संख्या में बौने रहते होंगे, ये मकास को गुमान भी नहीं था। वो समझ नहीं पा रहा था कि इन हालात से कैसे निपटे।

मकास के दिमाग़ की फ़ैसला करने की ताक़त, रीढ़ की हड्डी टूटे साँप की तरह पड़ी थी। इससे पहले कि वो कुछ कह पाता या उन्हें कुछ समझा पाता, बौनों ने हमला कर दिया। लेकिन ऐन वक़्त पर पतला सींकड़ी बीच में आ गया। उसने पियोनी को अपनी *सभ्य* भाषा में समझाया कि वो लोग यहाँ तक क्यों आए थे। साथ ही ये भी कि एक बहादुर नौजवान वहाँ से एक दिन की दूरी पर, पेड़ के नीचे पड़ा अपनी अंतिम साँसें गिन रहा है। उसने उन्हें बताया कि

छुप्पाछाया को जरूस की परछाई चाटे हुए चौथा दिन था। अगर उसे वक़्त रहते मदद न मिली तो उसकी ज़िन्दगी को ख़तरा था। पियोनी, स्ट्रासोल की बातों को बहुत ग़ौर से सुन रहा था।

उनकी बातों को सुनकर मकास को पता चला कि गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फैलीटस नाम का वो पतला स्ट्रासोल, पियोनी का बचपन का दोस्त था। वहीं उसे ये भी मालूम हुआ और इसका अहसास भी हुआ कि फैगुअस और उसके साथी चार बूढ़े फकीरों का नाम, सब कितनी इज़्ज़त के साथ लेते थे। उसने पियोनी को बताया कि फैगुअस ने उन्हें उस जंग के बारे में बताया, जब दानवों के साथ हुए युद्ध में, बौनों की जीत हुई। उसने ख़ास तौर पर उन वाकियात का ज़िक्र किया, जब बौनों का सरदार पियोनी, दानवों को पीछे हटाता हुआ, उस दलदल तक ले गया, जिसमें डूबकर केवल मौत ही हाथ थामती थी।

बौने मदद के लिए तैयार थे लेकिन पूरी तरह से नहीं। वो इस फ़ालतू की मुसीबत में टाँग अड़ाने की पूरी क़ीमत वसूलना चाहते थे।

पतले सींकडी ने मकास की तरफ़ देखा, 'काली सेही की दुम पर उगा ये साँवला काँटा, पियोनी...तब–तक यहाँ से नहीं हिलेगा जब–तक इसे *कुछ* ऐसा नहीं मिल जाता जो इसके लिए क़ीमती हो।'

मकास को उन दो चक़मक़ पत्थरों का ख्याल आया, जो बूढ़े फ़कीर फैगुअस ने, तब उन तीनों भाइयों को दिए थे, जब उन्होंने घास के उन गोलों से विदा ली थी, जिनमें छेदरहित बाँसुरी बजाने वाले वो पाँचों रहते थे। जिन्हें देते वक़्त फैगुअस ने कहा था, 'शब्दहीन–शब्दकोश तक पहुँचो, इससे आगे का रास्ता तुम्हें उसी में मिलेगा। ये पत्थर वो सब जलाकर ख़ाक कर सकते हैं, जो तुम हासिल करोगे। इसलिए इन्हें सावधनी से रखना। कोई हुनरमंद संगतराश किसी पत्थर को मूरत में बदल सकता है और कोई कमअक़्ल, किसी भी मूरत को पत्थर में, मगर दोनों के बीच, *दिखाई-न-देने-वाली* कोई चीज़ मौजूद होती है, जो पत्थर को मूरत और मूरत को पत्थर में तब्दील करती है, उसे खोजना। लेकिन होशियार रहना, इन पत्थरों को *बौनों* के हाथों से हमेशा बचाना। वो सदैव इनकी ताक में घूमते रहते हैं।'

जैसे ही उसने उन पत्थरों का ज़िक्र किया, बौनों ने राज़ी होने में एक पल की भी देर नहीं की, लेकिन चक़मक़ पत्थर यहाँ उसके पास नहीं थे। पत्थर तो वहाँ थे, जहाँ इस वक़्त जरूस और सलार को वह छोड़कर आया था। लेकिन पत्थर मिलने से पहले बौने एक क़दम हिलने के लिए भी तैयार नहीं थे। वक़्त, बिल में सरकते साँप की तरह खिसकता जा रहा था। इतना समय बाकी नहीं बचा था कि वहाँ जाकर पत्थर लेकर आया जाए। बात बनती न देखकर उसने स्ट्रासोल से इस मामले को सुलझाने की उम्मीद की।

पतले सींकडी ने पियोनी को एक तरफ़ बुलाया और उसके कान में जाने क्या कहा, वो तुरन्त उनके साथ चलने के लिए तैयार हो गया। मकास हैरत में था। अब तक, जो बौना टस से मस नहीं हो रहा था, वो एकदम साथ चलने को तैयार हो गया। उसकी समझ में नहीं आया कि इस नन्हे शैतान ने आख़िर उसके कान में ऐसा क्या मन्त्रा फूँफक दिया।

मगर ये समय इन सब बातों में पड़ने का क़तई नहीं था। उसने अपना सिर झटका और बोला, 'हमारे पास वक़्त बहुत कम बचा है। हमें जल्दी से जल्दी वहाँ पहुँचना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कोई अनहोनी हो जाए।' मकास की आवाज़ से चिन्ता साफ़ झलक रही थी।

पियोनी ने सहमति में सिर हिलाया और तुरन्त छब्बीस बौने, जो पता नहीं किस वजह से इतने ख़ास थे कि उन्हें साथ चलने के लिए चुना गया था, तैयार हो गए। मकास को पता चला कि जिस छोटी–सी गुफा को वो देख रहे थे, हक़ीक़त में वो तो केवल एक दिखावा था। बाहर से देखने पर वो जितनी छोटी दिखती, दरअसल उतनी छोटी थी नहीं। भीतर वो गुफा हज़ारों सुरंगों और पतली, लम्बी गुफाओं में बँटी हुई थी, जिनका फैलाव सैंकड़ों कोस तक था।

उस बंजर पहाड़ी इलावेफ में केवल **डोथ्रान** के कँटीले पेड़ ही, कहीं–कहीं नज़र आ रहे थे। खुश्की और प्यास की वजह से अब मकास का गला, अकाल में दरार पड़े खेत की तरह हो गया था। पियोनी ने उसे पानी के लिए *उथली-नदी* तक चलने के लिए कहा। बौनों के साथ चलता हुआ मकास, उन चट्टानों के पीछे वाले हिस्से में पहुँचा। वहाँ एक छोटी–सी जलधरा, पत्थरों के बीच से बह रही थी, उसी को बौने *उथली-नदी* का नाम दे रहे थे।

प्यास, मकास के कण्ठ के पायदान पर, अपने तलवे रगड़–रगड़ कर साफ़ कर रही थी। साफ़ और ठण्डा पानी देखकर उससे रहा नहीं गया। वह जलधरा के पास लेट गया और उसने अपने होठों से पानी का एक हल्का–सा घूँट भरा। उसे ऐसा लगा जैसे **तकलामकानास** के रेगिस्तान में, सदियों बाद किसी उँफट ने, रेत के सूखे कणों को, लार टपका कर गीला कर दिया हो।

पानी बहुत मीठा और ठण्डा था। वो गटागट लगातार पीता चला गया। ख़ाली पेट पानी पीने की वजह से पानी उसके

पेट के तल से ऐसे जाकर टकराया जैसे पहाड़ी बारिश की वजह से कोई उँफचा झरना, अचानक घाटी की तलहटी में गिरा हो।

'नदी की तलछट में पड़े, विकलाँग घोंघे की तरह कब तक पानी पीते रहोगे तुम, लम्बे बाँस के पेड़। चलो, अभी एक लम्बा सफ़र तुम्हें तय करना है, सीलन भरी, उन लम्बी गुफाओं में, जिनके बीच में पेड़ों की जड़ें, अजगर की तरह लटकती रहती हैं। लेकिन तुम मुझे पहले दर्जे के निकम्मे और सुस्त दिखाई देते हो।' पतला सींकडी मकास पर चिल्लाया।

वो पानी पीकर उठा और दो बौने उसे चट्टान के पीछे वाले हिस्से में ले गए, जहाँ गुफा का एक चौड़ा मुहाना दिख रहा था। उन्होंने उसे भीतर जाने का इशारा किया। मकास थोड़ा हिचकता हुआ अन्दर घुसा। पथरीली दीवारों की सीलन भरी गंध उसके दिमाग़ से टकराई। थोड़ा भीतर जाने पर उसे अपने दाहिनी तरफ़ से बोलने की आवाज़ें सुनाई दीं।

वह उस तरफ़ मुड़ा, उसका सिर गुफा की नीची छत से टकराने से बचा। एक मोड़ पार करते ही उसे रोशनी दिखाई दी। वो जगह काफ़ी चौडी थी, पियोनी, स्ट्रासोल और उसके साथी वहाँ खड़े हुए थे। छब्बीस के छब्बीस बौने, पियोनी की तरह हथियारों से पूरी तरह लैस थे।

पतला सींकडी तेजी से मकास की तरफ़ आया और बोला, 'ये रख लो।'

उसने अपनी फटी–सी लँगोटी के नेपेफ में से, एक पेड़ की पतली–सी जड़ निकाल कर उसकी तरफ़ बढ़ाई। ठण्ड से ऐंठ गए साँप की तरह टेढ़ी–मेढ़ी वो जड़, बहुत विचित्रा लग रही थी।

मकास ने प्रश्नवाचक नज़रों से उसकी तरफ़ देखा। स्ट्रासोल जैसे समझ गया था कि वो क्या पूछना चाहता है, 'ये छिपकली की कटी पूँछ नहीं है, चमगादड़ की बीट से निकलने वाली दुर्गन्ध के झोंके...ये **ट्रीमोनी स्किनटस** की जड़ है। इसे संभालकर अपने पास रख लो।'

पियोनी ने आगे बढ़कर, अपनी दाढ़ी सहलाई और बताया, 'जिस सफ़र को तुमने पूरी रात में तय किया है, उसे हम उसके चौथाई वक़्त से भी कम में तय करेंगे। गुफाओं का ये जाल, जंगली पेड़ों की जड़ों की तरह, जमीन के भीतर हर जगह फैला हुआ है। लेकिन इनका इस्तेमाल केवल वो कर सकता है, जिसे इन रास्तों की सही जानकारी हो और *'उनसे'* बचने का हुनर जानता हो। ज़रा–सी चूक, मौत के मुँह में ले जा सकती है। जंगल के भीतर जाने के लिए और हमलावरों से बचने के लिए, हमारे पुरखे सदियों से इन रास्तों का इस्तेमाल करते रहे हैं। मेरे छब्बीस साथी तुम्हारे आगे–पीछे चलेंगे, बीच में रहना, बिना इजाज़त कुछ मत छूना। सबसे ज़रूरी बात, गुफाओं की छत से अपना सिर बचाकर रखना क्योंकि तुम ताड़ के पेड़ की तरह लम्बे हो।'

मकास ने सहमति में सिर हिलाया। अब वो लोग एक पंक्ति में आ गए थे। तेरह बौने सबसे आगे चल रहे थे और तेरह सबसे पीछे। आगे वाले बौनों के पीछे, पतला सींकड़ी था, उसके बाद मकास और फिर पियोनी था। गुफा की दीवारों ने उन्हें, पसलियों के बीच दबे दिल की तरह सहेज रखा था।

'ट्रीमोनी स्किनटस की जड़ अगर तुम्हारे पास होगी तो इन गुफाओं में रहने वाली, **मीटोटीथ** चींटियाँ, जो मांस के सिवाय और कुछ नहीं खातीं, तुम्हारे पास नहीं फटकेंगी। वरना कभी भी तुम्हारा जिस्म उनके बिलों के भीतर सजावट कर रहा होगा, वो भी इतने छोटे–छोटे मांस के टुकड़ों में, जिन्हें रेत के कण कहना ही ज़्यादा ठीक होगा।'

पियोनी ने अपनी बात पूरी की। मकास, इस वक़्त सबसे ज़्यादा फ़िक्रमंद जरूस के लिए था, उसके सिवाय उसे और किसी चीज़ की चिन्ता नहीं थी। तसल्ली देने वाली बस एक बात थी, जिस सफ़र को उसने सारी रात लगाकर पूरा किया था, वो अब उसे एक चौथाई वक़्त में पूरा करने वाला था। यानि ज़्यादा समय नहीं लगेगा, जब वो जरूस और सलार के पास होगा। उनकी ख़ैरियत की चिन्ता उसे भीतर से ऐसे खाए जा रही थी जैसे दीमक का कोई अनाड़ी, नवजात बच्चा, फूहड़ तरीके से लकड़ी को कुतर रहा हो।

मकास के सिर को छूने वाली पेड़ों की जड़ें और घास के गुच्छे, उसे ये साफ़ बता रहे थे कि वो इस वक़्त जंगल की ज़मीनी सतह से नीचे है। ऊपर से लटकने वाली जड़ें इतनी ज़्यादा थीं जैसे कोई जटाधरी साधू उल्टा लटक रहा हो। गुफा के भीतर सीलन और नमी बढ़ती जा रही थी। धीरे–धीरे अब रोशनी कम होने लगी थी। आगे चलने वाले तेरह बौने इतने सतर्क दिख रहे थे जैसे कभी भी किसी भी दिशा से हमला हो सकता हो। कोई भी वुफछ नहीं बोल रहा था, मकास को ये चुप्पी अब अखरने लगी थी।

मकास ने सपने में भी नहीं सोचा था कि जंगल की ज़मीनी सतह के नीचे, एक ऐसी अलग दुनिया भी बसी हो सकती है। गुफा की दीवारों पर एक जगह कुछ लिखा हुआ था। वो प्राचीन *गैरोगन–ग्लीफ़* लिपि थी। दुनिया की सबसे कठिन

चित्रलिपि, जिसमें केवल बारह चित्र होते हैं, उन्हीं को मिलाकर हर वाक्य बनता। अपने गुरु के पास उसने वो लिपि पढ़ी तो थी मगर बस इतनी ही, जिससे एकाध शब्द या वाक्य पढ़ा जा सके। मकास ने पढ़ने की कोशिश की मगर उसे बस एक हर्फ समझ में आया– **बैरीसब्लोच कुहाको–सीलन**।

काफी कोशिश करने के बाद भी वो इसका कोई मतलब नहीं निकाल पाया। तीन सिर वाले, **कस्टहोल** कनखजूरे पर पाँव पड़ने से बचाते हुए, मकास ने पियोनी से पूछा, 'क्या यहाँ बोलने की मनाही है?'

उसने होंठों पर एक उँगली रखकर चुप रहने का इशारा किया और आगे बढ़ता रहा। कोई कुछ नहीं बोल रहा था। थोड़ी दूर चलने के बाद, उसने अचानक गुफा की दीवारों और छत की तरफ देखा। उनके आसपास की ऊबड़–खाबड़ दीवारों और छत का रंग, एकदम काला हो गया था, निपट स्याह। आगे चलने वाले तेरह बौने आपस में आँखों ही आँखों में कुछ इशारा कर रहे थे, मगर बोल कोई कुछ नहीं रहा था। उन्होंने अपने होठों पर उँगली रख रखी थी, जैसे अगर उँगली हटी तो अल्फाज जबदरस्ती बाहर आ जाएँगे।

हर कदम के साथ, दीवारों और छत का कालापन बढ़ता जा रहा था। मकास से जब नहीं रहा गया तो वो गुस्से में चिल्लाया, 'क्या कोई बताएगा कि आखिर ये हो क्या रहा है?'

जैसे उसका इतना कहना ही गजब हो गया। उसकी चिल्लाहट खत्म होने से पहले ही, छत से ऐसे वुफछ भरभराकर नीचे गिरने लगा, जैसे उनके ऊपर भूसे का गट्ठर खुल गया हो। पूरी की पूरी काली छत, जैसे एकदम उनके ऊपर ढह गई थी। उनके जिस्म एक काले बुरादे के नीचे दब से गए थे। वो मीटोटीथ चींटियाँ थीं। लाखों की तादाद में या शायद करोड़ों की। मकास, जिसे दीवारों और छत का कालापन समझ रहा था, वो मीटोटीथ चींटियों का जत्था था, जो पूरी छत पर चिपका हुआ था।

एकदम से जैसे भगदड़–सी मच गई। हर कोई बदहवास होकर, उन नन्ही–नन्ही काली चींटियों को अपने ऊपर से हटाने के लिए जूझ रहा था। कई बौने तो चींटियों के उस विशाल ढेर के नीचे पूरी तरह से दब गए थे। उनमें से कुछ का केवल हाथ नज़र आ रहा था और कुछ का महज लकड़ी का बख़्तरबन्द। मकास के भारी लबादे के एक–एक रेशे में, चींटियाँ ही चींटियाँ भर चुकी थीं।

फिर उसे पियोनी की आवाज़ सुनाई दी, 'सब ज़मीन पर मुर्दे की तरह लेट जाओ, हिलना मत, जल्दी करो।'

चींटियों के इतने वज़न के नीचे बिना हिले–डुले लेटना कोई मज़ाक नहीं था लेकिन सभी ने वैसा ही किया। इसका हैरतअंगेज परिणाम हुआ। चंद पलों में सारी चींटियाँ, तेज़ी से रेंगती हुई वहाँ से भागने लगीं। गुफा की दीवारों में वो ऐसे पैवस्त होती चली गई जैसे कभी वहाँ थी ही नहीं। मकास ने कुछ कहने के लिए मुँह खोलना चाहा लेकिन खोल नहीं पाया। उसके मुँह पर एक अजीब सा जालीदार पंजा कस गया था, जिसने उसकी आवाज़ को उसके गालों की कोठरी में ही घोट दिया। पतला सींकड़ी उसके कन्धे पर बैठा था और अपनी हथेली से उसका मुँह दबा रखा था।

बिना कुछ बोले, वो काफ़ी देर तक आगे बढ़ते रहे। काफ़ी आगे बढ़ जाने के बाद अचानक मकास ने एक परिचित आवाज़ सुनी, 'अब तुम बोल सकते हो, भिंडी के छिलके! मुसीबत टल गई है।'

पियोनी एकदम ऐसे फट पड़ा, जैसे किसी ने फुग्गे में सुई चुभो दी हो। वो मकास से बेहद नाराज़ था। चेतावनी देने और इशारा करने के बाद भी मकास ने बोलने की हिमाकत की, जिसका परिणाम ये हुआ कि वो सब मरते–मरते बचे। स्ट्रासोल ने मकास का कन्धा दबाकर, उसे न बोलने की ख़ामोश हिदायत दी।

गुस्से में उबलते पियोनी ने बताया कि अगर ट्रीमोनी स्किनटस की जड़ें उन सभी के पास नहीं होतीं तो अब तक वो चींटियाँ उन्हें चट कर गई होतीं। उसने बताया कि करोड़ों की तादाद में, मीटोटीथ चींटियाँ इन गुफ़ाओं की छत और दीवारों से चिपकी रहती हैं। एक–दूसरे के पंजों से पंजे मिलाकर, वो एक बहुत बड़ा जाल बुन लेती हैं। ध्वनि की मामूली–सी भी तरंग, उनकी जकड़ को तोड़ देती है और पूरा का पूरा जत्था, भरभराकर नीचे गिर पड़ता है।

मकास पर क्रोध्ति होते हुए पियोनी ने बताया कि ट्रीमोनी स्किनटस की गंध से घबरा कर वो खुद भाग गई, वरना अब तक मौत उन सभी की मेज़बानी कर चुकी होती। ये जत्था लगातार आगे बढ़ता रहा। गुफ़ाओं में उन्हें गहरी दलदल के साथ **टैंगीसक मॉरटल** भी मिले। टैंगीसक, पाँवों के बल चलने वाले या पेट के बल रेंगने वाले जीव नहीं थे। उनके न आँखें थीं न मुँह, न हाथ थे न पैर, वो केवल एक फुदकती हुई जीभ थे, एक बड़ी लिजलिजी, गीली जीभ, जो हर वक़्त ख़ून चूसने को बेचैन रहती। एक बार शिकार के जिस्म से चिपक जाने के बाद, वो अपने जिस्म से, उस जगह का ख़ून और मांस, दोनों घोलकर चूस जाती।

पतले सींकडी ने उन्हें अपने हाथों से अलग हटाकर, उठाकर रास्ता बनाया। पियोनी ने मकास को बताया कि स्ट्रासोल के जिस्म में खून या मांस नहीं होता, इसलिए उसे टैंगीसक मॉरटल से कोई ख़तरा नहीं था। बहुत सतर्क रहने के बाद भी एक टैंगीसक, आगे वाले बौने के जिस्म से चिपक गया। बड़ी मुश्किल से सींकडी ने उसे बौने के जिस्म से अलग कराया।

आधे से ज़्यादा रास्ता तय करने के बाद **क्लॉरूट** पेड़ की जड़ों ने, उस छोटी गुफा को बिल्कुल बन्द कर दिया। वो कच्ची दीवारों में ऐसे घुसी हुई थीं कि उनसे होकर निकलना असंभव था। सबसे बड़ा ख़तरा ये था कि वो किसी नोकीले पंजे की तरह, एकदम आँखों पर हमला करती थीं। उनके पास जाने का भी मतलब आँखों से हाथ धो बैठना था। पूरा काफ़िला रुक गया। मकास को जरूस की फ़िक्र ने बेचैन कर रखा था।

क्लॉरूट की जड़ों ने गुफा में ऐसा जाल बुन रखा था जैसे किसी जुलाहे ने इधर से उधर, हर तरफ़ कच्चा सूत पूर रखा हो। सबसे आगे चलने वाले तेरह बौनों को पियोनी ने इशारा किया और उनमें से छह, गुफा की ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ गए। अपने पंजों से उन्होंने जमीन ऐसे खोदनी शुरू कर दी जैसे कोई छछून्दर बिल में घुसा जा रहा हो।

पतले सींकडी ने बताया कि ये छब्बीस **डिग्गीडस्ट** बौने थे, डिग्गीडस्ट बौनों की वो प्रजाति है, जो ज़मीन को खोदकर उसके भीतर सुरंगें बनाकर निकल जाने में माहिर है। उसने ये भी बताया कि पूरी दुनिया में केवल ये छब्बीस बौने ही इस हुनर में माहिर हैं। कुछ ही देर में उन बौनों ने जमीन में इतना गहरा गड्ढा कर दिया, जिसमें वो सब उतर सकते थे। मकास के लायक चौड़ा और गहरा गड्ढा बनाने में उन्हें थोड़ा वक़्त लगा लेकिन अपने जिस्म के आकार के लायक जगह तो उन्होंने कुछ ही पलों में बना दी।

क्लॉरूट की जड़ें, उनके सिरों के ऊपर गुफा में थीं और वो उनके नीचे से निकल गए। एक जगह इतनी ठण्डक होनी शुरू हो गई कि वो सबके सब काँपने शुरू हो गए। कुछ ही देर में उनके लबादों के ऊपर बर्फ़ की हल्की–हल्की सफेद परत दिखने लगी। पतले सींकड़ी के जिस्म पर भी बर्फ़ का बुरादा दिख रहा था लेकिन वो काँप नहीं रहा था। चंद ही पलों में उनके पूरे जिस्म बर्फ़ से ढँक गए। पियोनी ने उन्हें भागने के लिए कहा। भागकर उन्होंने वो रास्ता पार किया, जिसके बारे में पियोनी ने बताया था कि वो *पचास क़दम* लम्बी बर्फ़ीली गुफा थी। अगर वो भागते नहीं और वहीं खड़े होकर ठण्ड से बचने या कोई दूसरा उपाय सोचने में वक़्त गँवाते तो यक़ीनन वहीं जमकर मर गए होते।

फिर वो वक़्त आया, जिसके लिए मकास बेचैन था। पतले सींकड़ी ने बताया कि कुछ पल बाद वो उस पेड़ के पास निकलने वाले हैं, जहाँ वो जरूस और सलार को छोड़कर गया था। मकास को हैरत हो रही थी कि पूरी रात चलने के बाद, उसने जो रास्ता तय किया था, वो इतने कम समय में कैसे पूरा हो सकता था लेकिन ये वक़्त इन बातों को सोचने का नहीं था।

अब छब्बीस के छब्बीस बौने उस सुरंगनुमा गुफा को ऊपर की तरफ़ खोदना शुरू कर चुके थे। मकास को समझ नहीं आया कि एक साथ *छब्बीस* को लगने की क्या ज़रूरत थी। कुछ ही पलों में उन्होंने एक तिरछा छेद बना दिया, जो इतना बड़ा था कि मकास उसमें से आसानी से निकल सकता था। जब वो सरकने लगे, तब मकास को अहसास हुआ कि वो *छब्बीस* एक साथ क्यों लगे थे। वो इस वक़्त ज़मीन के इतने नीचे थे, जिसके बारे में मकास को अंदाज़ा तक नहीं था। मिट्टी से पूरा लथपथ होने के बाद भी ऊपर आसमान नज़र नहीं आ रहा था।

मैंने बरसों तक इस दास्तान को सहेज कर इसलिए रखा ताकि वो ज़िन्दगी, जो संथाल के बहादुर बेटों ने जी, आने वाली पीढ़ियों तक पहुँच सके। ताकि वो अनछुए तजुर्बे, जो उनके सफ़र की गर्द ने उन्हें सौंपे, वो उन बच्चों तक पहुँच सकें, जो संथाल के छोटे–से गाँव में रहते थे या उन बच्चों तक, जो अभी तक पैदा भी नहीं हुए, जो दुनिया के किसी कोने में, कभी, कहीं पैदा होंगे, शायद आज से बरसों बाद या सदियों बाद।

अपनी गुफा से मैं बहुत कम बाहर जाता हूँ। कई बार सूखी लकड़ियाँ और जलावन लेने के लिए मुझे निकलना पड़ता है। कभी–कभी उन फलों की तलाश में, जिन्हें मैं *'जीवन-फल'* कहता हूँ। वैसे उस फल का नाम **एम्ब्रॉटस** है। उसे खाकर कई महीनों के लिए, भूख ग़ायब हो जाती है। जब मैं एम्ब्रॉटस के पेड़ के समाने खड़ा होता हूँ तो मुझे लगता है जैसे इस 'जीवन–संघर्ष' में, वो मेरी बहुत बड़ी ताक़त है।

कैल्टिकस की ये पहाड़ियाँ और ये गुफाएँ, एक विशाल पथरीली किताब में तब्दील हो गई, उन गर्म लूओं की वजह से, जिनके थपेड़ों ने मुझे वो फ़ैसला लेने को मजबूर किया कि मैं इस दास्तान को, अपनी छेनी और टाँकी की मदद से, पत्थर के भीतर खोदूँ। गर्म लू का तूफ़ान, जो महीनों तक चला, जिसकी वजह से इतनी गर्मी पैदा हुई, जिसने तीन संदूकों में हिफ़ाज़त से रखी, मोम की उन पट्टियों में से कुछ को पिघला दिया, जिन पर ये दास्तान लिखी हुई थी। इसके कुछ *वर्क़*, अगर मोम के उन चौखटों को *वर्क़* कहा जा सकता है, पिघल गए। तब पहली बार मैं इस अहसास से रू–ब–रू हुआ कि

ये दास्तान *उम्रदराज़* तो है, मगर *अनमिट* नहीं। मेरे संगतराश पुरखों ने जो हुनर मुझे विरासत में सौंपा, वो गर्म लू के उस तूफान के सामने सीना खोल कर अड़ गया और बरसों तक मेरी छेनी और हथौड़ी ने आराम नहीं किया।

मोम के इन चौखटों पर उकेरा गया है उनके बारे में, *बौने-भी-जिन्हें-बौना-कहते-थे,* जो न ज़मीन पर रहते थे, न आसमान में, ना पानी में और न ही पेड़ों, घास या पहाड़ पर। *इकोइ-चामन* भाषा बोलने वाले, वो मुट्ठी भर बहादुर, जिनकी भाषा, उनके अलावा दुनिया में केवल एक शख़्स जानता था। उस ग्रन्थ के बारे में, जिसका आकार इतना छोटा था कि एक सुई की नोक पर वैसी किताबों का ढेर समा सकता था। साथ ही उनका ज़िक्र, जिनकी प्रजाति में एक भी मादा नहीं बची थी और सफ़र में मिला वो सबसे रहस्यात्मक संकेत, जिसने संथाल के बेटों के सफ़र की पूरी दिशा ही बदल दी।

शब्दहीन-शब्दकोश

अध्याय पाँच

एक हफ़्ता होने में, अब केवल एक दिन बाकी था। जरूस की हालत अब ऐसी हो गई जैसे किसी केंचुए के भीतर का सारा तरल निचोड़कर एक तरफ डाल दिया हो। सलार को एक–दो बार छुप्पाछाया दिखा, दूर एक पेड़ के पीछे से झाँकती परछाई के रूप में। चूँकि स्पिनडल के बाल उसने जरूस के चारों तरफ फैला रखे थे, शायद इसलिए वो पास तो नहीं आ रहा था मगर ये अहसास बार–बार हो जाता कि वो वहीं है। पेड़ की छाया में लेटे जरूस की तरफ देखते हुए, उसने ख़्याल किया कि उनसे थोड़ी ही दूर, जमीन के नीचे कुछ हलचल हो रही है। एक ही पल में उसका ध्यान उस दिन की तरफ चला गया, जब उन्होंने जमीन के नीचे चलते *मत्स्य-नाग* को महसूस किया था। सलार अब पहले से ज़्यादा चौकन्ना हो गया। उसने अपना धनुष अपने हाथ में कस लिया और हमले की मुद्रा में आ गया।

साफ़ महसूस हो रहा था कि कोई चीज़ है, जो नीचे से ज़मीन खोदकर बाहर निकल रही है। वो हैरत से उस हिस्से को देख रहा था, जहाँ की घास, नीचे से खोदने की वजह से हिल रही थी। फिर उसने घास की एक मिट्टीदार परत को उखड़कर अलग गिरते देखा और उसमें से हुए छोटे छेद से, एक बौना ऐसे बाहर आया जैसे कोई चूज़ा, अण्डा फोड़कर भीतर से बाहर निकला हो। उसके पीछे होने वाली हलचल भी वो साफ़ देख पा रहा था। फिर एक–एक करके छोटे–छोटे बौने, ऐसे बाहर निकलने लगे जैसे किसी बाँबी के भीतर आग लग गई हो और बदहवास दीमक बाहर आ रही हों। निकलने वाले हर बौने के साथ, वो छेद और बड़ा होता जा रहा था।

फिर एक जाना–पहचाना चेहरा उसने बाहर निकलते देखा। वो *स्ट्रासोल* था। मुँह बाहर निकालते ही, वो अपने परिचित अंदाज़ में चीखा, 'ख़मीर उठे आटे की तरह मुँह फुलाकर क्यों खड़े हो तुम, अलसाये हाथी की सूँड से टपकती लार...इधर आओ और इस वज़नी दरयाई घोड़े को ऊपर खींचने में हमारी मदद करो।' उसने ज़मीन से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे मकास की तरफ इशारा करते हुए कहा।

मकास को ज़मीन के नीचे से निकलते देख, सलार की हैरत का ठिकाना न रहा। वो दौड़कर वहाँ तक पहुँचा और हाथ का सहारा देकर उसे बाहर खींचा। सबसे बाद में पियोनी बाहर आया। मकास तेज़ी से जरूस के पास पहुँचा, उसने देखा उसकी आँखें बन्द थीं और वो इतना कमज़ोर हो गया था कि साँस भी मुश्किल से आ रही थी।

'अगर अगले पहर तक इसे मदद नहीं मिली तो ये मर जाएगा।' पियोनी ने जरूस की आँखें अपनी छोटी उँगलियों से खोलते हुए कहा।

उसने बाक़ी बौनों को, अजीब–सा हुक्म दिया, '**ढूँढो**, एक न एक तो मिल ही जाएगा।'

उसके आदेश पर बौनों ने अपने काठ–कवच और भारी कपड़े उतारने शुरू कर दिए। अब लगभग सारे बौने अपने कपड़े उतार चुके थे। संथाल के तीनों बेटे हैरत से उन्हें ऐसा करते देख रहे थे। फिर उन्होंने अपनी–अपनी पोशाकों का ढेर उठाया और दौड़कर झाड़ियों के पीछे चले गए।

पियोनी, बेचैनी में चहलक़दमी कर रहा था। उसने कुछ पल बाद चीखकर पूछा, 'मिला कोई किसी को?'

झाड़ियों के बीच से एक साथ छब्बीस आवाज़ें आईं, 'नहीं, अब तक नहीं मिला'।

तीनों भाई समझ नहीं पा रहे थे कि ये अजीब बौने आख़िर कर क्या रहे हैं।

'एक–एक कपड़े की सीवन उधेड़ डालो, वहीं कहीं छुपे होंगे वो।' पियोनी ने झाड़ियों की तरफ़ मुँह करके कहा। संथाल के तीनों बेटों को ऐसा लग रहा था जैसे झाड़ियों के पीछे, ख़रगोशों का कोई झुण्ड आपस में अठखेलियाँ कर रहा हो।

फिर अचानक एक झाड़ी के पीछे से एक बारीक–सी आवाज आई, 'मिल गया, मिल गया, येएएए...पकड लिया।'

मकास ने देखा, पियोनी की आँखों में चमक आ गई। डिग्गीडस्ट बौनों में से एक, आधे–अधूरे कपडे पहने, दौड़ता आ रहा था। उसने अपनी हथेली सामने फैला रखी थी जैसे उस पर कुछ रखा हो। वो पियोनी के सामने आया और अपनी हथेली उसके सामने कर दी।

पियोनी ने उसका हाथ पकड़ा और अपने मुँह के सामने ले आया। नाक के पास आते ही वो घबराकर ज़ोर से बोला, 'रुको, रुको...संभालो, *वो* गिर गया। मेरी साँस से उड़ गया।'

वो बौना और पियोनी, घास में ऐसे कुछ ढूँढने लगे जैसे अपने पंजों से पूरी जमीन को खोद डालेंगे। फिर सलार ने स्ट्रासोल की आवाज सुनी, 'तुम मोतियाबिन्द वाले मेंढक की तरह अँधेरे में हाथ मारते रहोगे, नामुराद बौने...पीछे हटो, मैं देखता हूँ।'

वो आगे आया और घास पर अपनी गोल–गोल, बड़ी आँखें गड़ाकर देखने लगा।

दो ही पल में वो चीखा, 'मिल गया कमबख्त! जूँ के बालों में रहने वाली जूँ, *कैलोकच* भी इस नमूने से बड़ी होगी। घ ास के तिनके पर ऐसे लटका है जैसे इसकी माँ ने इसके पैदा होने पर ये घास लगाई हो।'

उसने घास का एक तिनका तोड़कर अपनी उँगलियों में ऐसे दबा रखा था जैसे उस पर कुछ लटका हो। लेकिन मकास, जरूस या सलार को उस पर कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था।

स्ट्रासोल ने पियोनी की तरफ देखा और गुस्से से बोला, 'अब अपनी बहती नाक को थोड़ा दूर रखना, वरना अबकी बार ये उड़कर गिर गया तो ढूँढना मुश्किल हो जाएगा, चींटी के अण्डे से निकले कच्चे लार्वा की तरह मेरी तरफ टुकर–टुकर मत देखो, बात करो इस नमूने से।'

पियोनी ने वो घास का तिनका अपनी उँगलियों में दबा लिया और उसे अपने चेहरे के सामने करके, बौनों की प्राचीनतम, रहस्यमयी भाषा इकोइ–चामन में, कुछ बुदबुदाने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे वो किसी से बात कर रहा हो मगर उस तिनके पर कुछ नज़र नहीं आ रहा था। बीच–बीच में वो बोलता हुआ रुक जाता, ऐसा लगता जैसे दूसरी तरफ से जवाब मिलने का इंतजार कर रहा हो, फिर बोलने लगता।

सलार ने आगे बढ़कर उस तिनके को ग़ौर से देखा, मगर उस पर लटका हुआ कुछ दिखा नहीं। तब तक झाड़ियों के पीछे गए बाकी बौने भी वापस आ गए। उनके अस्त–व्यस्त कपड़े साफ़ कह रहे थे कि वो अपने कपड़ों में छिपी कोई चीज़, बड़ी शिद्दत से ढूँढकर वापस आए हैं, जो उन्हें मिली नहीं। पियोनी अब भी उस घास के तिनके से बात कर रहा था। बड़ी अजीब–सी भाषा थी, उसका एक लफ़्ज़ भी किसी के पल्ले नहीं पड़ रहा था। फिर उसने बहुत चौकसी के साथ, तिनका एक बौने की हथेली पर रख दिया। उसके चेहरे पर निराशा ऐसे बैठी थी जैसे गिद्ध अण्डों पर बैठकर उनकी रखवाली कर रहा हो।

स्ट्रासोल के पास आकर उसने मरी–सी आवाज़ में कहा, 'उसने मना कर दिया, साफ़ इंकार कर दिया।'

पतले सींकड़ी ने एक बार अपनी बड़ी–बड़ी गोल आँखों से उसकी तरफ़ देखा और फिर गुस्से में बोला, 'इस नमूने की तो मैं ऐसी–तैसी करता हूँ, इसकी इतनी हिम्मत कि गम्पूग्रास वल्सटान नीमोव्रफीड फ़ैलीटस...के सामने *इंकार* करने की गुस्ताख़ी करे। कहाँ है ये नामुराद, चींटी के नाख़ून का मैल, मछली के दाँत में फँसा मांस का रेशा?'

स्ट्रासोल ने उस बौने के हाथ से, घास का वो तिनका उठा लिया और एक बार उसे अपनी गोल आँखों के सामने किया और फिर शरारती ढंग से, उसे अपनी गन्दी लँगोटी के नेफ़े में रख लिया। कुछ ही पलों में उसने दोबारा तिनका बाहर निकाला और पियोनी को दे दिया और बोला, 'मेरे ख्याल से अब इस नमूने का दिमाग़ ठिकाने आ गया होगा। फिर से पूछो कानसलाई के इस चूज़े से।'

पियोनी ने घास का तिनका चेहरे के सामने किया और फिर प्राचीन इकोइ–चामन भाषा में कुछ बोलने लगा। दो पल बाद ही उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। उसने स्ट्रासोल की तरफ देखा और बोला, 'तुम्हारी लँगोटी का बदबूदार कपड़ा, ये तो क्या, दुनिया में कोई बर्दाश्त नहीं कर सकता, दीमक खाई पतली सींक। ये कह रहा है, इसे मौत मंजूर है मगर दोबारा तुम्हारे जैसे सड़ियल दानव की पोशाक में जाना नहीं, जो पता नहीं कब से नहीं नहाया है।'

पियोनी की बात सुनकर स्ट्रासोल ऐसे भड़का जैसे किसी ने साँड को, लाल कपड़े के तम्बू में बाँध दिया हो। वो गुस्से में अजीब–अजीब गालियाँ बकने लगा मगर पियोनी उसके गुस्से पर केवल हँसता रहा। संथाल के तीनों बेटों को बाद में पता चला, बौनों का सरदार पियोनी, जिससे बातें कर रहा था, वो एक नन्हा **फ्रॉ** था। दुनिया के सबसे छोटे बौनों की वो

प्रजाति, जो इतने छोटे होते हैं कि आँख से भी नजर नहीं आते। **बौने–भी–जिन्हें–बौना–समझते–थे।**

पियोनी ने बाद में उन्हें बताया–'फॉं अब लगभग खत्म होने के कगार पर हैं। वो डिग्गीडस्ट बौनों के लबादों की सीवन में रहते हैं। उस पतले धगे के नीचे, जो कपड़े की सिलाई के बाद नजर भी नहीं आता। चूँकि अब सारी दुनिया में केवल छब्बीस डिग्गीडस्ट बौने ही बचे हैं इसलिए फॉं बौनों पर भी संकट मँडरा रहा है। ये इतने ढीठ और जिद्दी होते हैं कि आसानी से किसी बात को नहीं मानते। एक समय था, जब लाखों की तादाद में फॉं, ऊन के बने उन मोटे लबादों में आराम से रहते थे, जिन्हें पहनकर हज़ारों डिग्गीडस्ट बौने, इस जंगल में घूमते थे। समय के साथ चीज़ें सिकुड़ती गईं और अब फॉं प्रजाति लगभग ख़ात्मे की तरफ है।'

उसने चाँदी जैसी रंगत वाले सलार और सोने जैसे रंग वाले मकास को बताया–'फॉं मादाएँ, **चेचकोप्लाग** नाम की एक अजीब महामारी का शिकार होकर, कम होती चली गईं। मादाओं के ख़त्म होने से, संकट की आँखें, पूरी फॉं प्रजाति को घूर कर देखने लगीं। अब बमुश्किल कोई मादा इस जमीन पर बची होगी, आने वाले कुछ वक़्त में शायद बचे–खुचे बाकी फॉं भी न रहें।'

पियोनी की बातें सुनकर मकास केवल एक ठण्डी साँस लेकर रह गया। जिन्दगी की बेरहमी और हिसाब–किताब वो भली–भाँति समझता था। अपने वायदे के मुताबिक, उसने सबसे पहले दोनों चकमक पत्थर, पियोनी को सौंप दिए। चकमक पत्थर लेकर वो इतना खुश था, जैसे बैक्टिन मधुमक्खी को अचानक फूलों का जंगल मिल गया हो। उसने झपटकर उन्हें अपने कवच में सरका दिया।

फिर एक हैरतअंगेज़ चीज सामने आई। पियोनी को दिखने वाले **डल** नाम के नन्हे फॉं ने बताया कि सैंकड़ों की तादाद में फॉं, उन्हीं पोशाकों में छिपे हैं, जिनमें डिग्गीडस्ट बौने खोज चुके हैं। उसने बताया कि वो उनके लबादों की सबसे नीचे वाली किनारी की सीवन में हैं। डल ने मदद का भरोसा दिया लेकिन बदले में वो पियोनी की गुफाओं में एक गुफा चाहता था, जिसकी दीवारों पर डिग्गीडस्ट बौनों के बिना धुले लबादे टँगे हों। ताकि वो और उसके साथी बिना किसी परेशानी के आराम से उनमें रह सकें। साथ ही वो ये वादा भी चाहता था कि पियोनी उन बची–खुची मादाओं को ढूँढने में उसकी मदद करे, जो इस ज़मीन पर कहीं भी बाक़ी बची हैं, ताकि फॉं प्रजाति अपने वंश को आगे बढ़ा सके।

बौनों के सरदार से पक्का वादा लेने के बाद, डल ने अपने साथियों को पुकारा। संथाल के बेटों को तो वुफछ नहीं दिखा लेकिन स्ट्रासोल और पियोनी ने देखा, सैंकड़ों फॉं बौने उन लबादों के, सिलाई वाले धगे के नीचे से बाहर आ रहे थे, जो डिग्गीडस्ट्स ने पहने हुए थे। सलार के मन में उन्हें एक बार देखने का ख़्याल बार–बार हिचकोले ले रहा था। आखिर जब उसका मन नहीं माना तो उसने जरूस की खुर्दबीन उठाई और अपनी आँख से लगा ली।

उसने घास पर चारों तरफ़ खुर्दबीन घुमाई लेकिन कहीं कुछ नहीं दिखा। लेकिन जब आहिस्ता–आहिस्ता उसने लबादों की तरफ़ उसका शीशा घुमाया तो हैरत ने जैसे उसकी आँखों के आकाश में अपने विशाल डैने फैला दिए। बेहद नन्हे, सैंकड़ों फॉं, लबादों से उतरकर घास के तिनकों पर ऐसे झूल रहे थे जैसे कोई चिम्पैंजी, अपनी लम्बी भुजाओं से पेड़ के तनों पर झूलता है।

वो हर तरफ़ दिख रहे थे, घास के तिनकों पर अठखेलियाँ करते, झूलते, शरारत करते। उसने देखा, उनमें से एक, जो शायद *डल* था, सबको एक जगह इकट्ठा होने के लिए इशारा कर रहा था। हालाँकि वो क्या बोल रहा था, ये सलार की क़तई समझ में नहीं आ रहा था। उसके नन्हे जिस्म पर कसे हुए कपड़े थे। कान इतने लम्बे थे कि उसके सिर से भी थोड़ा ऊपर तक जा रहे थे। पतली लम्बी नाक और लम्बी उँगलियाँ। सलार को सबसे ज़्यादा ताज़्जुब ये देखकर हुआ कि एक ही पल में, नन्हे फ़ॉं इतनी दूरी तय कर लेते, जितनी कोई इन्सान, दो क़दम रखने पर करता है। देखने भर से वो बड़े हँसमुख और खुशदिल नज़र आ रहे थे।

उसने आँख से पल भर के लिए खुर्दबीन हटाई और चारों तरफ़ देखा। पियोनी, मकास और पतला सींकड़ी उसे ऐसे देख रहे थे जैसे वो कोई तमाशा हो। फिर अचानक वो बहुत घबरा गया। खुर्दबीन उसके हाथ से चिपक गई थी, उसने जोर से अपने हाथ को झटका मगर वो नहीं छूटी। ताक़त लगाकर दूसरे हाथ से छुड़ाने की कोशिश के बाद भी वो टस से मस नहीं हुई।

पतले सींकड़ी ने सलार की घबराहट को ये कहकर और बढ़ा दिया कि, 'ये अब नहीं छूटेगी...मुर्गी के चूज़े की बीट, ये तुम्हारी नहीं थी, फिर भी तुमने इसका इस्तेमाल किया। अगर ज़्यादा देर की तो कुछ वक़्त बाद ये तुम्हारी हथेली में धँसने लगेगी और तब तक धँसती रहेगी, जब तक ख़ाल और हड्डियों से पार होकर पूरी नहीं निकल जाती। समझे, ऊदबिलाव की मूँछ के सबसे छोटे बाल।'

सलार के दिमाग में ग्लैडीलस के अल्फाज बिजली की तरह कौंधे, जो उसने जरूस को खुर्दबीन देते वक्त कहे थे–'ये खोजी खुर्दबीन है। इसकी मदद से तुम उन्हें भी देख सकते हो, जिन्हें नंगी आँखों से देखना संभव नहीं है। है तो ये खुर्दबीन लेकिन ये दूर और पास, दोनों को ऐसे ही देख सकती है जैसे वैल्किन गिद्ध, चूहे के जिस्म पर रेंगते पिस्सू तक को आसमान की ऊँचाई से देख लेता है। आज के बाद इसे किसी और की हथेली में मत रखना, क्योंकि ये हथेली की रेखाओं को पहचानती है। इसे छूने वाले दूसरे व्यक्ति के लिए ये मुसीबत खड़ी कर सकती है।'

इस नई मुसीबत से छुटकारा पाने के लिए सलार ने खुर्दबीन के ऊपर अपना पैर रखकर, पूरा वज़न डालकर उसे छुड़ाने की कोशिश की मगर सब नाकाम। हारकर उसने कोशिश करनी बन्द कर दी और चुपचाप एक तरफ़ खड़ा हो गया।

कैल्टिकस की पहाड़ियों की ये सर्द रातें, इन दिनों कुछ और सर्द हो गई हैं। मैं गुफा में जलती आग के पास बैठकर कुछ गरमाहट महसूस कर रहा हूँ लेकिन बाहर इतनी ठण्ड है कि **स्टोनबैक** कछुए की पीठ पर भी दरारें पड़ने लगी हैं। मुझे इन गुफाओं में अकेले रहने में जितना सुकून महसूस होता है, उतना कभी भीड़ के साथ नहीं हुआ। दरअसल, **अकेलापन केवल उन्हें काटने को दौड़ता है, जो अकेलेपन के साथ होते हैं क्योंकि अगर आप लोगों के साथ से घबराकर अकेलेपन की तलाश कर रहे हैं तो लोग हट जाएँगे लेकिन तब *अकेलापन* भीड़ से भी ज़्यादा बेचैन करने वाला होगा। क्योंकि असली समस्या साथ की है, वो चाहे अकेलेपन का हो या फिर भीड़ का।**

मैं कई बार आधी रात को अपनी पथरीली गुफा से बाहर निकलकर आसमान के सितारों को देर तक देखता रहता हूँ। कई बार उन सितारों को, जिनसे ताँबई रंग वाला जरूस ख़ास बातें करता था। इस दास्तान के कुछ किरदार आज भी जिन्दा हैं, इतने बरसों बाद भी। मगर उनकी बात मैं बाद में करूँगा। फिलहाल मैं उस जगह की बात करूँगा, जहाँ नन्हे योद्धाओं की एक फौज, छुप्पाछाया के खात्मे की व्यूह–रचना कर रही थी। बहादुर फॉ... बौने–भी–जिन्हें–बौना–समझते–थे।

उन्हें मालूम था कि आख़िरी दिन से पहले, छुप्पाछाया एक बार ज़रूर वहाँ आएगा इसलिए आसपास के हर पेड़ के पास उगी घास पर, दो–दो फॉ तैनात थे। मोर्चाबन्दी हो चुकी थी, अब अगर कुछ करना था तो वो था इंतज़ार। वक़्त, पाँव में मोच खाए घोंघे की तरह सरक रहा था। पतला सींकड़ी, पियोनी और सारे डिग्गीडस्ट बौने, उस पेड़ के उपर चढ़ चुके थे, जिसके नीचे जरूस लेटा हुआ था।

मकास और सलार, जरूस के पास बैठे, उसके पपड़ाए होठों को देख रहे थे। सलार को या तो स्ट्रासोल की बात की वजह से वहम हो गया था या फिर वाक़ई वो खुर्दबीन आहिस्ता–आहिस्ता उसकी हथेली में गड़ती जा रही थी। कुछ देर पहले तक दर्द का अहसास बिल्कुल नहीं था, लेकिन अब उसके हाथ में तेज़ दर्द हो रहा था। सूरज कई बाँस ऊपर चढ़ गया था।

सब लोग एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गए। फिर अचानक सलार को एक पेड़ के पीछे से झाँकती एक काली परछाई दिखाई दी, जो पल भर दिखकर ग़ायब हो गई। पलक झपकते ही, वो बहुत दूर दिखी, मैग्नीगैलिया एपलीकॉट के एक तने के पास। फिर जो हुआ, संथाल के बेटों को उसका यक़ीन नहीं हुआ। जरूस के कमज़ोर जिस्म से महज़ बीस क़दम की दूरी पर छुप्पाछाया दिखा। उन्होंने पहली बार उसे इतने क़रीब से और इतना साफ़ देखा।

ज़मीन पर पड़ी एक लम्बी परछाई, जैसे किसी नक़ाबपोश ने सिर से पैर तक काला लबादा ओढ़कर अपना चेहरा भी नकाब में छुपा लिया हो। वो दुस्साहसी ढँग से आहिस्ता से सलार की तरफ़ चला। ऐसा लगा जैसे वो उसकी परछाई को चाट जाना चाहता हो। इस अहसास मात्रा से ही मकास के रोंगटे खड़े हो गए कि वो छुप्पाछाया के इतने नज़दीक थे, जिसे देखने मात्रा का मतलब मौत होता है। फिर जैसे बिजली–सी कौंधी, छुप्पाछाया की परछाई अचानक एक काले धुएँ में तब्दील होने लगी और उसमें से ऐसी चीखने की आवाज़ें आने लगीं जैसे किसी बिल्ली का गला, कुत्ते ने दबोच लिया हो।

जब तक वो कुछ समझ पाते, छुप्पाछाया मटमैले धुएँ में तब्दील होकर हवा में घुल गया। किसी की समझ में नहीं आया, अचानक ये क्या हुआ। सलार को अपने हाथ में तेज़ दर्द की एक लहर महसूस हुई। उसने साफ़ देखा कि खुर्दबीन उसकी हथेली की खाल में धँसने की कोशिश कर रही थी। फिर हवा में तैरते धुएँ के एक छोटे–से छल्ले में जैसे विस्फोट हुआ और उसमें से हज़ारों छोटे–छोटे छल्ले तीर की तरह निकलकर हर दिशा में फैल गए, जिनमें से एक जरूस की तरफ भी तेजी से गया।

जरूस को महसूस हुआ, कुछ था, जो अचानक उसके जिस्म में दाख़िल हुआ था। उसने अपनी पलकें आहिस्ता से खोलीं और लड़खड़ाते क़दमों से खड़ा हो गया। पिछले तीन–चार दिन में ये पहला मौक़ा था, जब वो बिना किसी सहारे खड़ा हुआ था। डगमगाता हुआ वो कुछ क़दम चला और तेज़ धूप में खड़ा हो गया। मकास और सलार खुशी के मारे

एक–दूसरे से लिपट गए। जमीन पर जरूस की परछाई पड रही थी।

वो दोनों दौडकर जरूस के पास गए और जमीन पर बैठकर, उसकी परछाई पर ऐसे हाथ फिराने लगे जैसे उसे छूकर महसूस करना चाहते हो या फिर अपने सबसे अनमोल खजाने को सहला रहे हो। जमीन पर हाथ फिराने की कोशिश में सलार के हाथ से चिपकी खुर्दबीन, घास से टकराई और एक तेज दर्द, उसकी रूह तक उतर गया। खुर्दबीन अब वाकई उसकी हथेली में भीतर तक धँस गई थी।

उसने दर्द को नजरअंदाज करते हुए, पल भर को खुर्दबीन अपनी आँख से लगाई, ये देखने के लिए की आखिर नन्हे फों कर क्या रहे हैं। उसने खुर्दबीन का शीशा, घास पर इधर–उधर घुमाया, चार–पाँच फों, अब भी खडे होकर उस जगह पर *पेशाब* कर रहे थे, जहाँ छुप्पाछाया खडा था। जैसे ही उन्हे ये अहसास हुआ कि सलार खुर्दबीन से उन्हें देख रहा है, वो शरमा कर अपने कपडे संभालने लगें।

उनमे से एक सलार की तरफ मुँह उठाकर इकोइ–चामन भाषा मे कुछ चीखा। जैसे कह रहा हो–'बेशर्म, तुम्हें शर्म नहीं आती, किसी को इस तरह देखते हुए।' सलार सकपका गया और उसने जल्दी से खुर्दबीन अपनी आँख से हटा ली।

तब तक पियोनी, स्ट्रासोल और बाकी डिग्गीडस्ट बौने भी पेड से उतर आए। नीचे उतरते ही सींकडी चिल्लाया, 'पानी में भीगे मुनक्खे के डन्ठल, एक तरफ हटो, मुझे इस लम्बे बाँस को देखने दो।' वो चलकर जरूस के पास आया और अपनी लँगोटी के नेफे से एक हरा बीज निकालकर जरूस को दे दिया, 'लो, नामुराद! थोडी देर इसे अपने मुँह मे रखकर इसका रस निगलो, फिर देखना कैसे बारहसिंघे की तरह चौकडी भरते हो।'

बारहसिंघे के जिक्र पर मकास के दिल में जैसे एक टीस उठकर रह गई। पसीना की बडी–बडी काली आँखें उसके जेहन में तैर गई। उसने अपने दिमाग को झटका और जरूस की तरफ देखा, वो अब आराम से घास पर खडा था।

तभी उसके कानों में पतले सींकडी की आवाज पडी, जो जरूस से कह रहा था, 'गधे के खुर में छिपकर बैठी चींचडी की तरह मत घूरो, इस खटमल के हाथ पर चिपकी ये खुर्दबीन जल्दी हटाओ, वरना थोडी देर मे ये इसकी हथेली फाडकर बाहर निकल जाएगी।'

जरूस ने खुर्दबीन जैसे ही अपने हाथ में पकडी, वो ऐसे सलार की हथेली से अलग हो गई जैसे पूरी तरह पका फल, डण्ठल से अलग हो जाता है।

मुझे याद आता है, उस दिन संथाल के बेटों के साथ जो सबसे हैरतअंगेज बात हुई, वो न तो छुप्पाछाया का खात्मा था और न ही खुर्दबीन का सलार की हथेली से अलग होना। वो था, पतले सींकडी का जाना...स्ट्रासोल का विदा लेना। जाने से पहले उसने वो किया, जिसकी कोई उम्मीद तक नहीं कर सकता था।

वो चला गया, बस इतना कहकर, 'अब गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फैलीटस...के जाने का वक्त आ गया, मैं चलता हूँ।'

बस इतना ही। न कोई विदा, न औपचारिकता और न ही कोई अजीब गाली। वो जैसे प्रकट हुआ था वैसे ही गायब हो गया। पल भर पहले वो वहीं था और पल भर बाद नहीं था। उसके होने और न होने के बीच, संथाल के बेटे कोई पुल नहीं खोज पा रहे थे। वो अवाक् थे, खामोश।

'वो दूसरे किसी भी इंसान के मुकाबले, सबसे शानदार दोस्त था।' सलार ने एक ठण्डी साँस भरकर कहा।

बौनों के सरदार पियोनी ने अपने झुर्रीदार माथे पर सलवट डालकर उसकी तरफ देखा और बोला, **'अगर तुम किसी चीष की खूबसूरती का अहसास नष्ट करना चाहते हो तो उसका सबसे शानदार तरीका ये है, उसकी तुलना किसी दूसरी चीष से कर दो।'** सलार जडवत्–सा उस अंगुल भर के बौने की तरफ ऐसे देख रहा था जैसे कोई काँटेदार सेही पहली बार किसी रोंयेदार खरगोश को देख रही हो।

'फैगुअस ने हमसे कहा था–'शब्दहीन–शब्दकोश तक पहुँचो, इससे आगे का रास्ता तुम्हें उसी में मिलेगा।' जरूस ने पियोनी की तरफ देखते हुए कहा।

पियोनी ने एक गहरी साँस ली और आहिस्ता से बोला, 'फैगुअस...हाँ फैगुअस ने तुमसे सही कहा है लेकिन शब्दहीन–शब्दकोश तक तुम्हें दुनिया में केवल एक प्राणी पहुँचा सकता है और वो इसके लिए तैयार हो जाएगा, इस बात पर मुझे पूरा शवफ है।' संथाल के तीनों बेटों ने सवालिया नजरों से उसकी तरफ देखा। उसने बोलना जारी रखा, '*डल*...हाँ ये डल ही है, जो तुम्हें शब्दहीन–शब्दकोश तक पहुँचा सकता है लेकिन क्या वो ऐसा करेगा? मैं कहता हूँ नहीं, कभी नहीं। शब्दों से भरे हुए किसी भी इंसान को शब्दहीन–शब्दकोश को छूने तक की इजाजत नहीं है और तुम...शब्दों और

जानकारियों से भरे ऐसे अण्डे के समान हो, जिसके ऊपर बैठकर किसी पक्षी ने सेने की कोशिश नहीं की।'

जरूस ने पियोनी की तरफ देखते हुए कहा, 'हम, उससे गुजारिश करेंगे कि वो हमारी मदद करे।'

जरूस की बात पर बौनों के सरदार ने अपने हाथ में पकड़ा हथौड़ा जमीन पर रख दिया और बोला, 'डल एक मनमौजी फॉं है। तुम्हारी जानकारी बढ़ाने के लिए मैं बता दूँ, फॉं आज तक किसी इन्सानी प्रजाति के सम्पर्क में नहीं आए हैं। डिग्गीडस्ट बौनों के लबादों की सीवन के सिवाय, उनका और कोई घर नहीं है। उन्हें किसी तरह का कोई लालच भी नहीं है। सबसे बड़ी बात, प्राचीन इकोइ–चामन भाषा के अलावा, वो और कोई भाषा न तो बोलते हैं और न ही समझते हैं। तुम कैसे अपनी जरूरत उन्हें समझा पाओगे? क्योंकि कम से कम मैं इस मामले में अब तुम्हारी कोई मदद नहीं करने वाला। जितनी मदद की तुमने हमसे उम्मीद की थी, हमने उससे ज्यादा किया है। अब अपनी समस्याएँ तुम्हे खुद सुलझानी होंगी।'

अपनी बात पूरी करके पियोनी ने बाकी सब बौनों को एकट्ठा होने का संकेत किया और चलने की तैयारी करने लगा। मकास ने आगे बढ़कर फिर कोशिश की, 'मगर तुम्हारे वायदे का क्या होगा, जो तुमने इस मासूम डल से किया है?'

पियोनी ने उसकी तरफ हैरत से देखा, 'कैसा वादा?'

मकास व्यंग्य से मुस्कराया, 'बहुत जल्द भूल गए। वही वादा, जो तुमने डल से किया है कि तुम उन मादाओं को ढूँढने में उनकी मदद करोगे, जो दुनिया के किसी भी कोने में हैं।' हम अपने सफर पर हैं और इस काम में तुम्हारी मदद करेंगे, हम तुमसे वादा करते हैं। इस काम को तुम अपनी गुफा में लेटकर पूरा नहीं कर सकते।'

पियोनी एक पल के लिए ठिठका और फिर वापस मकास की तरफ आया।

'तुम जरूरत से ज्यादा होशियार लगते हो नौजवान।'

तीनों में से किसी ने उसकी इस बात का जवाब नहीं दिया।

फिर पियोनी ने उस नन्हे फॉं से बात की, जिसका नाम डल था। तीनों भाई, खुर्दबीन आँख से लगाए खड़े जरूस से कभी–कभी पूछ लेते कि आख़िर वो दोनों क्या बात कर रहे हैं। जरूस को भी केवल इतना ही दिख रहा था कि उन दोनों में बातें हो रही हैं लेकिन इस बातचीत का नतीज़ा क्या होगा इसका उसे भी कोई अहसास नहीं था। फिर काफ़ी देर की बातचीत के बाद पियोनी ने अपनी बात उनके सामने रखी।

उसने बताया, 'डल ने ऐसी किसी चर्चा से भी इंकार कर दिया, जो शब्दहीन–शब्दकोश से जुड़ी हुई हो। शब्दहीन–शब्दकोश को दिखाने या देखने से भी उसने साफ़ मना कर दिया, डल ने कहा–'वो फॉं प्रजाति की, पाक रूहानी किताब है, जिसे देखने या उसमें किसी सवाल का हल ढूँढने का हक़, केवल राजा को होता है।' अपने पिता **चैज़** की मृत्यु के बाद, हालाँकि अब डल ही राजा बनने वाला था लेकिन उसने भी आज तक कभी उस पवित्रा किताब को खोला तक नहीं है।'

'शब्दहीन–शब्दकोश हमारी मंज़िल नहीं है, महज़ एक पड़ाव है, एक ठहराव, पल भर का। अगर तुम हमारी मदद करोगे तो ये कुछ थके हुए मुसाफ़िरों के लिए ज़िन्दगी भर के यादगार पल होंगे, जब दूर ज़मीन के किसी टुकड़े पर हम किसी से अपने इस सफर का ज़िक्र करेंगे तो उसमें बौनों के सरदार की उस दरियादिली का भी ज़िक्र होगा, जिसमें उसने तीन अनजान मुसाफिरों की मदद की और उनके दिलों के ख़ास कोनों में अपनी जगह हमेशा के लिए बना ली।' मकास ने पियोनी की तरफ़ देखते हुए मीठी आवाज़ में कहा।

मुझे याद है, एक दूसरा सौदा हुआ, मकास की एक शानदार बाँसुरी के बदले। पियोनी ने एक चतुर व्यापारी की तरह कहा, 'जो मदद तुम्हें चाहिए, वो अनमोल है क्योंकि फॉं बौनों से, केवल मैं बात कर सकता हूँ। इस वक़्त तुम्हें मेरी ज़रूरत है, इकोइ–चामन भाषा का दूसरा जानकार ढूँढने में तुम्हें जन्म लग जायेगा। जो हुनर तुम्हें चाहिए, वो मेरे पास है और अपने हुनर की क़ीमत वसूलना कोई बुरी बात नहीं है।'

जरूस ने आँखों ही आँखों में सलार और मकास को इशारा किया कि 'दे दो'।

उनके हामी भरते ही, पियोनी ने डल से फिर बात की और उस दुखती रग को सहलाया, जिसके बाद फॉं मना कर ही नहीं सकते थे। बची हुई फॉं मादाओं को ढूँढने का वादा।

फिर जरूस ने खुर्दबीन से, एक फॉं को दौड़कर जाते देखा, वो डिग्गीडस्ट बौने के लबादे के भीतर ग़ायब हो गया और जब वापस आया तो उसकी हथेली में *कुछ* दबा हुआ था, जिसे वो बड़े अदब और इज़्ज़त के साथ लेकर आ रहा था। उसने वो चीज़ पूरे सम्मान के साथ डल की हथेली पर रख दी। डल कुछ देर तक आँखें बन्द किए कुछ बुदबुदाता रहा

जैसे अपने पुरखों से बात कर रहा हो। फिर उसने अपनी आँखें खोलीं और वो चीज चमक उठी।

जरूस ने देखा, डल भागकर पियोनी की हथेली पर चढ़ गया और उस नन्ही–सी चीज को अपनी हथेली पर उठा लिया। सलार और मकास को तो डल भी नहीं दिख रहा था, फिर वो छोटी–सी चीज तो क्या दिखती। पियोनी अपनी हथेली जरूस के सामने लेकर आया और बोला, 'वो मेरी बात मान गया है, लेकिन तुम्हें केवल एक बार शब्दहीन–शब्दकोश को देखने और सवाल करने की इजाजत है।'

बौनों के सरदार ने अपनी हथेली आगे फैलाई, जरूस ने खुर्दबीन से देखा...डल ने अपनी नन्ही हथेली खोलकर आगे कर दी। उस पर रेशमी कपड़े में लिपटी, एक बेहद छोटी किताब रखी हुई थी।

खुर्दबीन से वो साफ देख पा रहा था कि डल की नन्ही हथेली रह–रह कर काँप रही है। उसके हाथ पर किताब रखी थी, जिसके पश्ष्ठ चमड़े के थे। बाद में जरूस को पता चला कि वो चमड़ा, आँख से भी न दिखने वाले, बेहद छोटे और पवित्रा जीव, **इलोपीयर** के चौड़े कानों का था। इलोपीयर...नन्हें जीवों का हाथी, अपने जिस्म से भी कई गुना बड़े कानों वाला दुर्लभ प्राणी। हालाँकि इंसानी आँख से इलोपीयर को कभी नहीं देखा गया था लेकिन वो मौजूद थे, सदियों से। इलोपीयर के कानों की खाल से बने, पतले–पतले वर्वफ, हवा की सरसराहट से हिल रहे थे। जरूस ने पियोनी से कहा कि वो डल से शब्दहीन–शब्दकोश का पहला पश्ष्ठ खोलने के लिए कहे। उसे पियोनी की चेतावनी याद थी कि–'शब्दों से भरे किसी प्राणी को, शब्दहीन–शब्दकोश को छूने की भी इजाजत नहीं है।'

बौनों के सरदार ने डल से कुछ कहा और उसने लरजती उँगलियों से उस प्राचीन किताब पर चढ़ी जिल्द उलट दी। उन्होंने देखा, एक घने अँधेरे ने, पियोनी की पूरी हथेली को ढँक लिया। ताज्जुब की बात ये थी कि ये अँधेरा, उसकी हथेली के सिवा और कहीं नहीं था। डल का पूरा जिस्म उस अँधेरे के भीतर गायब–सा हो गया। फिर गुलाबी रंग के गाढ़े धुएँ की पतली–पतली धराएँ दिखीं।

पियोनी ने चीखकर जरूस से कहा, 'जल्दी अपनी उँगलियाँ, इस धुएँ के भीतर ले जाओ और जो भी पूछना है, पूछ लो।'

जरूस कुछ कहने के लिए अपने होंठ खोलने ही वाला था कि वो दोबारा चीखा, 'बोलना मत, मूर्ख नौजवान, शब्दों से कुछ मत पूछना, वरना तुम्हारे हाथ की उँगलियाँ, हमेशा के लिए *गायब* हो जाएँगी। जो भी सवाल है, उसे अपने मन में पूछो, बिना एक भी लफ़्ज बोले।'

जरूस ने अपनी उँगलियाँ उस गाढ़े गुलाबी धुएँ के भीतर रखीं, अगले ही पल उसे ऐसा लगा जैसे उसने नर्म रुई के फ़ाहे के भीतर अपनी उँगलियाँ रख दी हों। एक गुदगुदा अहसास, भीतर तक उसे सहला गया। फिर उसकी आँखें खुद–ब–खुद बन्द होती चली गईं। उसके मन में सवालों और पहेलियों का ज्वार उठ रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे बरसों से जमी सवालों और पहेलियों की काई को, कोई खुरपे से खुरच रहा हो। एक–एक करके हजारों सवाल घुमड़–घ ुमड़ कर आ रहे थे। अनसुलझे, अनुत्तरित...

फिर उसके दिमाग़ के सारे रेशे, एक सवाल पर आकर पूरी तरह से उलझ गए। *एक-सुराही-पानी-जिसमें-गीलापन-न-हो*। उसे ऐसा लगा जैसे उसका दिमाग अँधेरे की किसी गहरी गर्त में गिरता चला जा रहा हो। एक आवाज़ रह–रह कर उसके कानों में, मधुमक्खी की तरह भिनभिना रही थी। बारीक–सी, अजीब–सी आवाज, जिसके स्रोत का उसे कुछ पता नहीं चल पा रहा था। अब उसकी उन उँगलियों में जलन होने लगी थी, जो उसने गुलाबी धुएँ में की हुई थीं। उसने कान लगाकर उस आवाज़ को सुनने की कोशिश की।

'...**एल्गा–गोरस**'

उसे लग रहा था जैसे हर दिशा से केवल एक यही आवाज़ आ रही थी, '*...एल्गा-गोरस*'।

एक तेज़ झटका लगा और वो जैसे वापस लौट आया।

जरूस की आँखें खुलीं तो उसने देखा, अब न पियोनी की हथेली पर घना अँधेरा था और न ही डल वहाँ था। चाँदी जैसी रंगत वाला सलार और सोने जैसे रंग वाला मकास उसके ऊपर झुके हुए थे। वो उठा और उसने चारों तरफ़ देखा, डिग्गीडस्ट बौने और पियोनी चलने की तैयारी में थे।

दोनों भाइयों ने उससे पूछा, 'क्या तुम्हें मंजिल का कुछ पता चला?'

जरूस ने इंकार में गर्दन हिला दी। उसने चक्कर खाते अपने सिर को संभालकर कहा, 'केवल एक आवाज सुनाई दी... एल्गा–गोरस बस इसके अलावा और कुछ नहीं।'

मकास ने देखा *एल्ला-गोरस* शब्द सुनकर पियोनी एक पल के लिए बुरी तरह चौंका लेकिन फिर उसने अपने चेहरे के भावों को काबू कर लिया। ऐसा लग रहा था जैसे अब वो जल्दी से जल्दी उस जगह से निकल जाना चाहता हो।

जरूस के बहुत पूछने पर पियोनी ने बताया कि उन्हें अपना सफ़र तुरन्त शुरू कर देना चाहिए। सौदेबाजी में माहिर पियोनी ने उनसे कहा, 'अगर तुम चाहो तो मैं एक खोजी डिग्गीडस्ट बौने को चौदह दिन के सफ़र के लिए तुम्हारे साथ भेज सकता हूँ, जो तुम्हें रास्ता दिखाएगा और तुम्हारी मंज़िल तक पहुँचने में मदद करेगा।'

लेकिन वो इसके लिए भी *कुछ ख़ास* वसूलना चाहता था। मकास ने उसे *लौह-पादुका* भेंट कीं। किसी लालची की तरह उसने तुरन्त लौह–पादुका एक दूसरे बौने को सौंप दीं।

जिस बौने को उसने संथाल के बेटों के साथ जाने के लिए नियुक्त किया था, वो एक हँसमुख नौजवान था... **ऑथरडस्ट**। पियोनी ने उन्हें बताया कि वो किस्सागोई में माहिर है और जंगल से लेकर पहाड़ों और रेगिस्तानों तक के तमाम रास्तों की उसे जानकारी है।

सलार जानना चाहता था कि उसने उस छोटे नौजवान बौने को ही उनके साथ जाने के लिए क्यों चुना, लेकिन पियोनी ने ये कहकर उसे चुप कर दिया कि–'रास्ते में तुम्हें खुद पता चल जाएगा कि मैंने उसे ही क्यों चुना है।'

ऑथरडस्ट की नज़र बचाकर, वो आहिस्ता से फुसफुसाकर उनसे बोला, 'इसे चौदह दिन के सफ़र के बाद वापस लौटकर आना होगा। वक़्त से इसे विदा करने और इसकी हिफ़ाजत की ज़िम्मेदारी तुम्हारी है नौजवानो! हम जा रहे हैं लेकिन उस किताब का आख़िरी वर्वफ शायद *सिद्ध* हो चुका है, जिसका डर सदियों से था। मुझे हाथी के चौड़े कानों पर लिखे अल्फ़ाज और स्याही लगे, शुतुरमुर्ग के नाखूनों की गंध महसूस हो रही है। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे...' पियोनी ने उन तीनों की तरफ़ देखते हुए कहा।

अपनी बात पूरी करने के बाद, वो बाक़ी डिग्गीडस्ट्स के साथ, तेज़ी से उस छेद के अन्दर उतर गया, जिसमें से वो सारे बाहर निकले थे। संथाल के तीनों बेटे एकटक उन सबको ज़मीन के भीतर जाते देखते रहे।

मैं भी बरसों से, कैल्टिकस की इन गुफाओं की दीवारों को एकटक देख रहा हूँ। शायद मुझसे ज़्यादा ग़ौर से कभी किसी ने इन्हें नहीं देखा होगा क्योंकि यहाँ मैंने भी अपनी याद में महज़ कुछ ही इन्सानों के पाँव पड़ते देखे हैं। एक छेनी के टूट जाने की वजह से मेरा काम रुक गया है। उसे ठीक करने में और दोबारा काम लायक़ हालत में लाने में, मुझे वक़्त लगेगा। मेरे हाथ रुक सकते हैं लेकिन संथाल के बहादुर बेटों का ये तिलिस्मी सफ़र नहीं। वो अपने वक़्त के सबसे दुस्सहासी मुसाफ़िर थे, कोई यात्री उनके इस हैरतअंगेज़ सफ़र का मुकाबला नहीं कर सकता, क्योंकि उन्होंने 'वो' सब देखा, जिसे न उनसे पहले, उस समय के किसी मुसाफ़िर ने देखा था और न उनके बाद देख पाया।

ऑथरडस्ट कई मायनों में ख़ास था, मुझे वो ख़ास लगता है क्योंकि उसने संथाल के बेटों को उस रहस्य से रू–ब–रू कराया, जो उनके सफ़र की धुरी था लेकिन उन्हें उसका कुछ भी पता नहीं था। वो मुझे इसलिए भी ख़ास लगता है क्योंकि उसने इस दास्तान के उन अहम किरदारों की ज़िन्दगी के अनछुए पहलुओं को, तीनों भाइयों के सामने रखा, जिन्हें वो शायद कभी नहीं जान पाते। सबसे ख़ास बात, उसने वो सन्देशा, उन पाक रूहों तक पहुँचाया, जिनका इंतज़ार सारी दुनिया के अमनपसन्द लोग, सदियों से कर रहे थे और संथाल के बेटों के साथ वो *'उससे'* भी मिला, जो **लगभग–अमर** था। अपने ही कान से जन्म लेने वाला, वो रहस्यमयी किरदार, जिसके बारे में दुनिया के कुछ चुनिन्दा लोगों ने बस प्राचीन पुस्तकों में पढ़ा था, उसे तो दुनिया में देखा भी बस दो–चार लोगों ने ही होगा।

मैंने उन मोम की पट्टियों को दोबारा पढ़ने की बहुत कोशिश की, जिन्हें गर्म लूओं ने पिघला दिया, लेकिन सब कुछ नहीं सहेज पाया। जितना मैं पढ़ सका और जितने अधमिटे हर्फ़ मिलाकर, मैं इस कहानी के खोए हुए हिस्सों को पूरा कर सकता था, मैंने किया। उन मोम की पट्टियों को पढ़ना मुश्किल था, जिन पर उस दिव्य पक्षी के बारे में था, जिसे केवल वो देख सकता, जिसके ऊपर उसकी बीट गिर जाती। मोम के वो चौखटे, जिन पर दो बहनों की दास्तान लिखी थी। एक शाप के कारण, जिनके सिर उनके ध्ड़ में समा गए और उँगलियाँ, ट्रीमोनी स्किनटस की सूखी जड़ों की तरह लटक गईं। साथ ही उस पागल रेगिस्तानी रूह के बारे में भी था, जिसकी वजह से लगभग सारे जल–सोते अभिशप्त हो गए। वो रहस्य भी, जो उनके सफ़र के पहले दिन से उनके साथ था लेकिन उन्हें इसका भान तक नहीं था, जो दुनिया की उस सबसे ताक़तवर किताब के पन्नों में कहीं दफ़न था, जो मुर्दा हाथी के चौड़े कानों पर, शुतुरमुर्ग के नाख़ून से लिखी गई।

बेल्डूहा का रेगिस्तान

अध्याय छह

सफर का ये पहला दिन था। ऑथरडस्ट ने बताया कि वो खानदानी रूप से किस्सागो है लेकिन उसका जीवन, एक *'सन्देश-दूत'* की तरह कट रहा है। उन्हें पता चला कि उसे किसी बेहद खास काम के लिए नियुक्त किया गया है, उनकी तरफ से, सारी दुनिया जिनकी इज्जत करती है। *'वो'* कौन थे, ये काफी पूछने पर भी उसने नहीं बताया। बस इतना कहकर उसने बात टाल दी, 'ऑथरडस्ट, हर वक्त कुछ खोजता रहता है, भाँपता रहता है और ताड़ता रहता है, जिस दिन *'वो चीज़'* उसे महसूस हो जाएगी, जिसके लिए वो मोच खाई चींटी के पैर को भी शवफ की नजर से देखता है, उस दिन उसे खुद पर गर्व होगा कि वो उनके लिए कुछ कर सका।'

बौने ने बताया कि आने वाले दिनों में, उन्हें मोटे रेत वाले, **बेल्डूहा** रेगिस्तान में सफर करना पडेगा। वो बेहद सुलझा हुआ और संजीदा लगता था लेकिन पता नहीं क्यों, वो बार–बार केवल आसमान की तरफ देखे जा रहा था, जबकि ऊपर कुछ भी नहीं था, एक **गल्टन** चिड़िया तक नहीं। उसने उन्हें बताया कि एक पहर बीतने के साथ ही चारों तरफ रेत के ऊंचे टीले और रेतीली दलदल शुरू हो जाएँगी, जिनमें एक बार धँसने के बाद, कोई ज़िन्दा बाहर नहीं निकलता। उसने बताया कि रेत की बनी रूहें और अजीब रेतीले जानवर, यहाँ उनका पीछा कर सकते हैं ताकि वो उन्हें अपना शिकार बना सकें।

एक पहर चलने के बाद, एक बात उन्होंने ज़रूर महसूस की, जिस रेत पर उनके पाँव पड़ रहे थे, वह *नीले* रंग की थी। जैसे–जैसे वो आगे बढ़ते जा रहे थे, नीला रेगिस्तान फैलता जा रहा था। रेत के कण, टीले और हर चीज़, जो नज़र आ सकती थी, एकदम नीली थी। इतना हैरानी भरा भू–दश्श्य उन्होंने ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा था, ऊपर नीला आसमान और नीचे नीला रेगिस्तान...जिसका कोई ओर–छोर नज़र नहीं आ रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे बादलों में बैठे किसी बिगडैल बच्चे ने, धरती की कोरी चादर पर, स्याही की पूरी दवात बिखेर दी हो।

सबसे हैरानी भरी बात ये थी कि रेत के जिस हिस्से पर उनके क़दमों के निशान का गड्ढा बनता, पाँव वहाँ से उठाते ही, वो खाली जगह अपने–आप रेत से पूरी तरह भर जाती। सलार ने पीछे मुड़कर देखा, कहीं दूर तक भी उनके कदमों का कोई निशान रेत पर नहीं था। उसने अचरज से भरकर एक ही जगह, अपने पाँवों से कई निशान बना दिए, लेकिन पैर वहाँ से उठाते ही, निशान के किनारों की रेत ढहकर, उसे भरने लगी और पल भर में ही वो जगह ऐसी हो गई जैसे बिल्कुल अनछुई, कुँआरी रेत हो। कहीं घास, पेड या झाड़ी का कोई निशान तक नहीं था। सुबह से चलते–चलते बस उन्हें एक जगह **सैन्डोष** के दो फूल दिखाई दिए थे, जिनका रंग इतना नीला था कि उस पर आँखें ठहरना भी मुश्किल था।

एक जगह उन्होंने रेत के एक ऊँचे टीले पर उगा *खुबानी* का एक पेड़ देखा, जिस पर मीठी *खुबानियाँ* लटकी हुई थीं। मकास ने ऑथरडस्ट से उन्हें तोड़कर लाने के लिए पूछा। उसने सहजता से जवाब दिया, 'तुम उन्हें खा सकते हो, लेकिन सिर्फ तभी, अगर तुम मांसाहारी हो। वो खुबानी नहीं, **फ़्यूडन–ट्री** है। नाम और आकार से तो ये पेड़ लगता है लेकिन है ये रेगिस्तानी जीव, जिन्हें तुम खुबानियाँ समझ रहे हो, दरहक़ीक़त वो उसकी गोल आँखें हैं। उसके सारे जिस्म पर सैंकड़ों आँखें हैं, जिनसे वो इतनी दूर तक का भी देख सकता है, जहाँ तक दुनिया में कोई जीव नहीं देख सकता। लेकिन तुम्हें घ ाबराने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि ये केवल कीट–पतंगों का ही शिकार करता है।' उसकी बात सुनकर भूखे मकास ने इस तरह उसकी तरफ देखा, जैसे किसी ने मधुमक्खी के सामने, मांस लगी हुई हड्डी लाकर डाल दी हो।

चलते–चलते वो रुका और फिर से ऊपर आसमान की तरफ देखने लगा। मकास ने उसकी दश्ष्टि का पीछा किया लेकिन उसे ऊपर कुछ नहीं दिखा। हर तरफ नीले रेत के बगूले उठ रहे थे, जिस वजह से उनके लबादों और झोली के भीतर तक किरकिरा रेत भर गया था। बैल्डूहा के रेगिस्तान का रेत, आश्चर्यजनक रूप से मोटे कण वाला था। मुट्ठी में

लेने पर, वह अनाज से भरी हथेली की तरह दिखता। रेत को देखकर मकास को अचानक रेत–घडी याद आई। उसने अपनी झोली के भीतर हाथ डाला, बाहर निकाला तो उसमें रेत–घडी दबी हुई थी। अभी काफी रेत बाकी था। एक–एक कण रिस रहा था।

ऑथरडस्ट की दिलचस्प बातों को सुनते हुए उन्हें पल भर के लिए भी रास्ते में उबाऊपन महसूस नहीं हुआ। वो घटनाओं और चीजों के बारें में ऐसे बात करता, जैसे हर घटना के भीतर खुद घुला हुआ हो। उन्हें पता चला, उसे सैंकड़ों रहस्यमय किस्से और घटनाएँ याद हैं, जो उसने अपने पुरखों से सुने। संथाल के तीनों बेटों को ये भी पता चला कि ऑथरडस्ट के पड़दादा, अपने समय के मशहूर किस्सागो थे। उनके सुनाए किस्से, बौनों की कई पीढ़ियों को आज भी कण्ठस्थ हैं।

'क्या तुमने उन दो बहनों की दास्तान सुनी है, जिन्होंने पाँच महान बेटों को जन्म दिया। एक शाप के कारण जिनकी गर्दन, उनके धड़ में समा गई और उनके हाथों की उँगलियाँ, ट्रीमोनी–स्किनटस पेड़ की जडों में तब्दील हो गई?' ऑथर ने अपने जूते में घुसे रेत को बाहर झाड़ते हुए उनसे पूछा।

मकास ने बिना उसकी तरफ देखे जवाब दिया, 'नहीं।'

उसने बिना ये परवाह किए बोलना जारी रखा कि तीनों भाई उसकी तरफ देख रहे हैं या नहीं–'फिर तो तुमने ये भी नहीं सुना होगा कि उन पाँच नौजवानों ने किस तरह दुष्ट **कीलन** का ख़ात्मा किया और कैसे उनकी माँ को दिया गया शाप, उनके लिए सबसे बडी दुआ, सबसे महान वरदान बन गया।' संथाल के तीनों बेटों की आँखों में, उत्सुकता और जिज्ञासा पंजों के बल उचक रही थी। वो सुनना तो चाहते थे लेकिन उन्होंने कहा नहीं। ऑथर ने बोलना जारी रखा–

ये बहुत पुरानी बात है। तब ज़मीन इतनी रेतीली नहीं थी और न ही सूरज इतना गर्म था। रेगिस्तान की सबसे पुरानी और ऊँची पवनचक्की की रखवाली करने वाले योद्धा, बैलीमारास की खूबसूरत बेटियाँ थीं वो। फ़ैरोसिया और मरमोसिया...अपने समय की सबसे सौन्दर्यशाली और ज़हीन लड़कियाँ। कोई नहीं जानता था, उस रेगिस्तान में वो पत्थर कहाँ से लाया गया, जिससे वो पवनचक्की बनी हुई थी क्योंकि सैंकड़ों कोस तक कहीं पत्थर का, एक छोटा टुकड़ा भी नहीं मिलता था। हर जगह केवल बारीक रेत ही दिखता।

बैलीमारास के पुरखे सदियों से, उस पवनचक्की की हिफ़ाज़त कर रहे थे, जो उस बीहड़ रेगिस्तान में पानी का इकलौता सहारा थी। तेज़ हवा की ताकत को इस्तेमाल करके, उन लोगों ने जमीन से पानी निकालने की सिफ्त हासिल कर ली थी। पवनचक्की के पास बनी, एक पथरीली, गोल झोंपड़ी में, दोनों लड़कियाँ अपनी माँ और पिता के साथ रहती थीं। रेतीले अंधड़ों, जीवों और रूहों के बीच जीना, उन्होंने भले से सीख लिया था, बिना उनसे टकराए।

फिर एक दिन कीलन वहाँ आया। कीलन...रेत-विद्या का सबसे बड़ा जानकार, रेत-युद्ध और रेत-कला का माहिर। लोग कहते थे- 'उसकी रूह भी रेत की ही बनी हुई है'।

हज़ारों जंग और लड़ाइयों का तजुर्बा अपनी उँगलियों में समेटे, वो एक दोपहर वहाँ से गुज़रा। तब, जब ये कहा जाता था कि रेगिस्तान का गला पूरी तरह खुश्क हो गया है, वो रेत को निचोड़कर पानी निकाल सकता था। रेत के तूफ़ान और बगूले, उसके पोरवों के इशारों पर हिलते। उसकी उँगलियाँ पल भर में रेत के महल बना सकती थीं, तो दूसरे ही पल किसी विशाल पर्वत को, छूने भर से रेत के कणों में तब्दील कर सकती थीं।

रेत उसकी क़दमबोसी करता तो हवा उसकी चापलूसी करती। रेत की पोशाक पहनने वाला कीलन, जिस दिन उस पवनचक्की के छोटे-से दरवाज़े तक आया, बस उसी दिन से उन बहनों की जिन्दगी, पूरी तरह बदल गई। बैलीमारास ने उस योद्धा का स्वागत ऐसे ही किया जैसे योद्धाओं का स्वागत किया जाने की रवायत थी। अपने समय के महान जंगजू का स्वागत करके बैली बहुत खुश था।

कीलन ने जब बैली की दोनों बेटियों को देखा तो उसकी आसक्ति के मेंढक ने, आकर्षण के पोखर में छलाँग लगा दी, उसने विवाह-प्रस्ताव भेजा। बैली ने इंकार किया, फैरोसिया और मरमोसिया ने अपने पिता का समर्थन किया और कीलन चला गया लेकिन एक सप्ताह में उसने चौदह बार विवाह-प्रस्ताव भेजा। बैली ने सबको पढ़कर रेत में दबा दिया। फिर एक माह बाद वो दोबारा आया...अकेला। इस बार बैली घर पर नहीं था। उसने फ़ैरोसिया और मरमोसिया को मजबूर किया कि वो हामी भर दें, लेकिन परिणाम उसके ख़िलाफ़ ही

गया। धमकी, लालच और डर की, खुरदरी, रेशमी और नुकीली छुअन भी, कुछ नहीं कर सकीं।

रेत, उसके पाँवों की किनारी के साथ, फरमाबरदार सेवक की तरह चल रहा था, उसकी सूखी उँगली के एक इशारे पर, रेत में दबे वो सारे फरमान उछलकर बाहर आ गए, जिन्हें बैली ने रेत में दबाया था। वो उसके जिस्म के आसपास हवा में तैर रहे थे। उस वक्त की सबसे ज़हीन लड़कियाँ ज़रा भी नहीं डरीं। उन्होंने अपने बहादुर पिता की तरह, उसका सामना किया।

एक दिन का समय देकर वो चला गया, बैली शाम को लौटा। लौटने पर मरमोसिया ने उसे सारी बात बताई। बैली का गुस्सा, रेत पर भागते कीड़े की तरह बेलगाम हो गया। अगली शाम कीलन फिर आया, लेकिन इस बार बैलीमारास उसके सामने था। थोड़ी-सी ज़ुबानी जंग के बाद, एक टकराव शुरू हुआ। बैलीमारास की रूहानी ताकतें उसके साथ थीं, तो कीलन की रेत-विद्या उसके आज्ञाकारी गुलामों की तरह फिज़ाओं में फैली थी।

इस खतरनाक लड़ाई में कीलन की हार हुई, लेकिन उसने अपने घटियापन का प्रदर्शन किया। मरमोसिया और फैरोसिया को उसने एक 'आत्मिक-शाप' से ग्रस्त कर दिया और भाग गया। दोनों बहनों का सिर उनके धड़ में समा गया और उनकी उँगलियाँ ट्रीमोनी-स्किनटस पेड़ की जड़ों में तब्दील हो गईं। आत्मिक-शाप केवल तभी टूट सकता है, जब शाप देने वाला ही इस दुनिया में न रहे। इसकी कोई काट, कोई तरीका नहीं था, जिससे इसके शिकार को बचाया जा सके।

बरसों बाद फिर वो नौजवान आया, जिसका नाम हिप्नोसा था। उसने शापग्रस्त दोनों बहनों से विवाह किया और सालों तक उनकी सेवा और तीमारदारी करता रहा। फैरोसिया ने दो और मरमोसिया ने तीन बच्चों को जन्म दिया, जो बड़ा होने तक उसी रेगिस्तान में पलते रहे। पवनचक्की की गर्म छाँव में उनकी परवरिश हुई।

बैलीमारास की ज़िन्दगी की बूढ़ी चिड़िया को, मौत का बेरहम बाज एक दिन लेकर उड़ गया। कोई नहीं जानता था कि उन पाँचों में से, कौन, किसका बेटा है, सिवाय दोनों माँओं के। पाँचों ने हमेशा उन दोनों औरतों को ऐसे ही अजीब रूप में देखा था, जिनका सिर उनके धड़ में समाया था और हाथों में, ट्रीमोनी-स्किनटस की जड़ों जैसी सख्त और सूखी उँगलियाँ लटकती थीं।

फिर एक दिन उन्होंने वो सवाल पूछा, जिसका इंतजार पिछले लगभग बीस सालों से, दोनों ज़हीन औरतें कर रही थीं-'माँ...तुम हमारे जैसी क्यों नहीं दिखतीं?'

मरमोसिया ने उस रात वो दास्तान उन पाँचों को सुनाई, जिसे बच्चों को कभी नहीं बताया गया था। उन नौजवानों के पास, केवल बैलीमारास की रूहानी ताकतें ही नहीं थी, बल्कि अपनी माँओं से विरासत में मिली बुद्धिमानी और पिता हिप्नोसा से मिली मानसिक शक्तियाँ भी थीं। फिर उन्होंने एक दिन कीलन को बैल्ट्हा के रेगिस्तान में ढूँढ लिया।

एक जंग हुई, ऐसी जंग, जो उस रेगिस्तान के रेत ने पहले कभी नहीं देखी थी। जंग पूरे दिन चली, फिर पाँचों में से एक ने, अपना हाथ उसके रेतीले जिस्म के भीतर डाला और उस धड़कते दिल को मुट्ठी में भींच लिया। वो तब तक उसे भींचता और निचोड़ता रहा, जब तक वो 'फच्च' से फट नहीं गया। कीलन के जिस्म से गाढ़े नीले रंग का एक तरल निकलकर रेत पर फैल गया। रेत पर गिरते ही वो हर दिशा में ऐसे बढ़ चला, जैसे किसी नीली नदी का मुहाना, रेगिस्तान की तरफ खोल दिया गया हो।

पूरे रेगिस्तान का रंग नीला होता चला गया...जो आज तक नहीं बदला। कीलन की सारी शक्तियाँ उन भाइयों में समा गईं लेकिन उन्होंने कभी उनका बेजा इस्तेमाल न करने का आपसी वायदा किया। पाँचो भाई, उसका निष्प्राण दिल लेकर अपनी माँओं के पास पहुँचे। उन्होंने वो देखा, जो जन्म से लेकर, जवान होने तक कभी नहीं देखा था। पहली बार उन खूबसूरत महिलाओं के चेहरे को उन्होंने देखा, जो उनकी माँ थीं। उन सुन्दर, लम्बी उँगलियों को देखा,जो बीस वर्षों तक उन्हें छूने को तरसती रहीं।

फिर उन्होंने अपने भीतरी जगत में प्रवेश करने के लिए, बैल्ट्हा का रेगिस्तान छोड़ दिया। सौ सालों से भी ज़्यादा के मौन के बाद, उन्होने उस प्रकाश को महसूस किया, जिसके हज़ारों नाम हैं। उस संगीत को सुना, जिसे किसी वाद्ययन्त्र पर नहीं बजाया जा सकता। लोग आज भी उनकी बातें करते हैं...छेदरहित बाँसुरी बजाने वाले, पाँच बूढ़े फकीरों के रूप में, जो आसमान छूते पेड़ों पर, लटकते हुए घास के गोलों में रहते हैं।

ऑथर, कहानी पूरी करके एक पल के लिए रुका और फिर ताँबई रंग वाले जरूस की तरफ ऐसे देखा, जैसे पूरा तेल पलटने के बाद, कोई तेली बर्तन को देखता है। तीनों हैरत से उस बौने को ताक रहे थे, जिसने अभी–अभी फैगुअस और उसके भाइयों की दास्तान सुनाई थी।

'उन पाँच बूढ़े फकीरों की जिन्दगी में इतनी तिलिस्मी और रहस्यमयी कहानियाँ हैं, अगर मैं दस बरस तक भी सुनाता रहूँ तो भी ख़त्म नहीं होंगी।' ऑथरडस्ट ने उनकी हैरत को देखते हुए कहा।

मकास ने अपनी उत्सुकता को छिपाते हुए सहजता से पूछा, 'तुम इन जंगलों, रेगिस्तानों, पहाड़ों मैदानों, इनमें बनी बस्तियों और प्राणियों के बारे में क्या–क्या जानते हो?'

बौना एक पल के लिए ठिठका, फिर बोला, 'मुझसे आज तक ऐसा मूर्खतापूर्ण सवाल पहले किसी ने नहीं किया, कम से कम उन लोगों ने तो कभी नहीं, जो जानते हैं कि ऑथर, बौनों के उस ख़ानदान से ताअल्लुक रखता है, जो दुनिया के सबसे महान किस्सागो हैं। ऑथरडस्ट खानदान, जिसके बारे में ये कहावत प्रचलित है–'किसी कहानी में आज तक जो भी घटा है, उसे हम लोग जानते हैं और जिसे हम नहीं जानते, वो कभी किसी दास्तान में घटा ही नहीं।'

मकास को उसकी ये बात कुछ बड़बोलापन लगी लेकिन उसने कहा कुछ नहीं। रास्ते में खाने के लिए कुछ ख़ास नहीं मिला था, प्यास के मारे उनके हलक, अकालग्रस्त खेत की तरह चटख रहे थे।

'**बन्टीबोलन** पागल न हुआ होता तो शायद इस रेगिस्तान में बहुत पानी होता।' ऑथरडस्ट ने अजीब–सी बात कहकर, रेत पर एक जगह गोल घेरा बना दिया और मकास से उस जगह खोदने का इशारा किया, वहाँ एक बड़ा तरबूज़ दबा था। रेत में दबे, उस बड़े **डेलीटन** तरबूज को खाकर, उन्होंने अपनी भूख, प्यास शान्त की। सलार पूछना चाहता था कि बन्टीबोलन कौन, लेकिन उसने पूछा नहीं। उन्हें अभी तक नहीं पता था कि आख़िर जाना कहाँ है।

बहुत पूछने पर ऑथर ने बस इतना कहा, 'मैं तुम्हें वहाँ तक पहुँचा दूँगा, जहाँ तुम्हारी मंज़िल के रास्ते शुरू होते होंगे।'

चलते–चलते पूरा दिन हो गया लेकिन रेत था कि ख़त्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। हर टीले को पार करने के बाद ऐसा लगता जैसे अब ये अंतहीन रेगिस्तान समाप्त हो जाएगा लेकिन जैसे ही वो उसकी चोटी पर पहुँचते, नीले रेत का हहराता हुआ समन्दर उनकी हिम्मत की डोंगी को डुबोकर रख देता।

एक जगह ऑथर ने उन्हें रोका और रेत के एक टीले की तरफ़ देखकर बोला, 'इस टीले को पार करने के बाद हमारे सफ़र का सबसे मुश्किल हिस्सा शुरू होने वाला है। अभी तक हमारे साथ, केवल हम ही थे लेकिन अब शायद ऐसा न रहे। हम बेल्डूहा के सबसे बीहड़ इलाक़े में घुसने वाले हैं। अब हम अकेले नहीं होंगे, रेगिस्तान की रूहें और न जाने क्या–क्या हमारी ताक में होगा। एक भी ग़लत क़दम या फ़ैसला, मौत और ज़िन्दगी का फ़र्क़ तय कर सकता है। इसलिए होशियार रहना, साथ रहना और जब तक मैं आराम करने को न कहूँ, रुकने की सोचना भी मत।'

उन्होंने उसकी तरफ़ देखकर ऐसे अपनी गर्दन सहमति में हिला दी, जैसे किसी भालू के बच्चे ने, माँ का ये सबक ठीक से याद कर लिया हो कि किसी भी क़ीमत पर अपनी गुफा से बाहर नहीं जाना है।

'अपने सिर को बचाना, इस रेगिस्तान में **हैरीट** नाम के जीव हैं, जो तुम पर हमला करेंगे और तुम्हारे सिर के बालों को चट कर जाएँगे।' ऑथर ने फिर अपनी चुप्पी तोड़ी, 'लेकिन तुम्हें उनसे उतना ख़तरा नहीं है, जितना उस कीड़े से है, जो तुम्हारे लबादे के ऊपर चढ़ा हुआ है।' उसने सलार के लबादे की तरफ़ इशारा किया। उसने चौंक कर देखा, काले रंग का एक मोटा कीड़ा, उसके लबादे पर चिपका हुआ था। अपने तीन मुँह और बिच्छू–सी लम्बी भुजाओं से, वो लबादे में छेद करने की कोशिश कर रहा था। मकास ने सलार का लबादा पकड़ कर झटका, कीड़ा नीचे गिरा और रेत में समा गया।

'ये **टीथॉय** है, बेहद ज़हरीला, लेकिन इसका ज़हर मारता नहीं, बस शिकार को लक़वा मार जाता है। जिस जीव को ये काटता है, वो लक़वे का शिकार होकर सुन्न हो जाता है और ये उसके मुँह में घुसकर, एक–एक कर उसके सारे दाँत खा जाता है। इसका शिकार, खुद के दाँतों को खाए जाते देखता रहता है, लेकिन वो हिलने में भी असमर्थ होता है। तुम खुशक़िस्मत हो नौजवान, वरना अब तक ये अपना काम कर चुका होता और तुम पोपले हो गए होते।'

ऑथर की बात सुनकर सलार सिहर–सा गया। चारों सावधनी से टीले पर चढ़ने लगे, ऊपर पहुँचकर उन्होंने देखा, दूर रेगिस्तान में पानी का एक सोता नज़र आ रह था। पानी पर पड़ती सूरज की रोशनी की चमक, साफ दिखाई दे रही थी।

मकास ने ऑथर की तरफ़ देखा, 'ये पानी नहीं, शायद मरग–मरीचिका है।'

रेगिस्तान में हर जगह मश्ग–मरीचिका ही नहीं होती मुसाफिर, ये पानी का पोखर ही है। बेल्डूहा में इस जलस्रोत का पानी सबसे शीतल और मीठा है, चलो अपनी प्यास बुझा लो।' ऑथरडस्ट ने एक गहरी साँस लेकर कहा।

उसकी बात सुनकर उनके सूखे गले के खुरदरेपन में खलबली मचने लगी। पास जाकर उन्होंने देखा, रेत के भीतर से एक छोटी जलधरा बाहर आ रही थी। पानी इतना साफ और पारदर्शी था कि उसे देखकर जरूस से ठहरा नहीं गया। उसने अपनी झोली रेत पर पटक दी और खोंच भरकर ऐसे गटागट पानी पीने लगा, जैसे कई दिन के प्यासे **कैल्टियन** भैंसे को, पानी से भरा तालाब मिल गया हो।

उसकी देखा–देखी सलार और मकास ने भी, अपनी–अपनी झोलियाँ रेत पर रख दीं और बहता पानी अपनी हथेलियों में भर लिया। बौने ने सबसे बाद में पानी पिया। पानी पीकर वो वहीं रेत पर आँखें बन्द करके लेट गए। ऑथरडस्ट ने सर्द नजरों से उनकी तरफ देखा, 'ये बेल्डूहा है नौजवानो, तुम्हारा घर नहीं। इस गर्म भट्टी में ये पानी केवल तुम्हारे लिए नहीं है। कभी भी, कोई भी ऐसा यहाँ आ सकता है, जो तुमसे अपनी भूख मिटाए और पानी से अपनी प्यास। इसलिए तुरन्त उठो और अपनी–अपनी मशक पानी से भरकर यहाँ से निकल चलो।'

बात पूरी करते ही उसने एक बार फिर गहरी नजरों से आसमान की तरफ देखा, जैसे कुछ खोज रहा हो। उसकी बार–बार की इस हरकत से तीनों बुरी तरह झल्ला गए थे। जरूस ने मन ही मन तय कर लिया कि इस बार अगर उसने ये हरकत दोबारा की तो वो ज़रूर पूछेगा–क्या तुम आसमान में उड़ना चाहते हो या फिर बारिश के आने का इंतज़ार कर रहे हो, जो बहुत देर से बार–बार पागलों की तरह ऊपर देखे जा रहे हो?'

सलार ने अपनी मोटे कपड़े की झोली से, चमड़े की मशक बाहर निकाली और उसमें पानी भर लिया। लेकिन वो हतप्रभ रह गया, मशक में गले तक पानी की जगह, रेत नज़र आ रही थी। उसने रेत बाहर निकालकर दोबारा भरी, लेकिन इस बार भी नतीजा वही हुआ। उसने अपने दाहिनी तरफ देखा, जरूस भी उसी की तरह चमड़े की मशक को भरने की कोशिश कर रहा था लेकिन भर नहीं पा रहा था। मकास ने मशक को उल्टा किया और उसका सारा रेत बाहर निकाल दिया। बौना भी हैरत से ये सब देख रहा था। जरूस ने एक बार फिर कोशिश की लेकिन नाकामयाब रहा।

'तुम इस पानी को यहाँ से कहीं नहीं ले जा सकते।' ऑथरडस्ट ने गहरी साँस भरी, 'इस सोते पर भी शायद बन्टीबोलन का कब्जा हो चुका है। अपनी झोलियाँ उठा लो और आगे बढ़ो।'

उन्होंने बिना कुछ कहे, झोलियाँ उठाई और चलने लगे। मकास की आँखों में सवालों के कनकव्वे चारों तरफ उड़ रहे थे लेकिन वो तब तक कुछ नहीं पूछना चाहता था, जब तक वो बौना खुद सारी बात न बता दे। पानी का सोता अब बहुत पीछे छूट गया। काफी आगे आने के बाद ऑथरडस्ट ने बताया–

ये पहले जंगल-युद्ध की बात है। सदियों पहले, जब रेगिस्तान के दोनों छोरों पर रहने वाले दो कबीलों 'सीलनार' और 'बल्चनबाक' में जंग हुई थी। सीलनार, रेत को निचोड़कर पानी निकाल लेने की कला में माहिर थे और बल्चनबाक एक चुल्लू पानी को, जल के सोते में बदलने की विद्या के ज्ञाता। रेगिस्तान में किस्मत का फैसला करने वाला अंतिम बादशाह अगर कोई है, तो वो पानी है। पानी, जिन्दगी और मौत का फर्क है। लेकिन ये जंग पानी के लिए नहीं थी, ये हुनर को अदल-बदल करने की लड़ाई थी।

सीलनार और बल्चनबाक के बीच एक समझौता हुआ था, जो ये कहता था कि दोनों कबीले एक-दूसरे को अपनी-अपनी गुप्त-विद्या सिखाएँगे ताकि रेगिस्तान में जिन्दगी के तलवों पर मौत के ज्यादा फफोले न पड़ें लेकिन सीलनारों ने धोखा किया, उनके भेजे बाईस लोगों ने चुल्लू भर पानी को जल के सोते में बदलने की कला तो सीख ली लेकिन बदले में रेत को निचोड़कर पानी में बदलने का हुनर नहीं सिखाया और रातोंरात वहाँ से निकल कर अपने कबीले पहुँच गए।

बल्चनबाक ने इस धोखे का हिसाब चुकता करने के लिए बन्टीबोलन को भेजा। बन्टीबोलन, दुनिया की सबसे खतरनाक रेगिस्तानी रूह...जीव-जन्तु या पेड़-पौधे तो क्या, किसी दूसरी रूह तक की गहराईयों में छिपी, नमी को भी सोख लेने की ताकत रखने वाली...बन्टीबोलन ने सीलनार के हर जलस्रोत को अभिशापित कर दिया, अब वो वहाँ पानी तो पी सकते थे, लेकिन उस जल को किसी बर्तन या दूसरे पात्र में भरकर किसी दूसरी जगह नहीं ले जा सकते थे। सीलनार उसका कोई तोड़ नहीं कर सके, लेकिन उनके सबसे शक्तिशाली ओझा 'जुमासिनस' ने अपनी रूहानी ताकत से, वापस लौटते बन्टीबोलन को पागलपन के समय-चक्र में बाँध

दिया।

बन्टीबोलन, एक पागल रूह बनकर रह गया। तब से, वो हजारों जल-सोतों को अभिशापित कर चुका है। अपने-पराए, अच्छे-बुरे का फर्क खोकर, वो हमेशा इस रेतीले बीहड़ में भटकता रहता है। जहाँ भी उसे कोई जल-सोता नज़र आता है, वो उसे अभिशापित कर देता है। फिर कोई उसका एक बूँद पानी भी कहीं नहीं ले जा सकता, बस वहीं पिया जा सकता है।

अपनी बात पूरी करके ऑथर पल भर के लिए रुका, 'इस तरह बेल्डूहा का रेगिस्तान दुहरे अभिशाप की मार झेल रहा है। पहला तो ये, रेगिस्तान खुद ही एक–एक बूँद पानी को तरसते हैं, उस पर बन्टीबोलन जैसी रूह, जो पागलपन के समय–चक्र से बँधी, पानी के बचे–खुचे सोतों को भी कैद कर चुकी है।'

मकास ने महसूस किया, बौना बार–बार आसमान की तरफ तभी से देख रहा था, जबसे वो इस रेगिस्तान में दाखिल हुए थे। तभी अचानक उसके लबादे पर कुछ गिरा, लेकिन वो क्या था, ये किसी को नहीं दिखा। बस ऐसा लगा, जैसे कुछ गीला–सा गिरा हो लेकिन फिर तीनों ने उसे नजरअंदाज कर दिया।

ऑथरडस्ट अब कुछ परेशान दिख रहा था। आखिर उसने होंठ खोले, 'जब से हम बेल्डूहा में दाखिल हुए हैं, एक **गायब–गिद्ध** लगातार हमारे सिर के ऊपर मँडरा रहा है। अब भी वो ठीक हमारे सिरों के ऊपर है। गायब–गिद्ध दुनिया के सबसे रहस्यमय पक्षियों में से एक हैं। उन्हें देखा नहीं जा सकता, क्योंकि वो अदश्श्य होते हैं। महज वो इन्सान उन्हें देख सकता है, जिसके ऊपर उनकी बीट गिर जाए। मैं भी उसे केवल इसलिए देख पाया क्योंकि उसने मेरे लबादे पर बीट कर दी। गायब–गिद्ध स्वजातिभक्षक होते हैं, ये ज़्यादातर या तो दिव्य प्राणियों को खाते हैं या फिर गिद्धों को, लेकिन केवल उन गिद्धों को, जिन्हें कोई भी आँख से देख सकता है। जब रेगिस्तान में किसी की मौत आती है तो गिद्ध उसके सिर पर मँडराने लगते हैं लेकिन जब किसी गिद्ध की मौत आती है तो गायब–गिद्ध उसके सिर पर मँडराने लगते हैं।'

जरूस ने खुर्दबीन अपनी आँख से लगाई और ऊपर देखा। बहुत ऊँचाई पर, एक बड़ा पक्षी अपने पंख खोले मँडरा रहा था। वो साफ तो नहीं दिख रहा था लेकिन ये पता ज़रूर चल रहा था कि जिसका जिक्र ऑथरडस्ट ने किया है, वो ऊपर है।

'तुम किसी की सख़्त निगरानी में हो।' ऑथर ने जरूस की तरफ देखा।

जरूस ने जानपूछकर उस बात को छिपा लिया कि इससे पहले भी मत्स्यनाग और जलगरुड़ उनका पीछा करते दिखे हैं लेकिन अब वो चिन्तित नज़र आ रहा था।

बौने ने आसमान की तरफ़ देखा, 'वो चला गया। उसे महसूस हो गया कि हम उसके बारे में जानते हैं। चिन्ता की बात ये है, ग़ायब–गिद्ध हर किसी का हुक्म नहीं मानते, ये दिव्य–पक्षी हैं। इन्हें केवल वही आदेश दे सकता है, जो प्राणिशास्त्रा के महान और दुर्लभ ग्रन्थ, *एल्गा-गोरस* का ज्ञाता हो और इस वक़्त धरती पर ऐसा कोई इंसान नहीं है। एल्गा–गोरस को आखिरी बार, अब से कई सौ साल पहले देखा गया था। फिर ये किताब ग़ायब हो गई। सदियों तक लोग इसकी खोज करते रहे लेकिन कोई पता नहीं लगा पाया।'

चाँदी जैसी रंगत वाले सलार ने बौने पर एक उत्सुक नज़र डाली, 'लेकिन कोई हमारा पीछा क्यों करना चाहेगा?'

बौना गम्भीर था, 'ये मुझसे बेहतर तुम जानते होगे, लड़के।'

पहली बार उन्हें ऑथरडस्ट की आवाज़ में एक अजीब–सी सख़्ती नज़र आई। मकास को ऐसा लग रहा था जैसे अब वो आगे बढ़ने से कतरा रहा हो, लेकिन बौने ने ऐसा कुछ नहीं कहा।

जरूस ने उतावलेपन से बौने को बताया, 'तुम्हे शायद नहीं मालूम, शब्दहीन–शब्दकोश ने जो शब्द हमें दिया, वो *एल्गा-गोरस* ही था। ऐसा कैसे हो सकता है, ये महज़ संयोग नहीं हो सकता?'

जरूस की बात सुनकर वो उछल पड़ा। **'क्याSSSS...?'** बौने का मुँह खुला का खुला रह गया, 'तुमने मुझे बताया क्यों नहीं?' उसने गुस्से से तीनों की तरफ़ देखा।

'हमने पियोनी को बताया था, वो इसे सुनकर चौंका भी था और उसके बाद ऐसा लगा जैसे वो जल्दी से जल्दी वहाँ से निकल जाना चाहता हो। क्या उसने 'तुम्हे' ये नहीं बताया कि तुम्हें, हमें 'कहाँ' पहुँचाना है?' मकास ने हैरत से बौने से पूछा।

बौने ने कोई जवाब नहीं दिया, बस आहिस्ता से बड़बड़ाया, 'दुष्ट पियोनी, दुर्लभ चीज़ों का संग्रह करने की लत के

लिए, उसने इतना खतरनाक रहस्य छिपा लिया। उसने मुझे केवल इतना बताया कि मुझे तुम्हें उस पवनचक्की के खण्डहरों तक पहुँचाना है और वापस चले आना है।'

'एक बात सच–सच बताना, क्या तुमने इससे पहले भी कुछ अजीब चीज़ महसूस की, किसी जीव का ऐसा व्यवहार, जो आम न हो?' बौने ने संथाल के तीनों बेटों को गहरी नज़रों से घूरा।

मकास ने चुप्पी तोड़ी, 'हाँ, जिस दिन हम इस सफ़र पर चले थे, एक *जल-गरुड़* ने, बर्फीली नदी की सतह के नीचे उड़कर हमारा पीछा किया। उसके बाद रैटाटास्कर घास के मैदान में एक *मत्स्य-नाग* और अब ये *गायब-गिद्ध*...'

मकास की बात सुनकर ऑथरडस्ट की आँखें दहशत से फैल गई, 'उफ़्फ़...और तुमने इतनी बड़ी बात मुझसे नहीं बताई बेवकूफ़ो?'

वो अब पूरी तरह बेचैन नजर आ रहा था। वो रेत पर ऐसे चहलकदमी कर रहा था जैसे गर्म रेत उसके तलवों को झुलसा रही हो। तीनों भाई असमंजस में थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वो उससे क्या कहें। जरूस ने एहतियात के तौर पर, खुर्दबीन अपनी आँख से लगाकर दोबारा आसमान की तरफ़ देखा लेकिन अब वहाँ कुछ नहीं था।

'मुझे यहीं से वापस जाना होगा, जंगल, रेगिस्तान, मैदानों और पहाड़ों की हर बस्ती के सरदार तक, ये खबर तुरन्त पहुँचानी होगी कि एल्गा–गोरस की मौजूदगी को दोबारा महसूस किया गया है। तबाही और अनिष्ट के मांसभक्षी, अपने पंख खोलकर, अमन के कबूतर को दबोचने निकल चुके हैं। ये दुनिया फिर एक जंगल–युद्ध को बर्दाश्त नहीं कर पाएगी।'

सलार ने उसकी बाँह पकड़ी, 'हमें बताओ, हमें बताओ आखिर माजरा क्या है, तुम इतने खौफ़ज़दा और दहशत में क्यों हो? और तुम इस तरह वापस नहीं जा सकते। पियोनी ने हमसे वादा किया है, तुम पूरे चौदह दिन के सफ़र में हमारे साथ रहोगे। ऐसे बीच रास्ते में छोड़कर जाना, क्या यही बौनों के नैतिक उसूल हैं?' सलार बहुत उत्तेजित और परेशान दिख रहा था। बौना कुछ नही बोला, वो बस एकटक उसकी तरफ़ देखता रहा।

'तुम नहीं समझोगे...तुम नहीं समझोगे, तबाही और विनाश इस दुनिया को अपनी लाल आँखों से घूर रहे हैं। मुझे खबर पहुँचानी होगी।' बौने की हड़बड़ाहट और घबराहट अपने चरम पर थी।

जरूस ने आगे बढ़कर उसके कन्धे पर हाथ रखा और अपनेपन से उसकी आँखों में देखा, 'हमें माफ़ करना ऑथर, अगर किसी बात से तुम्हें बुरा लगा हो लेकिन क्या तुम ये पसन्द करोगे कि इस वीरान और अनन्त रेगिस्तान में तुम इस तरह हमें छोड़कर चले जाओ, तब, जबकि हमें ये भी नहीं मालूम कि आखिर अब हमें जाना कहाँ है?'

सलार चलकर उसके पास आया, उसकी आवाज़ में सम्मान और नरमी थी, 'हमें बताओ, किस बात से तुम इतने दहशतज़दा हो और ऐसा कौन सा ख़तरा है, जो पूरी दुनिया को अपनी चपेट में लेने वाला है।'

काफी देर तक तसल्ली देने और भरोसा दिलाने के बाद ऑथरडस्ट ने उन्हें *'वो'* बताया, जिसे सुनकर उनके जिस्म से पसीने के छोटे–छोटे ज्वालामुखी फूफट पड़े। उनकी आँखें बौने पर जमी हुई थीं और बौने की आँखें दूर रेगिस्तान में क्षितिज पर कहीं देख रही थीं–

सदियों पहले, माथेल्टन की गुफ़ा में, वो सभा हुई थी, जिसमें दुनिया भर से, पवित्र रूहानी ताक़तों वाले, हुनरमन्द और तजुर्बेकार इकट्ठा हुए। पहले जंगल-युद्ध में बहे रक्त की सुर्ख़ी से, जमीन अभी तक लाल थी। ये तय किया गया कि अब ये दुनिया, दोबारा किसी ऐसी जंग से नहीं गुज़रनी चाहिए, जिसमें धरती से प्राणिमात्र का वजूद मिटने का ख़तरा पैदा हो।

बरसों की मेहनत, गुप्त-विद्याओं, मन्त्रों और विधियों को एक जगह इकट्ठा करके, एक महान किताब तैयार की गई...जिसका नाम था 'एल्गा–गोरस'। हाथी के कान की चौड़ी खाल से बने पश्ठों पर, शुतुरमुर्ग के नाख़ून से लिखी गई वो किताब, उस हर जुनून, पागलपन, महत्त्वाकांक्षा और दुष्टता को रोकने की ताक़त रखती थी, जिसके कारण जंग पैदा हो सकती थी। दुनिया के हर प्राणी को नियन्त्रित करने की विधि उस रहस्यमयी किताब में मौजूद थी।

एल्गा-गोरस के भीतर वो सब कुछ निचोड़कर भर दिया गया था, जो सदियों तक गुप्त, रहस्यमय और अनछुआ ज्ञान था। पवित्र रूहानी ताक़त वाले चार सबसे बुजुर्ग लोगों को, एल्गा-गोरस की हिफ़ाजत के लिए नियुक्त किया गया। फिर वो मौक़ा जल्दी ही आया, जब मकड़ा-मानवों और अजगरों के बीच जंग हुई। ख़बर मिलते ही चारों बुजुर्ग युद्ध-स्थल पर पहुँचे। एल्गा-गोरस की ताक़त ने जादू कर दिया, बुजुर्गों के होंठ किसी

प्राचीन मन्त्र को बुदबुदा रहे थे और जंग रुकती चली जा रही थी। दिलों में खूनखराबे की जगह, अमन और भाईचारा बहने लगा। ये पहली बार था, जब कोई जंग बेनतीज़ा खत्म हुई।

लेकिन एक भारी चूक हुई थी, जिन मन्त्रों और विधियों का इस्तेमाल करके, किसी भी प्राणिप्रजाति के दिल में अमन भरा जा सकता था, उन्हीं का इस्तेमाल करके हिंसा, दुष्टता और कत्लोगारत भी भरी जा सकती थी, फर्क...बस उन्हें प्रयोग करने के तरीके का था और ये तरीका, जैल्डॉन से बेहतर कोई नहीं जानता था। क्योंकि किताब के वजूद के लिए, मरे हुए हाथी के कान लाने की ज़िम्मेदारी उसी को सौंपी गई थी। बहुत बाद में पता चला कि उसने ज़िन्दा हाथियों की हत्या करके, उनके कान काटे थे। जैल्डॉन...दुष्ट ताकतों की ऐसी काली झील था, जिसकी गहराई किसी को नहीं मालूम।

वो दुनिया में अकेला ऐसा था, जिसके दो सौ बाइस गुरु थे। धरती के कोने-कोने तक जाकर उसने रूहानी ताकतें, मन्त्र, रहस्यमयी-विद्या, प्राणघातक विधियाँ और सामूहिक हत्याओं के तरीके सीखे थे। वो बहुत विनम्र और अमनपसन्द बनकर धोखे से उस सभा में हिस्सेदार बना, जिसे एल्गा-गोरस लिखने का काम सौंपा गया था। किसी को उस पर कोई शक नहीं हुआ लेकिन वो बस इंतज़ार कर रहा था, एल्गा-गोरस के पूरा होने का।

मकड़ा-मानवों और अजगरों के बीच की लड़ाई का नतीज़ा साबित कर रहा था कि एल्गा-गोरस की बेपनाह ताकत, वो सब कर सकती है, जिसकी कोई उम्मीद भी नहीं कर सकता। फिर अचानक एक दिन किताब गायब हो गई। गुफा में पड़े चार शव...उस बेरहमी की दास्तान कह रहे थे, जिसकी गवाह वहाँ की दीवारें ही थीं। किताब के गलत इस्तेमाल की अफवाहें ज़ोर पकड़ने लगीं।

दुनिया भर में दोबारा सन्देशे भेजे गए, लोग फिर इकट्ठा हुए, एक राज़ निकलकर सामने आया। बताया गया कि एल्गा-गोरस को ऐसे बनाया गया है, जब तक कोई उसके आखिरी पश्ष्ठ तक महारत न हासिल कर ले, तब तक वो उसकी किसी भी विधि, मंत्र या विद्या का इस्तेमाल नहीं कर सकता और उसके आखिरी पन्ने तक महारत हासिल करने के लिए कई सदियों का वक्त चाहिए। किताब की हिफाजत करने वाले चार लोग भी केवल इसलिए उसका इस्तेमाल कर पाए, क्योंकि पूरी सभा का बहुमत इसकी स्वीकश्ति, अपनी रूहानी ताकत से दे चुका था।

सभा में केवल एक शख्स कम था, जैल्डॉन। तमाम कोशिशों के बाद भी कोई पता नहीं लगा सका कि वो कहाँ गया। सबको मालूम हो गया था कि वो नश्शंस हत्याकाण्ड किसने और क्यों किया था। लेकिन जैल्डॉन, इंसानी पूँछ की तरह गायब हो चुका था। आहिस्ता-आहिस्ता किताब की खोज धीमी होती गई और एक दिन वो भी आया, जब एल्गा-गोरस के बारे में बात करने वाले बहुत कम लोग रह गए। सिवाय उन लोगों के, जो उस सभा में मौजूद थे, लेकिन वो सारी दुनिया में बिखरे हुए थे, हज़ारों कोस के फासलों पर। लोग लगभग इस दास्तान को भूल गए। वक्त की गर्द ने सब हादसों को ढँक लिया। किताब को ढूँढने की बहुत कोशिशें की गई लेकिन कभी पता नहीं चल सका कि उसे जमीन खा गई या आसमान निगल गया।

ऑथरडस्ट बोलते–बोलते एक पल के लिए चुप हुआ। तीनों भाई दम साधे उस दास्तान को सुन रहे थे, जो पूरी दुनिया का भविष्य तय कर सकती थी।

'मुझे भी एल्गा–गोरस की मौजूदगी का अहसास इसलिए हो पाया, क्योंकि गायब–गिद्ध कभी किसी इंसान के ऊपर नहीं मँडराते, इन पवित्रा पक्षियों को किसी का पीछा करने के लिए, दुनिया में कोई मजबूर नहीं कर सकता। सिवाय एक ताकत के, वो है एल्गा–गोरस। अगर हम ये भी मानें कि वो शिकार की तलाश में होगा तो तुम देख सकते हो, कहीं दूर–दूर तक भी कोई दूसरा गिद्ध नज़र नहीं आ रहा और अपने सिर पर उसकी मौजूदगी, मैं अपने सफर के पहले दिन से ही महसूस कर रहा हूँ।' बौने की आवाज़ अब एक फुसफुसाहट में तब्दील हो गई थी।

'वो बहुत बेरहम और छलिया है, इसके अलावा *गुरुहंता* भी। उसने एक–एक करके अपने दो सौ गुरुओं की हत्या की है ताकि किसी को ये न मालूम हो सके कि उसने कितनी गुप्त–विद्याओं में महारत हासिल की है और साथ ही कोई उसकी ताकतों की काट भी न तैयार कर सके। अगर उसने जल–गरुड़, मत्स्यनाग और गायब–गिद्ध को तुम्हारे पीछे भेजा है तो यकीनन उसने एल्गा–गोरस के आखिरी पश्ष्ठ तक की ताकतें हासिल कर ली हैं।' बोलते ऑथरडस्ट की आवाज़ का कम्पन, संथाल के तीनों बेटे साफ महसूस कर रहे थे।

'लेकिन तुम इतनी जल्दी, पहाड़, मैदान, जंगल और रेगिस्तान की सारी बस्तियों और कबीलों तक ये सन्देश कैसे पहुँचाओगे?' मकास की आवाज़ में ऐसा भाव था जैसे अब वो इस बात के लिए तैयार हो गया हो कि बौना, सन्देशा लेकर चला जाए।

'पूरा दिन तो तुम्हें पियोनी तक पहुँचने में ही लग जाएगा और सबसे ख़ास बात, तुमने अभी तक इस सवाल का कोई जवाब नहीं दिया कि वो दुष्ट जैल्डॉन आख़िर हमारा पीछा क्यों करा रहा है?' जरूस ने बौने के सामने रेत पर घुटनों के बल बैठते हुए पूछा।

ऑथरडस्ट ने इस बार भी उसके सवाल का कोई जवाब नहीं दिया और खँखारकर अपना गला साफ़ किया, 'मुझे पियोनी तक नहीं जाना, नौजवान... मुझे **सालन** तक पहुँचना होगा। वहाँ पहुँचने में मुझे ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा, ये काम मैं पल भर में कर सकता हूँ लेकिन केवल अकेला, किसी के साथ नहीं।'

तीनों चौंके और सवालिया नज़रों से उसकी तरफ़ देखा–'सालन ?'

रेत में पाँव धँसने की वजह से बौना थोड़ा लड़खड़ाया फिर उनकी तरफ़ देखा, 'हाँ, सालन... **दुनिया–के–सबसे–उम्रदराज–शिशु** और दुनिया के सबसे सम्मानित बुजुर्ग...लेकिन उससे पहले मुझे उस दुर्लभ, *खोखले पत्थर* से सन्देश भेजना होगा, जिसके सैकड़ों टुकड़े जंगलों, रेगिस्तानों, पहाड़ों और मैदानों में रखे गए हैं। केवल इसलिए ताकि दुनिया में कभी भी अगर एल्गा–गोरस के बारे में कुछ पता चल सके तो उन अमनपसन्द लोगों तक सन्देश भेज सकें, जो आज भी एल्गा–गोरस की तलाश कर रहे हैं। इसके लिए सारी दुनिया में कुछ सन्देश–दूत नियुक्त किए गए हैं और ऑथरडस्ट भी उन्हीं में से एक है। यहाँ सबसे नज़दीकी खोखला पत्थर, उस पवनचक्की के खण्डहरों में कहीं दबा है, जो अब नष्ट हो चुकी है, बैलीमारास की पवनचक्की।'

'तुमने फिर इस बात का कोई जवाब नहीं दिया कि वो दुष्ट जैल्डॉन *आख़िर-हमारा-पीछा-क्यों-करा-रहा-है?'* जरूस की आवाज में इस बार गुस्सा और झल्लाहट साफ़ दिख रही थी।

'मैं नहीं जानता।' ऑथरडस्ट गुस्से में बोला, 'लेकिन ये पक्का है कि तुम्हारी ज़िन्दगी महफ़ूज़ नहीं है। हत्याओं का सिलसिला शायद शुरू होने वाला है। अपनी हिफ़ाज़त करना...मुझे अभी जाना होगा।'

मकास ने उसका लबादा पकड़ लिया, 'ठहरो, तुम्हारी और हमारी मंज़िल फ़िलहाल एक है। क्या बीच का कोई ऐसा रास्ता हो सकता है कि हम साथ भी रहें और वक़्त रहते खोखले पत्थर तक भी पहुँच जाएँ?' बौने ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया।

'रुको।' मकास ने कुछ सोचते हुए कहा। उसे पर्सीना के पिता, ग्लैडीलस के कहे अल्फ़ाज़ याद आ रहे थे, जो उसने बारहसिंघे के मुड़े–तुड़े सींग से बनी बाँसुरी देते वक़्त मकास से कहे थे–'सींग की बनी ये बाँसुरी, मौत के नाख़ूनों से ज़्यादा सख़्त और ताक़तवर है। ये तुम्हारी रूह में छिपी उस धुन को बाहर लेकर आएगी, जिसे सुनने के लिए कानों की ज़रूरत नहीं पड़ती। इसमें, सदियों से किसी ने साँस नहीं फूँकी। जब भी तुम इसे बजाओगे, ये तुम्हारे लिए *'उसका'* आह्वान करेगी, जो हर समस्या को चुटकी बजाते सुलझा सकता है। हर मुसीबत के पंख ऐसे नोच सकता है जैसे कोई महाबली, तितली के पंख तोड़कर फेंक दे...मौत भी उसके लिए किसी तितली से ज़्यादा नहीं।

मकास ने मोटे कपड़े से बनी अपनी झोली में हाथ डाला और बारहसिंघे के सींग से बनी, वो बाँसुरी बाहर निकाली, जो उसे ग्लैडीलस हूफ़ ने सौंपी थी। ऑथरडस्ट बड़ी अजीब नज़रों से उसे घूर रहा था। सोने जैसी रंगत वाले मकास ने, बाँसुरी अपने सुनहरे होंठों पर रख ली और उसके होंठ गोलाकार सिकुड़े और अपने प्राणों को एकत्रा कर उसने स्वर फूँक दिया। कोई ध्वनि बाँसुरी से बाहर नहीं निकली, बस उसे ये महसूस हुआ कि उसकी साँस और बाँसुरी एक–दूसरे के साथ घुल गए हैं।

एक अजीब–सी तरंग, एक धुन, उसे महसूस तो हो रही थी लेकिन सुनाई नहीं दे रही थी। फिर उनके चारों तरफ़ का रेत, बहुत तेज़ी से उड़ने लगा। ऐसा लगा जैसे रेत का तूफ़ान आ गया हो। एक ऊँचा बगूला उन्हें चारों तरफ़ से अपने घ ेरे में लेता जा रहा था। फिर आहिस्ता–आहिस्ता तूफ़ान कम हुआ, उनके सिरों के ऊपर उड़ती रेत नीचे आ गई। धूल कम हुई और जो कुछ उन्होंने देखा, उसे देखकर वो स्तब्ध रह गए, अवाक्, सम्मोहित, ख़ौफ़ज़दा और चमत्कृत।

'वो' जो उनके सामने रेत पर खड़ा था, इतना विशाल था कि उसे देखने के लिए उन्हें अपनी ठुड्डी बहुत ऊपर उठानी पड़ रही थी। एक विशाल **एल्फ़ैण्टॉर**...जिसका कमर से नीचे का जिस्म, विशाल हाथी का और ऊपर इंसान जैसा था। उसकी शक्तिशाली मांसपेशियाँ और बलिष्ठ कन्धे, पीली धूप में दिप–दिप दमक रहे थे। हाथी जितने बड़े और विशाल

कान और खूबसूरत नौजवान जैसा इंसानी चेहरा। उसकी पीठ पर उगे, दो बेहद विशाल पंख, धूप में चमकती चाँदी की तरह दमक रहे थे।

'मै तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ, नौजवान?' उसके गुलाबी होंठ आहिस्ता से हिले। चारों हैरत से उसे देख रहे थे। उसकी आवाज आश्चर्यजनक रूप से सम्मोहक थी।

संथाल के बेटों ने तो वो प्राणी पहली बार देखा था लेकिन ऑथरडस्ट ने उसके बारे में एक प्राचीन किताब में पढ़ा था। एल्फेण्टॉर कोई प्रजाति नहीं, बल्कि अकेला प्राणी होता है, जिसकी उम्र लगभग दस हज़ार साल होती है। एक वक्त मे, जमीन पर केवल एक एल्फैण्टॉर होता है। किंवदंतियाँ और दंतकथाएँ कहती हैं कि एल्फैण्टॉर को *इच्छा-मृत्यु* का वरदान प्राप्त होता है। उसे उसकी मर्ज़ी के बिना कोई नहीं मार सकता, मौत भी नहीं। लोग ये भी कहते हैं कि वो *'लगभग-अमर'* होता है। उसकी असीम रहस्यमयी ताकतों के बारे में दुनिया में बहुत कम लोग जानते हैं। कहते हैं ऐसा कुछ भी नहीं, जो एल्फैण्टॉर के लिए असंभव हो, वो भूख–प्यास के बन्धन से आज़ाद होता है। जब एक एल्फैण्टॉर मरता है, उससे पहले उसके कान में अपने–आप एक भ्रूण पैदा होता है, जो पहले एल्फैण्टॉर के शव से रेंगकर बाहर निकलता है। कोई नहीं जानता, ऐसा कैसे होता है लेकिन धरती पर कभी किसी मादा एल्फैण्टॉर को नहीं देखा गया।

विशाल एल्फैण्टॉर की पीठ पर सवार होकर, वो चारों बैलीमारास की पवनचक्की तक पहुँचे, जो अब खण्डहर में तब्दील हो चुकी थी। हर तरफ पत्थरों के ढेर और रेत ही रेत नज़र आ रही थी। ऑथरडस्ट ने खोखले पत्थर की खोज शुरू की। थोडी ही देर में उसने उसे खोज लिया। उसने पत्थर के ऊपर अपनी हथेली रखी और उसे ज़ोर से दबाया। पत्थर के भीतर से ऐसी आवाज़ निकलने लगी जैसे किसी ने नगाड़े पर डंका मार दिया हो। आवाज़ बहुत तेज़ नहीं थी लेकिन लगातार निकल रही थी।

बौना कई पलों तक पत्थर को अपनी हथेली से दबाए रहा। तीनों भाइयों ने देखा, पत्थर से निकलने वाले कम्पन से अब उसकी हथेली काँप रही थी। फिर एक गहरी साँस की आवाज़ आई और बौने ने उनकी तरफ देखा–'सन्देश पहुँच गया, बहुत जल्द सारी दुनिया से *चुने-हुए-लोग* माथेल्टन की गुफा में इकट्ठा होंगे। तुम्हे उस वक्त मेरे साथ रहना होगा, जब सभा को ये बताया जाएगा कि एल्गा–गोरस की मौजूदगी को महसूस किया गया है।'

'हम तुम्हारे साथ कहीं नहीं जाएँगे ऑथरडस्ट।' जरूस ने बेपरवाही से उसकी तरफ़ देखा। 'हमें अपने सफर पर जाना है और अपने पिता को दिया वादा पूरा करना है।'

ऑथरडस्ट उनकी तरफ़ देखकर बोला, 'इस वक्त किसी भी सफ़र से ज्यादा ज़रूरी है, आने वाले जंगल–युद्ध को रोकना। अगर जंग हुई तो याद रखना, न तुम बचोगे, न तुम्हारा गाँव और न तुम्हारा वादा। ये जंग कितनी भयानक होगी, इसका तुम तसव्वुर भी नहीं कर सकते। तुम्हारी सोच के परिन्दे उड़ते–उड़ते थक जाएँगे लेकिन लाशों से पटी ज़मीन को पार नहीं कर पाएँगे।'

ऑथरडस्ट की बात सुनकर तीनों गहरी सोच में पड़ गए। मकास ने देखा, इन सब बातों से बेख़बर एल्फैफण्टॉर थोड़ी दूर, अपने सीने पर हाथ बाँधे खड़ा था।

सलार उसके पास पहुँचा और उसके चेहरे की तरफ़ अपनी गर्दन उठाई, 'ग्लैडीलस हूफ़ ने कहा था कि तुम हर समस्या का समाधन चुटकी बजाते कर सकते हो। दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं, जिसे तुम न कर सको। यहाँ तक कि तुम मौत पर भी जीत हासिल कर चुके हो। क्या तुम पलक झपकते हमें हमारी मंज़िल तक पहुँचा सकते हो?'

एल्फ़ैण्टॉर के खूबसूरत होंठ थोड़े मुस्कराए, 'पहली बात, दुनिया में ऐसे बहुत काम हैं, जिन्हें मैं नहीं कर सकता। दूसरी बात, ये सच है, मैं हर समस्या का चुटकी बजाते समाधन कर सकता हूँ, लेकिन केवल उस समस्या का, जिसका समाधन करने की ताक़त तुम्हारे खुद के भीतर कहीं छिपी हो। तीसरी बात, मैं तुम्हारा *ग़ुलाम* नहीं हूँ, तुम्हारा हुक्म मानने के लिए बाध्य नहीं। मैं केवल इस बाँसुरी के धरक का *मददगार* हूँ, वो भी केवल इसलिए क्योंकि दुनिया में केवल चुने हुए लोग ही इसमें स्वर फूँक सकते हैं और जब इसमें प्राण आते हैं तभी मैं बाहरी दुनिया से जुड़ता हूँ, वरना सदियों तक अपने ही भीतर जीना, बहुत मुश्किल है।' उसने गम्भीर आवाज़ में कहा।

सलार ने साफ़ महसूस किया कि उसकी पलकों की कोर गीली हो गई थीं, जिन्हें उसने बड़ी सावधनी के साथ छिपा लिया। ऐसा लगा जैसे दर्द की एक गहरी झील में अचानक हिलोर आ गई हो। मकास ने पीछे से सलार के कन्धे पर हाथ रखा और आहिस्ता से दबाया। शायद उसने भी एल्फैण्टॉर की बात सुन ली थी।

उस विशाल प्राणी ने मकास की तरफ़ देखा, 'अब मुझे जाना होगा। जब तुम दोबारा मुझे पुकारोगे, मैं आ जाउँफगा और हाँ, अब तुम्हें बाँसुरी में स्वर पूँफकने की ज़रूरत नहीं है, तुम्हारी पुकार ही काफ़ी है। मगर हैरत की बात ये है कि

तुम *गुरुहन्ता* के षड़यन्त्रा का शिकार हो चुके हो, तुम्हारे जैसे होशियार नौजवानों को बहुत पहले ये समझ जाना चाहिए था।'

मकास उससे कुछ पूछना चाहता था लेकिन उसकी बात पूरी होते ही धूल और रेत का गुबार उठा, जिसने उसे अपने भीतर समेट लिया। जब गर्द हटी तो वो वहाँ से जा चुका था।

मैंने अपनी छेनी अब ठीक कर ली और पत्थर खोदने का काम वो बखूबी करने लगी है। कैल्टिकस की ये पहाड़ियाँ, इन दिनों कुछ ज्यादा ही बातें करने लगी हैं। शायद भेड़ियों का कोई झुण्ड, नीचे घाटी में प्रवास कर रहा है। मुझे संथाल के बेटों के इस सफर की भयानकता और उस जंग की कत्लोगारत का अंदाजा है, जिसकी बात वो बौना ऑथरडस्ट कर रहा था। इस दास्तान के कई हिस्से छेनी से खोदते वक्त मेरे हाथ लरज जाते हैं, क्योंकि ये कोई दास्तान भर नहीं है, ये वो युग–गाथा है, जिसने आने वाली नस्लों की जिन्दगी और भविष्य को पूरी तरह तब्दील किया।

मेरे संगतराश पिता अक्सर कहा करते थे–**'अपनी जिन्दगी को खूबसूरती से जियो क्योंकि यही आने वाली नस्लों की खूबसूरत जिन्दगी की बुनियाद होगी।'**

संथाल के बेटे अपनी मंजिल की तरफ बढ़ रहे हैं, मगर इस मंजिल का चयन उन्होंने खुद किया है, यही उनकी खुशकिस्मती है वरना ज्यादातर लोग, जिन्दगी भर उस मंजिल के पीछे दौड़ते रहते हैं, जिसका चुनाव किसी दूसरे ने उनके लिए किया होता है।

मुझे याद आता है, इस दास्तान का वो हिस्सा, जब संथाल के बेटे *'उनसे'* मिले, जिन्होंने उस किताब की रचना की थी, जो सारी दुनिया का भविष्य तय कर सकती थी। वो ताकतवर और हुनरमन्द लोग, जिनकी शक्तियाँ चुरा ली गई और उन्हें पश्चात्ताप का भी मौका नहीं मिला। मैं जिक्र करना चाहता हूँ उसका, जो दुनिया का सबसे *उम्रदराज़-शिशु* था। वो *ख़ालमानव*, जिसके जिस्म में एक भी हड्डी नहीं थी लेकिन उसके बालों भरे जिस्म में, किसी भी प्राणी को छूकर, उसकी हड्डियों को खड़िया में बदलने की ताक़त मौजूद थी। वो *बंजारा*, जो रेत की रस्सियों से ऊँट को भी बैठा सकता था लेकिन उसके दल ने, एक ग़लती की वजह से, उसे किस्मत के सहारे, बीहड़ रेगिस्तान में छोड़ दिया।

उस *लकड़हारे* को मैं कैसे भूल सकता हूँ, जिसने जीभ की नोक से लिखी जाने वाली, क्यूटिन लिपि में रची, वो सारी किताबें कण्ठस्थ कीं, जो एक लुहार के सन्दूक में सदियों से बन्द थीं। साथ ही वो *अग्नि-योद्धा*, जो किसी भी दुश्मन की नसों में, धकता अलाव पैदा करने की ताकत रखता था। हर उड़ने और रेंगने वाले प्राणी को सम्मोहित करने की ताकत रखने वाला एक *ख़ानाबदोश*। साथ ही वो *वृक्षमानव*, जो जंगल की चींटियों से लेकर पेड़ों और लताओं तक को अपने हुक्म पर नचा सकता था।

रहस्यमयी सभा

अध्याय सात

वो घटनाएँ मुझे याद पड़ती हैं, जिन्हें मैं अब भी टटोल सकता हूँ, कैल्टिकस की गुफाओं की इन पथरीली दीवारों पर। मेरी बूढ़ी और सूखी उँगलियों के पोरवे, महसूस कर सकते हैं, उस लिखावट को, जो पत्थर को काटकर, भीतर तक पैवस्त हो गई है। वो जमावड़ा, जो उससे पहले केवल एक बार हुआ था, माथेल्टन की रहस्यमयी गहरी खोह में। जमावड़ा, जो उन लोगों का था, जिन्हें सारी दुनिया से पुकारा गया था। दूरदराज़ के उन मुल्कों और प्रदेशों से भी लोग आए थे, जिनका नाम भी लोगों ने कभी नहीं सुना था।

मुझे वो सब लोग बहुत पसंद हैं क्योंकि वो अपने समय के सबसे पवित्रा मन वाले लोगों में से थे, जिनकी ताक़तें और हुनर, सारी दुनिया के हुनर और इल्म से ज़्यादा रहस्यमय और असरदार था। वो वहाँ केवल एक पाक मक़सद के लिए इकट्ठा हुए थे, सारी दुनिया में अमन और चैन। अगर मैं ये कहूँ कि उस दिन माथेल्टन का वो छोटा–सा इलाका, दुनिया का सबसे शक्तिशाली क्षेत्रा था तो शायद ये अतिशयोक्ति न होगी। मुझे वो इसलिए पसन्द हैं क्योंकि पवित्रा मन वाले होने के साथ–साथ उनमें से किसी पर भी अँधेरे की ताक़तों की बादशाहत नहीं थी, बस *एक* को छोड़कर।

हर तरह के ताक़तवर लोग वहाँ आए...दूर **सीनिया** से **कैफ़ुआन पस्तर**, रोशनी जिसकी उँगलियों की गाँठों में कैद थी, जो उजाले की ताक़तों का इस्तेमाल करके, किसी भी चीज़ के भीतर छिपी, अँधेरे की चादर को चिथड़ों में बदल सकता था। **बैल्जोनिया** से **हूनास्पॉटी**, आग की लपटों को मुट्ठी में जकड़कर, किसी भी दुश्मन की नसों में अलाव सुलगाने की ताक़त रखने वाला, **कैजो** प्रजाति का योद्धा। **तकलामकानास** के रेगिस्तान से, **फ़ैग्यूला फ़्लॉट**...रेत–विद्या का माहिर। रेत की रस्सियाँ बनाकर, ऊँट को भी बैठा देने की ताक़त रखने वाला बंजारा। **गैल्नास** के जंगलों से, **जिल्वोकाट**...जंगली जीवों से लेकर चींटियों तक को अपने हुक्म पर नचाने की वुफव्वत रखने वाला, बहादुर वृक्षमानव। **टेक्सिन** क़बीले से, **कास्टन बूड**...टिड्डों से लेकर पक्षियों तक, हर उड़ने और रेंगने वाले प्राणी को सम्मोहित करने की ताक़त रखने वाला ख़ानाबदोश।

हल्वरनेसिया से, **वुन्टनव्रॉस**...अर्द्ध–मानवों से लेकर प्रत्येक मिश्रित प्रजाति के प्राणी को, अपने क्यूटिन लिपि मन्त्रों से क़ाबू में करने की शक्ति रखने वाला लकड़हारा। खोखले पहाड़ों से, **स्कीनिया ब्राज**...अपने जिस्म के बालों से, किसी भी प्राणी की देह की हड्डियों को, खड़िया में तब्दील कर देने की ताक़त रखने वाला शातिर ख़ालमानव। **हूजा** प्रान्त से **रैक्टिकस ड्रॉन**...हर तरह के शापों, वरदानों और मन्त्रों का रूप बदलकर, उन्हें शुभ या अशुभ में परिवर्तित कर देने का हुनर रखने वाला, बैम्बूस प्रजाति का लम्बा और पतला जंगबाज़, और वो ख़ास किरदार, जो सबसे चालाक और ज़बानदराज़ था...अपनी ऊलजुलूल कहावतों के लिए मशहूर, **क्लेवरसीथ**, जिसका मानना था, चालाकी दैवीय गुण है और अल्फ़ाज़ ईश्वरीय पुकार। ज़मीन पर हथेलियाँ रखकर, ये बताने का इल्म रखने वाला बूढ़ा स्ट्रासोल, कि कोई व्यक्ति इस वक़्त दुनिया के किस कोने में धरती पर खड़ा है, जिसका पूरा नाम...**क्लेवरसीथ बैल्टीमॉक गैनोफ़्लच रैनीडस** था।

माथेल्टन की गुफ़ा, जिसकी उँफचाई का अन्दाज़ा, केवल उस रोशनी से होता था, जो उसकी छत में बने चौड़े छेदों से होकर, नीचे ध्रातल पर गिरती थी। इतनी विशाल कि एक साथ हज़ारों लोगों के समूह को पी जाए लेकिन जगह बची रहे। कहते हैं, उसकी गहरी खोह और दरारें, ज़मीन के नीचे बनी उन दुनियाओं तक भी जाती हैं, जहाँ धरती पर रहने वाले किसी प्राणी के पाँव आज तक नहीं पड़े। इस वक़्त वहाँ भारी गहमागहमी और बड़ा जमावड़ा था। अलग–अलग वेशभूषा और विचित्रा पोशाकों वाले हुनरमन्द लोग, पत्थर के उन त्रिभुजाकार आसनों पर बैठे थे, जो एक लम्बी गोलाकार कतार में बने हुए थे। विशाल गोले के भीतर एक उँफचे पत्थर पर चढ़ा बूढ़ा स्ट्रासोल, अपने हाथ हवा में गोल–गोल घ्‍ुमाकर गुस्से में कुछ कह रहा था।

'देवता **मैगूमोला** के चरखे के सूत की कसम, *पास-का-घोंघा-दूर-की-मछली-से-भला*। इन लड़कों ने कहा और इस बौने ने खोखले पत्थर से सन्देश भेज दिया कि एल्गा–गोरस की मौजूदगी को महसूस किया गया है। सबसे कमाल की बात ये कि इस सन्देश के मिलते ही दुनिया भर से हुनरमन्द और इल्मदराज़ लोग भी यहाँ माथेल्टन में इकट्ठा हो गए, इस डर और दहशत से बँधे हुए कि कहीं दुनिया, जंगल–युद्ध की दहलीज़ पर तो नहीं पहुँच गई है। *आँगन-में-कछुआ-नदी-पे-मछुआ*।'

फटे जूते के तलवे जैसी उसकी आवाज़ पूरी गुफा में गूँज रही थी, *'अंधे-की-लाठी-पे-दीमक-का-राज*। बताया जा रहा है कि इन अनजान छोकरों ने जल–गरुड, मत्स्य–नाग और गायब–गिद्ध को देखा भी है और उनके अजीब व्यवहार की चौकसी की है। बहुत ख़ूब, जिन प्राणियों को केवल एल्गा–गोरस से क़ाबू किया जा सकता है, वो दिव्य प्राणी...इन मामूली ख़ानाबदोशों का पीछा कर रहे हैं। किसलिए? क्या इनका मांस नोचने के लिए, या फिर इनकी, मोटी और बदबूदार झोलियों में अपना सड़ा हुआ, बदशक्ल घोंसला बनाने के लिए? वाह...*हाथी-के-अण्डे-में-चिड़िया-का-बिल*।' उसने अपनी सींक जैसी पतली उँगली संथाल के बेटों की तरफ़ उठाकर अपनी बात पूरी की।

ख़ामोशी, पूरी गुफा में ऐसे फैल गई जैसे पेड़ के ऊपर अमरबेल। सबकी नज़रें उन नौजवानों पर टिकी हुई थीं, जिनके बदन की रंगत उनके खास होने का अहसास दिला रही थी। फिर गुफा में जमी ख़ामोशी की सतह चटखी, सुदूर गैल्नास के जंगलों से आए वृक्षमानव जिल्वोकाट की आवाज से।

जंगली जीवों से लेकर चीटियों तक को अपने हुक्म पर नचाने की वुफ्व्वत रखने वाले के टहनीनुमा होंठ आहिस्ता से हिले, 'बरसों से एल्गा–गोरस की कोई ख़बर, कोई इशारा या ऐसा कोई हादसा दुनिया में कहीं नहीं दिखा, जिसे देखकर ये कहा जा सके कि वो रहस्यमयी किताब पूरी कर ली गई है। शुरू में कुछ सालों तक बहुत सी झूठी ख़बरें मिलीं इसलिए खोखले पत्थर का प्रबन्ध किया गया ताकि केवल वो लोग उसकी ख़बर दे सकें, जो उसकी ताक़त और इस्तेमाल के असर को जानते हैं। लेकिन बिना जाँच–पड़ताल किए कुछ भी कहना जल्दबाज़ी होगी। हो सकता है ये नौजवान सच बोल रहे हों, या फिर झूठ...लेकिन सच का पता लगाना ही होगा।' जिल्वोकाट की बात पूरी होते ही उसके होंठ ऐसे आपस में चिपके जैसे दो पत्तेदार टहनियों को 'झप्प' से एक–दूसरे से टकरा दिया हो।

पूरी सभा में कानाफूसी की आवाज़ें ऐसे फैल गईं जैसे मक्खियों की भिनभिनाहट। मकास कुछ बोलना चाहता था लेकिन ऑथरडस्ट ने उसे कुहनी के इशारे से मना कर दिया। उजाले की ताक़त का इस्तेमाल करके, किसी भी चीज़ के भीतर छिपी अँधेरे की चादर को चिथड़ों में तब्दील करने का हुनर रखने वाला, सीनिया का कैफ़ुआन पस्तर अपनी जगह से उठा। उसकी उँगलियों के जोड़ों के आसपास तेज़ रोशनी नज़र आ रही थी।

जमीन पर जहाँ वो पैर रखता, वहाँ रोशनी का धुआँ–सा तैरता रह जाता, 'अगर वाकई इस डिग्गीडस्ट और इन तीन लड़कों ने गायब–गिद्ध, मत्स्य–नाग और जल–गरुड़ को देखा है और उनके अजीब व्यवहार की चौकसी भी की है तो ये हम सबके लिए चिन्ता करने का वक़्त है क्योंकि इन तीनों ही प्राणियों को बिना एल्गा–गोरस की मदद के, काबू करना असंभव है।'

कैफ़ुआन ने माथे पर फैली सलवटों को खोलकर, एक बार पूरी भीड़ की तरफ़ देखा, 'मैं सम्मानित सभा को ये भी याद दिला देना चाहता हूँ, बरसों पहले जब खोखले पत्थर का प्रबन्ध किया गया, तब ये भी ख़याल रखा गया था कि उससे केवल वो व्यक्ति ही सन्देश भेज सके, जिसने वाक़ई एल्गा–गोरस को महसूस किया हो। केवल मज़े के लिए या शवफ की बिनाह पर खोखले पत्थर से सन्देश भेजा जाना संभव नहीं। अपने दोस्त 'झाडू के तिनके' की बात से मैं इत्तेफ़ाक नहीं रखता, जो ये सोचता है कि बिना वजह वो दिव्य–प्राणी, इन मामूली लड़कों का पीछा क्यों करेंगे? हो सकता है *'वजह'* अभी न मालूम हो, लेकिन कोई वजह होगी ही नहीं, ये कहना जल्दबाज़ी भी हो सकती है।' कैफ़ुआन की बात पूरी होते ही क्लेवरसीथ ने बुरा–सा मुँह बनाया। अपने लिए *झाडू-के-तिनके* का सम्बोधन शायद उसे पसन्द नहीं आया।

हर तरह के शाप, वरदान और मन्त्रों का रूप बदलकर, उन्हें शुभ या अशुभ में बदल देने की ताक़त रखने वाले, हूजा प्रान्त से आए हुए, बैम्बूस प्रजाति के योद्धा रैक्टिकस ड्रॉन ने क्लेवरसीथ की बात का समर्थन किया। उसे नहीं लगता था कि अब एल्गा–गोरस से कोई ख़तरा हो सकता था। उसने संक्षेप में अपनी बात ये कहकर समाप्त कर दी, 'ये केवल वहम भी हो सकता है, जिसके पीछे हम सब भाग रहे हैं।'

'ये लड़के और ये डिग्गीडस्ट बौना, ये केवल सभा का वक़्त बरबाद कर रहे हैं। जैल्डॉन कहीं मर–खप गया होगा। एल्गा–गोरस के गायब होने के बाद कभी फिर उसका कोई सुराग़ आज तक नहीं मिला। हमें अफ़वाहों और दहशत फैलाने की कोशिशों को रोकने की कोशिश करनी चाहिए, न कि उन्हें बढ़ावा देने की।' टैक्सिन कबीले से आए ख़ानाबदोश कास्टन ब्रूड ने, पत्थर के त्रिभुजाकार आसन से उठते हुए कहा।

कैफुआन ने सबको शान्त किया और उठकर ऑथरडस्ट के पास पहुँचा।

'तुम...सभा को बताओ कि तुमने क्या देखा और क्या महसूस किया। बिना सारी बात जाने किसी भी नतीजे पर पहुँचना संभव नहीं, लेकिन याद रखना, अगर तुम्हारी कहीं बातें सच नहीं निकलीं, तो तुम्हे उसका ख़ामियाज़ा भी भुगतना होगा।'

ऑथरडस्ट ने अपने लबादे को संभाला और ऊँची आवाज़ में सभा को सम्बोधित किया, 'अपने सरदार पियोनी के हुक्म से मैं इन नौजवानों के साथ सफ़र पर हूँ। सम्मानित सभा को मालूम हो कि ऑथरडस्ट को उन *ख़ास* लोगों में चुना गया, जो खोखले पत्थर से सन्देश भेज सकते हैं। सफ़र के पहले दिन से ही मुझे महसूस हुआ कि कोई चीज़ है, जो हमारे सिर के ऊपर हमारी निगरानी कर रही है लेकिन बार–बार देखने के बाद भी कुछ नहीं दिख सका। फिर मुझे लगा, मेरे लबादे पर कुछ गिरा, ऊपर नज़र जाते ही मुझे वो दिख गया। वो एक गायब–गिद्ध था, हमारे सिरों के ठीक ऊपर। ये उसकी *बीट* थी, जो संयोगवश मेरे ऊपर गिरी और मैं उसे देख सका और सभा के सम्मानित सदस्य जानते हैं, गायब–गिद्ध को केवल वो देख सकता हैं, जिसके ऊपर उसकी बीट गिरी हो।' पूरी गुफा साँस रोके उसकी बात सुन रही थी।

'क्या ये सभा तुमसे पूछ सकती है नौजवानो कि तुम किस सफ़र पर हो और आख़िर कहाँ जा रहे हो?' रैक्टिकस ड्रॉन ने जरूस की आँखों में झाँकते हुए पूछा।

जरूस कुछ कहता, उससे पहले ही मकास ने सवाल का जवाब दे दिया, 'हम संथाल–पुत्रा, जरूस, सलार और मकास, अपने पिता के दिए वचन को पूरा करने के लिए सफ़र पर निकले हैं। हमारे महान पिता ने किसी से वायदा किया है, वो उसे एक सुराही...'

इससे पहले मकास की बात पूरी हो पाती, क्लेवरसीथ बोल पड़ा, 'हमें ये जानने में कोई दिलचस्पी नहीं है कि तुम अपने *किस* वायदे को पूरा करने के लिए, *कहाँ* जा रहे हो। सिर्फ़ इतना बताओ कि आख़िर वो दिव्य– प्राणी तुम्हारा पीछा क्यों कर रहे होंगे?'

'हम किसी की भी बात का जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं, *क...ले...व...र...सी..थ*...या जो कुछ भी तुम्हारा नाम है। इस सभा में खड़ा होना न हमारी विवशता है और न ही हम किसी के हुक्म के गुलाम हैं...हम अपनी मर्ज़ी से यहाँ आए थे और अब अपनी ही मर्ज़ी से यहाँ से जा रहे हैं।' मकास के लफ़्ज़ों में गुस्सा ऐसे झलक रहा था जैसे साफ़ पानी में चाँद का अक्स।

जरूस और सलार उसके इस बदले हुए व्यवहार को देखकर हैरत में थे।

'हम इस गुफा में केवल इसलिए खड़े हैं क्योंकि हम हुनर का सम्मान करते हैं और ऑथरडस्ट ने हमें बताया कि इस सभा में सारी दुनिया के सबसे हुनरमन्द और इल्मदराज़ लोग मौजूद हैं, लेकिन अफ़सोस...यहाँ तो इतना सब्र और सलीक़ा भी नज़र नहीं आता, जो ये तय कर सके कि मुसाफ़िरों से बात कैसे की जाती है।' मकास की आवाज़ गुस्से की अधिकता की वजह से काँप रही थी।

मकास के शब्दों को सुनकर पूरी सभा में जैसे सन्नाटा छा गया। उसने बोलना जारी रखा, 'और हाँ...हमें इस वाहियात बात को भी साबित करने की कोई ज़रूरत नहीं है कि हमने किसे देखा था और किसे नहीं देखा था। इस शानदार मेहमाननवाज़ी का शुक्रिया दोस्तो। हालाँकि हम जानते हैं कि आप सब भी यहाँ महज़ मेहमान ही हैं।'

मकास ने दोनों भाइयों की तरफ़ देखा और गुफा के विशाल द्वार की तरफ़ बढ़ा। दोनों ने एक लफ़्ज़ भी बिना कहे, उसका अनुसरण किया। बौना ऑथरडस्ट आहिस्ता–आहिस्ता उनके पीछे चल रहा था। रेत की एक सनसनाती हुई लकीर तेज़ी से हवा में लहराई और तीनों के पाँवों में रेत की रस्सियाँ कस गईं। रेतीली रस्सियों ने उनके क़दमों को वहीं का वहीं कस दिया। अब वो एक सूत भी नहीं हिल पा रहे थे।

'तुम्हें इस सभा और इसके सदस्यों का अपमान करने का कोई हक़ नहीं है...छोकरे।' तकलामकानास के रेगिस्तान से आए फ़ैग्यूला फ़्लॉट की, रेत–सी खुश्क आवाज़ गुफा की दीवारों से टकराई, 'तुम इस तरह यहाँ से नहीं जा सकते।'

एक पल के गुज़रने से पहले, एक सनसनाता हुआ छुरा और एक तीखा तीर झन्न से फ़ैग्यूला के पैर के पास आकर गड़ गए। किसी को पता भी नहीं चला कि कब मकास और जरूस के हाथों से वो छूटे और जमीन में गड़ गए।

'ये महज़ बेअदबी और गुस्ताख़ी है...इसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।' एक दूसरी आवाज़ गूँजी।

तीनों ने मुड़कर आवाज़ की दिशा में देखा, खोखले पहाड़ों से आया शातिर ख़ालमानव स्कीनिया ब्राज, अपनी जगह पर किसी केंचुए की तरह रेंगा। बिना हड्डी का उसका जिस्म, ख़ाल के एक ढेर की तरह लग रहा था, जिस पर घने, काले बाल उगे हुए थे।

खाल के बीच से झाँकती उसकी सुर्ख़ आँखें गुस्से से फैग्यूला फ़्लॉट की तरफ़ देख रही थीं, 'तो क्या अब तुम्हें ये तमीज सिखाने की भी जरूरत है फैग्यूला कि *मेहमानों* के साथ कैसे पेश आया जाता है?'

स्कीनिया ब्राज का बल खाता हुआ जिस्म तेज़ी से आगे सरक रहा था। उसने गुस्से से फैग्यूला की तरफ देखा, **'लोग दूसरों से देवता होने की उम्मीद रखते हैं, लेकिन वो खुद इंसान भी नहीं होना चाहते।'**

उसके घने, काले बालों ने जैसे ही रेत की रस्सी को छुआ, एक–एक कण एकदम ज़मीन पर झड़ गया। तीनों ने अपने टखनों पर कसाव कम होता महसूस किया।

'दुनिया जंगल–युद्ध के कगार पर खडी है और तुम लोग यहाँ आपस में झगडा कर रहे हो...बेवकूफो।' वुन्टनब्रॉस की आवाज़ ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींच लिया।

'अगर माथेल्टन की इस गुफा में इकट्ठा, इतने पवित्रा मन वाले लोग भी आपस में ऐसे लड़ रहे हैं, जैसे बिगडैल अमीर बच्चे...तो वाकई ये बात पक्की है, किसी ने एल्गा–गोरस को पूरा कर लिया है। उसका *असर* होना शुरू हो गया है वरना इस पुरअमन जगह पर किसी के मन में झगडे का खयाल भी नहीं आ सकता। तुम सब असर में आ चुके हो फ़्लॉट, स्कीनिया और तुम भी क्लेवरसीथ।' बुजुर्ग वुन्टनब्रॉस की आवाज़ ने सबको जैसे जड़ कर दिया, 'क्या तुम में से कोई ये महसूस नहीं कर रहा कि यहाँ हर शख़्स, ऐसा व्यवहार नहीं कर रहा जैसा उसे करना चाहिए?'

पल भर के लिए तो जैसे सब सुन्न हो गए लेकिन फिर क्लेवरसीथ ने खामोशी को भंग किया, 'हाँ, *असर* तो जरूर हो चुका है वुन्टनब्रॉस...लेकिन वो असर *एल्गा-गोरस* का नहीं, *उम्र* का हो चुका है, तुम पर। तुम ये कहना चाहते हो कि वो लोग, जिन्होंने उस रहस्यमयी पुस्तक की रचना की, वो अब खुद उसी की चपेट में आ चुके हैं...कमाल...वो लोग जिन्हें ये भी मालूम है कि उस किताब के किस वर्वफ पर स्याही की कितनी बूँदें अतिरिक्त गिर गई थीं, वो अपने ही बनाए शाहकार के *अ-स-र* में आ चुके हैं।' उसकी आवाज में छुपे व्यंग्य को पूरी सभा ने महसूस किया।

'मैं, क्लेवरसीथ बैल्टीमॉक गैनोफ़लच रैनीडस...जो ज़मीन पर हथेली रखकर ये बता सकता है कि कोई इंसान इस वक़्त धरती के किस टुकड़े पर खड़ा है। मैं उस दुष्ट जैल्डॉन को आज तक कभी महसूस नहीं कर पाया। इस स्ट्रासोल की हथेली के कितने छाले इस बात के गवाह हैं कि बरसों तक, हज़ारों बार, हर दिन, मैं ये पता करने की कोशिश करता रहा कि आखिर जैल्डॉन कहाँ छिपा है लेकिन कुछ पता नहीं लगा सका। उसके कालिख पुते तलवों के लिए धरती कभी नहीं धड़की, एक बार भी नहीं और तुम ये कहना चाहते हो कि न केवल जैल्डॉन बल्कि एल्गा–गोरस को भी महसूस किया गया है, वो भी तीन मामूली छोकरों और एक डिग्गीडस्ट बौने के द्वारा...बढ़िया। *चींटी-को-दिखा-शेर-मकड़ी-ने-खाया-बेर*' उसकी बात का किसी ने कोई जवाब नहीं दिया।

भारी शोर–शराबे और गहमागहमी के बीच सभा को स्थगित कर दिया गया। कोई किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सका। उस रात सबके वहीं रुकने का इंतज़ाम किया गया। माथेल्टन की उसी गुफा में, जहाँ चार शव पाए गए थे। लेकिन आज की रात उस रात की तरह मनहूस या खौफ भरी नहीं थी। अफ़वाहों और सन्देहों से लबालब थी। सैंकड़ों गज़ ऊँची गुफा की दीवारों से लगी हुई सैंकड़ों छोटी–छोटी गुफा थीं। वुन्टनब्रॉस ने संथाल के बेटों और ऑथरडस्ट को *'मेहमान'* का दर्ज़ा दिया और उनके लिए अलग से एक छोटी गुफा दी गई। माथेल्टन की गुफा की छत से अब चाँदनी छनकर नीचे आने लगी थी लेकिन गुफा में जगह–जगह काँच के मर्तबान लगाए गए थे, जिनमें चमकीले वायवॉर्न भरे हुए थे। उनकी रोशनी से हर तरफ जगमगाहट हो गई।

माथेल्टन की गुफा के भीतर किसी को नहीं पता था कि इस वक्त भी, एक ग़ायब–गिद्ध वहाँ मँडरा रहा था। मुझे पता है कि वो वहाँ था। मुझे तो वो भी पता है, जो न तो संथाल के बेटों को उस वक्त पता था और न ही उन हुनरमन्द लोगों को, जो उस समय पहाड़ी के गर्भ में इकट्ठा थे। कई बार तो इस दास्तान को पत्थर पर उकेरते वक़्त मैं एक खास अहसास से रू–ब–रू होता हूँ। वो है *'सर्वज्ञाता'* होने का अहसास। मुझे उन किरदारों की ज़िन्दगी के अनछुए हर पहलू का पता है, जिन्हें सदियों तक याद रखा गया और अभी याद रखा जाएगा। कई बार तो मैं उनके क़दमों से क़दम मिला कर चलता हूँ और महसूस करता हूँ कि इस सफर में मैं भी उनके साथ हूँ। अगर ये दास्तान मैं अपनी छेनी से इन पत्थरों पर नहीं खोदता तो शायद एक ख़ास अहसास से वंचित रह जाता और वो है–ईश्वर जैसा होने की विलासिता।

उस छोटी गुफा में पूरी ख़ामोशी थी, जिसमें संथाल के बेटे और ऑथरडस्ट, पत्थर के पलंग पर बैठे हुए थे। फिर ख़ामोशी की दीवार पर मकास की आवाज़ ने दस्तक दी, 'हमें पहले ही इस मनहूस सभा में नहीं आना चाहिए था। हमारा सफर हमें यहाँ लेकर नहीं आया, बल्कि हमारी भावुकता लेकर आई है। हमें इस बात से कोई मतलब नहीं कि एक किताब, जो हाथी के कान पर शुतुरमुर्ग के नाखून से लिखी गई है, उसे ढूँढने के लिए, उसे रोकने के लिए या फिर उसे दोबारा

हासिल करने के लिए कुछ पागल, क्या कर रहे हैं। एल्गा–गोरस...क्या बकवास है...एक किताब, जो दुनिया के हर प्राणी को काबू में कर सकती है। जंगल–युद्ध का कारण बनेगी, जो दुनिया को खात्मे के कगार पर ले जाएगा। हमें जितनी जल्दी हो सके, यहाँ से अपने सफर के लिए निकल जाना चाहिए...हमारे पास बरबाद करने के लिए कतई वक्त नहीं है।' मकास की नाराजगी, अर्द्धनग्न नर्तकी के जिस्म की तरह, उसकी आवाज़ की पोशाक से बाहर झाँक रही थी।

जरूस ने आहिस्ता से उसकी हथेली दबाई और बौने ऑथरडस्ट की तरफ देखा, 'क्या तुम हमें कोई एक वजह बता सकते हो कि हमें यहाँ क्यों रुकना चाहिए?'

बौने ने एक पल के लिए उसकी तरफ देखा और बोला, 'इस सवाल का जवाब तुम्हें मुझसे नहीं, अपने–आप से मिलेगा नौजवान। तुमने अपने बारे में बड़े गर्व से बताया...कि तुम दुनिया के सबसे मशहूर, तलवारबाज़–नुजूमी से ऐसा हुनर सीखकर आये हो, जिसकी मदद से तुम सितारों के साथ–साथ, जंगल की रूह से भी बातें कर सकते हो, नदियों के हाथ संदेशे भेज सकते हो और हवाओं के कपड़ों से खत हासिल कर सकते हो। तो जाओ, बाहर आसमान पर तबाही का इंतज़ार करते सितारों के पास जाओ और मालूम करो उनसे कि विनाश की गर्द अभी कितनी दूर बाकी रह गई है। शायद तुम्हें अपने सवालों का जवाब मिल जाए।' बौने के माथे पर उभर आई चिन्ता की लकीरें, वो तीनों साफ देख पा रहे थे।

सलार ने कुछ कहने के लिए होंठ खोले लेकिन उसकी बात बीच में ही रह गई। वुन्टनव्रॉस, तेजी से भीतर आया, 'तुम...तुम चारों फौरन मेरे साथ आओ...जल्दी करो।'

हक्के–बक्के से चारों बाहर आए। बाहर स्कीनिया ब्राज, रैक्टीकस ड्रॉन और जिल्वोकाट भी थे। जरूस ने कुछ कहना चाहा लेकिन रैक्टीकस ने अपने होंठों पर उँगली रखकर उसे चुप रहने का संकेत किया। चारों अवाक् से, उनके पीछे चलने लगे।

काफी देर चलने के बाद उन्हें दीवारों पर सीलन और नमी का अहसास होने लगा। वृक्षमानव जिल्वोकाट ने एक जगह उन्हें रुकने का इशारा किया। एक दीवार में नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ नजर आ रही थीं। सबसे पहले वुन्टनव्रॉस उतरा, फिर केंचुए की तरह बल खाता हुआ स्कीनिया ब्राज...उसके बाद रैक्टिकस ने ऑथरडस्ट को नीचे उतरने का इशारा किया। एक–एक करके जरूस, मकास और सलार भी नीचे उतरे। रैक्टिकस सबसे बाद में आया।

अँधेरे में उनकी आँखें साफ़ नहीं देख पा रही थीं लेकिन जितना भी दिख रहा था, वो सीढ़ियाँ उतरने के लिए पर्याप्त था। लगातार सीढ़ियाँ उतरते हुए उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे किसी पातालतोड़ कुएँ की तलहटी नापने जा रहे हों। फिर जिल्वोकाट की आवाज़ ने उन्हें रुकने का अहसास कराया, 'बस...हम आ गए।'

काफी देर बाद उनके पैर समतल ज़मीन से टकराए। अँधेरे में स्कीनिया ब्राज की आँखें जलती हुई नज़र आ रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे दो सुर्ख कोयले ज़मीन पर रेंग रहे हों।

पत्थर के एक सँकरे दरवाज़े को पार करके, वो एक विशाल तहख़ाने में पहुँचे। उन्होंने देखा, वहाँ पहले से ही कैफुआन पस्तर, हूनास्पॉटी, कास्टन ब्रूड, फ़ैग्यूला फ़्रलॉट और एक बच्चा बैठा था, जिसकी उम्र मुश्किल से दस बरस रही होगी।

'हम बेसब्री से तुम्हारा इंतज़ार कर रहे थे जिल्वो!' हूनास्पॉटी की आवाज़ ने गुफा में प्राण फूँके।

अभी तक वो चारों कुछ भी नहीं समझ पाए थे। बालों से ढँके ख़ाल के ढेर जैसे स्कीनिया ब्राज ने सबकी तरफ़ देखा, 'अब सभा की कार्यवाही शुरू कर दी जानी चाहिए। मैं सम्मानित सभापति से इजाज़त चाहता हूँ।' स्कीनिया ब्राज की इस बात पर, बच्चे ने अपना हाथ उठाकर इजाज़त दी।

'जैसा कि आप सभी जानते हैं, माननीय सभापति महोदय की ग़ैरमौजूदगी में हमें महासभा करनी पड़ी लेकिन खुशी की बात है कि वो समय रहते लौट आए हैं। दुनिया जंगल–युद्ध के कगार पर आकर खड़ी हो गई है। एल्गा–गोरस को महसूस किया गया है और केवल महसूस ही नहीं किया गया, सम्मानित सभा खुद उसकी ताकत देख भी चुकी है। असर, शुरू हो गया है। कल की सभा में सदस्यों का व्यवहार और गुफा की छत पर रात को मँडराने वाला ग़ायब–गिद्ध, माननीय सभापति महोदय ने कल खुद भी देखा है।'

स्कीनिया की इस बात पर बच्चे ने सहमति में अपना सिर हिलाया लेकिन कहा कुछ नहीं। उसने बोलना जारी रखा, 'एल्गा–गोरस को **सिद्ध** कर लिया गया है। आखिरी पश्ष्ठ तक पूरा करने से पहले, कोई भी उसके किसी मन्त्रा या विधि का इस्तेमाल नहीं कर सकता। सभा का अंदेशा है कि ये जैल्डॉन ही हो सकता है। लेकिन अभी तक कहीं भी उसके होने के सुबूत नहीं मिले हैं। एक खुशख़बरी ये है कि सभा की निगरानी करने वाले ग़ायब–गिद्ध को कैद कर लिया गया है, वो

आपके सामने उस पत्थर पर रखे पिंजरे में है।'

स्कीनिया ने तहखाने में रखे एक पत्थर की तरफ इशारा किया। पंख फड़फड़ाने की आवाज़ ने सबका ध्यान उस तरफ खींचा। पत्थर पर पिंजरा तो था लेकिन उसके भीतर कुछ नहीं था। बस ऐसा लग रहा था जैसे कोई पक्षी अपने पंख फड़फड़ा रहा हो। काफी कोशिश करने पर भी कोई नहीं देख पाया कि आखिर, वो उस पिंजरे में है कहाँ।

स्कीनिया की आवाज़ ने एक बार फिर सबके कान अपनी तरफ़ आकर्जित किए, 'इस गिद्ध की दिव्यता इसे वापस लौटा दी जाएगी लेकिन ख़बरी **कैण्डीनल** ने एक ख़तरनाक सूचना दी है। सभा के सदस्यों के बीच जैल्डॉन के कुछ भेदिए मौजूद हैं।'

उसकी बात सुनकर, बच्चे के अलावा सभी के चहेरे पर हैरत और चौंकने के भाव थे। माननीय सभापति महोदय ने बताया है कि तीनों नौजवान और ये डिग्गीडस्ट बौना, यकीन के क़ाबिल हैं। इनका कहा एक–एक शब्द सच है। तय किया गया है कि सभा विसर्जित कर दी जाएगी और लोगों से उनके प्रान्तों और मुल्कों के लिए जाने को कहा जाएगा। लेकिन चुनिन्दा–समूह के सदस्य यहीं ठहरेंगे। तब तक, जब तक समस्या का समाधन नहीं हो जाता।' अपनी बात पूरी करने के बाद स्कीनिया पल भर के लिए रुका। ऐसा लगा जैसे खाल के ढेर ने गहरी साँस ली हो।

'क्या तुम कुछ कहना चाहते हो नौजवानो?' बच्चे ने जरूस की तरफ गहरी नजरों से देखकर कहा।

उसने अपनी मोटे कपड़े की झोली एक तरफ़ रखी और खड़ा हो गया। एक बच्चे के होठों से अपने लिए *'नौजवान'* शब्द सुनकर उसे थोड़ा अटपटा तो लगा लेकिन उसने अपने चेहरे के भावों को बखूबी छुपा लिया।

जरूस के होंठ हिले, 'हमें इस मामले में घसीटने से पहले, हमारी इजाज़त ली जानी चाहिए थी। आपकी इस सभा और इसके सदस्यों का पागलपन हम देख चुके हैं। वो लोग दुनिया को, युद्ध से बचाने की बात कर रहे हैं, जिन्हें ये भी सलीका नहीं आता कि मेहमानों और मुसाफिरों के साथ कैसे पेश आया जाता है। माफ़ी के साथ कहना चाहूँगा, हमें इस मामले में न तो कोई दिलचस्पी है और न ही इसकी फिक्र।' जरूस की बात पूरी होते–होते बच्चे ने कई बार पहलू बदला।

बच्चे की भारी आवाज़ ने तीनों को चौंकाया, 'तुम्हारी नाराज़गी वाज़िब है नौजवानो लेकिन सभा के किसी भी सदस्य की बेअदबी के लिए, हम तुमसे माफ़ी चाहते हैं। उनसे जो भी हुआ, वो सब *असर* की वजह से हुआ। इसी वजह से हमने चुनिन्दा–समूह की बैठक यहाँ तहख़ाने में बुलाई है। दूसरी बात, तुम इस वक़्त भी अपने सफ़र पर ही हो। अगर तुम्हें ये लगता है कि तुम्हें कहीं और जाना है तो ये तुम्हारा वहम है। पथहीन–नक़्शा तुम्हें सही दिशा में लेकर जा रहा है।'

बालक की बात सुनकर तीनों चौंक गए। 'क्या तुम्हें यैन्गोल्डा ने नहीं बताया, जो पथहीन नक़्शे को पढ़ना सीख जाते हैं, उनके रहबर केवल उनके पाँव होते हैं और जो इसके अल्फ़ाष नहीं समझते वो जिन्दगी भर दूसरों के तलवों में गुदे नक़्शों का पीछा करते रहते हैं।'

तीनों हक्के–बक्के से उसे देख रहे थे। तीनों के दिमाग़ में इस वक़्त केवल एक बात चल रही थी, ये बालक उस बातचीत को कैसे जानता है, जिसके बारे में केवल और केवल उन्हें पता है।

'हम केवल उस बातचीत को नहीं जानते, जो तुम्हारे और यैन्गोल्डा के बीच हुई बल्कि उन सब बातों को भी जानते हैं, जो तुम्हारे और पाँच बूढ़े फ़क़ीरों के बीच हुई।' उसने उचटती निगाह से मकास की तरफ़ देखा और बोला, 'लेकिन इस वक़्त ये बात अहम है कि तुम्हारे पास आखिर ऐसा क्या है, जिसे पाने के लिए दुष्ट जैल्डॉन तुम्हारी निगरानी करवा रहा है, वो भी उन प्राणियों से, जिन्हें केवल एल्गा–गोरस से क़ाबू किया जा सकता है।' बालक की शक्तियों से तीनों हतप्रभ थे।

वुन्टनव्रॉस ने बीच में खड़े होते हुए कहा, 'माफ़ी चाहूँगा सभापति महोदय, मैं अपने मेहमान मुसाफ़िरों को आपसे वाकिफ़ कराने की इजाज़त चाहता हूँ।' बच्चा बस हल्के से मुस्कराकर रह गया।

वुन्टनव्रॉस ने पूरे अदब और नरमी के साथ कहना शुरू किया, 'मैं सभापति महोदय का परिचय आपसे करवा दूँ, आप हैं महान **सालन हीस**...*एल्गा-गोरस-रचना-सभा* के मुखिया और दुनिया के सबसे उम्रदराज़ इंसान। कोई नहीं जानता सालन की उम्र कितनी है, क्योंकि खुद सालन ने कभी ये राज़ नहीं खोला। उस चुनिन्दा–समूह के अध्यक्ष, जिसकी देखरेख में एल्गा–गोरस लिखी गई। सालन किसी बेहद ज़रूरी काम की वजह से शाम की सभा में मौजूद नहीं थे, आने पर वो सब बातें उन्हें बताई गईं, जो सभा में घटित हुईं। उन्होंने फ़ौरन चुनिन्दा–समूह की ये बैठक बुलाई और उस अभद्र व्यवहार के लिए तुमसे माफ़ी माँगने का प्रस्ताव रखा नौजवानो।' वुन्टनव्रॉस की बात ख़त्म होते–होते सभी ने महसूस किया कि संथाल के बेटों के चेहरे पर तनाव कुछ कम हुआ और अब वहाँ नाराज़गी की जगह शान्ति नज़र आ रही थी।

'माफी माँगकर आप हमें शर्मिन्दा न करें वुन्टनब्रॉस...सलार ने आगे बढ़कर उसकी तरफ देखा, 'अगर वो सब सही है, जैसा हमें बताया गया है तो फिर हमें भी आपसे माफी माँगनी चाहिए, उस क्रोध के लिए, जो हमने सभा में किया। मगर हम जानना चाहते हैं, हमें आपके साथ क्यों रुकना चाहिए और क्यों नहीं हम उस वचन को पूरा करने के लिए निकल जाएँ, जो हमारे पिता ने किसी को दिया है।'

'किसी ख़ास वजह से जैल्डॉन तुम्हारी निगरानी करवा रहा है, जो कुछ हो रहा है, वो आने वाले विनाश और ख़तरों की तरफ इशारा कर रहा है। खबरी कैण्डीनल ने बताया है, कुछ और हत्याएँ हो सकती हैं। जैल्डॉन की ताकत का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसने सभा के सबसे ताक़तवर सदस्यों तक को असर में ले लिया।' हूनास्पॉटी ने तीनों की तरफ मुख़ातिब होते हुए कहा।

गिद्ध के पंख फड़फड़ाने की आवाज़ ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींचा। सभी ने पल भर के लिए उस तरफ देखा लेकिन फिर निगाह हटा ली।

'अगर उसे ये मालूम है कि माथेल्टन में महासभा हो रही है और उसने ग़ायब–गिद्ध को सभा की निगरानी करने के लिए भेजा है तो उसे ये भी मालूम हो गया होगा कि हमें उसके बारे में महसूस हो गया है। वो अब पहले से कहीं अधिक सतर्क और सावधन हो गया होगा। हालाँकि सदस्यों को असर में लेने के बाद वो निश्चिन्त होगा कि सभा में उसके खिलाफ कुछ नहीं होगा लेकिन उसे न तो सालन के लौटने की खबर होगी और न ही इस गुप्त सभा की, जो इस तहख़ाने में हो रही है।' फैग्यूला फ़्लॉट ने अपनी हथेलियों से रेत झाड़ते हुए कहा।

'सबसे हैरत की बात है कि आज तक हम में से किसी को भी ये पता नहीं चल सका कि दुष्ट जैल्डॉन आखिर कहाँ है। महासभा की सारी ताकतें और यहाँ तक कि सालन की सारी शक्तियाँ भी उसका पता खोजने में नाकाम रहीं। दुनिया भर में हमारे ख़बरी फैले हैं, हम खुद उसकी तलाश में आकाश–पाताल एक किए हैं लेकिन कभी उसके पाँवों की गर्द तक नहीं मिली। अब अचानक वो रहस्यमयी किताब अपनी मौजूदगी दर्ज़ कराती है लेकिन, असली शिकारी अब तक उसके पश्ठों के भीतर कहीं छुपा है। इतने बरसों तक ख़ामोश रहने की वजह तो समझ आती है कि वो एल्गा–गोरस को *पूरा* करने की कोशिश कर रहा होगा लेकिन अगर उसने किताब को पूरा भी कर लिया है तो अब तक उसे अपने असली रूप में आकर जंग शुरू कर देनी चाहिए थी, वो बिल में क्यों छुपा बैठा है?' रैक्टिकस ने सालन की तरफ़ देखते हुए अपनी बात पूरी की।

'हमारे पास उसे बिल से निकालने की योजना है रैक्टिकस।' सालन के पतले होंठ आहिस्ता से हिले। 'लेकिन उससे पहले हम इन नौजवानों से पूछना चाहेंगे कि क्या उनकी रेत–घड़ी हिफ़ाज़त से उनके पास है?'

इस सवाल पर तीनों एकदम चौंक गए। मकास का हाथ अनायास ही अपने लबादे के भीतर चला गया। हर जगह टटोलने के बाद भी उसे रेत–घड़ी कहीं महसूस नहीं हुई। रेत–घड़ी कहीं नहीं थी। तीनों अवाक् से एक–दूसरे का मुँह ताक रहे थे।

सालन ने अपनी पोशाक के भीतर हाथ डाला, जब वो बाहर निकला तो उसमें एक टूटी हुई रेत–घड़ी दबी थी।

'ये हमें माथेल्टन की गुफा की छत में बने, उस छेद के पास टूटी मिली, जिसके ऊपर ये ग़ायब–गिद्ध मंडरा रहा था। क्या तुम बता सकते हो, ये कब और कैसे तुम्हारे पास से चुराई गई?'

तीनों कुछ नहीं समझ पाए। कोई उनकी रेत–घड़ी क्यों चुराकर तोड़ना चाहेगा और ऐसा कैसे संभव है, उन्हें बिना पता चले उनकी झोली के भीतर से कोई चीज़ चुरा ली जाए जबकि हर पल वो उनके कन्धे पर ही लटकी रहती है।

'हम तुम्हें बता दें, कोई भी बाहरी ताक़त बिना हमारी इजाज़त, माथेल्टन की गुफा के भीतर दाख़िल नहीं हो सकती, जो लोग असर में आए या प्रभावित हुए, वो भी गुफा से बाहर ही हुए हैं लेकिन ये चोरी गुफा के भीतर हुई है। गुफा से बाहर अगर ऐसा होता तो ये टूटी हुई रेत–घड़ी, गुफा की छत पर बने छेद के पास पड़ी न मिलती। ये पक्का है कि महासभा के सदस्यों में ही *भेदिया* छुपा है। हमें उसे खोज निकालना होगा।' सालन ने चहलक़दमी करते हुए कहा। पूरा चुनिन्दा–समूह सहमति में अपने सिर आहिस्ता–आहिस्ता हिला रहा था।

'जैल्डॉन बरसों से ताक़त इकट्ठा कर रहा है। एल्गा–गोरस के ग़ायब होने के बाद से आज तक, उसने हर दिन केवल ताकत हासिल करने के लिए गुज़ारा होगा। उसकी सबसे बड़ी कामयाबी ये है कि तब से अब तक, उसने कभी अपनी मौजूदगी का कोई सुराग़ कहीं नहीं छोड़ा। ये भी संयोग था कि तुमने उस कड़ी को जोड़ने में सफलता प्राप्त कर ली, जो शायद हर कोई नहीं जोड़ पाता।' सालन ने अपनी बच्चे जैसी छोटी हथेली, ऑथरडस्ट के कन्धे पर रखकर कहा।

मकास ने देखा, दोनों का कद लगभग बराबर ही हो रहा था।

'हमें अब बिना वक्त गँवाए, योजना पर विचार करना चाहिए।' रैक्टिकस की आवाज में उतावलापन झलक रहा था।

'मैं चुनिन्दा–समूह के सभी सदस्यों से गुजारिश करूँगा कि सब नजदीक आ जाएँ।'

सालन की बात पूरी होते ही सब एक–दूसरे के इतना पास आ गए कि साँसों की आवाज भी साफ सुनाई दे रही थी। सालन ने अपने चोगे से, एक झीना कपड़ा बाहर निकाला और उस पिंजरे पर ढँक दिया, जिसके भीतर गायब–गिद्ध था।

'अब ये न तो हमें सुन पाएगा और न ही देख पाएगा। हमारी योजना ये है...' सब के सब दम साधे सालन का एक–एक लफ्ज पूरे गौर से सुन रहे थे।

दो दिन से बाहर इतनी बर्फ पड़ रही है कि मेरी गुफा का मुहाना, आधे से ज्यादा बन्द हो गया है। वैसे उससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता क्योंकि मुझे बाहर जाने की जरूरत बहुत कम पड़ती है। इस दास्तान को इन पथरीली दीवारों पर उकेरते–उकेरते, मेरी ठण्डी उँगलियाँ अब जवाब देने लगी हैं। सर्दी की वजह से आजकल मैं ज्यादा खुदाई नहीं कर पाता लेकिन सर्दी का एक बड़ा फायदा मुझे हमेशा महसूस होता रहा है। कम से कम मोम की उन चौकोर पट्टियों के पिघलकर बह जाने का डर नहीं रहता, जो गर्मी के मौसम में सदा बना रहता है।

संथाल के बेटे नहीं जानते, उनके पाँवों में खुदा नक्शा उन्हें वहाँ ले आया है, जहाँ उन्हें हर हाल में आना ही था। मगर एक खास बात अच्छे से समझ लेने वाली है। जब मैं जोर देकर ये कहता हूँ कि *वहाँ-ले-आया-है-जहाँ-उन्हें-हर-हाल-में-आना-ही -था* तब उसका मतलब *'किस्मत'* या *'भाग्य'* से कतई नहीं है क्योंकि ये दोनों ही लफ्ज भविष्य को पत्थर की तरह ठोस और ठण्डा बनाते हैं जबकि भविष्य हर पल लचीला और गर्म होता है, धड़कता हुआ। वो कोई ऐसी चीज नहीं, जिसे लिखकर रख दिया गया है बल्कि वो हर पल लिखा जाता है, हमारे हाथों से, और लिखा जाने वाला हरेक हर्फ, अगले हर्फ का जन्मदाता होता है।

मुझे इस दास्तान के कई हिस्से बेहद अफसोसनाक लगते हैं लेकिन जिन्दगी के इंसाफ का पलड़ा कभी स्थिर नहीं होता। वो हर वक्त हिलता ही रहता है। **जिसे हम न्याय समझते हैं, वो व्यवस्थित–अन्याय का दूसरा रूप भी हो सकता है और जिसे हम अन्याय समझते हैं, वो अव्यवस्थित–न्याय भी हो सकता है।** मैं जिसकी बात कर रहा हूँ, वो जन्मजात भेदिया था। वो, जिसे आईने बहुत पसन्द थे। किसी दर्पण को पाने के लिए, जो अपनी जान की बाजी तक लगा सकता था। साथ ही **गैलूमा** का वो खोखला सींग, जिसके भीतर 'वो' रहता था, जो किसी की भी चमड़ी में प्रवेश करके, उसकी रीढ़ पर चिपक जाता, जिसने *छुपाघाती* तक पहुँचने का रास्ता दिखाया। वो छुपाघाती जिसे *उलट-छन्नी* मन्त्रों ने अपने जाल में फँसा लिया।

छुपाघाती

अध्याय आठ

'सालन ने अगले सन्देश तक, महासभा को विसर्जित करने का फैसला सभी तक पहुँचा दिया है। सुबह तक सब लोग विदा ले लेंगे।' टिड्डों से लेकर पक्षियों तक, हर उड़ने वाले प्राणी को सम्मोहित करने की ताकत रखने वाले, टैक्सिन कबीले के ख़ानाबदोश, कास्टन ब्रूड ने तीनों की तरफ़ देखा।

इस वक्त वो गुफ़ा के भीतर अपने तम्बू में थे। सालन के आदेश पर गुपफा की विशाल छत पर पहरेदार नियुक्त कर दिए गए थे। आसपास की घाटियों और पहाड़ियों में गश्त करने के लिए कास्टन ब्रूड ने एक टाँग वाले, छह सौ हँगी तिलचट्टों को सम्मोहित किया था, जो किसी भी संदिग्ध प्राणी या हरकत को देखते ही गुपफा तक सन्देश भेजने का काम कर सकते थे।

चर्चाओं और अफ़वाहों का दौर चारों तरफ़ चल रहा था। रात आधी से ज़्यादा बीत चुकी थी लेकिन कहीं भी नींद नहीं थी। सब छोटे–छोटे समूहों में इकट्ठा होकर केवल एक ही विषय पर बात कर रहे थे...एल्गा–गोरस। कास्टन ब्रूड वाली छोटी गुपफा में इस समय जरूस, मकास, सलार और स्कीनिया ब्राज थे। सालन ने किसी ख़ास काम के लिए बौने ऑथरडस्ट को अपने पास बुलवाया था।

'ख़बर मिली है, अँधेरी घाटियों में कुछ हलचल देखी गई है। मगर वो कौन लोग थे और कहाँ ग़ायब हो गए, ये पता नहीं चल पाया।' कास्टन ब्रूड की आवाज़ में गम्भीरता के साथ–साथ चिन्ता का भी पुट था।

'अँधेरा, काली ताकतों के लिए वरदान होता है।' स्कीनिया ने कास्टन की तरफ़ देखा।

'क्या ये अँधेरे की ही एक परिभाषा है?' कास्टन ने सवालिया नज़रों से उसकी तरफ़ देखा।

'नहीं, **कोई भी परिभाषा, झूठ की संभावना की पोशाक से उतनी ही ढँकी होती है, जितना कोई भी व्यक्तिगत अनुभव, भ्रम के वस्त्रा उतारकर उघड़ा होता है।**' स्कीनिया ने अपनी हरी आँखों से गुपफा की छत की तरफ़ देखते हुए कहा। कास्टन ने ऐसे गर्दन हिलाई जैसे उसकी बात समझ गया हो।

'हमें योजना के अनुसार काम करना होगा। सबको बहुत सावधन रहने की ज़रूरत है। सालन का मानना है, यहाँ भेदिया मौजूद है लेकिन वो **अभेद्य–झिल्ली** के नीचे है। वो उसकी मौजूदगी को महसूस कर रहे हैं लेकिन पहचान साफ़ नहीं हो पा रही।' कास्टन ब्रूड ने स्कीनिया की तरफ़ जानकारी देने वाली नज़रों से देखा।

'रात काफी हो गई है, अब तुम सभी को आराम कर लेना चाहिए।' ऑथरडस्ट ने छोटी गुफ़ा के भीतर आते हुए कहा।

तभी एक 'झपाका' हुआ और माथेल्टन की विशाल गुपफा की दीवारों पर मर्तबान में भरे वायवॉर्न ने एकदम अपनी रोशनी समेट ली। पल भर में पूरी गुफ़ा में अँधेरे का साम्राज्य कायम हो गया। कुछ गिरने की ज़ोरदार आवाज़ आई और फिर भागदौड़ और अफ़रा–तफ़री की आवाज़ें हर तरफ़ फैल गईं। कोई तेज़ी से भीतर दाखिल हुआ लेकिन अँधेरे की वजह से कुछ नहीं दिख पा रहा था। घुप्प अँधेरे में चमकती स्कीनिया ब्राज की हरी आँखों के सिवा और कुछ नहीं दिख रहा था। किसी ने एक मोटा कम्बल स्कीनिया के ऊपर फेंका, जब तक वो कुछ समझ पाता, तब तक उसके नीचे दब गया था। फिर एक चीख गूँजी, दर्दनाक चीख। पल भर में ही सब घटित हो गया।

चन्द लम्हों के लिए तो सब सकते में आ गए लेकिन फिर कास्टन ब्रूड के होंठ, कुछ अस्पष्ट–सा बुदबुदाने लगे। अँधेरे में साफ़ तो नहीं दिख रहा था लेकिन इतना ज़रूर महसूस हो रहा था कि वो अपने हाथों से इशारे जैसे कुछ कर रहा है। फिर विशाल गुपफा की छत में बने विशाल छेदों से हज़ारों छोटे–छोटे जुगनू भीतर प्रवेश करने लगे। ऐसा लग रहा था जैसे जुगनुओं का पूरा सैलाब उमड़ पड़ा हो। पूरी गुपफा में रोशनी हो गई।

कास्टन की गुपफा के भीतर हल्की रोशनी ही छनकर आ पा रही थी। जरूस ने धुंधलके में देखा, स्कीनिया ब्राज एक मोटे कपड़े के नीचे ऐसे छटपटा रहा था जैसे बल खाता साँप हो। उसने तेजी से आगे बढ़कर उसे भारी कपड़े के नीचे से निकाला। हल्की रोशनी में उसने देखा, मकास गुपफा के एक कोने में बेसुध पड़ा हुआ था। कास्टन, बदहवास उसके पास पहुँचा और उसे हिलाकर देखा। उसके मुँह से कराह तक नहीं निकली। फिर बाहर से सालन के बोलने की आवाज सुनाई दी। एक तेज 'झपाका' हुआ और मर्तबान में भरे वायवॉर्न की रोशनी से गुपफा नहा गई।

रोशनी में सबने देखा, मकास ज़मीन पर एक करवट पड़ा था। उसकी पीठ में एक काला सींग धँसा हुआ था, जो मोटे लबादे को चीरता हुआ भीतर तक समा गया था। सालन ने तेजी से आगे बढ़कर उसके जिस्म को छुआ। लाल, गाढ़ा खून पीठ से बहकर ज़मीन तक जा रहा था। उन्होंने आहिस्ता से सींग को हाथ से पकड़ा, 'उफ्फ' सालन के होठों से सिसकारी–सी निकल गई, '*गैलूमा* का सींग...'

उन्होंने ताकत लगाकर उसे बाहर खींचा। खून का एक फौव्वारा और छींटे चारों तरफ फैल गए। सालन ने सींग की नोक की तरफ बारीकी से देखा। वहाँ एक छेद नजर आ रहा था, जो सींग में भीतर तक जा रहा था। उसने जमीन पर उसे ऐसा पटका जैसे उसे झाड़कर, उसके भीतर से कुछ बाहर निकालना चाहता हो, लेकिन कुछ नहीं हुआ।

सालन के होंठ बुदबुदाए, 'अब तक तो वो रीढ़ के भीतर जा चुका होगा।' वो आदेशात्मक आवाज़ में चीखे, 'ऑथर, जल्दी इसका लबादा हटाने में मेरी मदद करो।'

ऑथरडस्ट ने तेजी से मकास का लबादा उसके ऊपरी बदन से अलग कर दिया। उसकी सोने जैसी सुनहरी पीठ नुमायां हो गई। पीठ में बने गोल जख्म से अब भी खून बाहर आ रहा था। सालन ने मकास की रीढ़ पर अपनी उँगलियाँ फिराईं। पूरी रीढ़ की हड्डी के ऊपर एक मोटी लकीर–सी उभरी हुई थी जैसे खाल के नीचे कोई रस्सी दबी हो। सालन ने उसे हल्के से दबाया तो ऐसा लगा जैसे त्वचा के नीचे कुछ कुलबुलाया हो।

कास्टन ने मकास के चेहरे के ऊपर झुकते हुए सालन से कहा, 'वो भीतर तक घुस चुका है।'

तब तक सभी लोग अपनी–अपनी छोटी गुफाओं से बाहर आ गए थे। ऑथरडस्ट ने कास्टन ब्रूड की मदद से मकास के अचेत जिस्म को छोटी गुपफा से बाहर निकाला और एक चौड़े पत्थर पर उसे आहिस्ता से लिटा दिया।

हर तरफ से 'क्या हुआ–क्या हुआ।' की आवाज़ें आ रही थीं।

सब लोग गोल घेरा बनाकर उस पत्थर के चारों तरफ खड़े हो गए, जिस पर मकास की बेसुध देह रखी थी। सलार और जरूस ने बदहवासी में उसके पूरे जिस्म को थपथपाया, चेहरे से लेकर पैरों तक लेकिन कोई हरकत नहीं हुई।

वुन्टनब्रॉस ने पूरे समूह को सम्बोधित करते हुए ज़ोर की आवाज में कहा, 'साथियो, महासभा के सदस्यों में कोई छुपाघ ााती है, जिसने वार किया है। भेदिये ने गैलूमा के सींग का इस्तेमाल किया है। जैसा कि आप में से ज़्यादातर जानते हैं, गैलूमा...दुर्लभ दिव्य–जीव है, जिसके सींग के भीतर विशाल और ज़हरीला कनखजूरा होता है। पाँच पैर वाले इस जीव को पिछले सौ सालों से कहीं नहीं देखा गया। उसके सींग से बने हथियार से ज़ख्मी होने वाले प्राणी के जिस्म में फौरन वो ज़हरीला कनखजूरा घुस जाता है और जाकर रीढ़ पर चिपक जाता है। उसका मुँह इस वक्त इसके दिमाग़ में है, बाहर खींचने या इसे हटाने की कोई भी कोशिश जानलेवा हो सकती है। आप सभी से गुजारिश है, थोड़ा–थोड़ा पीछे हट जाएँ और शान्ति बनाए रखें।' वुन्टनब्रॉस ने मकास के जिस्म को दोबारा उसके लबादे से ढँक दिया।

भीड़ में से किसी ने सुझाव दिया कि उसे चीरा लगाकर लड़के के जिस्म से बाहर निकाल देना चाहिए लेकिन वुन्टनब्रॉस ने ये कहकर इस सुझाव को खारिज कर दिया, 'अगर इसे जरा भी हिलाया गया तो ये दिमाग़ में अपने जहर की उल्टी कर देगा और फिर इस नौजवान को बचाया जाना मुश्किल होगा।'

दूसरा सुझाव ये आया कि ठीक उस जगह काटा जाए, जहाँ कनखजूरे की गर्दन है लेकिन ख़ाल के बाहर से एकदम सही जगह का पता लगाया जाना मुश्किल था और ऐसे में हो सकता था, वो रीढ़ से रेंगकर, भीतर दिमाग़ में सरक जाए। स्कीनिया ब्राज ने उसे अपने बालों से छूकर खड़िया में बदल देने की बात कही लेकिन उसके बाद भी उसे चीरा लगाकर ही जिस्म से बाहर निकाला जा सकता था।

सालन ने धैर्य से सबकी बातें सुनीं। फिर शान्त आवाज़ में कास्टन ब्रूड से कहा, 'तुम कोशिश करो कास्टन...तुम हर उड़ने और रेंगने वाले प्राणी को अपने मन्त्रों से काबू कर सकते हो, इसे सम्मोहित करके इसके जिस्म से बाहर निकालना सबसे सहज रास्ता होगा।'

कास्टन ब्रूड ने काँच का एक ख़ाली मर्तबान मँगाया। उसने मकास का मोटा लबादा उसकी पीठ से हटा दिया, ख़ाल

की परत के नीचे, रीढ से चिपका विशाल कनखजूरा साफ नजर आ रहा था। उसके सैंकडों पैर पकड बनाने के लिए बार–बार कुलमुला रहे थे। कास्टन की उँगलियाँ मकास की पीठ पर उस जगह घूमने लगीं, जहाँ वो उभरा हुआ था। बिना पीठ को स्पर्श किए उसके होंठ किसी प्राचीन मन्त्रा का जाप करने लगे। फिर सभी ने देखा, खाल के नीचे कुछ हरकत होनी शुरू हुई। कनखजूरा अपने जिस्म को पीछे सिकोडता जा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वो अपने अगले हिस्से को पीछे खींच रहा हो।

मकास की पीठ में बने गोल ज़ख्म से अब तेजी से रक्त बहने लगा। फिर साफ दिखा कि कनखजूरे ने अपना मुँह, रीढ की हड्डी से हटाकर अलग किया है। खाल के नीचे, वो उस ज़ख्म की तरफ रेंगता दिखा, जिससे होकर वो भीतर गया था। एक–एक करते उसके पैर, अंदर चलते हुए दिख रहे थे। फिर आहिस्ता से उसने अपना खून में सना हुआ लाल मुँह, घाव से बाहर निकाला। कास्टन ब्रूड के होंठ अब भी लगातार कुछ बुदबुदा रहे थे। लाल रक्त में सने उसके पैर मकास की पीठ से बाहर आ रहे थे। वो लगभग हाथ भर लम्बा था, तीन उँगलियों की चौडाई बराबर चौडा।

अब वो आधे से ज्यादा बाहर निकल आया था। कास्टन ने धीरे से अपनी हथेली आगे बढ़ाकर, उसे उसके ऊपर ले लिया। आहिस्ता–आहिस्ता वो पूरा बाहर आ गया, खून में सना उसका सैंकडों पैरों वाला जिस्म बहुत वीभत्स लग रहा था। कास्टन ने उसे धीरे से मर्तबान के भीतर छोड़ दिया और कपडे से उसका मुँह बन्द कर दिया। कनखजूरा, नशे जैसी हालत में मर्तबान की चिकनी तली पर घूम रहा था। सबने जैसे राहत की साँस ली।

सालन ने हूनास्पॉटी के हाथ में गैलूमा का सींग देकर कहा, 'इसे गर्म करके इस ज़ख्म पर दाग दो, वरना ये ज़ख्म किसी औषधि से नहीं भरेगा।'

हूनास्पॉटी ने सींग अपने हाथ में पकडा और पल भर में ही वो दहकने लगा। अपनी हथेलियों से आग को काबू करने की उसकी ताकत ने, सींग को इतना गर्म कर दिया कि जब उसने उसे मकास की पीठ पर बने ज़ख्म पर रखा तो वहाँ से धुँआ निकलने लगा।

सालन के पतले होंठ सभा के सदस्यों की तरफ़ हिले, 'साथियों..हमारे बीच ही कोई **छुपाघाती** है। उसने इस नौजवान की जान लेने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। हमारी मानसिक शक्तियाँ, उसकी मौजूदगी को यहाँ महसूस कर रही हैं लेकिन वो अभेद्य–झिल्ली में हमारे बीच है। हम उसे बहुत जल्द पहचान लेंगे और बेनकाब कर देंगे लेकिन सुबह होने तक सबको सावधन रहने की ज़रूरत है। ये पक्का हो गया है कि ख़तरा चारों तरफ़ मँडरा रहा है। गैलूमा के सींग का इस्तेमाल किया गया है, आप सब भली भाँति जानते हैं, गैलूमा को दुनिया में कोई इंसान तब तक काबू नहीं कर सकता, जब तक उसके पास एल्गा–गोरस की ताकतें न हों। अब ये भ्रम भी साफ़ हो जाना चाहिए कि ये लडके और ऑथरडस्ट ने 'कुछ और' देखा होगा या फिर झूठ बोल रहे होंगे।'

मकास को ले जाकर एक छोटी गुफ़ा में लिटा दिया गया, उसे अभी तक होश नहीं आया था। सारी रात गुपफा की छत और घाटियों में चौकसी और गश्त होती रही। वो रात जरूस और सलार के साथ बाक़ी सबने भी आँखों ही आँखों में काटी। सुबह की पहली किरण के साथ सभी लोग विदा लेने लगे। सालन ने अगले सन्देश तक सभी को अपने स्थानों पर ही ठहरने के लिए कहा। केवल कुछ लोग वहाँ रुके।

विदाई के वक़्त क्लेवरसीथ का कहीं कुछ पता नहीं था। हर कोई उसे ढूँढने में लग गया। चप्पा–चप्पा छान मारा गया लेकिन वो कहीं नहीं था। किसी भी सदस्य को पता नहीं था कि वो कब और कहाँ गया। पहरेदारों ने बताया कि गुपफा के मुहाने से या छत में बने छेदों से कोई बाहर नहीं निकला। घाटी में पैफले, एक टाँग वाले हैंगी तिलचट्टों की तरफ़ से भी ऐसा कोई सन्देश नहीं मिला, जिससे ये लगता कि वो पहाड़ियों में कहीं गया है।

एक सदस्य को उसकी गुपफा की दीवारों पर ख़ून के छींटे नज़र आए। फ़ौरन सालन को बुलवाया गया। बहुत नज़दीक से देखने पर ख़ून के बारीक़–बारीक़ छींटे हर तरफ़ छिटके नज़र आए।

'क्लेवरसीथ जैसे ताक़तवर स्ट्रासोल को इतनी आसानी से नहीं मारा जा सकता कि आसपास किसी को पता न चले।' स्कीनिया ने सालन की तरफ़ देखकर कहा।

हर जगह छान मारा गया लेकिन उसके अलावा और कोई सुराग़ कहीं नहीं मिला। सब हैरत में थे, सारी रात जागने और इतने पहरे के बाद गुपफा से कोई कैसे ग़ायब हो सकता था। हर तरफ़ केवल सवाल थे, जवाब किसी के भी पास नहीं था।

सालन ने सबको छोटे–छोटे समूहों में विदा लेने का निर्देश दिया। सख़्त हिदायत दी गई कि किसी भी हालत में कोई अकेला अपने स्थान तक नहीं जाएगा। एक पहर बीतते–बीतते ज़्यादातर लोग चले गए। अब वहाँ केवल, ऑथरडस्ट,

स्कीनिया ब्राज, सालन, कारटन ब्रूड, हूनास्पॉटी, रैक्टिकस ड्रॉन, कैफुआन पस्तर, जिल्चोकाट, फैग्यूला फ़्लॉट, वुन्टनब्रॉस और संथाल के बेटे ही बाकी थे।

कुछ सोचते–सोचते स्कीनिया की हरी आँखें सिकुड़ गईं। वो उठा और सबको वैसे ही बैठा छोड़कर तेजी से रेंगा। कोई कुछ सवाल पूछ पाता इससे पहले ही वो वहाँ से निकल चुका था। सब खड़े हो गए और जानने की कोशिश की, आखिर वो किधर गया। वुन्टनब्रॉस ने उसकी छोटी गुफा की तरफ इशारा किया, जहाँ स्कीनिया की हिलती परछाई नजर आ रही थी। फिर वो बाहर निकला, उसके हाथ में वो मोटा कपड़ा था, जिसे मकास पर हमले के वक़्त किसी ने उसके ऊपर फेंका था। जब तक वो उसके नीचे से निकलकर कुछ देख पाता, तब तक छुपाघाती अपना काम करके निकल चुका था। वो बहुत तेजी से रेंगता हुआ सबके पास पहुँचा। आकर उसने वो मोटा कपड़ा सालन के सामने पत्थर पर रख दिया। सब प्रश्नवाचक नजरों से उसकी तरफ़ देख रहे थे।

'ये वो कपड़ा है, जो मेरे ऊपर तब फेंका गया, जब छुपाघाती ने हमला किया।' स्कीनिया ब्राज ने अपने बालों भरे हाथ से उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा।

सालन ने अपनी दोनों हथेलियाँ कपड़े के ऊपर रखीं और अपनी आँखें बन्द कर लीं। हरे रंग का एक हल्का–सा प्रकाश, कपड़े के ऊपर नजर आने लगा। सालन ने कपड़ा उठाकर नाक से लगाया, 'इस कपड़े से *क्लेवरसीथ* की गंध आ रही है।'

तभी मकास की कराह ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींचा। उसके पपड़ाए होंठों से एक आह निकली और उसने आहिस्ता से अपनी पलकें खोल दीं। सबकी आँखें कपड़े से हटकर, मकास की तरफ़ उठ गईं।

'तुम ठीक हो ना?' सलार ने उसका चेहरा अपनी दोनों हथेलियों में भरते हुए पूछा। उसने सलार की बात का कोई जवाब नहीं दिया और अपनी कुहनियों का सहारा लेकर बैठने की कोशिश की।

'आराम से लेटे रहो, तुम्हें अभी ज़्यादा नहीं हिलना चाहिए।' जरूस ने चिन्तित स्वर में कहा।

उसने पूरी तरह आँखें खोलकर गुफा की दीवारों की तरफ़ देखा और फिर जैसे उसे सब याद आता चला गया। एकदम अँधेरा छा जाना, कुछ गिरने की आवाज़ें और फिर किसी का प्रवेश। उसे याद आया, पीठ में तेज़ दर्द का वो जानलेवा अहसास। किसी ने बेहद ठण्डी और सख़्त उँगलियों से, उसकी बाँह कसकर पकड़ी थी और फिर ऐसा लगा जैसे किसी ने उसकी पीठ में ख़ंजर भोंक दिया हो।

फिर उसकी नज़र काँच के मर्तबान में रेंगते विशाल कनखजूरे पर पड़ी। ख़ून में सना हुआ उसका जिस्म बहुत भयानक लग रहा था।

'ये तुम्हारी पीठ से निकला है...पसन्द आया?' कास्टन ब्रूड की आवाज़ ने माहौल को थोड़ा हल्का बनाया।

'कोई है, जिसे इस कनखजूरे का स्वाद बहुत पसन्द आएगा।' हूनास्पॉटी ने वो मर्तबान उठाया और ग़ायब–गिद्ध के पिंजरे का कपड़ा हटाकर, मर्तबान उसके ऊपर उलट दिया। कनखजूरा सरसराता हुआ पिंजरे के भीतर गिरा और इससे पहले वो रेंग पाता, चिंचियाने और पंख फड़फड़ाने की एक आवाज़ आई और ऐसा लगा जैसे गिद्ध ने उसे अपनी चोंच में पकड़कर ऊपर उठा लिया हो। अब कनखजूरा पिंजरे के भीतर हवा में लहरा रहा था। एक हल्का–सा उछाल और 'गटक' के साथ वो ग़ायब हो गया।

किसी को हूनास्पॉटी की ये हरकत पसन्द नहीं आई लेकिन कोई कुछ नहीं बोला।

'हमें कुछ ख़ास बिन्दुओं पर अपना ध्यान लगाना होगा, सम्मानित सभापति महोदय।' फैग्यूला फ़्लॉट की आवाज़ ने सबकी तन्द्रा भंग कर दी।

'और वो क्या हैं?' सालन ने सवालिया नज़रों से उसकी तरफ़ देखा।

फैग्यूला के होंठ आहिस्ता से हिले, 'सबसे पहला ये, वायवॉर्न केवल एक स्थिति में अपनी रोशनी को सामूहिक रूप से बन्द करते हैं और वो है किसी नैण्टाकॉर्नस की गंध। लेकिन हैरत की बात ये है कि यहाँ दूर–दूर तक भी, कहीं कोई नैण्टाकॉर्नस नहीं है। फिर ऐसा क्या हुआ, जिसकी वजह से सारे वायवॉर्न ने एक साथ अपनी रोशनी समेटकर पूरी गुफ़ा को अँधेरे से भर दिया। दूसरा, आख़िर वो कौन था, जिसने इस नौजवान के ऊपर गैलूमा के सींग से हमला किया। तीसरा, क्लेवरसीथ कहाँ और कैसे ग़ायब हो गया? चौथा, गुफ़ा में लगे ख़ून के छींटे और ये कपड़ा किसका है और सबसे आख़िरी और ख़ास बात...*छुपाघाती* और *भेदिया* एक ही है या फिर ये दो अलग प्राणी हैं?'

'किसी भी सवाल पर चर्चा करने से पहले, मैं इन नौजवानों से कुछ पूछना चाहूँगा।' वुन्टनब्रॉस ने सालन की तरफ

देखकर कहा। सालन ने सहमति में सिर हिलाया।

वुन्टनब्रॉस जरूस की तरफ मुड़ा, 'हाँ तो मैं पूछना चाहता था कि क्या तुम्हें अब भी ये लगता है कि तुम लोग एक बेकार के पचड़े में फँस गए हो, जिससे तुम्हारा दूर–दूर तक कहीं कोई लेना–देना नहीं है। जबकि तुम खुद ये देख चुके हो कि जिस दिन से तुम्हारा सफर शुरू हुआ, उसी दिन से लगातार तुम्हारी निगरानी कराई जा रही थी। पहले जल–गरुड़ फिर मत्स्य–नाग, फिर गायब–गिद्ध क्या ये महज़ संयोग है कि तुम्हारा पीछा कराया जाता है, तुम्हारी रेत–घड़ी चुराकर तोड़ दी गई है, तुम्हारे भाई की पीठ में कोई अँधेरे में गैलूमा का सींग घोंपकर उसकी जान लेने की कोशिश करता है?' वुन्टनब्रॉस ने गम्भीर और ठहरे हुए स्वर में अपनी बात पूरी की।

जरूस कोई जवाब देता, उससे पहले ही उसने फिर बोलना शुरू कर दिया, 'अगर तुम्हें अब भी ऐसा लगता है तो शौक से तुम अपना सफर अभी और इसी वक्त फिर से शुरू कर सकते हो, लेकिन यकीनन फिर तुम्हारी झोलियाँ लावारिस हालत में कहीं पड़ी मिलेंगी, तुम्हारी लाशों के पास। जो कुछ हो रहा है, वो इतना ख़तरनाक है, जिसका तुम अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते।' वो साँस लेने के लिए रुका और फिर चुप हो गया।

तभी 'ध्प्प' की एक आवाज़ आई, रैक्टिकस ड्रॅान और जिल्चोकाट के मुँह से एक साथ निकला, 'फँस गया...'

सालन के पतले होठों पर एक बारीक मुस्कराहट रेंगकर गायब हो गई। सब बाहर की तरफ दौड़े। गुफा की छत से एक जोड़ी पैर नीचे लटक रहे थे। उसका आधा जिस्म छत के भीतर था और आधा हवा में लटक रहा था। छत में जिस जगह वो फँसा हुआ था वहाँ का पत्थर ऐसे हिलोर ले रहा था जैसे पत्थर नहीं, गाढ़ा घोल हो। रेत की बनी दो रस्सियाँ हवा में लहराईं और लटकते हुए पैरों पर कस गईं। फैग्यूला फ़्लॉट ने एक ज़ोरदार झटका दिया और वो एकदम ध्ड़ाम से ज़मीन पर आ गिरा। सबने उसके चारों तरफ घेरा बना लिया। मकास भी आहिस्ता–आहिस्ता चलकर वहाँ आ गया।

वो एक **बिल्चू** था, जन्मजात–भेदिया। किसी भी सतह के रंग के हिसाब से रंग बदलने में माहिर। गिरगिट भी उनकी तेज़ी से रंग नहीं बदल सकता। रेंगने, दौड़ने, उड़ने और तैरने में उस्ताद। उसका क़द मुश्किल से ऑथरडस्ट के बराबर था, रंग हल्का जामुनी, झिल्लीदार पंजे और पीठ पर दो मज़बूत पंख। वो रेत की रस्सियों की पकड़ से छूटने के लिए लगातार चीख रहा था। वो अपने पाँवों पर खड़ा ही हुआ था कि फ़्लॉट ने रेत की रस्सी खींच दी। 'ध्ड़ाम' की आवाज़ के साथ वो ज़मीन पर गिर गया। खरखराती हुई उसकी आवाज़ का शोर बहुत कर्कश था। वो बार–बार रस्सी से छूटने की कोशिश करता लेकिन हर बार नीचे गिर जाता। थक–हारकर वो वहीं बैठ गया, बिना चीखे–चिल्लाए।

'गुफा की छत को दलदल में बदल देने की तरकीब दमदार थी दोस्तो।' कैफ़ुआन पस्तर ने बारी–बारी से सबकी तरफ देखा। 'अब तुम, वो हर जानकारी हमें दोगे, जो हमें चाहिए...पंखदार कीड़े।' कैफ़ुआन ने गर्दन पकड़कर उसे ऊपर उठा लिया।

उसके पाँव ज़मीन से ऊपर उठ गए, गला भिंचने की वजह से उसकी बड़ी–बड़ी आँखें बाहर उबल आईं।

'आहिस्ता से पस्तर...अभी इससे बहुत कुछ पूछना बाक़ी है।' कास्टन ब्रूड ने उसकी कलाई पर अपना हाथ रखते हुए कहा।

उसने उसे ध्ड़ाम से छोड़ दिया। वो बिना आह किए नीचे गिरा और उसकी आँखें उलट गईं। दो–चार लम्बी–लम्बी साँसें लेने के बाद, उसका जिस्म एकदम शान्त पड़ गया। जिल्चोकाट ने उसकी नब्ज़ पकड़कर देखा, नब्ज़ बन्द थी। उसने उसके सीने पर हाथ रखकर ध्ड़कन महसूस करने की कोशिश की लेकिन कुछ महसूस नहीं हुआ।

'ये मर चुका है।' जिल्चोकाट ने सालन की तरफ़ हैरत भरी नज़रों से देखा।

'अफ़सोस...इतनी मेहनत से पकड़ा था। मर गया बेचारा।' वुन्टनब्रॉस ने मुस्कराते हुए कहा।

'तुम्हें उसे इतनी ताक़त के साथ नहीं पकड़ना चाहिए था फैग्यूला...' वुन्टनब्रॉस अब भी मुस्कराए जा रहा था। 'चलो ऐसा करते हैं, इसकी लाश को उठाकर कहीं बाहर फेंकफ देते हैं, जंगली जीव इससे अपना पेट तो भर लेंगे।' ऐसा कहकर वो बिल्चू के जिस्म के पास आया और उसे अपने हाथों में उठा लिया। उसकी मुस्कराहट और गहरी होती जा रही थी।

'लेकिन ऐसा करने से पहले, एक जरूरी काम क्यों न कर लिया जाए...जिससे ये मरा हुआ कीड़ा दोबारा ज़िन्दा हो जाए।' इतना कहकर उसने अपनी उँगलियों से बिल्चू की दोनों बग़लों में ज़ोरदार गुलगुली करनी शुरू कर दी। एक झटके के साथ, लोटपोट होकर हँसने लगा। वुन्टनब्रॉस अब भी उसे गुलगुली किए जा रहा था और बिल्चू हँस–हँसकर पागल हुआ जा रहा था। हँसते–हँसते उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे, ऐसा लग रहा था जैसे उसका दम निकल जाएगा। सब मुस्कराते हुए इस दृश्य को देख रहे थे।

'ये जन्मजात–भेदिया है। मरने का बहाना करने में माहिर...मकर बनाने का उस्ताद। ऐसा करके ये कई बार अपने दुश्मनों को चकमा दे देते हैं लेकिन इस कमबख्त को ये नहीं पता, इस बार इसका पाला किससे पड़ा है।' वुन्टनब्रॉस ने उसे पकड़कर एक पत्थर पर बैठा दिया।

'अब तुम सीधी तरह बताओ, तुम्हें किसने और क्यों भेजा है? अगर तुमने सच बताया तो शायद हम तुम्हे छोड़ भी दें लेकिन अगर तुमने झूठ बोला या फिर झूठ की कोशिश भी की, तो यकीन मानना, तुम्हें शायद अगली साँस लेने का भी मौका न मिले।' हूनास्पॉटी ने बिल्चू की बड़ी–बड़ी गोल आँखों में झाँकते हुए कहा।

वो अब मासूमियत से अपनी पलकें झपका रहा था। पल भर के लिए वो चुप रहा, फिर उसने अपनी खरखराती हुई आवाज में कहा, 'मैं...मैं तो बस खाना ढूँढ रहा था। मुझे भूख लगी थी...गुफा की छत पर खाने की तलाश में चढ़ा लेकिन पता नहीं कैसे मेरे पाँव दलदल में फँस गए और मैं नीचे लटक गया।' जिल्चोकाट ने गुस्से से उसे घूरा।

'मुझे जाने दो...मुझे जाने दो। मैं कुछ नहीं जानता, तुम लोग कौन हो? तुमने मुझे क्यों पकड़ रखा है, मुझे जाने दो।' बिल्चू अब भी गिड़गिड़ाए जा रहा था।

पेड़ की एक पतली–सी जड़ सरसराई और उसने बिल्चू की गर्दन पर फन्दा कस दिया। जिल्चोकाट की उँगलियों से निकलने वाली जड़, आहिस्ता–आहिस्ता मोटी और सख्त होती जा रही थी। उसकी आवाज में गुस्से के साथ–साथ धमकी का भी भाव था। उसने दाँत पीसते हुए कहा, 'अगर...तुमने...तुरन्त... ये... नहीं... बताया...कि ...तुम्हें...किसने...भेजा...है... और... किसलिए ...तो... तुम्हारी...जिन्दगी... पल...भर... में... तुमसे...रूठ...जाएगी... छछून्दर...' बिल्चू की बड़ी–बड़ी आँखें बाहर उबलने लगीं।

वो घों–घों करके बोला, 'बताता...हूँ...बताता हूँ...मेरा गला छोड़ो...मेरा गला छोड़ो।' जिल्चोकाट ने पकड़ थोड़ी ढीली की तो वो 'धम्म' से पत्थर पर बैठ गया।

'वो मुझे मार डालेगा...वो मुझे मार डालेगा...मैं...कुछ नहीं बता सकता।' उसकी आवाज़ की घबराहट और जिस्म की कँपकँपी साफ दिखाई दे रही थी।

'ये तुम्हें इस गुफा में घुसने से पहले सोचना चाहिए था, गन्दे गिरगिट! जल्दी बताओ किसने भेजा है तुम्हें?' कास्टन बूड ने दाँत पीसे।

'नहीं...नहीं...वो बहुत ख़तरनाक है...वो मौत का दूसरा नाम है...वो मुझे भी ऐसे ही मार डालेगा जैसे उसने दूसरों को मारा है। वो मार डालेगा...' दहशत और डर की वजह से वो गुड़ीमुड़ी होकर सिमटता जा रहा था।

गुज़रने वाला हर लम्हा भारी होता जा रहा था।

फिर उसने कुछ कहने के लिए मुँह खोला, 'वो...वो...बहुत भयानक है...बहुत ख़तरनाक...वो मुझे **इल्वीन** के पठारों में मिला। उसने मुझे ढेर सारे आईने दिए। तुम जानते हो एक बिल्चू को आईने कितने पसन्द होते हैं। उसने मुझसे कहा, अगर मैं इस गुफा में होने वाली हरकतों और बातों को उस तक पहुँचाउँफगा तो वो मुझे और आईने देगा और अगर मैंने ऐसा नहीं किया तो वो मुझे मार डालेगा, उसी तरह जैसे उसने मेरे साथी को मार डाला, जो घाटी में मेरे साथ घूम रहा था।'

बिल्चू की आँखों से दहशत ऐसे टपक रही थी जैसे मधुमक्खी के छत्ते से शहद।

'हमें उसका नाम बताओ और ये भी कि वो कैसा दिखता था?' हूनास्पॉटी ने उसकी तरफ़ देखते हुए कहा।

'मैं...मैं उसका नाम नहीं जानता...मगर वो बार–बार अपना नाम ले रहा था। वो बहुत घमण्डी और ब्रूफर लग रहा था। उसका नाम...उसका नाम...हाँ याद आया...सका नाम था...ज...ज...' बिल्चू की बात पूरी होने से पहले ही 'कच्च' की एक हल्की सी आवाज़ हुई और उसकी जीभ दो हिस्सों में फट गई। कोई कुछ समझ नहीं पाया कि ये क्या हुआ।

बिल्चू की जीभ से एक काले रंग का अजीब कीड़ा निकला, जिसका आकार छोटे मेंढक के बराबर था। उसके जिस्म के चारों तरफ़ छोटे–छोटे रेशे लटक रहे थे। उसने एक बार ज़ोर से अपने जिस्म को ऐसे हिलाया, जैसे कोई जानवर पानी में भीगने के बाद, अपने बाल को सुखाने के लिए हिलाता है। पल भर में उसके जिस्म से लटकते छोटे रेशों से बारीक–बारीक रोंया तेजी से निकलकर, बिल्चू के मुँह के भीतरी हिस्सों से चिपक गया। कोई कुछ समझ पाता, तब तक उसका चेहरा नीला पड़ना शुरू हो गया। पलक झपकते ही वो धड़ाम से ज़मीन पर गिरा। उसके प्राण–पखेरू उड़ गए। हूनास्पॉटी ने झपटकर उस कीड़े के ऊपर कपड़ा डाल दिया और उसे काँच के उसी खाली मर्तबान में डाल दिया, जिसमें गायब–गिद्ध था।

'ये तो **चगूचाथा** है, दिव्य–कीड़ा है। इसके जिस्म के हर रोएँ में खतरनाक जहर होता है, जिन्हें ये अपने जिस्म को झटककर बाहर निकालता है। इसका शिकार पल भर में मौत की नींद सो जाता है।' वुन्टनग्रॉस ने मर्तबान की तरफ देखते हुए कहा।

कैफुआन परत्तर ने बिल्चू की नब्ज पकड़ी लेकिन वो बन्द थी।

'ये अब वाकई मर चुका है।' सालन की तरफ देखकर उसने कहा। उसके कपड़ों की तलाशी में, उन्हें रेत–घड़ी का एक टूटा हुआ टुकड़ा मिला।

'रेतघड़ी चुराने का काम भी इसी ने किया था।' सालन ने मकास की तरफ देखा।

जिल्चोकाट ने उसकी देह पर हाथ फिराया। बिल्चू के पूरे जिस्म पर एक पारदर्शी झिल्ली चढ़ी हुई थी। गौर से देखे बिना ये अहसास ही नहीं हो सकता था कि वो त्वचा है या फिर उसने ऊपर से कुछ पहना है।

'ये अभेद्य–झिल्ली के नीचे था। इसी वजह से हम इसे खोज नहीं पा रहे थे।' कास्टन ने सालन से कहा।

फिर सबको नीचे तहखाने की तरफ से कुछ आहटें सुनाई दीं। पहले तो सबने ये जानने के लिए कान लगाए कि ये आवाजें आखिर आ कहाँ से रही हैं लेकिन जैसे ही ये अहसास हुआ कि आवाजों का केन्द्र, नीचे वाला तहखाना है, सब उसी तरफ भागे।

सँकरी सुरंगो और गुफ़ाओं से होते हुए, वो नीचे तहखाने में पहुँचे। वहाँ एक अजीब नज़ारा उनका इंतज़ार कर रहा था। क्लेवरसीथ के पैर, ऊपर छत से चिपके हुए थे और उसका धड़ नीचे लटकर रहा था। वो लगातार छूटने की कोशिश कर रहा था। सींक–सलाई जैसी उसकी टाँगे बुरी तरह छत से चिपक गई थीं।

तहख़ाने के दरवाजे पर खड़े होकर सालन ने अपने हाथों से इशारा किया और पूरी छत, तहखाने की दीवार के ऊपर तैरती हुई, फर्श पर आ गई। दरअसल, सालन ने वहाँ *उलट-छत्ती* मन्त्रों का प्रयोग किया था। जिसकी वजह से फ़र्श पर उसके पैर रखते ही, पूरा फर्श, दीवार पर सरकता हुआ, छत से जाकर चिपक गया था। क्लेवरसीथ अब भी चिपका हुआ था और छूटने की कोशिश कर रहा था लेकिन अब वो फर्श पर सीध खड़ा था। सब आकर पहले तो कुछ पल खड़े रहे, फिर अपने–अपने आसन पर आकर बैठ गए।

'मुझे विश्वास था, वो जो भी होगा, यहाँ ज़रूर आएगा।' सालन की आँखों में इस वक्त चमक थी। 'हाँ तो श्रीमान क... ले...व...र...सी...थ...! अब जब छुपाघाती पकड़ा ही गया है, तो आपका इस बारे में क्या कहना है?'

वो कुछ नहीं बोला, बस चुपचाप खड़ा रहा। सभा के सारे सदस्य इतने गुस्से से उसे घूर रहे थे, जैसे किसी भी पल उस पर जानलेवा हमला करने की फ़िराक में हों। क्लेवरसीथ ने बोलने की जगह, चुप रहना चुना। हर किसी ने कोशिश की लेकिन उसने एक भी शब्द नहीं बोला। हूनास्पॉटी यातना देकर सच उगलवाने की हिमायत में था लेकिन सालन को ये मंज़ूर नहीं हुआ। उसने सबको रोक दिया...और क्लेवरसीथ के दिमाग़ के आरपार अपनी पैनी निगाह से देखा। सालन उसके दिमाग़ में कुछ पढ़ना चाहते थे लेकिन अचानक क्लेवरसीथ अपनी चेतना खो बैठा।

बेहोश क्लेवरसीथ के दिमाग़ में सालन ने जो पढ़ा, वो सभा को बताया। बिल्चू *भेदिया* था और क्लेवरसीथ *छुपाघाती...* दोनों का पता इसलिए नहीं चल पा रहा था क्योंकि दोनों ही अभेद्य–झिल्ली के भीतर थे। रेत–घड़ी की चोरी इसलिए की गई ताकि संथाल के बेटे घबराकर यहाँ से निकल जाएँ लेकिन जब उसके बाद भी वो नहीं निकले तो फिर जानलेवा हमला कराया गया। जब हमला हुआ, बिल्चू को नैण्टाकॉर्नस की पूँछ का एक डंक दिया गया था, जिसकी गंध से घबराकर वायवॉर्न ने अपनी रोशनी समेट ली। हमला जब हुआ, तब वो गिरगिट की तरह अपना रंग बदलकर गुफ़ा की छत से चिपका हुआ था। किसी को वो नहीं दिखा। क्लेवरसीथ को मालूम था, स्कीनिया ब्राज अँधेरे में भी साफ़ देख सकता है इसलिए उसने उसके ऊपर मोटा कपड़ा डाल दिया ताकि हमलावर का पता न चल सके।

सालन ने अपने माथे पर उभर आई सलवट को खोलते हुए कहा, 'महासभा के सदस्य भी अगर उससे मिले हुए हैं तो फिर हालात वाक़ई चिन्ताजनक हैं। हमें इसके होश में आने का इंतज़ार करना होगा। तभी पता चल पाएगा कि आख़िर उसकी योजना क्या है और वो कहाँ है?' लेकिन क्लेवरसीथ को उसके बाद होश नहीं आया।

एक पहर तक तो सभी को यही लगा कि वो गहरे सदमें में है लेकिन जब उसने आँख नहीं खोलीं तो सालन को चिन्ता हुई। वो बस बेहोश पड़ा था, साँस चल रही थी मगर उसके अलावा और कोई हरकत नहीं हो रही थी। सभा के सारे सदस्यों ने पूरी कोशिश की, लेकिन कोई भी विधि या ताकत काम नहीं कर सकी। वो बेहोश ही बना रहा। सालन ने गुफा के चारों तरफ सुरक्षा–घेरा और ताकतवर कर दिया।

आज एक सर्द सुबह है। हवा बहुत ठण्डी और मौसम घने कुहरे से भरा हुआ है। मैं कैल्टिकस की इन गुफाओं से हफ़्तों बाद बाहर निकला हूँ...ताजा हवा ने मेरे नथुनों में जैसे जिन्दगी भर दी है। चारों तरफ बर्फफ की मोटी परत जमी है। मुझे वो दिन याद आते हैं, जब मैं इन पहाड़ियों में अकेला नहीं रहता था, बल्कि अपने दादा, पिता और भाइयों के साथ, पेड़ पर बनी एक झोंपड़ी में रहता था। तब मुझे नहीं पता था, पत्थर तराशने का हुनर सिखाते वक्त मेरे पिता मुझे हमेशा ये क्यों कहा करते–'तुम्हे खास जिम्मेदारी के लिए तैयार रहना है। अपनी उँगलियों को इन पत्थरों से कम सख्त मत रहने देना वरना तुम वो काम नहीं कर पाओगे, जिसके लिए तुम्हें चुना जाना बाकी है।'

संथाल के बेटों ने एक दिन माथेल्टन की गुफा में प्रवास किया और मैं बरसों से कैल्टिकस की इन गुफाओं में प्रवासी हूँ। मुझमें और उनमें एक समानता है, वो भी एक सफर पर थे और मैं भी एक सफर पर हूँ। फर्क बस इतना है, उनका सफर चलते–चलते पूरा हुआ और मेरा सफर यहाँ ठहरकर। इसके बाद जो हैरतअंगेज वाकियात हुए और जो भयानक घ टनाएँ घटीं, वो केवल संथाल के बेटों के लिए ही नहीं, सारी दुनिया को बदल सकती थीं।

घटनाएँ, जो *हल्वरनेसिया* के उस जांबाज योद्धा के इर्द–गिर्द घटीं, जिसने जीभ की नोक से लिखी जाने वाली प्राचीन क्यूटिन लिपि में रची गई, वो सारी किताबें पढ़ीं, जो लोहे के वजनी सन्दूकों में सदियों से बन्द थीं। वो योद्धा, जिसे लोग देवता बनाकर पूजना चाहते थे, लेकिन उसने इन्सान बने रहना ज्यादा पसन्द किया। उसको मैं कैसे भूल सकता हूँ, जिसकी साँस में, किसी को भी बर्फ की शिला में तब्दील कर देने की ताकत थी। साथ ही *बैल्जोनिया* का वो जंगबाज़, जिसने प्राचीन अग्नि–शास्त्रा को कंठस्थ किया और उन शैतानों की कलाइयाँ अपनी मुट्ठी में जकड़ लीं, जो जिन्दा इंसानों के फेफड़े, लोहे की काँटी से बींधकर खींच लेते थे।

वुन्टनव्रॉस और हूनास्पॉटी

अध्याय नौ

'अपना सफ़र तुम्हें जारी रखना होगा।' सालन ने संथाल के बेटों की तरफ देखा।

'तुम्हारे सफ़र और इन घटनाओं के बीच कोई पुल ज़रूर है। उसका पता लगाना होगा।' वृक्षमानव जिल्चोकाट की आवाज़ किसी गहरी सोच में डूबी हुई महसूस हो रही थी।

'लेकिन कैसे?' मकास ने सबकी तरफ देखा। 'हमारे पास आगे बढ़ने का कोई इशारा तक नहीं है। यहाँ आकर तो ऐसा लग रहा है जैसे आगे बढ़ने के सारे रास्ते ख़त्म हो गए।'

'रास्ते कभी ख़त्म नहीं होते, रास्ता तब भी होता है, जब हमें दिख रहा हो और तब भी, जब हमें दिखाई न दे रहा हो।' सालन ने मकास की तरफ शान्त नज़रों से देखा।

तहख़ाने में इस वक़्त चुनिन्दा–समूह के सदस्यों की बैठक हो रही थी। सबके चेहरे की शान्ति, चिन्ता के लेप के नीचे ऐसे दबी हुई थी जैसे साँवली दुल्हन का जिस्म ढँकने के लिए, उबटन चढ़ा दी हो।

'इशारा मिल जाएगा। कल रात तक इंतज़ार करो। हमारी ज़ेहनी ताक़तें बहुत जल्द, उस संकेत को ढूँढ लेंगी, जो तुम्हारे सफर की रोशनी बनेगा।' सालन ने सभा विसर्जित करते हुए कहा।

जायफल और इलायची के पेड़ों के बीच से होकर केवल एक रास्ता गुफा तक जाता था। अभी तो उस रास्ते से होकर, महज तनाव, चिन्ता और असमंजस के कीड़े ही भीतर आ रहे थे। वो दोपहर, अब तक की बाक़ी दोपहरियों से ज़्यादा गर्म और ख़ामोश थी। क्लेवरसीथ को सालन ने कहीं भिजवा दिया था, किसी को नहीं बताया गया कि उसे कहाँ भेजा गया है। सबके ज़ेहन में सवालों के नाख़ून इतने बढ़ गए थे कि हर उत्तर का मुँह नोचने के लिए बेचैन थे।

शाम को कास्टन ब्रूड ने टहलने के लिए गुफा से बाहर जाना चाहा, लेकिन सालन की तरफ़ से मना कर दिया गया। इंतज़ार के पल, जूते के तले में निकली कील की तरह सबके दिमाग़ में चुभ रहे थे।

रात को सोने के लिए जाने से पहले, जरूस का सामना, बैम्बूस प्रजाति के योद्धा, रैक्टिकस ड्रॉन से हुआ।

'कुछ देर पहले, मैंने तुम्हें गुफा की छत में बने विशाल छेदों से झाँकते, सितारों से बातें करते देखा।'

'हाँ, ज़रूर देखा होगा।'

'क्या तुम बताना पसन्द करोगे, हम सबकी क़िस्मत के माथे पर क्या लिखा है?'

'सितारों की ज़बान समझने की सबसे पहली शर्त, ख़ामोशी है रैक्टिकस।'

'मैं तुमसे केवल इशारा चाहता हूँ, बस इतना, जो ये बता सके कि वक़्त हमारे साथ है या नहीं।'

'वक़्त हम सबके साथ हमेशा होता है, हम ही उसके साथ होने से बार–बार चूकते हैं।'

'यानि तुम बताना नहीं चाहते।'

'जो होने वाला है, वो दुनिया को बदल कर रख देगा। हम सबको भी, सितारों ने साफ़ कुछ नहीं कहा, लेकिन इतना तय है, तबाही की वज़नी चट्टानें, अमन के अण्डों पर गिरने को बेताब हैं।'

'मुझे भी यही महसूस हो रहा है'

बस इसके बाद दोनों के बीच कोई बात नहीं हुई। रात गहराती जा रही थी और उसी के साथ गहराते जा रहे थे रहस्य के वो साये, जिनके मुँह पर अँधेरे की कालिख पुती हुई थी। सालन ने गुफा की छत और आसपास के क्षेत्रा को सुरक्षित बनाने के लिए ख़ास इंतज़ाम किए थे। इस बार न तो छत पर कोई पहरेदार था और न ही गुफा के मुहाने पर।

पूछने पर सालन ने महज इतना कहा, 'हमारी इजाजत के बिना अब हवा भी गुफा में प्रवेश नहीं कर पाएगी। आप सब लोग निश्चिन्त होकर चैन की नींद सो सकते हैं।'

सबने चूहे के उन बच्चों की तरह सालन की तरफ देखा, जिनकी माँ ने साँपों से भरे इलावेफ में बिल बनाया हो और चैन से सोने का आदेश दे दिया हो।

रात के दूसरे पहर, कास्टन ब्रूड नींद से उठ बैठा। वो बेचैन होकर तम्बू से बाहर निकला। हल्वरनेसिया से आए वुन्टनब्रॉस ने उसे उठकर बाहर जाते देखा। तम्बू से बाहर आकर उसने देखा, वो एक पत्थर पर परेशान-सा बैठा हुआ था।

'क्या तुम बताओगे, इतनी रात को नींद तुम्हारी आँखों से क्यों निकल गई?'

'अभी सोते में मेरा सम्बन्ध उन सारे तिलचट्टों से टूट गया, जो घाटी में पहरेदारी कर रहे हैं। ये चिन्ताजनक है वुन्टनब्रॉस।'

'एक साथ सभी से?' वुन्टनब्रॉस की आवाज में हैरत के साथ सवालिया दबाव भी था।

'हाँ, ये साधरण बात नहीं है। जरूर कुछ गलत हुआ है या होने वाला है।'

'लेकिन रात के इस वक्त न तो बाहर जाना संभव है और न ही ये पता लगाना कि आखिर हुआ क्या है? हमें सुबह होने का इंतज़ार करना होगा कास्टन...या फिर ऐसा हो सकता है...'

वुन्टनब्रॉस की बात बीच में ही रह गई क्योंकि उन्हें महसूस हुआ, गुफा के मुहाने पर कुछ हलचल है। दोनों आहिस्ता-आहिस्ता उस तरफ बढ़े। सतर्कता, उनके तलवों से तलवे मिलाकर चल रही थी। पास जाकर उन्होंने देखा, कुछ था, जो ऐसे नीचे गिर रहा था जैसे किसी ने ऊपर से टोकरी भरकर कोई चीज़ उलट दी हो।

'क्या तुम देख सकते हो कास्टन, ये है क्या?'

'कुछ साफ नहीं दिख रहा, लेकिन पास मत जाना, सावधन रहना।' उसकी आवाज़ में चेतावनी का पुट था।

'ठहरो, मैं रोशनी का इंतज़ाम करता हूँ।' वुन्टनब्रॉस ने कास्टन को रुकने का इशारा किया और गुफा की दीवार पर टँगा, वायवॉर्न से भरा मर्तबान उतार लिया।

वुन्टनब्रॉस मर्तबान लेकर कास्टन के पास पहुँचा। रोशनी अब गुफा के मुहाने के बाहर तक जा रही थी। उजाला होते ही, जो कुछ उन्होंने देखा, उसे देखकर उनके मुँह से सिसकी निकल गई। गुफा के मुहाने पर, छह सौ मरे हुए हैंगी तिलचट्टों का ढेर पड़ा था। सबके जिस्म सूखकर इतने खुश्क हो गए थे जैसे उनके भीतर का तरल सुखाकर, उन्हें कुरकुरा बना दिया गया हो। कास्टन ने थोड़ा बाहर जाकर चारों तरफ़ देखना चाहा, वो थोड़ा आगे बढ़ा लेकिन जैसे किसी अदश्श्य दीवार से टकराकर रुक गया। सामने कुछ नहीं था लेकिन फिर भी वो आगे नहीं बढ़ पा रहा था।

'तुम इससे आगे एक क़दम भी नहीं जा सकते कास्टन...' पीछे से आती सालन की आवाज़ ने दोनों को चौंका दिया। सालन अपने छोटे लबादे को संभालते हुए उनकी तरफ़ ही आ रहे थे।

'ये भयावह है।' वुन्टनब्रॉस ने सालन की तरफ़ देखते हुए कहा।

'वो भीतर नहीं आ सकते, लेकिन बाहर उनकी मौजूदगी को हमने महसूस कर लिया। हमें सुबह होने तक इंतज़ार करना होगा।' तब तक लगभग सभी जाग गए थे। हैरानी और कौतुहल उन्हें खींचकर उस तरफ़ ला रहा था, जहाँ वुन्टनब्रॉस, कास्टन ब्रूड और सालन खड़े हुए उस ढेर को देख रहे थे।

'हमें इसी वक़्त बाहर निकलकर उनकी मौत पर अपने दस्तख़त करने चाहिएँ।' वैफफुआन पस्तर की आवाज़, क्रोध की अधिकता की वजह से लरज रही थी।

'...और यही वो चाहते हैं पस्तर।' सालन ने ठण्डे स्वर में कहा।

'हम यहाँ जंग नहीं, केवल इंतज़ार करने के लिए रुके हैं। ये जंग की जगह नहीं है, उसके लिए इससे बेहतर जगह हमारा इंतज़ार कर रही है।'

सालन की बात पर किसी ने कुछ नहीं कहा। एक अपरिचित ख़ामोशी, माहौल में पालथी मारकर बैठ गई। उन्होंने एक बार सबकी तरफ़ गहरी नज़रों से देखा-'हमने आप लोगों से कहा था कि सब चैन से सो सकते हैं। आज की रात नींद से अनबन न करें, हो सकता है, आने वाले दिनों में आपको सोने का बिल्कुल मौक़ा न मिले, शुभरात्रि।'

सबके पाँव इस तरह छोटी गुफाओं की तरफ़ बढ़ रहे थे जैसे घुटनों तक कीचड़ में धँसे हों।

कोई भी उस रात फिर सोया नहीं। घाटी से आतीं, भेड़ियों के रोने की आवाजें, सारी रात खामोशी के मुलायम गाल पर चिकोटी काटती रहीं।

सुबह हर कोई जल्दी तैयार हो गया। सालन ने सबको तहखाने में बैठक के लिए बुलवाया। फ़ैग्यूला फ़्लॉट और हूनास्पॉटी बाकी लोगों से पहले ही वहाँ थे। रैक्टिकस ड्रॉन ने खालमानव स्कीनिया ब्राज की तरफ देखा, 'अपशकुन, हवाओं में अपनी खूँटियाँ गाड़ चुके हैं। प्रतिबन्धित–शाप फिर से अपने विषैले फन बाहर निकाल रहे हैं, हमें कोई ठोस कदम लेना होगा।' स्कीनिया ब्राज ने उसकी बात सुनकर बस सहमति में अपना सिर हिला दिया।

सालन के कदमों की आवाज सुनकर सभी ने उस छोटे द्वार की तरफ देखा, जिससे होकर वो भीतर आए थे। खड़े होकर सबने अभिवादन किया।

'बैठिए, बैठिए...हमें आने में कुछ विलम्ब हुआ, उसके लिए माफी चाहते हैं लेकिन काम ही कुछ ऐसा था, जिसे पूरा किए बिना आना संभव नहीं था।' सालन ने अपने आसन पर जगह ले ली।

सालन की आवाज़ ने सभा की शुरुआत की, 'क्लेवरसीथ के दिमाग़ में छुपी जानकारियों से पता चला है कि ये *'वही'* है...जिसकी तलाश बरसों से महासभा के सदस्य और हम सब कर रहे हैं। वो भागा नहीं था, बस ताकत इकट्ठा कर रहा था। उसकी धूर्तता की पराकाष्ठा ये है कि पिछले बरसों में, जब से वो गायब हुआ, उसने कभी ज़मीन पर पैर नहीं रखा। इसी वजह से कोई उसका पता नहीं लगा सका। वो तब से **जौण्टर** प्रजाति के एक विशाल कछुए की पीठ पर रह रहा है, जिसका आकार सामान्य हाथी जितना होता है। उसकी पीठ पर बनी लकड़ी की काठी में ही वो सोता रहा, खाता रहा, पीता रहा और उस रहस्यमयी किताब को पूरा करता रहा।'

'वो इतना मशहूर था, इसके सिवा अगर वो कहीं भी रहता तो पहचाना जाता या पकड़ा जाता। इसीलिए गुमनामी के लबादे के नीचे अपना काम किया उसने।' जिल्चोकाट ने ठण्डी साँस ली।

'कोई भी कभी इतना मशहूर नहीं होता कि हर कोई उसे याद रख सके और कोई भी इतना गुमनाम नहीं होता कि हर कोई उसे भूल जाए...जिल्चो!' सालन ने पेड़ की कोटर जैसी उसकी आँखों में देखते हुए कहा।

'ये बहादुर नौजवान इस जंग की धुरी हैं। अगर ये न होते तो शायद अभी ये पता लगना भी मुश्किल होता कि वो बाहर आ गया है। हमारी मानसिक शक्तियों ने साफ़ किया है, यही इस लड़ाई के अगुवा होंगे। लेकिन इन्हें अपने पिता को दिया वादा भी पूरा करना है। इसलिए, ये अपना वादा भी पूरा करेंगे और महासभा की मदद भी करेंगे और हमारा ही नहीं, इन बहादुर योद्धाओं का भी यही ख़याल है' सालन ने संथाल के बेटों की तरफ़ देखा।

'लेकिन तब तक कहीं बहुत देर न हो जाए सभापति महोदय।' कास्टन की आँखों में शंकाओं का काजल साफ़ दिख रहा था।

'देर नहीं होगी कास्टन...क्योंकि ये आज ही अपना सफ़र फिर से शुरू करने जा रहे हैं। सभा के बाद, हमारे दो सदस्य इनके सफर पर साथ जाएँगे और बाकी हमारे साथ चलेंगे, उसकी खोज करने, जो विशाल कछुए की पीठ पर बैठा, खुद को हिफ़ाज़त से समझ रहा है।'

सालन ने एक बार अपना गला साफ किया और फिर अपनी बात कही, 'हूनास्पॉटी और वुन्टनव्रॉस इस सफ़र में इनके साथ होंगे। जहाँ ये जा रहे हैं, उस सफ़र में इन्ही दोनों की ताकतें काम आएँगी। हमने जरूस से इस बारे में बात कर ली हैं, सभा के बाद ये कूच करेंगे।'

सबने महसूस किया, सालन ने पहली बार जरूस का नाम लिया था, वरना अबसे पहले तीनों भाइयों को 'नौजवान' ही कहकर पुकारा गया था।

सबको हैरत इस बात की थी कि सालन ने तीनों भाइयों से *कब* बात कर ली जबकि वो पूरे समय उनके साथ ही तम्बू में रहे थे। लेकिन ये सवाल पूछा किसी ने नहीं। सभा विसर्जित हो गई। सब चलने की तैयारी करने लगे।

उस दिन गुफा से दो जत्थे बाहर निकले। पहला वो, जिसमें जरूस, सलार, मकास, वुन्टनव्रॉस और हूनास्पॉटी थे और दूसरा वो, जिसमें सालन, फ़ैग्यूला फ़्लॉट, कास्टन ब्रूड, जिल्चोकाट, स्कीनिया ब्राज, रैक्टिकस ड्रॉन और कैफ़ुआन पस्तर थे। दोनों की दिशाएँ बिल्कुल अलग थीं। पहला जत्था, दक्षिण की तरफ़ निकला था और दूसरा, पूरब की तरफ़। पीछे रह गई थी ख़ाली गुफा, जायफल और इलायची के पेड़ और एक आश्चर्यचकित–सा सन्नाटा।

संथाल के बेटों को बता दिया गया, उन्हें किस तरफ़ सफ़र करना है। सालन ने दो ख़ास लोगों को चुनकर उनके साथ भेजा था। पहला...*हल्वरनेसिया* से आया *वुन्टनव्रॉस*...अर्द्ध–मानवों से लेकर प्रत्येक मिश्रित प्रजाति के प्राणी को, अपने

क्यूटिन लिपि मन्त्रों से काबू में करने की शक्ति रखने वाला लकड़हारा। रास्ते में उन्हें पता चला कि वुन्टनग्रॉस को हल्वरनेसिया में ऐसे माना जाता जैसे कोई राज–परिवार अपने कुलदेवता को मानता है। उसके पिता एक साधरण लकड़हारे थे, जो दिन भर लकड़ियाँ काटकर अपने परिवार की आजीविका चलाते थे। जंगल में पिता के साथ लकड़ियाँ काटने वाला छोटा वुन्टन...कब जंगली जीवों में दिलचस्पी लेने लगा, इस बात का उसके पिता **सैण्टनग्रॉस** को पता ही नहीं चला।

हल्वरनेसिया उन दिनों रक्त–पिपासु अर्द्ध–मानवों के हमलों से बुरी तरह आतंकित था। **नरसिंह** और **हायनाटॉर्स** जो आधे इन्सान और आधे लकड़बग्घे होते थे, कभी भी लोगों पर हमला करके उन्हें उठा ले जाते। शाम होने के बाद पूरे क्षेत्रा में सन्नाटा छा जाता। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, कोई बाहर नहीं निकलता। कबीले के सरदार की तरफ़ से बहुत कोशिश की गई लेकिन आतंक को रोका नहीं जा सका। उल्टे इस कोशिश में कई तीरंदाज़ और भालाधरी अपनी जान से हाथ धो बैठे।

फिर एक दिन एक नरसिंह ने जंगल में हमला किया। बालक वुन्टन जब तक कुछ समझ पाता, तब तक सैण्टनग्रॉस दम तोड़ चुका था। नरसिंह, उसके सामने ही उसके पिता की छाती में दाँत गड़ाकर, घसीटता हुआ जंगल में ले गया। अगले दिन मांस के कुछ लोथड़े और फटे हुए कपड़े गाँव वालों ने जंगल से बरामद किए।

अनाथ बालक को **सैफॉल** अपनी झोंपड़ी में ले गया। वो बूढ़ा लुहार, जो ज़्यादातर समय, लिखते हुए बिताता था। जीभ की नोक से लिखी जाने वाली प्राचीन क्यूटिन लिपि का ज्ञाता। अनाथ वुन्टन ने, लोहे के उन सन्दूकों में भरी सैंकड़ों किताबों को पढ़ा, जिनके बारे में सैफॉल का कहना था कि उन्हें आज तक बस गिने–चुने लोगों ने ही पढ़ा था। सैफॉल ने वो सारे क्यूटिन मन्त्रा उसे सिखाए, जिनकी ताकत से वो किसी भी प्राणी को अपने काबू में कर सकता था लेकिन वुन्टन की दिलचस्पी साधरण जीवों में नहीं थी, बल्कि नरसिंहों और उन अर्द्ध–मानव प्रजातियों में थी, जो रक्त–पिपासु थीं।

सैफॉल ने उसे वो हर हुनर सिखाया, जो वो खुद जानता था। बरसों बाद, वो एक साधरण लकड़हारा नहीं, एक ऐसा ताक़तवर नौजवान बन चुका था, जो किसी भी रक्त–पिपासु को पल भर में क़ाबू कर सकता था।

वापस आने के बाद उसका ज़्यादातर वक़्त जंगल में गुज़रने लगा। हर सुबह जब वो वापस लौटता तो उसके मज़बूत कन्धे पर किसी रक्त–पिपासु का शव लटका होता। उसकी आँखों से वहशत और हिंसा टपक रही होती। लोग अब निश्चिन्त होने लगे। फिर एक दिन वुन्टन पर सामूहिक हमला हुआ। रक्त–पिपासु एकजुट हो गए थे। बूढ़े लुहार की उस टूटी–फूटी झोंपड़ी में वो उस वक़्त निपट अकेला था।

फिर इतनी ताक़त से हमला हुआ कि फूस की झोंपड़ी एक ही झटके में तिनका–तिनका होकर बिखर गई। हमलावर हैरान थे, उनका शिकार कहीं नहीं था। उन्होंने झोंपड़ी का कोना–कोना छान मारा, लेकिन कहीं कुछ नहीं मिला। फिर वो उन सन्दूकों की तरफ़ बढ़े, जिनके भीतर वो ग्रन्थ थे, जो प्राचीन क्यूटिन लिपि में लिखे गए थे। जैसे ही उनमें से एक ने वो विशाल सन्दूक खोला, मौत ने उसे लील लिया। सन्दूक का ढक्कन खुलते ही, तेज़ पफरसे का एक वार और उसकी गर्दन 'खच्च' की आवाज के साथ, ध्ड़ से अलग हो गई।

वो सन्दूक के भीतर ही था। फिर जैसे मौत ने हर तरफ़ एक लकीर खींच दी, उसके भीतर जो भी था, हर कोई मारा गया। सिवाय वुन्टनग्रॉस के...जिसके कन्धें पर फैले उसके लम्बे बाल, पसीने से भीग चुके थे और उसके बाजुओं की ताक़तवर मांसपेशियाँ फड़क रही थीं। झोंपड़ी के चारों तरफ़ लाशें और ख़ून के अलावा और कुछ नज़र नहीं आ रहा था। गाँव वाले इकट्ठा हुए और सब लाशों को जला दिया गया। उसने चुन–चुनकर रक्त–पिपासुओं को मारा, हर दिन, हर रात। तब तक, जब तक कि वो ख़त्म नहीं हो गए।

हल्वरनेसिया के सरदार ने उसे अपना पद देकर सम्मानित करना चाहा लेकिन खुद्दार वुन्टनग्रॉस ने विनम्रता से इन्कार कर दिया। जाने कितनी दफ़ा, वो वक़्त आया, जब कबीले पर हुए हर हमले को उसने अपने मज़बूत कन्धें पर ले लिया। वुन्टनग्रॉस को हल्वरनेसिया में देवता बनाकर पूजा जाने लगा लेकिन उसने इंसान बने रहना पसन्द किया और अपनी टूटी झोंपड़ी में उन छोटे बच्चों को मन्त्रा–कला सिखाने लगा, जो आगे चलकर उसकी तरह योद्धा बनना चाहते थे।

दूसरा...*बैल्जोनिया* से आया *हूनास्पॉटी,* आग की लपटों को मुट्ठी में जकड़कर, किसी भी दुश्मन की नसों में अलाव सुलगाने की ताक़त रखने वाला, *कैजो* प्रजाति का योद्धा। बैल्जोनिया, सुदूर दक्षिण में एक विशाल प्रदेश। सैंकड़ों जातियों और प्रजातियों का निवास...हर कोस पर छोटे–छोटे क़बीले, गाँव और बस्तियाँ। कैजो...योद्धाओं की वो प्रजाति, जहाँ बच्चे के जन्म के साथ ही उसे एक महान जंगबाज़ बनाने के लिए तैयार किया जाने लगता। अग्नि की उपासना करने वाले वो लोग, जिनके लिए आग की देवी **फ़ारसीलिया** का मन्दिर दुनिया में सबसे पवित्रा जगह थी।

कैजो लोगों की नसों में जन्म से आग बहती थी। कहते हैं एक प्राचीन वरदान की वजह से उनकी नस्ल अग्नि–मानवों में बदल गई। देवी फ़ारसीलिया के मन्दिर का वरदान, जो उनकी पूज्य और आराध्य थी। कैजो, गर्म ख़ून वाले वो लोग बन गए, जिन्होंने अपने इस कुदरती गुण को खूब तराशा। उनके पुरखों ने जंग का एक अलग शास्त्रा तैयार किया। *अग्नि-शास्त्रा*...उनका मानना था, हर चीज़ के भीतर आग छुपी होती है। चाहे वो जलता हुआ कोयला हो या फिर बर्फ़ का एक छोटा–सा टुकड़ा। ये आग सुप्त अवस्था में होती है, अगर सही तरीवेफ से जगाया जाए तो ये आग विनाश और सश्जन दोनों कर सकती है।

कैजो कभी आग पर पानी नहीं डालते, इसे देवी फ़ारसीलिया का अपमान समझा जाता है। अगर आग बुझानी हो तो वो अपनी हथेलियों से मसलकर बुझाते हैं या फिर अपनी ज़ेहनी ताकत का इस्तेमाल करके। एक अकेला कैजो...पल भर में पूरे जंगल की आग को काबू कर सकता है। बिना अपनी हथेलियाँ झुलसाए, बिना तलवों में फफोले डाले।

हूना का परिवार कई पीढ़ियों से मन्दिर का पुजारी रहा था इसलिए उसे भी पुरोहित बनने की ही दीक्षा दी जा रही थी लेकिन वक्त को कुछ और ही मंजूर था। बैल्ज़ोनिया पर हमला हुआ, बर्बर **माहूष** का हमला। बैल्ज़ोनिया के सम्राट ने समर्पण करने से इन्कार कर दिया। छोटे–बडे हर इलावेफ से, लोग सेना में भर्ती होने के लिए बुलाए गए। हूना के पिता **गैनास्पॉटी** ने, अपने वश्द्ध पिता को मन्दिर के कपाट सौंपे और जंग के लिए सम्राट की सेना की तरफ कूच कर गया।

जंग में सम्राट की हार हुई। माहूज ने निर्ममता से पूरे बैल्ज़ोनिया को तहस–नहस कर दिया। गैनास्पॉटी बहादुरी से लड़ा और अपनी आन और ज़मीन के लिए कुर्बान हो गया।

बस एक क़बीला था, जिसने समर्पण नहीं किया। कैजो...अग्नि–योद्धाओं का क़बीला। वो बहादुरी से लड़े, जंग का नतीजा साफ़ था। माहूज हज़ारों की तादाद में थे और कैजो बस सैंकड़ो की संख्या में। एक–एक करके कैजो गिरे लेकिन माहूज की सेना को भारी नुक़सान हुआ। उनके सैनिक झुलसे जिस्म लेकर या तो मैदान में पड़े थे या फिर झुलसी रूह लेकर नरक की तरफ़ जा रहे थे।

फिर एक चाल चली गई। धूर्त माहूज ने क़बीले के पास बहती नदी का रुख़, अग्नि–मन्दिर की तरफ़ कर दिया। उन्होंने रातों–रात एक खाई खोदी, जिससे होकर एक बड़ी जलधरा मन्दिर की तरफ़ चली। जब तक कैजो योद्धाओं को पता चल पाता, पानी आधे से ज़्यादा सफ़र तय कर चुका था। वो खाई में लेटने के सिवाय और कोई तरीक़ा नहीं अपना सके। अपनी जान पर खेलकर भी वो मन्दिर को अपमानित नहीं होने देना चाहते थे लेकिन माहूज इसी ताक में थे। उन्होंने पानी से भरी खाई में लेटे योद्धाओं को वहीं दबाकर ख़त्म कर दिया।

कैजो, जीते–जी मन्दिर तक पानी पहुँचने से नहीं रोक पाए लेकिन उनके शवों ने वो काम किया। उनकी लाशों से पटी खाई का पानी आगे नहीं बढ़ पाया। माहूज ने विशाल जीवों की पीठ पर पानी से भरे पीपे लादकर, उन्हें मन्दिर में उड़ेल दिया। पूरे मन्दिर में घुटनों तक पानी भर गया। देवी फ़ारसीलिया की मूर्ति को खण्डित कर दिया गया। खण्डित मूर्ति को भी पानी से भरी खाई में घसीटा गया।

इस अपमान को देखने के लिए बस एक जोड़ी आँखें ज़िन्दा थीं, हूनास्पॉटी की आँखें। बालक हूना, जो उन लाशों के नीचे दबा था, जिन्हें पानी से भरी खाई में दफ़ना दिया गया था। फिर ज़िन्दा लोगों को ढूँढने के लिए लाशों के ऊपर गर्म पानी फिंकवाया गया, लोहे के काँटो जड़ी नाल वाले घोड़े, खाई में दौड़ाए गए।

उसकी पीठ पर घोड़ों की नाल के निशान बन गए लेकिन होठों से ऊ नहीं निकली। छोटा हूना सुर्ख़ आँखों से सब देखता रहा। माहूज सब कुछ रौंदकर चले गए। थोड़ी–सी महिलाओं, बच्चों और बुज़ुर्गों के सिवाय कोई ज़िन्दा नहीं बचा था। वो भी इसलिए बच पाए क्योंकि हमले से पहले किसी तरह, पास की एक गुफा में जाकर छिप गए थे। बैल्ज़ोनिया पर माहूज शासक, **डैलोस** का शासन हो गया।

गाँव के बचे हुए बुज़ुर्गों ने हूना को अग्नि–शास्त्रा की शिक्षा दी। अपने जिस्म के भीतर की आग को काबू करके उसका इस्तेमाल करना सिखाया। सारी–सारी रात वो अभ्यास करता रहता। सुबह जब बाक़ी लोग उठते, उस वक़्त उसके आसपास कोयले के छोटे–छोटे ढेर पड़े मिलते, जो उन चीज़ों के होते, जिन्हें उसने रात भर अपनी आन्तरिक आग का इस्तेमाल करके जलाया होता लेकिन ये सब छुपकर करना पड़ता। किसी को अगर ये अहसास भी हो जाता कि वो कैजो हैं तो उसी पल सबकी हत्या हो सकती थी।

हूना हर दिन बड़ा हो रहा था। गाँव के सबसे बुज़ुर्ग योद्धाओं से उसने वो सारे गुर और युक्तियाँ सीखीं, जो किसी भी इन्सान को दहकती आग की भट्‌टी में तब्दील कर सकती थीं, फिर हूना के भीतर तो सैंकड़ो आग की भट्‌टियाँ जल रहीं थीं। आग की भट्‌टियाँ, जिनके भीतर उसके परिवार वालों और क़बीले वालों की लाशें सुलग रही थीं। देवी फ़ारसीलिया

की मूर्ति का एक खण्डित टुकड़ा सबसे छुपाकर रखा गया था। इस उम्मीद में कि एक दिन मन्दिर की खोई हुई प्रतिष्ठा वापस लौटाई जाएगी।

वो सब बच्चे भी अब जवान हो गए थे, जो उस जंग के बाद जिन्दा बच गए थे। हूना अपने साथियों की एक छोटी–सी सेना तैयार कर रहा था। पचास–साठ नौजवानों की एक टुकड़ी, जो माहूज की दो लाख सेना के सामने टक्कर लेने की योजना बना रही थी।

किसी ख़बरी की ख़बर पर डैलोस को शक हो गया कि कुछ कैजो जिन्दा बच गए हैं। बस्ती में सैनिकों की आमद बढ़ने लगी लेकिन किसी ने मुँह नहीं खोला। फिर अत्याचार और वहशियत का नंगा नाच शुरू हुआ। दो लोगों के फेफड़े, लोहे की एक मुड़ी हुई काँटी से बींध दिए गए और पेट पर खंजर से एक बड़ा चीरा लगा दिया गया। लोहे की काँटी की रस्सी, कुएँ से पानी खींचने वाली, लकड़ी की घिरनी पर लपेटी गई। आहिस्ता–आहिस्ता घिरनी को घुमाया गया। देखने वालों के कलेजे मुँह को आ गए, वहशी माहूज, जिन्दा लोगों के फेफड़े उनके जिस्म से बाहर खींच रहे थे।

दोनों मर गए लेकिन उन्होंने मुँह नहीं खोला। फिर दो छोटे बच्चों को सैनिकों ने उठा लिया, वो उनके हलक में हाथ डालने की कोशिश कर रहे थे, ताकि हाथ से पकड़कर जीभ बाहर खींची जा सके। बच्चों की चीख से आसमान भी रो दिया। तभी 'ठहरो' की आवाज़ ने उस सैनिक को पलटने पर मजबूर कर दिया, जो ये वहशियाना हरकत कर रहा था। उसने पलटकर देखा...कहीं कुछ नहीं दिखाई दिया। आवाज़ भीड़ के बीच से ही आई थी।

फिर भीड़ के घेरे को तोड़कर एक नौजवान सामने आया, जिसकी कमर पर एक कपड़ा बँध हुआ था, बाकी जिस्म नंगा था। पत्थर की तरह गठीला, कुन्दन की तरह दमकता हुआ। सैनिक ने अपना हाथ, बच्चे के हलक से बाहर खींच लिया, 'ओह...तो पहले तुम अपनी जीभ को ज़मीन पर पड़ी देखना चाहते हो, *ईल* मछली की तरह छटपटाते हुए...क्या तुम्हें मालूम है, जीभ जितनी दिखती है, उससे बहुत लम्बी होती है। चलो मैं तुम्हारे इस अज्ञान को मिटा देता हूँ।' सैनिक आगे बढ़ते हुए गुर्राया।

युवक जस का तस खड़ा रहा जैसे शापग्रस्त चट्टान हो। सैनिक का हाथ उठा और उसके होठों तक आया, लगा जैसे वो जबरन उसके गुलाबी होठों को खोलकर, उसकी जीभ बाहर खींच लेगा लेकिन पल भर में ही सब बदल गया। नौजवान का गठीला हाथ उठा और उसकी मजबूत पकड़ सैनिक की कलाई पर कस गई। किसी को समझने का भी मौका नहीं मिला कि आख़िर ये हुआ क्या।

'फचाक' की एक आवाज़ हुई और सैनिक के जिस्म की सारी नसें एक साथ ऐसे फट गई जैसे उसके लहू में गर्म उबाल आ गया हो। उसकी लाश ज़मीन पर पड़ी थी। भीड़ ने देखा, उसके जिस्म के ख़ून में अब भी फदकियाँ पड़ रही थी। जैसे चूल्हे पर रखे किसी बर्तन में पानी उबल रहा हो। फिर एक–एक करके वो दस बाहर आए...भीड़ का घेरा तोड़कर। सैनिकों के हाथों में थमे भाले उनकी तरफ़ लपके, लेकिन उन्होंने झुकाई देकर खुद को बचाया और भाले के पफल पर उनकी मुट्ठियाँ कस गई। पल के सौवें हिस्से में लोहे के भाले सुर्ख़ होकर दहक गए। लाल...नर्म...दहकता हुआ सुर्ख़ लोहा...सैनिकों की हथेली की ख़ाल जलने की गंध हवा में भर गई।

हल्की–सी लड़ाई हुई और कुछ देर बाद वहाँ सैनिकों के जले हुए कंकाल पड़े थे, जिनसे अब भी धुआँ निकल रहा था। भीड़ ने तालियाँ बजाकर नौजवानों का स्वागत किया। लेकिन हूना जानता था, ये उत्सव का वक़्त नहीं है। वो फिर वापस आएँगे, पहले से बड़ी संख्या में, इसलिए पूरी तैयारी की ज़रूरत थी।

वो जानता था, सौ, दो सौ सैनिकों को मारकर वो माहूज की विशाल सेना का सामना नहीं कर सकता था इसलिए उसने जंग का मैदान बदलने का फ़ैसला किया। वो दुश्मन को उसके घर में जाकर मारना चाहता था। उसने अपने साथियों के साथ, अगले दिन होने वाली मन्त्रिसमूह की आपात बैठक में जाने का फ़ैसला किया। ये मौत के मुँह में गर्दन देने जैसा था लेकिन उसकी युक्ति हूना ने सोच ली थी।

उन्होंने पुरोहितों का वेश बनाया और सम्राट को कहलवा भेजा कि कैजो योद्धाओं से लड़ने के लिए, वो एक ऐसा *लेप* उपलब्ध करा सकता है, जिसे जिस्म पर लगाने के बाद, कोई दहकते अँगारों के बीच से भी, बिना जले बाहर आ सकता है। सम्राट ने इम्तहान लेने का हुक्म दिया। पुरोहित ने कहा कि वो अपने साठ पुजारियों के साथ, भरे दरबार में अग्नि–कुण्ड में प्रवेश करेगा और आग उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाएगी।

दरबार में अग्नि–कुण्ड का इन्तजाम किया गया। हूना अपने साठ साथियों के साथ सही वक़्त पर वहाँ पहुँचा। वो सब पुजारियों और पुरोहितों के वेश में थे, निहत्थे, ख़ाली हाथ। अग्नि–कुण्ड धधकने लगा, आग की लपटें आसमान छूने लगीं। दरबार में सम्राट के साथ, सेनापति और सारे मन्त्री मौजूद थे। हूना ने साथियों के साथ, अग्नि–कुण्ड के इर्द–गिर्द घेरा

बना लिया। आग की तपिश, दूर बैठे सम्राट और मन्त्रियों के लिए असहनीय हो रही थी लेकिन वे सब आराम से आग के पार खड़े थे। हूना अपने साथियों के साथ कुण्ड में उतर गया।

फिर वो हुआ, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। आसमान छूती आग की लपटें एक बवण्डर का रूप लेने लगीं। ऐसा बवण्डर, जिसका आकार हर पल बढ़ता जा रहा था। सम्राट और दरबारियों ने घबराकर भागने की कोशिश की, लेकिन पल भर में आग ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया। आग इतनी तेज़ और विशाल थी, जब धुआँ छँटा तो वहाँ, कोयला बन चुकी लाशें ही बची थीं, अपनी-अपनी गद्दियों पर बैठे हुए, जले हुए कंकाल। सम्राट मर चुका था, अपने पूरे मन्त्रि-मण्डल और बर्बर दरबारियों के साथ। खबर मिलते ही बैल्जोनिया के लाखों लोग, महल की तरफ़ कूच कर गए। हर बस्ती, कबीले, गाँव से लोगों के जत्थे वहाँ पहुँचे। सेना ने हथियार डाल दिए। हूनास्पॉटी ने अपने सबसे अक्लमन्द और बहादुर अग्नि-योद्धा **मैसानस** का राज्याभिषेक किया।

देवी फारसीलिया का अग्नि-मन्दिर फिर से प्रतिष्ठित किया गया। एक ऊँची भव्य प्रतिमा का निर्माण किया गया। पूरे बैल्जोनिया ने पहली बार देवी की पूजा में एक साथ हिस्सा लिया। हूनास्पॉटी को मन्दिर का पुरोहित नियुक्त किया गया। उसने वही काम शुरू किया, जो उसके पुरखे सदियों से करते आए थे। लम्बे समय तक वो एक साधरण जीवन जीता रहा, तब तक, जब तक सालन का सन्देश उसे नहीं मिला। उस रहस्यमयी किताब की रचना का हिस्सा बनने के लिए, जो सारी दुनिया में अमन के लिए इस्तेमाल की जाने वाली थी।

महासभा के दोनों खास योद्धा, संथाल के बेटों के साथ थे। सालन ने उन्हें संकेत दे दिया था कि उन्हें किस दिशा में जाना है। कोई वजह थी, जिसकी वजह से सालन ने उन दोनों को ही साथ जाने के लिए चुना। जिस रास्ते पर वो आगे बढ़ रहे थे, उस पर आहिस्ता-आहिस्ता रेत कम होने लगी थी। चारों तरफ़ अब **ग्रीसम** के हरे पेड़ और **ईलस्ट** लताएँ नजर आने लगी थीं। रेगिस्तान कहीं पीछे छूट गया था।

'क्या तुम जानते हो हूनास्पॉटी कि सालन की असली उम्र क्या है? देखने में तो वो अभी दस बरस के बच्चे जितने ही नज़र आते हैं?' मकास ने उत्सुकता से उसकी तरफ़ देखा।

'दुनिया में इस राज को केवल एक इन्सान जानता है...और वो हैं सालन। खेदजनक बात ये है कि आज तक सालन ने ये राज़ कभी किसी को नहीं बताया। लेकिन इतना पक्का है, एक हज़ार साल से तो ऊपर ही होगी। देवी फ़ारसीलिया के मन्दिर में मौजूद एक बहुत प्राचीन किताब में मैंने उनका ज़िक्र पढ़ा था। वो तब भी ऐसे ही दिखते थे, जैसे अब दिखते हैं।' हूनास्पॉटी ने उसकी बात का बड़े ठण्डे तरीके से उत्तर दिया।

'मैंने क्यूटिन लिपि में लिखी उन बेहद प्राचीन किताबों में भी उनकी बहादुरी, बुद्धिमानी और मानसिक शक्तियों की कहानियाँ पढ़ी हैं, जो मुझे उन सन्दूकों में मिलीं, जिन्हें आज तक नहीं खोला गया था। सालन शायद अमर हैं, या फिर हो सकता है, अपनी उम्र पर क़ाबू पा चुके हों। पता नहीं सच क्या है, लेकिन वो कमाल हैं।' वुन्टनब्रॉस ने हूनास्पॉटी की बात में अपनी बात जोड़ते हुए कहा।

जितना वो आगे बढ़ते जा रहे थे, एक बात महसूस हो रही थी कि ठण्ड बढ़ती जा रही है। पहले तो तीनों ने इसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता उन्हें महसूस होने लगा, उनके पाँव, हाथ और चेहरे सर्द होते जा रहे थे। एक पहर और चलने के बाद उन्हें लगा, उनके दाँत बजने लगे हैं और कँपकँपी छूटने लगी है। हवा इतनी शान्त थी, जैसे बाँसुरी में फूँक मारने के बाद, ख़ाली पोंगरी में, हवा का एक क़तरा भी न बचा हो।

सलार ने देखा, वुन्टनब्रॉस के हाथ ठण्ड की वजह से काँप रहे थे। जरूस और मकास ने सर्दी की वजह से अपनी मोटे कपड़े की झोलियाँ, अपने चारों तरफ़ लपेट ली थीं। केवल हूनास्पॉटी आराम से चल रहा था। ऐसा लग ही नहीं रहा था कि उस पर ठण्ड का कोई असर हो रहा है। फिर उन्होंने देखा, झाड़ियों के ऊपर हल्की-हल्की सफ़ेद परत दिखाई देने लगी थी। ज़मीन पर उगी घास पर भी सफ़ेद परत थी। जरूस ने एक पेड़ पर अपना हाथ फिराया तो एक सर्द अहसास उसे भीतर तक ठण्डा कर गया। वो बारीक़ बर्फ़ थी।

फिर जितना वो आगे चलते गए, बर्फ़ की परत और मोटी होती गई। अब ज़मीन पर कहीं घास नज़र नहीं आ रही थी, बल्कि मोटी बर्फ़ की चादर थी। फिर वो वक़्त भी आया, जब घुटनों तक बर्फ़ के बीच, उनसे एक क़दम चलना भी मुश्किल हो गया।

'लगता है, अब तुम्हें मेरी मदद की ज़रूरत है।' हूनास्पॉटी ने चारों की तरफ़ मुस्कराते हुए देखा।

'अभी क्यों हूना, तुम तब तक इंतज़ार करो, जब तक हमारा दम न निकल जाए।' वुन्टनब्रॉस ने उसे घूरकर देखा।

उसने हल्के से हँसकर अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। वुन्टनव्रॉस ने अपनी चौड़ी हथेली से उसका हाथ थाम लिया। अगले ही पल उसे ऐसा लगा जैसे उसकी रगों में किसी ने गरमा–गरम तरल उड़ेल दिया हो। उसका पूरा जिस्म पल भर में गर्म होता चला गया। जिस्म के ऊपर जमे बर्फ़ के कण, भाप बनकर उड गए।

'चलो भी, अब अगर तुम्हें गरमी आ गई हो तो इन तीनों को भी थोड़ी गरमाहट का हक़ है वुन्टन!' हूनास्पॉटी की आँखों में अब शरारत झलक रही थी। वुन्टनव्रॉस ने जरूस का हाथ थाम लिया और ज़ोर से कहा, 'अब तुम दोनों भाई भी एक–दूसरे का हाथ थाम लो, जल्दी करो।'

अब पाँचों ने एक–दूसरे के हाथ पकड़ रखे थे और एक लम्बी सीध में चल रहे थे। चारों ने भीतर तक महसूस किया कि हूनास्पॉटी की तरफ़ से कुछ *गर्म-सा* बहता हुआ, उनके जिस्म की तरफ़ आ रहा है।

'जिस जगह तुम आ गए हो, ये **आइसनेरिया** है। ये तो अभी शुरुआत है, आगे जाकर ये इतना बड़ा बर्फ़ीला बीहड है, जिसे पार करना तो दूर, इसमें घुसने की भी कोई हिम्मत नहीं करता।' हूनास्पॉटी ने चारों की तरफ़ देखकर कहा। 'हम इसे पार कर लेंगे, अगर उन बर्फ़ीले जीवों से बच गए, जो यहाँ हर कदम पर छिपे बैठे हैं।'

एक–दूसरे का हाथ पकडकर वो तब तक आगे बढ़ते रहे, जब तक उनके सामने बर्फ़ की वो विशाल चट्टान नहीं आ गई, जिसने उनका रास्ता पूरी तरह से रोक दिया था। दोनों तरफ़ गहरी ढलान थी और सामने वो भारी–भरकम चट्टान। उसका आकार इतना था कि चारों एक–दूसरे के कन्धें पर खड़े होकर भी उसके ऊपर नहीं पहुँच सकते थे।

हूनास्पॉटी ने उनके हाथ छोड़े और आगे बढ़कर उस चट्टान का मुआयना किया। कुछ ही पलों में उन्हें ये महसूस हो गया कि अगर जल्दी आकर उसने उनके हाथ नहीं पकड़े तो वो कुछ ही देर में जमकर मर जाएँगे। हूनास्पॉटी ने चट्टान को हाथ से छुआ, वहाँ की ढेर सारी बर्फ़ भाप बनकर उड़ गई।

'इसे पिघलाकर ही आगे बढ़ना होगा।' उसने पीछे पलटकर कहा।

'...और अगर तुमने ऐसा करने की कोशिश की तो हो सकता है तुम इसके पेट के भीतर दिखाई दो।' वुन्टनव्रॉस ने उसकी तरफ़ देखा।

'जिसे तुम बर्फ़ की चट्टान समझ रहे हो ये **चिलटाचिलोंग** है। ये मांसाहारी हिम–पशु है, केवल ज़िन्दा जीवों को खाता है। अपने जिस्म के ऊपर ये हर वक़्त बर्फ़ ढँकता रहता है, इसी वजह से इसकी देह पर बर्फ़ की मोटी परत जम जाती है। गहरे बर्फ़ में भी काफ़ी तेज़ रफ़्तार से दौड़ सकता है। लेकिन ये इतना ख़तरनाक है, जिसका अंदाज़ा भी नहीं लगाया जा सकता। हम बिना किसी...'

वुन्टनव्रॉस की बात बीच में ही अधूरी रह गई क्योंकि बर्फ़ीली चट्टान ने एक झुरझुरी लेकर अपना जिस्म झाड़ा और उसके भीतर से, जो निकला, उसे देखकर उनके रोंगटे खड़े हो गए।

पूरा जिस्म सफ़ेद और घने बालों से ढँका हुआ। बालों के बीच से निकली हुई लम्बी गर्दन और तीखे दाँत, बड़ी–बड़ी लाल आँखें और छोटे–छोटे पैर। वो बालों से ढँकी किसी सफ़ेद गेंद की तरह ज़्यादा दिख रहा था। उसने अपने खुले मुँह से एक लम्बी साँस ऐसे बाहर छोड़ी जैसे कोई ड्रेगन आग उगलता है।

उसकी बर्फ़ीली साँस सलार के जिस्म से टकराई और पल भर के भीतर, वो बर्फ़ की एक मोटी परत के नीचे क़ैद हो गया। ऐसा लग रहा था जैसे बर्फ़ का कोई आदमक़द बुत रख दिया गया हो। जब तक कोई वुफछ समझ पाता, तब तक वो पूरी तरह जम चुका था। उसकी लम्बी जीभ तेज़ी से भीतर–बाहर हो रही थी।

हूनास्पॉटी मुकाबला करने के लिए आगे बढ़ा लेकिन वुन्टनव्रॉस ने उसे चेतावनी देकर रोक दिया, 'ठहरो, इसे मारना नहीं है। ये हमारे बहुत काम आएगा।'

उसकी बात समाप्त होते ही चिलटाचिलोंग की लम्बी पूँछ का एक वार, उसकी पीठ पर पड़ा और वो बर्फ़ के उपर गिर पड़ा। उसका भारी पैर उठा और वुन्टनव्रॉस को कुचलने के लिए उसने ज़ोर से उसे ज़मीन पर पटका। ऐन वक़्त पर वो पलटा खा गया, वरना उसका जिस्म बर्फ़ के नीचे धँस चुका होता।

'ये तुमसे क़ाबू नहीं होगा, इसे मैं देखता हूँ।' हूनास्पॉटी तेज़ी से उसकी तरफ़ लपका। लेकिन वुन्टनव्रॉस ने उसे फिर रोक दिया।

अब वो घूमकर चिलटाचिलोंग के सामने आ गया था। वुन्टनव्रॉस और चिलटाचिलोंग अब आमने–सामने थे। एक–दूसरे की आँखों में आँखें डाले हुए। सबको ऐसा लगा जैसे वो जीव हमला करेगा और इस बार वुन्टनव्रॉस यक़ीनन उसकी चपेट में आ जाएगा।

लेकिन फिर एक चमत्कार हुआ। चिलटाचिलोंग ज़मीन पर बैठता चला गया। वुन्टनव्रॉस उसकी तरफ़ बढ़ा और आहिस्ता से उसके बालों भरे चेहरे पर अपनी हथेली फिराई। उसने अपनी लम्बी जीभ से ऐसे उसकी हथेली को चाटना शुरू कर दिया, जैसे जनम–जनम का पालतू हो। मकास और जरूस ठण्ड के मारे जमे जा रहे थे लेकिन ये दृश्य देखकर उनकी रगों में जैसे गर्म खून का संचार हो गया। वो अब उसके पूरे जिस्म को सहला और थपथपा रहा था और चिलटाचिलोंग आँखें बन्द करके, अपने छोटे पैरों पर मुँह धरे बैठा था।

'अब इस मिलन को निहारना बन्द करो हूना और जल्दी से उसे थोड़ी गर्मी पहुँचाओ, वरना वो जमकर मर जाएगा।' वुन्टनव्रॉस ने सलार की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

हूनास्पॉटी ने सलार के पास जाकर, बर्फ़ के बुत में तब्दील हो चुके उसके जिस्म पर अपनी हथेली रख दी। कुछ ही पलों में बर्फ़ीली परत भाप बनकर उड़ गई लेकिन वो अब भी अचेत था। ठण्ड की वजह से उसकी नसों का खून जम चुका था।

हूनास्पॉटी उसके पास घुटनों के बल बैठ गया और उसके जूते उतारकर, अपनी हथेली उसके तलवों पर रगड़ने लगा। एक गर्म लपट–सी सलार के जिस्म में दौड़ती चली गई। फिर उसने आहिस्ता से आँखें खोलीं, 'आह...क्या वो जीव मर गया?' उसने अपनी आँखें मिचमिचाकर चारों तरफ़ देखा।

ये देखकर वो हैरान रह गया, चिलटाचिलोंग अब वुन्टनव्रॉस के पैर अपनी लम्बी जीभ से चाट रहा था। उसके विशाल जिस्म के आगे वो केवल एक खिलौने की ही तरह लग रहा था।

'ये कैसे हुआ?' सलार की आवाज़ में आश्चर्य था।

'वुन्टन के लिए ये रोज का काम है नौजवान...' हूनास्पॉटी ने उसकी हैरत को विराम दिया।

'हम इसकी सवारी करेंगे, ताकि हम कम वक़्त में ज़्यादा से ज़्यादा दूरी तय कर सकें।' वुन्टनव्रॉस ने चिलटाचिलोंग के मुँह को थपथपाते हुए कहा।

'इ–स–की सवारी...?' तीनों के मुँह से हैरत से निकला।

'हाँ, इसकी सवारी।' वुन्टनव्रॉस ने सहजता से कहा, 'जो सफ़र हम तीन दिन में पूरा करते, अब वो हम एक दिन में पूरा कर पाएँगे। ये एक मज़ेदार सवारी साबित होगा, चिन्ता मत करो। मुझे भी इसे हाँकने में मजा आएगा।'

सबसे पहले वुन्टनव्रॉस उसके लम्बे, मज़बूत बालों को पकड़कर पीठ पर चढ़ा। ऊपर जाकर उसने हूनास्पॉटी को आवाज़ दी, 'चढ़ जाओ हूना, यहाँ काफ़ी गद्देदार और खुली जगह है।'

बैठे हुए चिलटाचिलोंग पर चढ़ना भी एक बड़ी मुसीबत का काम था। वो इतना उँफचा था कि हूनास्पॉटी के हाथ बार–बार रपट जाते, लेकिन आख़िरकार वो चढ़ ही गया।

किसी तरह सब ऊपर चढ़ गए। चिलटाचिलोंग की पीठ इतनी चौड़ी थी कि पाँचों के बैठने के बाद भी उस पर काफ़ी जगह बच गई थी।

सबके बैठने के बाद वुन्टनव्रॉस ने टिटकारी देकर चिलटाचिलोंग को उठाया। उसके मुँह से ऐसी आवाज़ें निकल रही थीं जैसे कोई गडरिया, भेड़ों के रेवड़ को हाँक रहा हो। उस दैत्याकार प्राणी ने अपने अगले पैर उठाए और एक झटके से खड़ा हो गया। झटका इतना तेज़ था कि वो पाँचों नीचे गिरते–गिरते बचे। अगर सबने उसके लम्बे बालों को कसकर अपनी मुट्ठियों में न जकड़ रखा होता तो पक्का वो नीचे गिर जाते। चिलटाचिलोंग ने दौड़ना शुरू किया और उसके बाद वो हवा से बातें करने लगा। घुटनों तक बर्फ़ के बीच भी वो ऐसे दौड़ रहा था जैसे कोई हिरन मैदान में कुलाँचे भर रहा हो।

मुझे वुन्टनव्रॉस और हूनास्पॉटी की सबसे बड़ी ख़ासियत ये नहीं लगती कि उनमें से एक, आग की लपटों को मुट्ठी में जकड़कर, दुश्मन की नसों में अलाव सुलगाने की ताक़त रखने वाला, कैजो योद्धा था, या दूसरा अर्द्ध–मानवों से लेकर हरेक मिश्रित प्रजाति के प्राणी को अपने क्यूटिन लिपि मन्त्रों से क़ाबू करने की शक्ति रखने वाला लकड़हारा। मैं उनके उस जज़्बे का कायल हूँ, जिसने उन्हें गढ़ा, जिसने उन्हें किरच–किरच करके तराशा। वो जज़्बा, जो उनके भीतर तब भी पेट के बल सरक रहा था, जब उनका जिस्म, रीढ़ की हड्डी टूटे साँप की तरह लक़वा मार गया था। ज़्यादातर जिस्म और मन, जब दबाव, पीड़ा और हताशा की वजह से टूट जाते हैं, तब भी वो झुके नहीं, लचीले नहीं हुए, टूटे भी नहीं... बल्कि लड़े, जूझे...हर क़दम पर, हर छोटे से छोटे क़दम पर। ध्न्यभागी होते हैं वो पाँव, जो सफ़र की धूल चखते हैं, वरना ष्यादातर तलवे, भूखे पैदा होते हैं और ख़ाली पेट मर जाते हैं।

मैं उस पल का इंतजार कर रहा हूँ, जब मेरा काम खत्म हो जाएगा। जिस तरह मुझे नहीं पता, मैं कब तक इस दास्तान को, पत्थर की इन दीवारों पर खोद पाऊँफगा, वैसे ही संथाल के बेटों को भी कानोकान भनक नहीं पडी, कब वो उस षडयन्त्रा का शिकार हो गए, जो उनके रखे हर कदम को तय कर रहा था। वो षडयन्त्रा, जो उन्हें उस कैद तक ले गया, जिसे *निद्राशास्त्रा* के उन दुष्ट ज्ञाताओं ने रचा, जो किसी पत्थर तक को अनन्त नीद में सुलाने की ताकत रखते थे। जिन्होंने उस पेड़ को ही उनका कारागार बना दिया, जिसके नीचे वो आराम करने रुके।

मैंने अब मोम के उन चौखटों को खोदने के लिए उठाया है, जिन पर गहरे पीले, नीले, हरे और लाल रंग के, उन करोडों **बरगलबीट** कीड़ों के बारे में उकेरा गया है, जो **जलते–मैदान** की पथरीली चट्टानों को कुतर–कुतर कर खाते थे। हूनास्पॉटी के एक पुराने दुश्मन ने उन्हें अपना सैनिक बनाया। वो दुश्मन, जिसकी चाबुक जैसी लम्बी पूँछ, कुचलकर छोड दी गई थी।

फ़्रोगाफ़्रोस

अध्याय दस

चिलटाचिलोंग की नरम, गद्देदार पीठ पर सवार, वो पाँचों इस वक्त इसलिए काफी गरम महसूस कर रहे थे क्योंकि हूनास्पॉटी ने अपना एक हाथ, मकास के हाथ में पकडा रखा था और बाकी सबने भी एक–दूसरे का हाथ पकड़ा हुआ था। बर्फ इतनी बारीक़ और गर्द जैसी थी कि चिलटाचिलोंग के पैर उसमें धँसे जा रहे थे और उसका पेट सतह से रगड़ खा रहा था। हर तरफ़ सफेदी और सूनापन इतना ज्यादा था जैसे किसी विधवा ने अपना उदास, आँचल ज़मीन पर फैला दिया हो।

'क्या तुम्हें याद है, सालन ने खास हिदायत दी थी कि अपने आसपास की हर चीज़ पर शवफ करना, आसमान में उड़ने वाले परिन्दे और पानी में तैरने वाले जीवों तक, सब पर। हो सकता है उनमें से ही कोई भेदिया हो। अब अगर तुम्हारी निगरानी कराई गई तो वो पुराने तरीक़ों से नहीं कराई जाएगी।' वुन्टनव्रॉस ने तीनों भाइयों की तरफ देखा।

'हाँ, लेकिन अभी तक ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं दिया है, जिसे देखकर हमें सतर्क होने की ज़रूरत हो।' मकास ने आहिस्ता से जवाब दिया। सबकी आँखें चारों तरफ़ इस तरह निगरानी कर रही थीं जैसे **थॉर्नेल** बाज, ज़मीन पर दौड़ते **रैंडल** चूहों पर नज़र रखता है।

'यहाँ तो इतनी ठण्ड है कि जीने के लिए एक–एक पल संघर्ष करना होगा।' सलार ने वुन्टनव्रॉस की तरफ़ देखते हुए कहा।

'ज़िन्दगी, संघर्ष का ही दूसरा नाम है।' उसने बेपरवाही से जवाब दिया।

हूनास्पॉटी ने ख़ाली नजरों से वुन्टनवॉस की तरफ़ देखा, 'ज़िन्दगी को समेटने के लिए *'संघर्ष'* जैसा विकलांग शब्द काफ़ी नहीं है वुन्टन, **ज़िन्दगी की कोई भी परिभाषा, एक बदसूरत झूठ से ज्यादा कुछ नहीं।'** वुन्टनव्रॉस ने ऐसी नज़रों से उसकी तरफ देखा, जैसे जानता हो, वो सही कह रहा है।

चलते–चलते उन्हें लगभग शाम हो गई।

'हमें रात होने से पहले, ठहरने की जगह देख लेनी होगी।' हूनास्पॉटी ने वुन्टनव्रॉस की तरफ़ फ़ैसला लेने वाली नज़रों से देखा।

जैल्कोवा के पेड़ों का एक झुरमुट देखकर हूनास्पॉटी ने चिलटाचिलोंग को रोक दिया। उसने उसकी गर्दन के पास थपथपाकर, बैठने का इशारा किया। चिलटाचिलोंग आज्ञाकारी सेवक की तरह बर्फ पर बैठ गया। एक–एक करके वो पाँचों, उसके लम्बे सफ़ेद बाल पकड़कर नीचे उतरे। इतनी देर से एक ही दशा में बैठे रहने की वजह से उनकी पिण्डलियाँ जकड़ गई थीं।

हूनास्पॉटी ने एक बड़े पेड़ के बर्फ़ीले तने के पास रुकने का इशारा किया। पेड़ की चोटी इतनी उँफचाई पर थी कि उन्हें काफ़ी कोशिश करने पर भी दिखाई नहीं दी। बहुत अजीब किस्म का पेड़ था, उसका तना इतना चौड़ा और आध खोखला था कि पाँचों आसानी से उसके भीतर बैठ सकते थे। तीनों ने अपनी–अपनी झोलियाँ वहीं रख दीं।

सलार ने अँगड़ाई लेकर अपने जिस्म की नसों को खोला और दूर तक नज़र दौड़ाई।

'हम लकड़ियाँ इकट्ठा करके लाते हैं, तब तक आप लोग कुछ सूखा जलावन ढूँढिए।' मकास ने हूनास्पॉटी की तरफ देखा।

'तुम्हें मेरी मौजूदगी का भी ख़याल रखना चाहिए नौजवान। तुम बस लकड़ियों का इंतजाम करो, वो अगर बिल्कुल गीली भी होंगी तो भी जलेंगी।' हूनास्पॉटी ने अपनी गर्म हथेलियों की तरफ़ देखते हुए कहा।

थोड़ी ही देर में तीनों ने ढेर सारी सूखी लकड़ियाँ जमा कर ली और विशाल, खोखले तने के सामने ढेर लगा दिया। हूनास्पॉटी ने दो लकड़ियों को अपनी हथेलियों के बीच दबाकर, कसकर घिसा। आग की एक छोटी–सी लपट निकली और लकड़ियाँ तेज़ी से जलने लगीं।

भूख, किसी परजीवी की तरह उनकी आँतों में कुलबुला रही थी।

'कुछ खाने का इंतज़ाम करना होगा।' वुन्टनव्रॉस ने आग को एक लम्बी लकड़ी से वुफरेदते हुए कहा।

मकास ने मोटे कपड़े की अपनी झोली को टटोला, उसे याद आया, पतले सींकड़ी ने रास्ते में दो एगस्टोन दिए थे, जिन्हें अभी तक नहीं खाया गया था। बैलीबोसिया के पेड़ की जड़ से खोदकर निकाले गए दोनों एगस्टोन अभी तक उसके पास थे। उसे गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फैलीटस नाम के उस मरियल दोस्त के अल्फ़ाज़ याद आए, जो उसने एगस्टोन देते वक्त कहे थे–'लो, ये एगस्टोन खाकर, अपने पेट में बैठे भूखे दानव की भूख मिटा लो, हैल्विकॉस गिद्ध की बदबूदार बीट।'

अनायास ही उसके होठों पर एक मुस्कराहट तैर गई, जिसे वुन्टनव्रॉस के सिवा और कोई नहीं देख पाया।

'मेरे पास खाने के लिए कुछ है, अगर इससे सबकी भूख कुछ शान्त हो सके।' उसने दोनों एगस्टोन निकालकर बाहर रख दिए।

'वाह...स्वादिष्ट एगस्टोन...ये तुम्हें कहाँ से मिले?' हूनास्पॉटी ने खुश होकर उसकी तरफ़ देखा।

मकास ने उन्हें बताया, किस तरह पतले सींकड़ी ने ज़मीन खोदकर, उसे ये एगस्टोन दिए थे जबकि वो अपने ही नाखून चबाकर अपना पेट भर रहा था। सबके हिस्से में एगस्टोन का एक–एक टुकड़ा आया, जिसे खाकर उनकी भूख थोड़ी शान्त हुई। तीनों भाइयों को पता चला, वो दोनों पतले सींकड़ी से मिलने के लिए खुद बेचैन थे। उन्होंने बताया कि बहुत सालों से उन्हें उसकी कोई ख़बर नहीं मिल पाई।

रात बढ़ती जा रही थी। अलाव की गर्मी भी अब कोई ख़ास गरमाहट नहीं पहुँचा रही थी। वुन्टनव्रॉस और हूनास्पॉटी अब उँघने लगे थे। हल्की–हल्की नींद तो सभी को आ रही थी, लेकिन जरूस की आँखों से नींद कोसों दूर थी।

उसने अपना लबादा समेटा और उस विशाल पेड़ के खोखले तने से बाहर निकल आया। बर्फ़ पर पैर रखते ही, उसका पैर टखने तक धँस गया। उसने कुछ क़दम चलकर, ऊपर सितारों की तरफ़ देखा। आज वो जी भरकर उनसे बतियाना चाहता था। हर वो बात पूछना चाहता था, जो रहस्य की गहरी धुँध में छिपी हुई थी।

बर्फ़ से बाहर निकले एक चौड़े पत्थर पर वो बैठ गया। अलाव की लकड़ियाँ चटखने की आवाज़ के सिवा और कोई आवाज़ कहीं नहीं थी। वो जानता था, सितारे साफ़ तो कुछ नहीं बताएँगे, लेकिन उनके इशारे भी बहुत स्पष्ट होते। उन्हें कैसे समझना है, ये जरूस से बेहतर और कौन जान सकता था। उसने अपनी पलकें ऊपर आसमान की तरफ़ उठाई और जैसे पुराने परिचित बहुत दिनों के बाद मिले हों। उसके चेहरे पर तसल्ली, खुशी, थकान और मिलन के भाव, एक साथ थे।

उस रात वो बहुत देर तक सितारों से बातें करता रहा। वो पुराना, पीला सितारा **फ़्लेमास**...जो हमेशा एक जलती लौ की तरह चमकता रहता था। कम तेल वाले किसी दिए की तरह टिमटिमाने वाला सितारा **इलोसान**...जिसकी भाषा बहुत उलझी हुई लेकिन जरूस के समझने लायक़ होती। दक्षिण की तरफ़ तीन सितारों का वो समूह, **क्लूषीनी**, **हिन्टनटिप** और **स्पीकोस**...जो ऐसे जलते–बुझते रहते, जैसे तीन जुगनू आपस में खिलंदरी कर रहे हों।

पूरब में **पैसीक्लस्ट**, जो शाम से ही अपनी अकड़ दिखाना शुरू कर देता और उसके ठीक ऊपर **लैनॉर**...जो सबसे ज्यादा संकेत देता था। पश्चिम में **कैमीवूफड**, जिसकी दूधिया–सी चमक, करोड़ों सितारों में भी अपना एक अलग सम्मोहन लिए होती। किसी मासूम बच्चे की तरह, अपनी दमकती पलकें झपकाने वाला **यूथोलीच**, जो उत्तर में अपनी ताक़त की शेख़ी बघारता दिखता। बहुत सारे थे वो, उसे सैंकड़ों के नाम याद थे और जाने कितनों की शक्लें।

यूथोलीच की एक बात उसे कभी समझ नहीं आई, जिसे वो हमेशा कहता–**'इंसान, धरती की सारी समस्याओं की दयालु शुरुआत है और सारे समाधनों का निर्मम अंत।'**

जाने कब तक वो उनसे बातें करता रहा। उन्होंने वो सब उसे बताया, जो बताया जा सकता था। जरूस के बहुत कोशिश करने पर भी, वो उन्होंने नहीं बताया, जिसे बताया नहीं जा सकता था। भविष्य को जानने से ज्यादा पीड़ादायक और तनावपूर्ण कोई दूसरी चीज उसे कभी नहीं लगी। भविष्य की झलकियाँ और बारीक–बारीक कतरनें, उसके लिए बहुत सारे सन्देश लिए होतीं थी, जिनमें से बहुत से जानने लायक़ होते और बहुत से अजाने ही अच्छे रहते, मगर जानने के बाद

किसी चीज़ को अजाना करना कभी संभव नहीं है।

उसने आहिस्ता से अपनी गर्दन चारों तरफ ऐसे घुमाई जैसे कोई सुस्त कछुआ, अपने आसपास के मौसम का निरीक्षण कर रहा हो। हर तरफ हल्का अँधेरा था। केवल उस तरफ़ हल्की–सी रोशनी थी, जिस तरफ अलाव के भीतर जलती लकड़ी, सुर्ख़ कोयलों में तब्दील हो गई थी। कुछ पल बाद ऐसी आवाज़ हुई, जैसे किसी ने दबे पाँव, बर्फ पर चलने की कोशिश की हो।

जरूस अब किसी बिल्ली की तरह सतर्क और खरगोश की तरह होशियार हो गया था। उसने आँखें फाड़–फाड़कर देखने की कोशिश की, कुछ काली परछाइयाँ, कुछ दूरी पर थीं। वो कई थे, आदमकद...स्याह, इंसानों जैसे। अँधेरे की वजह से, वो केवल परछाइयों की तरह ही नज़र आ रहे थे। उसने देखा, काली परछाइयाँ उस पेड़ को घेरे में लेती जा रही थीं, जिसके खोखले तने में वुन्टनब्रॉस, हूनास्पॉटी, सलार और मकास लेटे थे।

इससे पहले, वो कुछ समझ पाता या कुछ कर पाता, उन्होंने पेड़ को चारों तरफ से ऐसे घेर लिया कि जरूस को उन चारों में से कोई भी नहीं दिख पा रहा था। फिर पता नहीं उन्होंने क्या किया, अलाव के कोयले बुझ गए। उसे ताज्जुब हो रहा था कि उनमें से कोई अब तक जागा क्यों नहीं। उसने गौर से देखा, कुछ काली परछाइयाँ चिलटाचिलोंग के पास भी खड़ी थीं। उनका चलना–फिरना ऐसे लग रहा था, जैसे अँधेरा, काले पासों से शतरंज खेल रहा हो।

उसने देखा, काली परछाइयों के आसपास एक हल्की नीली धुँध तैर रही थी। जिधर भी वो हिलते, धुँध उनके साथ ही होती। आइसनेरिया का ये बर्फीला बीहड़, अब उसे बहुत ख़तरनाक लग रहा था। उसे महसूस हुआ, वो सारी काली परछाइयाँ शायद इस बात से पूरी तरह बेख़बर थीं कि वो पेड़ से दूर उस पत्थर पर बैठा है।

उसने सारी उलझनों को छोड़कर, मुकाबला करने का फैसला किया। वो जो भी थे, कम से कम दोस्त तो कतई नहीं थे। यही सोचकर उसने बिना एक भी पल गँवाए, हमला करने का निश्चय किया। लेकिन सबसे बड़ी दिक्कत ये थी, उसके पास इस वक़्त हथियार के नाम पर कुछ भी नहीं था। उसकी झोली भी, पेड़ के तने के पास बर्फ पर रखी हुई थी। हल्की चाँदनी में उसने देखा, उनमें से तीन–चार ने पेड़ के तने पर छलाँग लगा दी और उससे ऐसे चिपक गए जैसे छिपकली, दीवार से चिपक जाती है।

उसे नाख़ूनों से खुरचने की आवाज़ सुनाई दी, जैसे कोई लकड़ी को बड़ी ताक़त से खुरच रहा हो। उसे अपनी आँखों पर भरोसा नहीं हो रहा था। वो पेड़ की छाल और लकड़ी को, नाख़ूनों से नीचे की तरफ़ खींच रहे थे। पेड़ की छाल और लकड़ी ऐसे खिंच रही थी, जैसे कोई किसी लचीली चीज़ को खींचता है। खोखले तने में बना, भीतर जाने का रास्ता, अब छोटा होता जा रहा था।

उसे ऐसा लगा जैसे वो उस प्रवेश–द्वार को ही बन्द कर देना चाहते हों, जिससे होकर पेड़ के भीतर जाया जा सकता था। वो इतनी तेज़ी से पेड़ को नीचे खींच रहे थे कि कुछ ही पलों में वो मुहाना बन्द हो गया, जिससे होकर वो उस खोखले तने के भीतर गए थे। अब वहाँ, महज़ बालिश्त भर का छेद ही बाक़ी रह गया था।

जरूस आहिस्ता से बर्फ़ पर लेट गया। वो उनके नज़दीक पहुँचना चाहता था। उसने बहुत धीरे–धीरे बर्फ पर लुढ़कना शुरू किया। बर्फ़ीली सतह पर उसके लुढ़कने की हल्की–सी आवाज़ हुई, जिसे सुनकर काली परछाइयों ने उस तरफ़ देखा, लेकिन फिर अपने काम में व्यस्त हो गईं।

'अच्छे से बन्द करना, ज़रा–सा भी खुला न रह जाए, तुम बहुत लापरवाह हो **फ़्लेगर**...'

एक फुसफुसाती हुई आवाज़, जरूस के कानों में पड़ी। आवाज़ इतनी अजीब थी, जैसे किसी इन्सान के गले में मेंढक की कण्ठनलिका लगा दी गई हो, बोलने और टर्राने का विचित्रा मिश्रण।

'**वल्टी**...तुम्हारे पास, कमियाँ निकालने के सिवाय और कोई दूसरा हुनर नहीं है, खुद देख लो, अब एक चींटी भी बाहर से भीतर नहीं जा सकती।' दूसरी आवाज़ ने भी उतनी ही धीमी आवाज़ में जवाब दिया। दूसरी आवाज़ भी पहले वाले की तरह टर्राने जैसी और कुछ ऐसी थी जैसे बोलते–बोलते गले में लिसलिसी झिल्ली फँस गई हो।

जरूस को अब वो साफ़ दिखाई देने लगे थे। वो बहुत आहिस्ता से करवट के बल लुढ़का और एक मोटे पेड़ के तने के पीछे खिसक गया। फिर उनमें से एक ने पता नहीं क्या किया, अलाव दोबारा सुलगने लगा।

आग की रोशनी में अब वो उनको ठीक से देख पा रहा था। वो दस थे। इंसानी क़द, हरा चिपचिपा जिस्म, ख़ाल किसी मेंढक की तरह दानेदार और चिकनी। सिर एकदम चिकना, उस पर बालों का एक रेशा तक नहीं था। चेहरा, ऐसा जैसे किसी ने इंसान के चेहरे पर, मेंढक जैसे पतले होंठ और पलकरहित आँखें लगा दी हों। कान गायब थे, नाक की

जगह दो बारीक हरे छेद नज़र आ रहे थे। उसकी नजर थोड़ा नीचे गई। कमर से नीचे दो लम्बी, मजबूत टाँगे, जिनका आकार ऐसा था जैसे मेंढक की पिछली टाँगें होती हैं।

मेंढक के पैरों में और उनके पैरों में बस एक बड़ा फर्क नज़र आ रहा था, उनके हाथों और पैरों, दोनों की लम्बी उँगलियों में तेज और तीखे नाख़ून भी थे। वो लोहे के मुड़े हुए किसी काँटे की तरह लग रहे थे। जैसे ही वो एक कदम भी चलते, उनके सिरे बर्फ़ में धँस जाते।

सब पेड़ के चारों तरफ़ गोल घेरा बनाकर खड़े हो गए और पेड़ की तरफ़ मुँह कर लिया। फिर एक साथ सबके मुँह खुले और उल्टी की एक गन्दी, चिपचिपी धार पेड़ से टकराई। पूरा तना उस गन्दगी से सन गया। उल्टी करते वक़्त उनके हलक़ से अजीब–सी गरड़–गरड़ की आवाज़ें आ रही थीं। उन्होंने एक बार फिर यही किया, अब काफ़ी उँचाई तक तना उस लिसलिसे तरल से ढँक गया था।

'सब काम ठीक से निपट गया न **गरगॉल**?' उनमें से एक ने आहिस्ता से पूछा।

'हाँ, पाँचों भीतर क़ैद हो गए, अब निकलो यहाँ से। अब इन्हें कोई बाहर नहीं निकाल सकता' दूसरे ने जवाब देते हुए चलने का इशारा किया।

जरूस साँस रोके उनकी बातें सुन रहा था। उनका एक लफ़्ज सुनकर उसे थोड़ी तसल्ली हुई। उनमें से एक ने कहा था– 'हाँ, पाँचों भीतर क़ैद हो गए।' यानि वो उन्हें केवल कैद करना चाहते थे, मारना या नुकसान पहुँचाना नहीं। लेकिन वो कौन थे और ऐसा क्यों कर रहे थे, इस बात का उसके पास कोई जवाब नहीं था।

लकड़ियाँ अब तेजी से जल रही थीं। उसने देखा, पहले तो वो कुछ कदम इंसानों की तरह चले और उसके बाद, वो चले नहीं, बल्कि कंगारू की तरह उछल रहे थे। कुछ ही देर में, वो फुदकते हुए, ढलान तक पहुँच गए और नीचे अँधेरे में गुम हो गए। कुछ देर तक तो बर्फ़ पर उनके चौड़े पाँवों की आवाज़ें आती रहीं, फिर ख़ामोशी छा गई।

जरूस पेड़ के पीछे से तेज़ी से निकला और अलाव के पास पहुँचा। उसने देखा, जिस पेड़ के भीतर कुछ देर पहले वो लेटा हुआ था, अब उसका तना ऐसा हो गया था, जैसे वो कभी खोखला था ही नहीं। पास आते ही उसकी नाक में सनसनाहट होने लगी। एक तीखी दुर्गन्ध उसके नथुनों से टकराई। उसने महसूस किया वो दुर्गन्ध, उस उल्टी से आ रही थी, जिसे वो मेंढक जैसे अजीब प्राणी, पेड़ के तने पर करके गए थे।

आग की रोशनी में उसने देखा, पेड़ के तने पर उस गाढ़े लेप में, अध्खाए कीड़े, मक्खियाँ और गुबरैले भी चिपके हुए थे। उसे घिन आई लेकिन ये वक़्त उसे महसूस करने का नहीं था। उसने पेड़ के चारों तरफ़ घूमकर देखा, कहीं एक छोटा–सा छेद भी नज़र नहीं आ रहा था। उन्होंने पेड़ की छाल और तने को नीचे खींचकर, उसे ऐसा कर दिया था जैसे किसी कुशल चिकित्सक ने, गहरे घाव को धगे से सिल दिया हो और कहीं ज़ख़्म का निशान तक न बचा हो।

तभी उसे ख़याल आया **'झोलियाँ।'** ये देखकर उसे निराशा हुई कि एक भी झोली बाहर नहीं थी। उसे खूब याद था, उसने झोलियाँ बाहर पेड़ के तने के पास रखी थीं। उन्हें कब और किसने भीतर रख दिया, वो समझ नहीं पा रहा था। एक पल को उसे लगा, कहीं ऐसा न हो, मेंढक जैसे वो अजीब प्राणी, झोलियाँ उठाकर ले गए हों। लेकिन उसने अच्छे से देखा था, जब वो गए थे तो उनके हाथ एकदम ख़ाली थे, किसी के हाथों में उनकी झोलियाँ नहीं थीं।

फिर उसने जंगल की रूह से बात करने की कोशिश की। दूर–दूर तक फैले जैल्कोवा और ग्रीसम के पेडों का हल्का जंगल, जैसे अँधेरे का कम्बल ओढ़कर, सर्दी में ठिठुर रहा था।

काफ़ी कोशिश करने के बाद, जंगल में कोसों दूर तक फैली बारीक़ बेलें, झाड़ियों और ज़मीन के भीतर गहराई तक गई हुई जड़ें, जैसे सब ज़िन्दा होकर ध्ड़कने लगी थीं। पल भर के लिए जैसे हर पेड़ साँस लेने लगा। एक अजीब–सी भिनभिनाहट दूर खड़े पेड़ों के हर पत्ते, हर तने के भीतर से आ रही थी।

एक फुसफुसाती हुई आवाज़ उसके कानों में पड़ी जैसे हवाएँ उसके कानों में सरगोशियाँ कर रही हों या एक साथ सैंकड़ों रूहें उसके कानों के पास इकट्ठा हो गई हों।

'ज...रू...स ! ज...रू...स'

आवाज़ ऐसी लग रही थी जैसे किसी पातालतोड़ कुएँ की तली में बैठकर कोई प्राचीन पुरोहित **गैलूचिन** मन्त्रों का जाप कर रहा हो। आवाज़ों के उस रेवड़ के बीच उसे कुछ सुनाई दिया–

'जंगल की फुनगी तक पहुँचो, रास्ता बदलकर नीचे आओ। भीतरी अलाव को जगाओ...'

उसके बाद वो अजीब भिनभिनाहट और सनसनाहट की आवाज़ बढ़ती चली गई। फिर एक झटके के साथ सब ऐसे

शान्त हो गया जैसे भिनभिन करते **लैटिन्गर** ततैये को अचानक हैल्विकॉस गिद्ध ने सटक लिया हो। उसने सन्देश को समझने की कोशिश की...

'जंगल की फुनगी तक पहुँचो, रास्ता बदलकर नीचे आओ। भीतरी अलाव को जगाओ।'

उसने अपने लबादे का नीचे वाला हिस्सा, ताकत लगाकर फाड़ा और उसकी दो पट्टियाँ बना लीं। एक–एक करके उसने पट्टियाँ अपने हाथों की उँगलियों और हथेली पर लपेटनी शुरू कर दीं। हाथों पर ठीक से कपड़ा लपेटने के बाद उसने बर्फ के ढेर से खोंच भरकर बर्फ उठाया और उस गन्दी उल्टी पर फैंकना शुरू कर दिया, जो पेड़ के तने पर गाढे लेप के रूप में चिपकी हुई थी।

बर्फ से मसल–मसल कर वो उसे छुटाता जा रहा था। कुछ ही देर में उसने अपने सिर की उँफचाई तक, उस चिपचिपे तरल को साफ कर दिया। कई बार की कोशिशों के बाद वो एक ऐसी डाल को पकड़ने में कामयाब हो गया, जिसका सहारा लेकर वो ज़मीन से ऊपर जा सकता था।

आखिरकार वो पेड की फुनगी तक पहुँच गया। अँधेरे में सबसे ज्यादा दिक्कत उसे अपना संतुलन बनाने और अगली टहनियों को देखने में हो रही थी। उसने नीचे झाँक कर देखा, कहीं कुछ नहीं दिखा, ऐसा लग रहा था जैसे ज़मीन पता नहीं कितना नीचे रह गई हो।

उसने अपने पैर खोखले तने की दीवारों से अड़ाए और अपना वजन तने की दीवारों पर बाँटने की कोशिश की। किसी तरह वो नीचे सरकता रहा। हाथ बदलकर नीचे उतरने की एक कोशिश में, उसकी सुन्न उँगलियों ने जवाब दे दिया। वो नीचे गिरा, ऐसा लगा जैसे किसी गहरे अंध्कूप में उसका जिस्म समाता जा रहा हो मगर ये हालत बस कुछ ही पल रही। 'ध्डाम' से वो पेड की तली से टकराया।

दर्द की तीखी लहरें ऐसे उसके जिस्म में दौड़ गईं जैसे किसी अनाडी बच्चे ने पहली बार जमीन पर आड़ी–तिरछी लकीरें खींच दी हों। नीचे घुप्प अँधेरा था, अंगुल भर की दूरी पर भी कुछ नहीं दिख रहा था। उसने अपनी लहूलुहान उँगलियों से आसपास टटोलने की कोशिश की। उसके हाथ एक जिस्म से टकराए, उस पर ऊपर तक हाथ फिराने के बाद महसूस हुआ कि वो हूनास्पॉटी था। उनमें से वो अकेला ही था, जिसके जिस्म पर एक कमरबन्द कपडे के सिवा और कोई कपड़ा नहीं था।

एक–एक करके उसने हर तरफ़ टटोला तो उसे चारों के जिस्म महसूस हो गए। अँधेरे की वजह से वो ये तो नहीं पहचान पा रहा था कि वो रास्ता किध्र है, जहाँ से वो पेड़ के तने में प्रविष्ट हुए थे। खुरदुरे तने की दीवारों पर टकराती उसकी हथेलियाँ, कहीं से भी बाहर जाने का रास्ता नहीं खोज पा रही थीं। फिर उसके पाँव झोलियों से टकराए। उसने एक–एक करके टटोलना शुरू किया। एक झोली में उसकी उँगलियाँ, उस मर्तबान से टकराईं, जिसमें वायवॉर्न थे।

उसने झटके से मर्तबान बाहर निकाला, हल्की–सी रोशनी चारों तरफ़ फैल गई। वो चारों बेसुध पड़े हुए थे। उसने मर्तबान ऊबड़–खाबड़ तली पर रख दिया। सबसे पहले वो मकास के पास पहुँचा और उसका चेहरा थपथपाया, 'मकास... मकास, आँखें खोलो...आँखें खोलो।'

उसके थपथपाने से जैसे वो गहरी नींद से जागा। उसने आँखें मिचमिचाकर चारों तरफ़ देखा, उसे कुछ समझ नहीं आया, वो कहाँ है और यहाँ इतना अँधेरा क्यों है।

उसने जरूस से पूछना चाहा, लेकिन उसने सिर्पफ इतना कहा, 'बाद में बताऊँगा...पहले बाकी लोगों को जगाओ।'

मकास ने उठकर वुन्टनब्रॉस को झिंझोड़ा, वो भी उठ खड़ा हुआ। मलगजी रोशनी में कुछ साफ़ नहीं दिख रहा था, लेकिन खोखले तने की खुरदुरी दीवारें उन्हें ये समझा रही थीं कि इस वक़्त वो उस पेड़ के भीतर हैं।

एक–एक करके सारे जाग गए। हूनास्पॉटी ने जरूस से पूछा, 'क्या हुआ था, हम लोग कहाँ हैं?'

उसने थके स्वर में उत्तर दिया, 'उसी पेड़ के *भीतर*, लेकिन अब वो रास्ता बन्द हो चुका है, जिससे हम भीतर आए थे, या यूँ कहूँ कि अब वो रास्ता बन्द कर दिया गया है।'

'किसने...किसने किया ये सब?' सलार ने हड़बड़ाहट में पूछा।

जरूस ने उसकी तरफ देखा, 'वो सब लम्बी दास्तान है, पहले यहाँ से निकलने की सोचो।'

'उसकी चिन्ता मत करो...हम अभी बाहर होंगे।' हूनास्पॉटी ने आगे बढ़ते हुए कहा।

उसने अपनी दोनों हथेलियाँ, खोखले तने की दीवार पर रख दीं। फिर उस जगह से मटमैला धुआँ निकलने लगा, जहाँ हूनास्पॉटी की हथेलियाँ रखी हुई थीं। वो पूरी जगह, दहकते हुए कोयले में तब्दील होती जा रही थी। कुछ ही देर में

वहाँ से आग की नीली लपटें निकलने लगीं और लाल कोयला नज़र आने लगा। उसने एक हल्का–सा धक्का दिया और उस पूरे हिस्से का कोयला झड़कर नीचे गिर गया। तने में इतना बड़ा छेद हो गया कि एक आदमी उसमें से निकलकर बाहर जा सके।

बाहर, सुबह की लाली फैलनी शुरू हो गई थी। सबसे पहले वुन्टनव्रॉस बाहर निकला, उसके बाद सलार, मकास, जरूस और सबसे बाद में हूनास्पॉटी। बाहर निकलते ही उनका स्वागत, उस दुर्गन्ध ने किया, जो पेड़ के तने से आ रही थी।

जरूस ने उन्हें बताया, सितारों से बातें करने के बाद, किस तरह उसने मेंढक जैसे उन अजीब प्राणियों को दबे पाँव तने की तरफ आते देखा, जिनके आसपास हल्की नीली धुंध तैर रही थी। उसने बताया किस तरह उन्होंने पेड़ के तने को खींचकर, वो प्रवेश–द्वार बन्द कर दिया, जिससे वो बाहर आ सकते थे। फिर वो गन्दी उल्टी, जंगल की रूह का सन्देश और फिर उसका पेड़ पर चढ़कर, खोखले तने के भीतर उतरना। सब कुछ उसने एक ही साँस में कह सुनाया।

उन्हें खयाल आया, काफी देर से चिलटचिलोंग के चलने या हरकत करने की आवाज नहीं सुनी थी। वो तेजी से उस पेड़ के पास पहुँचे, जहाँ चिलटाचिलोंग बैठा था। वहाँ अब कुछ नहीं था। वो साँप के पैरों की तरह गायब हो चुका था।

मेंढक जैसे अजीब प्राणियों की बात सुनकर वुन्टनव्रॉस के मुँह से केवल एक लफ़्ज़ निकला, **'प्रफोगाप्रफोस'** सबने चौंककर उसकी तरफ देखा।

'हाँ, वे प्रफोगाप्रफोस ही होंगे...पक्का वही होंगे, जो कुछ तुमने बताया है, उसके मुताबिक उनके सिवाय और कोई नहीं हो सकता। वो मेंढक, इन्सान और गिद्ध का मिला–जुला रूप होते हैं। दबे पाँव चलने में माहिर, एक रहस्यमयी नीली धुंध, हर वक़्त उन्हें घेरे रहती है, जिसे वो अपने देवता **गिल्वी–मिलोचा** का सुरक्षा–कवच मानते हैं।'

उसने फिर सबकी तरफ देखा और बोलना जारी रखा, 'प्रफोगाप्रफोस निद्राशास्त्रा के ज्ञाता होते हैं, वो किसी को भी कभी भी सुला सकते हैं। बहुत–सी रहस्यमयी ताक़तों के साथ उन्हें ये जन्मजात हुनर भी मिला होता है कि वो जब चाहें, अपने जिस्म को मेंढक में बदल सकते हैं, जब चाहें इन्सान में या फिर एक भयानक गिद्ध में भी। वो सीलन भरी गुफाओं और अँधेरी चट्टानों के नीचे बनी ख़ाली जगहों में अपनी बस्तियाँ बनाते हैं। पिछले जंगल–युद्ध के बाद, उन्हें बहिष्कृत कर दिया गया, क्योंकि उन्होंने दुष्ट ताक़तों का साथ दिया था। लेकिन आइसनेरिया में उनकी कोई बस्ती है, ऐसा कोई सुबूत या सन्देश कभी नहीं मिला।'

'लेकिन सवाल ये है, उन्होंने हमें इस पेड़ के तने में क़ैद क्यों किया?' मकास ने वुन्टनव्रॉस की तरफ़ प्रश्नवाचक नज़रों से देखा।

'अगर वो हमें नुकसान पहुँचाना चाहते तो पहुँचा सकते थे। उस नीली धुंध के भीतर आने वाला इन्सान तब तक नहीं जागता, जब तक उसे कोई जगा न दे। वो निद्राशास्त्रा के ज्ञाता हैं, चाहते तो हमें हमेशा के लिए भी सुला सकते थे लेकिन उन्होंने केवल हमें क़ैद किया, इसकी क्या वजह हो सकती है?' वुन्टनव्रॉस ने जैसे खुद से ही सवाल किया।

'क्या तुमने उन्हें देखा, वो किस तरफ गए?' हूनास्पॉटी ने जरूस से पूछा।

'हाँ, उस ढलान की तरफ़।' उसने नीचे ढलान की तरफ़ इशारा करते हुए बताया।

'मैं उन प्रफोगाप्रफोस में से कुछ को जानता हूँ, वो पहले दर्जे के धूर्त और दुष्ट हैं। क्या उनमें से किसी को एक–दूसरे का नाम लेते हुए तुमने सुना?' वुन्टनव्रॉस ने जरूस की तरफ सवालिया निगाहों से देखा। वो पहले तो कुछ देर तक सोचता रहा, फिर जैसे उसे कुछ याद आया।

'मुझे कुछ–कुछ याद आ रहा है, उनमें से एक का नाम शायद फ़्ले...ग...र था, फ़्लेगर...हाँ, ये ही था और दूसरे को वो शायद वल्टी नाम से पुकार रहा था...और एक ने सबसे बाद में पूछा था 'सब काम ठीक से निपट गया न मरगाल?'

'ओहह...' वुन्टनव्रॉस की आवाज़ में अब चिन्ता और गाढ़ी हो गई। 'मरगाल नहीं वो गरगाल होगा। फ़्लेगर, वल्टी और गरगाल ये तीनों, उनके सरदार **इलासटंग** के बिगड़ैल बेटे हैं। हर वक़्त ज़हरीले कीड़े खाकर नशे में रहते हैं। तीनों दुष्टता में एक से बढ़कर एक हैं।' वुन्टनव्रॉस ने अपनी बात पूरी की।

'हमें सालन को इसकी ख़बर भेजनी होगी। प्रफोगाप्रफोस अगर 'उसके' साथ मिल गए हैं, तो ये चिन्ताजनक बात है। पिछले जंगल–युद्ध में इन्होंने बहुत खून–ख़राबा किया था।' हूनास्पॉटी ने संथाल के बेटों की तरफ देखा।

'लेकिन इतनी जल्दी ख़बर कैसे पहुँचाई जा सकती है। क्या तुम किसी तेज प्राणी को अपने काबू में करके, उससे सन्देश भेज सकते हो वुन्टन?' हूनास्पॉटी उसके हाथ को छूकर बोला।

'उसकी चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। ये काम दो पल में हो जाएगा।' जरूस ने उनकी तरफ देखकर कहा, 'आप बस मजमून तैयार कीजिए, ख़बर क्या भेजनी है।'

'ज्यादा कुछ नहीं, बस तुम उस उल्टी के बीच से वो *अध्खाया* कीडा उठा लाओ, जो अब भी उस गन्दे बर्फ पर पड़ा है।' वुन्टनव्रॉस ने मकास से कहा।

उस गन्दगी के पास जाने के नाम से ही उसने नाक–भौं सिकोड़ीं लेकिन फिर वो उस अध्खाए कीड़े को उठा लाया। उन्होंने जरूस को बताया कि इस कीडे के पंख अगर सालन तक पहुँच गए तो वो इसकी गंध से ही सारा सन्देश ग्रहण कर लेंगे कि हम क्या बताना चाहते हैं।

जरूस ने ग्रीसम के दो चौड़े पत्ते उठाए और कीडे के पंख तोड़कर, उन पत्तों के बीच रख दिए। दोनों पत्ते उसने अपनी हथेलियों के बीच रखे और उसकी आँखें आसमान की तरफ गड गईं। अगले ही पल पत्ते उसकी हथेलियों से निकलकर हवा में लहराने लगे।

'अब हवाएँ अपना काम करेंगी, आप निश्चिन्त हो सकते हैं कि सन्देश सालन तक कुफछ ही देर में पहुँच जाएगा, चाहे वो दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न हों।' जरूस ने उनकी तरफ देखते हुए कहा।

दोनों पत्ते, एक–दूसरे से चिपके हुए थे। वो हवा में इतनी तेज़ी से लहराकर ग़ायब हुए जैसे धनुष से निकला तीर।

'हमें कुफछ देर इंतज़ार करना होगा, सालन का सन्देश आने के बाद ही हम आगे बढ़ेंगे।' हूनास्पॉटी ने उनसे कहा। मकास अब भी चिलटाचिलोंग के पाँवों के उन निशानों को घूरे जा रहा था, जो नीचे ढलान की तरफ जा रहे थे।

वो एक चौड़ी चट्टान पर बैठ गए। तभी मकास को काफी दूरी पर हवा में कुछ फड़फड़ाता दिखा। उसने ग़ौर से देखा, ग्रीसम के दोनों पत्ते, हवा में लहराते हुए तेज़ी से उसी तरफ आ रहे थे। वो तेज़ी से चिल्लाया, 'देखो, सन्देशा आ गया...जरूस...पकड़ो उन्हें।'

जरूस ने अपनी दोनों कलाइयाँ सामने फैलाई और अपनी हथेलियाँ खोल दीं। दोनों पत्ते लहराते हुए उसकी ठण्डी हथेलियों पर आ गए। हवाएँ अपना काम कर चुकी थीं। उसने उन्हें खोलकर देखा। पत्तों के बीच में शुतुरमुर्ग का, एक छोटा–सा नाखून रखा हुआ था। वुन्टनव्रॉस और हूनास्पॉटी उसे देखते ही चौंक गए।

'प्रफोगाप्रफोस, जैल्डॉन से मिल गए हैं।' हूनास्पॉटी के होंठ आहिस्ता से बुदबुदाए।

उनकी समझ में नहीं आया, उसने ऐसा क्यों कहा। हूनास्पॉटी ने वो छोटा नाखून उठाया और वुन्टनव्रॉस की हथेली पर रख दिया।

'सन्देश साफ है, वो उसके साथ मिल गए हैं। ये अनिष्टकारी संकेत है...हमें जल्द से जल्द वहाँ पहुँचना होगा, जहाँ जाने के लिए तय किया गया है।' वुन्टनव्रॉस अब कुछ परेशान नजर आ रहा था।

'हमें अब यहाँ से निकलना चाहिए, लेकिन चिलटाचिलोंग तो ग़ायब है। या तो उसे प्रफोगाप्रफोस अपने साथ ले गए या फिर वो ख़ुद कहीं चला गया।' सलार ने वुन्टनव्रॉस की तरफ देखा।

'मैंने उसे, लगभग पूरे एक दिन के लिए क़ाबू किया था। वो समय पूरा हो चुका। हो सकता है, वो ख़ुद कहीं चला गया हो। लेकिन उससे भी ज़्यादा चिन्ताजनक बात ये है, कि किसी को ये कैसे पता चला कि हम इस वक़्त आइसनेरिया के इस बर्फीले बीहड़ में हैं?' वुन्टनव्रॉस चिन्ताजनक लहज़े में बोला।

'हम सारे रास्ते नज़र रखते आए, कहीं कोई जीव ऐसा नहीं दिखा, जिस पर ये शवफ किया जा सके कि वो हमारी निगरानी कर रहा होगा। आसमान पर भी और ज़मीन पर भी, हर जगह हमारी नज़र थी। लेकिन अगर प्रफोगाप्रफोस केवल हमें रोकने आए थे तो ये पक्का है, उनके पास ये सटीक ख़बर थी कि इस वक़्त हम किस जगह हैं?' जरूस ने अपनी झोली संभालते हुए कहा।

'कहीं कोई नहीं था, वाक़ई कहीं कोई नहीं था, क्योंकि अगर कोई भी हमारी निगरानी कर रहा होता तो मुझे ज़रूर उसका आभास हो गया होता। लेकिन *चिलटाचिलोंग* के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है हूना...वो हर पल हमारे साथ था।' वुन्टनव्रॉस की आँखें सिकुड़कर गोल हो गईं।

'ओह मेरे ईश्वर...' हूनास्पॉटी जैसे नींद से जागा, 'ये तो हमने सोचा ही नहीं था। हमारे सफ़र में हर पल वो हमारे साथ था। इस जगह का भी उसे पता था, जहाँ हमने पड़ाव डाला। बिना किसी रस्सी से बाँधे भी, वो आराम से उस पेड़ के पास खड़ा रहा, मुझे लगा शायद ये तुम्हारा असर है, जिसकी वजह से वो इतना पालतू बना हुआ है।'

'अब समझ में आया सारा माजरा, इस बार उसने किसी को अलग से निगरानी करने के लिए नहीं भेजा, बल्कि उसे

मालूम था, अगर चिलटाचिलोंग रास्ते में मिलेगा तो वुन्टन आराम से उसे काबू कर लेगा और फिर वो उसे सवारी के लिए इस्तेमाल करने की जरूर सोचेगा। फिर आराम से हर पल की खबर उस तक पहुँचती रहेगी, जहाँ भी हम जाएँगे।' हूनास्पॉटी ने माथा सिकोड़ते हुए कहा।

'उसने बहुत शातिराना चाल चली, हमने खुद अपने समूह में एक भेदिया शामिल कर लिया और बाहर से आने वाले भेदियों की निगरानी करते रहे। जरूर वो हमारी इस मूर्खता पर हँस रहा होगा।' सलार ने वुन्टनव्रॉस की तरफ देखा।

'दुष्टता के कीड़े, अवसरों के लापरवाह जिस्म को खाकर ही जिन्दा रहते हैं।' मकास ने तीनों के चेहरे पर नज़र गड़ाते हुए कहा।

'अब केवल कुछ देर का सफ़र बाकी है। उसके बाद हम आइसनेरिया से बाहर हो जाएँगे। आज शाम तक हमें वहाँ पहुँचना है, जहाँ सालन और हमारे बाकी साथी भी पहुँचेंगे। लेकिन उससे भी बड़ी चुनौती अभी बाक़ी है, वहाँ तक पहुँचने के लिए अभी हमें *पत्थर-का-जलता* मैदान पार करना होगा।' वुन्टनव्रॉस ने चलने का इशारा करते हुए कहा।

'पत्थर–का–जलता–मैदान?' जरूस ने सवालिया अंदाज में कहा।

'हाँ, पत्थर का जलता मैदान, ये दुनिया की सबसे अजीब जगह इसलिए है, क्योंकि एक तरफ तो यहाँ आइसनेरिया जैसा बर्फीला बीहड़ है और दूसरी तरफ दूर–दूर तक फैला पत्थर–का–जलता–मैदान। आइसनेरिया और जलते मैदान के बीच कोई विभाजन–रेखा नहीं है, एक खत्म होता है तो दूसरा शुरू हो जाता है लेकिन दोनों के हालात में जमीन–आसमान का फर्क है। एक की ज़मीन हद से ज़्यादा ठण्डी है तो दूसरे की हद से ज़्यादा गर्म।'

'हमें इस ढलान से फिसलकर नीचे जाना होगा, ढलान के बाद बर्फ़ एकदम ख़त्म हो जाएगी, फिर कहीं दूर–दूर तक तुम्हें बर्फ़ का एक क़तरा तक नजर नहीं आएगा। अगर कुछ होगा, तो वो होगा दूर तक फैला पत्थर का मैदान और भयंकर गर्मी।' वुन्टनव्रॉस ने नीचे गहराई की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

'चलो, अब निकलते हैं।' उसकी बात पूरी होते ही सब एक साथ बर्फ़ के ढलान पर नीचे की तरफ फिसलने लगे। बर्फ़ की मोटी सतह पर वो बहुत तेज़ी से नीचे जा रहे थे। उन्होंने देखा, कुछ दूरी पर चट्टानों के बीच बनी दरारों से कुछ जोड़ी आँखें उन्हें घूर रही थीं।

'वो प्रफोगाप्रफोस हैं। उनकी परवाह मत करो, अब वो हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। वे केवल रात में अपनी ताक़त का इस्तेमाल करते हैं। अपनी हार पर मातम मना रहे होंगे बेचारे।' हूनास्पॉटी ने ज़ोर से कहा।

नीचे फिसलते हुए उन्होंने देखा, चट्टानों के बीच एक जगह कई प्रफोगाप्रफोस थे और चिलटाचिलोंग उनके पास ही खड़ा था। उन्हें नीचे फिसलते देख, वो ज़ोर से चिंघाड़ा, जैसे उनके बचकर भाग जाने पर क्रोध कर रहा हो।

काफी देर तक फिसलने के बाद, उनके पाँव नीचे जमा बारीक़ बर्फ़ के एक विशाल ढेर से टकराए। वो लगभग आधे उसमें धँस गए। उनके सारे लबादों और झोलियों में बर्फ़ भर गया था। सबके बालों और चेहरे पर बारीक बर्फ़ ऐसे चढ़ गया था, जैसे रात भर बर्फ़बारी में खड़े रहे हों। खड़े होकर उन्होंने देखा, दूर–दूर तक केवल मैदान नजर आ रहा था, कहीं पेड़–पौधे, घास का नामोनिशान तक नहीं, हर तरफ़ बस पथरीली बैंगनी ज़मीन। सपाट, पत्थर का मैदान।

ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने पत्थर को काटकर, इकसार और समतल सतह तैयार की हो। उन्होंने खुद को झाड़कर साफ़ किया और खड़े हो गए। वो एक बर्फ़ीले पहाड़ की तलहटी में खड़े थे और सामने दूर–दूर तक फैला पत्थर का मैदान उनका इंतज़ार कर रहा था। एक ही भू–परिक्षेत्रा का ये अजीब दश्श्य उन्हें रोमांचित कर रहा था। मैदान इतना विशाल था कि अंतहीन नज़र आ रहा था। बस दूर क्षितिज पर उन्हें एक छोटा–सा काला बिन्दु नज़र आ रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे बहुत दूरी पर कहीं कुछ है, लेकिन वो क्या है, इसका तो अंदाज़ा भी नहीं हो सकता था।

'सावधन होकर चलना, यहाँ **बरगलबीट** कीड़ों का साम्राज्य है। वो केवल पत्थर खाते हैं या फिर हड्डियाँ। अगर कोई प्राणी भूला–भटका इधर चला आता है तो या तो वो प्यास से तड़पकर मरता है या फिर बरगलबीट कीड़ों के खाए जाने की वजह से। कब तुम्हारी नज़र बचाकर वो तुम्हारी टाँग में छेद करके भीतर घुस जाएँगे, तुम्हें पता भी नहीं चलेगा। क्योंकि इनके दाँतों में सुन्न कर देने वाला ज़हर होता है, जिसकी वजह से इनके शिकार को काटने का पता नहीं चलता।' वुन्टनव्रॉस ने चारों की तरफ़ देखते हुए कहा।

वो उस पथरीले मैदान में थोड़ा आगे बढ़े तो उन्हें गरमी का अहसास होने लगा। सूरज सिर पर आ गया था। काफी देर से मकास को 'किरच–किरच' की एक अजीब–सी आवाज़ सुनाई दे रही थी। पहले तो उसने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया लेकिन जब उसे वो आवाज़ सुनकर मिसमिसाहट–सी होने लगी तो उसने वुन्टनव्रॉस से पूछा–'क्या तुम बता सकते

हो, ये आवाज़ें कहाँ से आ रही हैं।

'तुम्हारे पाँवों के नीचे इस वक़्त लाखों बरगलबीट कीडे हैं। वो इन चट्टानों की दरारों के नीचे पत्थर को कुतर–कुतर कर खा रहे हैं। उसी की आवाज़ तुम सुन रहे हो। यहाँ केवल दो चीज़ों की अधिकता है। पहली पत्थर और दूसरी ये कीडे। न तो कभी इनके खाने के लिए चट्टानें कम पड़ती हैं और न कभी इनकी तादाद कम होती है। इनका रंग, गहरा हरा, नीला, लाल और पीला होता है। कहते हैं इनका मल चोट पर लगाने से सूजन कम हो जाती है लेकिन मैंने कभी ये इस्तेमाल करके नहीं देखा।' वुन्टनब्रॉस ने मुस्कराकर मकास की तरफ़ देखा, 'हाँ, अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिए इनका गोबर ज़रूर इकट्ठा कर सकता हूँ, हो सकता है कभी तुम्हारे काम आ जाए।'

'हमें उन दुष्ट प्रफोगाप्रफोस को सबक सिखाए बिना नहीं आना चाहिए था।' हूनास्पॉटी ने अपने चेहरे पर आए गुस्से के भावों को रोकने की कोशिश करते हुए कहा।

'यही वो चाहता है कि हमें रास्ते में रोका जा सके, उलझाया जा सके। उन चिपचिपे मेंढकों से उलझकर, हम उनकी योजना को ही सफल बनाते। क्या तुम नहीं जानते हमारा आज शाम तक **थोरोष** की पहाड़ी तक पहुँचना कितना ज़रूरी है। सालन वहाँ हमसे पहले पहुँच जाएँगे।' वुन्टनब्रॉस भावहीन चेहरे के साथ बोला।

बहुत दूर, उन्हें कुछ काला–काला नज़र आ रहा था। मगर दूरी इतनी थी कि ये स्पष्ट नहीं हो पा रहा था, वो है क्या? मकास ने एक बार जरूस की तरफ़ देखकर पूछा भी, 'क्या तुम वो देख रहे हो, जो दूर क्षितिज के पास नज़र आ रहा है?'

उसने उसे कोई बडी चट्टान बताया, लेकिन जैसे–जैसे वो पास पहुँच रहे थे, ये साफ़ होता जा रहा था, वो चट्टान तो कतई नहीं थी।

फिर उन्होंने महसूस किया, जितना वो उस चीज़ की तरफ़ बढ़ रहे थे, उतना ही वो चीज़ भी उनकी तरफ़ बढ़ती आ रही थी। जब वो पास आई तो उनकी हैरत का ठिकाना न रहा। चौड़े चबूतरे जितनी बड़ी, चौकोर और समतल चट्टान उनकी तरफ़ आ रही थी, जो ज़मीन से लगभग चार अंगुल उठी हुई थी। ऐसा लग रहा था जैसे वो हवा में तैरती हुई उनकी तरफ़ आ रही हो। उन्होंने ग़ौर से देखा तो नज़र आया, उसके नीचे हज़ारों बरगलबीट थे, जो उसे अपनी पीठ पर ढो रहे थे। चट्टान के ऊपर एक वज़नी पत्थर रखा हुआ था, जो किसी सिंहासन की तरह लग रहा था।

पत्थर के ऊपर, जो बैठा हुआ था, उसे न तो इंसान कहा जा सकता था और न पशु। वो लगभग चार हाथ लम्बा होगा। चमड़ी ऐसी जैसे किसी भट्टी में जली हुई चट्टान हो। हाथ में, लम्बी–लम्बी पतली तीन उँगलियाँ और पैरों में केवल एक लम्बा अँगूठा। उसके हाथ में एक लम्बी छड़ी थी, जिसे चबूतरे जैसी चट्टान पर ठकठका कर, वो बरगलबीट को काबू कर रहा था। उसे देखकर हूनास्पॉटी की आँखों में ऐसे भाव उभरे जैसे उसे बरसों से जानता हो।

उसका मुँह किसी चमगादड़ की तरह पतला था। कान इतने चौड़े जैसे किसी ने केले के पत्ते तराशकर लगा दिए हों। पेट तो लगभग गायब ही था लेकिन सीना चौड़ा और उस पर चमकती हुई पसलियाँ। हवा में सनसनाती लम्बी पूँछ, जिसका आख़िरी सिरा ऐसा था जैसे कोई तीखा बाण हो। उसकी लाल सुर्ख़ गोल आँखों से शैतानियत टपक रही थी।

'तो तुम इन तीन चूहों के रक्षक बनकर साथ चल रहे हो *हूना...स्पॉटी।*' उसने बोलने के लिए मुँह खोला तो उसकी आवाज़ की कर्कशता ने आसपास की हवा को झनझना दिया। ऐसा लगा जैसे कोई बूढ़ा, बलगम भरे गले से गाने की कोशिश कर रहा हो।

'तुम?' हूनास्पॉटी की आँखों में हैरत के साथ क्रोध के भी भाव उभरे।

'हाँ...मैं...कैजो प्रजाति के अग्नि–योद्धा...ये मैं ही हूँ?' चमगादड़ जैसे मुँह से खरखराती आवाज़ निकली।

'ओह, तो तुमने एक नई गुलामी तलाश कर ली है ***थैजो***।' हूनास्पॉटी की आवाज़ में व्यंग्य था। 'वाक़ई, लोग अपनी पसन्दीदा गुलामी चुनने के लिए, पूरी तरह आज़ाद हैं।'

'तुम्हारा अहंकार आज भी उतना ही मुँहज़ोर है हूना, जितना बरसों पहले था।' उसकी आँखों में क्रोध और तिलमिलाहट के भाव थे।

हूनास्पॉटी के होंठ मुस्कराए, वो बहुत नरम और व्यंग्यात्मक लहज़े में बोला–'लेकिन तुम यहाँ, कर क्या रहे हो **थैजोथार**...और इस तरह हूनास्पॉटी का रास्ता रोकने की गुस्ताखी की सज़ा, तुम्हें पहले भी मिल चुकी है...शायद तुम्हारी कुचली हुई पूँछ से वो दर्द ख़त्म हो गया, जो हमने तुम्हें तोहपेफ में दिया था?'

ऐसा लगा जैसे हूनास्पॉटी ने उसकी दुखती रग पर हाथ रख दिया हो। उसकी दहकती आँखें क्रोध में और भी लाल

हो गई।

उसने गुस्से में दाँत किटकिटाए, 'तुम्हारा दिया हर तोहफा हिफाजत से है हूना...स्पॉटी। तुम्हारे सारे हिसाब आज चुकता कर दिए जाएँगे।'

वुन्टनव्रॉस और संथाल के बेटे अब तक नहीं समझ पाए थे कि ये आखिर क्या बला है और हूनास्पॉटी उसे कैसे जानता है।

अपनी बात पूरी करते ही उसने चट्टान पर अपनी छडी एक खास ढंग से ठकठकाई और पलक झपकते ही उसके नीचे से, लाल, नीले, हरे और गहरे पीले रंग के, सैंकडों बरगलबीट, तीर की तरह निकलकर उनकी तरफ झपटे। हूनास्पॉटी ने फुर्ती से अपनी हथेलियाँ, नीचे टिका दीं। बरगलबीट आधे से ज्यादा रास्ता तय कर चुके थे। उन्हें ऐसा लगा जैसे बस किसी भी पल वो उनके पैरों तक पहुँच जाएँगे लेकिन उनकी आँखों ने कुफछ और ही देखा।

बरगलबीट, हवा में ऐसे उछल रहे थे जैसे गर्म तेल की कड़ाही में गीली सरसों डाल दी हो। 'चट–चट' की आवाज़ के साथ उछलकर, वो पट से पथरीली जमीन पर गिर रहे थे। उनके जिस्म एकदम राख की तरह काले पड़ रहे थे। उन्होंने देखा, हूनास्पॉटी और बरगलबीट के बीच की पथरीली जमीन का टुकड़ा, दहककर लाल होता जा रहा था। उस गर्म सतह पर बरगलबीट भुनकर राख हो गए।

'शायद तुम्हें अपने इन पालतू कीडों के पाँवों में लोहे के जूते पहनाकर रखने चाहिए थे थैजोथार।' हूनास्पॉटी की आवाज़ में मजाक उड़ाने वाला लहजा था।

अब तक वुन्टनव्रॉस और बाकी तीनों भी हमले के लिए तैयार हो गए थे। हूनास्पॉटी की आवाज ने जैसे जले पर नमक का काम किया। उसने उस चट्टान पर फिर छडी ठकठकाई, जिस पर वो बैठा था और इस बार 'किरच–किरच' की तेज आवाजों के साथ चट्टान नीचे टिक गई।

ऐसा लगा जैसे हज़ारों बरगलबीट पथरीली ज़मीन में छेद करने की कोशिश कर रहे हों। हूनास्पॉटी ने उन चारों को हाथ से पीछे हटाया और तेज़ी से एक गोल घेरा उनके इर्द–गिर्द बना दिया। पल भर में ही घेरे की परिधि दहकने लगी। अब वो दहकती गोल अग्नि–रेखा के भीतर थे, जिसमें लपटें नहीं थी। ऐसा लग रहा था जैसे लाल, गर्म लोहे की एक चौड़ी पट्टी उनके चारों तरफ खिंच गई हो।

उनसे कुफछ दूरी पर एक बड़ा छेद उभरा और वो उसमें से ऐसे निकलने लगे जैसे भीतर बरगलबीट की बाढ़ आ गई हो। इस बार वो सामने से नहीं बल्कि दाहिने और बाँए से हमला कर रहे थे। मकास के हाथों में उसकी बाँसुरी कस गई थी। जरूस ने अपनी झोली से, **कस्तूरी** का एक बड़ा ढेला निकाल लिया था। सलार का हाथ अपनी पैबन्द लगी झोली में सरका और उसके हाथ में एक चौड़ा शीशा दबा हुआ था।

दहकती, गर्म परिधि पर चढ़ते ही वो भुनकर कोयला हो जाते लेकिन उन्होंने हमला बन्द नहीं किया। वुन्टनव्रॉस के होंठ प्राचीन क्यूटिन लिपि में कुछ बुदबुदा रहे थे। उसने पलक झपकते, सैंकड़ों बरगलबीट को काबू कर लिया। अब वो सारे तेज़ी से रेंगे और एक बड़े ढेर के रूप में एक तरफ चुपचाप बैठ गए लेकिन उनकी तादाद इतनी थी कि वो अब भी छेद से निकले चले जा रहे थे।

जरूस ने अपने हाथ में पकड़ा, कस्तूरी का ढेला, उस घेरे से दूर फेंक दिया। उसमें से तेज़ गन्ध बाहर आ रही थी। ऐसा लगा जैसे बरगलबीट पागल हो गए हों। वो दीवानों की तरह उस ढेले की तरफ दौड़े और उससे जाकर चिपक गए। उनमें से कोई भी उसे खा नहीं रहा था, उसकी गंध उन्हें मदहोश किए दे रही थी। कुछ ही पलों में ढेले के ऊपर इतने बरगलबीट चढ़ गए कि वो दिखाई देना ही बन्द हो गया। अब ढेले की जगह, बरगलबीट की एक बडी–सी गेंद नज़र आ रही थी।

सलार ने अपने हाथ में पकड़े शीशे को सूरज की तरफ घुमाया, सूरज की किरणें शीशे पर पड़ीं और उसमें से तेज़ रोशनी निकलकर बरगलबीट के झुण्ड से टकराई। ढेर सारे कीड़े एक ही वार में बेदम हो गए। मकास की बाँसुरी उसके होठों पर टिकी हुई थी और उसमें से नन्हें–नन्हें तीर निकलकर बरगलबीट को छलनी कर रहे थे।

वो इतनी बड़ी तादाद में थे कि पथरीली जमीन, पूरी तरह उनके छोटे–छोटे घिनौने पाँवों के नीचे छिप गई थी। ऐसा लग रहा था जैसे पूरा मैदान, बरगलबीट के कालीन से ढँक दिया गया हो। वो सब तेज़ी से उस घेरे की तरफ बढ़ते चले आ रहे थे। एक पल ऐसा भी आया, जब उनकी हर कोशिश नाकाम होती गई और बरगलबीट ने उन्हें इतने छोटे घेरे में ले लिया, जिसमें से निकलना या भागना भी संभव नहीं था।

मौत हर पल अपना शिकंजा कसती जा रही थी। किरच–किरच की आवाजें और लाखों कीड़ों के घिचमिच कर चलने का शोर, माहौल को अपने पंजे तले कुचल–सा रहा था। थैजोथार, उनके बीच खड़ा ऐसे मुस्करा रहा था, जैसे उनकी मौत का इंतजार उसके लिए असहनीय हो रहा हो। उसकी तीर जैसी नोकीली पूँछ, रह–रह कर हवा में लहरा रही थी। फिर घेरा इतना तंग हो गया, अगर वो एक कदम भी इधर–उधर हिलते तो उनके पाँव कीड़ों को छू जाते।

'इन... घमण्डियों...को... चबाकर...गर्म... चट्टानों... के... नीचे... आराम...करो...' उसने खरखराती हुई आवाज़ में हुक्म दिया।

'साँय' की एक आवाज हुई, ऐसा लगा जैसे किसी बड़े पक्षी ने अपने पंख तेजी से फड़फड़ाए हों। मकास और सलार को पल भर के लिए ऐसा लगा जैसे किसी विशाल पंजे ने उन्हें कमर से दबोचकर, ज़मीन से ऊपर उठा दिया हो। पलक झपकते ही वो ऊपर हवा में तैर रहे थे। उन्होंने ऊपर नजर उठाकर देखा, वो एक विशालकाय **पायथोफैण्ट** के पंजों में दबे थे। जिसकी चार भारी–भरकम टाँगें थी। उसने अपने दो पंजों में सलार, मकास और वुन्टनब्रॉस को दबा रखा था और बाकी दो में हूनास्पॉटी और जरूस दबे थे।

वो इतना विशाल था, उसके पंजों में दबे, वो पाँचों किसी चूहे की तरह लग रहे थे। बड़े–बड़े विशाल पंख...जिस्म हाथी का, पाँवों की जगह नोकीले पंजे, सूँड किसी भारी–भरकम पेड़ के तने की तरह मोटी, उसके अगले सिरे पर एक विशाल अजगर का मुँह था। अजगर, चील और हाथी की मिश्रित प्रजाति का शक्तिशाली प्राणी...पायथोफ़ैण्ट।

क्षण भर के लिए तो सब हक्के–बक्के रह गए। मकास ने नीचे झाँक कर देखा, जिस जगह पर वो खड़े थे, वहाँ अब बरगलबीट का बहुत बड़ा झुण्ड नज़र आ रहा था। उसे महसूस हुआ, अगर एक पल की भी देरी हुई होती तो शायद अब तक वो ख़तरनाक कीड़े, उनकी हड्डियों को खा चुके होते लेकिन उन्हें कमर से पकड़कर उठाने वाला ये प्राणी, दुश्मन था या दोस्त...ये साफ होना अभी बाक़ी था।

इतनी ऊँचाई से देखने पर उन्हें महसूस हुआ कि वो कितनी बड़ी मुसीबत में थे। दूर तक बरगलबीट की ही सेना नज़र आ रही थी।

वुन्टनब्रॉस ने चुटकी लेते हुए कहा, 'अब तक तुम्हारी हड्डियाँ, सूजन उतारने वाले इनके मल में मिल गई होतीं...अगर तुम आसमान में नहीं होते।'

थैजोथार नीचे ज़मीन पर, गुस्से में पैर पटक रहा था। वो अपने हाथ में पकड़ी छड़ी को बार–बार आसमान की तरफ कर रहा था, जैसे अगर वो उसके हाथ लग जाते तो उन्हें कच्चा चबा जाता।

सलार ने उसके पंजों से छूटने की कोशिश में जान लगा रखी थी लेकिन उसकी पकड़ इतनी मज़बूत थी कि वो टस से मस भी नहीं हो रही थी। हूनास्पॉटी की आवाज़ ने उसका ध्यान खींचा, 'ज़्यादा छूटने की कोशिश मत करो, अगर छूट गए तो नीचे बरगलबीट की सेना के बीच गिरोगे और फिर तुम्हारी कौन–सी हड्डी, किसके पेट में जाएगी, उनका सारा गोबर छानने के बाद भी ये पता नहीं चल सकेगा।'

उसने गौर से देखा, वुन्टनब्रॉस और हूनास्पॉटी उसके पंजों से छूटने की ज़रा भी कोशिश नहीं कर रहे थे।

'ये दुश्मन नहीं दोस्त हैं, सालन ने हमारी मदद के लिए भेजा है...ये बरसों से सालन के साथ है। किंवदंतियाँ हैं, जब किसी पायथोफ़ैण्ट का जन्म होता है तो कुछ उल्काएँ उस जगह पर गिरती हैं। उन उल्का–पिण्डों को यदि कोई अपने क़ब्ज़े में ले ले, तो जन्म लेने वाला प्राणी, आजीवन उल्का–धरक की ज़िन्दगी की हिफ़ाजत करता है। लोग कहते हैं इस कोशिश में बहुत से लोग अपने प्राण गँवा चुके हैं। तब, जब जलती हुई उल्काएँ, उनकी खोपड़ियों का मलीदा बनाती हुई ज़मीन पर गिरीं।' वुन्टनब्रॉस ने तेज़ हवा के बीच चीखते हुए कहा।

'मगर...हम जा कहाँ रहे हैं? क्या इसे मालूम है, हमें कहाँ जाना है?' मकास ने चीखकर पूछा।

हूनास्पॉटी उसके इस सवाल पर बस मुस्कराकर रह गया लेकिन वुन्टनब्रॉस ने उसकी बात का जवाब दिया, 'इसे तुमसे ज़्यादा मालूम है कि हमें कहाँ जाना है...अब मुँह बन्द करो, वरना अगर इसकी लार तुम्हारी साँस के भीतर चली गई तो तुम्हारे फेफड़े एक झटके से फट जाएँगे।'

पायथोफ़ैण्ट के पंजों में दबे, पाँचों हवा में उड़ रहे थे। पत्थर का मैदान अब पीछे छूटता जा रहा था। बहुत देर तक वो उड़ता रहा...कितनी घाटियों और पर्वतों के ऊपर, नदियों के ऊपर...और एक घने जंगल के ऊपर से भी वो गुज़रे। फिर अंत में एक विशाल पहाड़ी नज़र आई, जिसकी ऊँचाई देखकर हैरत भी दाँतों तले उँगली दबा लेती। उसका सिरा कहाँ था, ये पता ही नहीं चल रहा था क्योंकि जहाँ तक भी वो देख पा रहे थे, वहाँ से आगे वो घने बादलों में छिपी हुई थी।

मुझे आज की रात उस बर्फ से निपटना है, जो मेरी गुफा के मुहाने को लगभग बन्द कर देने पर आमादा है। दो दिन से बाहर इतनी बर्फ पड़ रही है, गुफा का मुँह लगभग बन्द होने के कगार पर है। मैंने पहली रात कुछ बर्फ हाथों से हटाने की कोशिश की लेकिन जितनी मैं हटा पाया, उससे ज्यादा अगली रात तक जम गई। मैं आज दिन में भी कुछ ज्यादा छेनी–हथौड़ी नहीं चला पाया, पहली बार मुझे लगा, उम्र मुझ पर हावी होने लगी है। परन्तु एक बात तय है, इस दास्तान को इन पथरीली दीवारों पर खोदने से पहले मैं खुद को कुछ नहीं होने दूँगा।

मेरे पिता अक्सर एक प्राचीन कहावत कहा करते थे–**'इंतजार की छेनी, वक्त की हर वषनी चट्टान को काट सकती है, बशर्ते उस पर धैर्य के हथौड़े की चोट लगातार पडती रहे।'**

मेरी गुफा की दीवारों पर रहने वाली एक *फ्रोजन* मकड़ी, कई दिन से दिखाई नहीं दी है। शायद वो किसी का शिकार बन गई है या फिर शिकार की तलाश में निकली है। मैंने कई दिन से कुछ नहीं खाया है। खाने की बात पर मुझे याद आए वो दुर्लभ फल, जो संथाल के बेटों को उस पहाड़ी पर खाने को मिले, जिसकी चोटी बादलों में छिपी थी। वो प्राचीन स्वर्ण–फल **बूगाबगोस**, जिसे हाथ में लेने मात्रा से, हथेली सुनहरी हो जाती है। **कैगीनस** का वो अद्भुत फल, जिसे दुनिया की सबसे लम्बी नदी के तट पर रहने वाली माताएँ, अपने बच्चों को इसलिए खिलाती है, ताकि उनकी जबान में मिठास आ सके।

मैंने आज काफी पत्थर काटे हैं। इस दास्तान के वो हिस्से छेनी से उकेरे हैं, जो संथाल के बेटों के सफर का अहम पड़ाव बने। वो **जल–प्रेत**, जिन्हें अपने ऊपर पानी के छींटे उड़ाए जाना पसन्द नहीं था। साथ ही वो रहस्यमय बुजुर्ग, जिसकी पीठ पर कछुए का खोल चढ़ा था और पेट पर सरीसृपों जैसी धरियाँ थी। उस विशाल पेड़ पर बना वो **काठ–घ र**, जहाँ उन्होंने प्राचीन गैडीग्लास्ट लिपि में लिखी वो किताब पढ़ी, जिसमें जिक्र था **बोहिया–हकूक** का, जिसका खुर अगर कहीं टूटकर गिर जाए तो उस जगह पर अकाल पड़ने लगता। काठ–घर, जहाँ उन्हें पता चला उस शातिर बूढ़े के अतीत के बारे में, जिसने उन्हें इस ख़तरनाक सफर पर भेजा था। लेकिन इन सब बातों को ऐसे संक्षेप में बताने से बेहतर है, मैं अपनी आँखें बन्द करके, उनके साथ इस सफर पर चलूँ, ताकि उस गर्द को अपनी नाक में महसूस कर सकूँ, जो उनके कदमों से उडी।

काठ-घर

अध्याय ग्यारह

पायथोफैण्ट उन्हें लेकर ऊपर उठता जा रहा था। सुर्ख चट्टानें और ऊबड़–खाबड़ पत्थरों के ऊपर से होता हुआ, वो इतनी उँफचाई पर पहुँच गया, जहाँ से नीचे कुछ भी दिखना संभव नहीं था। पहाडी के ऊपर, वो एक समतल मैदान था... इतना बड़ा कि उसमें अच्छी–भली दो सेनाएँ आमने–सामने खडी हो सकती थीं। उसकी तीन दिशाएँ उँफची चट्टानों और पत्थरों से सुरक्षित नजर आ रही थीं और एक तरफ दूर तक फैला घना जंगल दिख रहा था, जिसके भीतर एक चौडी पगडण्डी जा रही थी।

पायथोफैण्ट ने विशाल पंख फड़फड़ाए...धूल और गुबार की वजह से उन्हें कुछ भी दिखना बन्द हो गया। उसने उन्हें ज़मीन से हाथ भर ऊपर से ही अपने पंजों से ऐसे छोड़ दिया, जैसे वो अब उसके किसी काम के न रहे हों। वो बहुत ज़ोर से जमीन पर गिरे। पायथोफैण्ट जैसे आया था, वैसे ही पंख फड़फड़ाता हुआ उड़ गया। जंगल के ऊपर जाकर, वो दिखना बन्द हो गया।

'सालन पहले ही पहुँच चुके होंगे।' हूनास्पॉटी ने अपने चेहरे पर जम गई गर्द झाड़ते हुए कहा। अब तक बाकी चारों भी लडखड़ाते हुए खडे हो चुके थे।

'यही है थोरोज की पहाड़ी, जहाँ हमें आना था?' जरूस के चेहरे पर सवालिया निशान था।

उसने वुन्टनब्रॉस की तरफ ऐसे देखा, जैसे कह रहा हो जल्दी मेरे सवाल का जवाब दो, लेकिन उसने जवाब में कुछ नहीं कहा। मकास का कण्ठ प्यास के मारे तिड़कने लगा था। उसे ऐसा लग रहा था अगर जल्दी ही उसे पानी नहीं मिला, तो उसके हलक में दरारें पड़ जाएँगी।

'क्या तुम मुझे बताओगे कि हमें पानी कहाँ मिलेगा?' उसने बेचैन होकर हूनास्पॉटी की तरफ देखा।

'हर तरफ...हर तरफ तुम्हें पानी मिलेगा।' उसने मकास की तरफ देखा और लापरवाही से बोला।

मकास, उसकी बात सुनकर कुछ भी नहीं समझ पाया। उसने खोजने वाले अंदाज़ में अपने चारों तरफ नज़र घुमाई लेकिन कहीं पानी का एक कतरा तक नज़र नहीं आया।

'अगर तुम पहेलियाँ बुझा चुके हो तो अब मुझे बताओ, पानी कहाँ मिलेगा?'

हूनास्पॉटी ने मुस्कराते हुए, चट्टानों पर पड़ा एक बड़ा पत्थर उठाया और अपनी उँगली से उसमें छेद करने की कोशिश करने लगा। तीनों ने हैरत से देखा, उसकी उँगली पत्थर के भीतर धँसती चली जा रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे वो बेहद मुलायम हो। फिर तेज़ी से उसने अपनी उँगली बाहर खींच ली, पत्थर में भीतर तक छेद हो गया था।

'लो अब तुम अपनी प्यास बुझा सकते हो, मगर जल्दी करो, हमें वक़्त रहते चुनिन्दा–समूह के सदस्यों के पास पहुँचना है।' हूनास्पॉटी ने पत्थर मकास की तरफ बढ़ाते हुए कहा।

उसने पत्थर उसके हाथ से ले लिया, छोटे छेद के भीतर झाँक कर उसने देखा, पत्थर में पानी भरा हुआ था। उसने तेज़ी से उसे ऊपर उठाया और इस तरह से पानी की धार अपने होठों पर उडेली जैसे एक–एक बूँद पी जाना चाहता हो।

'चाहो तो तुम भी इसी तरह अपने गले को तर कर सकते हो...' वुन्टनब्रॉस ने एक बड़ा पत्थर उठाया और उसमें अपनी उँगली से छेद करके, तेज़ी से पानी पीने लगा।

सलार और जरूस ने हिचकते हुए एक–एक भारी पत्थर उठाया। उसे हाथ में उठाते ही उन्हें ऐसा लगा जैसे उनकी उँगलियाँ उसके भीतर धँसी जा रही हों।

पत्थर वाकई बहुत मुलायम था। उन्होंने सावधनी से उँगली भीतर घुसाकर पत्थर में छेद किया और वुन्टनब्रॉस की

तरह पानी पीने की कोशिश करने लगे लेकिन इस कोशिश में जरूस को पफन्दा लग गया। तेज खाँसी के साथ, ढेर सारा पानी उसके कपड़ों पर बिखर गया।

'अगर कुछ खाने के लिए भी मिल जाता तो इस ठण्डे पानी का मज़ा दोगुना हो जाता हूना।' मकास ने अपने होठों को पोंछते हुए कहा।

'तुम्हें जो खुशी मिली हुई है, उसे नष्ट करने का सबसे शानदार तरीका ये है, जो तुम्हें नहीं मिला, उसके गम में उदासी का लिहाफ़ ओढ़ लो।' वुन्टनब्रॉस ने मुस्कराते हुए कहा।

'यहाँ का हर पत्थर, पानी से लबालब भरा हुआ है और हर पेड़ स्वादिष्ट फलों से लदा है। अगर तुम्हें भूख लगी है तो तुम कुछ खा सकते हो, लेकिन अभी नहीं, बस एक बार हम जंगल तक पहुँच जाएँ, उसके बाद।' हूनास्पॉटी ने तीनों की तरफ़ जानकारी देने वाली नज़रों से देखते हुए कहा।

उसने जंगल के भीतर जाने वाली पगडण्डी की तरफ़ चलने का इशारा किया। पाँचों अब बिना वुफछ कहे उस पर बढ़ चले। जैसे–जैसे वो जंगल में प्रवेश करते जा रहे थे, उनकी हैरत का बदन जवान होता जा रहा था। ऐसे पेड़–पौधे और लताएँ उन्होंने जिन्दगी मे पहले कभी नही देखी थीं। मकास ने उत्सुकतावश उस फल को छू लिया, जो साँझ के झुकमुके में ऐसे चमक रहा था, जैसे उसके भीतर सोने का तरल भरा हुआ हो। उसने देखा, उसकी सुनहरी हथेली और भी ज़्यादा सुनहरी हो गई, जैसे पूरे हाथ पर सोने का बुरादा मल दिया हो।

'ये **बूगाबगोस** है। इसे स्वर्ण–फल भी कहते हैं। जिस्मानी–कीमिया की विधियों पर काम करने वाले प्राचीन गुरु, अपने शिष्यों को इसे चुपके से खिलाते थे। उनकी आँखों पर पट्टी बाँधकर...ये फल, खाने वाले के जिस्म में सोने की मात्राा को बढ़ाता है और उसे वो रहस्यमयी ताकतें सौंपता है, जो इतनी ही दुर्लभ हैं, जितना ये फल। तुम इस विधि से गुजर चुके हो नौजवान...ये साफ़ दिख रहा है।' वुन्टनब्रॉस ने सोने जैसी रंगत वाले मकास की सुनहरी देह पर नजर गडाते हुए कहा।

उसे याद आया, जब वो अपने बूढ़े गुरु के पास था, शाम को खाने से पहले, एक कटोरा भरकर गूदेदार फल उसे खिलाए जाते थे लेकिन उससे पहले, हमेशा उसकी आँखों पर कसकर पट्टी बाँध दी जाती। पट्टी क्यों बाँधी गई है, ऐसे सवाल पूछने की सख़्त मनाही थी।

वहाँ स्वर्ण–फल बूगाबगोस था, तो शहद जैसे गाढ़े तरल से भरी हुई **होरीन** लताएँ भी थीं, जो भीतर से खोखली और बाहर से खाए जाने लायक़ थीं। एक डाल पर उन्होंने प्राचीन कथाओं में वर्णित, गूदेदार खजूर, **बीरीसीरी** लटका देखा, जिसे खाकर रेगिस्तानी क़बीले के एक सरदार को बीस बरस तक भूख नहीं लगी थी।

वुन्टनब्रॉस ने ख़रबूजे जैसे बडे तीन फल, एक डाल से तोड़कर उन्हें दिए। 'ये **कैगीनस** का फल है, सबसे बडी नदी के किनारे बसे प्रान्तों की माताएँ, इसे अपने बच्चों को इसलिए खिलाती हैं, ताकि उनके लहजे में मिठास आ सके। माना जाता है, इन्हें खाने से ज़बान में नरमी आती है और फिर, इन्सान अपने लफ़्ज़ों के जादू से, किसी को भी अपना बना सकता है। लेकिन इसके लिए इसे बचपन से ही खाया जाना ज़रूरी है।'

हूनास्पॉटी ने एक–एक फल तीनों की हथेली पर रख दिया। वो ऐसे टूट पड़े जैसे जनम–जनम के भूखे हों।

काफ़ी देर चलने के बाद, वो एक ऐसी जगह पर पहुँचे, जहाँ से पगडण्डी दो रास्तों में फट रही थी। हूनास्पॉटी पल भर के लिए ठिठका और फिर दाहिनी तरफ़ वाली पगडण्डी पर बढ़ चला।

'तुम्हें ठीक से याद है ना हूना...हमें इसी तरफ़ जाना है?' वुन्टनब्रॉस ने उसकी तरफ़ देखते हुए पूछा।

उसने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया, बस सहमति में अपनी गर्दन आहिस्ता से हिला दी।

'हमने अपनी ज़िन्दगी में इतने स्वादिष्ट फल और जड़ें कभी नहीं खाईं।' जरूस ने अपने मुँह पर लगे रस को पोंछते हुए कहा।

'ये थोरोज़ की पहाड़ी है। यहाँ हर चीज़ में मिठास और अपनापन भरा है, बुराई और कड़वाहट यहाँ क़दम भी नहीं रख सकतीं। इसीलिए सालन ने इस जगह को चुना है, उस जंग की तैयारी के लिए, जो सारी दुनिया के भविष्य पर मँडरा रही है।' हूनास्पॉटी ने जरूस की बात का जवाब देते हुए कहा।

'थैजोथार तुम्हें कैसे जानता था? उसकी बातों से लगा जैसे तुम्हारी उससे कोई पुरानी दुश्मनी भी है।' सलार ने हूनास्पॉटी की तरफ़ देखते हुए पूछा।

'हाँ, पुरानी दुश्मनी...बरसों पहले वो माहूज के दरबार की चाकरी करता था। उसने बहुत से मासूमों पर जुल्म किए। माहूज शासक डैलोस की मौत के बाद, उसने जान बख़्श देने की गुहार लगाई और पैरों में पडकर गिड़गिड़ाया। हर किसी

का मानना था कि वो परम दुष्ट है, उसे अपने किए की सजा मिलनी चाहिए लेकिन नए राजा मैसानस का मानना था कि उसे जीने का एक मौका दिया जा सकता है। इसीलिए उसकी पूँछ कुचलकर उसे राज्य से निकाल दिया गया लेकिन जन्मजात दुष्टता को समाप्त किया जा सकता है, बदला नहीं जा सकता। मौका मिलते ही, वो अपनी करनी से बाज नहीं आया। इसका हमला केवल पुरानी दुश्मनी के लिए नहीं था। इस वक्त, इसके इस जगह पर मौजूद होने का मतलब बहुत गहरा है।' हूनास्पॉटी ने कुछ समझने वाले अंदाज में अपना सिर हिलाते हुए कहा।

कुछ देर चलने के बाद उन्हें लगा, रात होने लगी है लेकिन जंगल के पेड़ों के बीच काफी रोशनी थी। कुछ पेड़ों के पत्तों से रोशनी फूट रही थी तो कुछ जड़ों और फलों से। फिर पगडण्डी ख़त्म हुई और वो घास के एक बेहद छोटे मैदान में पहुँचे, जिसके बीचोबीच स्वच्छ पानी का एक पारदर्शी तालाब था। उसके पथरीले किनारों तक पानी लबालब भरा हुआ था। तालाब के एक किनारे पर दो विशाल पेड़ों के बीच काठ का बना एक बड़ा घर था, जो काफी उँचाई पर था। उस तक जाने के लिए, पेड़ के तने के साथ चिपकी हुई एक गोल सीढ़ी थी, जो लकड़ी की बनी हुई थी।

पेड़ पर बने उस घर को देखकर वुन्टनब्रॉस ने रुकने का इशारा किया। 'हम पहुँच गए।'

उसकी बात सुनकर तीनों ने एक–दूसरे की तरफ देखा।

'सालन हमारा इंतजार कर रहे होंगे वुन्टन...हमें जल्दी करनी चाहिए।' हूनास्पॉटी की आवाज में अब चिन्ता झलक रही थी।

'क्या वो यहाँ, ऊपर रहते हैं, लकड़ी के बने इस बड़े घर में?' मकास ने उत्सुकता से पूछा।

'वो यहाँ रहते नहीं, केवल *प्रवास* करते हैं...या फिर किसी *गुप्त-सभा* के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं।' वुन्टनब्रॉस ने रहस्यमयी आवाज में कहा।

'...गुप्त–सभा...!' मकास ने हैरानी से उसकी तरफ देखा। 'उन्हें इसकी क्या ज़रूरत पड़ती है?' उसकी आवाज़ में अचरज के साथ–साथ सवाल भी तैर रहे थे।

'सालन को जानने के लिए कई जन्म भी कम हैं बच्चे...वो उससे भी पहले से लोगों को मुसीबतों और बुरी ताक़तों से बचा रहे हैं, जब तुम्हारे *पड़दादा* के *लकड़दादा* अपने *पड़दादा* की गोद में खेलते होंगे।' हूनास्पॉटी ने पेड़ के तने के चारों तरफ लिपटी, लकड़ी की गोल सीढ़ी पर क़दम रखते हुए कहा।

वो जीने जैसी ही थी लेकिन उसमें लगी लकड़ियाँ, इतनी टेढ़ी–मेढ़ी थीं कि एक पल को साँप होने का भ्रम पैदा होता था।

वुन्टनब्रॉस सबसे आगे चल रहा था। काफ़ी उँफचाई तक गोल–गोल चढ़ने के बाद, लकड़ी के बने एक बड़े, बन्द दरवाज़े ने उनका रास्ता रोक दिया। वुन्टनब्रॉस ने दरवाज़े पर दस्तक दी। किसी के चलकर आने की आवाज़ आई और खड़खड़ाहट के साथ किसी ने दरवाज़ा खोल दिया। उसने देखा, वो हूज़ा प्रान्त से आया रैक्टिकस ड्रॉन था...हर तरह के शापों, वरदानों और मन्त्रों का रूप बदलकर, उन्हें शुभ या अशुभ में परिवर्तित कर देने का हुनर रखने वाला, बैम्बूस प्रजाति का लम्बा और पतला जंगबाज़।

उसका पतला, गठा हुआ जिस्म बल खाता हुआ चल रहा था। उन्होंने देखा, छत इतनी उँफचाई पर थी कि रैक्टिकस की लम्बी टाँगों और लम्बे ध्ड़ पर टिका उसका लम्बूतरा सिर, कहीं नहीं टकरा रहा था।

लकड़ी के फ़र्श पर उनके क़दमों की ध्म–ध्म गूँजी तो भीतर से आवाज़ आई, 'हम तुम्हारा ही इंतज़ार कर रहे थे हूना.. .सब लोग भीतर चले आओ।' उन्होंने सालन की भारी आवाज़ को पहचान लिया।

एक चौड़े बरामदे से होते हुए, वो भीतर पहुँचे। वो एक बड़ा कमरा था। छत, फ़र्श, दीवारें सब लकड़ी का बना हुआ। भीतर केवल चार व्यक्ति थे, रैक्टिकस ड्रॉन, टेक्सिन क़बीले से आया कास्टन ब्रूड, खोखले पहाड़ों से आया, स्कीनिया ब्राज.. .और सालन...दुनिया का सबसे उम्रदराज़–शिशु।

'पायथोफैण्ट समय पर पहुँच गया था न बच्चो?' सालन ने उनकी तरफ़ ऐसी नज़रों से देखा, जैसे अपने सवाल का जवाब उसे पहले ही मालूम हो।

जरूस और सलार चुप रहे लेकिन मकास ने अभिवादन करते हुए कहा, 'वक्त पर न पहुँचता सालन तो शायद आज आप हमें यहाँ ज़िन्दा न देख रहे होते। हमारी जान बचाने के लिए शुक्रिया।'

'हम्मम...वो कभी देर नहीं करता, आते ही उसने अपनी शिकायत भी दर्ज करा दी है। उसे उन पहाड़ी कीड़ों को खाने का मौका नहीं मिला,, इसलिए नाराज है।' सालन ने उन्हें बैठने का इशारा करते हुए कहा।

कमरे मे बैठने के लिए लकड़ी के गोल ठूँठ पड़े हुए थे। जैसे किसी गोल तने का टुकड़ा काटकर रख दिया हो। उन्होंने बड़ी गहराई से महसूस किया कि वहाँ की हवा में एक मदहोश कर देने वाली, बड़ी मीठी–सी खुशबू समाई है।

'**एरोमाब्रीस** के पेड़ पर इन दिनों फूल आए हुए हैं। लकड़ी, इसकी खुशबू को सोखती है, इसी वजह से तुम्हें यहाँ इतनी खुशबू महसूस हो रही है।' सालन ने उस बन्द खिड़की को भी खोल दिया, जो मकास के ठीक सामने थी।

'तुम्हें रोकने की कोशिशें नाकाम रहीं, इसकी हमें खुशी है। तुमने बहुत बहादुरी और समझ से काम लिया नौजवान, जब तुम्हारे बाकी साथी, उस पेड़ के तने में कैद कर दिए गए।' सालन ने तारीफ करने वाली निगाहों से जरूस की तरफ देखा।

'...और थैजोथार से भी तुम लोग बखूबी निपटे, लेकिन वो जन्मजात धूर्त और दुष्ट है। हमें मालूम था, तुम सब लोगों को यहाँ तक पहुँचने में मदद की जरूरत पड़ेगी, इसीलिए हम तैयार थे।' सालन ने चहलकदमी–सी करते हुए कहा।

'तुम्हें अपना पुराना हिसाब चुकता करने का मौका मिलेगा हूना...बहुत जल्द थैजोथार भी तुम्हारी उँगलियों की गिरफ्त में होगा। तुम्हारी कसमसाहट को हम बखूबी महसूस कर सकते हैं।' सालन ने हूनास्पॉटी की तरफ मुस्कराकर देखा।

'बरसों पहले, उसे जिन्दा छोड़ देना ही गलती थी महान सालन...वो जन्मजात दुष्ट है।' हूनास्पॉटी ने बड़े अदब के साथ सालन की तरफ देखा।

'क्या अब हम जान सकते हैं कि आपने हमें यहाँ क्यों बुलाया है सालन और इन सारे वाकियात में हमारे होने की वजह क्या है?' मकास की आवाज़ में नरमी और विनम्रता के रेशे थे।

'माथेल्टन की गुफा में, हमने तुम्हें और तुम्हारे भाइयों को बहुत कुछ बता दिया था नौजवान...लेकिन ऐसा भी बहुत कुछ था, जिसका वहाँ जिक्र तक नहीं किया जा सकता था। उसके बारे में बात करने के लिए, सबसे सुरक्षित और गुप्त जगह थोरोज की पहाड़ी ही हो सकती थी लेकिन हमने सबको अलग–अलग आने के लिए कहा, क्योंकि समूह के साथ, सतर्कता कम हो जाती है और इससे भेदियों को पीछा करने में भी सहूलियत रहती है। कुछ लोग *ख़ास* जगहों पर *ख़ास* वजहों से भेजे गए हैं। कुछ दिनों में सब आ जाएँगे लेकिन तब तक दूसरी तैयारियाँ करने का वक्त है। वो रहस्यमयी किताब, जो सारी दुनिया का भविष्य तय कर सकती है–**पूरी...कर...ली...गई...है**।' आख़िरी शब्दों को बोलते वक्त सालन की आवाज़ में इतना ठहराव और वज़न आ गया था कि सबका ध्यान बरबस ही उनकी तरफ़ खिंच गया।

'तुम तीनों, इन सारी घटनाओं की धुरी बन गए हो। बरसों तक एल्गा–गोरस और दुष्ट जैल्डॉन का कुछ पता नहीं था। दुनिया के हर कोने में ढूँढने वाले हमारे भेदिए मायूस होकर थक गए, हमारी और हमारे साथियों की सारी ताकतें उसका पता लगाने में नाकाम रहीं। आखिरकार ये मान लिया गया कि अब वो किताब कभी वापस नहीं लौटेगी और जैल्डॉन कहीं मर–खप गया होगा। लेकिन ये सच नहीं था, तुम्हारे सफ़र के पहले दिन से, जिन रहस्यमय प्राणियों ने तुम्हारा पीछा किया, वो किसी के हुक्म पर नहीं चलते। वो चाहे जल–गरुड़ हो, मत्स्य–नाग हो या फिर ग़ायब–गिद्ध। ये प्राणी केवल एल्गा–गोरस से काबू किए जा सकते हैं। इस कड़ी में एक और नाम हम जोड़ सकते हैं, चिलटाचिलोंग का। वो बर्फ़ीला जीव है, कोई पवित्रा जीव नहीं, लेकिन उसको भी ख़बरी के तौर पर इस्तेमाल किया गया।' सालन ने चहलक़दमी करते हुए छत की तरफ से अपनी नजरें तक नहीं हटाई और बोलना जारी रखा।

'इन बातों का कभी पता भी नहीं चलता, अगर ऑथरडस्ट के ऊपर संयोगवश ग़ायब–गिद्ध की बीट न गिर गई होती। सारी कड़ियाँ एक–एक कर मिलती चली गईं। तुम्हारा पीछा कराया जाना, क्लेवरसीथ की गद्दारी, तुम्हारे भाई पर माथेल्टन में जानलेवा हमला, छह सौ हैंगी तिलचट्टों की एक साथ मौत, चिलटाचिलोंग का ख़बरी के रूप में इस्तेमाल, प्रफोगाप्रफोस की तुम सबको रोकने की कोशिश और थैजोथार का बरगलबीट की सेना के साथ हमला। ये सब महज इत्तेफ़ाक नहीं है। योजना का हिस्सा है। वो हूना की वजह से नहीं, तुम तीनों की वजह से वहाँ था। ये संकेत है हमारे लिए, उस तूफ़ान और तबाही को समझने का, जो दुनिया से कुछ ही क़दम दूर, बैठी इंतज़ार कर रही है।' सालन ने मकास के सामने वाली खिड़की पर अपनी हथेलियाँ टिका दीं और बाहर झाँका।

'लेकिन इस बात का हमें अभी तक जवाब नहीं दिया गया है सालन कि आख़िर कोई दुष्ट जैल्डॉन, हमारा पीछा क्यों कराएगा?' जरूस ने अपने गले में बहुत देर से फँसे सवाल को ऐसे उगला, जैसे अजगर किसी बड़े हिरन को बाहर उगल दे।

'...वजह जानने की वजह से ही सब यहाँ हैं...माथेल्टन इस काम के लिए सुरक्षित जगह नहीं थी। क्या तुम हमें ये बताओगे नौजवानो कि तुम्हारे इस सफ़र की शुरुआत क्यों और कैसे हुई? शायद वहीं से वो बिखरी हुई कड़ियाँ मिल सकें,

जिन्हें जानने की तलब तुम्हारे भीतर उबल रही है।' सालन ने तीनों की तरफ सवालिया नजरों से देखा।

मकास ने सालन की तरफ़ देखा और कहना शुरू किया–'हम संथाल–पुत्रा जरूस, सलार और मकास। घने जंगल के बीचोबीच बसे गाँव में हमारे पिता और बाकी कबीले वाले साथ रहते हैं...हम गाँव के पहले बच्चे थे, जिन्हें पढ़ने के लिए भेजा गया, उन तीन महान गुरुओं के पास, जिनके बारे में कहा जाता है कि वो पिछले तीन सौ पच्चीस साल से ज़िन्दा हैं। उनमें से एक दुनिया के मशहूर ज्योतिषी हैं, जो तलवारबाज़ी के हुनर में अनूठे हैं, जिनकी भविष्यवाणियों की धार, उनकी तलवार की तरह ही तेज है। दूसरे विख्यात दार्शनिक और महान तीरंदाज़, जिनके तर्क उनके तीरों से भी अधिक नुकीले और तीखे हैं और तीसरे महान संगीतकार और छुरेबाज़ी के उस्ताद। बरसों तक हमने उनके क़दमों के पास बैठकर, वो सब हुनर सीखा, जिसे दुनिया में केवल मुट्ठी भर लोग ही जानते हैं।' मकास एक बार साँस लेने के लिए रुका और फिर बोलना जारी रखा।

'हमें एक बूढ़े फ़कीर की रहबरी में भेजा गया। वो बूढ़ा फ़कीर, जो बरसों में कभी–कभी गाँव में आता। हमारे पिता ने वादा किया, अगर वो उसके बेटों को सही–सलामत वापस ला सका तो वो उसे उसकी रहबरी की मुँहमाँगी क़ीमत देंगे। वो हिफ़ाज़त से हमें ले गया, जंगल के ख़तरों और जंगली प्राणियों से बचाता हुआ और हमें उतनी ही हिफ़ाज़त से वापस भी लेकर आया। बस एक अजीब बात थी, इन बरसों में उसका *क़द* आश्चर्यजनक रूप से *आधा* रह गया था।' मकास की बात सुनकर सब ऐसे उछले, जैसे पेड़ का वो ठूँठ, जलते अँगारों में तब्दील हो गया हो, जिस पर वो बैठे थे।

रैक्टिकस ने कुछ कहने के लिए अपने होंठ खोले ही थे कि सालन ने अपनी हथेली ऊपर उठाकर, उसे चुप रहने का इशारा किया। जैसे कहा हो 'उसे अपनी बात पूरी करने दो'।

मकास ने दोबारा बोलना शुरू किया, 'उसने अपनी रहबरी का क़ौल पूरा करने के लिए हमारे महान पिता से एक सुराही पानी माँगा, जिसमें *गीलापन* न हो।'

इस बार वो सब चिहुँक कर ऐसे खड़े हो गए, जैसे अचानक उनके आसनों में काँटे उग आए हों। रोकने की कोशिश करने के बाद भी कास्टन ब्रूड के होंठों से **'हे ईश्वर...ये वही है!'** निकल गया।

'उसके बाद, हमने अपना सफ़र शुरू किया, लेकिन हमारे सफ़र के पहले दिन से ही एक जल–गरुड़ हमारा आगा कर रहा था, वो एक निश्चित दूरी बनाकर, बर्फ़ की सतह के नीचे, हमसे आगे उड़ रहा था। उसके बाद मत्स्य–नाग, गायब–गिद्ध और बाक़ी वो सब बातें तो आप जानते ही हैं, जो इस बीच घटा है।' मकास ने अपनी बात पूरी की।

'तुम्हें मोहरा बनाया गया है...बहुत बड़ा षड़यन्त्रा रचा गया है। अब हमें कुछ–कुछ समझ आ रहा है। हर घटना, एक–दूसरे से जुड़ी है। वो अपने ख़ास मक़सद की वजह से ये सब कर रहा है। बहुत दूर की और बहुत ख़तरनाक चाल चली गई है। तुम तीनों की जान बेहद ख़तरे में है। कास्टन...तुम बाक़ी लोगों को फ़ौरन वहीं रुकने के लिए सन्देश भेजो, जहाँ–जहाँ वो हैं। रैक्टिकस...अभी जंगल के भीतर रवाना हो जाओ। फ़ौरन थोरोज़ को सारे मामले की खबर करो। स्कीनिया...तुम इन नौजवानों के आराम करने का इंतज़ाम करो, इस लम्बे सफ़र के बाद ये बहुत थक गए होंगे।' सालन ने स्कीनिया ब्राज की तरफ़ देखते हुए कहा।

'ठहरिए...' जरूस की आवाज़ ने सालन को पलटने पर मजबूर कर दिया।

'आपने अभी कहा, हमें *मोहरा* बनाया गया है, बहुत बड़ा षड़यन्त्रा रचा गया है। आपकी इन सब बातों को जानने का हमें पूरा हक़ है और हमें जाननी चाहिएँ।' जरूस ने सालन की तरफ़ देखते हुए गम्भीरता से कहा।

सालन ने खिड़की से अपनी हथेलियाँ हटाईं। 'उतावलापन, सही जवाब मिलने में बाध पैदा करता है। आज रात तुम्हें आराम की ज़रूरत है। तुम्हें हर सवाल का जवाब मिल जाएगा। उन सवालों का भी, जो अभी तुमने किए नहीं हैं।'

'मगर सालन...' सलार ने कुछ कहना चाहा लेकिन वुन्टनब्रॉस ने उसे इशारे से मना कर दिया।

'अब तुम लोग आराम करो, सफ़र की थकान और चिलटाचिलोंग की पीठ की सवारी ने, तुम्हारी पीठ ज़रूर अकड़ा दी होंगी।' सालन ने पेड़ के तने से लिपटे गोल ज़ीने की तरफ़ बढ़ते हुए कहा।

कास्टन ब्रूड और रैक्टिकस ड्रॉन, कुछ पल तक तो वहीं खड़े रहे लेकिन फिर वो भी सीढ़ियाँ उतरकर नीचे चले गए। रात अब बढ़ने लगी थी।

स्कीनिया ब्राज का बिना हड्डी वाला लिजलिजा शरीर, बल खाता हुआ एक कमरे की तरफ़ बढ़ा। 'तुम सबके आराम करने के लिए नरम बिस्तर तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं। तुम्हारे बिस्तरों के पास स्वादिष्ट भोजन भी प्रतीक्षा में है। बशर्ते तुम्हें कुछ खाने की भूख बाक़ी बची हो। सालन ने बताया कि तुम लोग सारे रास्ते, मीठे फल और जड़ें खाते हुए आए हो।'

उन तीनों को एक बार इस बात पर हैरानी हुई कि उन्हे उनके बारे में ये भी पता था। लेकिन फिर अपनी सोच को झटक कर वो उस कमरे की तरफ बढ़ चले, जिस तरफ स्कीनिया ब्राज ने इशारा किया था। भीतर जाकर उन्होंने देखा। तीन नरम, सफेद बिस्तर और एक तिपाई पर कुछ फलों के साथ अजीब से बर्तनों में खाने के लिए कुछ सामान रखा गया था।

'क्या तुम्हें इन सब बातों पर विश्वास है?' मकास ने जरूस की तरफ देखा।

'विश्वास...नहीं मुझे जरा भी *विश्वास* नहीं हैं। मैं *जानता* हूँ, ये सब *सच* है। सितारे इस बारे में इशारे दे चुके हैं।' जरूस ने गहरी साँस लेते हुए कहा।

'हमारा इस्तेमाल किया गया है।' सलार ने लकड़ी की छत की तरफ इस तरह देखा, जैसे उसकी नजर उसके पार चली जाएगी।

'*शायद*...या यूँ भी कहा जा सकता है...*पक्का*।' मकास ने पास की तिपाई पर रखा पानी का बर्तन उठाकर, उसमें से एक छोटे बर्तन में पानी उडेला।

'सालन ने रेत–घड़ी के टूटने पर कोई चिन्ता नहीं जताई और तुमने भी नहीं...क्या वो हमारे लिए जरूरी नहीं?' सलार ने जरूस से पूछा।

'रेत–घड़ी एक *भेदिया-यन्त्रा* थी। दिशा बताने वाला उपकरण...उसकी मदद से हमारी सही दिशा और जगह का पता लगाया जा रहा था। सालन को उस यन्त्रा की मौजूदगी महसूस हो गई थी। इसलिए क्लेवरसीथ उसे नष्ट करना चाहता था। लेकिन वो उसे माथेल्टन की गुफा से बाहर नहीं ले जा सका। उसने छत पर उसे तोड़कर फेंक दिया मगर सालन को इस बात का पता चल गया।' जरूस ने बिस्तर पर अपनी पीठ टिका ली और आँखें बन्द कर लीं।

'यानि...तुम्हारा मतलब...वो...बौना...फकीर!' सलार की आवाज में अचरज के भाव थे।

'हाँ...वो हमें दी ही इसलिए गई थी ताकि हमारी सही मौजूदगी का पता लगाया जा सके।' जरूस ने बहुत सहज भाव से उत्तर दिया।

'तुमने देखा, उस बूढ़े का कद *आध* रह जाने की बात पर वो सब कैसे चौंक गए थे...क्या वो उसे जानते हैं या फिर कोई और बात थी?' मकास ने उन दोनों पर सवाल उछाला।

केवल वो बूढ़ा रहबर ही नहीं...एक सुराही पानी, जिसमें *गीलापन* न हो। इस बात को सुनकर वो सब उछल ही पड़े थे। जरूर इसमें कोई रहस्य है। लेकिन ये तय है, सुबह होने से पहले हमें हमारे किसी सवाल का जवाब नहीं मिलने वाला।' सलार ने कहा।

'सालन का कहना है, वो किसी विशाल कछुए की पीठ पर रह रहा है...बरसों से उसने जमीन पर पैर नहीं रखा।' सलार ने बीच में कहा।

'मगर इस सवाल का जवाब अभी तक नहीं मिला, आख़िर ऐसी कोई भी दुष्ट ताकत...हम में क्यों दिलचस्पी लेगी?' मकास ने जैसे खुद से ही सवाल किया।

'सुबह होने से पहले...इन सवालों का जवाब सालन के सिवा और कोई नहीं दे सकता और वो सुबह से पहले शायद अब न आएँ।' जरूस ने आहिस्ता से करवट ली।

दरवाज़े पर होने वाली हल्की–सी खड़खड़ाहट ने उनका ध्यान खींचा। ये स्कीनिया ब्राज था। किसी *सील* मछली की तरह बल खाता हुआ उसका जिस्म, चौखट पर आकर रुक गया। 'रात बढ़ती जा रही है। तुम्हें आराम की ज़रूरत है...सुबह जल्दी उठकर, तुम्हें कुछ ज़रूरी काम निपटाने हैं।' उसकी आवाज़ में थोड़ी सख़्ती थी।

एक बार तीनों ने एक–दूसरे की तरफ़ देखा और फिर नरम बिस्तर पर आँखें बन्द करके लेट गए।

. . . . . .

सुबह सलार की आँख सबसे पहले खुलीं। लकड़ी की दीवार में बनी एक छोटी–सी खिड़की से, धूप भीतर आ रही थी। वो बिस्तर से नीचे उतरा, उसने एक उचटती–सी नज़र पास के बिस्तरों पर बेसुध सोए, जरूस और मकास की तरफ डाली और उस कमरे की तरफ़ बढ़ गया, जहाँ कल रात उनकी मुलाक़ात सालन से हुई थी। कमरे में इस वक़्त कोई नहीं था। उसने पहली बार महसूस किया, काठ का बना वो घर, उससे कहीं ज़्यादा बड़ा था, जितना वो दिखता था।

उसने दाहिने और बाएँ बने कमरों की तरफ़ देखा और उनके भीतर जाने का फ़ैसला किया। सबसे पहले वो दाहिनी

तरफ बने कमरे की तरफ गया। ऊबड़–खाबड़ लकड़ी की चौखट और हरे दरवाज़े से होकर, वो भीतर पहुँचा। पूरे कमरे में बेहद अजीब चीज़ें भरी हुई थीं। एक कोने में दो बेहद विशालकाय आईने रखे हुए थे, जिनका आकार उसकी लम्बाई से भी ज्यादा था। टूटे–फूटे बर्तन, पुराने कपड़े...अजीब–से मर्तबान, जिनके भीतर अलग–अलग रंग के तरल भरे हुए थे। एक कोने में पुरानी किताबों का ढेर लगा हुआ था, जिन पर धूल जमी हुई थी। उनमें से कुछ, मोटे कपड़े के पश्ष्ठों पर लिखी हुई थीं और कुछ मोम की पट्टियों पर।

उसने आहिस्ता से, कपड़े पर लिखी एक किताब उठाकर उसकी धूल झाड़ी। प्राचीन गैडीग्लास्ट लिपि में लिखी, अर्द्ध–मानवों और मिश्रित प्रजाति के प्राणियों के रहस्यों की किताब थी, जिसका मुखपश्ष्ठ गायब था। उसने कपड़े के एक पश्ष्ठ के ऊपर अपनी उँगलियाँ फिराई, हर्फ उसके पोरवों पर रगड़ खा गए। उसने पहला पश्ष्ठ खोलकर विषय–सूची देखी। हजारों मिश्रित प्रजातियों और अर्द्ध–मानवों की जातियों के नाम क्रमवार लिखे गए थे। उसने एक सरसरी निगाह उन पर डाली और ऐसे ही कुछ पश्ष्ठ पलट दिए।

जो पन्ना खुला, वो किसी **बोहिया–हकूक** नाम की प्रजाति का था। जिसके बारे में बहुत बारीकी से वर्णन किया गया था। उसने पढ़ना शुरु किया–

> **'बोहिया-हकूक...दुनिया के सबसे प्राचीन अर्द्ध-मानवों में से हैं। गैंडे, घोड़े और इंसान की मिली-जुली नस्ल वाले ये प्राणी, सैंकड़ों रहस्यमयी ताक़तों के मालिक होते हैं। बोहिया-हकूक की बस्तियों में सैंकड़ों इबादतगाह मिलती हैं। हर अमावस और पूनम की रात, ये एक इबादतगाह का निर्माण करते हैं। इनके लिए, बस्ती के देवता पूज़ोनियाक से अधिक पवित्र और दिव्य कोई शक्ति नहीं होती। पूरी तरह शाकाहारी ये जीव, द ास, फल और पत्ते बड़े चाव से खाते हैं। किंवदन्ती है, अगर बोहिया-हकूक का खुर कहीं टूटकर गिर जाए, तो उस जगह अकाल पड़ने लगता है। बोहिया-हकूक का सबसे ताक़तवर हथियार वो लम्बे सींग होते हैं, जो उनकी हथेलियों में उगे होते हैं...**

'इन किताबों को बिना इजाज़त, छूने की इजाज़त नहीं है नौजवान।' ये आवाज़ सुनकर वो एकदम चौंक गया। उसने पलटकर देखा, रैक्टिकस ड्रॉन भीतर आ रहा था।

'म...माफ करना...मैं...तो बस...इन्हें देख रहा था।' वो एकदम सकपका गया।

'हुम्म...ठीक है, तुम लोग तैयार हो जाओ, सालन कुछ देर में आने वाले हैं। थोरोज़ भी उनके साथ होंगे।' रैक्टिकस ने वो किताब उसके हाथ से लेकर वापस ढेर पर रखते हुए कहा।

वो वापस उस कमरे में आया, जहाँ मकास और जरूस सो रहे थे। अब तक वो जाग गए थे।

रैक्टिकस उसके पीछे–पीछे कमरे में दाखिल हुआ। 'बाहर तालाब में जाकर तुम नहा सकते हो लेकिन ध्यान रखना, उसमें कुछ **जल–प्रेत** रहते हैं, तुम्हारी वजह से उन्हें कोई तवफलीफ़ न हो।'

बहुत दिनों बाद नहाने का मौका और वक़्त मिल पाया था, इसलिए तीनों तेजी से अपने कपड़े उठाकर, लकड़ी के ज़ीने की तरफ़ बढ़ चले। गोल ज़ीने को उतरकर वो उस छोटे तालाब तक पहुँचे, जिसका पानी शीशे की तरह पारदर्शी और साफ़ था। तालाब की तलहटी में पड़े चमकीले पत्थर, धूप पड़ने की वजह से दमक रहे थे। उन्होंने बिना एक पल की देरी किए, छलाँग लगा दी। इतना साफ़ पानी, उन्होंने अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था। ऊपर से पड़ी सूरज की किरणें, छोटी–छोटी घास और बीच–बीच में तैरती एक–दो मछलियाँ, जिनकी पीठ पर ऊँफट जैसा कूबड़ था।

'चलो तलहटी से चमकीले पत्थर लेकर आते हैं।' सलार ने उत्साहित होकर जरूस की तरफ देखा।

'मैं बचपन में भी तुम्हें इस खेल में हराता रहा हूँ।' जरूस ने हँसते हुए कहा।

तभी सलार को अपने दाहिनी तरफ़ किसी के होने का अहसास हुआ। उसने तेज़ी से मुड़कर देखा, वहाँ कुछ नहीं था। उसने ठण्डे पानी में डुबकी लगाई और तेज़ी से तली की तरफ़ तैरने लगा। इस बार ऐसा लगा जैसे कोई चीज़ उसके पैर के तलवों को छूकर निकल गई हो। वो किसी मछली की तरह पलटा और ऊपर देखा धुएँ जैसी कोई आकृति पानी में उभरी और फिर गायब हो गई।

उसने सतह से ऊपर अपना सिर निकाला और जरूस से पूछा, 'क्या तुमने कुछ देखा, पानी की सतह के नीचे?' जरूस ने सहमति में सिर हिलाया।

उन्होंने फिर पानी में डुबकी लगाई, इस बार वो परछाई सामने थी। वो तीन थे, पूरा जिस्म धुएँ से बना हुआ लग रहा

था। जैसे सफेद धुआँ पानी में तैर रहा हो, एक इंसानी आकृति के रूप में। दोनों ने एक साथ, जोर से पानी हिलाया, आकृति पानी में घुल गई। कुछ देर बाद वो फिर उभरी, इस बार फिर उन्होंने अपनी हथेलियाँ, जोर से चलाकर उसे पानी में घोल दिया।

तीसरी बार *वो* दोनों की पीठ पीछे उभरी और उन्हें ऐसा लगा, जैसे उनकी गर्दन पर कोई शिकंजा कस गया हो। उस धुएँ ने उन्हें अपने शिकंजे में कस लिया। वो तेजी से उन्हें तलहटी की तरफ ले जा रहा था। उनका दम घुटने लगा, साँस लेने की कोशिश में दोनों की नाक में पानी भर गया। सलार ने किसी तरह पलटकर देखा, वो धुएँ जैसी आकृति अपनी लाल आँखों से उसे घूर रही थी और सफेद धुँध से बना एक हाथ, उसकी गर्दन पर कसा था। साँस न ले पाने के कारण उसकी आँखें बाहर उबलने लगीं। उसने देखा, उससे कुछ दूरी पर जरूस भी इसी तरह छटपटा रहा था।

तभी पानी में एक 'छपाक' की आवाज़ हुई और ऐसा लगा जैसे बाहर से कोई तालाब में कूदा हो। उसने किसी को तैरकर अपनी तरफ आते देखा, वो रैक्टिकस ड्रॉन था।

वो पास आते ही जोर से चीखा–'दूर हटो...दूर हटो ये मेहमान हैं।' उसके इतना कहते ही, वो सफेद आकृति तैरती हुई दूसरी तरफ चली गई। गर्दन से पकड़ हटते ही, दोनों इस तरह सतह की तरफ तैरे, जैसे पल भर में तालाब से बाहर उड़ जाएँगे।

'हम्फ़फ...' एक तेज झटके के साथ दोनों के सिर तालाब की सतह से बाहर उभरे। वो गहरी–गहरी साँसें ले रहे थे। उन्होंने देखा, मकास तालाब के किनारे पर आराम से मल–मलकर नहा रहा था। एक पल बाद रैक्टिकस ड्रॉन भी पानी से ऊपर उभर आया।

'ये...ये क्या बला थी?' सलार ने हाँफते हुए उससे पूछा।

'मैंने तुम्हें सावधान किया था, इस तालाब में जल–प्रेत रहते हैं, उन्हे तंग मत करना। वो वैसे भी बहुत चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं। उन्हें कोई पानी में घोल दे, ये उन्हें पसन्द नहीं आता।' उसने आराम से पानी में तैरते हुए कहा।

'ये...ये जल–प्रेत थे? इन्होंने तो हमें लगभग मार ही डाला था।' जरूस ने किनारे की तरफ तैरते हुए कहा।

रैक्टिकस हँसता हुआ किनारे पर पहुँच गया।

'नहीं, ये तुम्हें मारते नहीं, ये कभी किसी को नहीं मारते। थोरोज़ की पहाड़ी पर कोई हिंसा नहीं करता। ये बस तब तक तुम्हें दबाए रहते, जब तक तुम्हारी साँस नहीं फूल जाती। इससे पहले कि तुम्हारा दम निकले, ये खुद तुम्हें सतह से बाहर फेंक देते।'

'उफ़्फ़...कमबख़्त ने मेरी गर्दन का कचूमर ही निकाल दिया।' सलार ने अपनी गर्दन सहलाते हुए, मकास की तरफ देखा, जिसकी मुस्कराहट अब गहरी होती जा रही थी।

'मैंने तालाब में उतरते ही इन्हें देख लिया था, इसलिए मैं आराम से नहा रहा था। लेकिन तुम्हे ही गहरी डुबकियों का शौक है...जाओ...लेकर आओ तलहटी से चमकते पत्थर।' मकास ने हँसते हुए कहा।

'तुम लोग जल्दी से कुछ खा–पीकर तैयार हो जाओ, सालन और थोरोज़ आते ही होंगे।' रैक्टिकस ने अपने गीले बदन से पानी पोंछते हुए कहा।

नहा–धोकर तैयार होने के बाद, वो उसी लकड़ी के चौड़े कक्ष में इकट्ठा हुए, जिसमें पिछली रात उन्होंने सालन से बात की थी। स्कीनिया ब्राज और कास्टन ब्रूड भी आ चुके थे। उन्हें ये पता नहीं लग सका कि रात को बाकी लोग कहाँ सोए थे। सुबह जब वो उठे तो उन्हें न तो वहाँ कोई दूसरे बिस्तर दिखे और न ही अन्य कोई। लकड़ी के दरवाज़े पर आहट हुई तो, रैक्टिकस ड्रॉन ने आगे बढ़कर दरवाज़ा खोला। वुन्टनब्रॉस और हूनास्पॉटी थे।

'कैसी रही तुम्हारी रात दोस्तो?' हूनास्पॉटी ने तीनों की तरफ़ देखते हुए कहा।

'मज़ेदार...बस सुबह ही ख़तरनाक थी।' मकास ने मुस्काकर सलार और जरूस की तरफ़ देखा।

नीचे, ज़ीने पर कुछ हलचल सुनाई दी तो वुन्टनब्रास तीनों के पास फुसफुसाकर बोला, 'सालन और थोरोज़ आ चुके हैं। थोरोज़ सबके लिए सम्माननीय हैं...उनसे अदब से बात करना'

वो अभी तक हैरत से उस दरवाज़े को ताक रहे थे, जिससे होकर आगन्तुक अन्दर आने वाले थे।

कास्टन ब्रूड ने दरवाजा खोला। सालन के आते ही सब खड़े हो गए...तीनों ने देखा, दरवाजे से होकर, जो अब अन्दर आ रहा था, वो इतना हैरतअंगेज़ और नाक़ाबिले–यक़ीन था कि उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

वो लगभग सालन के ही बराबर लम्बा था, पूरे जिस्म पर खुश्क चमड़ी, जो पेड़ की छाल की तरह खुरदुरी थी और त्वचा का रंग हल्का हरा। उसके पूरे पेट पर ऐसी धरियाँ थीं, जैसी सरीसृपों के पेट पर होती हैं। लम्बी गर्दन, उसके ऊपर कछुए जैसा मुँह और पीठ पर उभरा कछुए जैसा पथरीला कवच, पत्थर की ढाल की तरह लग रहा था। छोटे–छोटे हाथ और जालीदार इंसानी पैर। वैसे तो वो इन्सानों जैसा ही था लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे किसी इन्सान को कछुए की खाल पहनाकर खड़ा कर दिया गया हो। उसकी पतली ठोढ़ी पर सफ़ेद लम्बी दाढ़ी थी और चेहरे पर ऐसी झुर्रियाँ, जैसे सदियों का सफ़र तय किया हो। गोल आँखों से उसने पूरे कमरे का मुआयना किया और सब अपने–अपने आसन पर बैठ गए।

'महान थोरोज़ और सालन को हम सबका अभिवादन।' रैक्टिकस ने उनका स्वागत किया।

'तुम्हें हमारा इंतज़ार तो नहीं करना पड़ा रैक्टिकस?' थोरोज ने माथे में सलवट डालकर रैक्टिकस की तरफ़ देखा।

'नहीं महान थोरोज, आप हमेशा सही वक़्त पर होते हैं। उसने सम्मान से कहा।

'हम्मम...अच्छा हुआ, वैसे भी **इंतज़ार, वक़्त का क़त्ल करने का सबसे फूहड़ तरीक़ा है**।' थोरोज़ ने एक बार अपना सिर हिलाया और फिर उन तीनों की तरफ देखा। 'तो तुम ही वो तीन बहादुर नौजवान हो...जिनके बारे में सालन ने हमसे जिक्र किया था?' उसकी आवाज़ ऐसी थी, जैसे कोई दीमक पूरी ताक़त लगाकर लकड़ी को कुतर रही हो।

'विनाशकारी ताक़तें चारों तरफ इकट्ठा हो रही हैं, आप सही वक्त पर यहाँ आए हो सालन।' उसने अपनी सफ़ेद दाढ़ी को खुजाते हुए सालन की तरफ देखा। 'बताया गया है कि दुष्ट जैल्डॉन हम में से ही एक गद्दार की पीठ पर बैठा है, बरसों से। हैरत की बात है, किसी ने कभी ये नहीं सोचा, ज़मीन पर पैर न रखने के लिए, वो एक *कछुए* की पीठ पर दिन काटेगा।'

'ये पक्का हो गया है थोरोज़ कि वो अपनी सेना तैयार कर रहा है। इसका जीता–जागता सुबूत उस वक़्त मिला, जब वो धूर्त थैजोथार, लाखों बरगलबीट की फौज लेकर सामने आया। लोग उसके साथ मिल गए हैं। इसके कई उदाहरण हमारे सामने हैं। क्लेवरसीथ, बिल्चू, प्रफोगाप्रफोस, थैजोथार और कई दिव्य–प्राणी, जिन्हें उसने रहस्यमयी किताब की ताक़तों से काबू किया है।' हूनास्पॉटी ने लकड़ी के ठूँठ से उठते हुए कहा।

'हम्मम...और इस कड़ी में उसका नाम क्यों भूल गए हूना...जिसने इन नौजवानों और इनके पिता को, अपने षड़यन्त्रा में फँसाया। वो शातिर, शापग्रस्त बूढ़ा...**लैनीगल**, मक्कार कहीं का। वो उस पुरानी दुश्मनी को छाती से लगाए है सालन! जो उसकी ख्वाहिशों ने पैदा की।' थोरोज़ की कछुए जैसी गोल आँखों में गुस्से की लपट साफ़ दिखाई दी।

'बीच में बोलने के लिए माफ़ी चाहता हूँ सालन...लेकिन हमारे सारे सवाल अभी अधूरे हैं। जैसा कि आपने कहा–हमारे सवालों के जवाब हमें मिल जाएँगे, वो वक़्त आ गया है और हम आपसे गुज़ारिश करते हैं, हमें वो सब बताया जाए, जो हमारे लिए जानना बेहद ज़रूरी है।' सलार की आवाज़ में ज़रूरत के हिसाब से ज़्यादा नरमी थी।

सालन ने उनकी तरफ़ देखा और गम्भीर आवाज़ में कहना शुरू किया–'जिस बूढ़े बौने ने तुम तीनों को मशहूर गुरुओं के पास भेजने का प्रस्ताव, तुम्हारे पिता के सामने रखा, वो शातिर लैनीगल है, जैल्डॉन का गुरु। लैनीगल से उसने नक्षत्रा–विद्या के छिपे हुए रहस्य सीखे हैं। बैम्बूस प्रजाति के एक बच्चे की हत्या करने की वजह से, वो एक भयानक शाप का शिकार हुआ। जिसकी वजह से, एक बरस तक उसका जिस्म साधरण लम्बाई का होता है और अगले साल तक वो एक बौने का जीवन जीता है। दुनिया में इस वक़्त वो अकेला शख़्स है, जिसकी लम्बाई घटती–बढ़ती रहती है। जब तुमने इस बात का ज़िक्र किया कि उस बूढ़े की लम्बाई उसके क़द की आधी रह गई थी, हम तभी समझ गए थे कि वो शातिर लैनीगल के सिवा और कोई नहीं हो सकता।'

उन्होंने जारी रखा–'वो शापग्रस्त बूढ़ा, ताक़त और सत्ता की भूख का शिकार है। इसी भूख की वजह से उसने जैल्डॉन को नक्षत्रा–विद्या सिखाई, ताकि उसका सहारा लेकर, वो अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा कर सके। उस *पारलौकिक-शाप* से छुटकारा पाने का केवल एक तरीक़ा है, वो पानी...जिसमें गीलापन न हो। उस पानी को पीकर ही वो उस शाप से मुक्त हो सकता है। लेकिन तुम्हें इस सफ़र पर भेजने के पीछे केवल एक यही वजह नहीं है, वजह और भी हैं। ये तो वो कारण है, जिसके पीछे लैनीगल है। दूसरे कारण भी हैं, जिनके पीछे दुष्ट जैल्डॉन है। तुम्हे दी गई रेत–घड़ी एक भेदिया–यन्त्रा थी, जो तुम्हारी सही–सही मौजूदगी उस तक पहुँचा रही थी। तुम्हारा पीछा कराया जाना इस बात को पक्का करता है, जैल्डॉन की दिलचस्पी तुम में है। लेकिन उसका सही कारण क्या है, बहुत जल्द सारी ख़बरें हम तक पहुँच जाएँगी। तुम्हारा पीछा करने के लिए जितने भी प्राणियों का इस्तेमाल किया गया, वो सब छद्मावरण में प्राकृतिक रूप से माहिर थे। इसका मतलब वो तुम्हें ये भनक नहीं लगने देना चाहता कि तुम्हारा इस्तेमाल किया जा रहा है।'

वो साँस लेने के लिए रुके–'उन कारणों का पता भी लगाने के लिए हमारे साथी निकल चुके हैं, जिनकी वजह से इस काम के लिए तुम्हें ही चुना गया। उसने तीन बच्चों के बड़े होने का इंतजार किया, उन्हें उन खास गुरुओं तक पहुँचाया, जो अपने–अपने फन के माहिर हैं। उसने चालाकी से तुम्हारे पिता से वचन लिया, तुम्हें इस सफर पर भेजा, लेकिन ऐसा भी बहुत कुछ है, जो अभी खुलना बाकी है। तुम्हारे सफर की इस नदी पर कुछ टूटे हुए पुल हैं, जिन्हें जोडा जाना बाकी है। थोरोज का मानना है, इस वक्त तुम तीनों की हिफ़ाज़त बहुत जरूरी है, इसीलिए तुम्हें यहाँ लेकर आया गया है।'

मकास ने सालन की बात पूरी होते ही चुप्पी तोड़ी–'लेकिन...कुछ तो ऐसा होगा, जो ये बता सके कि इस काम के लिए आख़िर हमें ही क्यों चुना गया। हमारी जगह पर कोई और भी तो हो सकता था?'

'सही कारण भी सामने आ जाएगा, लेकिन तब तक कुछ जरूरी इंतज़ाम करने होंगे।' सालन की आवाज़ में सोच–विचार जैसा पुट था।

स्कीनिया ब्राज ने अपनी जगह पर करवट–सी बदली। 'हमें अपनी खोज का दायरा बदलना होगा। अब तक महासभा के सभी सदस्य, जैल्डॉन की खोज कर रहे थे। लेकिन उसका सही ठिकाना, केवल तब मालूम हो सकता है, अगर हम शातिर लैनीगल को ढूँढ निकालें। दोनों साथ मिलकर काम कर रहे हैं। ऐसा हो नहीं सकता, वो मिलते न हों। हमें अपने भेदिए और खबरी, लैनीगल के पीछे भेजने चाहिएँ...न कि जैल्डॉन के।' स्कीनिया की बात पर कई सिर सहमति में हिले।

'तुम सही कहते हो ब्राज...यही ठीक रहेगा। बिल्चुओं के सरदार **सैल्गासीड** को सन्देश भिजवाओ कि सैंकडों *आईने* उनका इंतजार कर रहे हैं। वो सब के सब उनके हो सकते हैं, अगर वो हमारे लिए काम करें। याद रखना, हमारे सन्देश के साथ कुछ आईने भी जरूर भिजवा देना। कहना, थोरोज़ का उपहार है उनके लिए।' थोरोज़ ने अपनी गोल–गोल आँखों को घुमाते हुए कहा।

'हम अभी एक जल–प्रेत को आपका सन्देश लेकर भेज देते हैं...थोरोज!' वुन्टनब्रॉस ने उठते हुए कहा। उसने अपनी बात पूरी की और लकड़ी के ज़ीने से उतरकर नीचे चला गया।

'हमें बहुत सारी तैयारियाँ करनी हैं। हो सकता है कुछ दिन तुमसे मुलाक़ात न हो। अगर किसी भी चीज़ की ज़रूरत हो तो कास्टन और रैक्टिकस तुम्हारे पास रहेंगे, बिना हिचक उनसे कह सकते हो। थोरोज़ तुम तीनों की पिण्डली का एक–एक बाल चाहते हैं, उस ख़ास मकसद का पता लगाया जाना सबसे जरूरी है, जिसकी वजह से तुम तीनों को ही चुना गया। हमें किसी वजह पर शवफ है। उस सन्देह को दूर करने के लिए कुछ विधियाँ इस्तेमाल करनी होंगी।' सालन ने कहा।

स्कीनिया ब्राज उनसे एक–एक बाल लेने के लिए आगे बढ़ा। थोरोज़ की आवाज़ ने उसे रोक दिया। 'ठहरो ब्राज...तुम नहीं। तुम्हारे जिस्म पर पहले ही इतने बाल है, जैसे किसी भालू की सारी हजामत तुम्हारे ऊपर डाल दी गई हो। अगर इनके बाल तुम्हारे बालों में मिल गए तो, मुसीबत हो जाएगी। रैक्टिकस तुम इस काम को करो।'

रैक्टिकस ने आगे बढ़कर जरूस की पिण्डली से एक बाल पकड़ा और एक तेज़ झटके से खींच लिया। बाल उसकी चुटकी में दबा था। एक–एक करके उसने यही मकास और सलार के साथ किया। तीनों बाल उसने थोरोज़ की हथेली पर रख दिए। उसने उन्हें अपनी लार से, कछुए जैसे कवच पर चिपका लिया।

'अब ये हिफ़ाज़त से रहेंगे। अब हमें चलना होगा। इन मेहमानों का ख़याल रखना कास्टन।' बात पूरी होते ही वो ज़ीने की तरफ़ बढ़ गए।

सालन और थोरोज़ के जाने के बाद वहाँ सन्नाटा छा गया। हूनास्पॉटी और वुन्टनब्रॉस ने कुछ ज़रूरी सामान काठ–द्वार से लिए और कुछ देर बाद वो भी चले गए। अब वहाँ केवल पाँच लोग रह गए थे, मकास, जरूस, सलार, कास्टन ब्रूड और रैक्टिकस ड्रॉन।

'तुम चाहो तो अब आराम से नहा सकते हो, खा–पी सकते हो, अब अगर तालाब में उतरो तो इन जल–प्रेतों को पानी में घोलने की कोशिश मत करना और अगर चाहो तो सो भी सकते हो, तुम्हारी आँखों की पुतलियाँ, तुमसे एक सही नींद की उम्मीद कर रही हैं।' कास्टन ब्रूड ने तीनों की तरफ़ देखते हुए कहा। रैक्टिकस दाहिनी तरफ़ वाले कमरे में चला गया और कास्टन बाँये वाले कमरे में।

'क्या वाक़ई वो बूढ़ा, जिसका नाम थोरोज़ ने *लैनीगल* बताया है, वो ही सारे षड़यन्त्रा का सूत्राधार है? यक़ीन नहीं होता...' जरूस ने मकास और सलार की तरफ़ देखते हुए कहा।

'असली शिकारी कोई और है, जो कहीं दूर, किसी कछुए की पीठ पर बैठा है। वो बूढ़ा तो केवल एक मोहरा है,

जैल्डॉन के बारे में बताया गया है, वो गुरुहन्ता है। अगर वो अपना मतलब निकलने पर लैनीगल की भी हत्या कर दे, तो इसमें कोई हैरानी नहीं होगी।' सलार ने अपना लबादा समेटते हुए कहा।

'मुझे लगता है, हमें ठण्डे दिमाग से ये फैसला करना होगा कि अब हमारा अगला कदम क्या होगा। फिलहाल हमें तब तक यहीं ठहरना है, जब तक सालन और बाकी लोग नहीं लौट आते। ख़तरे हर तरफ हमारा इंतज़ार कर रहे हैं लेकिन मेरे सामने दूसरा सवाल है। क्यों न हम वापस लौट जाएँ? हमें आखिर ज़रूरत क्या है इस झमेले में पड़ने की? हमारी जैल्डॉन से कोई दुश्मनी नहीं है और न ही किसी और से...' मकास ने बहुत वज़न देकर अपनी बात उनके सामने रखी।

सलार ने उसकी तरफ देखा। 'तुम सही कहते हो, हम अपने पिता का वचन पूरा करने निकले थे। अब, जबकि ये साफ हो चुका है कि वो शातिर बूढ़ा हमें इस्तेमाल कर रहा था, हमें वापस लौट जाना चाहिए।'

'मगर क्या हमारे वापस लौटने से, *कौल* पूरा होगा, जो हमारे पिता ने उस बूढ़े फकीर को दिया? वचन इस बात पर नहीं था कि वो उस वचन को *शातिरपन* के सहारे से ले रहा है, या फिर *सरल* मन से। उसने जिस काम को करने के लिए वो कौल लिया, वो काम उसने पूरा किया। अब उस वचन से कैसे फिरा जा सकता है? हमारी बस्ती, हमारे गाँव के लिए, *'वचन'* जिन्दगी देकर भी पूरा करने वाली चीज है।' जरूस ने उनकी आँखों में आँखें डालकर कहा।

'अगर हम वापस लौट भी गए तो कैसे उनका सामना करेंगे और यदि वचन पूरा करने के लिए दोबारा, इस सफ़र पर आना पड़ा, तो यकीनन हम कभी अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँच पाएँगे। हम जहाँ तक आ चुके हैं, हम शायद यहाँ तक भी न आ पाएँ।' मकास अब कुछ असमंजस में नजर आ रहा था।

'बात नाराज़गी की नहीं है, उन्होंने लैनीगल को वचन दिया है और हमने अपने पिता को कि हम उनका वचन पूरा करेंगे। हमें वापस नहीं लौटना, बस ये सोचना है कि आगे करना क्या है? हमें और वक़्त चाहिए सोचने के लिए।' जरूस ने उस कमरे की तरफ बढ़ते हुए कहा, जिसमें बिस्तर लगे थे।

'नहीं, अब सोचने के लिए कुछ नहीं है। तय हो चुका है, पथहीन–नक़्शा हमें वहीं ले आया है, जहाँ हमें आना था लेकिन यैन्गोल्डा ने सही कहा था, ये तक़दीर या क़िस्मत क़तई नहीं है। हमारा हर पल, अगले पल की संभावनाओं से घिरा होता है। भविष्य जड़ नहीं है।' मकास ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा।

मुझे कई बार लगता है, **जब हम पूरी तरह ख़ाली होते हैं, तब हम ख़ाली होने के अहसास से भरे होते हैं और अगर वाक़ई पूरी तरह भर जाएँ तो भरे होने के अहसास से पूरी तरह ख़ाली हो जाते हैं।** ऐसा मुझे कई बार महसूस होता है, जब कभी मुझे लगता है कि इस दास्तान का एक–एक हर्फ़ अब मैं दीवारों पर खोदने वाला ही हूँ। जैसे बस अब ये ख़त्म होने वाली है, जब तक ये ख़त्म नहीं होती, तब तक मैं रुक नहीं सकता लेकिन मैं ये भी खूब जानता हूँ, जिस दिन मैंने इसके आख़िरी हर्फ़ पत्थर में खोद दिए, उस दिन मुझे भी नहीं पता, मैं ख़ाली होऊँगा या भरा हुआ।

सबसे ज़्यादा भरा हुआ अगर हम कभी महसूस करते हैं तो वो तब, जब हम किसी के प्रेम में होते हैं और प्रेम की सबसे बड़ी विशिष्टता इसमें है, हम उन्हीं पलों में सर्वाधिक खाली भी महसूस करते हैं। क्योंकि प्रेम तब तक आपको नहीं भर सकता, जब तक आप खाली न हो जाएँ। शायद ऐसा ही उसके साथ भी हुआ **जो–था–भी–और–नहीं–भी**। चाँदनी रातों में घूमने वाला वो **छलावा**, एक मादा जल–प्रेत को जिससे प्रेम हो गया। संथाल के बेटों ने उसकी दास्तान सुनी, उसे देखा और उस प्रेम को महसूस किया, जिसकी वजह से मकास को उस पाक अहसास की याद आई, जिसे वो कहीं गीगा–टर्सिया की ज़मीन पर छोड़ आया था।

बिल्चू

अध्याय बारह

वह पूरा दिन उन्होंने सोकर गुजारा। शाम को जब आँख खुली तो काठघर में उनके सिवाय कोई नहीं था। उन्होंने हर तरफ देखा, लेकिन किसी भी कमरे में न तो कास्टन ब्रूड कहीं नजर आया और न ही रैक्टिकस ड्रॅान। तीनों ने नीचे जाने का फैसला किया। तालाब का साफ पानी अब बहुत शान्त नजर आ रहा था। चारों तरफ घना जंगल और बीच में ये चौड़ा, हरा मैदान, जिसके बीचोबीच स्वच्छ पानी का ये तालाब। सब कुछ बहुत दिलवफ़श लग रहा था। तीनों हरी गुदगुदी घास पर बैठ गए।

उन्होंने देखा, घास के मैदान से होकर, कुछ पतली पगडण्डियाँ जंगल के भीतर जा रही थीं। जरूस ने वहीं पड़ा एक छोटा–सा पत्थर उठाकर, तालाब में फेंका। सपेफद धुएँ जैसी एक आकृति, उस गोल घेरे के पास उभरी, जो कंकड़ पानी में गिरने की वजह से बना था।

'उन्हें तंग मत करो...' मकास ने भावहीन चेहरे के साथ कहा।

'क्या तुम्हें लगता है, ख़तरा वाक़ई उतना बड़ा है, जितना बताया जा रहा है?' सलार ने मकास की तरफ़ देखा।

'शायद उससे भी बड़ा...जितना बताया जा रहा है। जो लोग हमारे साथ हैं, वो अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर, जंग के लिए तैयार हैं।'

'हम ऐसे यहाँ कब तक ठहर सकते हैं?' सलार ने दोनों के चेहरे को घूरते हुए कहा।

'बड़ा सवाल ये नहीं है, बड़ा सवाल ये है, अगर हम वापस लौटते हैं तो *क़ौल* झूठा होगा और अगर आगे बढ़ते हैं और हमने ऐसा पानी ढूँढ लिया, जिसमें गीलापन न हो, तो क्या वो शातिर लैनीगल को उपहार में दे दिया जाए ताकि वो अपने पारलौकिक–शाप से छुटकारा पाकर, फिर से अपनी दुष्टता, बुराई और तमाम दुष्कर्मों को जारी रख सके?' मकास ने घास का एक तिनका तोड़कर दाँतों में दबाते हुए कहा।

'नहीं क़ौल नहीं तोड़ा जा सकता। उसके लिए चाहे हमारी ज़िन्दगियाँ ही क्यों न चली जाएँ।' जरूस ने फ़ैसला सुनाने वाले ढंग में कहा। 'हमें अपना वचन पूरा करना है, जो हमने अपने पिता को दिया है। उसके बाद उन्हें क्या फ़ैसला करना है, ये उनके हाथों में होगा।'

'हमें जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। सालन के आने का इंतज़ार करना होगा।' जरूस ने घास पर खड़े होते हुए कहा। आहिस्ता–आहिस्ता अँधेरा अपना कम्बल फैलाकर बैठने लगा। जंगल में हल्की रोशनी थी, उन्होंने अंदाज़ा लगाया, ये ज़रूर उन फलों और पत्तों की होगी, जो रात के अँधेरे में चमकते हैं।

पहले दिन से ही एक बात उन्होंने महसूस की, घास के मैदान में बने काठ–घर से होकर कुछ पगडण्डियाँ, जंगल के भीतर जाती हैं। वहाँ क्या है, ये तो उन्हें पता नहीं था लेकिन बाक़ी लोग भी वहाँ जाते हैं, ये पक्का था। काठ–घर में वापस लौटने पर उन्होंने देखा, रैक्टिकस और कास्टन उसी चौड़े कमरे में बैठे हुए थे, जहाँ सभा हुई थी।

'क्या तुम हमें बताओगे, मैदान से होकर, वो जंगली पगडिण्डयाँ भीतर जंगल में कहाँ जाती हैं?' मकास ने कास्टन ब्रूड के पास बैठते हुए पूछा। उसने एक उचटती–सी नज़र उस पर डाली और ख़ामोश रहा।

'शायद तुम बताना नहीं चाहते?'

'वक़्त आने पर तुम्हें ख़ुद सब पता चल जाएगा।' उसकी आवाज़ में टालने वाला अंदाज़ था।

'हम जानना चाहते हैं। थोरोज़ की पहाड़ी और इस जंगल, सबके बारे में।'

'हम रात के खाने के बाद इस बारे में बात करेंगे।' कास्टन ने अपनी जगह से उठते हुए कहा।

उसके बाद उनके बीच ज्यादा बात नही हुई। काल–घर की खिड़की पर खड़े होकर, जरूस देर तक सितारो को निहारता रहा। वो लकडी के जीने से उतरकर नीचे आया और घास के मैदान मे पीठ के बल लेट गया।

सितारे ऊपर आसमान मे थे। वो सब, जिन्हे वो जानता था और वो भी, जिनसे वो परिचित नही था। वो पुराना, पीला सितारा फलेमास...जो हमेशा एक जलती हुई लौ की तरह चमकता रहता था। उसे पहेलियाँ बुझाकर बाते करना बहुत पसन्द था। उसने कई बार उसे टोका भी, लेकिन वो हमेशा इस तरह बाते करता, जैसे सब जानता है, लेकिन बताएगा नही। जैसे इशारे से ये कहना चाहता हो–'मुझे समझने लायक हुनर पैदा करो।'

कम तेल वाले किसी दिए की तरह टिमटिमाने वाला सितारा इलोसान...जिसकी भाषा बहुत उलझी हुई लेकिन जरूस के समझने लायक होती। कई बार उसने वो गाथाएँ उससे सुनी, जिन्हे केवल उसी ने घटते देखा था, या बस चन्द इसानो ने, जो अब जीवित नही थे। दक्षिण की तरफ तीन सितारो का वो समूह, क्लूजीनी, हिन्टनटिप और स्पीकोस...तीनो ही बहुत कम बोलते थे। कई–कई बार पुकारने के बाद बात करना शुरू करते। लेकिन जरूस को वो बहुत पसन्द थे।

पूरब मे पैसीक्लस्ट, वो प्यार से उसे *'शेखीबाज'* कहता था। डीगे हाँकने की उसकी आदत से वो भली तरह परिचित था। कई बार वो ऐसी कहानियाँ सुनाता, जो आधे से ज्यादा मनगढन्त होती। लेकिन उसकी अच्छाई उसे ये लगती, उसने कभी किसी सवाल का जवाब झूठ मे नहीं दिया था। वो हमेशा उससे कहा करता–'यदि तुम सितारों की खुर्दबीन से किसी का भविष्य देखना चाहते हो, तो तुम्हे केवल उतना ही दिखता है, जितना अँगूठी के छल्ले से आसमान।'

उसके ठीक ऊपर लैनोंर...जो सबसे ज्यादा संकेत देता था। बहुत सारे थे वो, उसे सैकडो के नाम याद थे और जाने कितनो की शक्ले।

आज वो उनसे बात करना नहीं चाहता था। बस देखना चाहता था, मिलना चाहता था उनसे। एक छोटा सितारा कई बार उससे बात करने की कोशिश कर चुका था लेकिन जरूस को उसकी भाषा ही समझ नहीं आती। ऐसा लगता जैसे कोई बच्चा तुतलाकर बोल रहा हो। वो बस हल्के से मुस्कराकर, उसे दोस्त होने का अहसास देता। बदले में वो हमेशा कुछ कहता, लेकिन एक भी शब्द उसकी समझ में नहीं आता।

आज भी उसने कुछ कहा था लेकिन उसकी भाषा समझ से बाहर थी। बस एक शब्द वो समझ पाया **'पढना–होगा'**। उसे समझ नहीं आया, वो क्या पढ़ने के लिए कह रहा है। उसने दोबारा सुनने की कोशिश की, लेकिन वो नन्हा सितारा अचानक सुबकने लगा जैसे कोई बच्चा हो। उसके बाद वो उससे बात नहीं कर पाया।

खिड़की से आती एक आवाज ने उसकी तन्द्रा भंग कर दी। वो मकास था, जो उसे भोजन के लिए आवाज दे रहा था।

ऊपर पहुँचकर उसने देखा, सब लोग उसी का इंतजार कर रहे थे। एक चौड़ी चौपाई पर खाने के लिए कुछ सामान रखा हुआ था, जिसमें फलों की तादाद ज़्यादा दिख रही थी। उसे लगा, भोजन शुरू करने के लिए जैसे बस उसी की प्रतीक्षा हो रही थी।

'क्या तुमने कभी **पैरीक्लाट** के फूलों का स्वाद चखा है?' रैक्टिकस ने उसकी तरफ देखते हुए, एक डलिया में रखे कुछ फूल, एक तश्तरी में रख दिए।

'कैसे चखा होगा, ये केवल थोरोज़ की पहाड़ी पर उगते हैं।' उसने खुद ही अपनी बात का जवाब दे दिया। 'तुम्हें इन्हें जरूर चखना चाहिए। ये दुनिया का सबसे स्वादिष्ट फूल है। थोरोज़ ने ख़ास तौर पर तुम लोगों के लिए भिजवाए हैं। इन्हें खाने वाले दुनिया में बस गिने–चुने ही लोग हैं।'

जरूस ने अपनी तश्तरी मे रखे नीले रंग के फूल की एक पंखुड़ी तोड़कर अपने मुँह मे रख ली। उसे ऐसा लगा जैसे उसकी स्वाद–ग्रन्थियाँ पंजों के बल खड़ी होकर उसे महसूस करना चाह रही हों। उसका अद्‌भुत स्वाद, उसके कण्ठ से लेकर दिमाग़ तक को ज़िन्दा करता चला गया। उसने आहिस्ता से चबाया और खुशबू और स्वाद का एक बहाव, उसे पलकें बन्द करने पर मजबूर कर गया।

'ज़्यादा मत खाना, वरना तुम्हारी उँगलियों के नाख़ून सुबह तक इतने बढ़ जाएँगे कि मुट्‌ठी भी बन्द नहीं कर पाओगे।' कास्टन ब्रूड ने हँसते हुए उसकी तरफ़ देखा।

मकास और सलार ने भी चखने के लिए, एक–एक फूल उठाया, लेकिन फिर नज़र बचाकर कई खा लिए। भोजन में बूगाबगोस के साथ और भी कई अजीब तरह के फल और सब्जियाँ थीं। हल्की–फुल्की हँसी–मज़ाक़ और बातचीत के बीच भोजन समाप्त हुआ।

'हाँ, तो तुम क्या जानना चाहते थे?' कास्टन ब्रूड ने अपने हाथ एक मोटे कपड़े से पोंछते हुए पूछा।

'मजेदार बात ये है, कि तुम्हें सवाल और जवाब दोनों पता हैं कास्टन...' मकास ने मुस्कराते हुए कहा।

'ठीक है, लेकिन जब तक तुम्हें इजाजत न मिल जाए, तुम उन जंगली पगडण्डियों पर कदम रखने की सोचना भी मत। हाँ, तो मैं क्या कह रहा था...जंगल की पगडिण्डयाँ...ये सारी पगडण्डियाँ एक ही जगह जाती हैं। दिशाएँ अलग हैं लेकिन सब एक ही मुकाम पर जाकर मिलती हैं।' उसने अधलेटी अवस्था में लकड़ी के फर्श पर बैठते हुए कहा।

'क्या वहाँ कोई रहता है?' सलार की आँखों में सवाल ऐसे तैरा, जैसे आसमान में हैल्वीकॉस गिद्ध।

कास्टन ने एक बार उसकी तरफ देखा और फिर रहस्यमय अंदाज में कहा, *'हाँ।'*

उसका ये छोटा-सा उत्तर सलार को बहुत चिड़चिड़ाहट पैदा करने वाला लगा।

'कौन?' उसने उत्सुकता से पूछा।

'*थोरोज़।*' कास्टन ने फुसफुसाती आवाज में कहा।

तीनों असमंजस की नजरों से उसे देख रहे थे। रैक्टिकस ने काठ-घर का दरवाजा बन्द किया और वहीं आकर बैठ गया।

'थोरोज की पहाड़ी एक तरह का संरक्षण-गृह है, उन्होंने अपना पूरा जीवन इसके लिए लगा दिया। वो पेड़-पौधे और जीव-जन्तु, जो इंसानों और दूसरे प्राणियों की वजह से खात्मे के कगार पर पहुँच गए हैं, वो यहाँ उन्हें हिफाज़त से जीने, बढ़ने और फलने-फूलने का मौका देते हैं। ये पहाड़ी एक पवित्र स्थान है, कहते हैं सदियों पहले एक फकीर ने यहाँ सैंकड़ों आत्मिक अनुष्ठान किए थे, जिसकी वजह से इस क्षेत्र में कोई हिंसा नहीं कर सकता। थोरोज ने इस जगह को इस लायक बनाया कि वो सब उपेक्षित और लुप्तप्रायः पेड़-पौधे और प्राणी यहाँ जी सकें, जिन्हें बाहरी दुनिया ख़त्म करने पर तुली है।' कास्टन ब्रूड ने लगातार बोलते हुए कहा।

उसने एक गहरी साँस ली और फिर बोलने लगा, 'ये जगह, जहाँ तुम बैठे हो, ये थोरोज़ का मेहमान-घर है। हालाँकि वो खुद भी कभी-कभी यहाँ ठहरते हैं लेकिन वो जंगल के उस तरफ़ रहते हैं। सारी दुनिया में घूम-घूमकर वो उन बेसहारा प्राणियों और दुर्लभ पौधों को इकट्ठा करके यहाँ लाते हैं, जिन्हें लोग याद भी नहीं करना चाहते। थोरोज यहाँ अक्सर प्रवास करते हैं और अक्सर यहाँ से बाहर रहते हैं लेकिन यहाँ की सारी देखभाल और इंतजाम *'वो'* करता है।' बोलते-बोलते उसकी आवाज़ एक धीमी फुसफुसाहट में तब्दील हो गई।

तीनों ने सवालिया नज़रों से उसकी तरफ़ देखा।

'हाँ, वो जंगल के उस तरफ रहता है, कभी-कभी इधर आता है। बदसूरत जंगली रूहें उसके सारे कामों को अंजाम देती हैं लेकिन अपनी सारी बदसूरती के बाद भी, वो इस दुनिया की सबसे ख़ूबसूरत आत्माओं में से एक है। जिस्मानी खूबसूरती से ज़्यादा बेशकीमती, उसकी रूहानी ख़ूबसूरती है।'

'...क...कौन है वो?' सलार ने हिचकते हुए पूछा।

'सुदूर पूर्व की जमीन से आया हुआ एक *छलावा...वो-है-भी-और-नहीं-भी।* थोरोज़ ने उसे एक प्राचीन पूजा-घर के खण्डहरों में अधमरी हालत में पड़ा पाया। वो उसे उठाकर यहाँ लेकर आए, उसका उपचार किया। तब से वो यहीं है, उनकी गैरमौजूदगी में सारी ज़िम्मेदारियाँ संभालता है। थोरोज उस पर बहुत भरोसा करते हैं।' कास्टन की आँखों में अदब का एक भाव उभरा, जिसे तीनों ने बख़ूबी महसूस कर लिया।

'वो अभी तक कभी इधर क्यों नहीं आया?' जरूस ने पूछा।

'थोरोज़ चाहते थे, वो आकर तुम लोगों से मिले, मगर उसी ने इन्कार कर दिया। शायद वो नहीं चाहता, उसे कोई देखे। रात के खाने पर पैरीक्लाट के जो फूल तुमने खाए थे, उन्हें जंगल से वही चुनकर लाया था, ख़ास तुम लोगों के लिए।' कास्टन ने रैक्टिकस की तरफ़ देखते हुए कहा

फिर कास्टन के चेहरे पर एक शरारती मुस्कराहट उभरी। वो आहिस्ता से फुसफुसाकर बोला, 'वैसे उसके इधर न आने की एक और *ख़ास* वजह भी है। बाहर वाले तालाब में एक *मादा जल-प्रेत* रहती है, वो उसे पसन्द करती है। इसी वजह से वो यहाँ आने में शरमाता है लेकिन ये राज़ की बात है, जिसे केवल मैं और रैक्टिकस जानते थे और अब तुम तीनों जानते हो। शायद इसी वजह से कहते हैं, प्यार...छुपाने से फैलता है।'

तीनों के चेहरे पर एक मुस्कराहट आकर गायब हो गई। उन्होंने देखा, रैक्टिकस भी इस रहस्योद्घाटन पर आहिस्ता

से मुस्करा रहा था। पल भर के लिए माहौल बहुत खुशनुमा–सा हो गया। ऐसा लगा जैसे एरोमाब्रीस पौधों के सारे फूल, काठ–घर मे बिखर गए हों।

रैक्टिकस ने हँसते हुए कहा, **'प्रेम, इंसानी जिन्दगी का सबसे भावुक व्यसन है।'** बोलते–बोलते उसकी नजरें छत को देखने लगीं।

कारस्टन ने कुहनी मारते हुए कहा, 'तुम्हे उससे ईर्ष्या हो रही है क्या?' उसकी इस बात पर वो केवल मुस्कराकर रह गया।

'जल–प्रेतों को उससे ईर्ष्या नहीं होती?' मकास ने चुहल करने वाले ढँग से पूछा।

'होती है, मगर वो अपनी ईर्ष्या जाहिर नहीं कर पाते, ये जोडा कभी आपस में मिलता कहाँ है। बस कभी एकाध बार वो इधर आता है, तब वो थोडा बहुत जलते हैं, लेकिन अपनी जलन वो जाहिर नहीं करते।'

'एक ख़ास मेहमान, आज रात यहाँ आने वाला है।' रैक्टिकस ने अजीब से लहजे में कहा।

'ख़ास मेहमान! क्या हमसे मिलने के लिए? तुम्हारा मतलब, वो *छलावा?*' सलार ने हैरत से पूछा।

'नहीं...*वो* नहीं, कोई और है, तुम्हें उससे मिलकर यकीनन खुशी होगी।'

'रात बढती जा रही है, इतनी रात को कहाँ से आएगा वो?' मकास ने अलसाए स्वर में कहा।

'हो सकता है, आज रात या फिर कल सुबह, जब भी वो आएगा, सबको अपने–आप पता चल जाएगा।' रैक्टिकस बडी निश्चिंतता से बोला।

रात गहराने पर सब अपने–अपने बिस्तर में चले गए। आज रात रैक्टिकस और कारस्टन दोनों काठ–घर में ही ठहरे थे। सलार ने नींद न आने पर रैक्टिकस से उनमें से कोई किताब पढने के लिए पूछा, जो दूसरे कमरे के कोने में रखी थी। पहले तो वो थोडा हिचका, लेकिन फिर उसने इजाज़त दे दी, इस हिदायत के साथ कि ये थोरोज़ की निजी मिल्कियत हैं, किसी किताब को कोई नुकसान नहीं होना चाहिए और पढने के बाद वो हिफ़ाज़त से उन्हें वहीं रख देगा।

वो उस कोने में पहुँचा और किताबों के ढेर में वो किताब ढूँढने की कोशिश की, जो उसने सुबह थोडी–सी पढी थी। लेकिन काफी देखने पर भी वो उसे कहीं नज़र नहीं आई। तंग आकर उसने रैक्टिकस से पूछने का फ़ैसला किया।

उसने, उसे बताया–'वो किताबें, पढ़ने वाले का *ख़ुद* चुनाव करती हैं। जो उन्हें पढ़ने का हक़दार नहीं है, उसे वो दिखती तक नहीं। अगर कोई ख़ास किताब, किसी ख़ास इंसान के सामने आती है, तो उसका मतलब है, किताब ने उसका चुनाव किया है। अगर वो नहीं दिख रही, तो इसका भी कोई न कोई कारण होगा, इसलिए बेहतर होगा कि वो कोई और किताब पढ ले।'

किताब के इस अजीब रवैये से वो बहुत हैरान था लेकिन फिर उसने अपना सिर झटक दिया और वापस आकर ढेर में से दूसरी कोई किताब तलाश करने लगा, जिसे दिलचस्पी से पढ़ा जा सके। अजीब–अजीब तरह की किताबों से कोना भरा हुआ था। कोई चौकोर थी तो कोई तिकोनी, एक किताब तो गोल ठीकरों पर लिखी हुई थी, जिसके सबसे पहले ठीकरे पर किसी **रीनीस** का नाम लिखा था। किताब का शीर्षक भी बड़ा अजीब–सा था। **हाथी की केंचुली**।

थोड़ा उलट–पलट करने के बाद उसके हाथ एक विचित्रा किताब लगी, उसके शीर्षक की वजह से, उसकी दिलचस्पी उसमें जगी। वो मछली के चौड़े पंखों को सुखाकर, गहरे लाल रंग के अक्षरों में लिखी गई थी। उसने उसका शीर्षक पढ़ने की कोशिश की, बेहद पुरानी और सूखी हुई होने के कारण हर्फ़ मिट गए थे, लेकिन काफ़ी ग़ौर से देखने पर वो दिख गया–**छलावा–शास्त्रा के गुप्त रहस्य**।

किताब के लेखक के नाम की जगह बस **'ओ'** लिखा हुआ था। उसने पहला पश्ष्ठ पलटा और वहीं पड़े लकड़ी के एक टूटे हुए पलंग पर बैठकर पढ़ने लगा। उसे ये सोचकर थोडी हैरानी हुई कि कुछ देर पहले ही कारस्टन ब्रूड ने उस छलावे बारे में बताया और अभी अचानक ये किताब उसके हाथों में थी। क्या किताब ने उसका चुनाव किया है? उसने किताब का पहला पश्ष्ठ खोला, वो छलावों के बारे में था। उसने पढ़ना शुरू किया।

तभी एक आवाज़ ने उसका ध्यान खींचा। काठ–घर के दरवाज़े पर, कोई तेज़ आवाज़ में बोल रहा था। उसने सुनने की कोशिश की, ऐसा लगा जैसे कोई किसी पर गुस्सा हो रहा हो या फिर बेहद नाराज़ हो। उसने किताब एक तरफ़ रख दी और सुनने की कोशिश की।

'कहाँ है वो रैक्टिकस, मुर्दा बाँस के भीतर रेंगता जिन्दा लार्वा? लम्बी टाँग वाले तीतर का चपटा अण्डा, हाथी की लीद से निकला, अधगला अनाज का दाना। दरवाज़ा खटखटाते–खटखटाते मेरी हथेली सूज गई लेकिन सब ऐसे सो रहे हैं जैसे

अण्डे सेने के बाद बटेर।'

सलार तेजी से बाहर वाले कमरे की तरफ आया। उसने देखा, कास्टन ब्रूड ने दरवाजा खोला हुआ था और दरवाजे पर पतला सींकड़ी खड़ा था।

'गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फ़ैलीटस के आने पर न कोई स्वागत कर रहा है और न कोई अभिवादन कर रहा है... अभी मजा चखाता हूँ।'

वो तेजी से दौड़ा और कास्टन की दाहिनी पिण्डली पर अपने तीखे, बारीक दाँत गड़ाने चाहे। मगर वो शायद पहले ही इसके लिए सावधन था। जैसे ही वो कास्टन के पास पहुँचा, उसने तेजी से उसकी लँगोटी पकड़कर उसे हवा में उठा लिया। अब वो हवा में लटका हुआ छटपटा रहा था। उसके सारे शरीर से तेजी से लिसलिसा पदार्थ रिसने लगा लेकिन बेकार, कास्टन ने उसे कपड़े से पकड़कर लटका रखा था। शायद वो फिसलकर छूटना चाहता था, लेकिन उसकी ये कोशिश नाकाम हो गई।

शोर सुनकर रैक्टिकस तेजी से बाहर आया। पतला सींकड़ी शायद उसी को गालियाँ दे रहा था। उसने बाहर आते ही, अपनी नाक पर अँगूठा रखकर और जीभ बाहर निकालकर उसका अभिवादन किया।

'थोरोज की पहाडी पर, इस काठ–घर में, मैं रैक्टिकस ड्रॉन...सभी की तरफ से आपका तहेदिल से स्वागत करता हूँ... महान स्ट्रासोल...गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फ़ैलीटस!'

ऐसा लगा जैसे उसका गुस्सा कुछ शान्त हुआ हो। लेकिन वो अब भी अजीब–अजीब गालियाँ बक रहा था।

'बूढी चींचडी के, फालिज मारे इस पंजे से कहो, मुझे नीचे उतारे...सोते हुए मेंढक के मुँह से टपकती लार है, ये बेघर खानाबदोश।' वो कास्टन को गालियाँ दिए चले जा रहा था।

'वादा करो, छोड़ने पर तुम मुझे अपने बदबूदार दाँतों से काटोगे नहीं...वरना यूँ ही लटकते रहोगे सुबह तक।' कास्टन ने मुस्कराते हुए कहा।

'ठीक है...ठीक है...हरे टिड्डे की आँख में गिरे, काले कीड़े। मुझे जल्दी नीचे उतारो...वरना मैं तुम्हें बाहर तालाब में डुबाकर मार डालूँगा।' उसने हवा में अपने सींक जैसे हाथ–पैर मारते हुए कहा।

कास्टन ने उसे आहिस्ता से फ़र्श पर रख दिया। वो तेजी से दौड़ा और एक कोने में जाकर 'कट–कट' करके अपने नाखून खाने लगा।

'मुझे कब से तेज़ भूख लगी है बेशर्म गुबरैलो! पहले कुछ पेट–पूजा तो कर लूँ, उसके बाद तुम सबकी ख़बर लूँगा।'

कटर–कटर की आवाज़ से सलार को उबकाई–सी आने को हो रही थी लेकिन वो जानता था, स्ट्रासोल अपने नाखूनों के सिवाय और कुछ नहीं खाते, इसीलिए वो सहज दिखने की कोशिश करता रहा।

शोरगुल की आवाज सुनकर, जरूस और मकास भी उसी चौड़े कमरे में आ गए। पतले सींकड़ी को वहाँ देखकर, वो बहुत हैरान और खुश थे। मगर वो उन सबसे बेख़बर, कोने में खड़ा होकर अपने नाखून चबाए जा रहा था।

उस रात काठ–घर में जश्न का माहौल था। कास्टन ब्रूड ने उनको बताया, क्लेवरसीथ की ग़द्दारी की बात स्ट्रासोल्स सरदार **जैस्टीफ़लच** तक पहुँच गई थी। ये उन सब पर एक बदनुमा दाग़ था। सरदार ने सालन को सन्देशा भेजकर, उस ग़द्दार के लिए माफी माँगी और दुष्ट जैल्डॉन को खोजने में मदद के लिए गम्पूग्रास को भेजा। वो कई रातों का सफ़र तय करके वहाँ पहुँचा था। सालन ने सन्देशा भिजवाया था, जब तक सब लोग इकट्ठा नहीं हो जाते, तब तक वो भी उन तीनों के साथ वहीं ठहरेगा।

उन्हें ये भी पता लगा, पतला सींकड़ी उस रहस्यमयी किताब की रचना में साथ देने के लिए चुना गया था। लेकिन क्लेवरसीथ ने बीच में ही सरदार को उसके ख़िलाफ़ भड़काकर, उसकी जगह ले ली। उसने कई साल तक महासभा के सदस्यों के साथ काम किया था। सब उसे पसन्द करते थे लेकिन बिना वजह बताए, उसे वापस बुला लिया गया।

रात गहराती जा रही थी। कोई भी सोना नहीं चाहता था। सब लोग चौड़े कमरे में इकट्ठा हो गए और बातें करते जा रहे थे। पतला सींकड़ी फ़र्श पर तिरछा लेटा हुआ, एक पुराना क़िस्सा सुना रहा था और सब हँस–हँस कर लोटपोट हुए जा रहे थे–'...जब मैंने उस बोहिया–हकूक की पूँछ पर काटा...वो सड़े खजूर की गुठली...ऐसा चीखा...जैसे गर्भवती कलीली को पहली बार बच्चा पैदा हुआ हो...' उसकी बात ख़त्म होते ही सबने इतनी ज़ोर से ठहाका लगाया कि रात के अँधेरे में उनकी आवाज़ दूर जंगल तक गई।

मकास ने पतले सींकड़ी से मुस्कराकर पूछा। उस दिन, छुप्पाछाया से निपटने के लिए उसने बौनों के सरदार पियोनी

के कान में *क्या* कहा था, जिसे सुनकर वो एकदम मदद के लिए तैयार हो गया जबकि वो किसी कीमत पर साथ चलने के लिए तैयार नहीं था। सींकडी पहले तो थोड़ा हिचका, लेकिन फिर शर्माते हुए बताया कि उसने बैलोबा–मैचस चिड़िया के नाखूनों को पिघलाकर बनाए गए पासे देने का वादा किया था, जो गायब होकर उसकी लँगोटी के नेपेफ में पहुँच गए थे।

सींकडी ने उन्हें *चमत्कारी पासे* बताया था लेकिन उनमें कोई खासियत नहीं थी। पियोनी को ये बात तब तक पता चलने वाली नहीं थी, जब तक वो उन्हें इस्तेमाल नहीं करता। सींकडी की इस चालाकी पर हर किसी ने मज़ाकिया तरीवेक से, उसकी झूठी तारीफ की, जिसे सुनकर वो फूला नहीं समा रहा था।

मकास, उस छलावे के बारे में जानना चाहता था, जो जंगल के भीतर रहता था। कास्टन ने पाबन्दी लगाई, अगर पतला सींकडी चुप रहने का वादा करे तो वो जरूर उसके बारे में बताएगा जो–है–भी–और–नहीं–भी। लेकिन सींकडी था कि चुप होने का नाम ही नहीं ले रहा था। बडी मुश्किल मे इस शर्त पर वह चुप हुआ कि कास्टन की बात खत्म होने के बाद, वो उस छछुन्दर का किस्सा सुनाएगा, जिसने रात को सोते वक्त, उसकी लँगोटी कुतर दी थी।

कास्टन ने बताना शुरु किया– 'थोरोज ने जब उसे देखा, वो इतना जख्मी था कि हिल भी नहीं पा रहा था। वो उसे उठाकर यहाँ लेकर आए। अपनी ताकतों से उसका इलाज किया। किसी छलावे का चूँकि कोई जिस्म नहीं होता, वो जिस प्राणी का चाहें रूप धर सकते हैं। इसलिए उसका उपचार करने मे उन्हें बहुत दिक्कत हो रही थी। वो जिस भी रूप में होता, हर बार उसके जख्म जगह बदलकर दूसरे स्थान पर चले जाते।

उसने साँस ली और बोलने लगा। 'फिर थोरोज ने एक बकरे के रूप में लाकर उसका उपचार किया। जख्म जिस्मानी नहीं, रूहानी थे। आहिस्ता–आहिस्ता वो ठीक होने लगा। थोरोज ने उसे पहाडी की देखभाल की जिम्मेदारी सौंपी। फिर एक दिन वो काठ–घर आया, जहाँ उस मादा जल–प्रेत ने उसे देखा, जिसका नाम **जडाकी** है। वो उस वक्त अपने अशरीरी रूप में था। जडाकी पहली बार उसे देखते ही उस पर मर मिटी लेकिन वो बहुत शर्मीला था। उसे ये विश्वास ही नहीं हुआ, कोई मादा जल–प्रेत, किसी छलावे से भी प्रेम कर सकती है।

फिर वो गाहेबगाहे उसे तंग करने लगी। जंगल से फल लाते वक्त, दुर्लभ प्राणियों की देखरेख करते समय, लुप्त पौधों को सींचते वक्त, वो चुपके से उसके पीछे पहुँच जाती और उसे चौंका देती। उसने घबराकर, बदसूरत जंगली रूहों को अपने साथ ले जाना शुरू कर दिया। ये सोचकर कि शायद उनकी मौजूदगी की वजह से जडाकी उससे दूर रहे लेकिन हुआ इसका उल्टा, उनकी मौजूदगी से वो और भी ढीठ हो गई।

फिर एक दिन मौका देखकर जडाकी ने उससे अपनी मुहब्बत का इज़हार कर दिया। वो शरमाकर गायब हो गया। उसके बाद कई दिनों तक वो जंगल में नहीं आया। फिर कुछ महीने पहले, उसने एक बदसूरत जंगली रूह के हाथ, *लैवोलीसिया* के वो फूल उसके लिए भिजवाए, जिनके बारे में कहा जाता है कि वो केवल उन प्रेमियों को दिखते हैं, जिनका प्रेम सच्चा होता है। इत्तेफाक से मैंने और रैक्टिकस ने उस जंगली रूह को जडाकी को पूफल देते देख लिया। उसके बाद एकाध बार वो तालाब की तरफ आया, लेकिन हमेशा बस सबकी नज़र बचाकर ही उध्र देखता है। शायद वो नहीं चाहता, किसी को उसके प्रेम के बारे में पता चले।' कास्टन ने धीमे–धीमे मुस्कराते हुए अपना वाक्य पूरा किया।

जरूस और सलार ने महसूस किया, कास्टन की बात सुनते–सुनते मकास की आँखें जैसे कहीं खो गई थीं। वो एकटक, अपलक, लकडी की छत को देखे जा रहा था। जैसे गुजरे वक्त की धुँध में वुफछ तलाशने की कोशिश कर रहा हो। उसके होठों से हल्के से निकलने वाली 'प...सीं...ना।' की बुदबुदाहट उन्होंने सुन ली।

कास्टन की बात पूरी होते ही पतले सींकडी ने अपना किस्सा सुनाना चाहा, लेकिन सबने बड़ी विनम्र–चालाकी से उसे टाल दिया और सोने की तैयारी करने लगे। उनकी इस हरकत पर सींकडी आगबबूला होकर गालियाँ बकने लगा लेकिन किसी ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया और अपने–अपने कमरे की तरफ़ चल दिए।

फिर अगले दिन वो जल–प्रेत वापस लौटा, जिसे बिल्चुओं के सरदार के पास सन्देशा लेकर भेजा गया था। कास्टन और रैक्टिकस ने उससे तालाब पर जाकर बात कीं। उन्होंने आकर बताया कि कल बिल्चुओं का सरदार, अपने कुछ भरोसेमन्द साथियों के साथ वहाँ आने वाला था। थोरोज़ के भेजे गए आईने उन्हें बहुत पसन्द आए, सरदार और उसके साथी, बहुत देर तक उनमें खुद को निहारते रहे थे।

वो लैनीगल का पीछा करके सारी ख़बरें देने के लिए तैयार थे, लेकिन उनकी कुछ शर्तें थीं, जिनके बारे में वो किसी ज़िम्मेदार शख़्स से बात करना चाहते थे, न कि किसी *गीले* जल–प्रेत से। इसलिए आखिरी फैसला करने से पहले वो सारी बातें साफ कर लेना चाहते थे और हर पहलू को ठोक–बजाकर देखना चाहते थे।

अगला दिन एक साधरण दिन की तरह गुज़रा। अँधेरा होने के बाद, पहाड़ी की तरफ़ से कुछ परछाइयाँ, पगडण्डी पर

आती दिखी। उनकी [illegible] के बीच भी उनके साए बहुत खतरनाक लग रहे थे। [illegible] उनकी ही तरफ पर ही तरफ बढ़े। जरूस उस वक्त दालान के पास ही था।

उसने दूर से सबसे आगे वाले को देखा। वो एक बिल्लू था, [illegible]। उसके पीछे चार और थे। वो आहिस्ता आहिस्ता कमरे घर की तरफ आ रहे थे। एक जाल सा उनके आसपास फैला हुआ था। पास आने पर उसने देखा सबके हाथों में एक एक छोटा आईना दबा हुआ था जिसमें वो बार बार अपना मुँह देखने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन वहाँ चूँकि इतनी रोशनी नहीं थी इसलिए वो शायद ठीक से खुद को निहार नहीं पा रहे थे।

उन्होंने दूर से जरूस को देख लिया था उनमें से दो के हाथों में लकड़ी की बनी पेटियाँ थीं। जरूस ने कमरे घर की तरफ देखा, इस वक्त सब अन्दर थे।

पास आने पर सबसे आगे वाले ने मिमियाती सी आवाज में पूछा, 'ऐ लड़के! क्या तुम बताओगे रैक्टिकस और कास्टन किधर मिलेंगे?'

जरूस ने एक बार उसके पूरे हुलिये पर ऊपर से नीचे तक नजर डाली और फिर आराम से बोला, 'वो वहीं ऊपर हैं तुम सीढ़ियों से होकर जा सकते हो।'

उसके पीछे चलने वाले, सब के सब उसके ही जैसे थे। चेहरे से लेकर शरीर के आकार तक। जरूस को लगा, सबमें इतनी समानता है, ये लोग एक दूसरे को पहचानते कैसे होंगे।

जरूस उनके पीछे पीछे सीढ़ियों तक पहुँचा। उसने सरदार से पूछा, 'क्या तुम ही बिल्लुओं के सरदार हो?'

उसकी मिमियाती आवाज में ऐसी खिसियाहट थी जैसे जरूस ने उसे उसके गुलामों के सामने बेइज्जत कर दिया हो।

'तुम्हें क्या लगता है, मैं बिल्लुओं का रसोइया हूँ?'

जरूस ने उसकी इस खिसियाहट का कोई जवाब नहीं दिया और नरमी से बोला, 'आइये हम सब आपका ही इंतजार कर रहे थे।'

'**हम** सब? *हम* सब कौन? हम यहाँ केवल दो लोगों से मिलने आए हैं, उनके अलावा हम और किसी से कोई *अनुबन्ध* नहीं करेंगे, समझे तुम।' उसकी आवाज में थोड़ी सख्ती थी।

सीढ़ियाँ चढ़कर वो ऊपर पहुँचे, जरूस ने दरवाजा खटखटाया। रैक्टिकस डॉन ने दरवाजा खोला। जरूस के साथ खड़े बिल्लू को देखकर उसने उसका गर्मजोशी से स्वागत किया। 'आओ आओ सैल्यासीड, तुम्हारा स्वागत है।'

'थोरेज का सन्देशा मिलना *अलग* बात थी और किसी 'अनुबन्ध' के तहत काम करना *अलग।* बिना मिले, सारी बातें तय नहीं की जा सकती थी।' उसकी आवाज की मिमियाहट ऐसी लग रही थी जैसे किसी ने बकरी के गले पर पैर रख दिया हो।

'तुमने अच्छा किया **सैल्या**, तुम चले आए। अब बैठकर सारी बातें तय कर ली जाएँगी।'

सारे बिल्लू बैठ गए। उनके आगमन की खटपट और बात करने की आवाजें सुनकर सलार, मकास और कास्टन भी वहाँ आ गए। केवल पतला सींकड़ी एक कमरे में पड़ा खर्राटे ले रहा था।

'उस गीले प्रेत ने बताया था कि थोरेज किसी जरूरी काम से गए हैं। उसने तुम्हारे दस्तखत वाला एक खत भी दिया।' उसकी आवाज की थरथराहट, उकताहट पैदा करने वाली लग रही थी।

'थोरेज तुम्हारे लिए कुछ जरूरी तोहफे छोड़कर गए हैं सैल्या, उम्मीद है तुम्हें पसन्द आएँगे।'

कास्टन बूड ने लकड़ी की एक चौपाई पर ढँका कपड़ा हटा दिया। उसके नीचे ढेर सारे छोटे–छोटे आईने, सलीके से रखे हुए थे। सरदार दौड़कर चौपाई के पास आया और एक पल के लिए एकटक उन्हें देखता रहा। वो बहुत खुश नजर आ रहा था।

'ये...ये...ये सब हमारे हैं? सारे के सारे?'

उसकी आवाज में हैरत के साथ–साथ लालच भी झलक रहा था। वो उनके ऊपर ऐसे हाथ फिरा रहा था जैसे कोई माँ अपने पहलौठे को ममता से सहला रही हो।

'हाँ, सैल्या...सब तुम्हारे हैं...इनमें वो प्राचीन आईने भी हैं, जिनमें तुम्हारी बस्ती के सबसे पहले सरदार **कल्बीवूफच** ने खुद को निहारा था। साथ ही वो नए दर्पण भी, जिन्हें आज तक कभी किसी प्राणी ने छुआ तक नहीं है। उनकी गर्द साफ करने के लिए भी केवल कपड़े का सहारा लिया गया है।' कास्टन जैसे किसी कुशल व्यापारी की तरह बोल रहा था।

सलार ने देखा, उसकी बात सुनकर बाकी बिल्चुओं की आँखों में भी चमक आती जा रही थी।

'ओह...देवता...इतने सुन्दर, अद्भुत और दुर्लभ आईने...और ये सब हमारे हैं...बिल्कुल हमारे।'

उसने लकडी के ठूँठ पर बैठे उन दो को इशारा किया, जिनके हाथों में लकड़ी की पेटियाँ थीं। वो फुर्ती से उठे और एक–एक करके सारे आईने, पेटी में रखने लगे। वो इतनी सावधनी से आईने उठाकर, पेटी में रख रहे थे, जैसे कोई चिड़िया चोंच में अपना पहला अण्डा दबाकर, घोंसला बदल रही हो।

'आईना, सत्य बताने वाला सबसे खूबसूरत साथी होता है ना सैल्गा...' कास्टन ने उसकी रग को सहलाने वाले अंदाज़ में पूछा।

सैल्गासीड के माथे पर बल पड गए, 'नहीं, दर्पण, सत्य को उतनी ही निर्मम पफूहड़ता से दिखाता है, जैसे कोई उल्टे नश्तर से, पके पफोड़े को चीर दे।' सैल्गासीड ने उन आईनों को निहारते हुए कहा, जिन्हें उसके साथी उठाकर रख रहे थे।

उसकी इस बात पर कास्टन थोडा झेंपकर रह गया।

'क्या अब वो बात की जाए, जिसे करने के लिए थोरोज़ ने तुम्हें सन्देश भिजवाया है सैल्गा?' कास्टन की आवाज में चतुराई का पुट साफ महसूस हो रहा था। उसने उसे उन तीनों के सफ़र के बारे में कुछ नहीं बताया, केवल इतना कहा कि उन्हें लैनीगल के खुफ़िया ठिकाने और उस हर इंसान की जानकारी चाहिए, जिससे भी वो मिलता है।

लैनीगल का नाम सुनकर वो एकदम चौंका। 'तुम्हारा मतलब...वो शापग्रस्त बूढ़ा...वो शातिर लैनीगल...नक्षत्रा–विद्या का दुष्ट गुरु?' उसकी आवाज में हैरत के साथ–साथ थोड़ा खौफ़ भी दिखने लगा था। पल भर के लिए सबने महसूस किया कि सारे बिल्चू कुछ असहज हो गए।

'हाँ, वही...शातिर लैनीगल...तुम उसे आसानी से पहचान भी लोगे और ढूँढ भी लोगे...क्योंकि उसका *घटता-बढ़ता* कद, उसे छुपने नहीं देता।' रैक्टिकस ने सैल्गासीड की तरफ़ देखते हुए कहा।

अब वो कुछ हिचकिचाता हुआ लग रहा था। उसने एक हाथ लकडी की पेटी पर ऐसे रखा हुआ था, जैसे कहीं वो उन आईनों को उनसे छीन न लें और दूसरे हाथ में पकडे आईने में वो मुँह देख रहा था।

'तुम्हारे लिए इतने आईनों का इंतज़ाम किया गया है, जितने तुम ढोकर भी यहाँ से नहीं ले जा पाओगे सैल्गा...तुम्हारी बस्ती के हर बिल्चू के पास कई–कई निजी आईने होंगे। इन सबसे अलग...सबसे ख़ास, वो विशाल दर्पण, जिसका आकार तुम्हारे आकार से भी *दोगुना* है। ख़ास तुम्हारे लिए तोहफ़े में दिया जाएगा।' कास्टन जैसे उसके भीतर दबे लालच को सहलाने की कोशिश कर रहा था।

'ल...लेकिन वो बहुत ख़तरनाक और शातिर है...जान का ख़तरा है।' सैल्गासीड की आवाज में अब मिमियाहट के साथ–साथ वँफपवँफपाहट भी शामिल हो गई थी।

'तुम्हें उसके पास नहीं जाना, बस दूर से नज़र रखनी है। भेदियों से कहना, इतनी दूरी बनाकर रखें, जिससे वो उन्हें नुकसान न पहुँचा सके। काम ख़तरनाक है, इसलिए हम तुम्हें मुँहमाँगी क़ीमत दे रहे हैं।' रैक्टिकस ने समझाने वाले ढँग में उससे कहा।

'ह...हम तैयार हैं...लेकिन एक *शर्त* पर।' उसकी आवाज़ अब भी दहशत की वजह से काँप रही थी।

'बोलो।' रैक्टिकस ने आहिस्ता से कहा।

सैल्गासीड बोलने में कुछ हिचकिचाया लेकिन फिर हिम्मत करके बोला, 'हमें **एक** नहीं, बड़े वाले **दो** आईने चाहिऍं। एक हमारे लिए और एक बस्ती की रानी के लिए।' उसकी आवाज़ से ऐसा लग रहा था, जैसे भीतर ही भीतर उसे ये डर खाए जा रहा हो कि कहीं वो आईने देने के लिए मना न कर दें।

कास्टन ने उसे ऐसे घूरा जैसे उसके फ़ैसले को तौलने की कोशिश कर रहा हो। उसको चुप देखकर वो दोबारा मिमियाया, 'म...मतलब...एक...नहीं...दो...क... काम थोड़ा... ख़तरनाक... है... इसलिए।' उसकी आवाज़ दहशत से थराथरा रही थी और चेहरा लालच से तप रहा था।

कास्टन ब्रूड ने भेदने वाली निगाहों से उसे देखा और बोला, 'हम्मम...ठीक है। तुम्हे छोटे आईनों के साथ, *दो* बड़े आईने भी दिए जाएँगे लेकिन याद रखना, काम बहुत सावधनी और होशियारी से होना चाहिए। उसे भनक भी नहीं पडनी चाहिए कि कोई उसका पीछा कर रहा है। वरना ये तुम्हारे लिए भी जानलेवा होगा और हमारे लिए भी मुश्किल खड़ी करेगा।'

'हाँ...हाँ...मंजूर है...मंजूर है।' उसकी आवाज में अब खुशी की वैंफपवैंफपाहट थी। सबने देखा, सारे बिल्चुओं के चेहरे पर, अब प्रसन्नता लोटपोट हो रही थी।

'ए...एक बात और कहनी थी...' सैल्गासीड हिचकिचाते हुए बोला।

'कहो...लेकिन तुम्हारा लालच इससे आगे नहीं बढ़ना चाहिए सैल्गा...' रैक्टिकस ने सख़्त आवाज़ में कहा।

'न...नहीं...नही...मैं तो...बस...इतना कह रहा था...अगर वो बड़ा वाला आईना एक बार दूर से ही दिखा देते तो...मेरा मतलब...एक बार...दूर से... सब देखना चाहते हैं...**काफ़ी बड़ा है क्या?**' उसकी आँखों में लालच के डोरे साफ नजर आ रहे थे।

रैक्टिकस ने एक बार उसे गुस्से से घूरा। 'ठीक है...लेकिन केवल एक झलक...'

उन्होंने ऐसे सहमति में सिर हिलाया जैसे अगर जरा भी देर की तो वो कहीं दिखाने से इन्कार न कर दे।

वो उन्हें दाहिनी तरफ वाले कमरे में ले गया और वहाँ कपडे से ढँके, उस आदमकद आईने से कपड़ा खींच दिया, जो सलार ने पहले दिन उस कमरे में देखा था। सारे बिल्चू उसके सामने खडे थे। वो एकटक खुद को उसमें ऐसे निहार रहे थे, जैसे सम्मोहित हो गए हों। उनके हाथ उनके होठों पर थे, हैरत और आत्ममुग्धता की स्थिति में वो मन्त्राकीलित से खड़े थे।

कुछ पल तक वो अपलक ऐसे ही खुद को उसमें निहारते रहे। उनकी तन्द्रा तब भंग हुई, जब रैक्टिकस ने उस बडे दर्पण पर, दोबारा कपडा ढँक दिया और उन्हें अपने जिस्म दिखने बन्द हो गए। उन्हें जैसे झटका लगा...सबके सब एकदम होश में आ गए।

'मेरे खयाल से अब तुम्हें काफी तसल्ली हो गई होगी?' रैक्टिकस ने सैल्गासीड की तरफ ऐसी नजरों से देखा, जैसे कहना चाह रहा हो, आईना देख लिया, अब बाहर वाले कमरे में चलो।

'ह...हाँ...हाँ हो गई...हो गई। मगर याद रखना, अपने वायदे से मुकरना नहीं, हम *दो* बडे वाले आईने लेंगे और ढेर सारे छोटे।' वो जैसे खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

'क्या अब तुम अपने काम की योजना बनाना शुरू करोगे सैल्गासीड...या फिर यूँ ही बातें बनाते रहोगे?' कास्टन ब्रूड ने उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा?

उन्होंने चलने की इजाज़त माँगी और खुशी–खुशी वहाँ से निकल गए। बिल्चुओं को सारी ख़बरें लाने के लिए थोड़ा वक़्त दिया गया था। उन्होंने तयशुदा वक़्त में अपना काम पूरा करने का विश्वास दिया।

बिल्चुओं की खबर का सबको बेसब्री से इंतज़ार था। अगले दिन रैक्टिकस ने बताया कि सालन और थोरोज़ जल्द वापस लौटेंगे। सलार ने, किताबों के ढेर की तरफ़ दोबारा जाने का फ़ैसला किया। उस दिन वो पतले सींकडी के आ जाने की वजह से *छलावा-शास्त्र* को नहीं पढ़ पाया था। दोपहरी में, जब सब सो रहे थे, उसने उस ढेर में उस किताब को ढूँढना शुरू किया, लेकिन काफ़ी कोशिश करने के बाद भी, वो उसे नहीं खोज पाया।

वो चकित था, एक बार वापस रख देने के बाद, कोई किताब दोबारा उस ढेर में क्यों नहीं मिल रही थी। फिर उसने एक अजीब निर्णय लिया। कोई अच्छी–सी किताब ढूँढने की जगह, उसने आँखें बन्द करके हाथ से ढेर को टटोला। एक बेहद भारी–भरकम किताब उसकी उँगलियों से टकराई। उसने टटोलकर पकड़ने की कोशिश की, तो महसूस हुआ, वो उससे भी ज़्यादा मोटी और वज़नी थी, जितनी मोटी किताब उसकी हथेली में आ सकती थी।

उसने आँखें खोलीं और दोनों हाथों से पकड़कर, किताब को ढेर से बाहर खींचा। वो एक बेहद लम्बी, मोटी और वज़नी किताब थी, जो लकड़ी की पतली और चौड़ी छीलन पर लिखी हुई थी। नीले रंग की गहरी स्याही से इतनी खूबसूरती से हर्फ़ बनाए गए थे कि उसका सौन्दर्य वो देखता ही रह गया। उसने उसका शीर्षक पढ़ने की कोशिश की... कैमीन पठारों की लुप्त लिपि *ग्लाफ़ोरीस* में लिखी गई किताब थी। शीर्षक के ऊपर काफ़ी धूल चढ़ी हुई थी। उसने हाथ से धूल झाड़ी तो दमकता हुआ शीर्षक साफ़ दिख गया...**अदश्श्य–पक्षीकोश।**

किताब के पहले ही पश्ष्ठ पर एक चेतावनी लिखी थी–**'यदि आप ये किताब पढ़ रहे हैं तो पक्का समझिए, कोई न कोई *अदश्श्य* पक्षी, आपके आसपास ही है। जिन पक्षियों की दिव्यता किसी की गुलाम हो जाती है, उनका वर्णन इस कोश में नहीं मिलेगा।'** एक पल के लिए उसने अनायास ही अपने चारों तरफ़ देखा। मगर न तो कमरे में कोई था, न खिड़की के बाहर। उसने कुछ तसल्ली की साँस ली। विषय–सूची में सैंकड़ों पक्षियों के नाम, वर्णमाला के हिसाब से दिए गए थे।

उसने कई पश्ष्ठ एक साथ उलट दिए, जो पश्ष्ठ खुला, उसमें सबसे पहला वर्णन किसी **गैचाकू** नाम के कबूतर का

था। उसने पढ़ना शुरू किया–

गैचाकू...अदृश्य पक्षियों की प्रजाति की चिड़िया है। इसके पंखों का रंग गहरा लाल होता है...और उसके सिर पर बालों की एक लम्बी अयाल होती है। सदियों से गैचाकू का इस्तेमाल युद्धों में किया जाता रहा है, लेकिन केवल बसलाबार्क्स के द्वारा। बसलाबार्क्स ने वो विधि खोज ली, जिसकी मदद से शायद गैचाकू को देखा जा सकता है। गैचाकू के पंजों पर आग का असर नहीं होता। उसकी चोंच में एक मुर्दा केंचुआ हमेशा दबा रहता है, जिसे वो पान की तरह चबाता रहता है। उसके पंख को पानी में डुबाकर अगर कुछ लिखा जाए तो लिखे गए हर्फ़ दिखाई नहीं देते, लेकिन अगर उन हर्फ़ों को किसी दर्पण के सामने ले जाया जाए तो वो साफ़ दिखने लगते हैं और एकदम सीधे। मादा गैचाकू का रंग गहरा नीला होता है, जिसके पंजों पर लोहे की कोई चीज़ रगड़ी जाए तो उससे चिंगारी पैदा होकर, आग लगाई जा सकती है। गैचाकू को पिंजरे में नहीं रखा जा सकता। पिंजरे में रखते ही वो प्राण त्याग देता है। नर के मरते ही, मादा का रंग लाल हो जाता है और आहिस्ता-आहिस्ता वो नर में तब्दील होने लगती है। लगभग एक वर्ष में मादा गैचाकू पूरी तरह 'नर' में परिवर्तित हो जाती है। उड़ते हुए गैचाकू को शान्त पानी में भी देखा जा सकता है बशर्ते उस पानी में किसी मादा केकड़े ने अण्डे न दिए हों।'

किताब में सैकड़ों अदृश्य पक्षियों का विस्तृत वर्णन दिया गया था। उसने गायब–गिद्ध के बारे में कोई पृष्ठ खोजने की कोशिश की। विषय–सूची में पृष्ठ–संख्या चवालीस सौ पर, एक जगह उसे गायब–गिद्ध लिखा नज़र आया। उसने तेज़ी से पन्ने पलटने शुरू किए, जब वो उस पृष्ठ पर पहुँचा तो उसे झटका लगा। पन्ना...वहाँ से गायब था।

तभी उसे बाहर किसी की पदचाप सुनाई दी। उसने देखा, पतला सींकड़ी दबे पाँव भीतर आने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसने उसे देख लिया। वो अपने माथे पर हाथ मारकर 'ध्प्प' से फर्श पर बैठ गया। 'उल्लू की आँख की मोतिया–बिन्द वाली पुतली...विधवा छिपकली की टूटी हुई पूँछ...तुम्हें क्या जरूरत थी मेरी तरफ देखने की। मैं आकर तुम्हें चौंकाना चाहता था नामुराद! लेकिन तुमने सब गड़बड़ कर दिया।'

सलार मुस्कराया और किताब को वापस ढेर पर रखकर, उसकी तरफ ऐसे देखने लगा, जैसे *'बेचारा'* कह रहा हो।

सर्दी का मौसम अब आहिस्ता–आहिस्ता जाने लगा है। बाहर जमी सफेद बर्फ का जिस्म, सूरज की तेज़ रोशनी की बाँहों में पिघलने लगा है। मेरी गुफा के बाहर, बर्फ में जमे कुछ **क्वीलिन** मेंढक, अपनी शीतनिद्रा से जाग गए हैं। वसन्त के मौसम में, मेरी गुफा के बाहर एक छोटी–सी जलधरा बहती है। उसके साफ पानी की छल–छल...मेरे कानों को जादुई संगीत से भर देती है। इन दिनों कैल्टिकस की इन पहाड़ियों में दूर–दूर तक **ग्रिलिन** घास की हरी चादर बिछ जाती है और घास के वो बीज चटखने लगते हैं, जो महीनों बर्फ की ठण्डी परत के नीचे, ख़ामोश सोए रहे।

मैं अब मोम की उन पट्टियों को खोदने की तैयारी कर रहा हूँ, जिनके ऊपर इस दास्तान का वो हिस्सा उकेरा गया है, जो वाकई अहसासों की सतह पर भीतर तक खुदा हुआ है। जिनके ऊपर इस हैरतअंगेज़ किताब की वो घटनाएँ, चहलकदमी कर रही हैं, जिनमें महासभा के तीन सदस्यों पर प्राचीन **शिला–शाप** का इस्तेमाल हुआ और उनके जिस्म... किसी भारी चट्टान की तरह, सैकड़ों मन वज़नी हो गए। जिनमें वो फैसला खुदा हुआ है, जिसने थोरोज़ को उस जिस्मानी पीड़ा से गुज़रने को मजबूर कर दिया कि उसका जिस्म गोश्त और खून का लोथड़ा बनकर रह गया।

ये वो वर्दफ हैं, जिन पर लिखा है उस धूर्त और शातिर *'राजदूत'* के बारे में, जिसके पीछे हमेशा नीले चींटों की फौज चलती थी, जो उसके पाँवों के निशानों को फौरन अपने मूत्रा से ढँक देती, ताकि कोई भेदिया उसकी गंध न पा सके। साथ ही गैरोगन–ग्लीफ लिपि में लिखी वो **शिला–पुस्तक**, जिसने उन्हें उनके सफर के आख़िरी संकेत दिए।

मोम की वो पट्टियाँ, जिन्होंने उसे आते देखा, जिसका रूप हर कदम के साथ बदल जाता था। कोई नहीं बता सकता था, वो एक भैंसा था, ऊँट था, मेमना था, मगरमच्छ था या फिर जंगली बिल्ली। लेकिन ये पट्टियाँ भी उन पट्टियों की तरह बेहद ख़ास हैं, जिनमें मकास और पर्सीना की पाक मुहब्बत का ज़िक्र किया क्योंकि इनके भीतर भी वही रूहानी खुशबू कहीं बसी है, जो एक मादा जल–प्रेत और चाँदनी रातों के एक छलावे की मुहब्बत से निकली। ये इंसानी दुर्भाग्य ही है कि वो सबसे पाक अहसासों की तरफ से नज़र फेरकर, हमेशा उन जज़्बातों को महत्त्व देते हैं, जो मुहब्बत से कम पाकीजगी लिए होते हैं। शायद यही वजह है, मुझे हमेशा लगता है कि **मुहब्बत, बेशुमार होने के बाद भी, बहुत कम होती है और कम होने के बाद भी बेशुमार।**

शापग्रस्त बूढ़ा

अध्याय तेरह

'आज शाम तक थोरोज और सालन यहाँ होंगे।' कास्टन बूढ़े ने उन तीनों के कमरे में आकर सूचना दी।

उन्होंने इस तरह उसकी तरफ देखा, जैसे इंतजार के इन पलों को खत्म करने के लिए शुक्रिया कह रहे हों। उन दोनों के लौटने का, उन्हें बड़ी बेसब्री से इंतजार था। कास्टन के चेहरे को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे कोई बहुत दुखद घटना घटी हो, लेकिन वो उन्हें उसकी जानकारी देना न चाह रहा हो।

'क्या कुछ गलत घटा है?' जरूस ने उसकी तरफ देखा।

'शायद...'

'हुआ क्या है? तुम्हारे चेहरे पर परेशानी और चिन्ता, मशगछाला बिछाकर बैठी है।' जरूस ने उसके पास आते हुए कहा।

उसने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया, थका–सा वो एक बिस्तर पर बैठ गया।

'हमें बताओ कास्टन...आखिर बात क्या है?' जरूस ने उसकी बाँह पकड़कर हिलाते हुए कहा।

'कुछ बुरा हुआ है, बहुत बुरा...*सफेद घोड़े* की रूह ने सन्देश दिया है, हमारे लोगों पर हमला कराया गया है। अभी पूरी बात का पता नहीं है, शायद कुछ लोग जख्मी हैं और कुछ को गम्भीर घाव हैं। थोरोज और सालन कुछ देर में सबको लेकर यहाँ पहुँच जाएँगे। हम सबको भी बहुत होशियार रहना होगा। हालाँकि यहाँ, थोरोज की मर्जी और इजाजत के बिना कोई पैर नहीं रख सकता, लेकिन फिर भी, हमें हर बात से चौकस रहने की ज़रूरत है।' उसके चेहरे पर बदहवासी साफ झलक रही थी।

तीनों एकदम चौंक कर खड़े हो गए। उन्होंने बदहवास कास्टन से ज़ोर से पूछा, 'किसने...किसने हमला किया? हुआ क्या...पूरी बात बताओ कास्टन?'

'अभी सब कुछ नही पता, मगर हालात ठीक नहीं हैं। जल–प्रेतों को यहाँ से भेजा जा चुका है, घायलों को लेकर आने के लिए।' कास्टन ने अब खुद को संभाल लिया था।

'सालन और थोरोज सलामत हैं या उन्हें भी घाव आए हैं?' मकास ने चिन्तित स्वर में पूछा।

'वो महफूज हैं लेकिन खतरा कभी भी मँडरा सकता है।' रैक्टिकस ने कमरे में दाखिल होते हुए कहा। 'घायलों के उपचार का इंतज़ाम करके रखना होगा।'

रैक्टिकस बाहर तालाब पर जाकर, जल–प्रेतों को कुछ निर्देश दे रहा था। तीनों अच्छे से समझ चुके थे, कोई न कोई बड़ी और खतरनाक बात हुई है।

कुछ देर बाद, बहुत दूर आसमान पर पायथोफैण्ट मँडराता हुआ दिखाई दिया। दूरी इतनी ज़्यादा थी कि वो एक छोटी चिड़िया के बराबर लग रहा था। फिर वो पास आता गया और ऐसा लगा जैसे उसी पहाड़ी जगह पर उतर गया हो, जहाँ वो लोग पहले दिन आकर उतरे थे।

'वो लोग आ चुके हैं, बस पहुँचते ही होंगे। सब तैयारी ठीक से है न?' रैक्टिकस ने पूछा।

'हाँ, सब ठीक है, तुम वो औषधि ले आए न? कास्टन ने उसकी तरफ़ प्रश्नवाचक नज़रों से देखा।

'हाँ, मैं ऊपर जाकर घोल तैयार करता हूँ, तुम उन्हें आते ही ऊपर ले आना।'

'ठीक है, लेकिन जल्दी करो, वो किसी भी पल पहुँच सकते हैं।'

फिर जंगल से मैदान की तरफ आने वाली पगडण्डी पर हलचल दिखाई दी। कैफुआन पस्तर, फैग्यूला फ्लॉट, जिल्चोकाट और सालन दिखाई दिए। उन्होंने हूनास्पॉटी, वुन्टनव्रॉस और स्कीनिया ब्राज के जिस्म अपने कन्धे पर उठाए हुए थे। थोरोज उनमें सबसे पीछे थे। सब दौड़कर उन तक पहुँचे, पास जाकर उन्होंने देखा, तीनों के जिस्म खून से लथपथ थे। उनके जिस्म से खून ऐसे चू रहा था कि उसकी बारीक धारें ज़मीन पर गिर रही थीं। उन्होंने देखा, धुँए के बने कुछ जल–प्रेत उन बेहोश जिस्मों के इर्द–गिर्द तैर रहे थे। जैसे उनकी देह को सहारा दे रहे हों।

'इन्हें ऊपर पहुँचाओ...जल्दी करो...' थोरोज ने कछुए जैसे अपने मुँह पर आया पसीना पोंछते हुए कहा। सबने सहारा देकर उन्हें जीने पर चढ़ाने में मदद की। कमरे में जाकर उन्होंने तीनों के जिस्म आराम से फ़र्श पर लिटा दिए।

'रैक्टिकस अब देर मत करो, हर पल कीमती है।' सालन ने ज़ोर से हुए कहा।

'बस...तैयार है...मैं लेकर आता हूँ।'

भीतर से वो एक बड़ा पात्रा लेकर दौड़कर आया, जिसमे किसी औषधि का घोल भरा हुआ था। थोरोज़ ने उस पात्रा में अपनी उँगलियाँ डुबोई और गाढ़े घोल का लेप, हूनास्पॉटी, वुन्टनव्रॉस और स्कीनिया ब्राज के बालों पर लगाना शुरू कर दिया। लेप लगते ही उनके जिस्म से खून बहना बन्द होता चला गया। थोरोज ने किताबों वाले कमरे से, तीन मर्तबान मँगवाए। मर्तबानों में रंगीन द्रव भरा हुआ था। उन्होंने एक–एक मर्तबान तीनों घायलों के सीने पर उलटा रख दिया। मर्तबान से एक बूँद भी तरल बाहर नहीं गिरा लेकिन उसके भीतर तेज़ बुलबुले उठने शुरू हो गए।

'अगर जल–प्रेत वक्त पर न पहुँचते, तो इन्हें उठाकर लाना मुश्किल होता।' जिल्चोकाट ने अपने पत्तेदार होंठ हिलाए।

'इतना *वज़न* उठाकर लाना पायथोफैण्ट के भी बस की बात नहीं थी।' कैफुआन पस्तर ने अपने माथे का पसीना पोंछते हुए कहा।

'**शिला–शाप** का इस्तेमाल सदियों से नहीं किया गया। लोग तो लगभग भूल ही चुके हैं इसके बारे में।' फैग्यूला फ्लाट ने खून सनी आस्तीन को ऊपर चढ़ाते हुए कहा।

मकास ने आगे बढ़कर हूनास्पॉटी के पेट पर हाथ रखा, पेट, हल्के से ऊपर–नीचे हुआ तो उसे लगा, वो जीवित है लेकिन अचेत है। तीनों के सीने पर उल्टे रखे मर्तबान में भरे तरल से अब भी तेज़ बुलबुले निकल रहे थे। पतला सींकड़ी, चुपचाप एक कोने में खड़ा अपने नाखून कुतर रहा था।

'उनकी हालत बिगड़ रही है।' जिल्चोकाट ने इतनी ज़ोर से कहा कि सबका ध्यान उसकी तरफ खिंच गया।

सबने पलटकर तीनों के जिस्मों की तरफ़ देखा। उनकी नाक से गहरा काला खून निकलना शुरू हो गया था। खून इतनी तेजी से निकल रहा था, जैसे जिस्म के भीतर कोई बड़ी रक्त–वाहिनी फट गई हो। सब उनके ऊपर झुक गए।

'सालन...सालन...उन्हें क्या हुआ है? देखो उन्हें।' जिल्चोकाट इतनी तेज़ चीखा कि पत्तों और टहनियों से बना उसका जिस्म, ऐसे हिलकर रह गया, जैसे बेल्टीपोर्न के विशाल पेड़ को, किसी आँधी ने हिला दिया हो।

सालन ने तेज़ी से उनके पास जाकर देखा।

'हालत बहुत ख़राब है...शिला–शाप, इनके भीतरी अंगों को पत्थर में तब्दील करता जा रहा है। मगर रगों में बहता खून वैसा ही है। आहिस्ता–आहिस्ता इनका वज़न इतना बढ़ जाएगा कि इन्हें हिलाना भी मुश्किल होगा। पहले ही इनका वज़न किसी चट्टान जैसा हो चुका है।' सालन की आवाज़ में दर्द और चिन्ता साफ़ झलक रही थी।

उन्हें अब समझ आया, इतने लोग और जल–प्रेत एक साथ क्यों उनके जिस्मों को ढोकर ला रहे थे।

'थोरोज़...कुछ कीजिए...हम इन्हें ऐसे अपनी आँखों के सामने, मरने नहीं दे सकते।' मकास ने कहा।

तीनों की नाक से निकलने वाला काला खून, कम नहीं हो रहा था। थोरोज़ ने उसमें अपनी उँगलियाँ डुबोई...और ऐसे रगड़कर देखा जैसे पिसे नमक का दरदरापन जाँच रहे हों।

हर तरह के शापों को शुभ–अशुभ में परिवर्तित कर देने की ताक़त रखने वाला कास्टन ब्रूड हैरान–सा खड़ा था। 'लाख कोशिश करने पर भी मैं इस शाप का कोई तोड़ नहीं कर पा रहा। ऐसा लग रहा है जैसे मेरी सारी ताकतें इसे टस से मस भी न कर पा रही हों।' उसकी बात पूरी होते ही थोरोज़ की आवाज़ ने जगह ले ली।

'शिला–शाप का तोड़ दुनिया में केवल वो ही कर सकता है, जिसने ये शाप दिया हो...या फिर *हम* भी कर सकते हैं, लेकिन...लेकिन। इसके शिकार की मौत तय होती है। शायद...ये बहुत मुश्किल वक्त है। इनके अंदरूनी हिस्से...टूट–टूटकर खून में मिल रहे हैं।' थोरोज के स्वर में चिन्ता थी।

'आप...आप...इन्हें ठीक कर सकते हैं थोरोज...तो फिर सोच–विचार कैसा है? अगर देर की गई तो ये दम तोड़ देंगे।' सलार ने थोरोज के सामने तेज आवाज में कहा।

जरूस ने कपड़े से तीनों के मुँह पर बहता खून साफ किया। उसने वुन्टनब्रॉस की कलाई पकड़कर सहलाने की कोशिश की, लेकिन उसे हैरत हुई, बाजू इतनी *वज़नी* हो गई थी कि वो उसे एक सूत भी हिला नहीं पाया। उसने उसकी हथेली पर हाथ फिराया तो ऐसा लगा, जैसे वो किसी ठण्डी, सख्त चट्टान को छू रहा हो।

'नहीं थोरोज...आप ऐसा नहीं करेंगे...आप ऐसा सोच भी कैसे सकते हैं? आपकी जिन्दगी और हिफाजत, किसी भी चीज से ज्यादा बेशकीमती है।' सालन ने थोरोज की कछुए जैसी गोल आँखों में आँखें डालकर कहा।

'नहीं...हम अपने सामने किसी को इस तरह दम तोड़ने नहीं देंगे सालन...हमें फैसला करना ही होगा। जितनी भी देर होगी, इनकी साँसें इनके जिस्म से उतना ही दूर होती जाएँगी।'

'मगर...मगर आप जानते हैं, जो आप करना चाहते हैं, उसके बाद आप?' सालन ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।

थोरोज ने कछुए जैसी छोटी गर्दन हिलाई। 'हमें करना ही होगा सालन...वरना बहुत देर हो जाएगी।'

थोरोज ने अपने घुटने लकड़ी के फर्श पर टिका दिए। सब ऐसे देख रहे थे जैसे उनकी आँखें असमंजस के तालाब में डुबकियाँ खा रही हों।

'बाकी सब तुम पूरा करना सालन...हम इसके बाद किसी *लायक* नहीं रहेंगे।' थोरोज की आवाज़ में अब ऐसा खिंचाव था, जैसे गले की नसें बहुत ताकत लगा रही हों।

सालन ने न चाहते हुए भी सहमति में सिर हिलाया। थोरोज का छोटा–सा जिस्म, फर्श पर बैठता जा रहा था, सर आगे झुका होने और घुटने मुड़ जाने के कारण, कमर पर चढ़ा कछुए जैसा कठोर कवच, ऊपर उभर आया था।

थोरोज के चेहरे की सारी नसें खिंचती जा रही थीं, जिस्म की खाल में इतना खिंचाव पैदा हो गया था, जैसे अपनी जगह से फटने वाली हो। उनकी कमर पर उभरा गोल कूबड़ जैसा कवच...उपर उठता जा रहा था। ऐसा लग रहा था, जैसे वो अपने जिस्म की हड्डियों को बाहर निकालने की कोशिश कर रहे हों।

फिर ऐसी आवाज़ आई, जैसे किसी ने कपड़ा चीरा हो। सालन ने फ़र्श पर बैठकर थोरोज़ की पतली हथेली अपनी हाथ में ले ली। 'कच्च' की एक आवाज़ हुई और कछुए जैसा वो कवच, एक तरफ से ख़ाल से हट गया। वहाँ से ख़ून की सुर्ख़ धरा बह निकली। 'कच्च' की दूसरी आवाज़ के साथ, पत्थर जैसा वो कवच, ख़ाल से चिरकर अलग होने लगा।

थोरोज का जिस्म अब और भी ज़्यादा दुहरा होता जा रहा था, जिस्म जितना मुड़ रहा था, कछुए जैसा खोल उतना ही ख़ाल और नसों से अलग होता जा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे थोरोज़ की आँखें, रक्त–कुण्ड में तैरते दो सफेद अण्डों में तब्दील हो गई हों। सब ऐसे हतप्रभ खड़े थे, जैसे उन्हें भी कोई शिला–शाप जड़ कर गया हो। थोरोज ने एक बार फिर पूरी ताकत लगाई और पीठ पर उभरा कछुए जैसा ख़ोल, आधे से ज़्यादा अलग हो गया। जहाँ–जहाँ से ख़ोल अलग होता जा रहा था, वहाँ–वहाँ सफेद मांस और खून में लिथड़ी नसें झाँकने लगी थीं।

'सालन...सब ठीक से कर लेना।' थोरोज़ की दर्द में डूबी, काँपती आवाज़ जैसे किसी अन्धकूप से निकल रही थी।

सालन ने जवाब में उनकी हथेली को, बस कसकर पकड़ लिया। जैसे आश्वासन हो कि मैं संभाल लूँगा।

फिर 'कच्च' की एक आवाज़ के साथ, ख़ोल पूरी तरह अलग होकर लटक गया। थोरोज़ का जिस्म अब बेजान–सा होकर फ़र्श पर पड़ा था।

'जल्दी से कोई कपड़ा लाकर इनके जिस्म पर ढँक दो।' सालन ने जरूस की तरफ चीखकर कहा।

पतला सींकड़ी एक कोने में ऐसे खड़ा था, जैसे इस हौलनाक दृश्य ने उसको बुत में तब्दील कर दिया हो। जरूस ने तेज़ी से कमरे से एक चादर लाकर, थोरोज़ के खून से लथपथ जिस्म पर ढँक दी।

'फ़ैग्यूला...जल्दी करो...इसे संभालने में मेरी मदद करो।' सालन ने कछुए जैसे खोल को अपने हाथों में उठाते हुए कहा। पैफग्यूला फ़्लॉट ने आगे बढ़कर ख़ोल को थाम लिया।

'इसे चूरा करके...एक जगह इकट्ठा करो, जल्दी...तुम एक पल में ये कर सकते हो।' सालन ने उसकी आँखों में आँखें डालकर कहा। उसने बिना कुछ सोचे सहमति में अपना सिर हिलाया और कछुए जैसे ख़ोल को अपने हाथों में जकड़ लिया। कुछ ही पलों में ख़ोल चूरा होकर, फ़र्श पर एक ढेर के रूप में गिरने लगा। अब फ़र्श पर रेत जैसा ढेर पड़ा था।

'तालाब से पानी लेकर आओ...जल्दी...वक़्त बहुत कम है।' सालन की आवाज़ में इस वक़्त बला की सख़्ती और

आदेशात्मकता थी।

मकास तेजी से जीने की तरफ दौड़ा मगर उसे वहाँ कोई ऐसा पात्रा नजर नहीं आया, जिसमें वो पानी ला सके। उसने बर्तन ढूँढने के लिए इधर–उधर नजर दौड़ाई लेकिन कहीं कुछ नहीं दिखा। इससे पहले वो और वक्त गँवाता, कमरे में सफेद धुँध और कुहरे जैसी एक आकृति उभरी, वो एक जल–प्रेत था। पानी की एक मोटी धार उस धुँध से निकलकर, ढेर पर पड़ने लगी।

'इसे गूँधने और इसकी लुगदी बनाने में मेरी मदद करो...सब।' सालन ज़ोर से चीखे।

सबने एक पल की भी देर नहीं की और उस रेत को पानी में मिलाकर आटे की तरह गूँधने लगे। कुछ ही पलों में वहाँ गीली लुगदी का ढेर था।

'उसे इन तीनों के जिस्म पर लेप की तरह चढ़ाओ...देर मत करो... वक्त बहुत कम है।' सालन ने गीली लुगदी अपने हाथों में लेकर वुन्टनव्रॉस के जिस्म पर लगानी शुरू कर दी। हूनास्पॉटी और वुन्टनव्रॉस के जिस्म पर तो लेप आसानी से चढ गया, लेकिन स्कीनिया ब्राज के बालों भरे जिस्म पर लेप लगाने के लिए उसे और भी पतला करना पड़ा।

सारा लेप खत्म करने के बाद, सालन ने एक गहरी साँस ली और सबकी तरफ देखा। 'अब ये बच जाएँगे...लेकिन अब इनसे ज़्यादा थोरोज को हिफाजत और देखभाल की ज़रूरत है।'

सालन ने बर्तन में बची वो औषधि, जिसे आते ही तीनों के बालों में लगाया था, सारी की सारी, थोरोज की पीठ पर लगा दी। खून बहना अब बन्द हो चुका था, लेकिन उन्होंने आँखें नहीं खोली थीं। सबके माथे पर पड़ी चिन्ता की सलवटें अब कुछ खुल गई थी।

ऐसा लग रह था जैसे थोरोज़ की पहाड़ी भी आज बहुत उदास हो। कहीं किसी प्राणी के बोलने तक की आवाज़ नहीं आ रही थी। लग रहा था जैसे खामोशी अपनी पीठ पर पत्थर बाँधकर, तालाब में कूद गई हो।

बीच में एक बार, मकास के कानों में फ़ैग्यूला की फुसफुसाहट पड़ी, वो जिल्वोकाट से धीरे–धीरे बात कर रहा था, '**शिला–मानव** 'उसके' साथ मिल जाएँगे, ये तो कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।'

काठ–घर के बाहर, तालाब के पास जमघट लगा था, जल–प्रेतों का जमघट। हर तरफ़ बस तैरती हुई धुँध और कोहरा–सा दिख रहा था। वो कई गुटों में खड़े होकर फुसफुसा रहे थे। उनकी आवाज़ें कानापफूसी जैसी ही लग रही थीं।

फिर रात के तीसरे पहर, जब सब जल–प्रेत तालाब के भीतर चले गए। एक साया...काठ–घर की तरफ़ बढ़ता दिखा। पल भर के लिए, वो किसी इंसानी क़द का लगा, लेकिन अगले ही पल ऐसा लगा जैसे कोई *भैंसा*, हल्की चाँदनी में चला आ रहा हो। जरूस ने खिड़की से उस साए को आते देखा।

एक बार वो किसी *घोड़े* की धुँधली–सी आकृति में दिखा और फिर जंगली *बिल्ली* की। जैसे–जैसे वो आगे बढ़ता आ रहा था, हर क़दम के साथ वो किसी दूसरे ही रूप में दिखाई देता। एक बार तो वो लम्बी टाँगों वाले *बकरे* के रूप में दिखा। जरूस समझ नहीं पा रहा था कि वो आखिर है क्या। साया, अब हर पल पास आता जा रहा था। हल्की चाँदनी में उसने देखा, एक *कुत्ता* काठ–घर की तरफ़ बढ़ा चला आ रहा था।

उसकी हैरानी तब और भी ज़्यादा बढ़ चली, जब उसने देखा तालाब के पास आकर, वो *मगरमच्छ* में तब्दील हो गया और आहिस्ता से तालाब के पानी में उतर गया। फिर ऐसा लगा जैसे उसे बहुत तेज़ झटका लगा हो, वो उससे भी तेज़ी से तालाब से बाहर निकला, जितनी तेज़ी से उसमें उतरा था।

वो घूमकर, लकड़ी की सीढ़ियों के पास तक पहुँचा और जंगली बिल्ली में तब्दील हो गया और दबे पाँव सीढ़ियों पर चढ़ा। जरूस दम साधे सब कुछ देखता रहा। उसे समझ नहीं आ रहा था, ये आने वाला कौन है और इस तरह क्यों काठ–घर में प्रवेश करना चाहता है। बार–बार उसका छद्म रूप में आना भी, उसके इस सन्देह को मज़बूत कर रहा था कि वो कोई दुश्मन है।

उसने एक बार फिर खिड़की से बाहर झाँका, तालाब की सतह पर जडाकी की दूध–सी परछाई तैर रही थी। उसे समझ नहीं आया, इतनी रात गए ये मादा जल–प्रेत क्यों जाग गई? क्या इसने उसे तालाब में उतरते देख लिया, क्या ये भी उसकी तरह निगरानी कर रही है? सवालों के साए उसके ज़ेहन में मँडराने लगे।

जरूस ने कमरे के भीतर जाकर देखा, तीनों घायल आँखें बन्द किए लेटे थे। उसने दूसरे कमरे में झाँका, सब सो रहे थे, केवल जिल्वोकाट जाग रहा था। वो कुछ पूछना चाहता था लेकिन उसने अपने होठों पर उँगली रखकर इशारे से मना कर दिया।

पास जाकर उसने फुसफुसाकर बताया, 'कोई दरवाज़े पर है...मैं बहुत देर से उसकी निगरानी कर रहा हूँ।'

'कौन है?' जिल्वोकाट ने आहिस्ता से फुसफुसाकर पूछा।

'पता नहीं...मगर दोस्त नहीं लगता...हमें दरवाज़े पर पहुँचना चाहिए।'

'तुमने उसे कहाँ देखा?

'दूर जंगल की तरफ से आते हुए। वो बार–बार छद्म रूप में आ रहा था।'

उनके फुसफुसाने की आवाजें सुनकर, मकास भी जाग गया। इससे पहले वो कुछ पूछने के लिए बोलता, जिल्वोकाट ने अपने पत्ते जैसे होठों पर उँगली रख दी और अपने पीछे दोनों को आने का इशारा किया।

फिर दरवाज़े की झिर्री से हल्का सफेद धुआँ भीतर आना शुरू हो गया। तीनों तेजी से दरवाज़े के पास से हट गए। धुआँ गाढ़ा और सफेद होता जा रहा था। तीनों बचाव और हमले वाली मुद्रा में आ गए। लकड़ी के फर्श पर एक आकृति उभरती जा रही थी।

वो एक *ऊँट* था।

जिल्वोकाट ने हमले के लिए अपनी लकडी जैसी उँगलियाँ सीधी कीं और तेज आवाज़ में ललकारा, 'कौन हो तुम और यहाँ दाखिल होने की हिम्मत कैसे की?'

उसकी तेज़ आवाज सुनकर सब जाग गए। मकास ने देखा, कमरे के दरवाज़े से बदहवास सलार और फैयूला फ़्लॉट बाहर आ रहे थे। उसकी नज़र दोबारा उधर गई तो उसने देखा, ऊँफट कहीं नहीं था। वहाँ अब एक *मेमना* खड़ा था।

कोई कुछ समझ पाता, इससे पहले एक आवाज़ भीतरी कमरे से आई, 'आओ! **कैटाकोटस मैगनडोला**... यहाँ सब दोस्त हैं।' सालन ने कमरे से बाहर आकर मेमने की तरफ मुस्कराकर देखा।

'थोरोज़ अब कुछ ठीक हैं। हम तुम्हें इतनी जल्दी ख़बर नहीं देना चाहते थे लेकिन... ख़ैर... चिन्ता की कोई बात नहीं है, वो इस वक्त नीम–बेहोशी में हैं...शायद सुबह तक कुछ और आराम आ जाए।' सालन ने उसकी तरफ देखते हुए कहा।

सबकी आँखों में ये देखकर हैरत और अचरज के भाव थे कि वो अब भैंसे में तब्दील हो गया था। सालन ने उसकी तरफ देखकर कहा, 'तुम्हें थोरोज़ को पास से देखना चाहिए...'

वो थोरोज़ के कमरे की तरफ़ बढ़े, भैंसा उनके पीछे–पीछे कमरे की तरफ़ चला। लकड़ी के ठोस फ़र्श पर, उसके वज़नी खुर, ठक–ठक की आवाज़ कर रहे थे।

उसने एक बार चौड़े कमरे में लेटे, वुन्टनब्रॉस, हूनास्पॉटी और स्कीनिया ब्राज को अपनी लम्बी जीभ से चाटा और फिर भीतर की तरफ बढ़ गया। ऐसा लगा, जैसे वो उनके बदन नहीं, उन पर चढ़े थोरोज़ के ख़ोल को चाटकर सहला रहा हो। उसके भारी खुर ऐसी आवाज़ कर करे थे, जैसे काठ–घर का फ़र्श टूट जाएगा।

सालन उसके साथ, उस कमरे में पहुँचे, जिसमें थोरोज़ का बेहोश जिस्म बिस्तर पर था। भैंसे ने एक बार उनकी तरफ़ देखा और फिर उस कपड़े को अपने मुँह में दबाकर खींच लिया, जो उन पर ढँका हुआ था। बिस्तर पर थोरोज़ का ज़ख्मी जिस्म था, पूरी पीठ पर औषधि का लेप लगा हुआ था। सब उनके पीछे–पीछे कमरे में आ गए। वो अभी तक नहीं समझ पा रहे थे कि आख़िर ये माजरा क्या है और ये *कैटाकोटस-मैगनडोला* कौन है?

उसने अपनी लम्बी जीभ से औषधि को चाटना शुरू कर दिया। आहिस्ता–आहिस्ता उसने पूरे ज़ख़्म को साफ़ कर दिया। उसकी लार थोरोज़ की ज़ख़्मी पीठ पर गिरने लगी। आश्चर्यजनक रूप से जख़्म भरना शुरू हो गया। वो घाव को चाटता जा रहा था और घाव भरता जा रहा था। सब जड़वत् इस दृश्य को देख रहे थे।

उसने एक बार अपनी लम्बी जीभ, थोरोज़ के चेहरे पर फिराई और फिर एक तेज़ छलाँग, लकड़ी की दीवार पर लगाई। वो दीवार में घुसकर पार निकल गया, लेकिन दीवार अब भी सही–सलामत थी। सब तेज़ी से दौड़कर खिड़की के पास पहुँचे, उन्होंने देखा, अलग–अलग प्राणियों का रूप बदलती हुई एक आकृति...पतली पगडण्डी पर जंगल के भीतर दौड़ती जा रही थी।

'ये कौन था?' जरूस ने हड़बड़ाकर सालन से ऐसे सवाल किया जैसे पूरा काठ–घर यही सवाल पूछना चाह रहा हो, बस *प्रतिनिधित्व* उसने किया हो।

'कैटाकोटस...ये कैटाकोटस था।' सालन के होंठ आहिस्ता से हिले।

'कैटाकोटस!' सलार ने हैरानी से पूछा।

'हाँ...चाँदनी रातों का छलावा। एक अस्तित्त्व...*जो-है-भी-और-नहीं-भी*।' सालन ने गम्भीरता से जवाब दिया।

'मगर ये...ऐसे...क्या किया आख़िर इसने?' मकास ने आगे बढ़कर पूछा।

'ये अपनी ज़िन्दगी को थोरोज़ का दिया उपहार समझता है। उन्होंने इसे पूरी पहाड़ी की देखभाल से लेकर, ऐसी ख़ास ज़िम्मेदारियाँ तक सौंपी हुई हैं, जिनके बारे में केवल इसे और थोरोज़ को ही पता है। किसी छलावे का अपना कोई जिस्म नहीं होता। वो थोड़ी–थोड़ी देर में रूप बदलते रहते हैं। ज़्यादा देर तक वो किसी एक प्राणी के रूप में नहीं रह सकते। ज़्यादातर ये केवल चाँदनी रातों में बाहर निकलते हैं।'

सालन के होंठ बन्द होते ही मकास ने दूसरा सवाल कर दिया, 'मगर इसे पता कैसे चला, थोरोज़ की जान ख़तरे में है?'

'तुम अभी किसी छलावे की ताकत के बारे में नहीं जानते...वो अद्‌भुत ताकतों के मालिक होते हैं, लेकिन ज़्यादातर छलावे अपनी शक्तियों को, केवल शरारतें करने, लोगों को सताने, डराने, उनसे छेड़छाड़ करने या फिर उनके साथ मल्लयुद्ध करने में लगाते रहते हैं।

जरूस ने कुछ देर बाद कास्टन ब्रूड से पूछा, 'तुम फैग्यूला की तरफ देखकर क्यों मुस्करा रहे थे, ब्रूड?'

वो उसके कन्धे की तरफ झुका और बेहद धीमी फुफसफुसाहट में उसके कान के पास बोला, '*जडाकी* उसके पीछे–पीछे जंगल की तरफ गई है। बेचारा...हर वक़्त उससे बचता घूमता रहता है।'

अब जरूस को समझ आया कि जब वो तालाब में मगरमच्छ बनकर उतरा था तो एकदम तेज़ झटके से क्यों बाहर आ गया था। जरूर उसने भीतर जडाकी को देख लिया होगा या फिर जडाकी ने उसे। अब उसके होंठों पर भी एक गहरी मुस्कराहट तैर गई।

रात लगभग पूरी पिघल चुकी थी। लग रहा था, कुछ देर बाद आसमान लाल होना शुरू हो जाएगा। सालन ने सबको कुछ देर सोने का सुझाव दिया ताकि अगली तैयारियाँ की जा सकें। कुछ आँखों में नींद थी और कुछ आँखें इतनी ख़ाली थीं, जैसे चूज़ा निकल जाने के बाद अण्डे का ख़ोल।

थोरोज़ ने अपने साथियों के लिए बहुत बड़ी क़ुर्बानी दी थी। ये एक ऐसा त्याग था, जिसके दुष्परिणाम केवल थोरोज़ के लिए थे और बाक़ी किसी के लिए नहीं। मेरी बूढ़ी उँगलियाँ जानती हैं या फिर सालन को मालूम था कि इस त्याग की कितनी बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ सकती थी। लेकिन प्रकृति का एक बड़ा सच ये है कि बिना मोल चुकाए, अनमोल को नहीं खरीदा जा सकता। बस वो मोल, अलग–अलग रूपों में हो सकता है।

मेरी गुफा की दीवार पर रहने वाली वो पोजन मकड़ी अब लौट आई है, जिसके बारे में मुझे लगता था, या तो वो शिकार पर गई है या फिर शिकार हो गई है। ये दुनिया की पहली **गुफा–पुस्तक** है। इससे पहले कुछ आदिम लोगों ने गुफाओं की दीवारों पर चित्रा और कुछ सन्देश छोड़े हैं, कुछ छोटी दास्तानें भी उकेरी हैं। लेकिन ये पहली बार हुआ कि सैंकड़ों गुफाएँ, किसी किताब के पन्नों में तब्दील हो गई हों। ये मुझे ख़ास लगता है, ख़ास भी इस रूप में, क्योंकि इसे दीवारों पर खोदने वाला ख़ास नहीं, बल्कि ये दास्तान ख़ास है।

ये ख़ास है उस छोटे से गाँव के लिए, जिसके तीन नौजवान, अपने पिता का क़ौल पूरा करने निकले। सबसे ख़ास बात, ये उन तजुर्बों की रेत का रेगिस्तान है, जो सैंकड़ों लोगों ने हज़ारों साल में लिए। ज़िन्दगी के अनुभव, वो सत्त्व, जो सैंकड़ों बरसों को निचोड़कर भी, मुश्किल से दो–चार बूँद निकलता है।

इसका सबसे अहम पहलू मुझे ये नहीं लगता कि वो तजुर्बे आने वाली नस्लों के काम आएँ, या दूसरे लोग उन अनुभवों के हिसाब से अपनी ज़िन्दगियाँ जिएँ। नहीं...अहम बात ये है कि वो अपने अनुभवों के लिए जिए, अपने अनुभव उठाने के लिए लड़े, जूझे, हँसे, रोए, मित्रा और शत्रु पैदा किए। *यही* ज़िन्दगी है...या फिर कम से कम मुझे ऐसा लगता है कि *यही असली* ज़िन्दगी है।

अगली सुबह, पहली बार सैल्गासीड का सन्देशा आया। वो एक भेदिया बिल्च्यू था, जिसका नाम **चैनो** था। उसने ख़बर दी, लैनीगल को ढूँढ लिया गया है। वो सुदूर दक्षिण के जंगलों में था, वो वहाँ के मांसभक्षी क़बीलों और ख़ूंख़्वार प्राणियों से मुलाक़ातें कर रहा था। उसे देखकर ऐसा लगता जैसे वो किसी का राजदूत बनकर वहाँ पहुँचा हो।

लैनीगल को उनकी मौजूदगी की ख़बर नहीं लगी थी। सतह के हिसाब से रंग बदलने में माहिर, बीस बिल्च्युओं का एक झुण्ड उसका पीछा कर रहा था। सैल्गासीड ख़ुद हर बात की पल–पल की जानकारी ले रहा था। पहली बार उसे किसी ख़बर को लाने के लिए इतना उतावला देखा गया था।

उसने बताया कि वो शापग्रस्त बूढ़ा वाकई बहुत शातिर है। बिल्चुओं को कभी किसी को ढूँढने में इतनी दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ा। उन्होंने उसे गुफाओं में ढूँढा, झीलों और तालाबों की तलहटी में खोजा। पहाड़ों, घाटियों और रेगिस्तानों में तलाशा गया...चौदह सौ बिल्चू उसकी खोज में थे लेकिन वो कहीं नहीं दिखा।

फिर बिल्चुओं के *ख़बरी-कव्वों* ने सन्देश भेजा कि उनके बताए गए हुलिए का एक आदमी दक्षिण के जंगलों में देखा गया है लेकिन वो हर रोज़ अपना पहनावा और चाल बदलकर चलता है। वो चलते वक़्त इतना सावधन रहता है, बार–बार उसकी नज़र ऊपर आसमान की तरफ जाती है, जैसे सावधन हो कि कहीं कोई उसकी निगरानी तो नहीं कर रहा।

सैल्गासीड ने अपने सबसे खास जत्थे को दक्षिण की तरफ रवाना किया। बहुत जल्द सन्देशा मिला कि शिकार को खोज लिया गया है। लेकिन वो उससे इतनी दूरी बनाए हुए थे, जितनी उन्होंने कभी किसी शिकार की निगरानी करते वक़्त नहीं बना कर रखी थी।

उसके पीछे हर वक्त *नीले चींटों* की एक फौज रहती, जो उसके पदचिन्हों पर पेशाब करती चलती ताकि कोई उसकी गंध पाकर उसे खोज न ले। वो हर वक्त चोरों की तरह दिखता। जिस कबीले में वो होता, वहाँ उसके लिए तीन झोंपड़ियाँ दी जातीं, उनमें वो अपनी मर्जी के हिसाब से ठहरता। उसका *शातिरपन,* उसके लैनीगल होने की *चुगली* कर रहा था।

सालन ने चैनो को ढेर सारे छोटे आईने तोहफे में दिए और उसे विदा कर दिया। उसने सैल्गासीड के लिए सन्देशा भेजा कि वो अपनी निगरानी जारी रखे और उसकी हर हरकत को जाँचा जाए। खूँख्वार कबीलों और प्राणियों के इलाके से निकलकर वो जहाँ भी जाए, उसका पीछा किया जाए। हिफाज़त से समझौता न हो और उसकी बात सुनने का मौका मिल सके, तो कोशिश की जाए, ये पता करने की कि आखिर वो किस फ़िराक में है।

बिल्चू के जाने के बाद सालन ने फौरन आपात बैठक बुलवाई। सब लोग चौड़े कमरे में इकट्ठा हुए। थोरोज़ और बाकी लोगों को होश आ गया था। उनके ज़ख्म भर चुके थे लेकिन अभी उन्हें आराम की जरूरत थी। कम से कम थोरोज़ को अभी एक लम्बे विश्राम की आवश्यकता थी। बिना कवच और खोल के, वो एक असहाय गिलहरी से ज्यादा नहीं लग रहे थे। सालन ने उन्हें अपने कमरे में ही रहने का मशवरा दिया।

सभा में फैंग्यूला फ़्लॉट, जिल्वोकाट, पतला सींकड़ी, कास्टन ब्रूड, रैक्टिकस ड्रॉन, सालन, जरूस, सलार और मकास मौजूद थे। कमरे में इतनी ख़ामोशी थी कि किसी की साँस की आवाज़ तक बेअदबी नहीं कर रही थी।

फिर फैंग्यूला फ़्लॉट की आवाज़ ने बैठक की शुरुआत की–'माननीय सभापति महोदय...पिछले दिनों घटी ख़तरनाक घटनाओं और वाकियात से सब भली तरह परिचित हैं। सारी दुनिया पर जंगल–युद्ध का ख़तरा मँडरा रहा है। भेदियों से मिली ख़बर के हिसाब से, दुश्मन निर्णायक जंग की तैयारी कर रहा है। सैंकड़ों क़बीले और अलग–अलग प्रजातियों के प्राणी, उसके साथ मिल गए हैं। इसका सबसे ताज़ा उदाहरण तब देखने को मिला, जब कैमीन के पठार में हमारे लोगों पर शिला–मानवों ने उस वक़्त हमला किया, जब वो उस कछुए के पदचिन्ह खोजने की कोशिश कर रहे थे, जिसकी पीठ पर दुष्ट जैल्डॉन बरसों से बैठा हुआ है।'

वो एक पल को साँस लेने के लिए रुका और फिर बोलना शुरू कर दिया, 'उन्होंने बिना किसी वजह और बिना चेतावनी के हमला किया और जानलेवा *शिला-शाप* का इस्तेमाल किया। जब तक कोई कुछ समझ पाता, वो उन निशानों को मिटाकर चले गए, जिन पर ये सन्देह था कि ये निशान उस विशाल कछुए के पैरों के हैं। शिला–मानवों का नेतत्श्व इस वक़्त **बूजाचल** कर रहा है, जो बेहद लालची, स्वार्थी और बेरहम है। उसने ज़रूर किसी कच्चे लालच में जैल्डॉन से हाथ मिलाया होगा। लेकिन चिन्ता की बात ये है, बिल्चुओं ने जो खबर भेजी है, वो बेहद चिन्तित करने वाली है। शातिर लैनीगल का पता लगा लिया गया है। वो सुदूर दक्षिण के जंगलों में है। मांसभक्षी क़बीलों और खूँख्वार प्राणियों की प्रजातियों को अपने साथ मिलाने के लिए वो राजदूत का काम कर रहा है।'

उसने एक बार सबकी तरफ़ देखा और फिर उसके होंठ हिलने लगे, 'जंग...कभी भी, बिना बताए दस्तक दे सकती है। इसलिए हमें सारी तैयारियाँ करनी होंगी। इस बारे में अंतिम फैसला लिए जाने से पहले, महासभा के सदस्यों से मशविरा करना ज़रूरी था इसलिए आज यह बैठक बुलाई गई है ताकि आने वाली बर्बरता और वहशीपन की आँधी का सामना किया जा सके।' उसकी बात पूरी होते ही, वो अदब के साथ अपनी जगह पर बैठ गया।

'तुम क्या कहते हो जिल्वोकाट?' सालन ने वृक्षमानव की तरफ देखते हुए पूछा।

'गैल्नास का पूरा जंगल और उसका हर प्राणी, जंगल–युद्ध को रोकने के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा देगा सालन...हर वृक्षमानव इस जंग में आपके साथ है।' उसने पेड़ की जड़ जैसे अपने दाँत, भींचते हुए कहा।

'और...इस बारे में तुम्हारा क्या कहना है कैफ़ुआन?'

'सीनिया प्रदेश और वहाँ की रोशनी का हर ज़र्रा, अपनी पूरी ताक़त के साथ उनको कुचलने के लिए तैयार है सालन.. .हमारे लोग...उनकी रूह के भीतर इतना उजाला कर देंगे कि उनकी काली नसों के भीतर भी, रोशनी की ही नदियाँ बहेंगी' कैफ़ुआन पस्तर की आवाज़ में बला की सख़्ती और आत्मविश्वास झलक रहा था।

सालन ने अभी नाम भी नहीं लिया था लेकिन रैक्टिकस ड्रॉन अपना बाँस जैसा लम्बा शरीर लेकर खड़ा हो गया–'बैम्बूस...हर दुष्टता का अंत करने के लिए हमेशा तैयार रहे हैं और सदियों से कुर्बानियाँ देते रहे हैं महान सालन... हमारे जंगबाज, इस युद्ध के लिए, बस उस इशारे के इंतजार में हैं, जो आपकी तरफ से मिलना है।'

'युद्ध का *इंतज़ार* नहीं होना चाहिए रैक्टिकस, **युद्ध नाम का दुष्ट बूढ़ा, अपनी विरासत में क़त्लोग़ारत की अथाह सम्पत्ति छोड़कर मरता है और इस माल–असबाब को, खुले हाथों से आने वाली पीढ़ियों में बाँटकर भी जाता है।'**

मकास और बाक़ी दोनों ने महसूस किया, कारस्टन ब्रूड चूँकि एक ख़ानाबदोश था, वो अकेला सारी दुनिया में घूमता था, बिना किसी घर, बिना किसी बस्ती, इसलिए फ़ौज इकट्ठा करने के लिए उससे सवाल नहीं किया गया।

'...और तुम्हारा क्या कहना है फैंग्यूला? क्या तकलामकानास का रेगिस्तान इस जंग में साथ होगा?' सालन ने उसकी तरफ़ सवालिया नज़रों से देखा।

'शायद नहीं महान सालन...आपको मालूम है, मैं अपने सौ साथियों के साथ निर्वासित जीवन जी रहा हूँ...मुझे रेत के उन टीलों के नीचे सरकने की भी इजाज़त नहीं है, जिनके नीचे मैंने अपना बचपन, अपनी उम्र के लम्बे बरस बिताए हैं। काश! तकलामकानास इस जंग में साथ होता, लेकिन मैं और मेरे सौ साथी जान की बाज़ी लगा देंगे...और दुष्ट जैल्डॉन के लिए तकलामकानास के रेत के, ये सौ कण ही काफ़ी हैं सालन।'

किसी को समझ में नहीं आया कि फैंग्यूला की दास्तान क्या है मगर इतना सब समझ गए कि शायद उसकी अपने परिवार और बस्ती के लोगों से दूरी है। वजह चाहे जो भी रही हो, लेकिन फ़्लॉट की आँखों में तैरती नमी, सबने साफ देखी थी।

'...स्ट्रासोल्स की हिम्मत और ताक़त की हमें इस जंग में ज़रूरत पड़ेगी गम्पूग्रास...क्या सरदार जैस्टीफ़्लच और तुम्हारे लोग तैयार हैं ?'

'उस नामुराद क्लेवरसीथ की ग़द्दारी के बाद, मुझे क्यों भेजा गया है सालन...ये आप जानते हैं। सरदार, उसके धोखे से बहुत दुखी हैं। उस जूँ के अण्डे जैल्डॉन से निपटने के लिए, वो आपका साथ ज़रूर देंगे।' उसने अपनी ज़बान संभालते हुए कहा। ऐसा लग रहा था जैसे वो अपने शब्दों को बहुत रोक–रोक कर और नापतोल कर बोल रहा हो।

वो पूरा दिन, सबने इस इंतज़ार में गुज़ारा, शायद थोरोज़ या बाक़ी तीनों घायलों में से कोई आँखें खोल दे। शाम तक लगा वुन्टनब्रॉस और स्कीनिया ब्राज की हालत सुध्र रही है। उन्होंने कई बार आँखें खोलकर सबकी तरफ़ देखा, लेकिन बोले कुछ नहीं। अँधेरा घिरने के साथ, हूनास्पॉटी की आँखों में भी, ज़िन्दगी की रोशनी नज़र आने लगी।

बिल्चुओं के सरदार सैल्गासीड की तरफ़ से दूसरा सन्देश आया था। वो एक बेहद पतला और सूखा हुआ बिल्चू था, जिसका नाम **जीमीष** था। उसने सालन को सन्देश दिया–'शातिर लैनीगल दक्षिण के क़बीलों और जंगलों से बात करने के बाद, उत्तर की तरफ़ निकल गया है। उसका पीछा लगातार जारी है, लेकिन लग रहा है, उसे कुछ शवफ हो गया है। अब वो पहले से ज़्यादा सावधन और सतर्क दिखता है।'

उसने ये भी बताया-'दक्षिण के क़बीलों से बात करते वक़्त उसकी बात सुनने की कोशिश की गई, लेकिन केवल एक लफ़्ज़ पल्ले पड़ सका *'मुलाक़ात'*। उसके पीछे चलने वाली, नीले चींटों की फ़ौज उस जगह के आसपास पहरा देती है, जहाँ वो किसी क़बीले के सरदार से मुलाक़ात करता है। उत्तर की प्रजातियों, जातियों और क़बीलों से मिलने के लिए वो निकल चुका है। बिल्चुओं का सबसे हुनरमन्द जत्था, उसका पीछा कर रहा है।'

जीमीज़ का सन्देश मिलने के बाद, सालन की चिन्ता और बढ़ गई। सैल्गासीड तक सन्देशा पहुँच गया। उसने तुरन्त दस बिल्चू उन दो बड़े आईनों को लेने के लिए भेज दिए, जिन्हें अग्रिम देने का वायदा किया गया था। अगले दिन उनका दल, आईने लेकर चला गया।

मकास ने सालन से पूछा, 'थोरोज़ की पहाड़ी पर जब चाहे, जो चाहे आ सकता है। फिर भी ये इतनी महफ़ूज़ क्यों लगती है आपको?'

सालन के बच्चे जैसे होंठ मुस्कराए, 'यहाँ जो चाहे वो नहीं आ सकता, यहाँ केवल वो आ सकता है, जिसको आने की इजाजत दी जाती है। ये पहाडी दुनिया की नजरों से ओझल है। ये **दृष्टि–बन्धित–पहाड़ी** है, केवल उनको दिखाई दे सकती है, जिन्हें इसे देखे जाने की इजाजत दी जाती है और कोई भी, किसी भी विधि से इसे नहीं देख सकता, जब तक थोरोज न चाहें।' तीनों को समझ आ गया कि जब पायथोफैण्ट, उन्हें लेकर पहाडी पर आया था तो वो उन्हें क्यों दिख रही थी।

थोरोज को अब होश आ चुका था। लेकिन उनकी कमजोरी बहुत ज्यादा बढ गई थी। जल–प्रेतों की मदद से उन्हें जंगल के उस हिस्से में पहुँचा दिया गया, जहाँ सबको जाने की इजाज़त नहीं थी। कैटाकोटस अब हर पल उनकी तीमारदारी करता।

बिल्चुओं का अगला सन्देश बहुत चौंकाने वाला और दहशतनाक था। शातिर लैनीगल का पीछा करने वाले, दस खबरी–कव्वे मश्त पाए गए। उनके जिस्म, नीले चींटों ने इतनी बुरी तरह खा लिए थे कि उन्हें पहचानना भी मुश्किल था। सैल्मारीड ने भेदियों के जत्थे को और सावधन रहने की हिदायत भिजवाई। खबर आई कि वो उत्तर के क़बीलों तक पहुँच गया और कुछ सरदारों से बात करने में भी कामयाब रहा है।

कहीं भी फौज के आने–जाने जैसी या किसी आक्रमण जैसी कोई तैयारी नहीं दिखी थी। सब जगह तूफान के आने से पहले जैसी शान्ति थी। एक बिल्चू उस झोंपडी के छप्पर पर जाकर चिपक गया, जहाँ वो सरदारों से मुलाक़ात कर रहा था। उसने अपनी रंगत, बिल्कुल झोंपडी के छप्पर के रंग में मिला ली थी। दम साधे, बिना हिले–डुले वो चिपका रहा।

लैनीगल कह रहा था–'तारीख़ और जगह के बारे में ख़बर कर दी जाएगी...आपकी सहमति हमारे लिए देवताओं की सहमति के बराबर सम्मानजनक है। बस इतना याद रखिएगा, ये मुलाक़ात बेहद खुफ़िया और खामोश हो।'

फिर पता नहीं कैसे उसे शवफ हुआ कि कोई छप्पर से चिपका है। उसने पास जलती एक मशाल उठाकर, झोंपडी के छप्पर की तरफ़ उछाल दी। मशाल ठीक बिल्चू के ऊपर जाकर गिरी, वो सावधन था, वरना उसके पंजे छूट गए होते। बिजली की तेजी से उसने जगह छोड़ दी, झोंपड़ी धू–धू करके जलने लगी। लैनीगल ने छप्पर जैसे रंग की एक परछाई को, तेजी से सरकते हुए महसूस कर लिया था।

एक बात साफ़ हो गई थी, 'वो' किसी बड़ी मुलाक़ात की तैयारी कर रहा था। किसी जगह, क़बीलों के सरदारों और उन सबको इकट्ठा होना था, जहाँ ये सभा होनी थी। सभा...जिसकी तारीख़ और जगह अभी तय होनी बाक़ी थी। उत्तर के क़बीलों में हलचल होनी शुरू हो गई थी। इसका मतलब सालन ने ये निकाला कि वो जगह ज़रूर दक्षिण में होनी चाहिए। क्योंकि दक्षिण वाले क़बीले अभी तक शान्त थे। यानि...जो दूर वाले थे, वो चलने की तैयारी कर चुके थे और पास वाले कुछ देर से निकलेंगे।

वुन्टनब्रॉस, हूनास्पॉटी और स्कीनिया ब्राज भी अब लगभग ठीक हो गए थे। पतला सींकडी इन दिनों थोरोज़ के साथ रुका हुआ था। मकास कभी–कभी घास के मैदान पर जाकर बाँसुरी बजाता, तो जडाकी तालाब के किनारे तक आ जाती। उसकी आँखें, जंगल में एकटक उस तरफ़ देखती रहतीं, जहाँ कैटाकोटस होता था। एकाध बार वो पतली पगडण्डी पर काफ़ी आगे तक जंगल के भीतर चली जाती, लेकिन फिर वापस लौट आती।

जरूस ने किताबों के उस कमरे में जाकर, कोई किताब पढ़नी चाही लेकिन उसे ये देखकर हैरत हुई, इस बार वहाँ से सारी किताबें गायब हो चुकी थीं। सिवाय एक किताब के...वो पत्थर के चौकोर टुकड़ों पर लिखी एक वज़नी किताब थी, जिसे लोहे के छल्ले डालकर बनाया गया था। उसने पूरी ताक़त लगाकर किताब को उठाया और उसे पास रखी चौपाई पर रख दिया। उसे मालूम था, सलार अक्सर यहाँ आकर किताबें पढ़ता था लेकिन वो आज पहली बार यहाँ आया था।

किताब उठाने से 'खरड़–खरड़' की ऐसी आवाज़ हुई जैसे पत्थर की शिलाओं को आपस में ज़ोर से रगड़ दिया हो। उसमें कुल बीस पश्ष्ठ थे, या यूँ भी कहा जा सकता है, कुल बीस चपटी शिलाएँ थीं। उसने पहली शिला पर लिखे हर्फ़ों को ग़ौर से पढ़ा। ये चित्रालिपि थी, प्राचीन गैरोगन–ग्लीफ़ लिपि, जिसमें केवल बारह चित्रा थे, दुनिया की कठिनतम लिपि। उन बारह चित्रों की मदद से ही हर शब्द बनता था। उसने पहले पत्थर पर नज़र डाली, उस पर किसी छेनी से खोदा गया था...**'शाश्वत–जल'**। पत्थर में खुदे ये शब्द उसे भीतर तक सिहरा गए।

पता नहीं क्यों उसे ऐसा लगा, जैसे उनकी मंज़िल अब बहुत करीब आ गई हो। सवालों के अंध्ड़ उसके दिमाग़ में चलने लगे। क्या यही वो किताब है, जो उन्हें उस पानी तक पहुँचाएगी, जिसमें गीलापन न हो। क्या अब उस सफ़र का अंत हो जाएगा, जिसकी कोई मंज़िल नहीं नज़र आ रही थी। कई सवालों से जूझते हुए, उसने पहली चपटी शिला को पलटा।

'खरड–खरड' की तेज आवाज हुई और सबसे पहली शिला पर लिखे लफ़्ज पढ़कर, उसके कानों में सन–सन–सन की आवाज गूँजने लगी। पहली पंक्ति में लिखा था– **'ये किताब है उस पानी के बारे में, जिसमें गीलापन नहीं होता।'**

जरूस के जिस्म की एक–एक नस जैसे थरथराने लगी थी। उसने दूसरी शिला को पलटा...उस पर छेनी से खोदकर एक नक्शा बनाया गया था। उसने नक़्शे को समझने की कोशिश की लेकिन उसकी समझ में न तो किसी जगह का नाम आया और न ही उस पर बने निशान।

दरवाजे पर किसी के आने की आहट हुई। उसने तेजी से पास पड़ा एक कपडा उठाकर किताब पर ढँक दिया। ये सालन थे। उन्होंने एक बार उसकी तरफ देखा और मुस्कराकर आहिस्ता से कहा, 'किताबें पढ़ने का शौक बहुत अच्छा होता है। मगर उन्हें छुपाकर पढ़ने की जरूरत नहीं होती।'

जरूस थोड़ा सकपका गया। उन्होंने उसे अपने साथ आने के लिए कहा। उसने किताब को वहीं रखा छोड़ दिया और कमरे से बाहर निकल गया। थोड़ी देर बाद जब वो वापस वहाँ आया, तो किताब कहीं नहीं थी। उसने सारा कमरा छान मारा, लेकिन किताब गायब हो चुकी थी।

मोम की इन पट्टियों को खोदते समय, कल हथौड़ी से मेरा अँगूठा घायल हो गया। कैल्टिकस की इन गुफाओं के बाहर रैटाटॉस्कर घास, बड़ी तादाद में उगी है। उसका रस अगर जख्म पर लगाया जाए, तो एक पहर में ही घाव, पूरी तरह भर जाता है। मुझे याद आता है, मेरे पिता की माता, हमेशा एक कहावत कहा करती थीं– **'कोई दवा ज़ख्म को नहीं भरती, हर ज़ख्म खुद को भरना चाहता है।'**

. . . . . .

एक सप्ताह का वक्त था। महासभा के सभी सदस्यों को अपने–अपने प्रान्त और प्रदेशों में जाकर, जंग के लिए जरूरी समर्थन और फौज की मदद मुहैया करानी थी। सबसे दूर तकलामकानास का रेगिस्तान था। उसके बाद हूजा प्रान्त, जहाँ से बैम्बूस प्रजाति का पतला जंगबाज़ रैक्टिकस ड्रॉन आया था। सालन ने सबसे पहले उन्हें ही रवाना करने का फैसला किया। फैग्यूला फ़्लॉट और रैक्टिकस को एक साथ भेजा गया ताकि वो वक़्त रहते वापस आ सकें।

फैग्यूला फ़्लॉट और रैक्टिकस ड्रॉन...दोनों के जाने का रास्ता भी लगभग एक ही था। तय किया गया, दोनों साथ जाएँगे और साथ वापस आएँगे। ये सफ़र के लिहाज़ से भी ठीक था और हिफ़ाज़त की नज़र से भी। सालन ने सफ़र के लिए उन्हें ख़ास हिदायतें दी थीं।

उनके जाने के बाद, जरूस ने कमरे में जाकर उस किताब को खोजने की बहुत कोशिश की लेकिन वो कहीं नज़र नहीं आई। उसने पूरे कमरे का चप्पा–चप्पा छान मारा लेकिन सब बेकार। थक–हारकर उसने मकास और सलार से ये बात साझा करने का फैसला किया। उसने दोनों को घास के मैदान में बुलाया और उन्हें बताया, किस तरह वो किताब वहाँ दिखी, उसने ज़रा–सा पढ़ा और फिर वो गायब हो गई।

सलार ने बताया, ये सब उसके साथ पहले हो चुका है। एक बार दिखने के बाद कोई किताब दोबारा दिखी ही नहीं। उन तीनों ने ये बात सालन को बताने का निर्णय लिया लेकिन वो जंगल के भीतर चले गए थे।

सलार और मकास बातें ख़त्म करने के बाद, काठ–घर की तरफ़ चले गए लेकिन जरूस वहीं घास पर लेट गया और आसमान में चमकते सितारों को निहारने लगा। वो छोटा सितारा, इस बार काफ़ी क़रीब नज़र आ रहा था। वो अपनी मासूमियत में सिर से पैर तक डूबा था। जरूस ने उसकी तरफ़ देखकर हल्की–सी मुस्कराहट दी तो वो बहुत तेज़ी से झिलमिलाने लगा।

उसने अपनी तोतली ज़बान में पहली बार अपना नाम बताया– **'स्टारोग्लैक्स...'** वो बार–बार कुछ कहना चाहता था लेकिन जरूस की समझ में उसका कहा एक शब्द भी नहीं आ रहा था। वो किसी बच्चे की तरह बोल रहा था। फिर उसकी तोतली ज़बान, थोड़ी–सी समझ में आई। वो किसी चीज़ को पढ़ने के लिए कह रहा था।

उसने ज़्यादा कान लगाकर सुना तो पता चला, वो शिला–पुस्तक के बारे में कह रहा था। बहुत कोशिश करने पर उसके पल्ले केवल ये शब्द पड़े **'पूरा पढ़ना होगा, तालाब के जल में धेकर'**

न तो बात उसकी समझ में आई और न सन्देश। उसने उस नन्हे सितारे से बात करने की पूरी कोशिश की, लेकिन वो बस उसे देखता ही रहा।

फैग्यूला फ़्लॉट और रैक्टिकस ड्रॉन के जाने के बाद, उस रात काठ–घर में केवल सालन, जरूस, मकास और सलार ही थे। बाकी लोगों को जंगल के भीतर ले जाया गया था। सालन ने केवल इतना बताया, 'तुम तीनों की हिफ़ाज़त करना,

इस वक़्त का सबसे ज़रूरी काम है, सब लोग उसी की तैयारियों में लगे हैं।'

थोड़ा–बहुत खाना खाने के बाद, वो इस वक़्त चौड़े कमरे में थे। सालन ने एक गहरी साँस ली और जैसे खुद से बात की–'एक बात तो साफ हो गई है, वो हर तरफ से लोगों को इकट्ठा कर रहा है। कहीं फौज की कोई हलचल नहीं है यानि उसका इरादा अभी जंग का नहीं है। लेकिन कोई उसका साथ क्यों देगा? जो कुछ वो करना चाहता है, उसमें कितने लोगों को वो अपने साथ जोड़ पाएगा? उसके कछुए के पैरों तले ज़िन्दगी जीना, कोई भी खुद्दार कौम बर्दाश्त नहीं करेगी। पिछली बार भी ज़्यादा लोग नहीं थे, लेकिन इस बार स्थिति अलग है। अब उसके साथ एल्गा–गोरस की ताकतें हैं। वो उस रहस्यमयी किताब को पूरा कर चुका है लेकिन अभी तक भी ये साफ नहीं हो पाया है कि उसकी योजना क्या है?'

रात बढ़ती जा रही थी। सालन ने उन्हें अपने–अपने बिस्तर में जाने के लिए कहा। चारों तरफ की खामोशी को केवल जंगली कीटों की आवाज़ें भंग कर रही थीं।

अगले दिन बिल्चुओं का ख़बरी बहुत सुबह पहुँच गया। वो बहुत जबरदस्त ख़बर लाया था। उन्हें पता चला, वो कबीलों को अपने साथ मिलाने के लिए कोई वार्ता नहीं करने वाला, न ही उन्हें बुफछ समझाने वाला है। उसने बहुत खतरनाक चाल चली थी। बिना खून की एक भी बूँद बहाए, अपने लिए फौज तैयार करने की।

ख़बरी की साँस उखड़ी हुई थी। वो बोलता–बोलता हड़बड़ा रहा था, लेकिन सालन ने उसके एक–एक शब्द को बहुत गौर से सुना। उसने बताया–'हर दिशा से आने वाले सरदारों और खूँख्वार प्राणियों के प्रतिनिधियों को मिलने के लिए एक खास जगह पर बुलाया गया है। वो उनसे कोई बात नहीं करने वाला, बल्कि एक साथ...सारे सरदारों और प्रतिनिधियों को, एल्गा–गोरस की रहस्यमयी ताक़तों से काबू में करने वाला है। एक बार सारे सरदार और उनके ताकतवर लोग उसके गुलाम बन गए, उसके बाद उनकी सेनाएँ और उनके लोग, सब उसके हुक्म के गुलाम होंगे।'

'ओह...मेरे देवता...' सालन के होठों से सिसकी निकल गई।

'हमारे सरदार ने कहलवाया है, अब हम ज़्यादा दिन तक इस काम को नहीं कर सकते। जान का खतरा बढ़ता जा रहा है। हम पहले ही अपना एक साथी खो चुके हैं। जैसे ही हमें उस गुप्त स्थान का पता चलेगा, जहाँ ये सभा होनी है, हमारे लोग वापस लौट आएँगे। हमें हमारा मेहनताना मिल जाए, उसके बाद हम इस मामले की तरफ़ कभी झाँकेंगे तक नहीं।' बिल्चू की बात पूरी होते–होते, उसकी आँखों में दहशत तैरने लगी थी।

'हमारे आईने...महफ़ूज़ हैं ना? उसकी आवाज़ में लालच का पुट साफ़ दिख रहा था।

'हाँ।' सालन ने उसके छोटे कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा। 'तुम बेफ़िक्र रहो, सैल्गासीड से कहना, काम पूरा होते ही वो यहाँ आकर अपना मेहनताना ले जाए।'

बिल्चू के जाने के बाद, सालन तेज़ी से जंगल के भीतरी हिस्से की तरफ़ चले गए, जहाँ बाक़ी लोग और थोरोज़ मौजूद थे। तीनों ने उनके साथ जाने के लिए कहा, लेकिन सालन ने ये कहकर मना कर दिया कि अभी तुम लोग उधर नहीं जा सकते।

अब काठ–घर में केवल तीनों थे। मकास ने चुप्पी तोड़ी, 'क्या तुम कुछ बता सकते हो, कोई संकेत या इशारा, जो हमें बता सके, आख़िर ये रहस्य क्या है?' उसने जरूस की तरफ़ देखते हुए कहा।

'इस बारे में मैंने कई बार सितारों से बात करने की कोशिश की है...लेकिन उन्होंने कोई साफ़ इशारा नहीं दिया। कई बार से एक नन्हा सितारा, स्टारोग्लैक्स मुझसे बात करने की कोशिश कर रहा है। वो अभी बहुत छोटा है, उसकी तोतली ज़बान को समझना भी मुश्किल होता है। उसने कुछ इशारे किए, लेकिन वो भी पूरी तरह समझ से बाहर हैं।'

'तुम्हें क़ोशिश करनी चाहिए।' सलार की आवाज़ में दृढ़ता थी।

'हम्मम...यही करना होगा।'

'क्या हमें हमारी मंज़िल का कोई सुराग़ कहीं से मिलेगा?' मकास की आवाज़ में चिन्ता थी।

'सुराग़ मिल चुका है। बस उसे सही से समझना बाक़ी है।' जरूस ने उसकी तरफ़ देखा। 'शिला–पुस्तक ग़ायब हो गई है। स्टारोग्लैक्स ने कहा था, उसे तालाब के पानी में धेकर पढ़ना होगा। हमें वो किताब दोबारा ढूँढनी होगी।'

'मगर वो किताबें खुद चुनती हैं कि कौन उन्हें पढ़ेगा और कौन नहीं, हमारे लाख ढूँढने पर भी वो दोबारा नहीं दिखेंगी।' सलार ने अनुभवी आवाज़ में कहा।

'अगर ऐसा है तो हमें कोशिश करते रहना चाहिए। उन्हें चुनाव करना ही होगा। हम मंज़िल के बहुत क़रीब हैं।'

जरूस ने दोनों की आँखों में देखते हुए कहा।

उस रात काठ–घर में तीनों आराम से सोए लेकिन रात को उठकर, वो कई बार उस कमरे में जाते, जहाँ वो किताबें रखी थीं। मगर शिला–पुस्तक दोबारा नहीं दिखी।

कई बार मुझे लगता है, **बड़ी चुनौतियाँ इंसान को ऐसे ही देखभाल कर चुनती हैं, जैसे कोई सुन्दरी अपने लिए योग्य जीवन–साथी का चुनाव करती है।**

कैल्टिकस की इन गुफाओं में, जब मैंने इस किताब का पहला वर्वफ उकेरा था, उस वक्त मुझे खुद भी नहीं पता था, इस दानवाकार काम को मैं कैसे कर पाऊँगा लेकिन बरस गुजरते गए और एक–एक करके सैंकड़ों गुफाओं की दीवारों पर ये किताब उभरती जा रही है। कई बार ऐसा लगता है, जैसे ये दास्तान पिघले हुए मोम की तरह मेरे जिस्म से बहकर, हथेलियों और उँगलियों की यात्राा करते हुए, छेनी–हथौड़ी तक आ रही हो। मगर **प्रकृति कभी किसी इंसान से वो अपेक्षा नहीं करती, जिसे वो पूरा न कर सके।**

मैंने मोम के उन चौखटों को अपनी बूढ़ी उँगलियों में लेकर सहलाया है, जिन पर इस रहस्यमयी दास्तान के बेहद हैरतअंगेज़ हिस्सों का ज़िक्र है। जिन पर लिखा है, उन **चलती–पगडण्डियों** के बारे में, जिन पर *खड़े* होकर इंसान अपना सफर तय करता। उन जंगली रूहों के बारे में, जिनसे आँखें मिलाने वाले की पलकें इतनी लम्बी हो जातीं कि ज़मीन छू जाएँ। वो विशालकाय दानव, जिसके पैर इतने चौड़े थे कि पूरे इंसान को तलवे से दबा लें और टाँगें इतनी पतलीं जैसे खोखली होरीन लताएँ। वो चौखटे, जिन पर खुदा है उस नन्हे *'काव्य-राक्षस'* के बारे में, जिसका हुनर हर दिल की धड़कनें बढ़ा सकता था। मुझे, बला की खूबसूरत, वो नन्ही **गोचो** राक्षसी भी याद आती है, जिसकी शरारतें हर किसी को हैरान कर देतीं। सबसे खास बात, थोरोज़ की पहाड़ी पर संथाल के बेटों ने *'उन्हें'* देखा, जिनका मिलना एक पूरी प्रजाति को ज़िन्दगी दे सकता था।

रहस्यमय जंगल

अध्याय चौदह

कुछ देर बाद कास्टन ब्रूड आया और उनसे चलने के लिए कहा। वो हतप्रभ थे। उसने आकर केवल इतना कहा, 'तुम्हें जंगल के भीतर बुलाया गया है। थोरोज़ तुमसे मिलना चाहते हैं।' बिना कुछ कहे तीनों चलने के लिए तैयार हो गए।

'ये दुनिया के सबसे रहस्यमय जंगलों में से एक है। थोरोज चाहते हैं तुम तीनों जंगल से होकर *क़िले* तक पहुँचो ताकि इस जगह को और बेहतर ढँग से समझ सको।'

'**किला?**' जरूस ने सवालिया नज़रों से उसकी तरफ़ देखा।

'हाँ।' कास्टन ने सामान्य भावों के साथ कहा।

'क्या यहाँ कोई किला भी है?' सलार ने उसकी तरफ़ हैरत से देखा।

'यहाँ ऐसा बहुत कुछ है, जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते और ऐसा भी है, जिसके यहाँ होने की तुम कल्पना कर सकते हो लेकिन वो यहाँ नहीं होगा।' कास्टन ने मुस्कराते हुए कहा।

मैदान को पार करके चारों जंगल के सिरे तक पहुँचे। सारी पगडण्डियाँ वहाँ आकर ख़त्म हो रही थीं। पंजे जैसे एक रास्ते पर आकर वो रुक गए...ऐसा लग रहा था जैसे हथेली की पाँच उँगलियाँ हों। कास्टन एक पल के लिए रुका और फिर उनमें से एक रास्ते पर बढ़ गए, तीनों उसके पीछे थे।

'जिस रास्ते से हम जा रहे हैं, अगर तुम इसे दोबारा खोजना चाहोगे तो ये तुम्हें नहीं मिलेगा। ये **चलती पगडण्डियाँ** हैं। ये अपनी मर्ज़ी से दिशा और दशा बदलती रहती हैं। अगर बिना इजाज़त कोई जंगल में प्रवेश करने की कोशिश करता है तो वो उसे ऐसे रास्ते पर ले जाती हैं, जहाँ से वो कभी सही जगह नहीं पहुँच सकता।' कास्टन ब्रूड ने एक हल्की मुस्कराहट के साथ कहा।

चारों पगडण्डी पर खड़े हो गए, उन्हें एक झटका लगा, तीनों की हैरत का तब ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि वो *खड़े* थे और पगडण्डी तेज़ी से एक दिशा में *सरकती* जा रही थी। काफ़ी दूर जाने के बाद चारों पगडण्डी से उतर गए।

उन्होंने देखा, जंगल के बीच एक बेहद पतला रास्ता जा रहा था। पेड़ों की वजह से वो लगभग छुपा हुआ था। वो उस पर बढ़े। सलार ने पीछे मुड़कर देखा, जितना वो आगे बढ़ते जा रहे थे, रास्ता पीछे से ग़ायब होता जा रहा था। उसने पुष्टि करने के लिए, कुछ क़दम चलने के बाद फिर देखा, चूँकि वो सबसे पीछे था इसलिए उसे ठीक से दिख रहा था, पतला रास्ता ग़ायब होता जा रहा था।

कास्टन ब्रूड ने उसकी उत्सुकता को भाँप लिया। 'ये **मिटता–रास्ता** है। इस पर न तो कोई अपने पदचिन्ह छोड़ता है और न कोई वापस लौट सकता है। इस पर केवल आगे बढ़ा जा सकता है। ये जीवन–पथ का भी प्रतीक है। जिन्दगी में केवल आगे बढ़ने के रास्ते होते हैं, पीछे लौटने के नहीं और जब कोई इस नियम को तोड़कर पीछे लौटता है तो वो कभी 'वो' नहीं पाता, जिसकी उम्मीद में वो लौटा होता है। उसे हमेशा, निराशा और अधूरापन ही हाथ लगता है।'

तीनों एकदम चुपचाप उसकी बात सुन रहे थे।

जंगल में थोड़ा आगे बढ़ने के बाद उन्हें एक पेड़ के नीचे बैठी हुई कुछ जंगली रूहें दिखाई दीं। वो आपस में बातें कर रही थीं। उन सबको आते देख, वो एकदम चुप हो गईं। पास से गुज़रने पर मकास ने देखा, उनकी आकृति किसी पेड़ की तरह सूखी और हरे रंग की थी। वो रूहें कम, झाड़ियाँ अधिक लग रही थीं।

सलार ने उनकी तरफ़ उत्सुकता से देखा। कास्टन ब्रूड की आवाज़ उसके कानों में पड़ी, 'इनकी आँखों में आँखें मत डालना वरना तुम्हारी पलकें इतनी लम्बी हो जाएँगी कि ज़मीन को छूने लगेंगी।' उसने सकपकाकर अपनी नज़र उनसे

हटा ली।

एक जंगली रूह, जाँचने वाले ढँग से उनकी तरफ़ बढ़ी, उसकी हरी आकृति हवा में तैर रही थी। जंगली झाड़ियों जैसे उसके हाथ, सलार के चेहरे को छूते हुए निकल गए।

'वापस जाओ...**कैरीबरगस**, ये थोरोज़ के मेहमान हैं।' कास्टन ने सख़्त लहज़े में कहा।

वो हवा में तैरती हुई, उनसे दूर चली गई। लेकिन पेड़ के नीचे बैठी बाक़ी रूहें, अब भी उन्हें हैरानी से देख रही थीं।

एक जगह एक झरना दिखाई दिया लेकिन वो **ऊपर से नीचे की तरफ़** नहीं बल्कि **नीचे से उपर की तरफ़** चढ़ रहा था। थोड़ा आगे चलने पर कुछ नन्हे राक्षस दिखाई दिए। उनका जिस्म बेहद भद्दा और बेडौल था। उन्होंने कमर पर एक कपड़ा बाँध रखा था, बाक़ी जिस्म पर कुछ नहीं था। वो अपने हाथों से इशारे करके, पेड़ से फल तोड़ रहे थे। पेड़ से गिरने वाले फल भी लगभग उन्हीं के आकार के थे।

'ये कौन हैं?' जरूस ने उत्सुकता से उनकी तरफ देखते हुए कहा।

'**गोचो**...राक्षसों की सबसे छोटी प्रजाति। ये इस जंगल के सिवाय दुनिया में और कहीं नहीं हैं। थोरोज़ ने इन्हें यहाँ आश्रय दिया हुआ है। इनके छोटे आकार की वजह से बड़े राक्षसों ने इन्हें अपना ग़ुलाम बना लिया। ज़रा–सी ग़लती होने पर, वो इन्हें मुँह में डालकर निगल जाते। धीरे–धीरे ये बहुत कम संख्या में रह गए, बस मुट्ठी भर। अब ये यहाँ आराम से रहते हैं। लेकिन ये हैं बहुत कमाल के। मैं तुम्हें एक *ख़ास* गोचो से मिलवाऊँफगा, उसका हुनर तुम्हें दंग कर देगा।' कास्टन ब्रूड ने उनका तोड़ा एक फल उठाकर, उसमें दाँत गड़ाते हुए कहा।

वो हैरानी से इस तरह उन तीनों को देख रहे थे जैसे किसी बस्ती में पहली बार ऊँट आया हो। कास्टन ब्रूड ने हाथ हिलाकर उनका अभिवादन किया। बदले में उन्होंने अपने दोनों हाथ, ज़मीन पर टिकाकर कलाबाज़ियाँ खाईं। वो तीनों कुछ पूछते, इससे पहले ही कास्टन ने अपनी बात पूरी कर दी, '...ये इसी तरह अभिवादन करते हैं।'

पगडण्डी अब ग़ायब हो चुकी थी और वो खुले में आ गए थे। तभी उनके पास 'धम' की एक तेज़ आवाज़ हुई। ऐसा लगा जैसे किसी ने वज़नी चट्टान, ऊपर से पटक दी हो।

एक बेहद विशाल पैर, उन तीनों के ठीक पास आकर ज़मीन पर 'धम' से रखा गया। उनके आसपास की ज़मीन उसके कम्पन से हिल–सी गई। अभी वो कुछ समझ पाते, तभी दूसरा भारी–भरकम पैर भी धम से ज़मीन पर पड़ा। उन्होंने देखा, पाँव इतना चौड़ा था कि वो तीनों उसके नीचे आराम से कुचले जा सकते थे।

उन्होंने ऊपर नज़र उठाई तो एक बेहद पतली टाँग, ऊपर आसमान की तरफ़ जाती दिखी। पाँव जितना चौड़ा और विशाल था, टाँग उतनी ही पतली और लम्बी। उन्होंने उस पतली टाँग को ऊपर तक देखा। उसका आकार किसी ऊँचे पेड़ की तरह था। चौड़े, विशाल पाँव, बेहद पतली टाँगें, चौड़े कूल्हे, पतला पेट, चिपका हुआ सीना, बारीक़ गर्दन और उसके ऊपर विशाल और चौड़ा सिर और भयानक मुँह। उसके बाज़ू बहुत पतले और हथेलियाँ इतनी चौड़ी थीं कि वो एक ही वार में तीनों को ज़मीन से चिपका सकता था। उसके विशाल सिर पर हल्के घुँघराले बाल थे और आँखों में चपलता।

'तुम अपनी शरारत से बाज़ नहीं आओगे...**हैबूला**?' कास्टन की आवाज़ में डाँट के साथ अपनेपन का भी पुट था। 'क्या होता अगर किसी मेहमान को चोट लग जाती?'

उसने अपनी गोल–गोल बड़ी आँखें घुमाकर उनकी तरफ़ देखा और किसी अजीब–सी भाषा में कुछ बोला। उनकी समझ में उसका कहा एक भी शब्द नहीं आया लेकिन उन्हें लगा कास्टन उसकी बात समझ गया है।

उसने ऊपर मुँह उठाकर चीखते हुए कहा, 'ठीक है...ठीक है, मैं थोरोज़ से कहकर तुम्हें कुछ और किताबें दिलवा दूँगा। अब एक तरफ़ हटो और अपने इस भद्दे पैर को भी अलग हटाओ।'

वो ऐसे मुस्कराया जैसे कास्टन का आभार प्रकट कर रहा हो और 'धम–धम' करता हुआ वहाँ से चला गया।

सलार ने राहत की साँस ली और कास्टन ब्रूड की तरफ़ देखा, 'ये क्या बला थी?'

'ये बला नहीं, **हैबूला–हूचस** है। थोरोज़ ने इसे दानवों के बाज़ार से ख़रीदकर इसकी जान बचाई। तब ये बहुत छोटा था, वो इसे एक किताब चुराने की सज़ा के तौर पर मार देना चाहते थे। किताबों का बेहद शौक़ीन है ये। अब तक इतनी किताबें पढ़ चुका है, जितना इसमें वज़न भी नहीं होगा। इसकी गुफा, ऊपर से नीचे तक, किताबों से ठसाठस भरी हुई है। इसके माँ–बाप को दानवों ने बेरहमी से मार दिया, ये थोरोज़ को अपने देवता की तरह मानता है। उनके लिए जान भी दे सकता है। इसे हमने बताया नहीं है कि वो घायल हैं। वरना अब तक ये आसमान सिर पर उठा लेता।' कास्टन ने आहिस्ता फुसफुसाकर कहा।

'थोरोज जंगल में इतना भीतर रहते होंगे, हमने सोचा तक नहीं था।' जरूस ने उसकी तरफ़ देखा।

'वो इतना पास होते हैं कि तुम एक कदम बढ़ाकर उन तक पहुँच सकते हो और इतनी दूर भी कि तुम सारा दिन चलने के बाद भी इस जंगल में भटकते रह जाओगे। हम अपनी सबसे निकटतम चीज़ को महसूस करने से हमेशा इसलिए चूकते चले जाते हैं क्योंकि 'नज़दीकी' को महसूस करने के लिए भी, एक 'आवश्यक दूरी' की ज़रूरत होती है।' कास्टन ने आहिस्ता से मुस्कराकर कहा।

उसकी इस बात पर तीनों केवल सिर हिलाकर रह गए।

कास्टन ने एक पेड से तीन काले फल तोड़कर जरूस की तरफ बढ़ाए। 'ये **चीचमपोस** का फल है। इसे खाने के बाद कुछ देर के लिए, तुम उन प्राणियों को भी देख सकते हो, जिन्हें तुम्हारी खुर्दबीन की मदद से भी नहीं देखा जा सकता। इसका स्वाद किसी को भी पागल बना सकता है। इसे खाने वाला, इतने छोटे जीवों को भी देखा सकता है, जिनकी संख्या एक सुई की नोक पर दस से भी ज़्यादा हो। खाकर देखो, मज़ा आएगा। ये फल एक बेहद दुर्लभ औषधि भी है। रहस्यमयी और जानलेवा महामारी *चेचकोप्लाग* को, केवल ये फल ही ठीक कर सकता है।'

चेचकोप्लाग का नाम सुनकर एक पल के लिए तीनों चौंके। उन्हें बौनों के सरदार, पियोनी की बताई वो बात याद आई कि फॉ मादाएँ, चेचकोप्लाग नाम की एक अजीब महामारी का शिकार होकर, कम होती चली गईं। फिर उन्होंने सिर झटका और आगे बढ़ गए।

उन्होंने थोड़ा हिचकते हुए, फल खाना शुरू कर दिया। उसका काला–काला रस, उनके कपड़ों को गन्दा कर रहा था। थोड़ा–सा खाते ही उसका स्वाद उनकी ज़बान की गहराईयों तक उतर गया। वो इतनी तेज़ी से चीचमपोस खा रहे थे जैसे अगर देर हो गई तो कहीं कास्टन ब्रूड न माँग ले।

चलते हुए, उनके सामने एक बेहद विशाल पेड़ का खोखला तना आया, जो ज़मीन पर पड़ा था और किसी सुरंग की तरह दिख रहा था। कास्टन सबसे पहले उसके अन्दर घुसा। तने का व्यास इतना था कि दो लोग एक–दूसरे के कन्धें पर बैठकर भी निकलते तो बिना छत से टकराए निकल सकते थे। उन्होंने ऊपर तने की तरफ़ देखा तो उनके बदन में सिहरन दौड़ गई।

तने के ऊपरी हिस्से पर लाखों छोटे–छोटे कीड़े घूम रहे थे, जिनके रोएँदार पैर बहुत भयानक लग रहे थे। वो इतने ज़्यादा थे कि पूरे तने का भीतरी हिस्सा उन्हीं से ढँका हुआ था। कास्टन तब तक तने से बाहर जा चुका था। वो दौड़कर खोखले तने से ऐसे बाहर निकले, जैसे कीड़ों का पूरा छत्ता, बस उनके ऊपर गिरने ही वाला हो। मकास को वो दृश्य याद आ गया, जब ज़मीन के नीचे की सुरंगों में, वो बौनो के साथ था। मीटोटीथ चींटियों का वो विशाल जत्था, भरभराकर उनके ऊपर ढह गया था।

'उफ़्फ़...क्या हम इस तने की जगह कहीं और से नहीं निकल सकते थे कास्टन?' सलार ने अपने लबादे को झाड़ते हुए कहा।

'...तुमने चीचमपोस खाया है इसलिए तुम इन्हें देख पा रहे हो वरना ये इतने छोटे हैं कि तुम्हें इन्हें देखने के लिए खुर्दबीन की ज़रूरत पड़ती। तुम्हारे हर तरफ़ ऐसे करोड़ों छोटे–छोटे कीड़े होते हैं। लेकिन वो दिखते नहीं इसलिए परेशानी नहीं होती। अगर दिखने लगें तो कोई भी दो दिन में पागल हो जाएगा।' कास्टन हँसा।

कुछ दूर चलने के बाद, उन्हें घास के कुछ तिनकों पर झूलती हुई कुछ खूबसूरत महिलाएँ दिखीं। उन्होंने सुन्दर पोशाकें पहनी हुई थीं और अपने लाल बालों में छोटे–छोटे हरे तिनके पिरोए हुए थे। उनका आकार बहुत छोटा था। वो घ ास के तिनकों पर ऐसे कलाबाज़ियाँ खा रही थीं जैसे कोई बन्दर पेड़ पर झूलता है।

कास्टन ब्रूड उन्हें देखकर रुक गया। उसने ख़ामोश नज़रों से तीनों भाइयों की तरफ़ देखा और उदासी भरे लहजे में बोला, 'इनको खुश देखकर बहुत अच्छा लगता है लेकिन अफ़सोस क़ुदरत का इतना खूबसूरत शाहकार ज़्यादा दिन नहीं रहेगा।' उसने एक गहरी साँस ली और आगे बढ़ने लगा।

जरूस ने उसे रोका और पूछा–'क्या मतलब है तुम्हारा? ये ख़ूबसूरत महिलाएँ कौन हैं और तुमने ऐसा क्यों कहा?'

'हाँ, मैंने ठीक ही कहा है, ये शानदार प्राणी बस ख़त्म होने के कगार पर हैं। प्रकृति ने इनके साथ बहुत क्रूर मज़ाक किया है। इनकी प्रजाति में कोई भी पुरुष नहीं बचा है। थोरोज़ को ये एक नदी में, पेड़ के पत्ते पर बहती हुई मिलीं। सब, चेचकोप्लाग महामारी से बुरी तरह संक्रमित। इनका बचना मुश्किल था अगर थोरोज़ इन्हें उठाकर यहाँ न ले आते और वक़्त पर इन्हें चीचमपोस खाने को न मिलता लेकिन सबसे अफ़सोस की बात ये है, ये सब केवल महिलाएँ हैं। एक भी

पुरुष नहीं। इस तरह इनकी प्रजाति कितने दिन और जिन्दा रहेगी, ये कोई नहीं जानता। बेचारी...**फॉं मादाएँ**।' कास्टन ब्रूड ने अफसोसनाक ढँग से ठण्डी साँस लेते हुए कहा।

कास्टन की बात पूरी होते ही जरूस ने जोर से कहा, 'ये फॉं हैं...हाँ ये फॉं ही हैं।'

कास्टन ने चौंक कर उसकी तरफ देखा, जैसे पूछ रहा हो, तुम इनके बारे में कैसे जानते हो?

'ये तो कमाल हो गया...' मकास की आँखों मे चमक आ गई थी।

मकास को पियोनी के शब्द याद आए, जो उसने फॉं बौनों के बारे में कहे थे–'फॉं अब लगभग खत्म होने के कगार पर हैं। वो डिग्गीडस्ट बौनों के लबादों की सीवन मे रहते हैं। उस पतले धगे के नीचे, जो कपडे की सिलाई के बाद नजर भी नहीं आता। चूँकि अब सारी दुनिया में केवल छब्बीस डिग्गीडस्ट बौने ही बचे हैं इसलिए फॉं बौनों पर भी संकट मँडरा रहा है। एक समय था, जब लाखो की तादाद में फॉं, ऊन के बने उन मोटे लबादों में आराम से रहते थे, जिन्हें पहनकर हजारों डिग्गीडस्ट बौने, इस जंगल में घूमते थे। समय के साथ चीजें सिकुडती गईं और अब फॉं प्रजाति लगभग खात्मे की तरफ है।'

'हाँ, हम बहुत अच्छे से उनके बारे मे जानते है। ये फॉं मादाएँ हैं। डिग्गीडस्ट बौनों के लबादों की सीवन के नीचे रहने वाली बौनों की प्रजाति। हम इनके पुरुषों से मिल चुके हैं। वो पागलों की तरह मादाओं की तलाश में हैं। ये प्राचीन इकोइ–चामन भाषा के अलावा और कोई भाषा नहीं बोलते। हमने बौनों के सरदार पियोनी से वादा किया है कि हम, फॉं मादाओं को ढूँढने में उसकी मदद करेंगे।' मकास ने उत्साहित शब्दों में कहा।

'अहा...हमें ऑथरडस्ट को इस बारे में बताना चाहिए।' सलार ने कास्टन ब्रूड की तरफ देखा।

'क्या वाकई...फिर तो इनका वंश आगे चल सकता है। मैं सालन से इस बारे में जरूर बात करूँगा।' उसने घास के तिनकों पर झूलती फॉं मादाओं को देखते हुए कहा।

वो तीनों तब तक उन्हें देखते रहे, जब तक वो इतने आगे नहीं आ गए कि वो दिखना बन्द हो गईं। उन्हें अब समझ आ रहा था कि वो फॉं मादाओं को इसलिए देख पा रहे थे क्योंकि उन्होंने चीचमपोस खाया हुआ था वरना वो इतनी छोटी थीं कि नंगी आँख से उन्हें देखा ही नहीं जा सकता था।

'ये जंगल अपने भीतर इतना कुछ समेटे होगा, हम सपने में भी नहीं सोच सकते थे।' जरूस ने कास्टन ब्रूड की तरफ देखा।

'जो कुछ तुमने देखा है और जो कुछ अभी देखना बाकी है, उसके अलावा भी इस जंगल में ऐसा बहुत कुछ है, जो रहस्य की परतों में लिपटा हुआ है।'

कास्टन की बात अभी पूरी भी नहीं हुई थी कि उन्हें एक छोटा पुल दिखाई दिया, जो एक पतली–सी जलधरा के ऊपर बना हुआ था। पुल से होकर वो दूसरी तरफ पहुँचे ही थे कि उन्हें एक **यति** के जिस्म से लिपटा, एक **मणिध्र साँप** दिखाई दिया। यति के पूरे जिस्म को उसने अपने लपेटे में ले रखा था। पल भर के लिए तीनों ठिठक गए और कास्टन का ध्यान उस तरफ खींचा।

उसने उनकी तरफ उचटती नज़र डाली। 'ये दोनों ही दुनिया के सबसे दुर्लभ प्राणियों में से हैं। सुदूर पूर्व के प्रान्तों से इन्हें यहाँ लाया गया है। ये मणिध्र साँप थोरोज़ ने एक सपेरे के क़ब्जे से मुक्त कराया था और ये हिममानव यति भी वहीं से आया है। पूरी दुनिया में बस मुट्ठी भर बचे हैं। दोनों आपस में बहुत गहरे दोस्त हैं। हमेशा इसी तरह अठखेलियाँ करते रहते हैं।'

जरूस ने कास्टन की तरफ देखते हुए सवाल किया, 'यहाँ इतने ख़तरनाक, दुर्लभ और रहस्यमय प्राणी रहते हैं लेकिन क्या कभी इनमें आपस में संघर्ष, लड़ाई या हिंसक झड़पें नहीं होतीं ?

कास्टन उसकी बात सुनकर हल्के से मुस्कराया। 'हिंसा, बारीक़ पिसे हुए नसवार की तरह होती है, ये चुपके से नाक में जाकर, ऐसी 'हिंसक छींक' के लिए मजबूर कर सकती है, जिसका इंसान को पता तक नहीं चलता। लेकिन...थोरोज़ की पहाडी पर कोई हिंसा नहीं कर सकता। अगर किसी के भीतर हिंसा है भी, तो भी वो यहाँ हिंसा नहीं कर सकता। ये पवित्रा क्षेत्रा है। यहाँ तक कि मांसाहारी जीव भी यहाँ आकर मांस नहीं खाते।'

'क्या...क्या कहा तुमने? मांसाहारी जीव अगर मांस नहीं खाते तो और क्या खाते हैं? ये तो उनकी प्रकृति के ख़िलाफ व्यवहार है?' सलार की आँखें जिज्ञासा की वजह से फैल गईं।

'अभी बताता हूँ क्या खाते हैं?' कास्टन ने हाथ से इशारा करके उन्हें दूर–दूर तक फैली झाड़ियों की तरफ दिखाया।

'उन्हें देखो...जहाँ तक तुम्हारी नज़र जा रही है, वहाँ तक केवल ये झाड़ियाँ हैं। ये **जैरीगन** झाड़ियाँ हैं। इनके पत्ते तुम्हारी हथेली से भी ज्यादा मोटे और मांस के टुकड़े के आकार के होते हैं। उनका स्वाद बिल्कुल ताज़े मांस की तरह होता है। यहाँ के सारे मांसाहारी जीव, यहीं आकर अपना पेट भरते हैं। यहाँ इतनी जैरीगन झाड़ियाँ हैं कि ये कभी कम नहीं पड़तीं और एक ख़ास बात, इनके पत्तों का स्वाद किसी भी प्राणी के मांस से ज़्यादा बेहतर होता है।' कास्टन ने मुस्कराते हुए अपनी बात पूरी की।

थोड़ा आगे चलने पर कास्टन ने शरारती अंदाज़ में मकास से कहा, 'अब ज़रा तुम आगे चलोगे दोस्त? अच्छा हो, अगर कुछ दूर हम तुम्हारी अगुवाई में चलें।'

एक पल के लिए तो वो हिचका और समझ नहीं पाया कि आख़िर कास्टन ने ऐसा क्यों कहा है लेकिन फिर वो चुपचाप आगे हो गया।

पाँच–छह कदम चलते ही उसकी नाक जोर से किसी ठोस चीज से टकराई। 'आह' की एक तेज़ आवाज़ के साथ वो वहीं रुक गया।

आगे न तो कोई पेड़ था, न जंगल, वो बस एक घास का छोटा मैदान नज़र आ रहा था।

'ये क्या था? तुमने तो मेरी नाक ही तुड़वा दी कास्टन।' मकास की आवाज़ में दर्द के साथ झल्लाहट भी थी।

कास्टन ने हँसते हुए कहा, '...कई वजह से तुम्हें जंगल में अकेले आने से मना किया गया। यहाँ सामने जो तुम ख़ाली मैदान देख रहे हो, उसमें इतना घना जंगल है, जितना तुमने कभी सोचा भी नहीं होगा। तुम जिससे टकराए हो वो **कचुआकैचस** का पेड़ है। ये *अदृश्य* पेड़ होते हैं। इनका आकार इतना विशाल और ऊँचाई इतनी ज़्यादा होती है कि मकड़ी भी चढ़ते–चढ़ते हाँफ जाए। चलो...अब मेरे पीछे हो जाओ। यहाँ हर तरफ़ कचुआकैचस के पेड़ हैं वरना किसी से टकराकर अपनी नाक वाकई तुड़वा बैठोगे।' कास्टन ब्रूड ने उनसे आगे आते हुए कहा।

एक जगह उन्हें छोटी–छोटी कुछ झोंपड़ियाँ दिखाई दीं। तीनों ने उत्सुकता से उनकी तरफ़ देखा। कास्टन जैसे उनका सवाल समझ गया था। फिर वो फुसफुसाहट भरी आवाज़ में बोला, 'उनके पास मत जाना, उनके भीतर बूढ़ी औरतें रहती हैं। वो कभी–कभी बाहर आती हैं। उन्हें शोरगुल क़तई पसन्द नहीं। कहते हैं, वो बहुत उम्रदराज़ हैं लेकिन लगती नहीं हैं।' उसने एक बार ऐसे चारों तरफ़ देखा जैसे उसकी बात कोई सुन न रहा हो। फिर आहिस्ता से बोला, 'मैं भी उनसे आज तक मिला नहीं हूँ लेकिन सुना है, वो किसी भी प्राणी को एक पल में चिड़िया बनाकर, अपने पिंजरे में कैद करने का हुनर जानती हैं।'

तीनों ने झोंपड़ियों की तरफ़ घूरा। कास्टन फिर आहिस्ता से बोला, 'सुना है ये सालन की दूर की रिश्तेदार हैं। एक जंगली रूह को काबू करते वक़्त इनका दिमाग़ थोड़ा हिल गया। तब से ये यहीं हैं, लोग इन्हें अपने लिए खतरा मानने लगे थे। अगर थोरोज़ इन्हें यहाँ नहीं लाते, तो शायद अब तक इन्हें 'चुड़ैल' कहकर ज़िन्दा जला दिया गया होता।'

'अब मैं तुम्हें थोरोज़ तक लेकर चलता हूँ, ये जंगल तो रहस्यों का ऐसा ख़ज़ाना है, जो शायद कभी ख़त्म नहीं होगा। अगर वक़्त मिला तो फिर कभी तुम्हें इसमें घुमाने लाऊँगा।' कास्टन ने अदृश्य जंगल के बीच से गुज़रते हुए कहा।

वो इस तरह चल रहा था जैसे उसे साफ़ दिख रहा हो कि कौन–सा अदृश्य पेड़ कहाँ है जबकि उन तीनों को वहाँ अब भी, घास का ख़ाली मैदान ही नज़र आ रहा था।

क्या थोरोज़ जंगल के इतना भीतर रहते हैं?' सलार ने जैसे बहुत देर से इस सवाल को अपने पेट में रोक रखा था।

'हाँ, चलती–पगडण्डी हमें वहाँ लेकर जाएगी।' कास्टन ने उसे एक अदृश्य पेड़ से टकराने से बचाते हुए कहा। उसने कुछ झाड़ियाँ हटाईं तो वहाँ एक पगडण्डी नज़र आने लगी।

कास्टन तेज़ी से उनसे बोला, 'जल्दी करो, मेरे पास खड़े हो जाओ।'

वो तुरन्त आकर उसके पास पगडण्डी पर खड़े हो गए। उसने तीनों के हाथ कसकर ऐसे पकड़ लिए जैसे वो गिरने वाले हों।

'संभलकर खड़े होना, चलती–पगडण्डी पर सफ़र करने में ज़्यादातर लोग गिर जाते हैं।' कास्टन की बात पूरी होते–होते उन्हें एक तेज़ झटका लगा और उनके पाँवों के नीचे की पगडण्डी आगे सरकने लगी।

तीनों संभलते–संभलते भी कास्टन के ऊपर गिरते–गिरते बचे। आहिस्ता–आहिस्ता पगडण्डी की रफ़्तार बढ़ती चली जा रही थी। फिर वो इतनी तेज़ हो गई कि उनके कपड़े हवा में बहुत तेज़ी से फड़फड़ाने लगे और उन्हें अपने चारों तरफ़ का जंगल और पेड़–पौधे, चारों तरफ़ गोल घूमते हुए महसूस होने लगे। पेड़–पौधे तेज़ी से पीछे छूटते जा रहे थे।

फिर एक जगह वो रुके और कास्टन ने अपने दाहिनी तरफ, एक रास्ते पर बढ़ना शुरू किया। थोड़ा आगे जाने पर उनकी हैरत का ठिकाना न रहा। वहाँ वैसा ही एक मैदान था, जैसा काठ–घर के पास था। बिल्कुल हरी घास, चारों तरफ जंगल, बीच में एक छोटा–सा तालाब और तालाब के पास एक इतना बड़ा क़िला, जिसे देखकर उनके जिस्म रोमांचित हो गए।

हल्के लाल पत्थरों से बना ये किला, किसी प्राचीन सैनिक दुर्ग की तरह लग रहा था। उसकी प्राचीरें और कंगूरे इतनी खूबसूरती से तराशे गए थे कि उन्हें देखकर किसी को भी, उसमें रहने वाले पर रश्क हो सकता था। किला बहुत विशाल और ऊँचा था। घास के मैदान पर वो उसकी तरफ बढ़े। नजदीक जाकर उन्होंने देखा, दीवारें बहुत मोटी और चिकने पत्थर की बनी हुई थीं।

किले की दीवार में हर दस कदम की दूरी पर, एक बड़ा फाटक था, जो शायद अन्दर से बन्द था क्योंकि बाहर न तो कोई ताला नजर आ रहा था और न ही उसे बन्द करने का कोई अन्य साध्न। पूरी दीवार में फाटक ही फाटक नज़र आ रहे थे।

कास्टन आगे बढ़ा। 'यही है थोरोज़ का निवास। यहीं रहते हैं वो। हमें भीतर जाना होगा।'

'मगर किस दरवाजे से?' मकास की आवाज सवालिया थी।

'उसकी चिन्ता मत करो, दरवाज़ा खुद चुन लेगा, हमें किससे भीतर जाना है।'

जैसे ही वो किले की पथरीली दीवार के पास पहुँचे, एक दरवाज़ा चर्रर्र...की आवाज़ करता हुआ अपने आप खुल गया। उन्होंने देखा, खुले हुए चौड़े दरवाजे के बीचोबीच, एक नन्हा गोचो खड़ा था। दुनिया के सबसे नन्हे राक्षसों में से एक।

'हमें थोरोज से पहले सालन के पास जाना होगा। ये ही है वो, जिसके बारे में मैंने तुमसे कहा था कि तुम्हें एक बेहद *ख़ास* गोचो से मिलवाऊँफगा।' कास्टन ने बहुत धीमे से फुसपुफसाकर कहा।

'अहह...हा...कैसे हो **लोफा?**' कास्टन की आवाज़ में खुशी और उत्साह साफ़ झलक रहा था।

नन्हा राक्षस खुशी से भरकर उसकी तरफ़ दौड़ा और जाकर उसके लबादे से लिपट गया। कास्टन उसे गले लगाना चाहता था लेकिन वो बमुश्किल उसके घुटने तक ही आ रहा था। उसने तेज़ी से उसे अपने हाथों में उठा लिया और किसी बच्चे की तरह हवा में उछाल दिया। वो कलाबाज़ियाँ खाता हुआ ज़मीन पर आ टिका।

'मैं ठीक हूँ कास्टन! तुम बताओ तुम्हारी यात्राएँ कैसी रहीं? थोरोज़ ने कहा है पहले तुम सालन से जाकर मिलोगे, उसके बाद शाम को उनसे मुलाकात होगी।' उसने चिंचयाने जैसी आवाज़ में कहा जैसे किसी साँप ने छछुन्दर मुँह में दबा लिया हो और अब निकल न रहा हो।

'मैं तुम्हें अपने मेहमानों से मिलवाता हूँ...'

कास्टन ने तीनों का परिचय उससे करवाना चाहा लेकिन उससे पहले ही वो गोचो बोल उठा–'ये है जरूस, दुनिया के सबसे मशहूर, तलवारबाज़–नुजूमी से ऐसा हुनर सीखकर आया है, जिसकी मदद से ये सितारों के साथ–साथ, जंगल की रूह से भी बातें कर सकता है। उसने चाँदी जैसे जिस्म वाले सलार की तरफ़ देखा और बोला–ये दुनिया के सबसे महान, तीरंदाज–दार्शनिक से जीवन के उन गहरे रहस्यों को जानकर लौटा है, जिनकी मदद से रूहानी दुनिया से लेकर आसमानी बस्ती तक, हर उलझी पहेली का कवच अपने फ़लसपेफ से भेद सकता है।'

एक पल के लिए वो रुका और फिर मकास की तरफ देखकर बोला, 'ये मकास है, इसने दुनिया के सबसे हुनरमंद छुरेबाज़–संगीतकार से वो जादुई संगीत सीखा है, जिसकी धुनों से ये बहती नदी को बर्फ़ में जमा सकता है। अपनी बाँसुरी से छोटे से बीज को कुछ ही पलों में, विशाल वक्ष में बदल सकता है और किसी भी विशाल वक्ष को अपनी बाँसुरी की धुन से, बीज में परिवर्तित कर सकता है। इसका छुरा, हवा को भी काटकर लहुलुहान करने का हुनर रखता है।'

कास्टन ने दरवाज़े पर खड़े–खड़े ही उसकी तरफ़ हैरत से देखा–'त...तुम ये सब कैसे जानते हो लोफ़ा?

'इसमें हैरत करने के लिए कुछ भी नहीं है...इस वक़्त पूरी थोरोज़ की पहाड़ी पर केवल इन तीन नौजवानों की ही चर्चा है। हर होंठ पर केवल ये ही तीन नाम हैं, जरूस, सलार और मकास तो फिर मैं इन्हें क्यों नहीं जानूँगा कास्टन?' लोफ़ा ने उनके मज़बूत जिस्मों पर नज़र डालते हुए कहा।

'अब मेहमानों को भीतर लेकर चलो, कास्टन! मैं तहेदिल से उनका यहाँ स्वागत करता हूँ।' लोफ़ा ने तीनों की तरफ़ देखा।

दरवाजे के भीतर जाते ही उन्होंने देखा, एक लम्बा गलियारा बहुत दूर तक जा रहा था, जिसके फ़र्श पर गहरे लाल

रंग का कालीन बिछा हुआ था। किले की दीवारें बहुत पुरानी पड चुकी थीं और वो कालीन, जो फ़र्श पर बिछा था, इतना कट–फट गया था कि उसके पैबन्द साफ़ नज़र आने लगे थे।

दीवारों पर बहुत सारे नन्हे–नन्हे कीडे विचरण कर रहे थे, जिनके जिस्मों से निकलने वाली रोशनी से गलियारा रोशन हो रहा था। लम्बे गलियारे को पार करने के बाद, वो एक चौड़े हॉल में पहुँचे, जहाँ एक हौज़ बनी थी, जिसमें छल–छल करके पानी बह रहा था।

उसने उनकी तरफ़ देखा और बोला, 'तुम तीनों के लिए अलग कक्ष की व्यवस्था है, कास्टन को अभी थोरोज़ के पास जाना होगा। सालन शाम को तुमसे मिलेंगे और रात के खाने पर आप लोग महान थोरोज के साथ होंगे।'

कास्टन एक तरफ़ बनी चौडी सीढियों की तरफ़ बढ गया।

लोफ़ा उन्हें एक गलियारे में ले गया और उस कक्ष की तरफ़ इशारा किया, जिसमें उन्हें ठहरना था। कमरा इतना चौड़ा था, जिसमें दो–चार नहीं, बहुत सारे लोग एक साथ ठहर सकते थे। उसमें तीन नरम बिस्तर लगे हुए थे। कमरे की दीवारों पर कुछ पुराने चित्रा टँगे हुए थे। उनमें से कुछ इन्सानों के थे, कुछ अर्द्ध–मानवों के और कुछ अजीब तरह के प्राणियों के, जिन्हें उन तीनों ने उससे पहले कभी नहीं देखा था।

उन्होंने कमरे को गौर से देखना शुरू किया। एक जगह उन्हें एक स्नानघर दिखा। मकास उसके भीतर गया, अन्दर द ाुसते ही वो कमरे से बाहर निकल गया। वहाँ, हरा–भरा जंगल था, घास थी और एक तरफ़ एक छोटा झरना था, जिससे साफ़ पानी गिर रहा था। वो वापस पलटा तो कमरे के भीतर था।

'अगर तुम चाहो तो नहाकर तरोताज़ा हो सकते हो।' एक आवाज सुनकर उन्होंने उस तरफ़ देखा। वो नन्हा राक्षस लोफ़ा था।

'हाँ, हाँ हम ज़रूर नहाना चाहेंगे।' मकास ने खुश होकर कहा।

'नहाने के बाद, भोजन तैयार है।' लोफ़ा ने उनके चेहरों को देखते हुए कहा।

बारी–बारी से उन्होंने झरने पर जाकर स्नान किया और लोफ़ा के आने का इंतज़ार करने लगे। कई बार उन्हें ऐसा लगा जैसे उनके कमरे के बाहर कुछ हलचल है। एक–दो बार बोलने की आवाज़ें भी उन तक आईं लेकिन ये पता नहीं चल सका, बात क्या थी।

कुछ देर बाद कास्टन ब्रूड वापस लौटा, उसके हाथों में एक काले रंग का फूल था। उसने फूल मकास को सौंपते हुए कहा, 'ये नन्हे लोफ़ा का तोहफ़ा है तुम तीनों के लिए।'

'वाह! ये तो बहुत ख़ूबसूरत है।' तीनों के मुँह से जैसे एक साथ निकला।

'लेकिन इसे सूँघने की कोशिश मत करना। ये **स्वप्न–पुष्प** है। रात को सोने से पहले अगर इसे तकिए के नीचे रखा जाए, तो सोने वाले को बहुत ख़ूबसूरत, आनन्ददायक और हैरतअंगेज़ सपने दिखाई देते हैं। साथ ही वो सब सपने भी पूरे होते दिखते हैं, जो उसने जागती आँखों से अपने लिए देखे हों।'

तीनों को बार–बार ऐसा ज़रूर लग रहा था जैसे उस विफ़ले में उनके सिवाय भी बहुत सारे लोग रहते हैं। बीच–बीच में लोगों के बोलने और आने–जाने की आवाज़ें आती रहीं।

मकास ने कास्टन से पूछा–'क्या यहाँ बहुत सारे लोग हैं?'

उसने धीरे से मकास की तरफ़ देखा और बोला, 'हाँ, बहुत सारे लोग हैं, कुछ देर बाद तुम्हारी सालन से मुलाकात होगी, पूरी योजना तैयार की जा चुकी है। अब सब लोगों के मशवरे और सुझावों का वक़्त है' कास्टन ने उसे समझाने वाले ढँग में कहा।

'क्या बिल्चुओं की तरफ़ से कोई नई ख़बर आई?' सलार ने जानकारी लेने वाले अंदाज़ में कास्टन की तरफ़ देखा।

'नहीं...अभी तक तो कोई नहीं लेकिन ये पक्का है, अबकी ख़बर जो भी होगी वो बहुत धमाकेदार और उनकी तरफ़ से शायद आख़िरी सूचना हो। उनकी जान को ख़तरा अब बहुत बढ़ गया है। सालन और थोरोज़ नहीं चाहते कि वो ज़िन्दगी ख़तरे में डालकर, ख़बर लेकर आएँ। इसलिए उनके आईने तैयार रखे हैं। जब अगला ख़बरी आएगा, सैल्गासीड को ख़बर दी जाएगी कि वो अपना मेहनताना ले जा सकता है।'

जरूस ने चिन्ताजनक शब्दों में पूछा, 'थोरोज़ की हालत अब कैसी है? क्या वो पहले से बेहतर महसूस कर रहे हैं?'

'वो ठीक हो रहे हैं, शायद कुछ दिनों में काफ़ी ठीक हो जाएँ लेकिन इस वक़्त वो बहुत असुरक्षित और कमज़ोर हैं,

जब तक उनकी पीठ का खोल पूरी तरह नहीं बन जाता, तब तक बहुत एहतियात रखने की जरूरत है।' कास्टन ने थोड़ा विचलित तरीवेफ से अपनी बात पूरी की।

'ओह...वो वाक़ई बहुत दर्दनाक और दहलाने वाला था।' मकास ने जैसे उस पल को याद किया, जब थोरोज़ ने अपनी पीठ से, खोल उतारा था। मकास को फिर से लगा जैसे दरवाज़े के पास कोई हो, लेकिन कास्टन की मौजूदगी की वजह से, वो दबे पाँव दरवाज़ा खोलने नहीं जा सकता था। उसने अपनी एक नज़र दरवाज़े की तरफ़ डाली, हल्के खुले दरवाज़े से कई छोटी परछाइयाँ गुज़रती महसूस हुईं, जो लोफ़ा से भी छोटी दिख रही थीं।

'ये...ये कौन थीं?' उसने लोफ़ा की तरफ़ देखा।

'गोचो *राक्षसियाँ*...हमारे कुल की सबसे शरारती और तेज़–तर्रार लड़कियाँ हैं। जब से तुम लोग यहाँ आए हो, ये इसी कमरे के आसपास मँडरा रही हैं। सोने जैसे रंग वाले मकास, चाँदी जैसी रंगत वाले सलार और ताँबई जरूस की बहादुरी और हिम्मत की दास्तान ये बहुत बार सुन चुकी हैं। अब तुमको देखने के लिए लालायित थीं। मैंने इन्हें मना किया था कि ये तुम्हें तंग ना करें। बताया था कि सब लोग बहुत थके हुए हैं लेकिन ये कभी किसी की नहीं सुनतीं। ऊँहह...मुझे क्या, खुद थोरोज़ से डाँट खाएँगी किसी दिन।' उसने मुँह बिचकाते हुए कहा।

'गोचो राक्षसियाँ!' सलार ने उसकी तरफ़ देखा। 'ये तो क़द में तुमसे भी बहुत छोटी हैं?'

'हमारे कुल की राक्षसियाँ इतनी ही लम्बी होती हैं। वैसे भी हम लोग क़द नहीं, प्यार की हद देखते हैं। हमारे यहाँ केवल प्रेम–विवाह होते हैं। राक्षसियाँ खुद चुनती हैं कि उन्हें किसके साथ विवाह करना है लेकिन मैं ये सब बातें क्यों लेकर बैठ गया। एक ख़ास ख़बर आई है।' लोफ़ा ने एक साँस में अपनी बात पूरी कर दी।

मेरे पिता कई बार हँसी में कहा करते थे–**'विवाह, एक ऐसा रन्दा है, जो प्रेम के चन्दनी शहतीर को तब तक नफ़ासत से छीलता रहता है, जब तक वो लकड़ी की एक मामूली धँस में तब्दील नहीं हो जाता।'**

बाहर पतझर का मौसम है। बैलीबोसिया और एप्रूस के पेड़ों के कुछ पीले पत्ते, उड़कर मेरी गुफ़ा में मँडरा रहे हैं। हवा अब पहले के मुकाबले खुश्क होती जा रही है। मुझे अपनी हथौड़ी का हत्था बदलने के लिए, बैलीबोसिया के पेड़ की एक मोटी टहनी की ज़रूरत है। आज शाम से पहले इसे बदलना होगा, पत्थर काटते वक़्त हिलकर, ये मेरी तन्द्रा को ऐसे भंग कर देती है जैसे इबादत करती माँ का आँचल, वो बच्चा खींच रहा हो, जिसकी नाक होठों तक लटक गई हो।

जल्दी ही अगर हथौड़ी ठीक न हुई तो मैं मोम के उन चौखटों को नहीं खोद पाउँफगा, जिन पर उन अद्‌भुत और दुर्लभ किताबों का ज़िक्र है, जो काठ–घर के अलावा दुनिया में और कहीं नहीं थीं। जिन पर उस विचित्रा शिला–पुस्तक की दास्तान है, जो दुनिया की कठिनतम चित्रालिपि गैरोगन–ग्लीफ़ में लिखी गई। जिस पर खुदे नक्शे ने उन्हें बताया, बिना चोटी वाले पहाड़, नाख़ूनों के मैदान, ख़ामोश झरने और कोरे पत्थर के बारे में। मोम के वो चौखटे, जिन पर खुदा है उस रहस्य के बारे में, जो उन्हें **लटकते–कमरे** में बताया गया। वो रहस्य, जिसने उनके इस सवाल का अंतिम जवाब दिया कि–'आख़िर उन्हें ही क्यों चुना गया।'

शिला-पुस्तक

अध्याय पन्द्रह

कई बार एक नन्ही राक्षसी को सलार ने अपने आसपास मँडराते हुए महसूस किया। वो बहुत छोटी मगर बेहद खूबसूरत थी। सलार को लोफ़ा के मुँह से पहली बार मालूम हुआ कि उस खूबसूरत गोचो राक्षसी का नाम **स्वाइली** है। उसने ये भी बताया कि स्वाइली के माता–पिता को राक्षसों की ख़रीद–फ़रोख़्त के दौरान मार डाला गया। थोरोज उसे इस पहाड़ी पर लेकर आए। उन्होंने उस वक़्त उसकी जान बचाई, जब एक विशाल दानव, उसे खाने के लिए, कड़ाही में मसाला डालकर भूनने जा रहा था।

स्वाइली इसी पहाड़ी पर पली–बढ़ी। वो बेहद शरारती स्वभाव की थी लेकिन साथ ही उतनी ही शर्मीली भी। लोफ़ा ने बताया–'उसे *राक्षसी-विद्याओं* में महारथ हासिल है। वो ऐसे–ऐसे अद्‌भुत काम कर सकती है, जिन्हें देखकर कोई भी दाँतों तले उँगली दबा ले। उसे वो बहुत–सी ताक़तें जन्मजात मिली हैं, जो राक्षसों को वंशानुगत रूप से हासिल होती हैं। स्वाइली की सबसे बड़ी ख़ासियत ये है, वो दुनिया की कठिनतम से कठिनतम लिपि को पढ़ सकती है। उसे ऐसी–ऐसी दुर्लभ लिपियों का ज्ञान है, जिनके बारे में किसी आम राक्षस ने कभी सुना भी नहीं होगा।'

सलार जितना उसके बारे में सुनता जा रहा था, उतना ही उसकी उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। वो उससे ये भी जानना चाहता था कि वो क्यों इस तरह उसका पीछा करती है? क्यों पहले ही दिन से वो ऐसी अजीब शरारतें कर रही है, जिसकी कोई वजह दिखाई नहीं देती।

उन्हें मालूम था, वो पुस्तक, जिसमें उस पानी का ज़िक्र है, जिसमें गीलापन न हो, वो काठ–घर में ही है। उन्हें ये भी मालूम था कि वो किताबें अपने पाठक का खुद चुनाव करती हैं। एक वक़्त के बाद वो दोबारा नहीं दिखीं, इसका मतलब किताबें नहीं चाहती थीं कि वो उन्हें पढ़ें लेकिन मंज़िल का इशारा इतने नज़दीक था कि किताब की खोज छोड़ी नहीं जा सकती थी। तीनों को ऐसा लगता जैसे काठ–घर की ओर से कोई उन्हें बार–बार अपनी तरफ़ खींच रहा हो लेकिन वो क्या था, ये उन्हें नहीं पता चल पाया।

थोरोज़ से इजाज़त लेने का काम बहुत आसानी से पूरा हो गया। लोफ़ा ने उनकी बात थोरोज तक पहुँचाई और उन्होंने सहज ही जाने की अनुमति दे दी। जंगल से होकर जाना, उन्हें भला लगा लेकिन उनकी सोच को लोफ़ा ने ये कहकर खत्म कर दिया कि वो अब जंगल के बीचोबीच से होकर नहीं बल्कि चलती–पगडण्डी और मिटते–रास्ते से होकर जाएँगे।

लोफ़ा उनके साथ था। जब वो किले से बाहर निकलने ही वाले थे तो सलार को वो गोचो राक्षसी स्वाइली अपनी तरफ़ आती दिखाई दी। वो इस तरह से इध्र–उध्र देखने लगा जैसे उसने उसे आते न देखा हो। लेकिन वो लगातार, उन्हीं की तरफ़ बढ़ती चली आ रही थी।

पास आकर उसने बड़ी मासूम–सी आवाज़ में पूछा, 'कहीं...जा रहे हो क्या आप लोग?' लोफ़ा ने उसकी बात का जवाब केवल सिर हिलाकर दिया।

सलार की तरफ़ से कोई जवाब न मिलने पर उसने अपनी बात दोबारा दोहराई। उसने हकलाते हुए कहा, 'हाँ...ह...हाँ... हम काठ–घर जा रहे हैं, कुछ ज़रूरी काम है। क्यों? तुमने क्यों पूछा?' सलार ने ये बात इतने अटपटे और अजीब ढँग से कही थी कि मकास और जरूस कुछ समझ नहीं सके कि वो इस तरह सकपकाया हुआ–सा क्यों है।

'अहह...काठ–घर! वो जगह मुझे बहुत अच्छी लगती है लेकिन मैं बहुत कम उध्र गई हूँ, मैं थोरोज से पूछकर आती हूँ, मुझे भी वहाँ जाना चाहिए।'

स्वाइली की बात सुनकर लोफा ने बुरा–सा मुँह बनाया और चलने की तैयारी करने लगा। वो वहाँ से भागती हुई चली गई। उसके जाते ही लोफा ने गहरी साँस ली। 'इससे पहले कि ये *आफ़त* यहाँ दोबारा लौटकर आए, हमें यहाँ से निकल लेना चाहिए।'

तीनों चलने के लिए तैयार थे। किले के बाहरी दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए जरूस के दिमाग़ में एक सवाल बार–बार कौंध रहा था। उसने आज तक किसी इमारत में इतने दरवाजे नहीं देखे थे। किले की पूरी बाहरी दीवार में शायद सैंकड़ों दरवाजे थे। वो दीवार कम नजर आती, छोटे–छोटे दरवाजों का समूह ज्यादा दिखती थी।

फाटक तक पहुँचते–पहुँचते उसने लोफा से ये सवाल पूछ ही लिया कि इस दीवार में इतने सारे दरवाज़े एक साथ होने का क्या कारण है?

लोफा उसकी तरफ देखकर मुस्कराया और बोला, 'इस बात का जवाब तुम्हें अभी नहीं दूँगा। थोरोज़ की पहाड़ी पर कोई भी चीज बेवजह नहीं है।'

उस नन्हे राक्षस की बात सुनकर उन्होंने बस सहमति में अपना सिर हिला दिया।

जैसे ही वो एक विशाल दरवाजे के पास पहुँचे, वो अपने–आप खुल गया। उन्हें ये देखकर हैरत हुई कि जब वो आए थे उस वक्त भी दरवाजा अपने–आप खुला था और अब भी। न तो दरवाजा खोलने वाला कोई दिखाई दे रहा था और न ही उसे बन्द करने वाला।

लोफा ने एक पल के लिए चारों तरफ देखा और फिर बोला, 'ये कोई तिलिस्म या रहस्य नहीं है, दरवाजे अपने–आप नहीं खुलते, इन्हें खोला और बन्द किया जाता है। उन जंगली रूहों के द्वारा, जो यहाँ की दरबान हैं। वो सब अदश्श्य हैं। हर दरवाजे पर कम से कम दस रूहें तैनात हैं। ये खास रूहें हैं, इनके भीतर ये कुदरती गुण है कि आने वाले और जाने वाले के भीतर *झाँक* कर महसूस कर सकें कि उसे किस दरवाज़े से जाना चाहिए। उसी हिसाब से ये दरवाज़ा खोलती हैं। अगर इस किले में एक बार तुम गलत दरवाज़े से दाखिल हो जाओ या बाहर निकल जाओ तो तुम ऐसी दुनिया में पहुँच सकते हो, जहाँ के बारे में तुमने कभी सपने में भी कल्पना नहीं की होगी। ये बात जिन्दगी पर भी लागू होती है और अस्तित्त्व पर भी। जानी गई हरेक दुनिया, दूसरी अजानी दुनिया का प्रवेश–मार्ग भर है। वो चाहे अहसासों का विश्व हो या रहस्यों का जगत।' नन्हे राक्षस की इस गूढ़ बात पर उन्होंने ऐसे उसकी तरफ देखा, जैसे कोई मछली, पहली बार ऊँफट को देख रही हो।

क़िले से बाहर निकलते ही घास का मैदान उनके सामने था। एक जगह घनी झाड़ियों के बीच घुसकर, लोफ़ा ने कुछ टहनियाँ अलग कीं और उनकी तरफ़ चीखकर बोला, 'जल्दी आ जाओ, एक चलती–पगडण्डी मुझे मिल गई है।'

तीनों लम्बे–लम्बे डग भरते हुए झाड़ी तक पहुँचे। लोफा का छोटा–सा जिस्म घने पत्तों और झाड़ियों के बीच गुम हो गया। उन्होंने झाड़ियाँ हटाईं तो एक पतली पगडण्डी दिखाई दे गई।

लोफा सबसे पहले कूदकर उस पर खड़ा हो गया और जरूस के लबादे को कसकर पकड़ लिया। तीनों ने एक–दूसरे को थाम लिया, इससे पहले वो चलने के लिए तैयार हो पाते, पगडण्डी तेज रफ्तार से खिसकने लगी। तीनों को इतना तेज़ झटका लगा कि लोफ़ा उनके पैरों के तले कुचला जाता हुआ बचा। उन्होंने खुद को संभाला और संभलकर खडे हो गए।

'**ये वाली** बहुत दिनों से गड़बड़ कर रही है। जब इसकी जाँच की जाती है तो ये बिल्कुल सही चलती है और जब कोई इस पर खड़ा होता है तो ये संभलने से पहले ही खिसकनी शुरू हो जाती है। मैंने कई बार हैबूला से इसकी शिकायत की है लेकिन वो कभी इस तरफ़ ध्यान ही नहीं देता। इस बार थोरोज से कहकर उस कमबख़्त को मज़ा चखाऊँफगा।' लोफा ने दाँत पीसते हुए कहा।

चलती–पगडण्डी पर सवार होकर वो उस मैदान के किनारे जा पहुँचे, जहाँ से काठ–घर साफ़ दिखाई दे रहा था। पगडण्डी, एक झटके से रुकी और फिर थोड़ी–सी आगे खिसकी। लोफ़ा उतरने की तैयारी कर ही रहा था कि उस झटके ने उसे बिल्कुल गिरा ही दिया।

'उफ़्फ़! टूट गई मेरी कमर।' वो कराहते हुए खड़ा हुआ।

'तुमसे इसे शायद कुछ ज्यादा ही प्यार है लोफ़ा!' मकास ने मुस्कराते हुए उसकी तरफ़ देखा।

'इस बार मैं उस नामुराद हैबूला को छोड़ूँगा नहीं, थोरोज़ ने उसे चलती–पगडडियों और मिटते–रास्तों की देखभाल और रखरखाव का ज़िम्मा सौंपा है और वो सारा दिन जंगल में मटरगश्ती करता और किताबें पढ़ता घूमता रहता है।

अबकी तो उसकी शामत आ गई समझो।' लोफा गुस्से में जमीन पर अपने पैर पटक रहा था। उसकी इस हरकत पर तीनों हौले से हँसकर रह गए।

तालाब के पास पहुँचकर उन्होंने देखा, पानी की सतह पर कुछ फूल तैर रहे थे। एकदम सुर्ख लाल, इतने चौड़े कि लोफा आराम से उनकी पंखुड़ियों के ऊपर पैर पर पैर रखकर लेट सकता था। तालाब की सतह पर न तो कोई जल–प्रेत नज़र आ रहा था और न ही काठ–घर में कोई हलचल थी। चारों काठ–घर की सीढ़ियों पर चढ़े ही थे कि तालाब के पानी में हलचल हुई। उन्होंने पलटकर उस तरफ देखा लेकिन उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया। तालाब की सतह पर कुछ लहरें जरूर थी।

तीनों जल्दी से जल्दी शिला–पुस्तक को खोजना चाहते थे इसलिए वो तेज़ी से उस कमरे में पहुँचे, जहाँ पहली बार उन्होंने उसे देखा था। कमरे के कोने में, अब किताबों का एक बड़ा ढेर दिख रहा था। मकास ने आगे बढ़कर किताबें उठाने की कोशिश की लेकिन जरूस ने उसे रोक दिया। उसे लगता था कि उतावलापन दिखाने से ये किताबें दोबारा गायब हो सकती थीं इसलिए तसल्ली के साथ उन्हें छुआ जाए तो ज्यादा बेहतर होगा। जरूस की बात मानकर तीनों उस कमरे से बाहर निकल गए और वहाँ पहुँचे, जहाँ उनके बिस्तर लगे हुए थे। बिस्तर अब भी ऐसे ही पड़े थे, बस उन पर लेटने वाला वहाँ कोई नहीं था।

लोफा, तालाब के किनारे चला गया था। सलार ने उसे तालाब के किनारे घूमते देखा तो वो सीढ़ियाँ उतरकर नीचे चला गया। उसे ये देखकर ताज्जुब हो रहा था कि आज तालाब के किनारे पर एक भी जल–प्रेत दिखाई नहीं दे रहा था।

लोफा ने एक बार उसकी तरफ देखा और विचारशील मुद्रा में बोला, 'ये फूल जो तुम तालाब की सतह पर देख रहे हो, केवल जंगल के भीतरी तालाबों में उगते हैं। यहाँ इन्हें कोई क्यों लेकर आया होगा?'

तभी पानी की सतह पर एक बार फिर हलचल हुई। कुछ लहरें उठीं और गायब हो गईं। सलार को लगा शायद कोई जल–प्रेत होगा लेकिन उसकी हैरत का ठिकाना नहीं रहा, जब पानी की सतह के नीचे से सफ़ेद रंग के बड़े–बड़े फूल उभरने लगे और उनके बन्द मुँह पंखुड़ियों के रूप में खिलने लगे। पूरा तालाब कुछ ही पलों में सफ़ेद और लाल फूलों की परत से ढँक गया।

'ये क्या हो रहा है?' लोफ़ा की आवाज़ में हैरत पिघल रही थी।

'प...पता नहीं...कोई दिखाई भी नहीं दे रहा। ये जल–प्रेत आज क्या मज़ाक कर रहे हैं?'

'तुमने पानी की सतह के नीचे कुछ चलता हुआ महसूस किया?' लोफ़ा की आवाज में प्रश्न था।

'नहीं...बस पानी हिलता हुआ लगा, शायद कोई जल–प्रेत हो?'

'जल–प्रेत इन फूलों को जंगल से यहाँ नहीं ला सकते। ये लैवोलीसिया के फूलों की ही एक प्रजाति है, जो पानी में पैदा होती है। इन्हें कोई प्यार करने वाला ही यहाँ तक ला सकता है। हालाँकि इन्हें देख कोई भी सकता है, इनकी खुशबू हर कोई महसूस कर सकता है।' लोफ़ा ने आगे बढ़कर एक सफ़ेद फूल अपने हाथ में उठा लिया–'हमारे आसपास ऐसे बहुत से जगत होते हैं, जिनका द्वार तभी दिखता है, जब आँखों में प्रेम का तिलिस्मी काजल लगा हो।' सलार ने उसकी इस बात को समझने की ऐसी कोशिश की जैसे जानता हो ये बात उसकी समझ में नहीं आएगी।

'मैं बाकी लोगों को बुलाकर लाता हूँ, तुम तब तक यहीं ठहरो।' लोफ़ा दौड़ता हुआ–सा काठ–घर की सीढ़ियों पर चढ़ता चला गया।

उसके जाने के बाद सलार तालाब के पास निपट अकेला खड़ा था। तभी तालाब की सतह पर तैरते सारे फूल अपनी जगह से उठकर, एक–एक कर, सलार के ऊपर गिरने लगे। फिर जैसे फूलों की मूसलाधार बारिश होने लगी। वो ऊपर से नीचे तक सारा फूलों की बारिश में छुप–सा गया।

वो कुछ समझ पाता, इससे पहले ही उसे किसी के खिलखिलाकर हँसने की आवाज़ सुनाई दी। उसने सकपकाकर चारों तरफ देखा लेकिन कहीं कोई नहीं दिखाई दिया। इस बार उसने काठ–घर की तरफ़ नज़र उठाकर देखा। जिस पेड़ के ऊपर काठ–घर बना हुआ था, उस पेड़ की एक डाल पर जडाकी और स्वाइली बैठी हुई थीं। ऐसा लग रहा था जैसे जनमो–जनम की बिछुड़ी दो सहेलियाँ मिल रही हों।

वो एकदम समझ गया। ये सब शरारत उन्हीं दोनों की थी। वो उनसे कुछ कहने ही वाला था कि सीढ़ियों पर उसे मकास, जरूस और लोफा नज़र आए। वो तेज़ी से उसकी तरफ़ चले आ रहे थे। उसने अपने शब्द, गले में ही रोक लिए और स्वाइली और जडाकी की तरफ से नज़रें हटा लीं। तब तक तीनों तालाब के पास तक आ गए।

'ये देखो, इसकी क्या हालत हो गई है। किसने किया ये सब? कौन आया था?' लोफा ने तालाब के चारों तरफ दौड़ते हुए कहा।

'प...पता नहीं... अचानक ये सारे फूल मेरे ऊपर बरसने लगे। य...यहाँ तो कोई भी... न... नहीं आया।' सलार की आवाज़ में हल्की-सी हकलाहट थी।

उसने चोर नज़रों से पेड़ की उस डाल की तरफ देखा, जिसके ऊपर स्वाइली और जडाकी बैठी हुई दिखी थीं। ये देखकर उसने राहत की साँस ली, अब वो दोनों वहाँ से गायब हो चुकी थीं। सलार का पूरा जिस्म सफेद और लाल रंग की परत से दब गया था। वो इस बात से बहुत घबराया हुआ था कि अगर बाकी लोगों को उस राक्षसी और मादा जल-प्रेत की मौजूदगी का पता चल गया तो कहीं कोई नया बखेड़ा न शुरू हो जाए।

कुछ समझ में न आने पर जरूस, मकास और लोफा, उसके साथ दोबारा ऊपर चले गए। उन्होंने एक कपड़े से झाड़-पोंछकर सलार के पूरे जिस्म को साफ किया।

लोफा एक बिस्तर पर अधलेटा हो गया। तीनों ने फैसला किया, शिला-पुस्तक को खोजने के लिए, तीनों एक-एक करके जाएँगे। सबसे पहले मकास जाना चाहता था, काफी देर तक किताबों में सिर खपाने के बाद भी उसे वहाँ, वो किताब नज़र नहीं आई, जिसके लिए तीनों भाई यहाँ तक आए थे। थक-हारकर वो वापस लौट आया।

जरूस ने उसके बाद सलार को कमरे में भेजा। उसे विश्वास था चूँकि किताबें अपना पाठक खुद चुनती हैं इसलिए इस बार शायद उसे चुन लिया जाए, जिसे शिला-पुस्तक सबसे पहले दिखी थी। सलार ने कमरे के भीतर जाकर, उस कोने की तरफ देखा, जिसमें बहुत सारी किताबें, बेतरतीब भरी हुई थीं। वो ढेर की तरफ बढ़ा ही था कि एक स्वप्न-फूल उसके ऊपर आकर गिरा। उसने खिड़की की तरफ देखा, चौखट पर स्वाइली बैठी हुई थी। वो ऐसे अपने पैर हिला रही थी जैसे वो पानी में डूबे हुए हों।

सलार ने तेज़ी से वो दरवाज़ा बन्द किया, जिससे होकर वो भीतर आया था। उसके बाद वो लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ खिड़की तक पहुँचा और स्वाइली की तरफ देखकर गुस्से में बोला, 'तुम...तुम आखिर यहाँ क्या कर रही हो स्वाइली... और वो क्या था? वो फूल, क्या तुम्हें नहीं पता, तुम्हारी ये हरकतें कोई बखेड़ा खड़ा कर सकती हैं?'

वो बस एकटक उसकी तरफ देखती रही और मुस्कराती रही। अपनी बात का कोई जवाब न मिलने की वजह से वो और भी ज़्यादा खीझ गया।

उसने उस नन्ही राक्षसी को अपने हाथों से ऊपर उठा लिया और उसे अपने चेहरे के सामने ले आया। 'तु...तुम आखिर चाहती क्या हो?' उसकी आवाज़ में नरमी के साथ खीझ भी नज़र आ रही थी।

गोचो राक्षसी अब भी उसे देखकर बस मुस्कराए जा रही थी। तभी उसे खिड़की पर जडाकी तैरती दिखाई दी। उसने हड़बड़ाकर स्वाइली को वापस चौखट पर उतार दिया और तेज़ी से पीछे हट गया।

जडाकी का पारदर्शी शरीर, तैरता हुआ खिड़की से भीतर आ गया। दोनों उसकी तरफ ऐसे देख रही थीं जैसे वो एकदम नासमझ हो। तभी दरवाज़े के पास से किसी के गुज़रने की आवाज़ आई तो वो दोनों खिड़की से होकर बाहर चली गईं। एक-एक करके वो उन किताबों को देखने लगा, जो कोने में बेतरतीब रखी हुई थीं। सबसे पहले जिस किताब पर उसका हाथ गया, वो **चितकबरे घोड़ों की सवारी के नियम** थी। उसने उसे बेपरवाही से अलग रख दिया। उसके बाद उसने ढेर से एक दूसरी किताब उठाई, ये **जल-प्रेतों की सामाजिक वर्जनाएँ** थी।

एक किताब मेंढक की खाल को सुखाकर, उस पर लिखी गई थी। किताब पर हरी-हरी काई जमी हुई थी जैसे किसी मेंढक की पीठ हो। उसने पहला पृष्ठ पलटा, पहला पन्ना पलटते ही उसके भीतर से गाढ़ा, सफेद धुआँ और हर पृष्ठ से तेज़ पानी निकलने लगा। किताब उसके हाथ से छूटकर फ़र्श पर गिर गई लेकिन खुली हुई किताब में से धुआँ और पानी निकले जा रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो कैसे उस पानी को रोके। कुछ ही पलों में सारे कमरे में पानी भर गया।

सलार ने हड़बड़ाकर उस खुली किताब को बन्द कर दिया, जो कमरे के फ़र्श पर पड़ी हुई थी। किताब बन्द करते ही धुआँ और पानी जैसे निकले थे, उसी तरह किताब में समा गए। उसने एक गहरी, ठण्डी साँस ली और दोबारा किताबों की तरफ बढ़ा।

उसने आँखें बन्द करके ढेर के भीतर हाथ दिया और अन्दाज़े से एक किताब बाहर खींच ली। उसने देखा किताब किसी पत्ते की तरह हल्की और चिकनी थी। काफ़ी कोशिश करने के बाद भी वो ये पता नहीं लगा सका कि ये किताब

किस चीज़ की बनी हुई है। किताब का मुखपश्ष्ठ दूधिया रंग का था, जिस पर गहरे लाल रंग से लिखा हुआ था–**वायवॉर्न की रोशनी के इस्तेमाल और नैण्टाकॉर्नस से उनका बचाव**। उसने किताब का पहला पश्ष्ठ यूँ ही पलटा, तो उसके भीतर से हल्की–हल्की रोशनी बाहर आने लगी। किताब के पहले पन्ने पर एक वायवॉर्न का चित्रा बना हुआ था, रोशनी उसी के भीतर से आ रही थी।

उसने बेमन से वो किताब भी एक तरफ रख दी और तीसरी बार कोशिश की। किताबों के ढेर में टटोलते वक़्त इस बार उसकी उँगलियाँ किसी बेहद सख्त चीज से टकराईं। उसने अपना हाथ, ढेर के भीतर और गहराई तक घुसाया तो उसे लगा जैसे पत्थर जैसी कोई कठोर चीज़ उसके हाथ में है। उसने उसे कसकर पकडा और बाहर खींचने की कोशिश की तो एक जानी–पहचानी आवाज ने उसके जिस्म के सारे रोंगटे खडे कर दिए। 'खरड–खरड' की एक आवाज हुई और शिला–पुस्तक, ढेर से थोडी–सी बाहर झाँकने लगी।

उसने किताब को ज़ोर लगाकर बाहर खींचा, किताब बाहर आ गई। सबसे पहली शिला पर लिखे लफ़्ज़ पढकर, उसके कानों में इस बार वैसी सन–सन–सन की आवाज़ नहीं गूँजी जैसी पहली बार गूँजने लगी थी। पहली पंक्ति में लिखा था–**'ये किताब है उस पानी के बारे में, जिसमें गीलापन नहीं होता।'**

उसने दूसरी शिला को पलटा...उस पर छेनी से खोदकर एक नक़्शा बनाया गया था। पहली बार जब उसने नक़्शे को समझने की कोशिश की थी, उस वक़्त उसे कुछ समझ नहीं आया था कि ये किस जगह का नक़्शा है। उसने दोबारा नक़्शे को गौर से देखा और उसे समझने की कोशिश की।

सलार के मन में कहीं इस बात को लेकर खुशी थी कि किताब ने उसे चुन ही लिया। उसने भारी–भरकम किताब को उठाकर, लकडी की एक मेज पर रखा। किताब की दूसरी शिला पर जो नक़्शा बना हुआ था, उसे उसमें कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। काफ़ी देर तक नक़्शे में माथापच्ची करने के बाद, उसने किताब की तीसरी शिला को पलटा। पत्थर से पत्थर रगड़ने जैसी परिचित आवाज़ हुई और चित्रों के माध्यम से उकेरा गया एक जटिल सन्देश उसके सामने था।

उसने उसे पढने की बहुत कोशिश की लेकिन कुछ भी साफ़ नहीं हो सका। गैरोगन–ग्लीफ़ लिपि, उसने अपने गुरु के पास सीखी थी लेकिन वो बस इतनी ही थी कि एकाध शब्द या बमुश्किल एकाध वाक्य समझ में आ सके। सबसे कठिन बात ये थी कि इस चित्रालिपि में कुल बारह चित्रा थे। उन्हीं से हर वाक्य बनाना, इतनी टेढ़ी खीर थी कि दुनिया में बहुत थोड़े लोगों ने इस लिपि को सीखने में दिलचस्पी दिखाई थी।

किताब ने पढ़े जाने के लिए, उसे चुन लिया था और अब इस मौक़े को वो गँवाना नहीं चाहता था। चौथी शिला को पलटने पर कुछ दूसरे चित्रा उसके सामने थे, जिनमें एक पर्वत, झरना और उसके पास घास का मैदान था, जिसमें घास की जगह सींग उगे हुए थे। पत्थर में खोदे गए ये चित्रा बहुत साफ़ और जीवन्त थे। एक–एक करके उसने सारी शिलाएँ पलटीं लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकला।

थक–हारकर उसने मकास और जरूस को बुलाने का फ़ैसला किया लेकिन उसे ये डर सता रहा था अगर वे उन्हें बुलाने गया तो ये किताब पीछे कहीं ग़ायब न हो जाए और उसके बाद उसे ढूँढा जाना भी संभव नहीं था।

उसे तालाब के पास वो नन्ही गोचो राक्षसी और मादा जल–प्रेत दिखाई दी। वो दोनों, तालाब में खिले सुर्ख़ फूलों की तरफ़ उँगली से इशारा करके आपस में कुछ बात कर रही थीं। सलार ने उनकी तरफ़ हाथ से इशारा किया, जिसे जडाकी ने देख लिया। उसने स्वाइली की तरफ़ संकेत करके बताया कि खिड़की पर कोई उसे बुला रहा है।

स्वाइली ने पलटकर खिड़की की तरफ़ देखा और दूर से ही हाथ का इशारा करके पूछा, 'क्या बात है?'

सलार ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया, बस हाथ के इशारे से उसे पास बुलाया। वो दोनों हवा में तैरती हुई, खिड़की के पास आ गईं, पास आकर स्वाइली ने आहिस्ता से पूछा, 'क्या हुआ?'

सलार ने अपने होठों पर उँगली रखकर उसे और आहिस्ता बोलने का इशारा किया और लगभग फुसफुसाती हुई आवाज़ में बोला, 'आहिस्ता बोलो...आहिस्ता।'

स्वाइली ने उसकी तरफ ऐसे देखा, जैसे समझ न पा रही हो कि आहिस्ता बोलने की वजह क्या है।

वो दोनों तैरती हुई, अब कमरे के भीतर आ गई थीं। सलार ने बहुत धीमे स्वर में पूछा, 'क्या तुम मेरी मदद करोगी?'

स्वाइली और जडाकी दोनों असमंजस और हैरानी की स्थिति में दिखीं। फिर भी दोनों ने एक साथ अपना सिर ऐसे हिलाया जैसे सहमति देने में अगर एक पल की भी देर हुई तो वो कहीं उन्हें कमरे से बाहर जाने को न कह दे।

स्वाइली हवा में तैरती हुई, उसके कान के पास पहुँची और फुसफुसाकर पूछा, 'कैसी मदद?'

उसने चुपचाप शिला–पुस्तक की तरफ इशारा किया, 'इसे पढ़ने में...'

जड़ाकी और स्वाइली दोनों की नजर एक साथ शिला–पुस्तक की तरफ गई। दोनों ने एक बार एक–दूसरे की तरफ देखा और उसके बाद वो किताब के पास तक पहुँच गई। तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई और सलार ने हड़बड़ाकर उन्हें खिड़की से बाहर जाने का इशारा किया। वो एक पल को ठिठकीं और फिर तैरती हुई, खिड़की से बाहर चली गई।

सलार ने आगे बढ़कर दरवाजा खोल दिया। ये मकास था। 'तुम भीतर किसी से बातें कर रहे थे?' उसकी आवाज़ में सवाल के साथ हैरत भी थी।

'न...नहीं...किसी से नहीं...मैं तो बस...इस किताब को पढ़ने की कोशिश कर रहा था। मैं... ये खुशख़बरी देने ही वाला था कि किताब मिल गई है लेकिन...अभी...तक इसे...पढ़ने में कामयाबी... नहीं मिली।' उसने बड़ी मुश्किल में अटक–अटक कर अपनी बात पूरी की।

मकास ने कमरे में चारों तरफ देखते हुए पूछा, 'क्या...*वाक़ई* यहाँ कोई नहीं था?'

सलार एक पल को चुप खड़ा रहा फिर बोला, '*वाक़ई*...से...मतलब? क्या किसी को यहाँ होना चाहिए था?'

'नहीं...लेकिन अभी–अभी लोफा ने बताया कि वो मादा जल–प्रेत और नन्ही राक्षसी, यहाँ तालाब के पास मँडराते हुए दिखे थे। उसे लगा, वो फूलों वाली शरारत उन्हीं दोनों की थी।' मकास ने उसके सकपकाए हुए चेहरे को ग़ौर से देखते हुए कहा।

'ह...हम्म...हो सकता है...लेकिन मैंने किसी को नहीं देखा...दरअसल मैं इस किताब को पढ़ने में इतना मशगूल था कि मुझे वक़्त का भी पता नहीं चला। तुम...इस...किताब को पढ़ने की कोशिश करो ना...शायद तुम्हें कुछ समझ आए।' सलार ने विषय को बदलते हुए तेजी से कहा।

मकास बिना कुछ कहे, शिला–पुस्तक तक पहुँचा और उसके चित्रों को समझने की कोशिश करने लगा। काफ़ी देर तक देखते रहने के बाद भी, उसे इससे ज्यादा कुछ समझ नहीं आया कि–'ये किताब है उस पानी के बारे में, जिसमें गीलापन नहीं होता।' उसने सलार को दूसरे कमरे से जरूस और लोफा को बुलाकर लाने के लिए भेजा।

जरूस और लोफा ने भी आकर बहुत कोशिश की लेकिन उस किताब को आगे नहीं पढ़ सके। थक–हारकर चारों वहीं बैठ गए। लोफा ने आगे बढ़कर, ढेर से एक किताब उठाई। उसका शीर्षक बहुत विचित्र था–**नन्हे राक्षसों को पकाने की 101 विधियाँ।** किताब के लेखक की जगह लिखा था–**पेटू दानव**। लोफा ने हड़बड़ाकर किताब वापस फेंक दी।

तीनों के होंठों पर मुस्कराहट तैर गई। सलार ने बहाना करके उन्हें कमरे से बाहर भेजा। मकास ने एक बार हल्के शक की निगाह से उसकी तरफ देखा और फिर चुपचाप अपने कमरे में चला गया। वो दोनों, खिड़की के पास ही दीवार से चिपकी हुई थीं। उसका इशारा पाते ही वो एकदम कमरे के भीतर आ गईं। ऐसा लग रहा था जैसे वो दोनों बहुत उत्सुकता से ये सुनना चाहती हों कि आखिर माज़रा है क्या और किताब पढ़ने में, वो उनकी मदद क्यों लेना चाहता था।

भीतर आते ही उन्होंने हाथ के इशारे से फिर पूछा, 'मामला क्या है?'

सलार ने फुसफुसाकर कहा, 'क्या तुम...से पढ़ने में मेरी मदद करोगी?'

स्वाइली ने किताब की तरफ देखा और वो उस शिला के ऊपर हवा में तैरने लगी, जो शिला इस वक़्त खुली हुई थी। उसने महसूस किया, स्वाइली अचानक बहुत गम्भीरता का प्रदर्शन कर रही थी। वो पूरी तल्लीनता के साथ, किताब के उस पृष्ठ को पढ़ रही थी, जो सामने था। फिर उसने अपने नन्हे हाथों से कुछ इशारे किए और किताब की दूसरी शिला पलटकर सामने हो गई। एक–एक करके उसने पाँच शिलाएँ पलटीं और बहुत देर तक उन्हें पढ़ती रही और हवा में कुछ देखकर सोचती रही।

'क्या तुम कुछ बताओगी भी, तुम इसे पढ़ पा रही हो या नहीं?' सलार ने बेचैनी से उसी तरफ़ देखा।

स्वाइली ने एक नज़र उस पर डाली और फिर चुपचाप, उस शिला को पढ़ने लगी, जो सामने थी। कुछ पल बाद वो मुस्कराती हुई उसकी तरफ़ मुड़ी और बड़ी मासूमियत से बोली, 'हाँ...'

उसका ये 'हाँ' ज़रूरत से कुछ ज्यादा ही लम्बा था।

'...तो बताओ न...क्या लिखा है इसमें? क्या तुम इसे वाकई पूरा समझ चुकी हो?' उसकी आवाज़ का उतावलापन बढ़ता ही जा रहा था।

स्वाइली ने इस बार भी केवल 'हाँ' ही कहा।

जडाकी चुपचाप एक कोने में तैर रही थी। वो ऐसे उन दोनों को देख रही थी जैसे किसी नई घटना के इंतज़ार में हो।

'जल्दी बताओ...क्या लिखा है इसमें? आखिर कहाँ मिलेगा हमें शाश्वत–जल?

'ये प्राचीन गैरोगन–ग्लीफ़ लिपि है। दुनिया की सबसे कठिन लिपि। मैंने इसे बचपन में पढ़ा था, अपनी माँ से सीखा था इसे। ये किताब, उस पानी के बारे में है, जिसमें गीलापन नहीं होता। मैंने आज तक इतनी अजीब चीज़ कभी नहीं पढ़ी और न ही सुनी लेकिन जो कुछ इस किताब में है अगर वो सच है तो ये हैरतअंगेज़ और बेमिसाल है।' स्वाइली की बात पूरी होते–होते, उसकी आवाज़ रहस्यमयी होती चली गई।

'आख़िर ऐसा क्या लिखा है इसमें? हर बात मुझे बताओ, एक–एक बात, कुछ भी छूटना नहीं चाहिए।'

'दुनिया में केवल एक जगह ऐसी है, जहाँ ऐसा पानी मिल सकता है, जिसमें गीलापन न हो। उस जगह का नक़्शा इस किताब में दिया गया है लेकिन ऐसी कोई जगह दुनिया में होगी, मुझे नहीं लगता। इन जगहों के तो मैंने कभी नाम तक नहीं सुने। इसमें लिखा है– **'चौदह पहाड़ियों से आगे, नाख़ूनों के मैदान को पार करते हुए, ख़ामोश झरने की तलहटी में, कोरे पत्थर के भीतर, छिपा है वो पानी, जिसमें 'गीलापन' नहीं होता।'** इस जगह तक पहुँचने के लिए, जहाँ–जहाँ से होकर गुज़रना है, वो सब इतना मायावी और तिलिस्मी लग रहा है जैसे ये किसी दूसरी दुनिया की ही ज़मीन हो।' स्वाइली ने एक साँस में अपनी बात पूरी कर दी।

'हमें हमारी मंज़िल का इशारा मिल गया...मैं अभी आता हूँ।' सलार की आवाज़ में इस वक़्त बेपनाह खुशी झलक रही थी।

वो तेजी से कमरे से बाहर चला गया और उल्टे पाँव वापस लौटा लेकिन इस बार वो अकेला नहीं था, उसके साथ मकास, जरूस और लोफ़ा भी थे। किताब की खुशी में वो ये भी भूल गया कि उन तीनों को स्वाइली और जडाकी की यहाँ मौजूदगी का पता नहीं था। जैसे ही वो कमरे में आए, वहाँ स्वाइली और हवा में तैरती जडाकी को देखकर हैरान हो गए।

'ये...ये शैतान लड़की यहाँ क्या कर रही है? मैंने इसे तालाब के पास घूमते देखा था, तब से मैं हर जगह इसे ढूँढ कर थक गया और ये यहाँ इस कमरे में छिपी है। तुम...तुम तुरन्त वापस जाओ! क्या तुम्हें नहीं पता, तुम्हें सबका भोजन तैयार करना है?' लोफ़ा की आवाज़ में डाँट के साथ एक मीठी झिड़की भी थी।

उसने इस तरह सबकी तरफ़ देखा जैसे अपनी बात का समर्थन चाहता हो लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा।

'ठ...ठहरो लोफ़ा...' सलार की आवाज़ में आग्रह छुपा था। 'हमें हमारी मंज़िल का पता मिल गया और ये इसी की वजह से संभव हो पाया। अगर ये इस किताब को न पढ़ती तो शायद हम कभी नहीं जान पाते कि हमें कैसे मंज़िल तक पहुँचना है।'

लोफ़ा बोलते–बोलते रुक गया, स्वाइली उसकी तरफ़ ऐसी नज़रों से देख रही थी जैसे आँखों ही आँखों में ठेंगा दिखाना चाहती हो। जडाकी अब भी चुपचाप उसके पास खड़ी सबको देख रही थी। सलार ने किताब में लिखी सारी बात जरूस और मकास को बताई। उन्होंने देखा, किताब अब ग़ायब नहीं हुई थी। जरूस और मकास ने स्वाइली की तरफ़ शुक्रिया अदा करने वाली नज़रों से देखा। सलार को ये देखकर हैरानी हुई कि वो शर्म से दोहरी होकर जडाकी के पीछे छिप–सी गई।

'हमें तुरन्त थोरोज़ और सालन से इस बारे में बात करनी चाहिए और अपने सफ़र के लिए निकल पड़ना चाहिए।' जरूस ने दोनों भाइयों की तरफ़ देखते हुए कहा।

'ल...लेकिन इस किताब का क्या करें? इसके बिना हमारा सफ़र पूरा नहीं हो सकता, हम इसे यहाँ नहीं छोड़ सकते।' सलार की आवाज़ में असमंजस के जाले नज़र आ रहे थे।

'हम इसे साथ लेकर चलेंगे।' जरूस ने दृढ़ता से कहा।

'ये ठीक रहेगा...फिर इसे उठाने में मेरी मदद करो।'

मकास ने आगे बढ़कर किताब को उठाना चाहा लेकिन वो इतनी वज़नी हो गई कि उससे हिली भी नहीं। फिर एक–एक करके तीनों ने कोशिश की लेकिन किताब इतनी वज़नी हो गई जैसे शिला–शाप की शिकार हो गई हो।

काफी देर तक सोच में रहने के बाद सलार ने स्वाइली की तरफ़ देखा। 'तुम...तुम कोशिश करो, तुमने इसे पढ़ा है, शायद तुम इसे उठा पाओ।'

सलार की इस बात पर हर कोई हैरान हो गया क्योंकि किताब स्वाइली के जिस्म से कई गुना बड़ी थी। नन्ही राक्षसी ने आगे बढ़कर किताब को छुआ, ज़रा–सी ताकत लगाई तो उसका एक कोना ऊपर उठ गया। सलार ने दोबारा कोशिश की तो वो उसे उठाने में सफल हो गया।

'अब शायद ये इस सफ़र के लिए तैयार है?' लोफ़ा ने ऐसी आवाज़ में कहा जैसे उसकी समझ में कुछ भी न आ रहा हो कि आख़िर ये हो क्या रहा है।

सलार ने किताब को उठाया तो वो किसी फूल की तरह हल्की लगी। ऐसा लग ही नहीं रहा था कि वो बीस चपटी शिलाओं को उठा रहा है। उसने किताब उठाकर अपनी झोली में रख ली। स्वाइली बहुत खुश नज़र आ रही थी। उसके चेहरे से लग रहा था कि उनकी मदद करके उसे बहुत अच्छा लगा है। लोफ़ा ने उसकी तरफ़ देखकर बुरा–सा मुँह बनाया और चलने की तैयारी करने लगा।

काठ–घर को पीछे छोड़कर, वो चारों जंगल की तरफ़ बढ़ते जा रहे थे। उनके क़दमों की तेज़ी बता रही थी, उन्हें कितना उतावलापन है। चलती–पगडण्डी पर सवार होकर वो बहुत जल्दबाज़ी में क़िले तक पहुँचे। उनके पहुँचते ही, एक दरवाज़ा चरमराकर खुल गया। पहली बार उन तीनों को वहाँ जंगली रूहों की मौजूदगी का अहसास हुआ वरना उससे पहले उन्हें समझ ही नहीं आता था कि दरवाज़े अपने–आप क्यों खुल और बन्द हो रहे हैं।

क़िले में पहुँचकर उन्हे हैरत हुई, जब उन्होंने स्वाइली को एक गलियारे में जाते हुए देखा। उन्हें समझ नहीं आया, वो कैसे उनसे पहले वहाँ पहुँच गई। मकास ने लोफ़ा के हाथ, सालन और थोरोज़ को सन्देशा भिजवाया कि वो तीनों भाई फ़ौरन उनसे मिलना चाहते हैं। थोड़ी देर बाद वो ख़बर लेकर आया कि **लटकते–कमरे** में उन तीनों को बुलाया गया है। तीनों फ़ौरन उसके साथ चल दिए। कई गलियारे पार करने के बाद, वो एक बड़े हॉल में पहुँचे और उन सीढ़ियों से होकर ऊपर पहुँचे, जिन पर फटा हुआ लाल क़ालीन बिछा हुआ था।

सीढ़ियाँ जहाँ ख़त्म हुई, उसके सामने एक बहुत बड़ा सभागश्ह था, जिसके बीचोबीच एक कमरा *लटक* रहा था। उन्होंने हैरानी से चारों तरफ़ देखा, ऐसी कोई चीज़ नज़र नहीं आ रही थी, जिससे वो छत पर या फ़र्श पर टिका हो। कमरा पूरी तरह हवा में लटका हुआ था। उन्होंने नीचे झाँका तो नीचे उन्हें लम्बी नाक और पुँफदनेदार टोपी वाले लोग घ ूमते नज़र आए। कमरे तक जाने के लिए कोई रास्ता या सीढ़ी नज़र नहीं आ रही थी।

लोफ़ा ने एक बार उनकी तरफ़ देखा और फिर उनसे आगे–आगे हवा में क़दम बढ़ा दिया। वो नीचे नहीं गिरा, ऐसा लगा जैसे वो किसी अदश्श्य परत पर चल रहा हो। कई क़दम चलने के बाद उसने पीछे मुड़कर देखा, तीनों अब भी अपनी जगह खड़े हुए थे।

'चले आओ...मेरे पीछे–पीछे...लेकिन सावधनी से, ज़्यादा दाहिने या बाँए मत जाना वरना नीचे गिर जाओगे। तुम्हे चोट तो नहीं लगेगी, बस तुम भी इस कमरे की तरह हवा में लटकने लगोगे।' लोफ़ा की बात सुनकर उनकी हिम्मत थोड़ी बढ़ी और जरूस ने आहिस्ता से अपना क़दम आगे बढ़ाया।

उसका पाँव हालाँकि हवा में था लेकिन उसे ऐसा लगा जैसे किसी सख़्त चीज़ पर टिक गया हो। वो धीरे से आगे बढ़ा, उसने नीचे झाँककर देखा, काफ़ी नीचे लोग आ–जा रहे थे। क़िले में इतने लोग उसने पहले कभी नहीं देखे थे, उसे समझ नहीं आया कि ये लोग आख़िर कौन हैं? उसे लगा शायद ये क़िले का कोई ख़ास हिस्सा है। ज़्यादा सोच–विचार न करके उसने अपने क़दम आगे बढ़ा दिए। लोफ़ा अब भी आगे–आगे चल रहा था।

कमरे के दरवाज़े पर पहुँचकर लोफ़ा ने बिना दस्तक दिए या ठहरे उसमें प्रवेश कर लिया। उन्हें हैरत हुई, वो दरवाज़े के पीछे ग़ायब हो चुका था। लोफ़ा उनके सामने से ग़ायब हो चुका था और अब वो पूरी तरह हवा में खड़े थे। जरूस ने हिम्मत करके आगे क़दम बढ़ाया, उसे ऐसा लगा जैसे उसकी नाक दरवाज़े से टकरा जाएगी लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

वो आराम से दरवाज़े के भीतर पहुँच गया। एक–एक करके मकास और सलार भी उसके पीछे आ गए। भीतर, सालन और थोरोज़ दोनों मौजूद थे। वो एक सिंहासन जैसी कुर्सी पर बैठे हुए थे, लोफ़ा उनके सामने पूरे अदब और सलीवेफ से खड़ा हुआ था। वो आगे बढ़े तो सालन ने उन्हें कुर्सी पर बैठने का इशारा किया।

'लोफ़ा ने बताया, शिला–पुस्तक ने तुम्हें चुन लिया है और तुम्हें वो नक़्शा भी मिल गया है, जो वहाँ तक जाता है, जहाँ तुम्हें वो चीज़ मिलेगी, जो तुम्हारे पिता का वचन पूरा करेगी और वही चीज़ उसे भी चाहिए, जो पूरी दुनिया पर गिद्ध जैसी दश्ष्टि जमाए बैठा है।' सालन ने बिना किसी भूमिका के अपनी बात पूरी की।

'हम आगे बढ़ना चाहते हैं सालन...लेकिन आगे बढ़ने से पहले कुछ चीज़ें जानना चाहते हैं। हमें बताया गया, हम इस

वक्त दुष्ट जैल्डॉन के लिए बहुत ज़रूरी हैं। ये भी कहा जा रहा है कि उसे हमारी इसलिए ज़रूरत है क्योंकि वो दुनिया पर कब्ज़ा करना चाहता है। एल्गा–गोरस की ताकतें उसके साथ हैं। वो दुनिया का सबसे शक्तिशाली इंसान बन चुका है। फिर ऐसा क्या है, जो उसे हमारे लिए सौ साल तक इंतज़ार करना पड़ा, इतना बड़ा षड़यन्त्रा रचना पड़ा?' जरूस ने सालन की आँखों में देखते हुए कहा।

'अब वो वक्त आ गया है, जब तुम्हें तुम्हारे सवालों का जवाब दे दिया जाए क्योंकि अगर आज से पहले तुम्हें जवाब मिलता तो तुम फौरन अपने सफ़र पर निकलने की ज़िद करते और उसका परिणाम इतना भयंकर होता, जो सारी दुनिया को भुगतना पड़ता। तुम्हें अब शिला–पुस्तक चुन चुकी है, वो नक़्शा तुम्हारे पास है, जो तुम्हें उस पानी तक पहुँचाएगा, जिसमें गीलापन नहीं होता और सबसे बड़ी बात, दुनिया की वो ताक़तें अब एक साथ हैं, जो जैल्डॉन को रोकने में तुम्हारी मदद करेंगी।'

मकास ने दुनिया के सबसे बुजुर्ग–शिशु के चेहरे को घूरते हुए कहा, 'महान सालन हमारा सवाल अब तक ज्यों का त्यों है...हम इस जंग में साथ हैं लेकिन अभी तक भी हमें ये पता नहीं चला है कि आखिर 'हम' ही क्यों? ऐसी क्या ख़ास बात है, जो वो हमारे सिवाय किसी और को नहीं चुन सका।'

'*वजह* हमें मालूम हो गई है नौजवानों...' सालन के शब्दों ने जैसे धमाका किया।

'क...क्या...आपको मालूम हो गई है?' तीनों के चेहरे पर हैरानी कलाबाजियाँ खा रही थी।

'हाँ...हमें मालूम हो गई है, वजह क्या है।'

'फ...फिर आपने हमें अब तक बताया क्यों नहीं? आप...कब से जानते हैं ये बात? जरूस की आँखो में एक नाराज़ कौतुहल झलक रहा था।

'...कुछ दिनों से...तब से...जब पहली बार लैनीगल की निगरानी शुरू की गई।'

'ये बात हमसे क्यों छुपाई गई सालन?' मकास की आवाज़ में गहरी शिकायत थी।

'तुम्हें सब कुछ बताया जाएगा, हम तुम्हें आधी–अधूरी ख़बरें नहीं देना चाहते। सब्र करो...सब पता चल जाएगा।'

वो एक पल के लिए साँस लेने को रुके और फिर बोलने लगे, 'तुमने हमसे हमेशा यही पूछा कि आखिर तुम तीनों ही क्यों? तुम तीनों के ही होने के कई कारण हैं। पहला–तुम तीनों **आम–नक्षत्रा–में–जन्मे–ख़ास–बच्चे** हो और शातिर लैनीगल और दुष्ट जैल्डॉन ने तुम्हारे पैदा होने के लिए सौ साल तक इंतज़ार किया। लैनीगल नक्षत्रा–विद्या का महान ज्ञाता है, उसे मालूम हो गया था कि तुम कब और कहाँ जन्म लोगे इसलिए उसने तुम्हारे जन्म से पहले ही उस गाँव जाना शुरू कर दिया, जहाँ तुम्हारे पिता रहते हैं। तुम्हारे जन्म के बाद, उसने तुम्हारे पिता को राज़ी किया, तुम तीनों को उन गुरुओं के पास भेजने के लिए, जो इस वक़्त दुनिया के सबसे महान गुरुओं में से हैं। उसका मक़सद तुम्हें ज्ञान या हुनर दिलाना नहीं था, केवल एक मक़सद था, तीनों ख़ास बच्चों को एक ख़ास प्रकिया से गुज़ारना...और वो है *रूहानी* और *जिस्मानी–कीमिया*।' सालन की आँखों में जैसे रहस्य की परतें खुलती जा रही थीं।

'हाँ...पूरी दुनिया में इस वक़्त केवल तुम तीन हो, जो रूहानी–कीमिया और जिस्मानी–कीमिया से गुज़र चुके हो और आम–नक्षत्रा–में–जन्मे–ख़ास–बच्चे भी हो। तुम्हें याद होंगे वो पल, कैसे तुम तीनों भाइयों के बदन की रंगत औरों से अलग हो गई। वो चुम्बकें, जो सोने, चाँदी और ताँबे को अपनी तरफ़ ऐसे ही खींचती हैं जैसे काला चुम्बक लोहे को खींचता है। तुम्हें याद होंगी वो विध्यिाँ, जिनमें उन महान गुरुओं ने तुम्हारे बदन, उन दुर्लभ चुम्बकों के बुरादे से ढँक दिए थे।'

जैसे–जैसे सालन बोलते जा रहे थे, उनका कहा एक–एक शब्द तीनों भाइयों के ज़ेहन पर हथौड़े की तरह चोट कर रहा था। उन्हें वो हर पल याद आ रहा था, जब तीनों भाई रूहानी–कीमिया और जिस्मानी–कीमिया की लम्बी, उबाऊ, पीड़ादायक और तोड़ देने वाली विध्यिों से गुज़रे थे। वो एकटक सालन की तरफ़ देख रहे थे, जिन्होंने पानी का एक पात्रा मुँह से लगाकर, एक घूँट पानी पिया था।

'जब तुम तीनों, उन दुर्लभ विध्यिों से गुज़र चुके, तब वो तुम्हें लेकर तुम्हारे पिता के पास पहुँचा और अपने शातिरपन का परिचय दिया। वो जानता था, वायदे के लिए मर मिटने वाले भोले आदिवासी कभी अपने ऊपर उसकी रहबरी का कर्ज़ नहीं रखेंगे। सफ़र पर निकलने के बाद से ही वो दोनों, तुम्हारा पीछा करा रहे थे। उसे दो चीजें एक साथ चाहिएँ...पहली, तुम तीनों और दूसरी वो पानी। एक के बिना दूसरा बेकार है, जो कुछ वो करना चाहता है, उसके लिए दोनों का होना बहुत ज़रूरी है और हम ये भी जानते हैं कि वो *क्या* करना चाहता है।' एक गहरी साँस लेकर वो चुप हो गए।

थोरोज़ ने पहली बार अपनी चुप्पी तोड़ी, '...और उस पानी को केवल वो हासिल कर सकता है, जो जिस्मानी–कीमिया

और रूहानी–कीमिया की विधियों से गुजर चुका हो। उसके अलावा दुनिया में कोई उसे हासिल नहीं कर सकता। तुम बेहद खास हो मेरे बच्चो...' उनकी गम्भीर आवाज़ में जिम्मेदारी छिपी हुई थी।

'मगर जैल्डॉन हमसे ऐसा क्यों कराना चाहता है?' जरूस की आवाज़ में विचार और चिन्तन का पुट था।

'इसलिए क्योंकि वो **जीना** चाहता है। वो अपने ही बुने जाल में फँस चुका है अगर उसने ऐसा नहीं किया, तो मौत उसे दबोच लेगी।' सालन ने जरूस की बात का उत्तर दिया।

'हम कुछ समझे नहीं सालन...' मकास ने असमंजस में पूछा।

'उसने धोखे से एल्गा–गोरस हासिल कर ली और उसे पूरा भी कर लिया मगर उस ताकतवर किताब को पूरा करने से पहले, हमने कुछ ऐसे जरूरी उपाय किए थे, जो उसकी ताकत के गलत इस्तेमाल को रोक सकते थे। एल्गा–गोरस के दूसरे अध्याय की ताकत हासिल करने के लिए, पहले अध्याय की ताकत का इस्तेमाल करना बहुत ज़रूरी है। उसने आखिर तक सब कुछ ठीक कर लिया लेकिन एक रहस्य उसे तब पता चला, जब वो आखिरी अध्याय तक पहुँचा। ऐसा इंतज़ाम किया गया था अगर कोई धोखे से उस किताब को हासिल करके उसे पूरा करना चाहे तो वो पूरी होने से पहले उसकी मौत का कारण बन जाए। अगर कोई उस किताब को पूरा करता चला जाए और आखिरी हिस्से को अधूरा छोड़ दे तो एक **शर्तिया–मौत** से उसे कोई नहीं बचा सकता।'

सालन के होंठ फिर हिले, 'आखिरी अध्याय को पूरा करने की शर्त ये है कि उसे या तो वो पूरा कर सकता है, जिसे किताब के रचयिताओं ने स्वीकृति दी हो या फिर वो व्यक्ति, जिस्मानी–कीमिया और रूहानी–कीमिया से होकर गुजरा हो और दुष्ट जैल्डॉन को न तो किताब के रचयिताओं ने उसे पूरा करने की अनुमति दी थी और न ही वो जिस्मानी और रूहानी–कीमिया से गुजरा था। वो थक–हारकर उन तीन महान गुरुओं के पास पहुँचा और धोखे से उनसे जिस्मानी और रूहानी–कीमिया की विधियाँ सीखनी चाहीं लेकिन उनकी पारखी नज़रें देखते ही पहचान गईं कि वो *गुरुहंता* है। उन्होंने उसे कुछ भी सिखाने से साफ इंकार कर दिया। अंतिम अध्याय पर आकर वो अपने ही बुने जाल में फँस गया।'

'लेकिन इस सारी कहानी में वो पानी कहाँ आता है, जिसमें गीलापन न हो?' मकास ने प्रश्नवाचक लहजे में पूछा।

'शातिर लैनीगल को उसके शाप से केवल वो पानी छुटकारा दिला सकता है। तुम्हें एल्गा–गोरस को पूरा करने की ताकत केवल वो पानी दे सकता है और सबसे ज़्यादा ख़ास बात, दुष्ट जैल्डॉन को जिस जीवन की तलाश है, वो जीवन, उसे केवल शाश्वत–जल दे सकता है और अब अगर एल्गा–गोरस की ताकतों को कोई संभाल सकता है तो केवल वो, जिसने शाश्वत जल हासिल किया हो और रूहानी और जिस्मानी–कीमिया से गुज़रा हो।'

'असली गड़बड़ वहाँ हुई, जब उस बौने ऑथरडस्ट ने गायब–गिद्ध को देख लिया। उसकी योजना वक़्त से पहले सामने आ गई। उस रात, जब माथेल्टन की गुफा में हमला हुआ, वो हमला, सोने जैसे बदन वाले इस नौजवान के लिए नहीं था, वो *कास्टन ब्रूड* के लिए था, जिसने घाटियों की निगरानी के लिए छह सौ हैंगी तिलचट्टे भेजे थे लेकिन अँधेरे की वजह से गैलूमा का सींग, इसकी पीठ में धँस गया। उसके बाद से वो लगातार तुम तीनों को अकेला करने की कोशिश कर रहा है। हमने माथेल्टन की गुफा से निकलने का फैसला इसलिए लिया क्योंकि वो जगह सुरक्षित नहीं रह गई थी। हम तुम तीनों को ऐसी जगह भेजना चाहते थे, जो दुनिया की सबसे महफूज़ और खुफ़िया जगह हो और ऐसी केवल एक ही जगह थी, जो इस सारी कसौटियों पर खरी उतरती थी। वो थी थोरोज़ की पहाड़ी।' सालन ने एक पल रुककर साँस ली।

'उसने रास्ते में भी अपना ख़बरी चिलटाचिलोंग तुम्हारे साथ लगा दिया। वो तुम्हें लेकर प्रफोगाप्रफोस के इलावेफ तक पहुँचा। उनकी योजना थी, तुम तीनों को वुन्टन और हूना से अलग करने की लेकिन उन नशेड़ी मेंढकों ने नशे में ये नहीं देखा कि पेड़ के भीतर वो किस–किस को बन्द कर रहे हैं। ये महज़ संयोग था कि तुम वहाँ से बच गए। उसके बाद बरगलबीट और थैजोथार का एक साथ हमला। ये सारी चीज़ें तुम तीनों को *क़ब्ज़े* में करने के लिए थीं, *मारने-के-लिए-नहीं...* लेकिन हम सब इसके लिए पहले से ही तैयार थे इसलिए उसकी कोई भी शातिर चाल कामयाब नहीं हो सकी।' सालन ने हाथ मेज़ पर रखे और आहिस्ता से बैठ गए।

तीनों के चेहरे पर इस वक़्त ऐसे भाव थे जैसे कोई इन्सान किसी आईने में, अज्ञात भाषा का प्रतिबिम्ब देख रहा हो। थोरोज ने अपना गला साफ़ किया और कमज़ोर आवाज़ में बोले, 'वुन्टनब्रॉस, हूनास्पॉटी और स्कीनिया को उस जगह भेजा गया था, जहाँ हमें उसका ठिकाना होने का शवफ था। वो शिला–मानवों का इलाका है। हमें विश्वास था, उन्होंने उसे पनाह नहीं दी होगी लेकिन ऐसा नहीं था। उसने शिला–मानवों को अपने साथ मिला लिया और उन्होंने बिना वजह तीनों पर शिला–शाप का इस्तेमाल किया। उनकी किस्मत अच्छी थी कि हमें उस दुर्घटना का पता चल गया और वक़्त रहते

उन्हें बचा लिया गया।' उन्होंने ने जैसे सारी शंकाओं का समाधन करना तय कर लिया था।

वहाँ से वापस लौटते वक्त उनके दिमाग में नगाड़े–से बज रहे थे।

लोफा उन्हें वापस कमरे तक छोड़ने आया। इस बार उस अदृश्य रास्ते पर हवा में चलते हुए उन्हें जरा भी हिचक नहीं हुई। तीनों के चेहरे पर एक पथरीली सख्ती का लेप चढ़ा हुआ था, जो ये अहसास करा रहा था कि वो अपने फैसले पर पहुँच चुके हैं। लम्बे गलियारे से होते हुए, फटे कालीन पर चलते हुए वो वापस अपने कमरे तक पहुँच गए। उन्हें वहाँ छोड़ने के बाद लोफा एक पल भी नहीं रुका और वापस चला गया।

कैल्टिकस की इन गुफाओं के पास, दूर–दूर तक आबादी का नामोनिशान तक नहीं है। इस बात को अगर मैं ऐसे कहूँ कि दूर–दूर तक *'इंसानी'* आबादी का नामोनिशान नहीं है तो ज्यादा बेहतर होगा। हम इंसान, अपने अलावा बाकी किसी को 'ज़िन्दगी का सत्त्व' मानने को आसानी से तैयार नहीं होते। दरअसल इंसानी ज़िन्दगी के सबसे दुर्भाग्यशाली पल वो थे, जब अतीत में कभी ये भ्रम हुआ कि इंसान इस ज़मीन का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। ये आत्ममुग्धता सदियों से धरती पर महाविनाश को दस्तक देती रही। हालाँकि उस महाविनाश को इंसानों ने कभी उस रूप में नहीं देखा, जिस रूप में बाकी प्राणियों ने देखा।

मुझे कभी ऐसी कोई प्राणी–प्रजाति नहीं मिल सकी, जो स्वयं को सर्वश्रेष्ठ न मानती हो। एक बार तो हद हो गई, जब एक नन्हे फॉ ने, दानव हैबूला को बताया कि 'फॉ' इस धरती के सर्वश्रेष्ठ प्राणी हैं। उसे भी यही लगा *'ये-तो-हद-हो-गई'* ऐसे ही जैसे हम इंसानों को ये बात 'हद' लगे कि कोई जूँ खुद को पृथ्वी का सबसे श्रेष्ठ प्राणी घोजित कर दे। वैसे मैने दबी जबान में ये चर्चा भी सुनी है कि जूँओं के बालों में रहने वाली, कैलोकच नाम की जुँएँ भी, खुद को धरती का सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानती हैं। हालाँकि ये अलग बात है, वो कभी धरती पर नहीं उतरीं, बालों में ही जन्म लेती हैं और वहीं मर जाती हैं।

वैसे ही जैसे खूनी **डैरकोस**, क्रोध में जन्म लेते और क्रोध में ही मरते। वो डैरकोस, जिनकी दास्तान उस बंजारे की दास्तान से जुड़ी है, जिसे उसके दल ने, अपने साथियों के साथ, किस्मत के भरोसे रेगिस्तान में छोड दिया। डैरकोस, जिन्हें क्रोध करने के लिए 'वजह' की आवश्यकता नहीं होती, वो पहले क्रोध करते और उसके बाद वजह खोजते, जो अपने उस हर बच्चे का कत्ल कर देते, जिसके भीतर उन्हें 'क्रोध' नज़र नहीं आता था।

फ़ैंग्यूला फ़्लॉट

अध्याय सोलह

एक सप्ताह का वक़्त था। महासभा के सभी सदस्यों को अपने–अपने प्रान्त और प्रदेशों में जाकर, जंग के लिए ज़रूरी समर्थन और फ़ौज की मदद मुहैया करानी थी। सबसे दूर तकलामकानास का रेगिस्तान था। उसके बाद हूजा प्रान्त, जहाँ से बैम्बूस प्रजाति का पतला जंगबाज़ रैक्टिकस ड्रॉन आया था। सालन ने सबसे पहले उन्हें ही रवाना करने का फ़ैसला किया। फ़ैग्यूला फ़लॉट और रैक्टिकस को एक साथ भेजा गया ताकि वो वक़्त रहते वापस आ सकें। बाक़ी लोगों को अगले दिन रवाना होने का सन्देश भेजा गया।

थोड़ा–बहुत खाना खाने के बाद, वो इस वक़्त चौड़े कमरे में थे। मकास, फ़ैग्यूला और रैक्टिकस के बारे में जानना चाहता था। तकलामकानास के रेगिस्तान के वो सौ बहादुर, जो अपने लोगों से दूर, बंजारों का जीवन जी रहे थे।

उस रात सालन ने उन्हें उस दास्तान के बारे में बताया, जिसने फ़ैग्यूला को रेत के उन गर्म टीलों से दूर कर दिया, जो हमेशा उसकी रूह में बसते थे। ये बन्जारों का एक झुण्ड था, जिसमें हज़ारों लोग थे। *रेत-विद्या* के माहिर...रेत ही उनका जीवन था और रेत ही उनकी मृत्यु। रेत–विद्या...वो हुनर, जो उन्हें उन बुज़ुर्गों से विरासत में मिला था, जिन्हें वक़्त ने रेत के टीलों के नीचे दफ़न कर दिया।

सालन के होंठों से निकले अल्फ़ाज़, जैसे वक़्त की एक–एक परत को खुरचते जा रहे थे–

'ये तब की बात है, जब तकलामकानास में एक तरफ़ जहाँ रेत आग उगल रही थी, वहीं दूसरी तरफ़ दुश्मनी की आग भी धक रही थी। दुश्मनी की वो भट्टी, जो तकलामकानास के रेगिस्तान से भी ज़्यादा शाश्वत महसूस होती थी।

वो रेगिस्तान के बाहर के दो क़बीले थे, **पल्वास** और **अटेरियन**। दोनों, तकलामकानास के एक–एक सिरे पर थे। दोनों को रोज़ रेगिस्तान से होकर, आना–जाना पड़ता। पल्वास...ने रेगिस्तान में एक जल–सोता खोजा और उस पर अपना हक़ जताया लेकिन अटेरियन ने बताया, वहाँ पड़ी ऊँफट की लीद, वो निशान थी, जिसे उनके लोगों ने इसलिए रखा था ताकि पहचान रहे और वो जाकर अपने क़बीले तक पानी की ख़बर दे सकें।

सच क्या था, ये कभी कोई नहीं जान पाया लेकिन पानी की ये दुश्मनी ख़ूनी होती गई। रेगिस्तान में ख़ून हमेशा पानी से सस्ता होता है। एक लड़ाई शुरू हुई, जो सदियों तक चली। लोग मरते रहे और जल–सोता भी आहिस्ता–आहिस्ता सूख गया लेकिन दुश्मनी अब भी गीली थी, उस ख़ून से, जो दोनों पक्षों के लोग अब भी बहा रहे थे।

अटेरियन ने एक वहशी फ़ैसला लिया, पल्वास क़बीले के हर जीवित प्राणी के ख़ात्मे का। इसके लिए ख़ूनी डैरकोसों को बुलाया गया। **डैरकोस**...जिनके बारे में कहा जाता था, वो क्रोध में जन्म लेते हैं और क्रोध में ही मरते हैं। कोई डैरकोस कभी शान्त नहीं होता, वो हर वक़्त क्रोध में होता है। पाँच साल की उम्र तक वो हर बच्चे को परखते हैं अगर वो स्वभाव से शान्त और अमनपसन्द नज़र आता, तो मार दिया जाता।

क्रोध करने के लिए किसी डैरकोस को वजह की ज़रूरत नहीं होती। वो पहले क्रोध करते हैं और बाद में वजह खोजते हैं। किसी न किसी बहाने से, वो अपने भीतर गुस्से की आग को धकाए रखते हैं। डैरकोस का मानना है, क्रोध चरम ऊर्जा और परम सश्जनात्मक शक्ति है। विध्वंस, सश्जन की बुनियाद है और क्रोध विध्वंस की नींव। वो कभी भी, किसी भी बहाने से क्रोधित हो सकते हैं। पेड़ पर, पौधे पर, ज़मीन पर, हवा पर, पशु पर, कीड़े पर, पत्थर पर...किसी पर भी। किसी भी बहाने से, जैसे–ज़मीन गर्म क्यों हैं? ये कहकर कोई डैरकोस ज़मीन पर लातें बरसा सकता है या फिर पत्थर ठोस क्यों है, छोटा क्यों है, बड़ा क्यों है? इसी आकार का क्यों है? ऐसा कहकर वो गुस्से में उस पत्थर को तोड़ने में लग सकता है।

हिंसा, बेरहमी, क्रोध और वहशीपन उन्हें जन्मजात मिलता है। डैरकोसों ने पल्वास कबीले के हर जीवित प्राणी को खत्म करने का सौदा किया। बदले में उन्होंने एक बेहद बेशकीमती चीज की माँग की। *नमक*...चालीस ऊँफट नमक। नमक... जिसका एक–एक टुकड़ा खरीदने के लिए, सुदूर प्रान्तों से आए सौदागरों के ऊपर निर्भर रहना पड़ता था, जो सोने से भी ज्यादा कीमती और दुर्लभ था।

अटेरियन ने सौदा मंजूर कर लिया। डैरकोसों ने पल्वास कबीले पर रात को हमला किया। तब, जब कबीला गहरी नींद सो रहा था। चुपचाप, दबे पाँव...उन्होंने सोते हुए लोगों की हत्याएँ शुरू कर दीं। जब तक कबीले में जाग होती, तब तक ज़्यादातर लोग मारे जा चुके थे। डैरकोसों की तलवारें खून से सनी हुई थीं। केवल मुट्ठी भर लोग बच पाए, जिनमें सरदार का बेटा **सैगन** भी था।

बचे हुए लोगों ने किसी तरह भागकर अपनी जान बचाई। डैरकोसों ने उन्हें ढूँढना शुरू किया। दहशत और ताकत में कम होने की वजह से, कोई मुकाबला नहीं हुआ। जो जहाँ मिला, मार दिया गया। बहुत थोड़े लोग, निकल सके। उन्होंने गर्म, दहकते रेत के टीलों में घुसकर जान बचाई। जहाँ, सैगन को वो मिला, जिसका नाम फैग्यूला था। बंजारों की टोली का सबसे बहादुर और हिम्मती नौजवान।

सैगन का जिस्म खून से लथपथ था। उसका कण्ठ प्यास की वजह से खुरदुरी छाल की तरह हो गया था। आँखों में दहशत और आँसू थे। वो अपने घुटनों के बल रेत में रेंग रहा था। गर्म, दहकती रेत में, जो पत्थरों तक को झुलसा देने की ताकत रखती है।

फैग्यूला ने उसे उठाया, पानी पिलाया और हिम्मत बँधाई। वो उसे रेत के टीलों के नीचे ले गया। वहाँ, जहाँ रेत–विद्या के माहिर वो बंजारे रहते थे। डैरकोस सारे रेगिस्तान में उसे ढूँढते रहे लेकिन वो रेत के टीलों के नीचे महफूज था, ठीक उनके ऊँफटों के चपटे पैरों के नीचे।

सैगन ने उस वहशीपन और हिंसा की पूरी दास्तान फैग्यूला को सुनाई। कैसे उसके पूरे कबीले को सोते हुए कत्ल कर दिया गया। छोटे–छोटे बच्चों तक को नहीं बख़्शा गया। लाशों को ऊँफटों के पैरों तले रौंदा गया। कोई जिन्दा नहीं बचा, सिवाय सैगन के...जिसका जिस्म, हिम्मत और आत्मा, सब टूट चुके थे।

फैग्यूला ने उसे हिम्मत दी, सहारा दिया और दोस्ती दी। वो दो जिस्म एक जान हो गए। उनकी दोस्ती की मिसाल, बंजारों की पूरी टोली देती थी। फिर एक दिन, फैग्यूला ने वो फैसला लिया, जो दोस्ती की कीमत अदा करने के लिए था, डैरकोस का ख़ात्मा। रेत–विद्या के माहिर बंजारे, किसी भी बाहरी की वजह से, जंग में नहीं पड़ना चाहते थे। ये उनके कायदों के खिलाफ था।

फैग्यूला के साथ सौ योद्धा थे। वो डैरकोसों की तलाश में निकल गए मगर कहीं उनका कोई सुराग नहीं मिला। अटेरियन अब निश्चिंत थे, उनके दुश्मनों का ख़ात्मा हो चुका था। फिर एक दिन, एक नखलिस्तान में उन्हें डैरकोस नजर आए। उन्होंने महीनों से वहीं पड़ाव डाला हुआ था। पेड़ों के बीच उनके ऊँफट जुगाली कर रहे थे। कुछ गुस्सैल डैरकोस वहीं पहरा दे रहे थे, जो बार–बार गुस्से में अपने पैर ज़मीन पर पटक रहे थे।

रेत–विद्या के माहिर योद्धाओं ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया। सैगन उन्हीं के साथ एक ऊँफट पर सवार था। हवा में रेत की कुछ रस्सियाँ सरसराई और पहरेदारों की गर्दन पर कस गईं। पड़ाव में हल्ला मच गया। भगदड और हमले के शोर के बीच मारकाट मच गई। डैरकोसों ने मुकाबला किया लेकिन उनकी एक नहीं चली। रेत, उनकी जान का दुश्मन बन गया।

वो भागते, तो उनके पाँवों के नीचे का रेत धँस जाता, छुपते, तो उनके पाँवों के नीचे का रेत धकने लगता। टीले पर चढ़ते तो टीला उन्हें अपने भीतर निगलने लगता और अगर सामने रहते तो रेत की रस्सियाँ, उनकी ज़िन्दगी को मौत के फन्दे में कस लेतीं।

फैग्यूला और उसके सौ साथियों ने डैरकोसों के पड़ाव में कोहराम मचा दिया। ज़्यादातर मारे गए, जो बचे वो किसी तरह जान बचाकर भागे। फैग्यूला ने दोस्ती का हक़ अदा किया लेकिन क़बीले के क़ायदों के खिलाफ़। अभी भागे हुए डैरकोसों को खोजना बाक़ी था। वो पूरा जत्था एक महीने तक रेगिस्तान में भटकता रहा। बीच–बीच में भागे हुए एक–दो डैरकोस मिले, जिन्हें वहीं ख़त्म कर दिया गया।

उनका सरदार बचकर निकल भागने में कामयाब हो गया। महीनों बाद, फैग्यूला अपने बहादुर साथियों के साथ वापस लौटा, कबीले वालों को पता नहीं था, वो कहाँ से आए हैं। उन्होंने नमक की खोज में जाने का बहाना बना दिया।

बीच–बीच में वो डैरकोसों की तलाश में जाते रहे, उनका बड़ा समूह रेगिस्तान के दूसरे कोने पर था। सरदार वहाँ तक पहुँच गया था, उसने जाकर सारी दास्तान वहाँ सुनाई। कोप में भ्रकते डैरकोस निर्णायक जंग की तैयारी करने लगे।

बंजारों को कुछ भी पता नहीं था कि वो किस मुसीबत में घिरने वाले हैं। वो रेत के विशाल टीलों के नीचे आराम से अपना पड़ाव डाले हुए थे। एक दिन, जब फैग्यूला और उसके साथी, डैरकोसों की तलाश में रेगिस्तान में निकले हुए थे, हमला हुआ। डैरकोस बिना किसी चेतावनी के आए, टीलों के बाहर जो घूमता मिला, उसकी हत्या कर दी गई। जब ऊपर की हलचल का पता, टीलों के नीचे चला तो बंजारों के योद्धा बाहर निकल आए।

एक खतरनाक जंग हुई। रेत–विद्या के माहिर बंजारों के सामने डैरकोस ज्यादा देर तक नहीं टिक पाए। बंजारों ने डैरकोसों को मारकर भगा दिया लेकिन इस जंग में उन्हें भारी नुकसान हुआ। कई बंजारे मारे गए थे। पूरे पड़ाव में शोक और गुस्से की लहर थी। बिना किसी वजह के डैरकोसों का हमला, समझ से परे था।

फैग्यूला जब अपने साथियों के साथ वापस लौटा तो वहाँ का मंजर देखकर हिल गया। पूरे बंजारा–समूह में शोक की लहर थी। कई लोग मारे गए, बच्चे अनाथ हुए थे। डैरकोस तो भाग गए लेकिन नुकसान काफी हुआ था। उनके वापस लौटने पर बंजारों को सही वजह मालूम हुई कि आखिर डैरकोसों का ये हमला क्यों हुआ। मुखिया ने फैग्यूला को दोषी पाया। बंजारों के नियम के अनुसार, उसे दल से निष्कासित कर दिया गया। साथ ही उन सौ योद्धाओं को भी, जिन्होंने इस जंग में उसका साथ दिया।

अब वो दल से कटे हुए थे, पूरी तरह अकेले। उन्होंने बंजारों के बुजुर्गों और मुखिया को समझाने की बहुत कोशिश की लेकिन वो उनके किसी भी तर्क या भावना से सहमत नहीं हुए। मुखिया ने ये कहकर अपना फैसला दिया कि–'हमारे लिए किसी भी रिश्ते से ज्यादा महत्त्वपूर्ण, दल की हिफाजत की जिम्मेदारी है।'

फैग्यूला और उसके साथी दल से निकाल दिए गए।

उसके बाद भी वो बरसों तक तकलामकानास के रेगिस्तान में ही रहे। ढूँढ–ढूँढ कर डैरकोसों का खात्मा करते रहे। उन्होंने उस गुस्सैल सरदार को भी एक दिन ख़त्म कर दिया, जिसने पल्वास कबीले के लोगों की हत्या की थी लेकिन उस जंग में सैगन भी काम आ गया। फैग्यूला अपने साथियों के साथ, बरसों तक बंजारों की तरह भटकता रहा। तब तक, जब तक सालन ने उसे एल्गा–गोरस की रचना के लिए नहीं बुलाया।

वो अपने सौ साथियों को रेगिस्तान में छोड़कर माथेल्टन की गुफा में आ गया। वहाँ वो उस रहस्यमयी किताब की रचना करने वाले समूह के साथ रहा और काम ख़त्म होने पर वापस तकलामकानास लौट गया। वो उस जंग में भी शामिल हुआ, जिसमें एल्गा–गोरस गायब हुई थी। उसके बाद वो अपने साथियों के पास चला गया। बरसों बाद वो तब वापस लौटा, जब खोखले पत्थरों से सन्देश मिला कि उस रहस्यमयी किताब को महसूस किया गया है।

अपने साथियों को वहीं छोड़कर, वो तब से यहीं था। उसे अपने बहादुर योद्धाओं को लेकर आना था। उस निर्णायक जंग के लिए, जो अपना मुँह कभी छिपा रही थी और कभी ख़ौफनाक तरीके से खोल रही थी।'

अपनी बात पूरी करके सालन ने एक बार संथाल के तीनों बेटों की तरफ़ देखा। वो साँस रोके एक–एक शब्द को सुन रहे थे।

'फैग्यूला भीतर से बहुत टूटा हुआ है। किसी बंजारे के लिए सबसे बड़ी सज़ा यही होती है कि उसका दल, उसे उसकी किस्मत के भरोसे छोड़ दे। वो हर दिन इस उम्मीद के साथ जीता है कि शायद कभी, वो उन्हें ये समझा पाएगा, उसने जो किया वो सही था, या कम से कम उसके लिए सही था, उसकी दोस्ती के लिए सही था।' सालन ने आहिस्ता से कहा। उनकी आवाज़ में फैग्यूला के लिए सहानुभूति साफ झलक रही थी।

'...और अटेरियन का क्या हुआ?' सलार की आँखों में प्रश्नवाचक चिन्ह था।

'अटेरियन पानी की कमी और पड़ोसी कबीलों से जंग में ख़त्म हो गए। उनके लिए किसी को तलवार उठाने की जरूरत नहीं पड़ी।'

'...क्या वो लोग फैग्यूला को कभी नहीं अपनाएँगे?' जरूस ने उसकी आँखों में झाँका।

'बंजारे अपने नियमों के बहुत पक्के होते हैं। वो मर सकते हैं लेकिन समूह के फ़ैसले के ख़िलाफ़ कभी नहीं जा सकते।'

पत्थरों को काटते–काटते, मुझे कई बार ऐसा लगता है जैसे अस्तित्त्व भी कोई संगतराश हो। वो घटनाओं की लौह–छेनी से, जिन्दगी को काटता है। लाजिमी है, जो कटेगा उसे पीड़ा से गुज़रना होगा चाहे वो पत्थर हो या फिर

ज़िन्दगी लेकिन जिस तरह कोई पत्थर कभी ये नहीं जान सकता कि संगतराश ने उसके लिए क्या आकृति सोची हुई है, उसी तरह कोई ज़िन्दगी कभी ये नहीं जान पाती कि वक़्त के हाथ में थमी, घटनाओं की छेनी, उसे किस आकार में ढालना चाहती है। वो चोटों को देखकर आसानी से अंदाज़ा नहीं लगा सकते कि उनके भीतर से किस तरह की देह निकलकर सामने आ रही है। मेरी माँ अक्सर कहा करती–**'अस्तित्त्व को जिन मूर्तियों की षरूरत होती है, वो उन्हें वक़्त के पत्थरों के भीतर छुपा देता है और तब तक उनके उघड़ने की प्रतीक्षा करता है, जब तक एकदम सही व्यक्ति, छेनी–हथौड़ा लेकर नहीं आ जाता।'**

वक़्त के फैसले, खुद पत्थर की तरह सख़्त होते हैं। वैसे ही सख़्त, जैसा फैसला फैग्यूला के दल ने उसके खिलाफ लिया। मुझे अभी मोम के वो चौखटे पत्थर पर खोदने हैं, जिन पर उन बन्दियों का ज़िक्र है, जिन पर जैल्डॉन की सबसे ताकतवर फ़ौज ने हमला किया। साथ ही वो **पंगु–शाप** भी, जो इसलिए इस्तेमाल किया गया ताकि संथाल के बेटे, सफर से वापस न लौट सकें। मेरी छेनी को अभी पहाडी की उस चोटी से भी गुज़रना है, जहाँ से वो तिलिस्मी–जत्था रवाना हुआ, जिसके कन्धें पर उन ज़िन्दगियों की जिम्मेदारी थी, जो सारी दुनिया की जिन्दगियों को बचाना चाहते थे।

पुराना षड्यन्त्र

अध्याय सत्रह

शाम को सालन का बुलावा आया। ये जिल्चोकाट था, जिसने उन्हें तैयार होने के लिए कहा। आने के बाद, पहली बार उन्होंने जिल्चोकाट को यहाँ देखा था। उसका पेड़ जैसा जिस्म पहले से ज्यादा सूखा और मुरझाया हुआ लग रहा था। पूरे बदन पर धूल जमी हुई थी जैसे लम्बी यात्रा करके वापस आ रहा हो। वो जिल्चोकाट के साथ बाहर निकले ही थे, तभी कास्टन ब्रूड भी आता दिख गया। पाँचों एक साथ, उन सीढ़ियों पर चढ़ने लगे, जो उस बड़े कमरे से होकर ऊपर जा रही थीं।

ऊपर एक चौडे गलियारे से होते हुए वो एक कक्ष के विशाल दरवाज़े तक पहुँचे। जिल्चोकाट ने अपनी पत्ते जैसी हथेली से दरवाज़े पर दस्तक दी। भीतर से किसी के चलकर आने की आवाज़ आई और एक चरमराहट के साथ दरवाजा खुल गया। ये वुन्टनब्रोंस था, वो अब पूरी तरह ठीक लग रहा था। न तो जिस्म पर कहीं कोई जख़्म का निशान था और न ही चेहरे पर कोई कमज़ोरी नज़र आ रही थी।

उसने मुस्कराते हुए स्वागत किया–'कैसे हो? सब लोग तुम्हारा ही इंतज़ार कर रहे हैं।'

उसकी मुस्कराहट का जवाब मुस्कराहट से देकर पाँचों भीतर आ गए। अन्दर सालन के साथ कैफ़ुआन पस्तर, स्कीनिया ब्राज, हूनास्पॉटी और लोफ़ा भी था। कमरे का फ़र्श बेहद पुराना लग रहा था। दीवारों पर कहीं–कहीं टूटन दिख रही थी। छत में एक बडा फानूस लटक रहा था। दीवारों के साथ, लकड़ी की बनी अलमारियाँ लगी हुई थीं, जिनमें कुछ भरा हुआ था, मगर वो क्या था, ये पता नहीं चल रहा था।

'स्वागत है तुम्हारा, हम ये जानना चाहते हैं, तुम्हें यहाँ कोई तवफलीफ तो नहीं हुई? पिछला समय इतना मुश्किलों और जिम्मेदारियों से भरा हुआ रहा कि हम तुम लोगों से इतना भी नहीं पूछ सके।' सालन ने गम्भीरता से कहा।

'नहीं, सालन...हमारा वक्त बख़ूबी कटा और इस पहाड़ी से ज़्यादा ख़ूबसूरत, रहस्यमयी, शान्त और दिलवफश जगह हमने पहले कभी नहीं देखी।' मकास ने लोफ़ा की तरफ़ देखते हुए कहा, जो पकी मिट्टी के एक चौकोर टुकड़े पर कुछ लिख रहा था।

'वक्त आ गया है, अंतिम फैसले लेने का और उन पर अमल करने का। कल तक महासभा के सभी सदस्य यहाँ आने शुरू हो जाएँगे। दुष्ट जैल्डॉन की ताक़त इतनी अधिक है, कोई भी अकेले उसका सामना नहीं कर सकता और कोढ़ में खाज ये है कि शातिर लैनीगल भी उसके साथ है। बिल्चुओं से मिली ख़बरें बेहद चिन्ताजनक हैं। हमने योजना तैयार कर ली है, क्या तुम अपने सफ़र के लिए तैयार हो?'

'हम हमेशा तैयार हैं सालन...' जरूस ने सालन की तरफ़ देखते हुए कहा।

लोफ़ा अब भी कुछ लिखने में व्यस्त था, वो बार–बार सबके चेहरों की तरफ़ देख लेता और फिर कुछ लिखने लगता।

मकास ने थोड़े उलझे हुए स्वर में कहा, 'मगर...हम फैग्यूला और रैक्टिकस के साथ क्यों नहीं गए?'

तभी लोफ़ा बिना इजाज़त लिए कमरे से बाहर चला गया। इस तरह उसका बाहर जाना, तीनों को थोड़ा अजीब लगा लेकिन मसअला इतना गम्भीर था, किसी ने उस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया।

तभी दरवाज़ा हल्के से चरमराया और खुल गया। लोफ़ा भीतर आया, उसने सम्मान के साथ सालन की तरफ़ देखा और ऐसे खड़ा हो गया, जैसे कोई बहुत ज़रूरी सूचना लेकर आया हो।

'बिल्चुओं का सरदार सैल्गासीड आपसे मुलाक़ात करने का इच्छुक है। उसका कहना है, कोई बहुत ज़रूरी और अहम सूचना है, जिसे लेकर वो खुद, अपने बीस साथियों के साथ, आपके सामने हाज़िर हुआ है।' लोफ़ा ने ऐसे झुकते हुए कहा

जैसे अपने दिल का पूरा सम्मान अपने शब्दों में उडेल देना चाहता हो।

सालन ने उसकी तरफ देखा और कहा, 'उसे फौरन ऊपर लेकर आओ, जब तक वो हमारे साथ है, तब किसी को भी न तो ऊपर आने की इजाज़त देना और न ही हमसे मिलने की। इस काम को तुम खुद देखोगे लोफा! और हाँ, उसके बाकी साथियों को मेहमानघर में ले जाओ'

सालन की बात सुनकर, वो तेजी से वहाँ से चला गया। कमरे में ऐसा सन्नाटा छा गया जैसे किसी ने सारी आवाजें, चूसकर बाहर निकाल दी हों।

थोडे से इंतजार के बाद, लोफा कमरे में आया और किसी को भीतर आने का इशारा किया। ये सैल्गासीड था, बिल्चुओं का सरदार। उसके भीतर आते ही, लोफा बाहर निकल गया और फौरन नीचे चला गया। जाते–जाते वो दरवाज़े को भिडाकर जाना नहीं भूला।

'खबर बेहद खतरनाक, हैरतअंगेज और भयानक है सालन...' उसकी मिमियाती हुई–सी आवाज़ में थरथराहट साफ महसूस हो रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे दहशत और रोमांच उसके जिस्म से गोंद में भीगे कपडे की तरह चिपक गए हों।

'हम्म...' सालन ने उसकी बात पर केवल हुँकारा भरा।

'जो कुछ मैं बताने जा रहा हूँ, वो इससे पहले कभी नहीं हुआ और शायद आगे भी कभी नहीं होगा। वो इतना खुफिया, खतरनाक, दहशतनाक और चिन्तित करने वाला है, मुझे खुद आपके पास ये खबर लेकर आना पड़ा।'

उसने इस तरह से बाकी लोगों की तरफ़ देखा जैसे कहना चाह रहा हो कि अगर ये सब यहाँ से चले जाएँ तो अच्छा है लेकिन सालन ने किसी को जाने के लिए नहीं कहा।

'तुम सबके सामने, अपने मन की बात, अपनी जानकारियाँ और वो हर रहस्य रख सकते हो, जिसे हमें जानना चाहिए।' एक पल के लिए वो थोड़ा हिचकिचाया लेकिन फिर उसके चेहरे पर दृढ़ता छा गई।

'एक सबसे ज़रूरी सूचना ये है कि आपके दो साथी, जो आपने हूजा और तकलामकानास भेजे थे, वो अब उसी दुष्ट के **बन्दी** हैं। उन्हें किसी खुफिया जगह पर रखा गया है। बैठक के दिन, उन्हें खत्म कर दिया जाएगा।' सैल्गासीड ने ये खबर देकर, सबको उछलने के लिए मजबूर कर दिया।

'क...क्या?' वुन्टनव्रॉस और हूनास्पॉटी का मुँह जैसे खुला का खुला रह गया।

'क्या...क्या कहा तुमने? रैक्टिकस और फ़ैग्यूला बन्दी बना लिए गए हैं?' सालन के चेहरे पर छाई चिन्ता अब किसी काली परछाई की तरह साफ़ दिख रही थी।

'वो बहुत बहादुरी से लडे, उन्होंने **फ़्लडीसोल्स** को लगभग हरा ही दिया था लेकिन उन पर धेखे से वार किया गया। अब उन्हें यातनाएँ दी जा रही हैं।' सैल्गासीड की आवाज़ में उनके लिए दुख था।

'*फ़्लडीसोल्स?*' सबके मुँह से जैसे एक साथ निकला।

'हाँ, दुष्ट जैल्डॉन की खुफिया फौज...उनकी ताकतों के बारे में कोई नहीं जानता। बस इतना पता लग सका है कि वो *जल-विद्या* के ज्ञाता हैं। जल की ताकतों पर उन्होंने पूरी तरह काबू किया हुआ है। उनकी फौज किसी चलते–फिरते समन्दर की तरह है। वो बरसों से उसके लिए काम कर रहे हैं। सालों तक उसके विशाल कछुए को भी उन्होंने ज़मीन पर पैर नहीं रखने दिया। वो बस जल में ही तैरता रहा, जैल्डान को अपनी पीठ पर लिए हुए।'

हर कोई ऐसे खड़ा हुआ था जैसे काठ मार गया हो। सालन आहिस्ता–आहिस्ता अपने दाहिने हाथ की उँगलियाँ चटखा रहे थे।

'हूजा प्रान्त की पानी से भरी गुफाओं में उसने अपना अस्थाई ठिकाना बनाया है। जिस गुफा में दुनिया भर से आए सरदारों और प्रतिनिधियों की बैठक होनी है, वो हूजा की सबसे ऊँची पहाड़ी की चोटी पर है। चार दिन बाद सभा होगी। सभा, आज से तीन दिन पहले होनी थी लेकिन उसके विशाल कछुए के पाँव में, सेही का लम्बा काँटा धँस जाने की वजह से देरी हुई।'

वो साँस लेने के लिए रुका और फिर बोलने लगा, 'हूजा तक जाने के लिए तकलामकानास का बीहड़ रेगिस्तान पार करना होगा। सरदारों के पहुँच जाने के बाद, कोई भी उस रेगिस्तान को पार नहीं कर पाएगा, ऐसा अजीबोग़रीब इंतज़ाम किया गया है। पूरे एक दिन के लिए हूजा की वो पहाड़ी, बाहरी दुनिया से पूरी तरह कट जाएगी। वो वार्ता करने का बहाना करके सरदारों के सामने आएगा लेकिन एल्गा–गोरस की ताक़त से पल भर में सबको ज़ेहनी तौर पर काबू कर

लेगा। किसी को कुछ समझाने, बताने या जंग के लिए तैयार करने की जरूरत नहीं रहेगी। वहाँ से लौटने के बाद, हर सरदार अपनी फौज लेकर, उसके लिए कूच करेगा।'

हर किसी ने देखा, सैल्गासीड जैसे–जैसे अपनी बात पूरी करता जा रहा था, वैसे–वैसे सालन के माथे पर चिन्ता और बेचैनी की लकीरें बढ़ती जा रही थीं।

'शातिर लैनीगल ने यहाँ तक हमारा पीछा किया है, उसे ये साफ़ है कि हम उसकी ख़बरें चुराकर आपको दे रहे हैं। थोरोज की पहाडी के परिक्षेत्रा में आने के बाद, न तो वो हमें देख सकता था और न ही पहाडी को लेकिन हमें पूरा भरोसा है, वो अब भी इसी इलावेफ में हमें ढूँढ रहा होगा।' सैल्गासीड की आवाज़ में घबराहट अब साफ़ नजर आ रही थी।

'हमें यहाँ से हिफ़ाजत से निकालने का इंतज़ाम आपको करना होगा। जिन प्राणियों, प्रजातियों और सरदारों को वो अपने साथ मिलाने में कामयाब हो गया है, उनकी तादाद इतनी ज्यादा है कि वो किसी भी जंग का नक़्शा बदल सकते हैं। जिन लोगों को बैठक में बुलाया गया है, वो दुनिया के सबसे ताकतवर प्राणियों और प्रजातियों का प्रतिनिध्वि करते हैं। अगर वो भी उसके साथ हो गए तो यकीनन उसे दुनिया की कोई ताकत हरा नहीं सकेगी।' पूरे कमरे में अब बेचैनी और अकुलाहट का वातावरण हो गया था।

'तुमने सही कहा था सैल्गा! तुम्हारी जानकारियाँ वाकई खुफिया, खतरनाक, दहशतनाक और चिन्तित करने वाली हैं।' सालन के बच्चे जैसे होंठ आहिस्ता से हिले, 'क्या तुम्हारे पास इसमें जोडने के लिए कुछ और है या फिर तुम अपनी बात पूरी कर चुके?'

'हमारे पास बस इतनी ही ख़बरें थीं, बस एक ख़बर और है, जो आपको कल तक मिल जाएगी। जान का खतरा बहुत बढ़ गया है। हमने अपने लोग वहाँ से हटा लिए हैं, सिवाय एक बिल्चू को छोड़कर, जो हमारा सबसे होशियार, हुनरमन्द और शातिर भेदिया है। वो उस सेना की जानकारी लेने के लिए छुपा हुआ है, जो दुष्ट जैल्डॉन ने अब तक इकट्ठा कर ली है। जैसे ही उसे ये पता चलेगा, उसकी फ़ौज में फिलहाल कौन–कौन प्रजातियाँ और प्राणी शामिल हो चुके हैं, वो फ़ौरन वापस लौट आएगा।'

एक पल के लिए उसने ऐसे देखा, जैसे अपना पूरा पिटारा ख़ाली करने के बाद मदारी अपनी कमाई की तरफ देखता है। फिर हिचकते हुए कहा, 'मे...मेरे ख़याल से हमारा *समझौता* अब ख़त्म होता है और ये *मेहनताना* लेने का वक़्त है। आईने... खूबसूरत और विशाल आईने! जिनके लिए हमसे वादा किया गया था।' उसकी आवाज़ से अब लालच ऐसे टपक रहा था जैसे किसी नवजात शिशु के गीले होंठों से लार टपक कर, उसके गले में बँधी राल–गद्दी को तर कर रही हो।

सालन ने उसकी तरफ़ देखा, 'तुम्हारी मेहनत और उस ख़तरे की तुम्हें पूरी क़ीमत दी जाएगी सैल्गा! जो तुमने हमारे लिए उठाया है।' सालन की बात सुनकर उसकी आँखें ऐसे चमकने लगीं जैसे उनमें सूरज उग आए हों। वो उतावलेपन से चारों तरफ़ देख रहा था जैसे कहना चाह रहा हो कि–'आईने तो कहीं भी दिखाई नहीं दे रहे।'

सालन ने चौपाई पर रखी एक डिब्बी खोली और उसमें से एक अजीब–सा काला कीडा निकलकर मेज पर तेज़ी से दौड़ने लगा। उन्होंने उसकी तरफ़ देखा–'ज़्यादा भागो मत **बैडल**, तुम्हारी तीन टाँगों में पहले ही चोट है। जाओ...लोफ़ा से कहो, जितना इनसे वादा किया गया था, उससे दस आईने अधिक देकर, सबको सम्मान और सुरक्षा के साथ, विदा किया जाए' ऐसा लगा जैसे कीड़े ने पूरी बात समझ ली हो। वो झट से नीचे कूदा और मकड़ी की तरह दौड़ता हुआ, दरवाज़े की झिर्री में ग़ायब हो गया।

पाँचों ऐसे ख़ामोश थे जैसे इस बात का इंतज़ार कर रहे हों कि अब पहले कौन बोलेगा–'तो वो वक़्त आ गया है, जब उसने सीधे हमला शुरू कर दिया।' सालन की आवाज़ में चिन्ता के रेशे साफ़ महसूस हो रहे थे।

'हमें उन दोनों को छुड़ाना होगा, सैल्गासीड ने बताया, उन्हें यातनाएँ दी जा रही हैं। उनकी बेपनाह ताक़त के होते हुए भी, कैसे वो उन्हें क़ैद कर पाया और ये *फ़्लडीसोल्स!* ये क्या हैं? मैंने अपने जीवन में इनके बारे में नहीं सुना, न ही जल–विद्या के बारे में।' क़ैफ़ुआन पस्तर ने एक क़दम आगे बढ़ते हुए कहा।

'हमने सुना भी है...और जल–विद्या की ताक़तों की भीषण तबाही भी देखी है, एक बार नहीं, कई बार।' सालन की आँखें जैसे दूर कहीं खो गई थीं। ऐसा लग रहा था जैसे वो सदियों पुरानी किसी दास्तान को याद करने की कोशिश कर रहे हों।

'क्या ये फ़्लडीसोल इतने ताक़तवर हैं कि फ़ैग्यूला और रैक्टिकस जैसे अद्भुत लोगों को भी बन्दी बना सकें?' जिल्वोकाट के हिलने से ऐसी आवाज़ हुई जैसे किसी ने किसी झब्बेदार पेड़ को हिला दिया हो।

'शायद उससे भी कहीं ज्यादा ताकतवर...हमने कई बार उस खून–खराबे और तबाही को नजदीक से देखा है, जो इन्होंने सदियों पहले पैफलाई थी।' सालन की बच्चे जैसी आँखें अब भी छत पर अटकी थीं।

'ये वक्त इस बात का नहीं है सालन...कि दुश्मन कितना ताकतवर है। ये वक़्त है फैग्यूला और रैक्टिकस को वहाँ से निकालने और तैयारी करने का।' मकास की आवाज में क्रोध और जोश दोनों तैर रहे थे।

'हाँ, हमें उन दोनों को छुड़ाना ही होगा...' जरूस ने उनकी तरफ देखते हुए कहा।

'...वो अपनी बैठक से पहले उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा और उससे पहले हमारे हाथ उसकी गर्दन पर होंगे।' पहली बार सबने सालन की आँखों में सख्ती और चेहरे पर एक अजीब–सा आक्रोश देखा था, जिसमें *तेवर* कम, *निश्चय* अधिक झलक रहा था।

दरवाजे पर हुई आहट ने सबका ध्यान उस तरफ खींचा। लोफा था। 'महान सालन, जंगली रूहों ने खबर दी है, एक बूढ़ा, पहाड़ी के चारों तरफ घूमता हुआ देखा गया है। उन्होंने उसे दूर से देखा, एक मैदानी आत्मा ने उसे पहचाना...उसने बताया है, वो शातिर लैनीगल है। उसने ये भी बताया कि उसकी मौजूदगी खतरनाक है।'

'हम्म...इसका मतलब सैल्गासीड का पीछा करते–करते वो यहाँ तक आ चुका है। ये अलग बात है कि उसे थोरोज की पहाड़ी दिखाई नही दे रही होगी क्योंकि ये पूरा परिक्षेत्रा अदश्श्य है लेकिन वो इतना शातिर तो है कि उसने यहाँ किसी विशाल, अदश्श्य चीज की मौजूदगी महूसस कर ली होगी और उन बिल्चुओं को भी सूँघ लिया होगा, जिन्हे सुरक्षा के साथ विदा किया गया है' सालन ने अपना चोगा समेटते हुए कहा।

उनमें से किसी को यह पता नहीं चल सका कि दरवाजे की झिर्री से होकर, बैडल नाम का वो अजीब कीड़ा कब भीतर आ गया था।

'अभी हमें अपनी तरफ से कोई हमला नहीं करना चाहिए। उसे महसूस तो हो कि यहाँ हम हैं लेकिन वो इसे जान न सके। वो जैसे ही यहाँ से वापस लौटे, हमें उसका पीछा कराना चाहिए ताकि उस जगह का पता लग सके, जहाँ दुष्ट जैल्डॉन छिपा हुआ है। क्योंकि ऐसा हो नहीं सकता कि वो उससे अब मिले न, जबकि सारी दुनिया से आए सरदारों की बैठक इतनी नजदीक आती जा रही है।' स्कीनिया ब्राज का बिना हड्डी वाला, बालों से भरा हुआ जिस्म जुम्बिश लेकर आगे सरका।

'तुम सही कहते हो स्कीनिया! बैडल...तुम उस बूढ़े का पीछा करो, जो अदश्श्य पहाड़ी के आसपास मँडरा रहा है और उसकी हर खबर भेजो और हाँ, ये भी ख़याल रखना, वो बहुत ख़तरनाक है।' सालन ने कीड़े की तरफ़ देखते हुए कहा, जो डिबिया के पास बैठा हुआ, अपने तेज़ पंजों से मुँह साफ़ कर रहा था।

कीड़े ने 'चीं–चीं' की बहुत बारीक–सी आवाज़ निकाली और अपने अगले पंजे ऐसे उठाए जैसे सीना फुलाकर चुनौती दे रहा हो कि–'मुझसे कोई नहीं जीत सकता।' सालन के होंठ मुस्कराए, वो तेजी से दौड़ता हुआ गायब हो गया।

'हमें जल्दबाज़ी नहीं करनी है। फ़्लडीसोल उन दोनों को ख़त्म कर सकते थे, तब भी उन्होंने केवल बन्दी बनाया। वो जानता है, हम उन्हें छुड़ाने की जल्दबाज़ी भरी कोशिश ज़रूर करेंगे और कहीं ग़लती करेंगे। हमें ठण्डे दिमाग़ से काम लेना होगा। हर कदम बहुत सोच–समझकर उठाना होगा। अभी तो थोरोज़ का मशविरा आना भी बाक़ी है। हमें भी उनकी जान की उतनी ही चिन्ता है, जितनी तुम सभी को लेकिन हड़बड़ाहट बहुत सारे कामों को बिगाड़ सकती है। रात होने का इंतज़ार करो, उसके बाद हम अपना क़दम उठाएँगे।' सालन की बात पर उन सबके चेहरों पर ऐसे भाव उभरे जैसे उनसे सहमत तो हों, पर हिचकिचाहट के साथ।

रात को सब बहुत जल्दी बैठक में पहुँच गए। कुछ पलों बाद पास के गलियारे में किसी की पदचाप सुनाई दी। वो थोरोज़ थे। उनका कछुए जैसा मुँह पीला पड़ा हुआ था। पीठ पर लिपटे भारी कपड़े ने, उस जगह को ढँक रखा था, जहाँ खोल उतारने की वजह से बड़ा ज़ख्म हो गया था। लोफ़ा उनके साथ–साथ था।

थोरोज़ के सम्मान में सब खड़े हो गए। उन्होंने बैठने का इशारा करते हुए अपनी जगह ले ली। एक पल तक ख़ामोश रहने के बाद, उन्होंने लम्बी मेज़ के दूसरे सिरे पर बैठे कास्टन ब्रूड तक, सबको देखा और बोले–'साथियो...' उनकी आवाज़ ऐसी लग रही थी जैसे खरखराहट और थरथराहट दोनों ने शब्दों की पीठ पर क़ब्ज़ा जमा रखा हो–'...जैसा कि आपको मालूम है, हमारे दो साथी बन्दी बना लिए गए हैं। ख़बर ये भी मिली कि उन्हें यातनाएँ दी जा रही हैं और उनकी जान को ख़तरा है। सबकी उदासी और चिन्ता इस बात को साफ़ कर रही है कि आप अपने साथियों के लिए कितने फ़िक्रमन्द हैं।'

बोलते–बोलते उन्हें खाँसी का ध्सका–सा लगा, लोफ़ा ने तेज़ी से आगे बढ़कर, पानी का छोटा पात्रा उनके हाथों में

थमा दिया। एक घूँट पानी पीकर, वो थोड़े सामान्य हुए और फिर बोलना शुरू किया, '...तो हम कह रहे थे, आप सबकी उदासी और चिन्ता इस बात को साफ कर रही है कि आप अपने साथियों के लिए कितने फ़िक्रमन्द हैं।' सब खामोशी के साथ थोरोज की बात सुन रहे थे।

सालन ने कहना शुरू किया, 'डिग्गीडस्ट बौनों को बुलाया गया है। वो जमीन खोदकर, सुरंगें बनाकर निकल जाने में माहिर है। जैसा कि आप जानते हैं कि दुनिया में केवल छब्बीस डिग्गीडस्ट बौने हैं, पायथोफैण्ट उन्हें लेकर कुछ देर में यहाँ पहुँचने वाला होगा। आधी रात के बाद तक, हूजा की उस पहाड़ी तक हम पहुँच जाएँगे, जहाँ उन्हें कैद किया गया है।'

एक बार फिर से उन्होंने बोलना प्रारम्भ किया, 'डिग्गीडस्ट पहाडी में सुरंग खोदने का काम करेंगे और कैटाकोटस तब तक ऊपर पहुँच जाएगा।' उस छलावे का जिक्र सुनकर एक बार को तीनों चौंके, ये हैरतअंगेज था कि वो एक छलावे के साथ जंग पर जा रहे थे।

'सुरंग से होकर, स्कीनिया और कैफुआन ऊपर जाएँगे। इनकी मदद के लिए जिल्चोकाट और कास्टन सुरंग के मुहाने पर खड़े होंगे। ये सुरंग ठीक उस जगह निकलेगी, जहाँ उन्हें कैद किया गया है। जब तक कोई जागेगा या किसी को पता चलेगा, वो सुरंग से होकर नीचे आ जाएँगे और पायथोफैण्ट उन्हें लेकर पलक झपकते उड़ जाएगा।' सालन ने कास्टन ब्रूड की तरफ देखा।

'क्या आपको लगता है कि उसने सुरक्षा...' वुन्टनब्रॉस अपनी बात पूरी कर पाता, इससे पहले ही सालन ने उसकी बात काट दी।

'हमें मालूम है तुम क्या कहना चाहते हो वुन्टन...उसने सुरक्षा के पूरे इंतजाम किए होंगे लेकिन हमने हर चीज को परख–जाँच लिया है। उनकी कैद की सही जगह पता लगाने का काम गम्पूग्रास को सौंपा गया है। तुम जानते हो स्ट्रासोल्स की सूँघने की ताकत कितनी कमाल की होती है। जैसे ही उसे पता चलेगा कि उन्हें उस गुफा में किस सटीक जगह पर रखा गया है, वो लौट आएगा।'

सालन की बात पूरी होते ही थोरोज़ ने कहना शुरू किया, 'अगर उन्हें पता चल गया और उन्होंने हमला किया, तो कैटाकोटस उनका मुकाबला करेगा। बचाव करने वाला दल, लड़ाई में नहीं उलझेगा। वो केवल बन्दियों को छुड़ाने पर अपना ध्यान लगाएँगे। जैल्डॉन उस पहाड़ी पर नहीं ठहरता, वो किसी खुफ़िया जगह पर ठिकाना बनाए हुए है।

'लेकिन कैटाकोटस अकेला कैसे सबका मुकाबला कर पाएगा?' हूनास्पॉटी की आवाज़ में सवालों के साए थे।

उसकी बात का कोई जवाब मिल पाता, उससे पहले ही जरूस की आवाज़ ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींच लिया। 'कैटाकोटस उनका मुकाबला कैसे कर पाएगा, इस बात से भी ज़्यादा ज़रूरी बात ये है कि हमें इस जंग में शामिल क्यों नहीं किया गया। क्या हमें इस लायक़ नहीं समझा गया कि हम दुश्मन के इलाक़े में जाकर अपने साथियों को छुड़ा सकें या फिर हम यहाँ केवल लोगों को मरते हुए, बन्दी बनाए जाते हुए देखने के लिए आए हुए हैं?' उसकी आवाज़ में सख़्त नाराज़गी झलक रही थी।

'तुम तीनों की जान, किसी और की जान से ज़्यादा क़ीमती हो गई है नौजवान...और इस बात को तुम्हें समझने में कुछ वक़्त लगेगा।' थोरोज़ ने उसकी तरफ़ देखते हुए कहा।

'अब हमारे सब्र का बाँध टूट रहा है महानुभावो...आप हमें यहाँ ऐसे नहीं रख सकते जैसे किसी शिशु को पालने में छुपा दिया हो। हम योद्धा हैं, कोई कायर नहीं, जो किसी के डर से यहाँ छुपकर बैठे हैं।' मकास की आवाज़ में तेज़ी थी।

थोरोज़ के कछुए जैसे मुँह पर हल्की पीड़ा के भाव उभरे, जो शायद उस ज़ख़्म की वजह से था, जो अभी भरा नहीं था। 'हमारे दो साथी केवल इसलिए बन्दी बनाए गए हैं ताकि उन्हें चारे के रूप में इस्तेमाल किया जा सके, तुम्हें हासिल करने के लिए। केवल इसी वजह से हमने तुम्हें वहाँ न भेजने का फ़ैसला किया, क्योंकि वो भी यही चाहता है।'

'तुम्हारे लिए एक दुखद सूचना है, जो हम तुम्हें नहीं देना चाहते थे।' थोरोज़ ने अपनी जगह पर पहलू बदलते हुए कहा। उनके चेहरे पर ऐसे भाव उभरे, जैसे किसी अनिष्ट की आशंका ने भीतर घर कर लिया हो।

'तुम्हारे पिता...' वो एक पल के लिए रुके और बोले, '...शातिर लैनीगल ने उन्हें लकवाग्रस्त कर दिया है। उन्हें उसकी सच्चाई और उस षड़यन्त्रा का पता चल गया, जो तुम्हारे लिए बुना गया। उन्होंने अपने क़ौल को एक तरफ़ रखते हुए, अपने बेटों को वापस बुलाना चाहा लेकिन उसने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया। इससे पहले वो तुम्हें वापस बुलाने या सारी खबर तुम तक पहुँचाने का कोई रास्ता खोजते, उसने उन्हें *पंगु-शाप* का शिकार बना दिया। अब न तो वो बोल सकते हैं

और न ही हिल सकते हैं। तुम्हारे कबीले के लोग, उनकी देखरेख कर रहे हैं।'

थोरोज़ की बात ख़त्म होते–होते, तीनों की बेचैनी अपने चरम पर पहुँच गई। ऐसा लग रहा था जैसे वो उड़कर संथाल के पास पहुँच जाना चाहते हों। उनके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। लगा जैसे ख़ामोशी, बिस्तर बिछाकर, उनकी जबान के ऊपर लेट गई हो।

'ये ठीक तब हुआ, जब तुमने गीगा–टर्सिया छोड़ा था। हमें ये खबर एक–दो दिन पहले मिली, हम इसलिए तुमसे इसे छिपाए हुए थे, कहीं तुम क्रोध में अपना लक्ष्य न भूल बैठो।' सालन ने उनके चेहरों की तरफ़ देखते हुए कहा।

'लक्ष्य! हमारा लक्ष्य तो खत्म हो चुका सालन...उस शातिर लैनीगल की मौत के अलावा और कोई उद्देश्य नहीं है हमारा। वो हमें शतरंज के मोहरे की तरह इस्तेमाल नहीं कर सकता' मकास का चेहरा लाल होकर तमतमा रहा था। सलार और जरूस के चेहरे पर इस वक्त जैसे कयामत खेल रही थी। वो रह–रह कर अपनी मुटि्ठयाँ भींच रहे थे।

थोरोज़ ने एक बार गहरी नजर से उनकी तरफ देखा। **'जो ये कहते हैं, उनके जीवन का कोई 'अंन्तिम लक्ष्य' है, वो अपने भीतर छुपी, असीम संभावनाओं के अपराधी होते हैं**...नौजवान!' थोरोज़ ने जैसे उनके क्रोध के गर्म तवे पर एकदम 'छुन्न' से पानी डाल दिया।

'उसने हमारे निर्दोष पिता पर अपनी वहशी ताकतों का इस्तेमाल किया है सालन...उसे उसके किए की सज़ा ज़रूर मिलेगी।' सलार की देह का रंग अब और भी गाढ़ा हो गया था। सबको उस सूचना पर दुख था...लेकिन कोई कुछ नहीं बोल रहा था।

'तुम्हारा उद्देश्य कल भी वही था और आज भी वही है।' थोरोज़ की आवाज ने ख़ामोशी के गाल पर चिकोटी काटी। 'उसने पंगु–शाप को उस पानी के साथ *बन्धित* कर दिया है, जिसमें गीलापन न हो। अब तुम्हारे पिता और उसका शाप जुड़वाँ हो गए हैं। वो दोनों अब **जुड़वाँ–शाप** के शिकार हैं। एक शाप तभी टूट सकता है, जब दूसरा टूट जाए।' थोरोज़ की आवाज़ ने सबको चौंकने पर मजबूर कर दिया।

तभी गलियारे में किसी के आने की आहट उभरी। वो ऑथरडस्ट था। उसने अदब के साथ झुककर सभी का अभिवादन किया और बोला, 'महान सालन...सभी डिग्गीडस्ट बौने पहाड़ी पर आ चुके हैं। आपके अगले आदेश का सब बेचैनी से इंतज़ार कर रहे हैं।'

शुक्रिया ऑथरडस्ट, इस समय तुम सबकी बहुत ज़रूरत थी।' सालन ने नम्र आवाज़ में उसका शुक्रिया अदा किया। उसने पूरी नरमी के साथ सालन के शुक्रिया को स्वीकार किया और लोफ़ा उसे लेकर चला गया।

माहौल इतना बोझिल और भारी हो गया था कि असहनीय हो रहा था।

मकास ने सबके चेहरों की तरफ़ देखते हुए कहा, 'हम...आज रात हूजा प्रान्त जाएँगे, हम तीनों। ये हमारा आखिरी फ़ैसला है थोरोज़...या तो हम वहाँ जाएँगे या फिर हम ये जगह छोड़ देंगे। आपको हमारी जान की परवाह है, ये हम भली तरह समझते हैं लेकिन हम गीली मिट्टी के खिलौने नहीं हैं, जिन्हें कोई भी ताक़तवर हाथ मसलकर फेंक देगा। हम शातिर लैनीगल और दुष्ट जैल्डॉन की मौत का फ़रमान लेकर यहाँ से जाएँगे। उन्हें अपने किए का दण्ड अब भुगतना ही होगा।'

सालन और थोरोज़ दोनों के चेहरे पर हिचकिचाहट की नदियाँ बह रही थीं। लग नहीं रहा था, वो उन्हें भेजना चाहते हैं। तीनों भाइयों ने अपना आख़िरी फ़ैसला सुना दिया था। एक–एक करके, सब वहाँ से अपने कमरों में चले गए। इस बीच तीनों में और कोई बात नहीं हुई। ऐसा लग रहा था जैसे बिना कुछ कहे, तीनों एक ही फ़ैसले पर सहमत हैं।

आहिस्ता–आहिस्ता रात बढ़ती जा रही थी। उसके साथ–साथ तीनों की चिन्ता भी, अपने पिता के लिए, उनकी ज़िन्दगी के लिए। आधी रात को वुन्टनब्रॉस ने आकर बताया कि थोरोज़ और सालन ने उन तीनों को भेजने का फ़ैसला किया है लेकिन उनके साथ कैफ़ुआन और स्कीनिया भी जाएँगे। सब कुछ योजना के हिसाब से होगा, कैटाकोटस और जिल्वोकाट ऊपर पहाड़ी पर होंगे, वो उस हमले का मुकाबला करेंगे, जो वैफदियों को छुड़ाने से रोकने के लिए किया जाएगा। कैफ़ुआन, स्कीनिया, मकास, जरूस और सलार बन्दियों को छुड़ाएँगे, डिग्गीडस्ट बौने सुरंग खोदेंगे और पायथोफ़ैण्ट के साथ, लोफ़ा नीचे मौजूद रहेगा।

'इस योजना में थोड़ा फेफर–बदल करने के लिए हम सालन से मिलना चाहेंगे।' जरूस ने कहा।

वुन्टनब्रॉस ने इंकार नहीं किया, चारों सालन के कक्ष तक पहुँचे। मकास का सुझाव था कि इस काम को पूरा करने के लिए, एक दूसरी योजना भी साथ चलनी चाहिए। अगर किसी वजह से पायथोफ़ैण्ट घायल हो गया या कोई भी अड़चन आ

गई तो सब वहीं फँस जाएँगे इसलिए वो एल्फैण्टॉर को साथ लेकर जाना चाहता था।

'हम एल्फैण्टॉर की असीमित ताकतों से खूब परिचित हैं...पिछले तीन हजार सालों से तो हमने भी उसे कहीं नहीं देखा। अगर वो तुम्हारे साथ जाए तो पक्का समझो, इस जंग का नक्शा ही बदल जाएगा, हमें कोई ऐतराज नहीं है नौजवान लेकिन वो कभी किसी जंग में हिस्सा नहीं लेता, न ही कभी युद्ध लड़ता है। वो केवल तुम्हारा 'आवश्यक मददगार' बनकर ही साथ जा सकता है।' सालन ने एल्फैण्टॉर के नाम पर सहमति दे दी।

आधी रात के बाद, किले से एक जत्था बाहर निकला, जिसमें मकास, जरूस, सलार, स्कीनिया ब्राज, जिल्चोकाट, लोफा और डिग्गीडस्ट बौने शामिल थे। किले के बाहर मैदान में आकर, सब कुछ पलों के लिए रुके। वो छलावा अभी तक कहीं नहीं दिखा था। मकास ने सवालिया नजरों से लोफा की तरफ देखा। उसने आहिस्ता से केवल इतना कहा–'आता ही होगा, सब्र करो।'

फिर जंगल की तरफ से एक परछाई आती दिखाई दी। चाँदनी अपने पूरे यौवन पर थी, दूर से उसे देखकर ऐसा लगा जैसे कोई *जिराफ,* चाँदनी में चला आ रहा हो। एक बार वो किसी *घोड़े* की धुँधली–सी आकृति में दिखा और फिर *ऊदबिलाव* की। जैसे–जैसे वो आगे बढ़ता आ रहा था, हर कदम के साथ किसी दूसरे ही रूप में दिखाई देता। फिर वो लम्बी टाँगों वाले *चीते* के रूप में दिखा।

'वो आ गया।' लोफा की फुसफुसाहट ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींचा।

हर कोई दूर से आती उस आकृति के बदलते रूप को गौर से देख रहा था। उनके कुछ दूर आकर वो खड़ा हो गया। इस वक्त वो एक जंगली *खरगोश* के रूप में था।

'आओ...तुम्हारा स्वागत है, कैटाकोटस!' लोफा ने उसकी तरफ देखते हुए कहा। उसकी तरफ से कोई जवाब नहीं आया।

'अब तुम्हें एल्फैण्टॉर को भी पुकार लेना चाहिए।' जरूस ने मकास की तरफ देखते हुए कहा।

उसने अपने कपड़ों के भीतर छिपाकर रखी गई, बारहसिंघे के सींग से बनी, वो बाँसुरी बाहर निकाली, जो उसे ग्लैडीलस हूफ ने सौंपी थी। सोने जैसी रंगत वाले मकास ने, बाँसुरी अपने सुनहरे होठों पर रख ली और उसके होंठ गोलाकार सिकुड़े और अपने प्राणों को एकत्रा कर उसने स्वर फूँक दिया।

कोई ध्वनि बाँसुरी से बाहर नहीं निकली, बस उसे ये महसूस हुआ कि उसकी साँस और बाँसुरी एक–दूसरे के साथ घ ुल गए हैं। फिर उनके चारों तरफ सूखी घास के तिनके और पत्ते बहुत तेज़ी से उड़ने लगे। सूखी घास और पत्तों का एक ऊँचा बगूला उन्हें चारों तरफ से अपने घेरे में लेता जा रहा था। तिनकों की वजह से उन्होने अपनी पलकें बन्द कर लीं। फिर आहिस्ता–आहिस्ता तूफ़ान कम हुआ, उनके सिरों के ऊपर उड़ती पत्तियाँ नीचे आ गईं। जो कुछ उन्होंने देखा, उसे देखकर वो अवाक्, सम्मोहित और चमत्कृत रह गए।

'वो' जो उनके सामने चाँदनी रात में खड़ा था, इतना विशाल था कि उसे देखने के लिए उन्हें अपनी ठुड्डी बहुत ऊपर उठानी पड़ रही थी। एक विशाल एल्फैण्टॉर...जिसका कमर से नीचे का जिस्म, विशाल हाथी का और ऊपर इंसान जैसा था। उसकी शक्तिशाली मांसपेशियाँ और बलिष्ठ कन्धे, दूधिया चाँदनी में दमक रहे थे। हाथी जितने बड़े और विशाल कान और खूबसूरत नौजवान जैसा इंसानी चेहरा। उसकी पीठ पर उगे, दो विशाल पंख, चाँदनी में चमकती चाँदी की तरह दमक रहे थे।

'मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ, नौजवान?' उसके गुलाबी होंठ आहिस्ता से हिले। हर कोई हैरत से उसे देख रहा था।

'तुम्हारा स्वागत है...हमें तुम्हारी सख़्त ज़रूरत है।' मकास ने उसकी तरफ देखते हुए कहा। 'हमें अभी हूजा प्रान्त जाना होगा। अपने साथियों के साथ, उम्मीद है इस सफ़र में तुम्हारा पूरा साथ मिलेगा।'

'ज़रूर...मुझे मालूम है, क्या घटनाएँ घट रही हैं। ये भी मालूम था, तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़ने वाली है, इसलिए आज रात मैं सोया नहीं था। मगर मैं केवल तुम्हारे साथ चल रहा हूँ, मैं किसी भी जंग में हिस्सा नहीं लूँगा।' एल्फ़ैण्टॉर के गुलाबी, इंसानी होंठ आहिस्ता से हिले।

मकास ने एक बार अजीब नज़रों से उसकी तरफ देखा और चुप हो गया। तभी पहाड़ी और जंगल के ऊपर पंखों की तेज़ फड़फड़ाहट गूँजी, ये पायथोफैण्ट था।

लोफा आहिस्ता से ऑथरडस्ट के कान में फुसफुसाया–'किंवदंतियाँ हैं, जब किसी पायथोफैण्ट का जन्म होता है तो

कुछ उल्काएँ उस जगह पर गिरती हैं। उन उल्का–पिण्डों को यदि कोई अपने कब्जे में ले ले, तो जन्म लेने वाला प्राणी, आजीवन उल्का–धरक की जिन्दगी की हिफाजत करता है। लोग कहते हैं इस कोशिश में बहुत से लोग अपने प्राण गँवा चुके हैं। तब, जब जलती हुई उल्काएँ, उनकी खोपड़ियों का मलीदा बनाती हुई ज़मीन पर गिरीं।'

ऑथरडस्ट ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, वो बस चुपचाप घास पर खड़ा रहा। पायथोफैण्ट ने एक हल्की–सी चिंघाड़युक्त आवाज निकाली और उसके वजनी पंजे, वहीं घास के मैदान पर टिक गए। उसके पंखों से बचने के लिए, सब दो–तीन कदम पीछे हट गए।

सालन ने बताया था, कैटाकोटस खुद वहाँ पहुँच जाएगा इसलिए बाकी लोग दो समूहों में बँटकर जाएँगे। पहले समूह में मकास, जरूस, सलार और डिग्गीडस्ट बौने होंगे, जो एल्फैण्टॉर की पीठ पर सवार होकर जाएँगे और दूसरे समूह में जिल्चोकाट, लोफा, ऑथरडस्ट और स्कीनिया बाज होंगे, जिन्हें पायथोफैण्ट लेकर जाएगा।

उस रात, दो प्राणी थोरोज की पहाड़ी से उड़े और तीसरा *जो-था-भी-और-नहीं-भी*, उसके बारे में कोई नहीं जानता कि वो कैसे वहाँ पहुँचा। दोनों समूह उड़ान भर चुके थे। अंधेरी रात में वुफछ जोड़ी पंखों की साँय–साँय के सिवाय और कोई आवाज नहीं आ रही थी लेकिन एक जोड़ी शातिर आँखों ने, उन दोनों प्राणियों को बादलों के बीच से होकर निकलते देख लिया था।

वो शातिर लैनीगल था, जो एकटक उन्हें देख रहा था। वो तब तक उन्हें देखता रहा, जब तक आसमान में उड़ता पायथोफैण्ट और एल्फैण्टॉर नजरों से ओझल नहीं हो गए। वो उस पहाड़ी पर नजर रखे था बूढ़े की आँखों में बेपनाह शातिरपन झलक रहा था। उसने एक सतर्क निगाह अपने चारों तरफ डाली और फिर ओझल हो गया। उसे ये पता नहीं चल सका कि उसके साथ–साथ वो कीड़ा भी ओझल हो गया था, जो उसकी निगरानी कर रहा था। अब वहाँ केवल सन्नाटा था।

वैसे सन्नाटा, मुझसे हमेशा नाराज़ रहता है। कैल्टिकस की इन गुफाओं में, जब भी वो अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता है, मेरी हथौड़ी और छेनी की चोट, उसकी शान में गुस्ताख़ी कर जाती है। मगर ये एकदम कुदरती बेइज़्ज़ती है। इसकी वजह सन्नाटे से टकराव नहीं, इस अस्तित्त्व का बहाव है। वैसा ही बहाव, जैसे किसी नदी की धरा, *नरसल* के किसी पौधे को अपने बहाव से तिरछा कर दे और वो उसे अपनी शान में गुस्ताख़ी समझ बैठे। दरअसल नदी को नरसल के व्यक्तिगत साम्राज्य से कुछ लेना–देना नहीं है। वो तो बस बह रही है, उस प्रवाह में यदि प्राकृतिक रूप से कुछ और शामिल हो जाता है तो इसमें उसका कोई दोष नहीं है। ऐसे ही, इस गुफा में सन्नाटा भी बार–बार चोटिल होता है, उस हर खट–खट के साथ, जो इन पथरीली दीवारों से निकलती है, जब इस गाथा को, मैं मोम के चौखटों से, पत्थर पर उकेरता हूँ।

वो चौखटे, जिन पर दर्ज़ है शिला–मानवों का वो हमला, जिसने हूजा की पहाड़ियों में लावा पैदा किया। जिन पर ख़ुदी है उन नरसिंहों की जंग, जिनके बारे में ये माना जाता था कि वो कभी किसी की सेना में शामिल होकर, जंग नहीं कर सकते। साथ ही वो ख़ास हिस्सा भी, जिसमें उसको एक अपवित्रा डण्डे से चोट लगी, जो–था–भी–और–नहीं–भी।

ख़ौफ़नाक मुक़ाबला

अध्याय अठारह

पायथोफ़ैण्ट और एल्फ़ैण्टॉर बहुत तेज़ी से उड़ते जा रहे थे। हवा में बला की ठण्डक थी, तलवार की धार की तरह वो उनके चेहरे को चीर देने पर तुली हुई थी। सबने अपने लबादे कसकर अपने जिस्म से लपेट रखे थे। जिल्वोकाट का पत्तेदार जिस्म हवा में ऐसे फड़फड़ा रहा था जैसे कोई पेड़ आँधी में झूम रहा हो। पंखों और हवा की सनसनाहट के सिवाय कोई दूसरी आवाज़ उन्हें सुनाई नहीं दे रही थी।

लोफ़ा ने कुछ बोला लेकिन हवा की साँय–साँय की वजह से किसी को कुछ सुनाई नहीं दिया। कभी–कभी वो पायथोफ़ैण्ट के पंखों के बीच पूरी तरह छिप जाता।

एल्फ़ैण्टॉर आगे–आगे उड़ रहा था। तभी सलार को ऐसा लगा जैसे कोई नीली रोशनी, तेज़ी से एल्फ़ैण्टॉर के पास से गुज़र गई हो। उसने मकास का ध्यान उस तरफ़ खींचने के लिए, उसे कोहनी से इशारा किया। जब तक वो पलटकर वहाँ देखता, तब तक वो नीली रोशनी बहुत दूर जा चुकी थी। एल्फ़ैण्टॉर तूफ़ान की गति से आगे बढ़ता जा रहा था।

काफ़ी देर उड़ने के बाद, नीचे की ज़मीन रेतीली होने लगी। कई बार एल्फ़ैण्टॉर इतना नीचे चला जाता कि उसके विशाल पंखों से उड़ने वाली रेत, उनकी आँखों तक आ जाती। तकलामकानास का रेगिस्तान शुरू हो चुका था। वो रेतीला बीहड़, जिसके बारे में कहा जाता था कि दिन की गरमी में उसे पार करने में, नसों के भीतर बहता ख़ून भी भाप बनकर उड़ जाता है।

फिर आहिस्ता–आहिस्ता रेत की जगह, छोटी–छोटी पहाड़ियों ने ले ली। हूजा प्रान्त की ज़मीन उनका स्वागत कर रही थी। ऑथरडस्ट अपने हाथों से इशारा करता जा रहा था, जिसके हिसाब से एल्फ़ैण्टॉर अपनी दिशा तय कर रहा था। एक ऊँची पहाड़ी के पास जाकर, उनकी रफ़्तार थोड़ी धीमी हो गई। जैसे ही वो उसके पीछे पहुँचे, एक विशाल पहाड़ उनका इंतज़ार कर रहा था।

चाँद, अब आहिस्ता–आहिस्ता बादलों में छुप गया। अँधेरे ने कसमसाकर अपने काले डैने फैला लिए थे। एक चौड़ी और समतल चट्टान के ऊपर मँडराने के बाद, एल्फ़ैण्टॉर ने अपने पैर उस पर टिका लिए। उसने एक बार ज़ोर से अपने पंख फड़फड़ाए और शान्त हो गया। बिना कुछ बोले, उसने अपने हाथ से इशारा किया जैसे कह रहा हो कि अब तुम उतर सकते हो।

सब आहिस्ता से नीचे उतर गए। कुछ पलों बाद, पायथोफ़ैण्ट के पंखों की सनसनाहट गूँजी और वो दूसरी चट्टान पर आकर उतर गया। पूरे पहाड़ पर ख़ामोशी छाई हुई थी। अँधेरा इतना घना था, ऐसा लग रहा था जैसे रोशनी की एक–एक किरण, चुनकर निकाल दी हो। दोनों दल पूरी सतर्कता के साथ आगे बढ़े। चाँद ने बादलों के बीच से अपना मुँह बाहर निकाला, तभी उन्हें अपने पास के एक चौड़े पत्थर पर कैटाकोटस दिखाई दिया। उसका जिस्म इस वक़्त एक पारदर्शी इन्सान जैसा दिख रहा था।

डिग्गीडस्ट बौनों का दल, पहाड़ी के एक किनारे पर खड़ा हो गया। उनमें से एक ने, इशारा किया, 'यही वो जगह है, जो गम्पूग्रास ने बताई थी।'

दूसरे ने वहाँ जाकर, ज़मीन को अपने नाख़ूनों से खुरचा और एक निशान बना दिया। तीनों भाई उनके पास आकर खड़े हो गए। उनमें से एक ने तेज़ी से ज़मीन खोदनी शुरू कर दी। उसने इतनी तेज़ी से वहाँ एक गड्ढा बना दिया, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।

फिर धीरे से दूसरा भी उसमें उतर गया, फिर तीसरा, चौथा और एक–एक करके सारे बौने उस गड्ढे में समाते चले

गए। कैटाकोटस का जिस्म हवा में ऊपर उठना शुरू हो गया। ऐसा लग रहा था जैसे उसके जिस्म में जरा भी वजन न हो। वो किसी हल्के पंख की तरह ऊपर उठता जा रहा था। जिल्चोकाट ने उसे ऐसा करते देखा तो उसने अपने हाथ पहाड़ी पर उगी झाड़ियों और छोटे पेड़ों की तरफ बढ़ाए। ऐसा लगा जैसे झाड़ियों और पेड़ों ने उसे अपनी तरफ खींच लिया हो।

जिल्चोकाट का पत्तेदार जिस्म, एक झाड़ी के बीच से सरसराता हुआ, दूसरी झाड़ी तक पहुँच गया। वो हाथ बढ़ाकर एक पेड़ या झाड़ी को पकड़ता और वो उसे दूसरी झाड़ी या पेड़ तक उछाल देती। उसका जिस्म तेजी के साथ पहाड़ी के ऊपर चढ़ता जा रहा था। झाड़ियों ने उसे अपने ऊपर उठाया हुआ था। कई बार ऐसा लगता जैसे किसी डाल या टहनी ने खुद आगे बढ़कर उसे थाम लिया हो।

कैटाकोटस अब भी किसी हल्के पंख की तरह ऊपर उठता जा रहा था। दोनों बहुत तेजी से पहाड़ी के ऊपरी हिस्से की तरफ बढ़ते जा रहे थे। एल्फैण्टॅर अपने हाथ अपने सीने पर बाँधे हुए शान्त और खामोश खड़ा था। पायथोफैण्ट बीच में कभी–कभी अपनी अजगर के मुँह वाली लम्बी सूँड, जिस्म पर फिरा लेता। लोफा सुरंग के मुहाने के पास मुस्तैद था।

डिग्गीडस्ट बौने बहुत तेज़ी से, पहाड़ी के भीतर सुरंग खोदते जा रहे थे। बहुत सावधनी के साथ, वो सुरंग को गोलाकार खोद रहे थे जैसे किसी सीधी छड़ पर कोई गोल–गोल धगा लपेट रहा हो। थोड़ी–सी जगह होते ही स्कीनिया के हड्डीविहीन जिस्म ने आगे सरकना शुरू किया। मकास, सलार और जरूस उसके पीछे थे।

डिग्गीडस्ट बहुत तजुर्बेकार ढंग से खुदाई कर रहे थे। उनमें से एक आगे खोदता, उसके थकते ही दूसरा उसकी जगह ले लेता और वो कतार में सबसे पीछे जाकर लग जाता। फिर तीसरा खोदता और दूसरा कतार में सबसे पीछे चला जाता। सुरंग तेजी से ऊपर बढ़ती जा रही थी। बीच–बीच में एक बौना, उन्हें दिशा बदलने, दाहिने या बाएँ जाने के इशारे देता चल रहा था। कुछ ही देर में उन्होंने काफ़ी रास्ता तय कर लिया।

हर तरफ पूरी ख़ामोशी और सन्नाटा था। मकास को पता नहीं क्यों ये ख़ामोशी बहुत खटक रही थी। उसका हाथ, बार–बार अपनी बाँसुरी की तरफ चला जाता। ऐसा लग रहा था जैसे कहीं कुछ गड़बड़ है लेकिन अभी तक तो सब ठीक ही चल रहा था। फिर बौनों ने खोदने की दिशा एकदम से बदल दी। अब वो ऊपर न जाकर सामने सीध में खोद रहे थे। कुछ दूर तक सामने खोदने के बाद, वो फिर ऊपर की तरफ खोदने लगे। फिर उनमें से सबसे पहले ने, ऊपर वाली सतह की आख़िरी परत फोड़ी और अपना सिर थोड़ा–सा बाहर निकाला।

ये एक गुफा थी, जिसकी छत मुश्किल से खड़े होने लायक ऊँचाई पर थी। गुफा के फ़र्श पर फैग्यूला फ्लॉट और रैक्टिकस ड्रॉन बेहोश पड़े थे। उसने तेज़ी से बाहर निकलकर पीछे वालों के लिए रास्ता ख़ाली किया। निकलने वाले हर बौने के साथ छेद का मुहाना और बड़ा होता जा रहा था।

फिर एक–एक करके तीनों भाई और स्कीनिया ब्राज भी बाहर आ गए। मकास दौड़कर उनके पास पहुँचा और उसने रैक्टिकस के लम्बे चेहरे को थपथपाया लेकिन उसने कोई हरकत नहीं की। उसने फैग्यूला को हिलाकर देखा लेकिन उसका जिस्म भी पूरी तरह शान्त रहा।

'इन्हें होश में लाना होगा...' सलार ने स्कीनिया की तरफ देखा।

'कैसे?' उसकी आवाज़ में असमंजस था।

'कोई न कोई तरीका तो सोचना पड़ेगा। एक बार फिर से उठाने की कोशिश करो।' जरूस ने सलार की तरफ इशारा किया।

तभी उस बड़े छेद के किनारों पर कुछ हलचल हुई, जिससे होकर वो सब ऊपर गुफा में आए थे। किनारे धीरे–धीरे सिकुड़ते जा रहे थे और छेद बन्द होता जा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कोई मिट्टी के किनारे पकड़कर उन्हें आपस में मिलाने की कोशिश कर रहा हो। जब तक वो कुछ समझ पाते, छेद बन्द होता चला गया और दो पल बाद ही वो पूरी तरह से ख़त्म हो गया। जिस सुरंग से वो ऊपर आए थे, वो ही नीचे जाने का एकमात्रा रास्ता था और वो अब बन्द हो चुका था।

सुरंग के बन्द होने से सब एकदम हड़बड़ा गए। स्कीनिया ब्राज ने किसी जोंक की तरह सरक कर, गुफा का मुहाना खोजने की कोशिश की, मगर वो कहीं नहीं दिखा। सारे डिग्गीडस्ट बौने भी हतप्रभ से एक तरफ खड़े थे। तभी एक तरफ से उन्हें कुछ क़दमों की आहट सुनाई दी। ये एक दूसरी गुफा थी, जो इस गुफा को जोड़ रही थी। उस तरफ से निकलकर आठ–दस शिला–मानव सामने आए। जरूस के हाथ में उसकी तलवार, सलार के हाथ में धनुष और मकास के

दोनों हाथों में दो तेज छुरे कस चुके थे।

उनके पूरे जिस्म ऐसे थे, जैसे छोटी–छोटी चट्टानों को जोडकर बनाए गए हों। सिर से लेकर पैर तक, पत्थर ही पत्थर। उनका कद इंसानी था लेकिन जिस्म की चौडाई दो साधरण इंसानों जितनी थी। उनके हाथों से पिघलता हुआ लावा टपक रहा था। सलार के धनुष से निकले तीर सन्नाते हुए उनके जिस्मों से टकराए लेकिन कुछ नहीं हुआ। सबसे आगे वाले ने अपने हाथों को गोल–गोल घुमाकर, गर्म लावे की एक बडी गेंद–सी बनाई और इतनी तेजी से बौनों की तरफ फेंकी कि उन्हें संभलने का भी मौका नही मिला।

सलार ने अगर ऐन वक्त पर उस बौने को अपनी तरफ न खींच लिया होता, जो लावे के सामने था तो उसका जिस्म उस पत्थर की तरह पिघल गया होता, जिस पर लावा जाकर गिरा था। स्कीनिया ब्राज का बालोंभरा जिस्म ऐसे थरथराया, जैसे किसी बालोंदार भालू ने पानी से भीगे जिस्म को झटका हो और सैंकडों नन्हे–नन्हे बाल, तीर की तेजी से शिला–मानवों की तरफ लपके। पलक झपकते ही बाल, उनके जिस्मों से टकराए लेकिन कुछ नहीं हुआ।

उसने हैरत से उनकी तरफ देखा जैसे ये उम्मीद कर रहा हो कि अब तक तो उनके जिस्म खडिया में तब्दील हो जाने चाहिए थे। स्कीनिया के हमले से क्रोधित होकर, उन्होंने गर्म लावे की गेंदों की बरसात शुरू कर दी।

लावे की धरें और गोले उनकी तरफ ऐसे झपटे जैसे साँप चूहे पर झपटता है। कोई कुछ कर पाता, इससे पहले ही दहकता हुआ गर्म लावा, उनके जिस्मों के इतने करीब पहुँच चुका था कि हड्डियों को भी जलाकर राख कर दे लेकिन इससे पहले गर्म लावा उन्हें छूता...हर गोला, बारीक बर्फ से बने लौंदे में तब्दील हो गया। बर्फ के लौंदे 'ध्प्प–ध्प्प' की आवाज के साथ उनसे टकराए और जमीन पर गिर गए।

सबने चौंककर उस बर्फ की तरफ देखा और फिर उसकी तरफ, जो गुफा के बीचोबीच खडा था...कैटाकोटस मैगनडोला। वो इस वक्त इंसानी आकृति में था, जिसके आरपार देखा जा सकता था। ऐसा लग रहा था जैसे उसका जिस्म हल्के नीले धुएँ और पारदर्शी बर्फ से बना हो। तभी लावे का एक ध्कता गोला जरूस के पास आकर बिखर गया। गर्म लावे के टुकडे उसे पूरे जिस्म पर गिर गए। जहाँ–जहाँ लावा गिरा, वहाँ से मांस और चमडी जलने की दुर्गन्ध के साथ, गाढा धुआँ भी निकलने लगा। वो लडखडाकर वहीं गिर गया लेकिन वो अब भी उठने की कोशिश कर रहा था।

'इनकी आँखों को निशाना बनाओ स्कीनिया...' जरूस ने चीखकर कहा।

स्कीनिया ब्राज का बिना हड्डी वाला लचीला शरीर एक बार फिर थरथराया और उसके घने बालों की एक बाढ तेजी से शिला–मानवों के चेहरे की तरफ लपकी। नन्हे–नन्हे बाल, कई शिला–मानवों की आँखों में धँस गए। उसके बाद जो वुफछ हुआ, उसके बारे में उन तीनों ने केवल सुना भर था।

उन शिला–मानवों के जिस्म 'कट–कट' की आवाज के साथ, खडिया में तब्दील होने लगे, चेहरे से लेकर गर्दन तक और फिर छाती तक। कुछ ही पलों में उनके पूरे जिस्म खड़िया के बुत में बदल गए। वो अब किसी मूर्ति की तरह निष्प्राण खड़े थे। उनकी बगल में खडे एक शिला–मानव ने हमला करने के लिए अपने हाथ आगे बढ़ाए तो उसकी कोहनी, खडिया के एक बुत पर लगी और वो भरभराकर बिखर गया।

तब तक सलार के तीरों ने बाकी बुतों को भी ढेर कर दिया। सलार का तीर उनमें से एक की आँख में धँस गया। उसने गिरते–गिरते लावे की एक तेज़ धर, गुफा की छत पर फैंकी, जिसके नीचे दोनों बन्दी बेहोश पडे हुए थे। कैटाकोटस अपनी जगह से तेज़ी से झपटा लेकिन इससे पहले वो कुछ कर पाता, ढेर सारा लावा, उनके बेहोश जिस्मों के ऊपर गिर चुका था।

डिग्गीडस्ट बौनों ने तेज़ी से उनके शरीरों को अपनी तरफ खींच कर उनके कपड़े फाड़ दिए, जिनसे आग की लपटें निकलने लगी थीं। अब केवल एक शिला–मानव बचा था, जिसने नोकीले पत्थरों की बरसात कर दी थी। मकास की बाँसुरी उसके होठों पर आ गई थी। मूँगे की ठोस चट्टान को भी पिघलाकर बुत में तब्दील कर देने वाली विचित्रा धुन, बाँसुरी के होठों से बाहर निकली और शिला–मानव का जिस्म, चट्टान के गाढ़े घोल में बदलने लगा।

सब दौड़कर जरूस और दोनों बन्दियों के पास पहुँचे। उनके पूरे जिस्म पर फफोले पड़ गए थे और कहीं–कहीं मांस इतनी बुरी तरह जल गया था कि भीतर की हड्डियाँ नज़र आ रही थीं। डिग्गीडस्ट बौनों ने दोबारा उस जगह खोदने की कोशिश की, जिस छेद से होकर वो भीतर आए थे लेकिन आश्चर्यजनक रूप से, वो एक अंगुल गहरा गड्ढा भी नहीं खोद पा रहे थे।

'इस जमीन को मन्त्रा–बंध्ति कर दिया गया है। अब इसे खोदना नामुमकिन है।' उनमें से एक ने अपने पोरवों को

सहलाते हुए कहा।

जरूस ने लड़खड़ाकर उठने की कोशिश की और वो खड़ा हो गया। उसकी हिम्मत देखकर स्कीनिया की हरी आँखों में तारीफ के भाव उभरे। मकास ने चारों तरफ देखा, उसे जिल्वोकाट कहीं नजर नहीं आया। कैटाकोटस जैसे उसकी बात समझ गया, उसने चुपचाप गुफा के बाहर की तरफ इशारा कर दिया जैसे कह रहा हो, वो बाहर शिला–मानवों का मुकाबला कर रहा है।

तभी धड़ाम की आवाज़ हुई और पेड़ की एक बहुत मोटी जड़, गुफा की दीवार को तोड़ती हुई भीतर दाखिल हुई। जहाँ से जड़ भीतर घुसी थी, वहाँ एक चौड़ा मुहाना बन गया था। उससे होकर जिल्वोकाट भीतर आया। उसका पूरा जिस्म धूल में सना हुआ था। सब दौड़कर उसके पास पहुँचे। मुहाने से बाहर, कई शिला–मानवों के जिस्म, छोटी–छोटी ढेरियों के रूप में नजर आ रहे थे।

'ये कमबख्त मुझे शिला–शाप देने की कोशिश कर रहे थे।' उसने हाँफते हुए कहा और भीतर देखा। 'वो दोनों कहाँ है?' कोई कुछ कहता, इससे पहले उसकी नज़र फैग्यूला और रैक्टिकस के बेहोश जिस्मों पर पड़ी।

दोनों के शरीर, लावे की वजह से जगह–जगह से झुलस गए थे। मकास ने फैग्यूला के बेहोश जिस्म को अपने कन्धें पर उठा लिया और डिग्गीडस्ट बौनों ने रैक्टिकस का बाँस जैसा लम्बा शरीर। सबसे आगे वो था, जो–था–भी–और–नहीं–भी–था और उसके पीछे जिल्वोकाट और सलार। जरूस सबसे पीछे था। गुफा के मुहाने से बाहर निकलते ही उनके कदम रुक गए। सामने...सैंकड़ों योद्धाओं की एक टुकड़ी थी। वो, जिनके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था कि 'वो' भी किसी की सेना में शामिल होकर, सैनिक की भाँति लड़ सकते हैं। वो **नरसिंह** थे, जिनका कमर से नीचे का हिस्सा शेर का था और उससे ऊपर इंसान का। उनके चेहरे किसी भयानक शेर से मिलते–जुलते थे। गर्दन के आसपास लम्बी अयाल और लम्बे, तेज़ नाखून। हल्की मूँछों के बीच, उनके होंठों से झाँकते उनके लम्बे सफेद दाँत, उनकी भयानकता की चुगली कर रहे थे। उनके हाथों में थमे चौड़े फरसे, उनकी वहशियत बयान करने को तैयार थे।

जिल्वोकाट ने उनकी तरफ देखा, जहाँ वो खड़े थे, उसके एक तरफ गहरी खाई थी और एक तरफ ऊँचा पहाड़। वृक्षमानव के होठों से एक अजीब–सी आवाज़ निकली और पहाड़ी की ढलान पर उगी झाड़ियों में सरसराहट हुई। उसने तेज़ी से झाड़ियों की तरफ छलाँग लगा दी। हवा में लहराता हुआ उसका पत्तेदार जिस्म, घनी झाड़ियों पर गिरा और उनमें गुम हो गया। अगले ही पल वो नरसिंहों की टुकड़ी के पीछे दिखाई दिया।

उसे पीछे देखते ही उनमें से आधे, पीठ पीछे की तरफ घूम गए। अब आधी टुकड़ी का मुँह सलार और कैटाकोटस की तरफ था और आधी का जिल्वोकाट की तरफ। स्कीनिया ब्राज का जिस्म थरथराया और हवा में लहराते हुए उसके नुकीले बाल, किसी सेही के काँटों की तरह, आगे वाले नरसिंह के जिस्म में गड़ गए। उसका जिस्म पल भर में खड़िया के बुत में तब्दील हो गया। बाकियों ने तेज़ी से हमला बोल दिया, वो दौड़ते हुए उनकी तरफ बढ़े।

सलार ने अपने धनुष से निकले तीरों से, सबसे आगे वाले दो को निशाना बनाया। वो वहीं ढेर हो गए। डिग्गीडस्ट बौने रैक्टिकस ड्रॉन का बेहोश जिस्म अपने सिरों पर उठाए, सबसे पीछे खड़े थे। मकास ने आहिस्ता से फैग्यूला का बेहोश और घायल जिस्म उनके पास लिटा दिया। उसके हाथ लबादे से बाहर आए, और उनमें दबे दो तेज़ छुरे, हवा में सनसनाते हुए, दो नरसिंहों की छाती में पैवस्त हो गए।

लेकिन वो अब भी तेज़ी से उनकी तरफ बढ़े आ रहे थे। उनमें से आधें को जिल्वोकाट ने अपने साथ उलझा रखा था लेकिन वो अब भी इतनी तादाद में थे कि उन पर भारी ही पड़ते। तभी छलावे का पारदर्शी जिस्म धुएँ में तब्दील हुआ और अब वहाँ एक विशालकाय गैंडा खड़ा था, जिसका आकार सामान्य गैंडे से चार गुना बड़ा था। वो गैंडा कम, कोई विशालकाय हाथी ज्यादा नज़र आ रहा था। उसकी नाक पर उगा लम्बा सींग इतना धरदार नज़र आ रहा था कि उसे देखकर जिस्म में झुरझुरी दौड़ जाए।

उसने पूरी ताकत से नरसिंहों की तरफ दौड़ लगाई और एक ताकतवर टक्कर...उनमें से कई के शरीर, लहराते हुए नीचे खाई में चले गए लेकिन बाकियों के हाथ में थमे फरसे पूरी ताकत से उसकी पीठ से टकराए। मोटी ख़ाल की वजह से वो गहरा घाव तो नहीं बना पाए लेकिन उसकी पीठ कई जगह से हल्की–सी कट गई।

उसने अपने लम्बे सींग को इतनी तेज़ी से एक नरसिंह के पेट में घुसाया कि वो आध बिंध गया। वो फिर से दौड़ा और इस बार की टक्कर ने चार–पाँच को, नीचे खाई की तरफ धकेल दिया। दूसरी तरफ जिल्वोकाट ने पेड़ की जड़ों जैसी अपनी उँगलियाँ, नीचे ज़मीन पर टिकाईं और वो तेजी से बढ़कर ज़मीन में घुस गईं।

कुछ ही पलों में वो उस जगह तक पहुँच गईं, जहाँ नरसिंहों की टुकड़ी थी। उसने अपने हाथ पूरी ताकत लगाकर

ऊपर उठाए और पेड़ की मोटी जड़ों जैसी उसकी लम्बी उँगलियाँ उस पूरी जमीन को उखाड़ती हुई बाहर निकल आईं, जिस पर नरसिंह खड़े थे। एक झटके के साथ, उनमें आधे खाई में जा गिरे। नीचे घुप्प अँधेरे में उनके शरीर कहाँ गायब हो गए, ये पता भी नहीं चला।

अब वो बहुत थोड़े–से रह गए थे। सलार के धनुष ने उनमें से कई को मौत की नींद सुला दिया था। तभी एक नरसिंह के पफरसे का वार उसके कन्धे पर पड़ा। अगर वो झुकाई देकर बच न गया होता तो वो उसकी गर्दन उड़ा देता। पफरसा, बहुत गहरे तक धँस गया था। वो नरसिंह मांस में धँसे पफरसे को बाहर खींचने की कोशिश कर ही रहा था कि स्कीनिया ब्राज के जिस्म से तीर की तरह निकले बालों ने, उसे खड़िया के बुत में बदल दिया।

पहाड़ी के ऊपर चल रही इस जंग की भनक, नीचे लोफा को थी। उसने पायथोफ़ैण्ट को इशारा किया और वो तेज़ी से ऊपर पहाड़ी की तरफ उड़ चला। ऊपर पहुँचकर उसने कई नरसिंहों को अपने पंजों में एक साथ दबाया और अपने तीखे नाखूनों से भींचकर ही उनका दम निकाल दिया। अजगर के मुँह वाली उसकी सूँड के वार से बाक़ी बचे हुए भी धराशायी हो गए। उसके ऊपर आ जाने से अचानक जंग का नक्शा ही बदल गया। कुछ ही पलों में पायथोफ़ैण्ट ने बचे–खुचे नरसिंहों का भी सफ़ाया कर दिया।

सलार के कन्धे से बहुत तेजी से खून बह रहा था। पफरसे के वार की वजह से उसका ढेर सारा मांस कटकर एक तरफ़ लटक गया था।

डिग्गीडस्ट बौनों ने फ़ैग्यूला और रैक्टिकस का बेहोश शरीर पायथोफ़ैण्ट की पीठ तक पहुँचाया। स्कीनिया उसकी पीठ पर चढ़कर, फ़ैग्यूला को ऊपर खींचने की कोशिश कर ही रहा था कि पहाड़ी के ऊपर उन्हें शातिर लैनीगल नज़र आया। उसके एक हाथ में एक मुड़ा–तुड़ा डण्डा था और दूसरे हाथ से वो आकाश की तरफ़ कुछ इशारे कर रहा था।

उसने एक बार उन सबकी तरफ देखा और उसकी आवाज़ नीचे घाटी तक गूँजी–'तुम सबकी मौत तुम्हें यहाँ खींचकर लाई है मकोड़ो! तुम्हारे स्वागत का बेहतर इंतज़ाम किया गया है। उम्मीद है तुम्हें पसन्द आया होगा। वैसे...अब तुम्हें अपनी जान बचाने की चिन्ता छोड़ देनी चाहिए...क्योंकि तुम्हारी मौत का इंतज़ाम पूरी ईमानदारी से किया गया है।'

मकास ने ऊपर पहाड़ी की तरफ देखा, ये वही था, वही बूढ़ा बौना, जो उनके सफ़र का साथी बनकर साथ गया था।

उसके चेहरे पर अपने पिता के पंगु–शाप को याद करके रक्त तैरने लगा। 'तुम्हारी मौत के फ़रमान पर दस्तख़त हो चुके हैं शातिर लैनीगल! हमारे निर्दोष पिता पर इस्तेमाल किए गए बर्बर शाप का हिसाब तुम्हें अभी चुकता करना होगा।' बूढ़े ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। उसने कुछ बुदबुदाना शुरू कर दिया और आसमान में एक गड़गड़ाहट गूँजने लगी।

छलावे का जिस्म, एक गरुड़ में बदला और ऊपर पहाड़ी की तरफ़ उड़ान भर गया। इससे पहले, वो ऊपर तक पहुँच पाता, लैनीगल ने अपने हाथ में पकड़ा, मुड़ा–तुड़ा डण्डा बहुत तेज़ी से उस पर फेंका, जो गरुड़ के पंखों से पूरी ताकत से टकराया। वार इतना घातक था कि वो कटी पतंग की तरह बल खाता हुआ नीचे घाटी की तरफ़ गिरता चला गया।

आसमान में गूँजने वाली गड़गड़ाहट बढ़ती जा रही थी।

तभी स्कीनिया चिल्लाया, 'सिर छुपाने की जगह खोजो, ये नक्षत्रा–विद्या का माहिर है, ये हम पर उल्काओं की बरसात करने वाला है।'

उसकी बात पूरी होने से पहले ही आसमान से विशाल उल्काओं की बारिश होनी शुरू हो गई। गर्म, दहकती हुई विशाल उल्काएँ, तेज़ी से हर तरफ़ गिर रही थीं। स्कीनिया ने फ़ैग्यूला के बेहोश जिस्म को ऊपर खींच लिया।

जिल्चोकाट ने चीखकर कहा, 'स्कीनिया...तुम इन्हें लेकर यहाँ से निकलो, हम तुम्हारे पीछे आते हैं।'

स्कीनिया ने एक बार हिचकिचाकर सबकी तरफ़ देखा लेकिन जब मकास ने भी चीखकर कहा, 'जल्दी करो, वरना ये ज़िन्दा नहीं बचेंगे।' तो उसने पायथोफ़ैण्ट को उड़ने का इशारा किया।

पायथोफ़ैण्ट ने हाथी की चिंघाड़ और पक्षी के चिंचियाने जैसी एक तेज़ आवाज़ निकाली और अपने विशाल जिस्म को लेकर ऊपर उठ गया। गर्म उल्काएँ उसके पंखों के आसपास से होकर नीचे गिर रही थीं।

तभी एक बड़ी उल्का, पहाड़ी के उस हिस्से से टकराई, जिस पर वो सब खड़े हुए थे। एक तेज़ आवाज़ के साथ, पहाड़ी का वो टुकड़ा टूटकर नीचे गिरने लगा। जब तक कोई संभल पाता, तब तक वो सब चट्टानों के बीच लुढ़कते हुए नीचे गिरते चले गए। डिग्गीडस्ट बौने, एक छोटे पेड़ की टहनियों पर लटक गए थे लेकिन पेड़ भी लुढ़कता हुआ तेज़ गति से नीचे जा रहा था।

नीचे लोफा जैसे बस उन्हीं का इंतजार कर रहा था। भारी पत्थरों के बीच कुचले जाने से बचते हुए, वो किसी तरह वहाँ तक पहुँचे, जहाँ एल्फैण्टॉर और लोफा थे। सबके सब बुरी तरह घायल थे। जरूस की हालत सबसे खराब थी, उससे खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था।

'जल्दी करो, निकलो फौरन।' मकास ने एल्फैण्टॉर की तरफ देखते हुए चीखकर कहा।

सब दौड़ते हुए उसके पास पहुँचे और किसी तरह उसकी पीठ पर सवार हो गए। तब तक सारे बौने भी लुढ़क कर वहाँ आ पहुँचे थे। किसी तरह एक–दूसरे को खींचकर उन्होंने ऊपर बैठाया और एल्फैण्टॉर ने अपने चौड़े पंख, आसमान में पैफला दिए। चारों तरफ से गिरने वाली उल्काएँ, इतनी तेज आवाजें पैदा कर रही थीं, ऐसा लग रहा था जैसे कयामत का दिन आ गया हो।

पहाड़ी की चोटी पर खड़ा वो शातिर बूढ़ा, इस वक़्त ज़ोर से ठहाका लगा रहा था। उसके हँसने की आवाज़ घाटियों में होने वाले धमाकों के साथ घुल गई। एल्फैण्टॉर...ऊँचा और ऊँचा उठता जा रहा था। फिर आहिस्ता–आहिस्ता वो इतनी दूर होता गया कि पहाड़ी की चोटी पर खड़ा शातिर लैनीगल...दिखाई देना भी बन्द हो गया। हर तरफ़ अब पूरी ख़ामोशी छा गई थी। इन दहशतनाक घटनाओं को देखकर, रात ने भी अब अपनी सबसे काली चादर निकालकर बिछा दी।

रात की काली चादर, इन गुफाओं में भी पैफल चुकी है। उस हर जगह, जहाँ मेरे पाँव पड़े हैं और उन जगहों पर भी, जहाँ आज तक मैं भी नहीं गया। मेरी गुफा में जलती सूखी लकड़ियों से निकलने वाली पीली रोशनी, अँधेरे की काली चादर पर सुनहरी कढ़ाई कर रही है। दरअसल अँधेरा शाश्वत है, उसे न तो पैदा किया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है। वो बस खुद को सिकोड़ता है और पैफलाता है। जब वो खुद को सिकोड लेता है, तब वो उतना ही पीछे हटता है, जितनी देर उसे पीछे हटाने के लिए बल लगा रहता है। जैसे ही वो बल हटता है, अँधेरा दोबारा पैफलकर उसी आकार में आ जाता है, जिसमें वो था।

ज़िन्दगी की रोशनी, मौत के अँधेरे को बस उतनी ही देर पीछे धकेल पाती है, जितनी देर उस पर साँसों का बल लगा रहता है। यही बात वो घटनाएँ बता रही थीं, जो मोम के उन चौखटों पर चाँदी की गर्म सलाइयों से उकेरी गईं, जिन पर इस दास्तान के कुछ किरदारों की मौत का ज़िक्र है। मोम की जिन पट्टियों पर ज़िक्र है उन लड़ाकों का, जिन्होंने राक्षसों की आँतों से, अपने लिए पोशाकें सिलीं। उन पर्वताकार, ख़ूंख़्वार दैत्यों का, जिनके तलवों पर घने बाल उगे थे। उन घिनौने प्राणियों का, जिनकी गन्दी उल्टी में हज़ारों अण्डे निकलते, जिन अण्डों से उन जैसे ही हज़ारों और निकल आते।

वो **उजड़े–प्रेत**, जिनका थूक किसी के ऊपर गिर जाए तो वो जिस्मानी खण्डहर में तब्दील हो जाता। कछुओं की पीठ पर रहने वाला वो कबीला, वो जिसका मांस खाते, उसकी रूह उनकी गुलाम हो जाती। साथ ही वो **जल–पिशाच**, जिनकी लम्बी जीभ, झील की तलहटी पर रेंगते जल–पिस्सू तक को चाट सकती थी। शिला–पुस्तक का वो नक़्शा, जिसमें संकेत था, **उल्टे–पेड़ों–के–जंगल** और **हड्डियों–की–नदी** के बारे में। मुझे इस दास्तान के साथ होने की ज़िम्मेदारी का अहसास है इसलिए मैं मोम की उन पट्टियों की तरफ़ चलता हूँ, जिन पर इस सफ़र की सबसे हौलनाक घटनाएँ, मेरा इंतज़ार कर रही हैं। वो घटनाएँ, जिनके अनछुए रूप को, मुझे इन गुफाओं की दीवारों पर उसी तरह उकेरना है जैसे वो घटीं।

उस हिस्से की तरफ़ मैं बहुत गहराई से देख रहा हूँ, जो अभी घटने वाला है लेकिन उसका सबसे बड़ा रहस्य, इस दास्तान के अंत में खुलकर सामने आया। वो हिस्सा, जो आँसुओं को निमन्त्राण देने वाला था। उन किरदारों की ज़िन्दगी का वो हिस्सा, जिसने इस दास्तान को इसके अंजाम तक पहुँचाने में बेहद खास भूमिका अदा की।

मौत

अध्याय उन्नीस

सुबह ने अभी अपना हल्का लाल कालीन बिछाया ही था कि थोरोज़ की पहाडी के ऊपर एक आकृति मँडराती दिखाई दी। उडती हुई वो विशाल आकृति हर पल पास आती जा रही थी। ये एल्फैण्टॉर था। पहाडी के ऊपर, चट्टानों के पास, बहुत–सी आँखें बेचैनी से उनका इंतजार कर रही थीं। सालन, कास्टन ब्रूड, कैफुआन पस्तर, हूनास्पॉटी, वुन्टनब्रॉस और बहुत सारे जल–प्रेत, सब एकटक आसमान की तरफ देख रहे थे। जैसे–जैसे उडने वाला वो ध्ब्बा पास आता जा रहा था, सबकी अकुलाहट बढती जा रही थी।

उनके सिर के ऊपर एक चक्कर लगाने के बाद, एल्फैण्टॉर मैदान में उतर गया। सबने दौड़कर घायलों को संभालना शुरू कर दिया। जरूस का झुलसा हुआ जिस्म बुरी तरह लडखडा रहा था। सलार के कन्धे का घाव काला पड गया था। डिग्गीडस्ट बौनों के जिस्म पर भी छोटे–छोटे घाव दिख रहे थे। लोफा ने कई बौनों को एल्फैण्टॉर की पीठ से उतारने में मदद की। पूरे दल में केवल वही एक ऐसा दिख रहा था, जिसके जिस्म पर घाव नहीं थे।

जल–प्रेतों ने आगे बढ़कर घायलों को उठा लिया। वो उन्हें लेकर तेज़ी से किले की तरफ उड गए। सालन का चेहरा किसी पत्थर की तरह सख्त और भावहीन नज़र आ रहा था। जैसे किसी बात को छिपाने की कोशिश कर रहे हों। किले के भीतर हर कोई घायलों की तीमारदारी में जुट गया। गोचो राक्षसियों ने बहुत जल्दी कुछ जडी–बूटियाँ पीसकर तैयार कर दीं। जरूस के झुलसे हुए जिस्म पर हर जगह फफोले पड़ गए थे। लोफा ने उसके लिए एक छोटा–सा जलकुण्ड तैयार कराया, जिसमें लबालब पानी भरा हुआ था। उसने उसमें कुछ टेढ़ी–मेढ़ी जड़ें डालीं और सबकी मदद से उसको गर्दन तक पानी में अधलेटा कर दिया।

मकास ने सालन से सवाल किया, 'बाकी लोग कहाँ हैं? स्कीनिया, फैग्यूला, रैक्टिकस और पायथोफैण्ट...क्या वह भी घ ायल हुआ है?'

सालन ने उसकी बात का कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया। बस इतना कहा, 'तुम्हें आराम की ज़रूरत है, अभी आराम करो, इस बारे में हम बाद में बात करेंगे।' सालन के जवाब से उसकी चिन्ता और बढ़ गई।

कई डिग्गीडस्ट बौनों को गहरी चोट आई थी। जिल्चोकाट का एक हाथ, बुरी तरह कुचल गया था। पूरे किले में हर तरफ अफ़रा–तफ़री का माहौल था। कुछ नए चेहरे भी नज़र आ रहे थे। वो अजीब–सी लम्बी नाक और चौड़े कान वाले, नाटे क़द के लोग थे। उनकी पोशाकें भी उन्हीं की तरह अजीब थीं। किसी ने घुटनों तक ऊँचा चोग़ा पहन रखा था तो किसी ने इतना लम्बा कि वह ज़मीन पर घिसट रहा था।

उन्होंने अपने सिर पर मोटे कपड़े की बनी नुकीली टोपियाँ पहन रखी थीं, जिनके आख़िरी सिरे पर एक मोटा फुँदना लटका हुआ था। वो कभी जड़ी–बूटियाँ लेकर आते तो कभी घायलों को सहारा देकर उठाने और लिटाने में मदद करते। उनमें से कोई भी बात नहीं कर रहा था, सबके सब एकदम चुपचाप अपने काम में लगे हुए थे। मकास को याद आया, पुँफदनेदार टोपी वाले लोगों को वो एक बार तब देख चुके, जब 'लटकते कमरे' में जाते वक़्त उन्होंने उन्हें नीचे विशाल कक्ष में आते–जाते देखा था।

उनमें से कुछ, अपने लम्बे चोग़े की जेब में हाथ डालकर, औषधियाँ निकालते और घायलों के ज़ख़्मों पर लगाते। गोचो राक्षसियाँ हर चीज का इंतज़ाम कर रही थीं। सलार के आसपास कई राक्षसियाँ इकट्ठा थीं, जो उसकी देखरेख कर रही थीं। थोरोज़ बहुत कमजोर लग रहे थे लेकिन वो घायलों को देखने के लिए आए थे।

दोपहर को उन्हें थोडा–बहुत खाने के लिए दिया गया। बीच–बीच में कई बार उन्होंने स्कीनिया ब्राज, फैग्यूला, रैक्टिकस और पायथोपैफण्ट के बारे में पूछा लेकिन उन्हें इसका कोई जवाब नहीं दिया गया। किले के भीतर की खामोशी

ने अपने चेहरे पर मनहूसियत की कालिख मल रखी थी। बैडल भी वापस लौट आया था, उसकी तीन टाँगों में भयंकर चोट थी। वो बुरी तरह लड़खड़ाकर चल रहा था। गोचो राक्षसियों में कानापफूसी थी कि शातिर लैनीगल ने कल से उसे, एक धागे से बाँधकर, उल्टा लटका रखा था। दरअसल उसने उस शातिर बूढ़े के अँगूठे में काट लिया था, जिसकी वजह से उसका अँगूठा उबले हुए आलू की तरह हो गया।

सबको इस बात की खुशी थी कि बेशक नुकसान ज़्यादा हुआ लेकिन आख़िरकार वो अपने साथियों को छुड़ाने में कामयाब हो गए। लम्बी नाक और फुँदनेदार टोपी वाले नाटे लोगों ने शाम तक सबकी इतनी देखभाल की, सबका दर्द लगभग गायब हो चुका था, जख्म अभी बाकी थे। पूरे किले में एक अजीब–सा रहस्य भरा हुआ था।

शाम होते–होते, कुछ और अफ़वाहें सुनाई देने लगीं। किसी को नहीं पता था कि वो सच हैं या फिर महज़ अफ़वाहें लेकिन ऐसा लग रह था जैसे कुछ अनिष्ट हुआ है। न तो सालन का कहीं पता था और न ही थोरोज का। ऐसा कोई व्यक्ति किले में कहीं नहीं था, जो सारी बात बता सके, नन्हा राक्षस लोफ़ा भी पता नहीं कहाँ गायब था।

तीनों भाइयों के लिए सबसे चिन्ताजनक बात ये थी कि अभी तक उस छलावे...कैटाकोटस मैगनडोला का कुछ पता नहीं था। यकीनन उसने अकेले ही जंग का नक्शा बदल दिया था लेकिन शातिर लैनीगल के अपवित्रा डण्डे के वार के बाद, वो गरुड के रूप में नीचे गिरता चला गया था, तबसे न तो वो कहीं दिखा था और न ही उसकी कोई ख़बर आई थी।

शाम को सालन और थोरोज़ किले में दिखे। वो सबको जरूरी हिदायतें दे रहे थे। हालाँकि वो घायलों से दूर थे, लेकिन हर कोई उन्हें सुन सकता था। लम्बी नाक और पुफँदनेदार टोपी वाले, नाटे लोगों को हिदायतें देने के बाद, एक–एक करके उन्होंने घायलों का हाल पूछा लेकिन सबके होठों पर बस एक ही सवाल था। बाकी लोग कहाँ हैं और कैसे हैं? दुनिया के सबसे बुजुर्ग–शिशु के चेहरे पर, कई रेखाएँ उभर कर गायब हो गई।

जिल्वोकाट ने उनका मुलायम हाथ अपनी पत्तेदार हथेली में थाम लिया। 'सालन...सालन...हमें बाताओ, आखिर हुआ क्या हैं? कहाँ हैं बाकी लोग? वो हिफ़ाज़त से तो हैं? आप वुफछ बोलते क्यों नहीं?'

जिल्वोकाट की तरफ़ एक ख़ामोश नज़र से देखकर सालन ने सांत्वना देने वाले अंदाज़ में उसकी हथेली दबाई।

'वो शायद नहीं रहे...' सालन का चेहरा पत्थर की तरह सख़्त हो गया था।

'क...क्या?' एक साथ जैसे सबको काठ मार गया।

'ये आप क्या कह रहे हैं? ये सच नहीं हो सकता? वो सुरक्षित निकल गए थे।' जिल्वोकाट ने उनकी आँखों में झाँकते हुए कहा।

'एक विशाल, गर्म उल्का पायथोफ़ैण्ट से टकराई...और चारों के जिस्म हूजा की अंधी दलदलों में समा गए। उनके शव तक नहीं मिल सके। जल–प्रेत और जंगली रूहें, आज सुबह से ही उन दलदलों में खोज रहे हैं लेकिन किसी का जिस्म नहीं मिला।'

'ओह...देवता!' जिल्वोकाट ने अपने दोनों हाथ चेहरे पर रख लिए।

'उफ़्फ़...' मकास वहीं पास के बिस्तर पर बैठ गया।

कोई कुछ नहीं बोल पा रहा था। थोरोज़ की कछुए जैसी नाक, आहिस्ता–आहिस्ता फड़क रही थी। पूरे किले में शोक का माहौल था। जंग से लौटने वाले, ये सोचकर संतुष्ट थे कि वो अपने साथियों को बचाने में कामयाब हो गए लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

'कैटाकोटस! कैटाकोटस का क्या हुआ? लैनीगल के वार के बाद, वो नीचे घाटी की तरफ गिरता चला गया था। वो कहाँ है?' जरूस ने अपने बिस्तर से उठने की कोशिश करते हुए पूछा।

'उसका अभी तक कोई पता नहीं चल पाया है। हर तरफ़ उसकी खोज जारी है। हमारे लोग हर जगह उसे तलाश रहे हैं लेकिन पूरा दिन गुज़र जाने के बाद भी अभी तक उसकी ख़ैरियत की कोई ख़बर नहीं मिली है।' थोरोज़ ने अपनी खरखराती हुई आवाज़ में उत्तर दिया।

'छलावे मर नहीं सकते...घायल हो सकते हैं। वो ज़रूर बुरी तरह घायल हुआ है। अगर उसमें ज़रा भी ताक़त होती तो वो अब तक यहाँ खुद ही आ चुका होता।' सालन की आवाज़ में चिन्ता का पुट था।

रात तक भी कैटाकोटस की कोई ख़बर नहीं आई। सबके चेहरे पर शिकस्त और दुःख तैर रहा था। ये वाक़ई करारी हार थी। उन्होंने अपने चार बहादुर साथी खो दिए थे और योजना पूरी तरह असफल हो गई। वो पूरी रात सबने जागकर

काटी। सुबह होने पर भी हर कोई थका–थका और बेहद उदास दिख रहा था।

फिर एक जल–प्रेत ने सालन को कोई खबर दी। खबर मिलते ही वो काठ–घर की तरफ रवाना हो गए, बिना किसी को कुछ बताए। काफी देर बाद वो वापस लौटे। उन्होंने बताया कैटाकोटस सुरक्षित है, उसे बचा लिया गया है। उसकी जान बचाने का सारा श्रेय जडाकी को जाता है, वो मादा जल–प्रेत, जो हर पल पूरे जत्थे का पीछा कर रही थी। लैनीगल का वार गरुड़रूपी कैटाकोटस के सिर पर लगा। वो वहीं अचेत हो गया और नीचे घाटी के अँधेरे में गिरने लगा लेकिन जडाकी ने उसे नीचे जाकर थाम लिया और उसे लेकर पल भर में ही सैंकडों कोस दूर निकल गई। पूरे दिन और रात वो अपनी ताकतों से उसे होश में लाने की कोशिश करती रही और आखिरकार वो होश में आ गया लेकिन अब भी वो अपना रूप नहीं बदल पा रहा। वो अब तक गरुड़ के ही रूप में है।

जडाकी अब छलावे को काठ–घर में ले आई थी। वो हर पल उसकी देखभाल कर रही थी और किसी को भी उसके पास नहीं जाने दे रही थी। सबको उम्मीद थी कि वो बहुत जल्द ठीक हो जाएगा लेकिन अभी वो केवल अपनी आँखें ही खोल पा रहा था।

घायलों के ज़ख्म उन जड़ी–बूटियों से पूरी तरह भरने लगे, जिन्हें वो लम्बी नाक वाले, नाटे कद के लोग इस्तेमाल कर रहे थे। कैटाकोटस अब काफी ठीक हो चला था पर अब भी अपना रूप नहीं बदल पा रहा था। बस एक असहाय गरुड के रूप में जडाकी की गोद में लेटा रहता।

फिर एक रात, लेटे–लेटे वो एक जंगली कबूतर के रूप में बदल गया। जडाकी की खुशी का ठिकाना न रहा। वो हवा में तैरती हुई, तालाब के पास गई और सारे जल–प्रेतों को इकट्ठा किया। जब वो वापस काठ–घर के उस कमरे में पहुँचे, जहाँ कैटाकोटस लेटा था, तब तक वो एक छोटे–से मेंढक में बदल चुका था। ये खबर तुरन्त सालन तक पहुँचाई गई।

कैटाकोटस अब वापस जंगल में चला गया था, अब वो पहले से बहुत ठीक था। सालन को खबर मिली थी, दुष्ट जैल्डॉन ने कबीलों के प्रतिनिधियों और सरदारों के साथ होने वाली बैठक आगे स्थगित कर दी है। सालन ने महासभा के सदस्यों की बैठक को भी अगली खबर तक के लिए रद्द कर दिया।

बैडल की तीनों टाँगें भी अब लगभग ठीक हो चली थीं। कभी–कभी चाँदनी रात में, जडाकी और छलावा, जंगल के किनारे पर घूमते हुए दिख जाते थे। थोरोज़ के ख़बरी, अब भी लगातार दुष्ट जैल्डॉन और शातिर लैनीगल की सूचनाएँ लाने की कोशिश कर रहे थे। ये तो पता चल गया था कि उसने बैठक स्थगित कर दी है लेकिन अगली बैठक कहाँ और कब होगी, इसका पता नहीं चल पाया।

उसकी बेपनाह ताकत का अंदाज़ा सबको हो गया था। ये भी साफ हो चला था कि उसे रोकना इतना आसान नहीं होगा लेकिन ये भी उतना ही साफ़ था कि उसे रोकना ही होगा। थोरोज की पीठ का कछुए जैसा खोल अब दोबारा बनने लगा था, लेकिन वो अब भी काफ़ी कमज़ोर नज़र आते। सबसे अचरज की बात ये थी, उस दिन से लेकर आज तक, उन्हें गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फ़ैलीटस नाम का वो स्ट्रासोल कहीं नज़र नहीं आया था। जरूस ने एक बार जिल्वोकाट से ये जानने की कोशिश की कि उसे कहाँ भेजा गया है लेकिन उसने ये कहकर बात खत्म कर दी कि इस बारे में सालन और थोरोज के सिवा और कोई नहीं बता पाएगा।

हर कोई इंतज़ार में था किसी ऐसी ख़बर के, जो उन्हें उस जंग और दुश्मन की सही जानकारी दे सके, जो कहीं दूर छिपा हुआ उनका इंतज़ार कर रहा था। मकास का दिल अब तक इस बात का फैसला नहीं कर पाया था कि उनके चार बहादुर साथियों की मौत, हादसा था या फिर निर्मम हत्या। फिर जैसे सब कुछ बदल गया। उस एक आगन्तुक के आने से, जिसका नाम **लोबामोस** था। वो आख़िरी बिल्चू, जिसके आने का और उसकी खबर का हर कोई इंतजार कर रहा था।

उसके आने की ख़बर सुनकर चुनिन्दा–समूह के सदस्यों की फ़ौरन बैठक बुलवाई गई। सालन और थोरोज़ के साथ, जिल्वोकाट, कैफ़ुआन पस्तर, वुन्टनब्रॉस, हूनास्पॉटी, कास्टन ब्रूड और तीनों भाई भी उसमें शामिल थे। लोबामोस...सबसे शातिर बिल्चू था। सबसे शानदार भेदिया, जिसके बारे में कहा जाता था कि वो ये भी ख़बर निकाल कर ला सकता है कि साँप के जिस्म पर कान क्यों नहीं होते। उसने जो जानकारी दी, वो हैरतअंगेज और ख़ौफनाक थी।

लोबामोस उसी दिन से उसका पीछा कर रहा था, जिस दिन से बाक़ी भेदिए वापस आए थे। दुष्ट जैल्डॉन को उसकी ख़बर तक नहीं पड़ी। उसने जो दृश्य देखे और जो जानकारियाँ जुटाई, वो इतनी ख़तरनाक और हैरतअंगेज थीं, हर कोई सकते में आ गया। उसने बेहद अदब और सलीक़े से अपनी जानकारियाँ सबके सामने रखीं।

उसने बताया–'दुष्ट जैल्डॉन ने अपना ठिकाना, **इदिया–इमीन** टापू पर बनाया है। ये समन्दर के बीचोबीच उभरा एक विशाल टापू है, जिस पर घने जंगल और पहाड हैं। वहाँ तक पहुँचने के लिए, उन समुद्री जीवों और ख़तरनाक समुद्री

प्रजातियों से होकर गुज़रना होगा, जो केवल उसके हुक्म का पालन करती हैं। वो कई बरसों से वहाँ अपनी सेना तैयार कर रहा है।

उसने वहाँ इतनी बड़ी फौज इकट्ठा कर ली है, जिसके बारे में अनुमान लगाना भी मुश्किल है। बहुत सारे कबीले और प्रजातियों को वो अपने साथ मिला चुका है। एल्गा–गोरस की ताकतों ने सैंकड़ों योद्धाओं को उसके तलवे चाटने पर मजबूर कर दिया है। जिन्हें उसने अपने साथ मिला लिया है, उनमें हैं–**कैबूनिन** के जंगलों के वो ख़तरनाक लड़ाके **कोहान–कोहस**, जिनकी ताकतवर मांसपेशियाँ, पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त और जिस्म चट्टान की तरह मजबूत होते हैं, जिन्होंने पिछले जंगल–युद्ध में, इक्कीस पेड़ों को भी चीरकर निकल जाने वाली अपनी ताक़त से, कोहराम मचा दिया था। राक्षसों के साथ हुए युद्ध में वो अपनी उस बर्बरता के लिए कुख्यात हुए थे, जब उन्होंने हारे हुए राक्षसों की आँतों से, अपने लिए पोशाकें सिली थीं।

इल्वीन के पठारों से, विशाल देह वाले, हिंसक **असनोच**...जिनके जिस्म किसी पहाड़ की तरह ऊँफचे और इतने चौड़े होते हैं कि दो हाथी उनके ऊपर से गुज़र सकते हैं। असनोच बहुत कम सोचने वाले और बहुत ज्यादा हिंसा करने वाले दैत्य हैं। गर्म चट्टान और जैल्कोवा की लकड़ी को मिलाकर बनाए गए, उनके भारी–भरकम मुगदर, शिलाओं तक को चकनाचूर करने की ताकत रखते हैं। उनकी साँस से हमेशा इतनी बदबू आती है कि दुश्मन ज्यादा देर तक उनके सामने टिक नहीं सकता। कहते हैं उनके पैर के तलवों पर घने बाल उगे होते हैं अगर उनका पैर अपने किसी ज़ख्मी साथी के खून पर पड़ जाए तो उस घायल का घाव एकदम भर जाता है। इसीलिए किसी जंग में उन्हें ज्यादा घाव नहीं लगते।

कैसी–बुगनान के मैदानों से, वीभत्स और घिनौने **वरमोस**...जिनका कमर से नीचे का हिस्सा, किसी लिजलिजे, घिनौने सफेद गिंडार जैसा होता और ऊपर का धड़ इंसान जैसा। वो इतनी तेज़ी से रेंगते हैं जैसे कोई साँप दौड़ रहा हो। कच्चा मांस खाने वाले वरमोस, दुश्मन के ऊपर गन्दी उल्टी करने के लिए मशहूर हैं, जिसमें सैंकड़ों छोटे–छोटे अण्डे होते हैं। हवा के सम्पर्क में आते ही वो फूट जाते हैं और उनके भीतर से हज़ारों और निकल आते हैं। अपने लम्बे नाख़ूनों से, वो बैलीबोसिया के पेड़ को भी दो टुकड़ों में चीर सकते हैं।

नष्ट हो चुकी सभ्यता, **एटनोर** के खण्डहरों में रहने वाले **उजड़े–प्रेत**...जो किसी को भी छूकर, उसके जिस्म को जीते–जागते खण्डहर में तब्दील कर सकते हैं। उनका थूक अभिशापित होता है, अगर वो किसी के ऊपर थूक दें तो उस प्राणी का जिस्म गलना शुरू हो जाता है। किंवदंतियाँ हैं, उजड़े–प्रेत चमगादड़ों की बीट के सिवा और कुछ नहीं खाते इसलिए वो सदियों से एटनोर के खण्डहरों में ही रहते हैं क्योंकि वहाँ लाखों चमगादड़ लटके रहते हैं।

कल्सूस की घाटियों से, **बर्फ़ीले–सर्पमानव**...जिनके काटने के बाद ख़ून बर्फ़ के रूप में जम जाता है और दो पल में मौत हो जाती है। उनकी फुफकार में, बर्फ़ की धरदार और नोकीली किरचें निकलती हैं, जो सामने वाले प्राणी के जिस्म को तीरों की तरह बेध्कर रख देती हैं। कहा जाता है, बर्फ़ीले सर्पमानव...जिसकी आँखों में देख लेते हैं, वो फ़ौरन बर्फ़ की शिला में बदल जाता है।

खोजार के वर्षा–वनों से, नरभक्षी **चिहानचोचस**...असीमित दुष्ट ताक़तों के मालिक। वो जिसका मांस खाते हैं, उसकी रूह उनकी गुलाम हो जाती है। कछुओं की पीठ पर सवार रहने वाला ख़ूंख़्वार क़बीला। उन्होंने ही जैल्डॉन को वो विशाल कछुआ तोहफ़े में दिया है, जिसकी पीठ पर वो बरसों से सवार है। उनके बारे में दंतकथाएँ हैं कि उनके कछुए, अपने मालिकों के लिए जान तक दे देते हैं। अगर किसी कछुए के सवार को मार दिया जाए, तो जब तक वो अपने मालिक की मौत का बदला नहीं ले लेता, तब तक हत्यारे का पीछा नहीं छोड़ता। चिहानचोचस के कछुए अपने मूत्रा से, ज़मीन को इतनी रपटीली कर देते हैं कि उनसे जंग करने वाला दुश्मन उस पर खड़ा ही न हो सके। उनके कछुओं के दाँत, हाथी की टाँग की हड्डी को भी काटकर अलग कर सकते हैं।

ख़ूनी **डैरकोस**...जिनके बारे में कहा जाता था, वो क्रोध में जन्म लेते हैं और क्रोध में ही मरते हैं। कोई डैरकोस कभी शान्त नहीं होता, वो हर वक़्त क्रोध में होता है। पाँच साल की उम्र तक वो हर बच्चे को परखते हैं, अगर वो स्वभाव से शान्त और अमनपसन्द नज़र आता है तो मार दिया जाता है। क्रोध करने के लिए किसी डैरकोस को वजह की ज़रूरत नहीं होती। वो पहले क्रोध करते हैं और बाद में वजह खोजते हैं। किसी न किसी बहाने से, वो अपने भीतर गुस्से की आग को ध्ध्काए रखते हैं।'

बोलते–बोलते वो एक बार साँस लेने के लिए रुका, हर किसी की आँखें बस एकटक उसे ही देखे जा रही थीं। जो कुछ वो बता रहा था, उसे सुनकर सबके चेहरे पर कई तरह के भाव आ–जा रहे थे। लोबामोस ने एक–एक करके सबकी तरफ़ देखा और फिर, एक गहरी साँस ली। ऐसा लग रहा था जैसे उसके पास जानकारियों का ऐसा ख़ज़ाना है, जो कभी

खत्म ही नहीं होगा।

कुछ पल ठहरकर उसने फिर बोलना शुरू किया–'...और **उकोरास** की काली झीलों में रहने वाले, **जल–पिशाच**... जिनकी बेहद लम्बी जीभ, झील की तलहटी पर रेंगते जल–पिस्सु तक को चाट सकती है। प्रफोगाप्रफोस सरदार **इलासटंग**, अपनी पूरी बस्ती के साथ, उससे मिल गया है। उनका हर सैनिक निद्रा–शास्त्रा का ज्ञाता है, जो किसी पत्थर को भी अनन्त नींद में सुलाने की ताक़त रखते हैं। शिला–मानवों का सरदार **बूजाचल**, जो अपने स्वार्थ और लालच के लिए पूरी दुनिया में बदनाम है। अपनी पूरी प्रजाति के साथ उसकी तरफ़ है। उनके दिए शिला–शाप की काट केवल वही कर सकते हैं।'

उसकी इस बात पर हर किसी की नज़र थोरोज़ की तरफ चली गई, जिन्होंने अपनी जान दाँव पर लगाकर अपने साथियों को शिला–शाप से बचाया था।

'जैल्डॉन की सेना पूरी तरह तैयार है। इतने क़बीले और प्रजातियाँ, उसके साथ मिल चुकी हैं, जिनकी ताक़त का मुकाबला करना असंभव है। अगर मैं हर उस ताक़त के बारे में बताऊँ, जो उसके साथ हैं तो यकीनन पूरी रात भी कम पड़ेगी। वो जंगल–युद्ध की पूरी तैयारी कर चुका है। बस वो उन कबीलों और प्रजातियों के सरदारों को अपने काबू में करना चाहता है, जिनसे उसे खिलाफ़त का डर है। अगर एक बार उसकी ये योजना सफल होती है तो फिर उसकी सेना, टिड्डी–दल की तरह, दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फ़ैल जाएगी और कोई उसे रोकने वाला नहीं होगा।' लोबामोस की बात पूरी होते ही, वो हर तरफ ऐसी दहशत से देखने लगा जैसे कहीं कोई उसकी दी हुई ख़बर को सुन न रहा हो। हर कोई इस तरह ख़ामोश था जैसे लफ़्ज किसी दूसरी ज़बान के घर, मज़दूरी करने चले गए हों।

सालन की गम्भीर आवाज़ ने चुप्पी तोड़ी, 'हम्मम...उसने *महायुद्ध* के लिए क्या वक़्त चुना है?'

लोबामोस पल भर के लिए चुप रहा, फिर बोला, 'लड़के...ये लड़के जब तक उसे नहीं मिल जाते, वो हमला नहीं करेगा। इनके बिना, उसकी पूरी योजना अधूरी है। पूरी दुनिया में इस वक़्त केवल, ये तीन हैं, जो 'उस' काम को कर सकते हैं, जिसके लिए उसने सौ साल इंतज़ार किया है। *आम-नक्षत्रों-में-जन्मे- ये-ख़ास-बच्चे*।' उसने आरपार निकल जाने वाली नज़रों से तीनों भाइयों की तरफ देखा।

'इदिया–इमीन टापू, उसकी क़ब्र बनेगा सालन...हम अपने साथियों का हिसाब, ज़रूर चुकता करेंगे।' कैफुआन पस्तर की उँगलियों के जोड़ों से इस वक़्त धुआँ निकल रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे उसके क्रोध और अहसासों की कड़ाही में फदकियाँ पड़ रही हों।

'ये वक़्त जोश और गुस्से का नहीं है रोशनी–पुत्रा कैफुआन! दुश्मन की ताक़त को समझने और तैयारी करने का है।' थोरोज़ ने उसकी तरफ़ तसल्ली देने वाली निगाहों से देखा।

'तुम्हारे पास बताने के लिए कुछ और ख़ास ख़बर है लोबामोस?

बिल्चू ने एक गहरी साँस ली। 'बस इतना ही महान सालन...जब तक ये तीनों नौजवान उसे नहीं मिलते, वो महायुद्ध की शुरुआत नहीं करेगा और इससे भी खास बात ये है कि इन्हें पाने के लिए वो ज़्यादा दिन इंतज़ार नहीं करेगा।' लोबामोस ने जैसे अपनी आख़िरी बात कह दी थी।

बिल्चू के जाने के बाद, थोरोज़ की आवाज़ ने ख़ामोशी के कोरेपन पर अपने शब्दों से हस्ताक्षर किए। 'वो पूरी दुनिया को जंगल–युद्ध में झोंकना चाहता है लेकिन इससे जो महाविनाश होगा, उसका उसे अंदाज़ा भी नहीं है।'

'हमने इस धरती से जाने कितनी नस्लों का विनाश और जन्म देखा है...हमने कई जंगल–युद्ध अपनी आँखों से देखे हैं थोरोज़ और उनमें हिस्सा भी लिया है लेकिन इस बार अगर दुनिया इस महायुद्ध तक गई तो जो ताक़तें इस महाविनाश में हिस्सा लेंगी, वो सब बरबाद कर देंगी और उस वक़्त इस बात का फ़ैसला करने वाला कोई नहीं होगा, किसे बचना चाहिए था और किसे मरना चाहिए था।' सालन की आँखें जैसे कहीं दूर खोई हुई थीं।

'अगर हमारी आहुति देकर इस विनाश को रोका जा सकता है तो हम अपनी जान की परवाह किए बिना, दुष्ट जैल्डॉन के विनाश के लिए लड़ेंगे।' मकास ने दृढ़ आवाज़ में बोलते हुए सालन की तरफ़ देखा।

'आहुतियों की राख से जंग नहीं जीती जाती। जंग जीतने के लिए ज़िन्दा रहना ज़्यादा ज़रूरी है। हम पहले ही काफ़ी नुक़सान उठा चुके हैं, अब और साथियों की ज़िन्दगी को दाँव पर नहीं लगाया जा सकता। जिस तरह का ये महायुद्ध होगा, उसमें सबसे सस्ती अगर कोई चीज़ होगी, तो वो लोगों की ज़िन्दगियाँ होंगी।' सालन के शब्दों में गम्भीरता का पुट था।

'सबसे चिन्ताजनक बात ये है, इस विशाल और बर्बर सेना के मुकाबले, हम कितने योद्धा तैयार कर पाएँगे? इतनी बड़ी तादाद में फौज इकट्ठा करना, बहुत मुश्किल होगा। वो भी तब, जब दूसरी तरफ दुष्ट जैल्डॉन और शातिर लैनीगल हो।' वुन्टनब्रॉस ने अपने माथे पर सलवट डालते हुए कहा।

हूनास्पॉटी अपनी जगह से खड़ा हुआ–'दुश्मन कितना भी ताकतवर क्यों न हो, उसे हराया जा सकता है। जरूरत है, सही योजना और उस पर काम करने वाले बहादुर योद्धाओं की। क्या आपको याद नहीं, उस बहादुर सैनिक **क्लोचान** की, जिसने अकेले ही पाँच सौ सैनिकों की टुकड़ी को मार डाला था, केवल अपनी बुद्धि और हौसले के बल पर। या फिर पहले जंगल–युद्ध में लड़ने वाले उस साहसी योद्धा **हारा–हरास** की, जिसने अपनी चतुराई से, पेड़ों की टहनियों को धनुष में तब्दील किया और अकेले ही मुर्दाखोरों की छावनी को तबाह कर दिया था। या...वो नन्हा बौना **फ़ैलामूडस**...जिसने अपने पफरसे से, बत्तीस दानवों को मौत के घाट उतारा था। तादाद और ताकत, मायने रखती हैं महान सालन लेकिन ताकत से भी ज़्यादा ताकतवर अगर कोई चीज है, तो हौसला, चतुराई, हिम्मत और योजना...बस इन सबका सही इस्तेमाल हो जाए।'

'हम्म...' सालन बिना पलक झपकाए उसे एकटक देख रहे थे। उनके चेहरे से साफ लग रहा था वो किसी निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं।

जरूस ने अपनी जगह से खड़े होते हुए कहा, 'हमारे पास दुश्मन की ताकत और तादाद की पूरी और सटीक जानकारी है। हमें उसका ठिकाना भी मालूम हो गया है। हम ये इंतज़ार नहीं कर सकते कि वो कब युद्ध करेगा, हमें खुद पहल करनी होगी और इससे पहले, वो अपने वीभत्स इरादे पूरा कर पाए, उसे नेस्तनाबूद करना होगा। इसके लिए हमें आज और अभी से तैयारी शुरू करनी होगी और उससे भी ज़रूरी ये कि जंग का मैदान वो नहीं, हम चुनेंगे।'

'हमें महासभा की बैठक बुलानी होगी सालन! दुष्ट जैल्डॉन की ताकत तोलने के साथ–साथ, हमें अपनी ताकत की भी पैमाइश करनी होगी। हमें ये साफ होना चाहिए कि कौन इस महायुद्ध में साथ होगा और कौन नहीं। ख़ास बात ये भी है, जिन ताकतों से हमें लड़ना है, वो *बहादुर* नहीं, *धूर्त* हैं और धूर्तता हमेशा बहादुरी की पीठ में छुरा घोंपने में सफल हो जाती है। हमारे लोगों के बीच में, वो अपने भेदिए भी शामिल करा सकता है इसलिए हमें हर किसी को ठोक–बजाकर ये फ़ैसला लेना होगा कि किसे अपने साथ लेना है और किसे नहीं।' कैफ़ुआन पस्तर ने अपनी उँगलियों की रोशनीदार गाँठों को चटखाते हुए कहा।

'महासभा की बैठक के लिए सन्देशा भिजवाया जाए...वक़्त मुक़र्रर कर दो हूना...और कोई भी छूटना नहीं चाहिए। हमें हर सदस्य उसमें चाहिए। तमाम क़बीलों और प्रजातियों को सन्देश भिजवाओ कि वो अपने प्रतिनिधि भेजें...हर सन्देश के नीचे हमारे दस्तख़त लेना मत भूलना। दुनिया भर के योद्धाओं को ख़बर करो कि सालन ने उन्हें याद किया है।' दुनिया के सबसे बुज़ुर्ग शिशु के चेहरे पर इस वक़्त हल्की तमतमाहट और गहरे आत्मविश्वास के भाव थे।

'फैगुअस को सन्देश भिजवाओ...उन पाँचों के लिए हमारा विनम्र अभिवादन भी प्रेजित कराना हूना...बरसों गुज़र गए उनसे मिले।' बूढ़े फ़क़ीरों का ज़िक्र आते ही, सालन के चेहरे पर एक हल्की चमक तैर गई।

'तुम शिला–पुस्तक को पढ़ने में स्वाइली और जडाकी की मदद लो, उस लिखे नक़्शे को समझने में वो तुम्हारी मदद करेंगी।' थोरोज़ ने तीनों की तरफ देखा।

'हमें अब देर नहीं करनी चाहिए...अगर दुष्ट जैल्डॉन के इरादों के पूरा होने से रोकना है तो हमें वक़्त रहते इस सफ़र पर निकल जाना होगा।' मकास ने सालन की तरफ़ देखा।

'ज़रूर...' सालन ने पूरी गम्भीरता से उत्तर दिया। सभा स्थगित हो गई थी।

. . . . .

तीनों भाई इस वक़्त अपने कमरे में थे, नन्ही राक्षसी स्वाइली उस किताब पर झुकी हुई थी, जिसे वो काठ–घर से उठाकर लाए थे। जडाकी उनके पास ही हवा में तैर रही थी। सलार ने बेचैनी से स्वाइली से कहा, 'इ...इस नक़्शे को पढ़कर जल्दी बताओ...कि यहाँ तक कैसे पहुँचा जा सकता है और ये जगह कहाँ है? तुम कितनी देर से कोशिश कर रही हो इसे पढ़ने की मगर अभी तक तुमने कुछ भी नहीं बताया।' उसकी आवाज़ में उतावलापन था।

स्वाइली ने उसकी तरफ देखा। 'मैं अपनी पूरी कोशिश कर रही हूँ, थोड़ा सब्र कीजिए। इसमें अब कुछ भी नहीं उभर रहा।'

'उस नन्हे सितारे ने कहा था–'तालाब के जल में धेकर पढ़ना होगा।' जरूस ने उत्साहित होकर, सबकी तरफ देखा।

'यहाँ तालाब का पानी कहाँ से आएगा?' मकास ने सवालिया नज़रों से जरूस की तरफ़ देखा।

'उसकी चिन्ता मत करो।' जडाकी ने हवा में तैरते हुए कहा और उसकी धुएँदार आकृति, किताब के ऊपर मँडराने लगी। तभी उस कुहरे से, पानी की पतली–पतली धारें, किताब के ऊपर गिरने लगीं। पानी ऊपर गिरते ही किताब पर कुछ उभरना शुरू हो गया।

'ये दिख रहा है।' मकास ने जैसे खुशी से चीखकर कहा।

स्वाइली ने नक्शे को देखना शुरू किया और काफी देर तक एकटक उसे देखने के बाद उसने बोलना शुरू किया–'इसमे लिखा है...

'चौदह पहाड़ियों वाले गाँव से होकर गुज़रते हुए सफ़र शुरू होगा। उल्टे पेड़ों का जंगल परेशानी डालेगा... लेकिन 'मैगूमोला' परेशानी को खत्म कर सकता है। जंगल में है 'वो' जिसके दाँत और जबड़े, उसके पंजों में छिपे हैं। कोई उसे नहीं हरा सकता, सिवाय उसके, जो दुनिया में अपनी तरह का 'अकेला' हो। पेड़ों के नीचे की दलदल से कम खतरनाक है, पेड़ों के ऊपर की दलदल...उसी से जाना चाहिए...जंगल के ऊपर से उड़ने की कोशिश शर्तिया मौत लेकर आएगी।'

हड्डियों की नदी के ऊपर बने पुल से गुजरना होगा, नाखूनों का मैदान पार करने के बाद, बियाबान में बनी अकेली झोंपड़ी, जान ले सकती है। वो, जो किसी को नहीं देख सकते, वो किसी को नहीं छोड़ते, उनसे लड़ने वाला हारने के लिए अभिशापित है। इससे आगे केवल वही पढ़ सकता है, जिसने इतना सफ़र तय कर लिया हो...

-बेरीसब्लोच कुहाको-सीलन।'

इतना पढ़ने के बाद स्वाइली ने पढ़ना बन्द कर दिया। वो एकटक सलार की तरफ देख रही थी, जैसे पूछ रही हो, अब क्या करूँ। फिर आहिस्ता से उसके होंठ हिले, 'ये बैरीसब्लोच कुहाको–सीलन शायद इस किताब का लेखक है लेकिन इससे आगे की शिलाओं पर क्या लिखा है, उसे नहीं पढ़ा जा रहा। ऐसा लगता है जैसे किसी रूहानी ताक़त की परत इस पर चढ़ी हो।'

तभी थोरोज ने कमरे में प्रवेश किया। हमें सूचना मिली है, इस नन्ही बच्ची ने नक़्शे को हल कर लिया है।' उन्होंने स्वाइली की तरफ देखा।

तीनों हैरान थे कि अभी तो उस नन्ही राक्षसी ने किताब को पढ़ा है, इतनी जल्दी ये ख़बर थोरोज़ तक कैसे पहुँच गई लेकिन फिर उन्होंने अपना सिर झटक दिया।

थोरोज़ ने बोलना जारी रखा–'जिस सफ़र पर तुम्हें रवाना होना है, उस पर जाने से पहले कुछ ज़रूरी तैयारियाँ और उन साथियों की ज़रूरत पड़ेगी, जो इस यात्रा में तुम्हारे साथ होंगे।' थोरोज़ ने अपनी जगह से उठते हुए कहा। उनकी कमर का कछुए जैसा खोल अब काफी ठीक हो चुका था लेकिन उनके चलने के ढँग से लग रह था कि वो अब भी कमज़ोरी महसूस कर रहे हैं।

'कुछ ख़ास लोग तुम्हारे साथ जाएँगे और बाकी लोग यहीं जंग की तैयारी करेंगे। गोचो राक्षसी स्वाइली तुम्हारे साथ जाएगी क्योंकि केवल वही है, जो शिला–पुस्तक को उससे आगे पढ़ सकती है, जितना तुम जान चुके। उसकी रहस्यमयी ताक़तें तुम्हारे बहुत काम आएँगी। इस सफर पर तुम्हारे साथ, जलप्रेत जडाकी, वृक्षमानव जिल्वोकाट और वो बातूनी स्ट्रासोल...भी जाएगा, जिसका नाम गम्पूग्रास है।' थोरोज़ ने अपनी उँगलियों पर नाम गिनते हुए कहा।

'और एक ख़ास साथी तुम्हारे सफर में साथ होगा हैबूला...वो दानव–वंश का बेहद शक्तिशाली सदस्य है। उसका ज्ञान और जानकारियाँ, हर क़दम पर तुम्हारा साथ देंगी। उसने इतनी पुस्तकें और पाण्डुलिपियाँ पढ़ी हैं, जितना उसकी पाँच पीढ़ियों के लोगों में वज़न भी नहीं होगा। हमारा **तिलिस्मी–जत्था** कल सुबह यहाँ से कूच करेगा।' थोरोज़ की आवाज़ में पत्थर जैसी सख़्ती थी।

'अब तुम तीनों आराम कर सकते हो। तुम्हें बहुत लम्बे सफ़र पर निकलना है। एक और बात...अपनी मंज़िल हासिल करने के बाद, एक पल की भी देर किए बिना वापस लौट आना, हो सकता है तब तक जंग शुरू हो चुकी हो और वहाँ सबकी ज़रूरत हो। तुम लोग सफ़र पर निकल चुके हो, ये ख़बर अधिक समय तक दुष्ट जैल्डॉन से छिपी नहीं रहेगी इसलिए हर क़दम पर होशियार रहना। अब शुभरात्रि! तुम्हारे जाने के बाद बाकी लोगों को भी इस सफ़र की सूचना और सारी जानकारियाँ पहुँचानी हैं इसलिए आज की रात का एक–एक पल क़ीमती है।' सालन ने जरूस की तरफ देखते हुए

कहा।

तीनों अपने बिस्तर पर लेट गए लेकिन किसी की भी आँखों में नींद का एक कतरा तक नहीं था। सुबह होने से पहले ही सब उठ गए और चलने की तैयारी करने लगे। थोरोज़ की तरफ़ से सन्देश आया कि सब लोग किले के बड़े पफाटक के पास इकट्ठा होंगे। जब तीनों वहाँ पहुँचे तो जिल्वोकाट और स्वाइली उनसे पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे। कुछ देर के इंतज़ार के बाद जडाकी भी पहुँच गई।

तभी 'धम–धम' की तेज आवाज ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींचा। एक बड़ा पैर 'धम' से उनके पास ज़मीन पर आ टिका। सबकी नज़रें ऊपर चली गईं, विशालकाय पैर से जुड़ी एक पतली टाँग, आसमान की तरफ जा रही थी। उसके ऊपर दानव जैसे ताकतवर शरीर और पतले बाजुओं वाला हैबूला वहाँ खड़ा था। इस वक्त भी उसके हाथ में एक छोटी–सी किताब दबी हुई थी। उसने आकर सबकी तरफ देखा और फिर अपनी किताब पढ़ने में मगन हो गया।

हर कोई आ गया था लेकिन अभी तक वो पतला सींकडी कहीं नजर नहीं आ रहा था, जिसका तीनों भाइयों को बेसब्री से इंतज़ार था। बहुत दिनों से न तो वो किले में कहीं नजर आया था और न ही ये मालूम हो सका था कि सालन ने उसे कहाँ भेज रखा है। तब तक वहाँ, हूनास्पॉटी, कास्टन ब्रूड, वुन्टनब्रॉस, लोफा, कैफ़ुआन पस्तर और कई दूसरी गोचो राक्षसियाँ भी आ गई थीं, जो स्वाइली के पास खड़ी बातें कर रही थीं।

सालन और थोरोज़ अभी तक नहीं आए थे। तभी सबके कानों में एक आवाज़ पड़ी–'बीमार झींगुर की मूँछ के बाल जैसा मुँह लटकाए क्यों खड़े हो सब लोग। क्या तुम्हें नहीं पता, महान स्ट्रासोल...गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फ़ैलीटस का आगमन होने वाला है, केंचुए के अण्डो!' उसे देखते ही सबके होठों पर मुस्कराहट तैर गई। केवल हैबूला उसे हैरत से देख रहा था।

'इन सब नामुरादों को तो शायद रात को नींद नहीं आती, जो इतनी सुबह उठकर यहाँ आकर खड़े हो गए लेकिन मुझे नींद से ज़्यादा कोई चीज प्यारी नहीं है...ख़रगोश के कान पर बैठे पिस्सुओं।'

उसके आते ही माहौल पूरी तरह बदल गया था। सब लोग जहाँ चुपचाप खड़े हुए थे, वहीं अब हर कोई चंचलता से भर गया। तभी सालन और थोरोज़ आते दिखाई दिए। सभी ने उनका अभिवादन किया और उनके बोलने का इंतज़ार करने लगे। दुनिया के सबसे बुजुर्ग शिशु के चेहरे पर इस वक़्त थोड़ी चिन्ता के भाव थे। थोरोज़ का चेहरा बिल्कुल भावहीन और सपाट नज़र आ रहा था।

थोरोज़ ने सबकी तरफ़ मुख़ातिब होते हुए, खरखराती, बीमार–सी आवाज में कहना शुरू किया, 'मेरे बच्चो! तुम्हें जिन ख़तरनाक जगहों और भयानक सफ़र पर जाना है, उसके बारे में तुम्हें सब कुछ बता दिया गया है। इस पहाड़ी पर मौजूद हर किसी को मैंने हमेशा अपने बच्चों की तरह प्रेम दिया है। तुम्हें और इन बहादुर नौजवानों को मौत के मुँह में नहीं भेज सकता लेकिन पूरी दुनिया पर जो ख़तरा है, वो बहुत बड़ा है, अगर कुछ लोगों के ख़तरनाक मंसूबे पूरे हो गए तो शायद न ये पहाड़ी रहे और न ये दुनिया इस रूप में रहे। हमें लड़ना होगा, जूझना होगा और जीतना होगा।'

हर कोई उनकी कही बात को ग़ौर से सुन रहा था–'मुझे विश्वास है, तुम सब अपनी मंज़िल हासिल करके लौटोगे। मैं और मेरा प्रेम, इस सफ़र में हर पल तुम्हारे साथ होगा। अगर ज़िन्दा रहे तो धरती को ख़ुशहाल देखोगे और अगर न रह पाए तो दुनिया की ख़ुशहाली के लिए, तुम्हारा जीवन खाद बनेगा। हम जंग की तैयारी में हैं। तुम्हारे जाने के बाद, हमारे लोगों की सेनाएँ और उनके योद्धा इकट्ठा होना शुरू हो जाएँगे।'

हर कोई चलने के लिए तैयार था। थोरोज़ ने उनकी तरफ़ देखा–'मेरे बच्चो...हैबूला तुम्हें रास्ता दिखाएगा। **चौदह–पहाड़ियों–वाला–गाँव** तुम्हारा सबसे पहला पड़ाव होगा। हर मंज़िल तुम्हें अगली मंज़िल का पता सुझाएगी। अब तुम्हें रवाना होना है। ये पहाड़ी दुनिया की नज़रों से ओझल है लेकिन शातिर लैनीगल को अब इस जगह पर शवफ हो गया है। उसे लगता है, यहाँ कुछ ऐसा है, जो बहुत विशाल है लेकिन वो उसे नज़र नहीं आ रहा इसलिए उसने इस जगह की चौकसी शुरू कर दी है। तुम सब को बहुत सावधनी से यहाँ से निकलना होगा। जितने वक़्त तक ये बात खुफिया रखी जा सके कि तुम शाश्वत–जल की खोज में निकल गए हो, उतना बढ़िया।'

'हम अपनी मंज़िल को पाकर लौटेंगे महान थोरोज़!' सलार की आवाज़ में एक चट्टानी सख़्ती थी। उन्होंने एक बार उसके शब्दों को तौला और फिर आहिस्ता से मुस्करा भर दिए। उस रात, पहाड़ी के एक खुफ़िया रास्ते से, वो जत्था नीचे घाटी तक पहुँचा। सालन और थोरोज़ उनकी अगुवाई कर रहे थे, जत्थे के सारे सदस्य, स्वाइली, जडाकी, जिल्वोकाट, पतला सींकडी, हैबूला और तीनों भाई, बहुत ख़ामोशी के साथ, दबे पाँव आगे बढ़ रहे थे। एक खुली जगह में आने के बाद, सब ठहर गए।

'हैबूला! तुम्हारी जिम्मेदारी बढ़ गई है।' सालन ने विशाल दानव की तरफ देखते हुए कहा।

उसने केवल सहमति में सिर हिलाया जैसे पूरी तरह आश्वस्त करना चाहता हो। बस, एक आवाज थी, जो सबसे बाद में सुनी गई—विदा मेरे बच्चो।

उसके बाद पूरा दल अपने सफर पर निकल गया।

मेरी छेनी और हथौड़ी भी एक सफर पर हैं। मैं उनके हर पड़ाव का चश्मदीद हूँ। वो पड़ाव, जिन तक पहुँचकर मुझे भी ऐसा महसूस होता जैसे अब बस मंजिल के पास है लेकिन वो फिर उतने ही दूर दिखते, जितना संथाल के बेटों को वो पानी दिख रहा था। वो रहस्यमय पानी, जिसे पाने के लिए काली ताकतें सदियों से इंतजार कर रही थीं। मेरे पिता अक्सर कहा करते—**'ये सम्पूर्ण अस्तित्व एक रहस्य है, जितना कुछ अजाना बचा है, सब रहस्य है, चाहे वो कितना ही 'सहज' क्यों न हो।'**

लकड़ी के संदूकों में बन्द इस किताब के इन हिस्सों पर भी ऐसे ही रहस्य दर्ज हैं, जिन्हें केवल कुछ रहस्यदर्शी ही जानते थे। मेरी बूढ़ी उँगलियों में इस वक्त मोम की वो पट्टियाँ हैं, जिन पर उस गाँव का जिक्र है, जिसमें केवल रहस्यदर्शी ही रह सकते थे। वो रहस्यदर्शी, जिन्हें कुछ समय के लिए, एल्गा–गोरस हिफाजत से रखने के लिए सौंपी गई थी। वो पट्टियाँ, जिन पर लिखा है, उस रहस्यदर्शी के बारे में, जिसके बारे में कहा जाता था कि वो उन रहस्यों का भी ज्ञाता है, जिन्हें ईश्वर भी बनाकर भूल गया। साथ ही वो रहस्यमय और विलक्षण जलपोत, जिसके भीतर सोई खूबसूरती ने उन्हें बदसूरती से बचाया। साथ ही जम्हाई लेने वाली वो पहाड़ियाँ, जिनके बीच उन्होंने एक रात गुजारी।

रहस्यदर्शियों का गाँव

अध्याय बीस

उसके बाद, वो बस चलते रहे। रास्ते में हैबूला उन्हें दिशाओं का संकेत करता और वो बढ़ते रहे। सब एकदम ख़ामोश थे, सालन का निर्देश था, पहले दिन के सफ़र में कोई भी आपस में बात न करे, उनकी आवाज़ दुष्ट जैल्डॉन को इस बात का पता दे सकती थी कि वो सफ़र पर निकल गए हैं। सुबह होने तक वो काफी दूर निकल आए लेकिन कोई भी रुकना नहीं चाहता था। वो चलते रहे, तब तक, जब तक आसमान के सितारे अपनी पूरी चमक नहीं बिखेरने लगे।

उस रात उन्होंने पहाड़ियों के बीच ठहरकर थोड़ा आराम किया और सुबह होने से पहले अपने सफ़र पर निकल गए। उनके बीच बातें तो होतीं लेकिन बहुत कम। तब तक कोई ज़्यादा नहीं बोलना चाहता था, जब तक वो उस सीमा से बाहर न निकल जाए, जहाँ से उनके ध्वनि–सन्देशों का पता लगाया जा सके। सबसे ज़्यादा हैरत की बात ये थी कि इस पूरे ख़ामोश सफ़र में सबसे ज़्यादा चुप अगर कोई था तो वो पतला सींकड़ी था। उसने उस दिन से एक बार भी अपनी बक–बक नहीं की थी। लगातार चार रातों तक चलने के बाद, हैबूला ने उन्हें वो संकेत दिया, जो बता रहा था कि वो अब चौदह पहाड़ियों वाले गाँव के आसपास ही हैं।

एक बड़े मैदान के बाद, दूर–दूर तक पहाड़ियों की एक लम्बी क़तार नज़र आ रही थी। हर तरफ़ ऐसा सन्नाटा था जैसे हवा भी होंठों पर उँगली रखकर उन्हें ख़ामोशी से देख रही हो।

जिल्चोकाट ने धीमे स्वर में कहा, 'यहाँ तक तो आ पहुँचे लेकिन न तो कोई गाँव नज़र आ रहा है और न चौदह पहाड़ियाँ?'

उसकी बात सुनकर सबने बस उसे देखा भर, कोई कुछ नहीं बोला।

काफी आगे जाने पर एक बड़ा मैदान नज़र आया, जिसके बीच में छोटी–छोटी फूस की झोंपड़ियाँ बनी हुई थीं। मैदान चारों तरफ़ से पहाड़ियों से घिरा हुआ था। पतले सींकड़ी ने गिनती शुरू की–'एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह...तेरह, चौदह। चौदह...ये तो पूरी चौदह हैं नामुरादो!' उसने बहुत हल्की आवाज़ में कहा।

झोंपड़ियों के बीच में न तो कोई हलचल हो रही थी और न ही कोई दिखाई दे रहा था। उन्होंने पहाड़ी से नीचे उतरकर गाँव तक जाने का फ़ैसला किया।

हर कोई बहुत आराम से पाँव रखकर आगे बढ़ रहा था लेकिन हैबूला के भारी क़दमों से न चाहते हुए भी 'धम–धम' की आवाज़ हो रही थी। चारों तरफ़ सिर उठाए खड़ी चौदह पहाड़ियाँ, चौदह दैत्यों की तरह लग रही थीं, जिन्होंने गाँव को अपने घेरे में ले रखा हो। जरूस ने खुद को सबसे आगे कर लिया और कान लगाकर कोई आहट सुनने की कोशिश की लेकिन कहीं से भी कोई आवाज़ नहीं आ रही थी।

अब वो गाँव के एकदम पास खड़े थे लेकिन हर झोंपड़ी अब भी उतनी ही शान्त थी। जरूस ने जडाकी को इशारा किया, वो हवा में तैरती हुई आगे बढ़ी और एक झोंपड़ी के आसपास मँडराने लगी। झोंपड़ी में एक छोटी खिड़की बनी हुई थी लेकिन वो बन्द थी इसलिए बाहर से कुछ भी देखना संभव नहीं था। उसने इशारे से बताया कि यहाँ से तो कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा।

हैबूला एक झोंपड़ी की खिड़की से भीतर झाँकने की कोशिश कर रहा था कि अन्दर से एक तेज़ आवाज़ आई–'किसी के घर में ताकझाँक करना, किसने तुम्हें सिखाया भद्दे दानव?'

वो एक झटके से पीछे हट गया। आवाज़ सभी ने साफ़ सुनी थी, इसका मतलब कोई भीतर था। वो झोंपड़ी का दरवाज़ा खटखटाना चाहते थे लेकिन उन्हें उसकी ज़रूरत नहीं पड़ी। वहाँ बनी सारी झोंपड़ियों के फूस के दरवाज़े, एक

साथ चरमराकर खुल गए।

तेज हवा के बीच उन्होंने देखा, हर दरवाज़े पर एक–एक लम्बे कद का बूढ़ा खडा हुआ था। सबके बदन पर केवल एक चोगा था और उन सबकी लम्बी सफेद दाढ़ी हवा में लहरा रही थी। अच्छे से देखने पर उन्होंने देखा, कुछ झोंपड़ियों के दरवाजों पर कुछ बूढ़ी औरतें भी खडी हुई थीं। उनके चेहरों पर झुर्रियों का ऐसा जाल बिछा हुआ था जैसे जुलाहे का उलझा हुआ सूत।

'आओ! तुम्हारा स्वागत है संथाल के बेटों।' एक भारी आवाज़ गूँजी और जिस झोंपड़ी के बाहर हैबूला खड़ा हुआ था, उसके दरवाजे पर खडे लम्बे बूढ़े ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया–'रहस्यदर्शियों और स्वप्नद्रष्टाओं का गाँव तुम्हारा स्वागत करता है।'

पूरा जत्था, हैरत के साथ उन सबकी तरफ देख रहा था। सबसे आगे वाले बूढ़े के होंठ फिर हिले, 'तुम्हारे आने का पता, हमें सौ साल पहले चल गया था, लोग तुम्हारे आने का इंतज़ार कर रहे थे, हमारा पूरा गाँव प्रतीक्षारत था आम–नक्षत्रा–में–जन्मे–खास–बच्चों के लिए।'

'अ...आप...आप कौन हैं बुजुर्गवार?' जरूस ने हिचकते हुए उससे पूछा। हवा की साँय–साँय के बीच, अपनी ही आवाज उसे ठीक से सुनाई नहीं दी लेकिन बूढ़े ने सुन लिया था।

'मेरे खयाल से हमें मेहमानघर में चलना चाहिए, वहीं सारी बातें होंगी।' बूढ़े ने उन सबकी तरफ देखते हुए कहा।

अब तक, दरवाजों पर खड़े बाकी लोग भी, चलते हुए पास आ गए थे। उनमें से कई तो इतने ज़्यादा कमज़ोर और उम्रदराज लग रहे थे जैसे खड़े भी नहीं हो पाएँगे लेकिन सब एकदम चुस्ती और मजबूती के साथ खड़े थे।

उस बूढ़े ने उन्हें अपने पीछे आने का इशारा किया और सब लोग चुपचाप उसके पीछे चल दिए। गाँव के बीचोबीच, एक विशाल झोंपडी बनी हुई थी, जिसकी ऊँचाई, ताड़ के किसी बडे पेड़ की तरह थी। जब वो वहाँ पहुँचे तो एक बूढ़ी औरत पहले ही उसके दरवाज़े पर खड़ी हुई थी। उसने केवल दो शब्द कहे–'आ गए?' और फिर भीतर चली गई।

हैबूला को झोंपडी के बाहर ही रुकना पड़ा, उसकी उँफचाई ने उसे भीतर जाने की इजाज़त नहीं दी।

भीतर जमीन पर फूस बिछा हुआ था। वहाँ, पत्थर की बहुत सारी वज़नी शिलाएँ रखी हुई थीं, जो शायद बैठने के लिए इस्तेमाल होती थीं क्योंकि उनके ऊपर वाला हिस्सा बहुत चिकना और समतल नज़र आ रहा था। औरतों और पुरुषों को मिलाकर वो लगभग पचास थे।

सबसे आगे वाले बूढ़े ने अपना परिचय दिया, उसका नाम **सीकोस कैसन** था। महिलाओं और पुरुषों को मिलाकर, चौदह पहाड़ियों वाले गाँव की आबादी, कुल पचास थी। दुनिया का ऐसा अकेला गाँव, जहाँ केवल स्वप्नद्रष्टा और रहस्यदर्शी ही रह सकते थे। जहाँ रहता था, **ड्रीमोस**, दुनिया का सबसे बुजुर्ग रहस्यदर्शी, जिसके बारे में दंतकथाएँ थीं, वो इतने रहस्यों का द्रष्टा है कि खुद रहस्यों–का–रहस्य बन गया है। कहा जाता था कि वो उन रहस्यों के बारे में भी जानता है, जिन्हें ईश्वर भी बनाकर भूल गया।

'हमारा गाँव तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था नौजवानो...दुष्ट ताक़तें इकट्ठा हो रही हैं, दुनिया उस युद्ध की तरफ खिंच रही है, जिसके स्वप्न...**ड्रीमीड्रग** सदियों से देख रहा है।' बूढ़े ने पास बैठे एक बेहद कमज़ोर बूढ़े की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। उसने सहमति में अपनी गर्दन ऐसे हिलाई जैसे बिना कुछ कहे ही सब कह देना चाहता हो।

वो अद्‌भुत किताब, बरसों तक हमारे गाँव में छिपाकर रखी गई, सारी दुनिया से छुपाकर। महायुद्ध अगर हुआ तो पूरी धरती का विनाश निश्चित है। किताब की ताक़तें बेपनाह हैं, वो किताब धरती को दोबारा रच सकती है और विनाश भी कर सकती है।' एक बूढ़ी औरत ने उठते हुए कहा।

'तुम्हारी चिन्ताएँ वाजिब हैं **हैरीसिया**!' सीकोस ने बूढ़ी औरत की तरफ़ देखा। 'महायुद्ध की तैयारियाँ हो चुकी हैं। 'वो' अपनी सेना तैयार कर चुका है, इस जंग में जो जातियाँ, प्रजातियाँ और प्राणी हिस्सा लेने वाले हैं। उन्हें इससे पहले दुनिया ने कभी युद्ध में नहीं देखा होगा। लेकिन इस जंग का अतीत, वर्तमान और भविष्य...तुम सब जानती हो। क्या वाक़ई इसे रोका जा सकता है? क्या इसे रोका जाना चाहिए? इसे होने देने या न होने देने का उत्तरदायित्व, अज्ञात ताक़तों पर है और उन्हें अपना काम करने देना चाहिए।' बूढ़े की आँखों में जैसे हज़ारों रहस्य गड्‌डमड्‌ड हो रहे थे।

'शायद तुम ठीक कहते हो कैसन! लेकिन रहस्यदर्शियों का गाँव, इस जंग से अछूता नहीं रह सकता। चाहते हुए भी या न चाहते हुए भी, हम इस जंग का हिस्सा हैं। उस किताब की हिफ़ाज़त का ज़िम्मा कहीं हमारा भी था। अगर आज वो ऐसी ताक़तों के हाथों में है, जो उसका गलत इस्तेमाल कर सकती हैं, तो उसका ज़िम्मा, कहीं हम पर भी आता है।' बूढ़ी

औरत, जिसका नाम हैरीसिया था, उसने इतनी खरखराती हुई आवाज में अपनी बात कही जैसे किसी घड़े में काँच की गोलियाँ डालकर हिला दी हों।

जरूस ने अपनी जगह से उठते हुए कहा, 'हम जानना चाहते हैं, क्या आपको मालूम था, ये सब होने वाला है? अगर हाँ, तो इस जंग को इस मुकाम तक आने से रोका क्यों नहीं जा सका? क्यों दुनिया के इतने ताकतवर और जहीन लोग इतने बेबस और असहाय नजर आ रहे हैं। हमारे जन्म से भी पहले से ये षड्यन्त्रा रचा गया, वक्त था कि जिम्मेदार लोग सब कुछ समझ सकें और संभाल सकें, लेकिन क्यों ऐसा नहीं हो सका?'

ऐसा लगा, जैसे वो पचास के पचास, एक–दूसरे की तरफ देख रहे हों। फिर उनमें से एक उठा, जिसका सिर लम्बा और गर्दन छोटी थी। उसकी सफेद दाढ़ी औरों से ज्यादा लम्बी और बेतरतीब थी। हाथ में एक मुड़ा–तुड़ा डण्डा था और जिस्म पर एक लाल चोगा।

उसने बारी–बारी से पूरे जत्थे की तरफ देखा, उसके सूखे होंठ आहिस्ता से हिले, **'घटनाओं को जानना और उन्हें बदलना, दोनों अगल–अलग चीष हैं। वक्त को बलपूर्वक बदलने की हर कोशिश, उसके उस अनछुए रूप को विकृत करती है, जिसने अभी जन्म भी नहीं लिया। ऐसी कोशिशें उस अजन्मे पल, उस लम्हे का गर्भपात करती हैं, जिसे भविष्य को जन्म देना है। इसलिए ऐसे लोगों के हाथों में हमेशा केवल एक चीष आती है और वो है वक्त का लहूलुहान और मुर्दा भ्रूण। यथार्थ, जागती आँखों से देखा गया स्वप्न है और स्वप्न, सोती आँखों से देखा गया यथार्थ।'** बात पूरी करके उसने ऐसे उनकी तरफ देखा, जैसे जानता हो कि उन्हें उसकी बात समझ नहीं आई होगी। जत्थे में कुछ सिर ऐसे हिले जैसे उसकी बात समझ गए हों।

'हम अपने सफ़र पर निकल चुके हैं और मंज़िल पाने से पहले रुकेंगे नहीं।' सलार ने उनकी तरफ देखते हुए कहा।

'ये *ही* होना चाहिए और ये ही *होना* था।' उनमें से एक के होंठ आहिस्ता से बुदबुदाए।

'उसे तुम्हारे बारे में पता चल चुका है कि तुम शाश्वत–जल की खोज में निकल चुके हो। वो तुम्हें जिन्दा हासिल करना चाहता है और इसके लिए, उसने अपनी सबसे ताक़तकवर फ़ौज को भेज भी दिया है।' सीकोस कैंसन ने चहलकदमी करते हुए कहा।

'सबसे ताक़तवर फ़ौज?' जिल्वोकाट के पत्तेदार चेहरे पर सवालिया निशान उभरे लेकिन किसी को दिख नहीं सके।

'हाँ, सबसे ताक़तवर फ़ौज...फ़्रलडीसोल्स, वो चलता–फिरता समन्दर हैं। उनकी बेपनाह ताक़तों के आगे बहुत कम लोग टिक पाएँगे।' ड्रीमीड्रग ने अपनी उँगलियाँ चटखाते हुए कहा।

'हम पहले भी *इनके* बारे में सुन चुके हैं।' मकास ने शान्त भाव से कहा।

बूढ़ी रहस्यदर्शी हैरीसिया ने बीच में खड़े होते हुए कहा, 'चौदह पहाड़ियों के *जम्हाई* लेने का वक़्त हो गया है। हमें कुछ देर ख़ामोश रहना होगा।'

पूरे जत्थे ने ऐसे उसकी तरफ़ देखा जैसे समझ न पाए हों कि वो क्या कह रही है लेकिन बाक़ी सब लोग अपनी जगह पर एकदम शान्त बैठे थे। तभी ऐसा लगा जैसे बाहर कोई ज़ोरदार गड़गड़ाहट हुई हो। पत्थर से पत्थर रगड़ने जैसी आवाज़ कुछ देर तक होती रही, फिर सब शान्त हो गया। इस बीच कोई कुछ नहीं बोला था।

'...तो मैं कह रहा था...फ़्रलडीसोल्स, वो चलता–फिरता समन्दर हैं। उनकी बेपनाह ताक़तों के आगे बहुत कम लोग टिक पाएँगे।' ड्रीमीड्रग ने अपनी बात को पूरी की।

'**सौ–परत–वाला–जलपोत** इनकी मदद करेगा' हैरीसिया ने सीकोस की तरफ़ ऐसे देखा जैसे उसे याद दिलाना चाहती हो कि वो कुछ ख़ास बात भूल रहा है।

'हम्मम...शायद ये ठीक रहेगा।' बूढ़े ने गर्दन हिलाते हुए अपनी दाढ़ी को सहलाया।

'हमें आपसे मदद की उम्मीद है...महान सालन ने आपके लिए खास सन्देशा भिजवाया है। उन्हें भरोसा है, आप इस जंग का भविष्य तय करने में अपनी भूमिका निभाएँगे।' जडाकी ने हवा में तैरते हुए, पहली बार अपनी चुप्पी तोड़ी। रहस्यदर्शियों के समूह ने उसकी तरफ़ ऐसी निगाहों से देखा, जैसे कह रहे हों–'इसके लिए उनका शुक्रिया।'

'शिला–पुस्तक ने तुम्हें यहाँ तक भेजा है नौजवानो! आगे भी वो तुम्हारी मदद करेगी, बस, इस शरारती लड़की को हिफ़ाज़त से रखना। **वुफदरती तोहफ़ेफ, नक्षत्रों से गिरी दुर्लभ बूँद की तरह होते हैं, अगर तुमने सही जगह और सही समय पर अपने होंठ नहीं खोले तो तुम्हारा हलक़, अनन्त काल तक भी प्यासा रह सकता है।'** सीकोस ने सलार की तरफ़ देखते हुए कहा।

'हम उसे दीपक की लौ की तरह सुरक्षित रखेंगे। थोरोज ने कहा था कि इससे आगे का रास्ता केवल आप सुझा सकते हैं' जिल्चोकाट ने बातचीत में हिस्सा लेते हुए कहा।

'हमें खुशी होगी, वृक्षमानव जिल्चोकाट...तुम बहुत ख़ास और महान घटनाओं के साक्षी और सहभागी बनने वाले हो।' रहस्यदर्शी के चेहरे पर इस वक्त अजीब–सी मुस्कराहट थी।

'चलो हैरीसिया...जलपोत निकालने का वक़्त आ गया है मगर आराम से लाना **'उसे'** ज्यादा परेशानी न हो।' सीकोस ने हैरीसिया के झुर्रीदार चेहरे की तरफ़ देखते हुए कहा।

बूढ़ी औरत तेजी से झोंपड़ी से बाहर निकल गई। बाहर, हैबूला झोंपड़ी की छत से तिनके निकाल कर अपने दाँत साफ़ कर रहा था। वो पफूस की झोंपडियों के बीच गुम हुई और कुछ देर बाद वापस लौटी। उसके हाथ में लकड़ी की पतली छीलन से बना, एक बेहद छोटा जलपोत था, उसका आकार मुश्किल से इतना था जैसे किसी बच्चे ने बारिश में चलाने के लिए बनाया हो।

लकड़ी की छीलन से बना जलपोत, उसने ड्रीमोस की हथेली पर लाकर रख दिया। जलपोत की बाहरी सतह बेहद चिकनी, चमकदार और इतनी पीली थी जैसे किसी बढ़ई ने अभी रंदा चलाकर चमकाई हो। मकास को लगा, पतला सींकड़ी कुछ बोलने के लिए उतावला हो रहा है लेकिन उसने जैसे ही उसे घूरकर देखा, वो चुप हो गया।

'सौ–परत–वाला–जलपोत तुम्हारी पूरी मदद करेगा, इसे संभालकर रखना।' बूढ़े ने बड़ी एहतियात के साथ, नाव जरूस की तरफ़ बढ़ाई।

उसने बूढ़े की हथेली से नाव को उठा लिया और उलट–पलटकर देखने लगा। उसे समझ नहीं आ रहा था, ये नन्हीं–सी नाव उनकी क्या मदद कर सकती है लेकिन अपने मन के भावों को उसने चेहरे पर नहीं आने दिया। उसकी तन्द्रा हैरीसिया की आवाज से भंग हुई।

'तुम सोच रहे हो नौजवान कि ये नन्हा जलपोत तुम्हारी क्या मदद कर पाएगा लेकिन वक्त आने पर तुम्हें खुद तुम्हारे सवाल का जवाब मिल जाएगा।' बूढ़ी औरत की बात पूरी होते ही वो सकपका गया और इध्र–उध्र देखने लगा।

'बाहर बैठे उस मोटे दानव से कहो कि वो झोंपड़ी की छत से ज़्यादा तिनके न निकाले, वरना बारिश में ये टपकने लगेगी।' सीकोस ने सलार की तरफ़ देखते हुए कहा। उसकी बात सुनकर सबके चेहरे पर एक हल्की–सी मुस्कराहट तैर गई। सलार ने स्वाइली को इशारा किया, वो झोंपड़ी से बाहर चली गई।

हैरीसिया ने सबकी तरफ़ देखा और पलकें झपकाते हुए बोली, 'सुबह तुम सब लोग यहाँ से रवाना हो सकते हो, तब तक तुम यहीं आराम करो, उम्मीद करती हूँ, फूस के बिस्तर पर तुम्हें अच्छी नींद आएगी। तुम्हारे भोजन के लिए कुछ फल भिजवा देती हूँ, बाकी बातें सुबह होंगी।' उसने सबको संकेत किया और आहिस्ता–आहिस्ता सब बाहर जाने लगे।

उनके बाहर निकलते ही पत्थर के आसन अपने–आप खिसककर, झोंपड़ी की दीवार से जा लगे। झोंपड़ी के बीच में अब इतनी जगह हो गई थी कि बहुत सारे लोग एक साथ उसमें आराम कर सकते थे।

जैसे ही आख़िरी बूढ़ा बाहर निकला, ऐसा लगा जैसे किसी ने पतले सींकड़ी के होंठों से लगा हुआ ढक्कन हटा दिया हो–'बूढ़े मगरमच्छ के कीड़े खाए ये पचास दाँत, सदियों से यहाँ रहते हैं। सारी दुनिया इन्हें रहस्यदर्शी कहती है, कहते हैं ये लोग दुनिया के हर रहस्य को जानते हैं लेकिन क्या ये इस बात को बता सकते हैं कि हाथी की सूँड इतनी लम्बी और पूँछ इतनी छोटी क्यों होती है? और हाँ...झींगुर की मूँछ के अध्जले बाल जैसी वो बुढ़िया, जो छोटी–सी नाव देकर गई है, उससे बड़ा मज़ाक़ और क्या करती वो?'

'तुम चुप रहो गम्पू! जिनके बारे में तुम बात कर रहे हो, महान सालन भी उन्हें नमस्कार करते हैं। अपनी ये बक–बक बन्द करो और एक कोने में बैठकर, अपने सड़े हुए नाखून चबाओ क्योंकि हमारे लिए तो स्वादिष्ट फल आने वाले हैं।' जिल्चोकाट ने जैसे उसे छेड़ते हुए कहा।

तभी स्वाइली भीतर आई और तमतमाए चेहरे के साथ बोली, 'उस कमबख़्त हैबूला ने इस झोंपड़ी की छत का पूफस निकाल–निकाल कर अपने सारे गंदे दाँत साफ़ किए हैं और अब अपने कान की सफ़ाई इन्हीं तिनकों से कर रहा है। इतनी किताबें पढ़ने के बाद भी ये दानव...दानव ही रहा।'

स्वाइली की बात पर सब केवल मुस्कराकर रह गए। तीनों भाइयों ने अपनी झोलियाँ वहीं एक तरफ़ रख दीं और सब लोग आराम से झोंपड़ी की ज़मीन पर बिछे गद्देदार फूस पर बैठ गए। उन्हें महसूस हुआ, इससे ज्यादा मुलायम और नरम फूस उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। पतले सींकड़ी ने तो सूखी हुई घास पर लोटपोट होना शुरु कर दिया, वो उस पर

हर तरफ लुढ़क रहा था।

उस रात वो सब आराम से, फूस की उस झोंपडी में सोए। फूस का बिछौना जैसे उनके जिस्म की एक–एक नस की थकान चूस लेना चाहता था। रात को हैबूला पहरे पर रहा, हालाँकि सीक्रोस का कहना था कि इसकी कोई ज़रूरत नहीं है लेकिन वो सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं करना चाहते थे। रात में चौदह पहाड़ियों के जम्हाई लेने की वजह से एकाध बार ही उनकी आँख खुलीं।

अगली सुबह, ये देखकर उन्हें हैरत हुई, रहस्यदर्शियों के पूरे गाँव में कहीं कोई हलचल नहीं थी। फिर जैसे ही वो उस विशाल झोंपडी से बाहर निकले, खट–खट करके सारी झोंपड़ियों के दरवाज़े खुलते चले गए। वो पचास के पचास एक–एक कर बाहर आ गए।

'तुम्हें चौदह पहाड़ियों की *अँगड़ाई* का इंतज़ार करना चाहिए था, वो बाहर निकलने का सबसे सही वक्त होता है।' हैरीसिया ने अपने झुर्रीदार माथे पर और ज़्यादा सलवटें डालकर कहा। सबने एक–दूसरे की तरफ ऐसे देखा जैसे समझने की कोशिश कर रहे हों कि आखिर ये *अँगड़ाई* का क्या मामला है। रात का वो वाकया तो उन्हें याद था, जब बूढ़ी रहस्यदर्शी हैरीसिया ने कहा था कि–'चौदह पहाड़ियों के जम्हाई लेने का वक्त हो गया है, हमें कुछ देर ख़ामोश रहना चाहिए।'

तभी उन्हें ऐसा लगा जैसे पहाडियों की तरफ से कोई चट्टान चट–चट करके चटख रही हो। चारों तरफ सिर उठाकर खडी पहाड़ियाँ ऐसे ऊपर उठीं जैसे वाकई अँगड़ाई ले रही हों। फिर आवाज आनी बन्द हो गई–'हाँ, तो तुम्हारी रात कैसी गुजरी सालन के भेजे मेहमानो?' सीक्रोस ने आगे आते हुए उनसे पूछा।

'ये यकीनन कमाल की थी, आपकी मेहमाननवाजी का शुक्रिया।' स्वाइली ने उसके अल्फ़ाज बीच में ही लपकते हुए कहा। दूर आसमान में सूरज की लाली दिख रही थी।

मेरे खयाल से अब हमें निकलना चाहिए...हमें बहुत लम्बा सफ़र तय करना है।' मकास ने मुस्कराकर हैरीसिया की तरफ़ देखा, जो लगातार पतले सींकड़ी को घूरे जा रही थी। वो बेहद भद्दे तरीवेफ से अपने लम्बे नाखूनों को कुतर–कुतर कर खा रहा था।

सींकडी ने कुछ बोलने के लिए मुँह खोला लेकिन वृक्षमानव जिल्चोकाट ने उसकी बात पूरी होने से पहले ही बोलना शुरू कर दिया–'अहह...शायद ये ही ठीक रहेगा...क्योंकि हमें ज़्यादा से ज़्यादा सफ़र दिन में तय करना चाहिए।'

उसने ऐसी नजरों से पतले सींकड़ी को घूरा जैसे कह रहा हो–'अपनी लम्बी जबान को काबू में रखो।'

'क्या मैं ये विश्वास कर लूँ कि तुम इस जलपोत को हिफ़ाज़त से रख सकोगे और इसका सही इस्तेमाल भी करोगे?' सीक्रोस ने जरूस के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा।

'यकीनन...' जरूस ने केवल इतना ही कहा।

'जलपोत के भीतर सोने वाली **ख़ूबसूरती**, तुम्हें हर **बदसूरती** से बचाएगी, अब तुम अपने सफ़र पर निकल सकते हो नौजवानों लेकिन याद रखना जब तुम वापस लौटोगे, एक ऐसी जंग तुम्हारा इंतज़ार कर रही होगी, जो पूरी दुनिया का भविष्य तय करेगी।' ड्रीमोस ने अपनी बूढ़ी आवाज़ को थोड़ा ताक़तवर बनाते हुए कहा।

उन्हें 'ख़ूबसूरती' और 'बदसूरती' वाली बात ज़रा भी समझ नहीं आई मगर फिर भी उन्होंने सहमति में गर्दन हिला दी।

वो उस चौड़े मैदान से बाहर निकले, कुछ दूर तक सारे रहस्यदर्शी और स्वप्नद्रष्टा उन्हें छोड़ने आए–'उल्टे पेड़ों के जंगल से होकर गुज़रना, मौत के दाँतों पर पैर रखकर चलने जैसा है लेकिन पेड़ों के नीचे की दलदल से कम ख़तरनाक है, पेड़ों के ऊपर की दलदल, तुम सबको उसी से जाना चाहिए।' हैरीसिया ने रहस्यमयी आवाज़ में कहा। सबने सहमति में सिर हिलाए और आगे बढ़ गए।

रहस्यदर्शी उन्हें तब तक देखते रहे, जब तक वो आँखों से ओझल नहीं हो गए।

बाहर बेहद गर्मी का मौसम है। मेरी गुफा में भी लूओं के थपेड़े, भीतर तक आ रहे हैं। गर्मी के मौसम में मेरी गुफा के पास एक छोटी जलधरा बहती है, जो पहाड़ों पर बर्फ़ पिघलने की वजह से बनती है। गर्मी का मौसम केवल बर्फ़ ही नहीं पिघलाता, ये मोम को भी पिघलाता है। मोम, जिसकी बनी पट्टियों और चौखटों पर ये दास्तान, चाँदी की दहकती सलाइयों से उकेरी गई। वो गर्म लूओं का तूफ़ान ही था, जिसकी वजह से मुझे इस युग–गाथा को पत्थर पर खोदने का फ़ैसला लेना पड़ा।

गर्म लूओं का तूफ़ान, जिसकी वजह से मोम की कुछ पट्टियाँ हमेशा के लिए पिघलकर नष्ट हो गई, जिन पर लिखी

घटनाओं को कभी नहीं जाना जा सका। इस सफर की वो घटनाएँ, जो उल्टे पेड़ों के ऊपर घटीं, जिन्हें **आकाशमूल–वृक्ष** भी कहा जाता था। मेरे पास कुछ चौखटे हैं, जिन पर छह पैरों वाले उस खतरनाक प्राणी का जिक्र है, जिसका जिस्म किसी हाथी की तरह विशाल था, जिसके दाँत, उसके पंजों और पूँछ में थे। साथ ही हड्डियों की वो नदी, जिसके पुल को केवल वो पार कर सकता था, जिसके जिस्म में न खून हो, न मांस। इन चौखटों के साथ मेरे हाथ में एक अफसोस भी है, जो उन घटनाओं के न जान पाने का है, जो इस वजह से खो गईं क्योंकि मोम के उन चौखटों को गर्म लूओं के तूफान ने पिघला दिया।

उल्टे पेड़ों का जंगल

अध्याय इक्कीस

जिल्चोकाट को लग रहा था कि पतला सींकड़ी बड़ी मुश्किल से अपने होठों पर चुप्पी चिपकाए हुए है। जैसे ही वो कुछ दूर पहुँचे, ऐसा लगा जैसे किसी ने पके हुए गूलर को फोड़ दिया हो और उसके भीतर से हजारों भुनगों की फौज बाहर उड़ने लगी हो–'जवान मधुमक्खी के ये बुजुर्ग अण्डे, कैमल्योफैण्ट के गोबर से निकले साबुत बीज, चिकने चूहे की झुर्रीदार मेंगनियाँ, ये बूढ़े खुद को समझते क्या हैं? महान स्ट्रासोल...गम्पूग्रास वल्स्टान नीमोकीड फैलीटस को, कब्रिस्तान से निकले इन बूढ़े प्रेतों ने उस विशाल झोपड़ी में सुला दिया और वो भी चुभने वाली सूखी घास पर!'

सब जानते थे, पतले सींकड़ी को किसी छोटी जगह में घुसकर सोना ही पसन्द है, चाहे वो किसी घोंघे का ख़ाली खोल ही क्यों न हो। उसकी इस बात पर सब मुस्कराकर रह गए।

वो लगातार बोले जा रहा था। '...और सबसे बड़ा मजाक, वो बित्ता भर की नाव।' वो अपना पेट पकड़कर इतनी बुरी तरह हँस रहा था, ऐसा लग रहा था जैसे बीच में से टूट जाएगा। हँस–हँस कर वो दुहरा हुआ जा रहा था। उसकी अजीब हँसी सुनकर कोई भी खुद को मुस्कराने से नहीं रोक सका। उनमें से कई ने पहली बार उसे हँसते देखा।

'...और वो बिन ब्याही चुड़ैल जैसी बुढ़िया! उसका चेहरा ऐसा लगता है जैसे किसी ग़ायब–गिद्ध ने 'टप्प' से खोंच भर बीट कर दी हो।'

हैबूला बिना मुस्कराए, उसे ऐसे देखे जा रहा था जैसे किसी ऊँफट ने पहली बार सौ पैर वाला कनखजूरा देखा हो।

'तुम, चींटी के सुराख़ जैसा अपना ये मुँह बन्द करो, एम्बरलीफ घास के सूखे तिनके, वो सब सारी दुनिया के लिए सम्माननीय हैं।' स्वाइली ने चिढ़कर उसकी तरफ देखा। ऐसा लगा जैसे किसी ने एक झटके से सींकड़ी की हँसी को लगाम लगा दी हो।

उसने अपनी गोल–गोल आँखों से स्वाइली को गुस्से से घूरा–'ओहहो...तो दीमक की इस लार्वा के पास ज़बान भी है?' उसने व्यंग्य से कहा।

'चुप करो, तुम रीढ़दार गिंडार...तुम्हें उनके लिए इज्जत से पेश आना चाहिए।' मादा जलप्रेत जडाकी ने गुस्से से सींकड़ी की तरफ देखा। उसकी सफेद धुएँ जैसी आकृति हवा के साथ हिचकोले ले रही थी।

'आहहा...डंकदार मक्खी की तरफदारी में सुलगता कोहरा आया है...'

अपनी धुएँदार आकृति को सुलगता कोहरा कहे जाने से जडाकी बुरी तरह चिढ़ गई। सब उनकी इस नोकझोंक का मज़ा ले रहे थे।

सूरज अब काफी ऊपर चढ़ आया था। धूप की नर्तकी, काफ़ी उत्तेजक नृत्य कर रही थी। चलते–चलते उन्हें काफी वक्त हो गया था इसलिए वो किसी जगह सुस्ताना चाहते थे लेकिन तभी हैबूला को दूर कुछ दिखा। वो ज़मीन से बहुत ऊपर तक था। उसने अपने विशाल जिस्म को पंजों के बल ऊपर उठाकर देखने की कोशिश की, मगर उसे समझ नहीं आया कि वो क्या है।

उसने जिल्चोकाट से कुछ कहा और उसे अपने विशाल हाथों में ऊपर उठाकर, वो दिखाया, जो उसे दिख रहा था। वृक्षमानव कुछ देर तक उसे दूर तक देखता रहा फिर उसने हैबूला को, खुद को नीचे उतारने का इशारा किया।

'हम उल्टे पेड़ों के जंगल के पास आ चुके हैं साथियो! बहुत ख़तरा है।' जिल्चोकाट ने बेहद सावधन तरीवेफ से कहा। 'आगे, **आकाशमूल–वृक्षों** का जंगल है। ये पेड़ अपने तने की मदद से ज़मीन से जुड़े होते हैं और इनकी जड़ें ऊपर आसमान की तरफ फैली होती हैं। कुछ ख़ास तरह की दलदलों में ही ये पनपते हैं। इनके नीचे की दलदल में

ऐसे–ऐसे खतरनाक जीव रहते हैं, जिनके बारे में बाहरी दुनिया को आज तक कुछ नहीं पता। जडाकी को इनसे कोई खतरा नहीं है लेकिन तुम तीनों, स्वाइली, हैबूला, गम्पूयास और मेरे लिए मुश्किल हो सकती है।'

'मगर नक्शे में लिखा है कि पेडों के नीचे की दलदल से कम खतरनाक है, पेडों के ऊपर की दलदल, और हैरीसिया ने भी यही कहा था।' सलार ने जिल्चोकाट की तरफ देखा।

'इसका क्या मतलब हो सकता है?' जरूस ने सवालिया नजरों से सबकी तरफ देखा।

'हमें आगे बढकर देखना होगा।' मकास ने ठहरे हुए स्वर में कहा।

बेहद सावधानी से वो आगे बढते गए, तब तक, जब तक उनका रास्ता उस दीवार ने नहीं रोक लिया, जो आकाशमूल–वृक्षों के रूप में उनके आगे खडी थी। ये बहुत अजीब और रहस्यमय–से पेड़ थे। उनके तने इतने चौड़े थे कि हैबूला की लम्बी भुजाएँ भी उन्हे समेट नहीं पाती? तना बेहद ऊँचा था और ऊपरी सिरे पर मोटी–मोटी जड़ें आकाश की तरफ गई हुई थीं। जिस ऊँचाई तक उनकी नजर जा रही थी, वहाँ तक हर जगह आकाशमूल–वृक्षों की जड़ें फैली हुई दिख रही थीं।

'उफ्फ...ये क्या आफत है?' स्वाइली ने उल्टे पेडों की ऊँचाई को अपनी पूरी गर्दन उठाकर देखा।

चौड़े और चिकने तनों के नीचे दलदल फैली हुई थी, ऊपर से छनकर आती धूप का कोई–कोई टुकड़ा ही दलदल पर पड़ रहा था। किसी पेड़ पर कहीं कोई पत्ता नहीं था, बस तने और जड़े ही दिख रही थीं।

'क्या तुम अपनी बाँसुरी से इन सब पेडों को बीज में तब्दील कर सकते हो?' स्वाइली ने मकास की तरफ देखते हुए कहा।

मकास ने एक बार उसकी तरफ गहरी नजरों से देखा और बोला, 'नहीं, किसी एक पेड को बीज में बदल देना अलग घटना है और किसी पूरे जंगल को बदलना, बिल्कुल अलग बात। इन पेडों का तो कोई अंत ही नजर नहीं आ रहा।'

'नक्शे में लिखा था, मैगूमोला परेशानी को खत्म कर सकता है। ये क्या है?' जलप्रेत जडाकी ने उनके चारों तरफ हवा में तैरते हुए कहा। किसी की कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

'तुम सबके भीतर उससे ज्यादा दिमाग नहीं है, जितना गर्भ में पल रहे गधे के भ्रूण में होता है, निकम्मो।' पतले सींकडी की आवाज पर सबने उसकी तरफ चौंककर देखा।

उसने आहिस्ता से अपना एक नाखून कुतरा और बल खाता हुआ आगे आया। 'मैगूमोला, हम स्ट्रासोल्स की बस्ती के एक देवता हैं, जिनकी इबादत नहीं की जाती। वो एक दिव्य–जुलाहे के रूप में हैं, जो हर वक्त कच्चा सूत कातते रहते हैं। हमें उन्हें खुश करने के लिए इबादत की तैयारी करनी चाहिए।' उसके अजीब चेहरे पर इस वक्त ऐसे अजीब भाव थे जैसे दुनिया की सबसे बडी पहेली हल करके हटा हो। पतले सींकडी ने गर्व से अपना सीना ऐसे फुलाया जैसे कहना चाहता हो– 'मान गए न मेरे दिमाग का लोहा?' लेकिन गहरी साँस भरने के बाद भी, उसका सीना नाखून भर भी नहीं फूल पाया।

तीनों भाइयों को याद आया, जब वो माथेल्टन की गुफा में पहुँचे तो वो पतला स्ट्रासोल, जिसका नाम क्लेवरसीथ था, देवता *मैगूमोला* की ही कसम खा रहा था।

'इ...इबादत!' सबके मुँह से एकदम निकला। सींकडी के इस अजीब प्रस्ताव पर सब हैरत में थे।

'ह...हाँ...इसमें चौंकने की क्या बात है, अलसाए मेंढक के चंचल अण्डों।' सींकडी अपनी सफलता पर जैसे आत्ममुग्ध हुआ जा रहा था।

'ओह...नहीं...ये नहीं हो सकता।' जडाकी ने सबके इर्द–गिर्द हवा में लहराते हुए कहा।

ऐसा लग रहा था जैसे वो सींकडी की बात से पूरी तरह असहमत हो लेकिन साफ नहीं कह पा रही हो। कोई भी इस गालीबाज स्ट्रासोल की बात से संतुष्ट नहीं हो पाया था लेकिन ये जानकारी बहुत खास लग रही थी कि मैगूमोला, स्ट्रासोल्स की बस्ती के देवता हैं। जडाकी की बात पर सींकडी ने इस तरह उसकी तरफ देखा जैसे किसी बच्चे ने बड़ी मेहनत से एक के ऊपर एक ग्यारह पत्थर रखे हों और उस से बड़े बच्चे ने सबको टहोका मारकर गिरा दिया हो।

'र...रुको...मुझे कुछ समझ आ रहा है।' सलार ने सबकी तरफ देखते हुए कहा। वो जैसे अपने दिमाग में कुछ गणितीय हिसाब–सा लगा रहा था। फिर अचानक वो जैसे उछल पड़ा।

'ज...**जिल्चोकाट**...वृक्षमानव जिल्चोकाट इस समस्या का हल निकालेगा।' सबने हैरत से इस तरह उसकी तरफ देखा जैसे समझना चाहते हो कि जिल्चोकाट इस समस्या से उन्हें कैसे निकाल सकता है?

'नक्शे...में लिखा है, पेड़ों के ऊपर की दलदल से ज्यादा खतरनाक है नीचे की दलदल, इसलिए हमें ऊपर से ही जाना होगा लेकिन इन पेड़ों के ऊपर से उड़ने की कोशिश शर्तिया मौत लेकर आएगी, ये भी नक्शे में साफ लिखा है। इन विशाल पेड़ों के ऊपर चढ़ना और फिर इन लम्बी जड़ों के बीच से होकर गुज़रना, मौत को दावत देने जैसा है, जो ऊपर आसमान की तरफ़ जा रही हैं।'

'म...मगर जिल्वोकाट इस समस्या का हल कैसे निकाल सकता है?' मकास ने सवालिया नज़रों से जिल्वोकाट की तरफ़ देखते हुए कहा।

'हम इन जड़ों से रास्ता **बुनेंगे**...' उसकी आवाज़ जैसे किसी गहरी खाई से निकल रही थी। 'मैगूमोला वो देवता हैं, जो हर वक़्त कच्चा सूत बुनते रहते हैं। हमें उनकी इबादत नहीं करनी, हमें उनकी तरह रास्ता *बुनना* है, इन जड़ों से।'

'रास्ता *बुनेंगे*?' क्या मतलब है तुम्हारा?' जरूस ने हैरानी से उसे देखा।

'हाँ, रास्ता बुनना होगा। नक्शे में लिखा है मैगूमोला परेशानी को खत्म कर सकता है। इसका मतलब, देवता मैगूमोला की इबादत नही है। इसका मतलब है, केवल वो इन उल्टे पेड़ों को पार कर सकता है, जो मैगूमोला की तरह बुनना जानता हो। आकाशमूल–वृक्षों की इन जड़ों से होकर निकलना असंभव है, केवल एक तरीका है, अगर इन जड़ों को ही मिलाकर रास्ता बनाया जाए, तो हम निकल सकते हैं।'

'ओह...ह...ये छोटी–सी बात मेरी समझ में क्यों नहीं आई?' नन्ही राक्षसी स्वाइली ने अपने माथे पर हाथ मारते हुए कहा।

हैबूला, अब भी, पेड़ की छाल पर लिखी, एक बेहद छोटी किताब को पढ़ रहा था, जो उसकी चौड़ी हथेली पर बेहद ज़रा–सी लग रही थी।

जिल्वोकाट ने बिना वक़्त गँवाए, उल्टे पेड़ों की तरफ़ देखा और उस तरफ़ बढ़ गया। पेड़ों की ऊँचाई के आगे वो महज एक कीड़े की तरह दिख रहा था। चिकने और चौड़े, विशाल तने और ऊपर आसमान छूती, पतली–पतली जड़ें। फिर ऐसा लगा, जैसे वो पेड़ों से संवाद स्थापित कर रहा हो। उसके होंठ कुछ बुदबुदा रहे थे। तेज़ हवा से, उसका पत्तेदार जिस्म फड़फड़ा रहा था।

फिर जैसे चमत्कार हो गया। बादलों को छूती जड़ों में हरकत होने लगी। वो आहिस्ता–आहिस्ता चारों तरफ़ झूमने लगीं। सब समझ गए, वृक्षमानव जिल्वोकाट उनसे बात करने में सफल हो गया है। जड़ें सरसराती हुई, नीचे ज़मीन की तरफ़ आने लगीं। ऐसा लगा जैसे एक साथ लाखों साँप, हवा पर रेंगते हुए, तेज़ी से नीचे आ रहे हों। फिर लम्बी–लम्बी जड़ें जिल्वोकाट के झब्बेदार पैरों के पास आकर रुक गईं। पतला सींकड़ी हड़बड़ाकर पीछे हट गया।

जिल्वोकाट ने अपने हाथों से इशारे किए और वो आपस में ऐसे गुँथने लगीं, जैसे कोई कुशल जुलाहा, चादर बुन रहा हो। कुछ ही पलों में जड़ों से बुना हुआ एक चौड़ा क़ालीन जैसा तैयार होने लगा। जो ज़मीन से होता हुआ, ऊपर आकाशमूल–वृक्षों की जड़दार चोटियों तक जा रहा था। बहुत कम समय में रास्ता तैयार हो गया। ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने मक्का के भरे हुए खेत में, लम्बे–लम्बे पौधे काटकर निकलने लायक चौड़ा रास्ता बना दिया हो।

हिचकते हुए, जड़ों से बने उस रास्ते पर सबने पैर रखे मगर जब कुछ नहीं हुआ तो वो आगे बढ़ने लगे। धीरे–धीरे वो ऊपर चढ़ते जा रहे थे। कुछ ही देर में वो इतने ऊपर पहुँच गए कि वहाँ से नीचे देखने पर ज़मीन पर लहलहाती घास भी नहीं दिख रही थी। दानव हैबूला के वजन की वजह से, जड़ों से बना क़ालीन जैसा रास्ता बार–बार नीचे दब जाता। अब वो बिल्कुल ऊपर पहुँच गए।

पतला सींकड़ी गुस्से से बुदबुदा रहा था, 'भीगे ऊदबिलाव की मूँछ के सूखे बाल जैसे ये लड़के खुद को बहुत समझदार समझते हैं, मेरी बताई हुई तरकीब काम कर गई वरना पड़े रहते पूरी रात यहीं पर ये नामुराद...और उस पर दो पाँवों पर खड़ा होकर चलता ये लम्बा टिड्डा!' उसने हैबूला की तरफ़ घूरकर देखा। 'हर वक़्त पता नहीं क्या पढ़ता रहता है...लगता है इस कमबख़्त को इसकी माँ ने, पैदा होते ही दीमक खाई किताबों के ढेर में दबा दिया था।' सींकड़ी की बुदबुदाहट भी इतनी तेज़ थी कि वो सबको सुनाई दे रही थी, सिवाय हैबूला के क्योंकि उसका सिर काफ़ी ऊँचा था।

वो जैसे–जैसे रास्ता पार करते जा रहे थे, वहाँ की ख़ामोशी उन्हें खटक रही थी। कहीं कोई आवाज़ नहीं थी। उन्हें नक़्शे में लिखे वो शब्द बार–बार याद आ रहे थे– ***'जंगल में है 'वो' जिसके दाँत और जबड़े, उसके पंजों में छिपे हैं। कोई उसे नहीं हरा सकता, सिवाय उसके, जो दुनिया में अपनी तरह का 'अकेला' हो।'***

मादा जलप्रेत ज़ड़ाकी की धुएँदार आकृति, उनके आसपास हवा में तैर रही थी। तभी हैबूला का ऊँफचा सिर थोड़ा

और उँफचा उठ गया, जैसे जड़ों से बने रास्ते पर दूर कुछ देखने की कोशिश कर रहा हो। जड़ों से बने रास्ते पर हल्का कम्पन उन्होंने महसूस कर लिया था। ऐसा लग रहा था जैसे कोई बहुत भारी चीज़, जड़ों को कुचलते हुए उनकी तरफ़ आ रही हो।

'उफ्फ...' स्वाइली के होठों से चीख निकलते–निकलते बची, उसे देखकर, जो जड़ों को मसलता–कुचलता तेजी से उनकी तरफ़ आ रहा था।

वो लगभग हैबूला के बराबर ऊँचा था। जिस्म किसी हाथी की तरह विशाल, पूरा बालों से ढँका हुआ। अपने छह पैरों पर चलता हुआ, वो पास आता जा रहा था। कुछ पास आने पर उन्होंने देखा, मुँह और गर्दन की जगह, उसके

अगले पैरों के ऊपर बस दो जोड़ी आँखें थीं। सबसे भयानक वो पूँछ लग रही थी, जो किसी चाबुक की तरह साँय–साँय हवा में लहरा रही थी। बेहद छोटे, मगर घने बालों के रोंये के बीच से उसकी बलिष्ठ मांसपेशियाँ साफ़ महसूस हो रही थीं।

'बचो हैबूला...' जब तक मकास चीखकर उसे सतर्क कर पाता, तब तक उसकी पूँछ का वार हैबूला की गर्दन पर पड़ चुका था।

ऐन वक़्त पर उसने अपना लम्बा हाथ आगे बढ़ाकर उसे रोकने की कोशिश की लेकिन फिर भी उचटता–उचटता वार उसे पूरा हिला गया। हैबूला का लम्बा–तड़ँगा जिस्म गिरते–गिरते बचा। तब तक सनसनाते हुए दो तीर, एक छुरा उसके जिस्म में पैवस्त हो गए थे। स्वाइली ने चौंककर देखा तो सलार के हाथों में थमा धनुष झनझना रहा था और मकास की हथेली में अब एक दूसरा ख़ंजर आ चुका था।

लेकिन अगले ही पल उनकी हैरत का ठिकाना न रहा, जब उस भयानक जीव के जिस्म में गड़ा तीर और ख़ंजर अपने–आप ऐसे निकलकर नीचे गिर गए, जैसे घाव से कीड़ा निकलकर गिरता है। हैबूला अब तक संभल चुका था, इस बार जैसे ही उसकी पूँछ फिर से हवा में लहराई उसने अपने लम्बे बाज़ू को आगे बढ़ाकर उसे हवा में ही पकड़ लिया। पूँछ छुड़ाने के लिए वो जीव कसमसाया लेकिन कामयाब नहीं हो सका। दोनों के भारी जिस्मों की वजह से जड़ों से बना रास्ता बुरी तरह चरमरा रहा था।

हैरतअंगेज रूप से उसकी पूँछ का आख़िरी सिरा कसमसाया और वो ऐसे खुल गया जैसे किसी हिंसक जीव का मुँह हो। उसके भीतर तीखे दाँतों की पंक्तियाँ साफ़ नज़र आ रही थीं। 'कच्च' की एक तेज़ आवाज़ के साथ, वो दाँत हैबूला की कलाई में गड़ गए। इस अप्रत्याशित हमले ने उसे भौंचक्का कर दिया। उसने झटके से उसकी पूँछ छोड़ दी।

पतला सींकड़ी अपनी जगह से तेज़ी से दौड़ा–'इस अंधे दानव की तो ऐसी की तैसी, मैंने ऐसे कितनों को चुटकी में मसल दिया है। बिना गर्दन वाला ये चूजा क्या खाकर मेरा मुकाबला करेगा। अभी मज़ा चखाता हूँ, बदनाम मुर्गी के इस बदचलन आशिक़ को।'

किसी को पता तक नहीं चला, कब उसका सींक जैसा जिस्म उस विशाल प्राणी की पीठ तक पहुँच गया।

उन्होंने देखा, उसके अगले पैरों के ऊपर बने दो छोटे–छोटे कानों के पास पहुँचकर सींकड़ी एक पल के लिए ठिठका और फिर उसके एक कान में घुसता चला गया। अगले ही पल वो विशाल प्राणी ऐसे तड़पने लगा जैसे किसी केकड़े को गर्म तवे पर रख दिया हो। सब समझ गए सींकड़ी अपना काम कर गया...वो उसके कान के भीतर जो उध्म मचा रहा था, उसकी वजह से वो प्राणी बुरी तरह छटपटा रहा था। तभी वो हुआ, जिसके बारे में किसी ने सोचा तक नहीं था।

उस दानव के कान से उल्टी जैसी एक गन्दी धार निकली और उसके साथ पतला सींकड़ी भी गन्दगी में लिपटा हुआ बाहर आकर पड़ा। उसका पूरा जिस्म इस वक़्त उस प्राणी के कान की गन्दगी से सना हुआ था। सींकड़ी जब तक संभल पाता, उसने अपना अगला वाला भारी पाँव उठाया और उसको कुचलने के लिए आगे बढ़ाया, स्वाइली के होठों से उस वक़्त चीख निकल गई, जब उन्होंने देखा उसके नाखून वाले पंजे किसी विशाल मुँह की तरह खुले और उसके भीतर लपलपाती जीभ और लम्बे तीखे दाँत साफ़ दिखाई देने लगे। अब वो अपने पिछले चार पैरों पर खड़ा हो गया और अगले दोनों पैर ऊपर उठा लिए। दोनों पंजे खुले और लम्बे दाँत वाले दो मुँह तेज़ी से सींकड़ी की तरफ़ बढ़े।

मादा जलप्रेत जडाकी की धुएँदार आकृति हवा में लहराई और एक ही पल में सींकड़ी के गंदे जिस्म को उसके पैरों के पास से खींच लिया। 'ध्म्म' से उसके पैर जड़ों के रास्ते पर पड़े और पूरा रास्ता लरजकर रह गया। तब तक जिल्वोकाट के हाथों के इशारों पर, आकाशमूल–वृक्षों की लम्बी जड़ों ने उस भयानक जीव के पिछले चारों पैरों को जकड़ लिया। जड़ें कसती जा रही थीं और वो उनके दबाव को न सहने के कारण बैठता जा रहा था। उन्होंने देखा उसके छहों

पैरों के पंजों में तीखे दाँत वाले छह मुँह दिख रहे थे, जिनके भीतर लपलपाती लम्बी जीभ साफ दिख रही थी।

जड़ें उसे जकड़ती जा रही थीं, अब उन्होंने कुछ राहत की साँस ली लेकिन ये खुशी बस एक ही पल रह पाई। अगले ही पल वो उन सब जड़ों को तोड़ता हुआ उठ खड़ा हुआ। 'चट..चट..चटाख' की आवाजें उसकी ताकत का अहसास दिला रही थीं।

'इसे ऐसे नहीं हराया जा सकता।' स्वाइली का नन्हा जिस्म अब हवा में लहरा रहा था–'ये **क्लामाऊथ** है। इसके छह मुँह, इसके पंजों में होते हैं। मैंने अपनी माँ से इसके बारे में सुना था। इसके जिस्म में कोई हथियार जख्म नहीं बना सकता, इसे कोई नहीं हरा सकता, सिवाय उसके, जो दुनिया में **'अपनी तरह का अकेला'** हो और हम में से ऐसा कोई नहीं है।'

स्वाइली की बात पूरी होते ही जडाकी ने तेज आवाज में कहा, 'एल्फैण्टॉर! हाँ, केवल वही दुनिया में अपनी तरह का अकेला है, जो खुद से ही पैदा होता है और खुद में ही मरता है। उसके तरह का दूसरा कोई कभी नहीं होता।'

मैंने जिक्र किया था, मोम के कुछ चौखटों का, जिन्हें गर्म लूओं के तूफान ने पिघला दिया। उन पर लिखी कहानी मैं कभी नहीं जान पाया। क्लामाऊथ के साथ इस संघर्ष का अंत क्या हुआ, कैसे एल्फैण्टॉर ने उसे हराया, ये उन्हीं पर लिखा था। अफसोस, वो अब मेरे पास नहीं है। लेकिन इस लड़ाई का अंत क्या हुआ, ये मैं समझ सकता हूँ, जरूर एल्फैण्टॉर ने उसे परास्त किया होगा क्योंकि जिस अगले मोम के चौखटे से ये कहानी शुरू हो रही है, उसमें होने वाले संवादों से मैं अंदाजा लगा सकता हूँ कि वो आकाशमूल–वृक्षों के जंगल से निकल गए और क्लामाऊथ से सुरक्षित बच गए। पतले सींकड़ी गम्पूग्रास और मादा जलप्रेत जडाकी की बात सुनकर तो कम से कम ऐसा ही लगता है।

'ओफ्फो...टैंगीसक मॉरटल जैसी अपनी ये जबान तुम बन्द करो, सूजे हुए तिनके!' जडाकी ने चिढ़कर सींकड़ी की तरफ देखा। 'अगर मैं सही वक्त पर तुम्हें उठाकर न ले जाती तो तुम उस क्लामाऊथ के पंजों में छिपे मुँह का निवाला बन चुके होते।'

'हुंह...बड़ी आई जान बचाने वाली, कव्वों की बीट जलाने से भी ऐसा बदबूदार धुआँ पैदा नहीं होता, जैसी ये धुएँदार जलप्रेत है। किसी बूढ़े ततैये के मुँह से, ठण्ड में इससे ज़्यादा भाप निकलती होगी, जितनी से ये बनी है। वो तो उस कमबख्त ने ऐन वक्त पर अपने कान से उल्टी कर दी वरना मैं उसे ख़त्म करके ही बाहर आता।' उसने शेखी बघारते हुए कहा।

'अगर सही वक्त पर एल्फैण्टॉर ना आता, तो हम सब शायद उसके पंजों से होते हुए उसके पेट में पहुँच चुके होते–और उसने, कैसे उसे उठाकर पेड़ों से नीचे की दलदल में फेंका...मज़ा आ गया।' नन्ही राक्षसी स्वाइली ने बच्चों की तरह ताली बजाते हुए कहा।

'ये वाकई भयानक था।' जरूस ने एक गहरी साँस लेते हुए कहा।

'हाँ, तुमने देखा, कैसे उसने आकाशमूल–वृक्षों की भारी–भरकम जड़ों को धागों की तरह तोड़ दिया।' वृक्षमानव जिल्वोकाट ने ठहरे हुए स्वर में कहा।

'नक्शे में आगे लिखा है–'हड्डियों की नदी के ऊपर बने पुल से गुजरना होगा, नाखूनों के मैदान को पार करने के बाद, बियाबान में बनी अकेली झोंपड़ी, जान ले सकती है।' मगर अभी तक तो यहाँ कोई नदी नज़र नहीं आ रही?' सलार ने सबकी तरफ सवालिया नजरों से देखा।

उसके बाद वो लगातार चलते रहे। सूरज आहिस्ता–आहिस्ता अपनी धूप कम करता जा रहा था। काफी आगे आने के बाद, उन्हें दूर कुछ दिखाई दिया। वो एक ऊँचा टीला था। उस पर चढ़ने में सबको काफ़ी मशक़्क़त करनी पड़ी, सिवाय जडाकी और पतले सींकड़ी के। वो तो जैसे बना ही दौड़ने के लिए था। टीले पर पहुँचकर उन्होंने नीचे देखा। कुछ दूर एक नदी नज़र आ रही थी।

जैसे–जैसे वो उसके पास पहुँचे, उनकी हैरत ने अपने मुँह पर अचम्भे से हाथ रख लिया। वो एक छोटी नदी थी, पूरी नदी में एक बूँद पानी नहीं था, अगर कुछ था तो बस *हड्डियाँ* ही *हड्डियाँ*। दूर तक, जहाँ तक नज़र जा रही थी, पूरी नदी हड्डियों से भरी हुई थी। ऐसा लग रहा था जैसे नदी में अस्थियों की बाढ़ आ गई हो। नदी के ऊपर एक छोटा–सा पुल बना हुआ था, जो पूरी तरह अस्थियों का बना हुआ था।

'ओहह...ये क्या है? मैंने अपनी ज़िन्दगी में ऐसी कोई चीज़ कभी नहीं देखी।' जिल्वोकाट ने हैरत से उस दृश्य को देखते हुए कहा।

कहीं किसी प्राणी का नामोनिशान तक नहीं था, दूर–दूर तक केवल सन्नाटा पसरा था। पुल के पास आकर पूरा जत्था ठहर गया।

'इसे पार करने से पहले हमें ये पक्का कर लेना होगा कि इसमें कितना खतरा है?' मकास ने सबकी तरफ देखते हुए कहा।

जरूस ने आहिस्ता से एक पत्थर उठाया और पुल के ऊपर पेंफक दिया। पत्थर अगले ही पल अस्थि में तब्दील होकर नदी में जा गिरा।

'ओहह...तो ये बात है...इसके ऊपर जाने वाला हर प्राणी फौरन अस्थियों में तब्दील हो जाएगा। शायद इसी वजह से ये पूरी नदी, इतनी अस्थियों से भरी हुई है। सदियों से जाने कितने का शिकार कर चुका होगा ये खतरनाक पुल?' सलार के होंठ आहिस्ता से हिले।

'मैंने **विचित्र नदियों का इतिहास** में इसके बारे में पढ़ा है।' दानव हैबूला के होंठ हिले–'इसके पुल को केवल वही तोड़ सकता है, जिसके जिस्म में, न रक्त हो, न मांस और न अस्थि। इसे केवल तब पार किया जा सकता है अगर इसे 'बिना छुए' पार किया जाए। अगर पुल टूटने के बाद इसकी एक भी अस्थि हमसे छू गई तो ये अस्थियों की नदी, पूरे इलावेफ में बाढ़ की तरह फैल जाएगी और फिर इससे बचना असंभव होगा।'

'ओह...देवता!' जिल्चोकाट ने गहरी साँस ली।

'मैं इस पुल की हड्डियों को इनकी सही जगह पहुँचाकर आती हूँ।' मादा जलप्रेत जडाकी ने हवा में लहराते हुए कहा।

'अरे...नहीं...ठहरो।' मकास जब तक उसे रोक पाता, उसकी कुहरेदार आकृति हवा में हिचकोले लेती हुई पुल तक जा पहुँची।

अब वो पुल के ऊपर मँडरा रही थी। फिर उन्होंने उसे पुल के ऊपर खड़े देखा। कुछ नहीं हुआ...जडाकी चूँकि एक प्रेत थी, शायद इसी वजह से उसका जिस्म अस्थियों में तब्दील नहीं हुआ। उसका जिस्म अब गोल–गोल घूमना शुरू हो गया। आहिस्ता–आहिस्ता वो एक छोटे बवण्डर का रूप लेने लगी, जिसकी रफ़्तार, हर पल बढ़ती जा रही थी। फिर पुल की अस्थियाँ उस बवण्डर के घेरे में आने लगीं। कट–कट, चट–चट की आवाज़ों के साथ, हड्डियाँ टूट–टूट कर बवण्डर के साथ गोल–गोल घूमने लगीं।

'खडाक' की एक तेज़ अवाज के साथ पूरा पुल टूटकर बिखर गया। तभी अस्थियों से भरी नदी में कुछ हलचल होनी शुरू हुई। ऐसा लगा जैसे हड्डियों से भरी नदी **'बहने'** लगी हो। सब सावधन हो गए, वृक्षमानव जिल्चोकाट ने चारों तरफ़ इस आशा में नजरें दौड़ाई, शायद कहीं कोई पेड़–पौध दिख जाए, जिसे वो इस्तेमाल कर सके, लेकिन वहाँ दूर–दूर तक कोई पेड़ नहीं था।

अब नदी में भरी अस्थियाँ तेज़ी से आगे की तरफ़ खिसकने लगीं। उनके आगे सरकने से होने वाली आवाज़ खट–खट–खट का अजीब और भयानक शोर पैदा कर रही थीं। तीनों भाइयों ने ***'कल-कल'*** कर बहने वाली नदियाँ तो बहुत देखी थीं लेकिन ये पहला मौका था, जब वो *'खट-खट'* करके बहने वाली कोई नदी देख रहे थे। आगे की तरफ़ बहती नदी से, कुछ अस्थियाँ ऐसे उछलकर बाहर किनारे की तरफ़ गिर रही थीं जैसे पानी की छोटी लहरें उछल रही हों।

'अब इसे कैसे पार करें?' जिल्चोकाट ने हैबूला की तरफ़ देखा।

हैबूला की पतली–पतली टाँगें और पतली गर्दन आहिस्ता से हिली–'इसका उपाय है मेरे पास।'

सबने आसमान में ऊपर हैबूला के मोटे सिर की तरफ़ देखा।

'हाँ, ये बहुत साधरण बात है, मैं अभी सबको उस पार पहुँचाता हूँ।' अपनी बात पूरी करते ही उसने मकास को अपने लम्बे बाज़ू और चौड़ी हथेली से उठाया और नदी के इस तरफ खड़े–खड़े ही, उसे नदी के दूसरी तरफ़ 'टिका' दिया।

'अरे वाह, कमाल कर दिया तुमने तो।' स्वाइली के चेहरे पर खुशी साफ़ झलक रही थी।

पतला सींकड़ी अब भी चुपचाप अपने नाखून कुतरे जा रहा था।

एक–एक करके हैबूला ने सबको दूसरी तरफ़ पहुँचा दिया। जडाकी भी हवा में तैरती हुई, उस तरफ़ पहुँच गई। बस पतले सींकड़ी को उठाते वक्त, उसे कुछ गालियों का सामना करना पड़ा। सबसे अंत में एक लम्बा 'डग' भरकर हैबूला भी नदी के दूसरी तरफ़ आ गया। अस्थियों की नदी अब भी पूरी तेज़ी से बहे जा रही थी।

मेरे दादा कई बार कहा करते–इस अस्तित्त्व में सब कुछ रफ्तार में है। अगर कुछ ठहरा हुआ है, तो वो है 'समय'। ये सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, समय के 'भीतर' मौजूद है। चूँकि हर चीष रफ्तार में है, इसलिए हम उस रफ्तार के हिसाब से, समय की गति महसूस करते हैं। मेरी लबादे की आस्तीनों से पसीना चू रहा है। गर्मी बहुत बढ़ गई है। ऐसे में मुझे इस किताब की हिफाज़त की चिन्ता सताने लगती है। मैं पहले ही मोम की कुछ पट्टियों को हमेशा के लिए खो चुका हूँ लेकिन अब मैं थोड़ा निश्चिन्त हूँ क्योंकि अब इस किताब के लफ़्ज़, इन पथरीली गुफाओं के सीने पर खुद चुके हैं। वो लफ़्ज भी, जो उस धूर्त के होठों से निकले, मक्कारी हर वक़्त जिसके तलवे चाटती थी। तिलिस्मी–जत्थे की मेज़बानी को बेचैन, वो शापित–प्राणी, जिसने बियाबान को हथियार बनाया, जिसके इलावेफ में आते ही, लोगों की उँगलियों के नाख़ून गायब हो जाते। साथ ही विशालकाय मांसभक्षियों का वो रेवड़, जो केवल दौड़ते वक़्त प्रकट होते वरना अदश्श्य रहते, जिनसे लड़ने वाला 'हारने' के लिए अभिशापित होता।

नाखूनों का मैदान

अध्याय बाईस

शाम घिर आई थी। लगने लगा था कुछ ही देर में अँधेरा छाने लगेगा। अँधेरा होने से पहले वो किसी ऐसी जगह पहुँच जाना चाहते थे, जहाँ वो हिफाजत से रात गुजार सकें मगर इस वीराने में, उन्हें दूर–दूर तक ऐसी कोई जगह नजर नहीं आ रही थी।

'शिला–पुस्तक में लिखा है–'**नाखूनों के मैदान को पार करने के बाद, बियाबान में बनी अकेली झोंपड़ी, जान ले सकती है।**' साथियों, कुछ ही देर में अँधेरा हो जाएगा, उससे पहले हमें नाखूनों का मैदान पार करना होगा लेकिन ये *'है'* कहाँ?' स्वाइली ने दूर तक फैले मैदान पर अपनी नजर डालते हुए कहा।

'क्या यही नाखूनों का मैदान है?' जडाकी ने उत्सुकता से निर्जन मैदान को देखा।

'हमें आगे बढ़ना होगा...' जिल्वोकाट की आवाज़ में थोड़ी चिन्ता थी, जो शायद दस्तक देते अँधेरे की वजह से नज़र आ रही थी।

काफी दूर चलने के बाद, वो उस मैदान के बीचोबीच आ पहुँचे, जो उन्हें दूर से दिखाई दे रहा था। न तो कहीं कोई नाखून नजर आया और न ही ऐसी कोई चीज़, जिससे ये पता चलता कि ये ही वो मैदान था या नहीं। मैदान काफी बड़ा था, शाम का अँधेरा अब घास पर फैलने लगा था। वो बहुत सतर्कता से चल रहे थे, बिना कोई शोर–शराबा किए।

काफी दूर उन्हें हल्की रोशनी नज़र आई, ऐसा लग रहा था जैसे दूर कहीं कोई दीप टिमटिमा रहा हो। सबने प्रश्नवाचक नज़रों से एक–दूसरे की तरफ देखा और बिना कुछ कहे, आगे बढ़ गए। जैसे–जैसे वो आगे बढ़ रहे थे, टिमटिमाहट तेज होती जा रही थी। फिर अँधेरे में उन्हें एक झोंपड़ी की परछाई–सी नज़र आई, जिसके बाहर, एक बड़ी चट्टान पर, वो दीपक टिमटिमा रहा था।

'यहाँ **उल्लूखदेड़ा** है, हमें भीतर नहीं जाना चाहिए।' हैबूला ने फुसफुसाती हुई आवाज़ में कहा।

सब ठहर गए।

'*उल्लूखदेड़ा!*' उनमें से कई के मुँह से एक साथ निकला। रात के सन्नाटे में उनकी फुसफुसाहट ज़्यादा दूर नहीं जा रही थी लेकिन फिर भी वो बहुत आहिस्ता बोल रहे थे।

'हाँ, मैंने प्राचीन किताबों में उसके बारे में पढ़ा है।' हैबूला ने नीचे झुकते हुए, बेहद धीमी आवाज़ में कहा। 'ये दुनिया के सबसे धूर्त प्राणियों में से एक है, चालाकी और छल इसके रक्त में घुला है। स्वार्थ, इसकी अगवानी करता है और मीठे लफ़्ज़ों की छुरियाँ, इसकी ज़बान को हर वक़्त तेज़ करती रहती हैं।'

'मगर तुम्हें कैसे पता चला कि 'वो' यहाँ रहता है?' जडाकी की धीमी आवाज़ बड़ी मुश्किल से सबके कानों तक पहुँची।

'मुझे ही नहीं, ये तुम्हें भी पता चल गया होता अगर तुम में से किसी ने अपने नाखूनों पर गौर किया होता।' हैबूला की बात सुनकर सबने चौंककर अपने नाखूनों की तरफ देखा।

'ओह देवता! ये कैसे हो गया?' जिल्वोकाट की आवाज़ ने बस पहल की, उसके बाद बाक़ी सबके होंठों से भी लगभग ऐसी ही प्रतिकियाएँ उत्पन्न हुईं। उनकी उँगलियों के नाखून ग़ायब हो चुके थे।

'ये *शापित-प्राणी* है। इसके आसपास के इलाक़े में आने वाले हर प्राणी के नाखून ग़ायब हो जाते हैं। उफ़्फ़...कितनी मनहूस थी वो किताब, जिसमें लिखा था इसके बारे में। उसे हाथ में लेते ही मेरी उँगलियों पर नीले रंग के छाले उभर आए थे।' हैबूला जैसे कुछ याद करने की कोशिश कर रहा था।

सबसे ज़्यादा परेशान पतला सींकड़ी दिख रहा था। वो हैरत से अपनी उँगलियों को देख रहा था, जिनके पोरवों से नाखून गायब हो चुके थे।

हैबूला कुछ और कहने के लिए मुँह खोलना चाहता था लेकिन चर्रर्रर्र...की आवाज़ के साथ झोंपडी का जर्जर दरवाजा खुला और भीतर से एक बेहद तीखी और खरखराहट से भरी आवाज़ आई–'आहहा...तुम सब भीतर आकर, इस ठण्डी रात में कुछ गरमाहट क्यों नहीं हासिल करते? अजीब मुसाफ़िरो!'

उस बारीक आवाज़ का ठण्डापन और मनहूसियत उनके बदन में जैसे सिहरन पैदा कर गई। जडाकी ने उनके इर्द–गिर्द एक चक्कर लगाया और झोंपडी के दरवाज़े तक पहुँच गई। आवाज़ का मालिक उन्हें अब भी नज़र नहीं आया था।

'...ओहहो...क्या मुझे मेज़बान बनकर, इस मादा जलप्रेत की अगवानी करनी होगी? जो इस वक़्त दरवाज़े पर है।' झोंपड़ी के भीतर से आने वाली आवाज़ से धूर्तता ऐसे टपक रही थी जैसे रात भर भीगी टहनियों से ओस टपक रही हों।

सब हैरानी से एक–दूसरे की तरफ़ देख रहे थे। तभी एक झटके से झोंपडी के खुले दरवाज़े के बीच उन्हें 'वो' खड़ा नज़र आया 'जिसके' बारे में हैबूला ने अभी बताया था।

उसका जिस्म, जली हुई खाल जैसा दिख रहा था। वो बहुत बूढ़ा और कमज़ोर इंसान था। चेहरे पर घनी झुर्रियाँ साफ़ दिखाई दे रही थी मगर उसके चेहरे पर चमड़ी ऐसे चिपकी हुई थी जैसे तेज़ धूप ने एक–एक क़तरा नमी सोख ली हो। लम्बी–लम्बी उँगलियों पर एक भी नाख़ून नहीं था। उसके पतले हाथों और पैरों की हड्डियों से चिपकी खाल भी सूखकर सख़्त हो गई थी। गहरे गड्ढे जैसी उसकी बड़ी–बड़ी गोल आँखें और पतले होंठों वाला पिचका हुआ मुँह...माहौल में एक अजीब–सी मनहूसियत फैला रहे थे।

उसने बोलने के लिए मुँह खोला तो होंठों की कोर से, दो लम्बे नोकीले दाँत बाहर झाँकने लगे–'ऊँहहूँ...ये कोई ढंग नहीं होता मेहमानों से मिलने का...शायद मुझे और इज़्ज़त से पेश आना चाहिए...या फिर इतना काफ़ी होगा कि मैं इसे अपनी खुशकिस्मती समझूँ कि एक साथ इतने बहादुर योद्धा, इस अभिशप्त झोंपडी में पधरे हैं?' उसकी आवाज़ में अब भी चालाकी और दुष्टता का पुट था।

'तुम कौन हो? क्या हम रात भर यहाँ ठहर सकते हैं? मकास ने निडरता से, एक साथ दो सवाल कर दिए।

उसकी बात पर उस अध्जले से बूढ़े ने अजीब–सा मुँह बनाकर सबकी तरफ़ देखा। 'ये दुनिया भी अजीब चीज़ों से भरी पड़ी है मेरे बहादुर मेहमानो! जो सवाल मुझे तुमसे करना चाहिए था वो भी तुमने ही कर दिया। वैसे ठहराव जैसी कोई चीष होती नहीं। जब कुछ 'ठहर' जाता है, तब भी उसके भीतर रफ़्तार होती है। ये अलग बात है, उसे महसूस न किया जा सके। लेकिन क्या तुम मुझे बताओगे कि ये जत्था कहाँ से आ रहा है और कहाँ जा रहा है...शायद इसी बहाने तुम सबका मामूली परिचय भी मुझे मिल जाए?'

हैबूला अब भी उसे ऐसे देख रहा था जैसे जानता हो कि उसकी हर मीठी बात के पीछे धूर्तता हिलोर ले रही है। तभी पतला सींकड़ी तेज़ी से आगे बढ़ा और जब तक कोई कुछ समझ पाता, उसने अध्जले बूढ़े के पैर की पिण्डली में अपने दाँत गड़ा दिए। उसके बारीक़ दाँतों की चुभन से वो बिलबिला गया।

'आह...' एक कराह उसके मुँह से निकली और उसने तेज़ी से अपनी टाँग को झटका दिया।

पतला सींकडी इस झटके से परे जा गिरा।

'ओह...मार डाला इस इज़्ज़तदार मेहमान ने तो मुझे...उफ़्फ़...कितनी ज़ोर से काटा है।' उसके होंठों से बेहद बारीक और मनहूस आवाज़ निकलकर, सन्नाटे को भंग कर गई।

'तो क्या अब तुम मुझे ये बताओगे, तंदूर में जली हुई शकरगंदी, आग पर सिंके हुए अध्भुने आलू कि तुमने *'मेहमान'* कहने के बाद भी गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फ़ैलीटस का 'सही तरीक़े से' अभिवादन क्यों नहीं किया?'

पतले सींकड़ी की इस अप्रत्याशित हरकत से सब एकदम बौखला गए। जरूस ने तेज़ी से आगे बढ़कर सींकड़ी को पकड़ लिया वरना वो दोबारा उस पर झपटने की तैयारी कर रहा था।

'ह...हम माफ़ी चाहते हैं...अपने दोस्त की इस हरकत के लिए, दरअसल जब तक कोई इसे नाक पर अँगूठा रखकर, जीभ बाहर निकालकर अभिवादन न करे, ये इसे अपना अपमान समझता है मगर...दि...दिल का बुरा नहीं है ये' स्वाइली ने बात संभालने के मक़सद से आगे बढ़कर कहा।

'आह...ख़ूबसूरत नन्ही महिला...माफ़ी तो एम्बरलीफ़ घास के इस तिनके को माँगनी होगी मगर अभी नहीं...क्या ये ठीक

रहेगा कि हम सब भीतर चलें और इस अँधेरी रात को अपना काम बेहतर ढंग से करने दें?' उसने अपने दर्द को पीने की नाकाम कोशिश करते हुए कहा। उसकी आँखें इस वक्त आग के गोलों की तरह जल रही थीं।

सब सावधन थे मगर गुस्से से पतले सींकडी को घूर रहे थे।। एक–एक करके सब भीतर आ गए। झोंपडी में हर तरफ बस सूखी घास बिछी हुई थी। दीवारों पर जगह–जगह लम्बे–लम्बे नाखूनों वाली कुछ सूखी उँगलियाँ टँगी हुई थीं। एक कोने में कटे हुए नाखूनों का एक बडा ढेर पडा हुआ था। कुछ मुडे–तुडे काले बर्तनों और एक चौड़े पत्थर के सिवा भीतर और कुछ नही था। पत्थर को शायद वो सोने के लिए इस्तेमाल करता होगा, जिसे हैबूला ने उल्लूखदेडा बताया था।

'अहह...इस शानदार अँधेरी रात में मुझे अपने मेहमानों की खिदमत करके बेहद खुशी होगी। क्या ये अच्छा न रहेगा कि आप सब इस नरम सूखी घास पर आराम से बैठ जाएँ?' उसने मीठे लहजे में कहा। सबने हिचक कर एक–दूसरे की तरफ देखा।

झोंपडी का मनहूस वातावरण चीख–चीख कर ये चुगली कर रहा था कि सब कुछ उतना सामान्य नहीं है, जितना दिखाई दे रहा है।

'ओहह...लगता है मैं भी उम्र के साथ–साथ भुलक्कड़ होता जा रहा हूँ, मैंने कुछ स्वादिष्ट फल और भोजन, अपने थके हुए मेहमानों के लिए रखा हुआ था, शायद आज ये तुम सबकी ही किस्मत में है।' उसने एक कोने में पडे काले और मुड़े–तुड़े बर्तनों को पलटते हुए कहा।

एक टेढ़ी–मेढी तश्तरी में वो कुछ अजीब–से फल लेकर आया और जिल्चोकाट के सामने करते हुए बोला, 'तुम मुझे सबसे अनुभवी और समझदार लगते हो पत्तेदार पोशाक वाले मुसाफिर, उस बदशक्ल दानव और इस बदजबान अतिथि से ज्यादा अक्लमन्द, जिसने अभी–अभी मेरी टाँग पर काटा है। मगर मैं इससे नाराज नहीं हूँ क्योंकि नाराषगी का नमक, भोजन के स्वाद को कम कर देता है।'

उसकी अजीब बातें पूरी तरह किसी की समझ में नहीं आ रही थीं। अभी कोई भी घास पर नहीं बैठा था। हैबूला अपनी लम्बाई की वजह से झोंपडी के भीतर नहीं आ पाया, बाहर उसकी मौजूदगी की वजह से सब थोड़े निश्चिंत भी थे और सशंकित भी।

जिल्चोकाट ने उसके हाथ से फलों की तश्तरी ले ली और नरमी से बोला, 'माफ़ करना...अ...आप हमें केवल रात भर ठहरने की इजाजत ही अगर देंगे तो ये भी हमारे लिए बहुत ख़ास बात होगी। द...दरअसल हम सबने अभी कुछ ही देर पहले भरपेट भोजन किया है, इस वजह से शायद कोई भी कुछ न खाना चाहे?' उसने ऐसी नज़रों से सबकी तरफ देखा, जैसे कहना चाह रहा हो–'है कोई ऐसा मूर्ख, जो इसके दिए फलों में दाँत गड़ाना चाहेगा?'

'ह...हाँ...हाँ सही कहा, हमने अभी बस कुछ ही देर पहले भरपेट फल खाए हैं, हम तो बस रात भर ठहरना चाहते हैं, हमारे बुजुर्ग मेज़बान।' स्वाइली ने अपनी आवाज़ में नकली मिठास घोलने की कोशिश करते हुए कहा।

'हम्मम...शायद मुझे तुम्हारी बातों का विश्वास कर लेना चाहिए...नन्ही ख़ूबसूरत महिला। ये जानते हुए भी कि हड्डियों की नदी के पास के इलावेफ में केवल अस्थियाँ और नाखून ही पैदा होते हैं, कोई *फल* नहीं।' उसकी आवाज में इस वक्त थोड़ा वहशीपन झलका, जिसे उसने बड़ी सफाई से छुपा लिया।

'क्या हम अपने नरमदिल मेजबान का परिचय जान सकते हैं?' मकास ने उसकी सुर्ख़ आँखों में झाँकते हुए पूछा।

'परिचय...हाँ...क्यों नहीं दोस्तो...मैं एक कमजोर, उपेक्षित बूढ़ा हूँ, जो दुनिया की नज़रों से दूर इस बियाबान में अकेला रहता हूँ। आने–जाने वाले मुसाफिर, जो कुछ खाने को दे जाते हैं, मैं उसी से अपना पेट भरता हूँ।' उसने अपनी आवाज़ में थकावट और कमज़ोरी भरते हुए कहा।

जडाकी ने तब से कोई शब्द नहीं बोला था, वो बस पूरी झोंपड़ी को बेध्ने वाली नज़रों से घूरे जा रही थी। पतला सींकडी कुछ कहना चाहता था लेकिन मकास ने उसे आँख के इशारे से बोलने से मना कर दिया।

'अ...अभी आपने कहा, यहाँ कोई *फल* पैदा नहीं होता, फिर आपके पास ये स्वादिष्ट फल कहाँ से आए, हमारे नरमदिल मेज़बान?' स्वाइली ने सवालिया नजरों और तहकीकात करने वाले लहजे में उससे पूछा।

'ऊँहहू...तुम जरूरत से ज़्यादा समझदार हो, नन्ही महिला। मगर अफ़सोस...समझदारी सबसे बचकानी चीज़ होती है, जब हम किसी दूसरे के रहमोकरम पर, कहीं आश्रय माँग रहे हों। ये **मेरी** झोंपड़ी है और यहाँ, ये बात ज़रूरी नहीं है कि मैं हर आने–जाने वाले को, उसके सवाल का जवाब दूँ लेकिन तुम सबसे पहले उस दानव से मना करो, जो बाहर मेरी झोंपड़ी की तलाशी ले रहा है। मैंने आज तक इतने शक्वफी मुसाफ़िर कभी नहीं देखे।' उसकी आवाज़ की नरमी अब

आहिस्ता–आहिस्ता कम होती जा रही थी।

स्वाइली ने खुले दरवाजे से बाहर झाँककर देखा लेकिन हैबूला उसे कहीं नज़र नहीं आया।

'शायद ये अब ज़रूरी हो गया है कि आप हमें अपना सही परिचय दें।' सलार की आवाज़ में अब सख़्ती थी।

उसकी बदली हुई भंगिमा देखकर एक पल के लिए उल्लूखदेड़ा चौंका लेकिन उसने खुद को संभाल लिया।

'कैसी अजीब बात है? मेहमान 'तुम लोग' यहाँ पर हो और परिचय मुझसे माँग रहे हो? मुझे मालूम है, विश्वास के गन्दले तालाब में, शवफ का अजगर, ष्यादा देर तक छुपा नहीं रह सकता। आख़िरकार उसे साँस लेने सतह पर आना ही पड़ता है। इसलिए, क्या अब यही बेहतर होगा कि मैं नरमी से तुमसे ये कहूँ कि तुम सब यहाँ से जा सकते हो, उस शक्वफी दानव और इस बददिमाग तिनके के साथ, जिसने अभी मेरी टाँग में काटा है।' उसकी आवाज अब गुस्से से काँप रही थी।

'ओह नहीं...मुझे तुम पर गुस्सा नहीं करना चाहिए वरना **वो सब** मुझ पर बहुत नाराज़ होंगे। माफ करना दोस्तों... दरअसल मुझे उम्र के साथ थोड़ा गुस्सा भी आ जाता है लेकिन बेहतर यही होगा कि इस बियाबान में कहीं और जाने की जगह, तुम सब यहीं आराम करो। मैं अभी कुछ देर में वापस आता हूँ।'

उसने अचानक अपना गुस्से वाला लहजा बदल दिया और बिना उनके जवाब का इंतज़ार किए, झोंपड़ी से बाहर निकल गया। बाहर वो अँधेरे मे ऐसे गायब हो गया जैसे कभी वहाँ था ही नहीं।

हैबूला ने उसे खुले मैदान में अँधेरे में घुलते देखा, उसने एक बड़ी खिड़की से भीतर झाँका और पूछा–'वो कहाँ गया है दोस्तो! इस झोंपड़ी की छत पर बहुत सारी अजीब चीज़ें पड़ी हुई हैं, जिनमें इंसानों और पशुओं के कंकाल और खोपड़ियाँ भी हैं।'

'हमें बाहर चलना चाहिए।' मकास ने सबकी तरफ़ देखते हुए कहा।

उसकी बात का मौन अनुसरण करके सब तेज़ी से बाहर आ गए। बाहर हैबूला दूर उस तरफ़ अँधेरे में देख रहा था, जिधर वो बूढ़ा गायब हुआ था।

'ये क्या चाहता है हमसे?' जडाकी ने हैबूला के सिर के आसपास मँडराते हुए कहा।

हैबूला ने नीचे झुकते हुए कहा, 'उल्लूखदेड़े शापित–प्राणी होते हैं। ये हमेशा मासूम मुसाफ़िरों और अकेले भटके हुए लोगों की ताक में रहते हैं। ये खुद को अकेला दिखाकर, शिकार फाँसते हैं लेकिन ये हमेशा झुण्ड में वहाँ मौजूद होते हैं। इनके आसपास आने वाले शिकार के नाख़ून अपने–आप ग़ायब होकर इनवेफ पास पहुँच जाते हैं। उसी से ये पता लगाते हैं कि कोई इनके इलावेफ में आ गया है। ये सड़ा–गला मांस और त्वचा तक खा जाते हैं। धूर्तता और कुटिलता में इनका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। झोंपड़ी के कोने में मैंने नाख़ूनों का एक बड़ा ढेर देखा है, ये जाने अब तक कितने मासूमों को पचा चुके होंगे?'

'मगर ये गया कहाँ?' स्वाइली के चेहरे पर अब चिन्ता की लकीरें दिख रही थीं।

पतला सींकड़ी बार–बार अपने नाख़ूनों की तरफ़ ऐसे देख रहा था जैसे उसकी सबसे बड़ी दौलत लुट गई हो।

'इनका पूरा झुण्ड, यहीं कहीं बियाबान में छुपा होगा। इसे महसूस हो गया है कि ये अकेला हमें क़ाबू नहीं कर सकता और शायद इस पर किए गए शवफ की वजह से, इसे मदद की ज़रूरत महसूस हुई होगी। एक बात और दोस्तों, अगर हमें मुकाबला करना पड़े तो इनके नाख़ूनों से बचकर रहना अगर इनका नाख़ून लग गया तो फिर दुनिया की कोई औषधि उस ज़ख़्म को नहीं भर सकती।' हैबूला ने बहुत आहिस्ता–आहिस्ता अपनी बात पूरी की।

जरूस का हाथ अपनी तलवार, सलार का अपने धनुष पर और मकास की हथेली उस छुरे पर कस गई थी, जो आहिस्ता से हथेली में आ गया था। स्वाइली और जिल्चोकाट पूरी तरह सतर्क नज़र आ रहे थे। दानव हैबूला अँधेरे में आँखें फाड़–फाड़कर देखने की कोशिश कर रहा था। पतले सींकड़ी ने भी शायद ख़तरे को भाँप लिया था, इस वक्त उसके पतले हाथों में एक पतली *डोरी* नज़र आ रही थी। किसी को पता नहीं था, वो उससे क्या करना चाहता था मगर वो कमज़ोर–सी डोरी देखकर, उस ख़तरनाक माहौल में भी सबके होंठों पर मुस्कान तैर गई।

तभी कुछ दूरी पर, अँधेरे के बीच से, उल्लूखदेड़ा निकला, वो बहुत बेचैन नज़र आ रहा था। हर कोई सावधन था, धीरे–धीरे वो पास आ गया।

'क्या मेरे प्यारे मेहमान मुझे बताएँगे कि वो इतनी अँधेरी रात में, झोंपड़ी का नर्म फूस छोड़कर यहाँ बाहर क्यों खड़े हैं?' उसने अपने शैतानी होंठों पर एक नकली मुस्कराहट बिखेरने की कोशिश करते हुए कहा। 'या फिर मैं खुद ही इस

बात को ठीक से समझ लूँ कि **तुम–सबकी–मौत–तुम्हें–बाहर– खींच–लाई–है।**' लार से लिथड़े, उसके दो नोकीले दाँत अब होठों के किनारों से बाहर झाँकने लगे, लहजा एकदम बदल गया और आवाज़ में एक वहशी गुर्राहट शामिल हो गई।

जब तक कोई कुछ समझ पाता, अँधेरे को चीरकर कई साये, उनके चारों तरफ इकट्ठा होने लगे। चंद पलों में ही वो इतने पास आ गए कि सबको साफ देखा जा सकता था। वो कई उल्लूखदेड़े थे। हर कोई पहले वाले से ज्यादा खतरनाक और वहशी नज़र आ रहा था। घेरा बहुत कम समय में इतना छोटा हो गया कि सब, एक–दूसरे से अपनी–अपनी पीठ सटाकर खड़े हो गए। स्वाइली और पतले सींकड़ी ने भी एक–दूसरे से पीठ सटा ली थी। जडाकी उन सब के सिरों के ऊपर तैर रही थी।

उन्होंने देखा, उस उल्लूखदेड़े की बिना नाखून वाली उँगलियाँ, अब आपस में जुड़कर एक बड़े नाखून के रूप में बदल गई थीं, जिसकी चौड़ाई किसी इंसान की हथेली से भी ज्यादा थी। उसने एक लम्बी छलाँग भरी और छिटक कर चारों तरफ खड़े उल्लूखदेड़ों के घेरे में शामिल हो गया। उनके मुँह से निकलने वाली अजीब आवाजें माहौल को और ज़्यादा भयानक बना रही थीं।

'तुम्हें इतना वक्त नहीं लगाना चाहिए था **नेलबोन**...' उनमें से एक ने गुर्राहट भरी आवाज़ में उसकी तरफ देखा, जिसने उन्हें झोंपड़ी मे भीतर बुलाया था।

'ओहहो...तुम्हें समझना चाहिए, **वेडोक**...इनकी धूर्तता इतनी ज़्यादा है कि ये हर चीज़ को शवफ की नज़र से देखते हैं।' उसने झुँझलाते हुए उत्तर दिया।

उनकी गुर्राहटें अब बढ़ती जा रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे किसी भी पल, वो हमला करने के लिए तैयार हैं।

उनमें से एक ने छलाँग लगाई और सीध उनके ऊपर हमला किया लेकिन इससे पहले वो अपने चौड़े नाखूनों की पहुँच उन तक बना पाता, जडाकी हरकत में आ गई। उसकी धुएँदार आकृति के हाथ सीधे हुए और सफेद कोहरे से निकलकर, बर्फीले पानी की एक तेज़ धर, उस उल्लूखदेड़े के जिस्म से टकराई। वो उसी तरह दूर जाकर पड़ा जैसे किसी ताकतवर हाथी ने, खरगोश को सूँड से मारा हो।

जरूस की तलवार का एक भरपूर वार उनमें से एक के कन्धे पर पड़ा और वो बुरी तरह ज़ख्मी होकर तड़पने लगा लेकिन अगले ही पल उन्होंने देखा, घाव से बाहर की तरफ बह रहा खून अब भीतर की तरफ सिमटने लगा था और चंद ही पलों में सारा खून वापस उसकी देह में समा गया। ज़ख्म भी एकदम भर गया था। उसने एक बेरहम गुर्राहट भरी और तेज़ी से जरूस की तरफ झपटा, तभी पतले सींकड़ी ने अपना काम कर दिया। उल्लूखदेड़ा एक झटके के साथ ऐसे रुक गया जैसे किसी ने भैंसे के पाँव में लोहे की मोटी ज़ंजीर कस दी हो।

हुआ ये था, सींकड़ी ने अपने हाथ में पकड़ी कमज़ोर–सी डोरी का पफंदा बनाकर, उसके पाँव में कस दिया था। वो अब ज़मीन पर बैठा हुआ छटपटा रहा था। मुश्किल से हाथ भर की उस डोरी से वो खुद को छुड़ा नहीं पा रहा था। हैरत की बात ये थी कि जितनी डोरी उसके पाँव में कसी थी, उतनी ही अब भी सींकड़ी की उँगलियों में लहरा रही थी। डोरी का कोई सिरा न तो कहीं बँध हुआ था और न ही उसे किसी ने पकड़ रखा था लेकिन वो उल्लूखदेड़ा इस तरह वहीं बँध–सा गया था जैसे उसे किसी खूँटे से बाँध दिया गया हो।

मकास के हाथ में थमा लम्बा खंजर, उनमें से एक की गर्दन में धँस गया, जो पतले सींकड़ी पर हमला करने की कोशिश कर रहा था। जिल्चोकाट, के हाथों ने उनमें से एक को ऐसे जकड़ लिया जैसे किसी पेड़ की जड़ें उस पर कस गई हों। वो उस शिकंजे से निकलने की कोशिश कर रहा था लेकिन सफल नहीं हो पा रहा था। सलार के धनुष की डोरी से सनसनाता हुआ एक तीर निकला और उसकी गर्दन में पैवस्त हो गया लेकिन वो अब भी ज़िन्दा था। जिल्चोकाट ने उसे ध्म्म से ज़मीन पर छोड़ दिया, उसका जिस्म किसी रेत के बोरे की तरह नीचे ढह गया।

पतले सींकड़ी ने अब तक दो और के पैर में डोरी कस दी थी लेकिन अब भी उतनी ही डोरी उसकी उँगलियों में लहरा रही थी। जडाकी ने उनमें से एक को घने कुहरे से ढँक दिया, वो बार–बार उसमें से निकलने के लिए छटपटा रहा था लेकिन कुहरा उसके साथ–साथ जैसे चिपका हुआ था। स्वाइली ने उनमें से एक के चारों तरफ़ एक घेरा खींच दिया था, जो हर पल सिकुड़कर छोटा होता जा रहा था। उसने घेरे से बाहर आने की कोशिश की लेकिन निकल नहीं पा रहा था। आहिस्ता–आहिस्ता घेरा इतना छोटा हो गया कि वो उसके पैरों पर पफंदे की तरह कस गया। अब उसके दोनों पैर आपस में जुड़ गए थे और वो वहीं जड़ होकर रह गया।

'इन्हें ऐसे नहीं मारा नहीं जा सकता, बेबस किया जा सकता है।' हैबूला ने उनमें से दो को उठाकर दूर अँधेरे में

फेफकते हुए कहा।

'मगर क्यों?' मकास ने लगभग चीखते हुए पूछा।

'इन सबकी जान इनके जिस्मों में नहीं है। ये अपने झुण्ड के सबसे छोटे बच्चे के भीतर अपनी सामूहिक–आत्मा डाल देते हैं, जो इस वक्त कहीं दूर अपनी माँ की गोद में बैठा होगा। इन्हें केवल बाँधकर बेबस किया जा सकता है, इस तरह इनका ख़ात्मा असंभव है।' हैबूला ने भारी आवाज़ में कहा।

ये अजीब रहस्य उनमें से हर किसी ने सुना और फिर जंग ने दूसरा रूप ले लिया।

वो बस ये कोशिश कर रहे थे कि किसी तरह उनमें से एक–एक को घेरा जा सके और सींकड़ी बिजली की फुर्ती से उसके पाँव में पतली रस्सी का फंदा कस रहा था। एक–एक करके उन्होंने ज्यादातर को वहीं बाँध दिया। अब बस दो बच गए थे। उनमें से एक ने हैबूला की पतली टाँग पर हमला किया। बचते–बचते भी उसका चौड़ा नाख़ून उसकी पिण्डली को चीरता चला गया। वहाँ से लहू की धार ऐसे फूट पड़ी जैसे किसी रसदार फल में चाकू से छेद कर दिया हो। तब तक सींकड़ी उसके पाँव में भी रस्सी कस चुका था।

'मैं इसे देखता हूँ, तुम तैयार रहो।' सलार ने पतले सींकडी की तरफ देखते हुए कहा।

उसके धनुष की डोरी से दो तीर सनसनाते हुए निकले और एकमात्रा बचे उल्लूखदेड़े के दोनों पाँवों में धँस गए। वो अब अपनी जगह से हिल भी नहीं पा रहा था। सींकड़ी ने झुकाई देते हुए खुद को बचाया और झट से उसके पाँव में डोरी कस दी।

'इस भुने हुए जीवाश्म ने तो कमाल ही कर दिया। किसी तरह काबू ही नहीं आ रहा था लेकिन इन जिन्दा नाख़ूनों को ये नहीं मालूम कि इनका पाला किससे पड़ा है। मैंने ऐसे कितने उल्लुओं को दूर–दूर तक खदेड़ा है, बड़े आए उल्लूखदेड़े!' सींकड़ी ने अपना बित्ते भर का सीना फुलाने की कोशिश करते हुए कहा।

हैबूला के पैर से अब भी भलभल करके ख़ून बह रहा था। वो आहिस्ता–आहिस्ता नीचे बैठता गया और सब उसके इर्द–गिर्द इकट्ठा हो गए। सींकड़ी की रस्सी में फँसे हुए सारे उल्लूखदेड़े अब भी छटपटा रहे थे।

'उफ्फ...अब क्या करें? ये ख़ून निकलना कैसे बंद होगा?' जिल्चोकाट ने सवालिया नज़रों से सबकी तरफ देखा।

'तुमने कहा था कि इनके नाख़ूनों से बना घाव दुनिया की किसी औषधि से नहीं भरता?' स्वाइली ने हैबूला की तरफ देखते हुए पूछा।

'ह...हाँ...' हैबूला की आवाज़ में दर्द के साथ–साथ चिन्ता भी झलक रही थी।

'कोई तो तरीका होगा, इस तरह तो इसके जिस्म का सारा रक्त बह जाएगा।' जरूस ने उसकी घायल टाँग पर अपनी हथेली रखते हुए कहा।

'*रैटाटॉस्कर* घास...केवल वही इस वक़्त इस ज़ख़्म को भर सकती है और इसका ख़ून बहना बन्द कर सकती है।' सलार ने सबकी तरफ देखते हुए कहा।

'न...नहीं...इनके नाख़ूनों से बने ज़ख़्म को रैटाटास्कर भी नहीं भर सकती। कोई नहीं जानता कैसे इनके दिए ज़ख़्मों को भरा जाता है।' हैबूला पर अब आहिस्ता–आहिस्ता कमज़ोरी छाती जा रही थी क्योंकि रक्त अब भी लगातार उसके पैर से निकल रहा था।

'गुदड़ी का ये लाल बताएगा कि कैसे इस घाव को भरा जा सकता है, वरना मैं उल्लू के घोंसले में पड़ी, बदबूदार बीट जैसे इसके चेहरे को चीचमपोस के फल में तब्दील कर दूँगा।' सींकड़ी ने उनमें से एक उल्लूखदेड़े की तरफ बढ़ते हुए कहा। जिसकी तरफ़ वो बढ़ रहा था, वो अब भी उस पतली रस्सी में बँध छटपटा रहा था। हर तरफ़ उनकी गुर्राहटें गूँज रही थीं मगर अब उनमें से एक भी आज़ाद नहीं था।

'तुम...' सींकड़ी ने उसकी तरफ़ देखते हुए अपनी बारीक़ आवाज़ में कहा। 'तुम...बताओगे खुरपे जैसे चौड़े तुम्हारे इस नाख़ून का घाव कैसे भरेगा? उल्लू की आँख के मोतियाबिन्द...वरना मैं तुम्हारा वो हाल करूँगा कि तुम्हारी इक्कीस पुश्तें, गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फ़ैलीटस के सामने आने के नाम से भी काँपेंगी।' उसकी आवाज़ में इस वक़्त बला की सख़्ती झलक रही थी।

सींकड़ी के पास जाते ही, उसने उस पर झपटने की कोशिश की लेकिन वो माकूल दूरी बनाए हुए था। फिर पता नहीं उसने क्या किया...उस उल्लूखदेड़े की टाँग में बँधी रस्सी आहिस्ता से कसनी शुरू हो गई। अब वो लगातार उसके टखने पर जकड़ती जा रही थी।

'आहह...तुम ये क्या कर रहे हो, घास के तिनके? इस रस्सी को हटाओ वरना मैं तुम्हारी सूखी खाल को भी चट करने से नहीं चूकूँगा।'

रस्सी लगातार उसके टखने पर कसती जा रही थी। अब वो उसके पैर के मांस में गड़ने लगी। कुछ ही पल में ऐसा लगने लगा जैसे वो उसके गोश्त को काटकर भीतर धँस जाएगी।

'तुम अभी सब वुफछ बताओगे, नवजात चूजे के पंखों में पलने वाले खुज्जल पिस्सू, बूढ़े उल्लू के कटे–फटे नाखून... अधेड़ खटमल के बालों में रहने वाली जवान जूँ।' सींकड़ी जैसे गुस्से से उबल रहा था।

रस्सी अब वाकई उसकी खाल में धँसती हुई, गोश्त तक जा पहुँची थी। वो दर्द से चीखा लेकिन सींकड़ी उसे अब भी गुस्से से घूरे जा रहा था।

'आहह...रोको इसे...मेरे नरमदिल मेहमान! तुम इतने निर्दयी नहीं हो सकते कि अपने मेजबान की जान ले लो।' उल्लूखदेडा अब जैसे अपनी पुरानी धूर्तता पर उतर आया था।

'लंगड़ी गिझाई के सूजे हुए पैर, बदनाम कनखजूरे के मशहूर पंजे, काले गुबरैले की मूँछ पर लटकती सपेफद मकड़ी... अगर और दो पल तुमने ये नहीं बताया कि तुम्हारे इस गंदे नाखून का घाव कैसे भरेगा तो तुम्हें अपना ये बदबूदार, सूखा हुआ पाँव गँवाना पड़ेगा और उसके तुरन्त बाद ये रस्सी तुम्हारे घुटने को जकड़ लेगी। थोड़ा–थोड़ा करके, ये तुम्हारे जिस्म को काटकर रख देगी, मुर्दा भैंस की आँत चाटने वाली मक्खी, बेहोश चूहे की हिलती हुई पूँछ। मैं तुमसे आखिरी बार पूछ रहा हूँ, उसके बाद ये रस्सी अपना काम खुद करेगी।' पतले सींकड़ी ने गुस्से में उस पर गालियों की बौछार कर दी।

सब चुपचाप खड़े सींकड़ी और उस उल्लूखदेडे को देख रहे थे।

उनमें से एक ने ऐसी आवाज़ में गुर्राते हुए कहा, जैसे कोई बूढ़ा, पानी के गरारे कर रहा हो–'नहीं, **लेनोतास** तुम इस पतले शैतान को कुछ नहीं बताओगे, ये रहस्य अगर तुमने खोला तो तुम्हारी मौत तय है।'

उसकी बात सुनकर, उस उल्लूखदेडे की आँखों में मौत का भय साफ दिखाई देने लगा, जिसके टखने पर रस्सी कसी हुई थी। बाकी लोगों ने साफ देखा, रस्सी अब उसके गोश्त को चीर रही थी। वो दर्द से चीख रहा था। सींकड़ी पर उसकी चीखों का जैसे कोई असर नहीं हो रहा था। कुछ ही पलों में ऐसा लगा जैसे उसके लिए पीडा असहनीय हो गई हो।

'आहह...उफ्फ...इसे रोको...इसे रोको...देवता की ख़ातिर इसे रोको, मैं बताता हूँ, तुम निर्दयी नहीं हो, तुम इसे रोक दोगे, रोको इसे।' उसकी आवाज में छुपा वहशीपन, धूर्तता और दर्द साफ़ नज़र आ रहे थे।

सींकड़ी ने एक पल के लिए जैसे अपने हाथों से कुछ इशारा किया, रस्सी अब उसके गोश्त में गड़नी बंद हो गई।

थोड़ी–सी राहत मिलते ही जैसे उसके भीतर का शैतान फिर जाग गया। वो ख़तरनाक आवाज में गुर्राया–'तुम...तुम सब में से एक भी ज़िन्दा नहीं बचेगा, तुम्हारी हड्डियाँ इसी झोंपड़ी की छत पर सूखेंगी, धूर्त मुसाफिरो...और सबसे बुरी मौत तुम मरोगे सूखे हुए शैतान।' उसने सींकड़ी की तरफ़ देखते हुए कहा।

सींकड़ी के चेहरे के भाव बदले और रस्सी एक बार फिर उसके मांस में गड़नी शुरू हो गई। अब लग रहा था कि दर्द उसके लिए बदतर होता जा रहा था। वो चीखने लगा 'आहह...रोको...रोको...रोको इसे। मैं बताता हूँ...बताता हूँ। तुम बहुत दयालु हो मुसाफिरों! इसे रोको। मैं सब बताता हूँ...सब बताता हूँ।' उसकी आवाज़ अब लरजने लगी थी।

सींकड़ी ने जैसे उसे अपनी गोल–गोल आँखों से इशारा किया कि 'बोलो'।

उसने एक बार अपने सब साथियों की तरफ़ देखा और फिर आहिस्ता से बोलना शुरू कर दिया–'आहह...ये घाव दुनिया की किसी भी औषधि से नहीं भरेगा मगर ये भर जाएगा...उस चीज़ से, जो **औषधि** न हो। आहह...ये *सहज-रहस्य* है... हर कोई इस घाव से बचने के लिए औषधियों का प्रयोग करता है लेकिन ये उस किसी भी चीज़ से भर सकता है, जो औषधि के रूप में इस्तेमाल न की जाती हो। आहह...इस रस्सी को रोको मेरे शैतान दोस्त, तुम अगर चाहो तो मुट्ठी भर *मिट्टी* से भी इस ज़ख्म को भर सकते हो मगर उससे पहले तुम्हें उसमें किसी उल्लूखदेडे की *लार* मिलानी होगी। आहह... आओ...आओ मेरे पास...मैं तुम्हें अपनी *दुर्लभ* लार देता हूँ। आ जाओ...ले लो...' वो सींकड़ी को अपनी तरफ़ आने का इशारा कर रहा था।

'न...नहीं, उसके पास मत जाना।' स्वाइली ने चीखकर पतले सींकड़ी को सचेत किया जो लापरवाही में आगे बढ़ने ही वाला था।

'वो बहुत धूर्त और शातिर है...तुम्हें काटना चाहता है। इसकी लार लेने का कोई और तरीका निकालना पड़ेगा।'

तभी जिल्चोकाट के लकडी जैसे सख्त हाथ का एक वार उस उल्लूखदेडे की कनपटी पर पडा और वो बेहोशी की गर्त में डूबता चला गया।

'लो...हो गयी इसकी हलचल बन्द। अब तुम आराम से इसकी लार ले सकते हो।' जिल्चोकाट ने अपने हाथ ऐसे झाडे जैसे उन पर धूल लग गई हो।

जरूस ने आगे बढ़कर एक मुट्ठी मिट्टी उठाई और उस उल्लूखदेडे के होठों के किनारों से बहती लार को उसमें मिलाया। उसके दाँतों के पास जाते हुए, उसे गर्म साँस का एक झोंका अपनी हथेली पर महसूस हुआ। जरूस ने सावधनी से उस मिश्रण को अपनी हथेली में समेटा और हैबूला के जख्म पर लगाया। कुछ पल तक खून बहना बन्द नहीं हुआ लेकिन फिर आहिस्ता–आहिस्ता रक्तस्राव रुक गया।

मैं कैल्टिकस की इन गुफाओं में बरसों तक अकेला रहा हूँ। बस कभी कोई मकडी, कोई कीट–पतंगा भीतर आ जाता है। ठण्ड से बचने के लिए जो आग मैं जलाता हूँ, कभी–कभी उसके पास एक नीला चूहा भी आकर बैठ जाता है। मगर आज एक अनचाहा मेहमान भी भीतर आ गया था। सुबह, जब मैं इस दास्तान का एक बेहद खास हिस्सा पथरीली दीवार पर उकेर रहा था, एक *बिल्त्रू* यहाँ घुस आया था। वो शायद कुछ खाने की तलाश में था या फिर हो सकता है *'आईने'* ढूँढ रहा हो मगर गुफा के भीतर से आती 'खट–खट' की आवाजों से शायद वो डर गया। जब तक मैं उसे रोकता वो उल्टे पाँव वापस भाग चुका था।

दरअसल, **डर से या तो हम 'डरते' हैं या 'नहीं' डरते लेकिन दोनों ही स्थितियों में हम डर को नहीं जान पाते। जब हम बहुत डर जाते हैं, तब डर की खुरदुरी कोमलता को महसूस नहीं कर सकते और जब हम बिल्कुल नहीं डरते, तब उसके रेशमी खुरदुरेपन से अनछुए रह जाते हैं,** तब डर हमसे इतनी दूर खडा होता है, जितनी दूर संथाल के तीनों बेटे अपने गाँव से इस वक्त खड़े थे।

ये सफर, महायुद्ध की क़त्लोग़ारत भी खुद में समेटे हुए है, साथ ही उन सब पडावों की गर्द भी, जिन्हें बहुत कम लोगों के तलवों ने छुआ है लेकिन मैं अब वो हिस्सा पथरीली दीवारों पर खोद रहा हूँ, जिस पर लिखा है कि संथाल के बेटे और वो पूरा जत्था, बियाबान में बनी अकेली झोंपडी से बचकर आगे बढ़े। उन उल्लूखदेडों को उसी दशा में छोड़कर, जिसमें उन्हें पतले सींकड़ी की पतली रस्सी ने बाँध दिया था, जिसके बारे में उसने बताया कि वो अपनी पकड़, बस दो पहर तक ही रख सकती हैं, उसके बाद वो खुद ही हवा में घुलकर ख़त्म हो जाएँगी। हैबूला का घाव तो पूरी तरह भर गया मगर उसने एक ख़ास सबक़ भी सीखा था, जो बताता था कि दूसरों को चेतावनी देने वाले, अक्सर खुद लापरवाह हो जाते हैं।

उन्होंने वो खुशी भी महसूस की, जो सबके नाखून वापस आने की वजह से हुई थी। सबके नाखून, जो तब वापस आए, जब उन्होंने बियाबान में बनी उस झोंपडी से कई पहर की दूरी तय कर ली। सबसे ज़्यादा खुश तो वो स्ट्रासोल था, जिसका नाम गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फ़ैलीटस था। बिना एक पल की देरी किए, वो 'चट–चट' करके अपने नाखूनों को चट कर रहा था।

'इसमें लिखा है–***'वो, जो किसी को नहीं देख सकते, वो किसी को नहीं छोड़ते, उनसे लड़ने वाला हारने के लिए अभिशापित है। इससे आगे केवल वहीं पढ़ सकता है, जिसने इतना सफ़र तय कर लिया हो...'*** स्वाइली ने शिला–पुस्तक की उस आख़िरी पंक्ति को दोहराते हुए कहा, जहाँ बेरीसब्लोच कुहाको–सीलन लिखा हुआ था।

'ये बेरीसब्लोच कुहाको–सीलन इस पथरीली किताब का लेखक ही होगा लेकिन इस नाम का कोई कभी हुआ है, ये मैंने आज तक किसी किताब में नहीं पढ़ा।' हैबूला ने एक जम्हाई लेते हुए कहा।

'तुम्हें लगता है तुमने सारी दुनिया की किताबें पढ़ रखी हैं...सींक पर टंगे हुए टिंडे, सुई में गड़े हुए मटर के दाने।' सींकड़ी ने उसके मोटे सिर और पतली गर्दन की तरफ़ देखते हुए कहा 'चलो तुम मुझे बताओ **षैनषीषैनषीषैनजिकषैन** किस किताब का लेखक है?'

हैबूला ने उसकी तरफ़ ऐसे देखा जैसे सोच में पड़ गया हो। कुछ देर तक वो अपने मोटे सिर को खुजाता रहा लेकिन जब उसकी समझ में कुछ नहीं आया तो उसके चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे हार मान ली हो। पतले सींकड़ी की बारीक हँसी ने उसे और भी चिढ़ा दिया। वो अपने मुँह पर हाथ रखकर जैसे लोटपोट होने को तैयार था।

'तुम रहे दानव के दानव ही...बाँस–बरंगा हो चुके हो लेकिन दिमाग़ नाम की चीज़ नहीं है, अब आलूबुख़ारे जैसी अपनी ये गोल आँखें मत घुमाओ और महान स्ट्रासोल गम्पूग्रास...'

सीकड़ी अपनी बात पूरी कर पाता उससे पहले ही स्वाइली ने उसे जोर से टोक दिया। 'तुम्हे शर्म आनी चाहिए, किसी का मजाक उड़ाते हुए। चुप रहो...और केवल ये बताओ ये *जैनजीजैनजीजैनजिकजैन* किस किताब के लेखक का नाम है। मैंने बहुत पुस्तकें पढ़ी हैं लेकिन इस नाम का कोई लेखक मैंने भी कभी नहीं सुना!' स्वाइली के चेहरे पर अब अचरज के भाव थे।

'ओहहो...तो अब तुम्हारे भीतर भी बुद्धि का कठफोड़वा चोंच मारने लगा, नाटी बीरबहूटी...मैं...' उसने सोचने वाले अंदाज में कहा। 'बता तो सकता हूँ मगर ये एक बहुत बड़ा रहस्य है पहले तुम मुझसे ये वादा करो कि ये बात अगर तुम्हें बता दूँ तो तुम कभी किसी से इसका जिक्र नहीं करोगे...नामुरादो! दरअसल तुम सबका पेट बदहजमी वाली भैंस की तरह फूल जाएगा अगर मैंने ये रहस्य साझा किया मगर *चूंकि* ये बहुत अजीब है, *इसलिए* मैं इसे तुम्हें बता सकता हूँ...पतली कानसलाई।' उसने स्वाइली की तरफ शरारती नजरों से देखा

'हम्मम...दरअसल...वो बात क्या है कि...हम्मम...बता ही देता हूँ कि *जैनजीजैनजीजैनजिकजैन* दरअसल किसी **लेखक** का नाम नहीं है।' अपनी बात पूरी करते ही उसने ऐसे सबकी तरफ देखा जैसे सबकी खिल्ली उड़ा रहा हो।

'ऐसे, मुझे मायके घूमने आई छिपकली की तरह मत देखो, पतले दानव!' उसने हैबूला की तरफ देखते हुए कहा।

'दरअसल...दरअसल...ये एक **किताब** का नाम है, न कि किसी *लेखक* का...ये किताब **आठ** अंक की रहस्यमयी शक्तियों का बहुत रोचक व्याख्यान है। ये अंक बहुत ताकतवर होता है, इस बात को समझने के लिए तुम्हें अभी आठ सौ साल लग जाएँगे नन्ही राक्षसी!' उसने 'नन्ही राक्षसी' शब्द मे पूरा सम्मान उड़ेलते हुए कहा मगर लहजे से साफ लग रहा था कि वो मजाक उड़ा रहा है।

स्वाइली और हैबूला, दोनों का गुस्सा इस वक्त जैसे सातवें आसमान पर था। उन्हें जैसे ही ये अहसास हुआ कि पतला सीकड़ी इतनी देर से उन्हें किताब के लेखक के नाम पर बेवकूफ बना रहा था, उनका पारा चढ़ गया। हैबूला ने अपने हाथ मे पकड़ी एक मोटी किताब, सींकड़ी के टिंडे जैसे सिर पर पटकनी चाही लेकिन वो बेहद फुर्ती से बच गया मगर स्वाइली ने बचते–बचते भी, उसकी पतली टाँग में अपना पैर उलझा दिया और वो मुँह के बल जमीन पर गिरा। ढेर सारी धूल और मिट्टी उसके पूरे चेहरे पर लिथड़ गई, कुछ मिट्टी मुँह के भीतर भी चली गई।

बाकी सब उनकी इस मजाक और झड़प का मज़ा ले रहे थे। इतने खतरनाक माहौल में भी ये चुहल, एक अजीब से सुकून और खुशी का अहसास भर गई। तभी ऐसा लगा जैसे धरती आहिस्ता–आहिस्ता कम्पन कर रही हो। अपने आसपास की मिट्टी और घास का काँपना, अब वो साफ महसूस कर सकते थे। सब एक जगह खड़े हो गए और हर तरफ ऐसे देखने लगे जैसे उस कम्पन की वजह जानना चाहते हों लेकिन दूर तक भी उन्हें कुछ दिख नहीं रहा था।

पूरा मैदान अब जैसे थरथराने लगा, हर तरफ से ऐसी आवाज़ें आने लगीं जैसे कोई विशाल सेना एक साथ कदमताल करती हुई उसी दिशा में आ रही हो। 'दगड़–दगड़' की आवाजें सबको साफ सुनाई दे रही थीं। फिर दूर उन्हें एक बड़ा झुण्ड, अपनी तरफ आता दिखा। वो क्या था ये तो स्पष्ट नहीं हो पा रहा था लेकिन ये ज़रूर पता चल रहा था कि मैदान में होने वाला कम्पन और ये आवाजें उसी से आ रही हैं।

जैसे–जैसे वो पास आते जा रहे थे, हर किसी की आँखें हैरत से फैलती जा रही थीं। वो सैंकड़ों थे, या शायद हज़ारों...एक विशाल रेवड़ के रूप में। वो अपने लम्बे–लम्बे हाथों और लम्बे पैरों के बल पर अपना पूरा वज़न जमीन पर डालते हुए तेजी से दौड़ते आ रहे थे। भारी–भरकम जिस्म और विशाल देह वाले वो प्राणी जैसे अपने सामने आने वाली हर चीज़ को कुचल कर रख देना चाहते थे।

उनकी आकृति, किसी बड़े चिम्पैंजी की तरह थी लेकिन पूरे जिस्म पर एक भी बाल नहीं था। चेहरा किसी भयानक शेर जैसा था, पूँछ बेहद लम्बी और पैर किसी हाथी जैसे थे। जैसे–जैसे वो पास आते जा रहे थे, उन्हें समझ नहीं आ रहा था, इस आफत से कैसे बचें। कुछ और पास आने पर उन्होंने देखा, उनमें से एक के चेहरे पर भी आँखें नहीं थीं। पूरा चेहरा सपाट था, बस खुला हुआ खतरनाक मुँह दिख रहा था, जिसमें से झाँकते लम्बे दाँत और लाल जीभ बाहर लटकती दिख रही थी।

'ये...ये क्या हैं?' हैबूला ने हकलाते हुए पूछा।

'प...पता नहीं...मगर ये जो भी हैं, जल्दी से बचने का कोई उपाय खोजो वरना हम सब इनके भारी पैरों तले कुचलकर मर जाएँगे।' जरूस ने थोड़ा पीछे हटते हुए कहा।

'जब तक तुम कुछ सोचोगे ये हमें कुचल देंगे...आवारा घोंघे के खोए हुए अण्डो!' पतले सींकड़ी ने जैसे चीखते हुए

कहा।

इस चंद पलों की बातचीत में ही वो इतने पास आ गए कि हर कोई बुरी तरह घबरा गया।

'भ...भागो...अगर जान बचानी है तो।' जिल्चोकाट ने चीखते हुए कहा।

हर कोई वापस मुड़कर मैदान में उसी तरफ भागने लगा, जिस तरफ वो पूरा वजनी रेवड दौड़ रहा था। उस दिशा के अलावा और कोई दिशा भागने के लिए थी भी नहीं क्योंकि वो पूरे मैदान में फैले हुए थे। अब पूरा जत्था आगे–आगे भाग रहा था और वो विशाल जीव उनके पीछे–पीछे थे। सब बुरी तरह बदहवास दौड़ रहे थे। स्वाइली को हैबूला ने अपने हाथ में उठा लिया और वो सरपट, सबसे आगे–आगे दौड रहा था। पूरे जत्थे में जैसे एकदम अफ़रा–तफ़री मच गई।

फिर एक पल में हर तरफ जैसे नीरवता छा गई। सन्नाटे को केवल उनके भागते क़दमों की आवाज़ ही भंग कर रही थी। कुछ पलों तक तो वो सब बदहवास भागते रहे लेकिन जैसे ही उन्हें ये अहसास हुआ कि उनके पीछे आने वाली भागते कदमों की आवाजें अब बंद हो चुकी हैं और धरती का कम्पन भी, उन्होंने पीछे पलटकर देखा।

सबसे पहले मकास चीखा–'रुको, पलटकर देखो।'

उसकी आवाज पर जिल्चोकाट और जरूस तो एकदम ठहर गए लेकिन हैबूला, सलार और जडाकी ने वो शब्द नहीं सुने। जरूस ने पलटकर देखा, दूर–दूर तक कहीं किसी जीव का नामोनिशान तक नहीं था। वो हैरत से हर तरफ ऐसे देख रहा था जैसे उसकी आँखें बाहर आ जाएँगी। उनके रुकने की वजह से, थोड़ा आगे जाकर बाकी सबने भी पीछे पलटकर देखा। सबके पाँव ऐसे रुक गए जैसे ज़मीन से चिपक गए हों। उनके पीछे दौड़ने वाला रेवड अब *गायब* था।

'कहाँ गए वो सब?' जिल्चोकाट ने हैरानी से मैदान की तरफ देखते हुए कहा।

किसी ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि यही सवाल सबके ज़ेहन में घूम रहा था।

'ये कैसे हो सकता है? अभी तो वो खतरनाक जीव हमारे पीछे थे। ऐसे पूरा रेवड कहाँ गायब हो सकता है?' मकास ने जैसे जिल्चोकाट के सवाल को बल देते हुए कहा।

तब तक पतला सींकडी, हैबूला और जडाकी भी वहाँ आ गए। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि आख़िर ये हुआ क्या।

हैबूला ने स्वाइली को नीचे उतारना चाहा मगर वो चीख पड़ी–'नहीं, रुको मत, भागते रहो। वो सब यहीं हैं। ये **आइनोवैफरस** हैं। बेहद ख़तरनाक हैं, इनकी आँखें नहीं होतीं मगर इनकी सूँघने की क्षमता बहुत ताक़तवर होती है। ये पल भर में किसी जीव को चट कर जाते हैं। इनसे लड़ने वाला हारने के लिए अभिशापित होता है, ये केवल तब दिखाई देते हैं, जब ये दौड़ रहे होते हैं। जब ये ठहरकर कुछ सूँघने या गंध लेने की कोशिश करते हैं तो ये प्राकृतिक रूप से अदश्श्य हो जाते हैं। इस वक़्त वो पूरा रेवड़, ठहरकर हमारी गंध ले रहा है...भ...भागो...'

स्वाइली की बात पूरी होने से पहले ही ऐसा लगा जैसे धरती एक बार फिर काँपनी शुरू हो गई हो। भारी क़दमों की 'दगड़–दगड' की दिल दहलाने वाली आवाज़ हर तरफ़ से आनी शुरू हो गई। इस बार उन्होंने देखा, हल्की–हल्की धूल के बीच से उनके अदश्श्य जिस्म आहिस्ता–आहिस्ता नुमाया होते जा रहे थे, जिनका नाम स्वाइली ने *आइनोकैरस* बताया था।

उनकी लम्बी लाल जीभ और तीखे दाँत, उनकी भयानकता की कहानी चीख–चीख कर कह रहे थे। ऐसा लगा जैसे बस एक–दो पल में ही, वो उनके इतने पास आ जाएँगे कि उनमें से किसी को चबा जाएँ। तभी एक अजीब घटना घटी, जडाकी की धुएँदार आकृति उनके इर्द–गिर्द मँडराई और सबके जिस्म पल भर में सफ़ेद कुहरे में तब्दील हो गए। दौड़ते हुए आइनोकैरस, उनके धुएँदार जिस्मों से होकर पार निकलते जा रहे थे।

हालाँकि वो सब अब भी बदहवास थे। उन्हें पता ही नहीं चल पाया कि ये हो क्या रहा है। उनका व्यवहार अब भी ऐसा था जैसे खुद को उनके नीचे कुचले जाने से बचाने की कोशिश कर रहे हों। आइनोकैरस का पूरा झुण्ड उनके कुहरेदार जिस्मों से होकर पार निकल गया। जैसे ही पूरा झुण्ड पार हुआ, उन्होंने ख़ुद को संभाला और अपने जिस्मों की तरफ़ देखा।

'ये क्या हुआ? किसने किया ये?' सलार ने अपनी धुएँदार आकृति पर हाथ फिराने की कोशिश करते हुए कहा मगर उसका हाथ अपने ही जिस्म के भीतर घूमकर रह गया। ऐसा लग रहा था जैसे वो पूरा का पूरा कुहरे में तब्दील हो गया हो। हर कोई एक–दूसरे को हैरत से देख रहा था।

'मैंने...' जडाकी ने हवा में तैरते हुए कहा। उन्होंने मुँह बाए, उसकी तरफ़ देखा।

'हाँ, अगर ऐसा नहीं करती तो तुम सब उनके पेट में समा चुके होते लेकिन ये ज़्यादा देर तक काम नहीं करेगा। तुम

सब इस रूप में कुछ ही देर तक रह सकते हो। उसके बाद तुम वापस अपने असली शरीर में लौट आओगे।' जडाकी की बात पूरी होते ही उन्होंने उस झुण्ड की तरफ देखा, जो उन्हें पार करता हुआ मैदान में तेजी से आगे चला गया था।

वहाँ अब कुछ नहीं दिख रहा था, इसका मतलब साफ था कि आइनोकैरस इस वक्त ठहरकर, उनकी गंध लेने की कोशिश कर रहे थे। एक बार फिर भारी कदमों का शोर शुरू हुआ और पूरा झुण्ड पलटकर उनकी तरफ आने लगा, आहिस्ता–आहिस्ता वो सब दिखाई देने लगे। उनके गायब शरीर, दौड़ने की वजह से दोबारा प्रकट होने लगे।

इस बार उनका रुख बहुत आक्रामक और खतरनाक लग रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वो उनकी गंध मिल जाने की वजह से बहुत खुश हों लेकिन उनके न मिल पाने की वजह से बहुत क्रोधित। धुआँ–धुआँ होते उन सभी के जिस्मों के पास आते हुए, वो अब अपनी अजीब–सी गुर्राहट में जैसे चीख रहे थे। उनके भारी पाँवों से बचने की कोशिश करते हुए वो तेजी से दाहिने–बाएँ हो रहे थे। सबसे ज्यादा मुश्किल हैबूला को हो रही थी। अपने विशाल जिस्म की वजह से वो न चाहते हुए भी किसी न किसी आइनोकैरस से टकरा जा रहा था, जिस कारण उसकी धुएँदार देह, बार–बार हवा में घुल जाती।

पूरा झुण्ड, इस बार फिर उन्हें लगभग रौंदता हुआ निकल गया। हालाँकि कुहरेदार जिस्मों के कारण, आइनोकैरस उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा पाए। जिस खतरनाक तेजी से वो इस बार उनके ऊपर से निकले कुछ दूर जाकर, उसी तेजी से गायब भी हो गए।

'इस तरह कब तक हम इनसे बचेंगे। जल्दी कुछ करना होगा वरना कुछ पलों बाद तुम सबके जिस्म वापस अपने पुराने रूप में लौट आएँगे।' जडाकी की आवाज में इस बार चिन्ता घुली हुई थी।

'लगता है तुम सबके दिमाग में किसी बूढ़े गुबरैले का गोबर भरा हुआ है...नामुरादो! वॉयवार्न के मुँह से निकलती भाप जैसी ये मादा जलप्रेत भी शायद पगला गई है, जो किसी को इतनी–सी बात समझ नहीं आ रही कि इस मुसीबत से कैसे बचना है?' उसकी आवाज में इस वक्त ऐसी *मड़क* महसूस हो रही थी जैसे इस बात पर इतराना चाहता हो कि उसने इस मुसीबत का हल खोज लिया है।

'अंधी दीमक के ये रिश्तेदार, केवल गंध की वजह से हमें खोज पा रहे हैं अगर इन्हें गंध न आए तो ये बिदके हुए भैंसे की तरह हमें खोजना बन्द कर देंगे। तुम सब खोए हुए कबूतर की तरह मुझे मत देखो और जल्दी से एक जगह इकट्ठा हो जाओ।' सींकड़ी की बात उनकी समझ में नहीं आई लेकिन सबने सहमति में सिर हिला दिया।

इससे पहले कि आइनोकैरस दोबारा लौटकर आते, पतले सींकड़ी ने अपनी गन्दी लँगोटी के नेपेफ से एक छोटी–सी गोली निकाली। बाहर आते ही उसका आकार ऐसे फूलकर बड़ा होने लगा जैसे उसमें हवा भरती जा रही हो।

'जल्दी से सब इसे अपने–अपने हाथ में एक–एक बार पकड़ो और मुझे वापस करो...तुम सबकी गंध इसमें समा जाएगी। जल्दी करो, सनकी चुड़ैल के चूल्हे से निकले धुएँ जैसा ये जिस्म लेकर ज़्यादा मत उड़ो, वो कमबख़्त वापस लौट रहे हैं।' सींकड़ी की बात पूरी होते–होते, उन्होंने देखा आइनोकैरस वापस लौटकर उन्हीं की तरफ आ रहे हैं। इस बार उनके नथुनों से जैसे गुस्से की चिंगारियाँ निकल रही थी।

धूल के बीच से उनके अदश्श्य जिस्म फिर प्रकट होते जा रहे थे। पतले सींकड़ी ने तेज़ी से वो बड़ा गोला वापस लिया और उसे ज़मीन पर पूरी ताक़त से उस दिशा में लुढ़का दिया, जिध्र से आइनोकैरस उनकी तरफ़ आ रहे थे। उसके हाथ से छूटते ही, गोला इतनी रफ़्तार से निकला जैसे उसके भीतर कोई तूफ़ान समाया हो।

'अब ये तब तक नहीं रुकेगा, जब तक इन्हें इस इलावेफ से दूर नहीं ले जाता।' सींकड़ी ने इतराते हुए कहा।

आइनोकैरस एक पल के लिए ठिठके, उनके जिस्म तुरन्त ग़ायब हो गए। गोला, उनके पैरों के बीच से होता हुआ, तेज़ी से विपरीत दिशा में जा रहा था। ऐसा लगा जैसे वो सब एकदम वापस मुड़े हों और फिर कुछ ही पलों में उनके ग़ायब जिस्म दोबारा दिखने लगे। वो सब गोले के पीछे तेज़ी से दौड़ते जा रहे थे। चंद पलों में ही पूरा रेवड़ उनसे दूर होता चला गया। कुछ देर बाद वहाँ केवल वो हल्की–हल्की धूल उड़ रही थी, जो उनके भारी क़दमों से उड़ी थी।

'उफ़्फ़...' स्वाइली के मुँह से एक गहरी साँस निकली।

उनके जिस्म अब आहिस्ता–आहिस्ता कुहरे की आकृति से बाहर आते जा रहे थे।

मैंने इन पहाड़ियों में, इतना घना कुहरा भी देखा है, जिसमें अपना हाथ भी दिखाई न दे। मुझे वो दिन याद हैं, जब सर्दियों में लगातार तीन महीने तक घना कुहरा पड़ता रहा। उन दिनों एक रैंडल चूहा, लगातार इस गुफा में रहा। धूप निकलने पर वो चला गया मगर मैं इन गुफाओं को छोड़कर कहीं नहीं जा सकता। अब मेरा काम आहिस्ता–आहिस्ता खत्म

होता जा रहा है। शायद यैन्गोल्डा ने सही कहा था–'हम सब एक चलती–फिरती रेत–घड़ी हैं, जिसका रेत कण–कण करके रिस रहा है।'

संथाल के बेटों के पास भी एक रेत–घड़ी थी, जो उन्हें उस पानी तक पहुँचने के लिए दी गई थी, जिसमें 'गीलापन' नहीं होता। वो पानी, जिसने इस दास्तान को वहाँ ले जाकर खड़ा कर दिया, जहाँ तिलिस्मी–जत्थे के पाँवों से रेगिस्तान निकलने लगा। उस कोरे पत्थर तक पहुँचाया, जिसके भीतर वो पानी था, जिसे 'शाश्वत–जल' भी कहा जाता।

मैं अब मोम के उन चौखटों को उठा रहा हूँ, जिन पर संथाल के बेटों का *'उनसे'* टकराव दर्ज है, जिनकी रूह में समन्दर निवास करते थे। उस अविश्वसनीय दृश्य को मेरी बूढ़ी आँखें देख सकती हैं, जिसे शायद दुनिया के किसी रेगिस्तान ने कभी नहीं देखा होगा। साथ ही वो बेहद खूबसूरत किरदार, जो 'सौ–परत वाले–जलपोत' की तहों में सोया था।

गीलापनरहित पानी

अध्याय तेईस

हवा का तीखापन बढ़ता जा रहा था। मैदान के बीचोबीच खडे वो सब, एक गोल घेरा बनाए हुए थे। स्वाइली शिला–पुस्तक पढ़ने की कोशिश कर रही थी लेकिन उससे आगे कुछ लिखा ही नहीं था। हर कोई चिन्तित और परेशान लग रहा था। दूर–दूर तक फैला बियाबान, उनके जिस्मों को निगलकर जैसे खुश था। आगे का सफर इस तरह अचानक रुक जाएगा, ये उनमें से किसी ने सोचा तक नहीं था। पतला सींकडी चुपचाप अपने नाखून कुतर रहा था और जडाकी सबके सिर के ऊपर हवा में तैर रही थी।

'अ...अब क्या करें? इसमें लिखा है कि इससे आगे केवल वही पढ सकता है, जिसने यहाँ तक का सफर तय कर लिया हो लेकिन इसमें तो आगे के सफर के बारे में कुछ भी नहीं लिखा।' स्वाइली की आवाज़ में अब चिन्ता झलक रही थी।

'तुम...तुम एक बार फिर से कोशिश करो, शायद कुछ संकेत लिखे हों जो तुम समझ न पा रही हो।' मकास ने स्वाइली की तरफ देखते हुए कहा।

'तुम्हें क्या लगता है, मैं इतना भी नहीं पढ़ पाउँफगी कि इसमें क्या लिखा है? पूरी कोशिश करने के बाद भी इसमें आगे कुछ समझ नही आ रहा। न कोई संकेत है न एक भी पंक्ति लिखी है।' स्वाइली की आवाज़ में अब हल्की झुँझलाहट का पुट था।

'फिर इस से आगे कैसे बढा जाए? ऐसे तो हम बीच में लटक गए।' जिल्वोकाट की आवाज़ में गंभीरता थी।

जडाकी ने जरूस की तरफ देखते हुए कहा, 'तुम कोशिश करो, शायद तुम में से किसी को कोई रास्ता मिले।'

उसकी बात पर जरूस ने किताब अपने हाथ में ले ली और उलट–पलट कर देखने लगा मगर उसको कुछ समझ नहीं आया। जरूस के हाथ में पकड़ी एक शिला को मकास ने पलटने की कोशिश की तो उस पर एक पंक्ति उभर आई। मगर वो क्या था, ये वो नहीं समझ पाया।

'अरे...देखो, इस पर कुछ उभर रहा है।' मकास की आवाज़ में खुशी के साथ–साथ जोश का भी पुट था।

सलार भी तेजी से उस तरफ आया और झुककर किताब की तरफ देखने लगा।

'ये किताब, अब शायद तुम तीनों का इंतज़ार कर रही है। तुम भी इसे अपने हाथ से छुओ, शायद हमें सन्देश मिल जाए।' हैबूला ने सलार की तरफ देखते हुए कहा।

सलार ने हिचकते हुए अपने हाथ उस शिला पर रखे, जिसे मकास ने पकड़ा हुआ था। एक हल्की–सी सरसराहट हुई और शिला–पुस्तक की उस शिला पर तेज़ी से कुछ हर्फ़ उभरने लगे।

'स्वाइली, जल्दी से इसे पढ़ने की कोशिश करो, देखो इस पर कुछ उभर रहा है।' सलार ने लगभग चीखकर कहा।

वो तेज़ी से आगे बढ़ी और झुककर उस शिला पर लिखे हर्फ़ों को पढ़ने की कोशिश करने लगी।

> ***'तुम्हारे पाँवों से निकलने वाला रेगिस्तान जहाँ खत्म होगा, वहीं है वो पानी, जिसमें गीलापन नहीं है। उसे छू सकता है केवल 'वो' जो गुजरा हो 'जिस्मानी और रूहानी-कीमिया' से, उसके सिवा अगर किसी और ने उसे छूने की कोशिश की, तो उसके हाथ, पैर और गर्दन, उसी के धड़ में समा जाएँगे और अनन्त काल तक उसी दशा में ज़िन्दा रहेगा- बैरीसब्लोच कुहाको-सीलना।'***

स्वाइली ने एक साँस में सारी पंक्तियाँ पढ़ डालीं।

'इसका, क्या मतलब है *पाँवों-से-निकलने-वाला-रेगिस्तान?*' मकास ने सबकी तरफ देखते हुए कहा लेकिन किसी के पास उसके इस सवाल का जवाब नहीं था।

'यहाँ तो दूर–दूर तक केवल ये मैदान नज़र आ रहा है, रेगिस्तान का तो यहाँ कहीं नामोनिशान तक नहीं है।' सलार ने दूर क्षितिज की तरफ देखते हुए कहा।

'तुम सबने अगर अपने पाँवों की तरफ ध्यान दिया होता तो शायद तुम ये बात न कहते दोस्तो।' जरूस की आवाज़ ने जैसे एकदम उन सबको चौंका दिया।

'ओहह...ये क्या? ये कैसे हो सकता है?' जिल्चोकाट जैसे उछल ही पडा।

हर कोई अब अपने पैरों की तरफ देख रहा था।

हैरतअंगेज ढँग से, उनके पैरों के नीचे का एक बड़ा हिस्सा, रेतीला हो चुका था। जहाँ वो सख़्त, सूखी मिट्टी देख रहे थे, उसकी जगह अब वो पूरा घेरा, जिसमें वो खडे थे, एक छोटे–से मरुस्थल में तब्दील हो चुका था। दूर तक पैफले मैदान में, वो छोटा–सा रेतीला हिस्सा, एक अजीब थेगली की तरह लग रहा था।

हैबूला अचकचाकर पीछे हटा, जहाँ–जहाँ उसके पैर पडे वहाँ का मैदान ख़त्म हो गया और वहाँ जमीन से रेत निकलने लगी। वो सब अपनी–अपनी जगह से थोडा हिले और जिस जगह उनके पैर पड जाते, उस जगह की मिट्टी ख़त्म होकर, वहाँ रेत पैदा हो जाता। जितना वो सब हिल रहे थे, वो रेतीला हिस्सा उतना ही ज़्यादा फैलता जा रहा था।

'हमें आगे बढ़ना होगा दोस्तो, उसी दिशा में, जिध्र हम जा रहे थे।' जरूस की आवाज़ ने जैसे सबकी चेतना भंग की।

बिना कुछ बोले वो सब थोड़ा आगे बढ़े, आश्चर्यजनक रूप से रेगिस्तान भी उनके साथ आगे बढ रहा था। हर कदम के साथ, वो अपने पीछे और बड़ा रेगिस्तान छोड़ते जा रहे थे। काफ़ी आगे जाने के बाद, मकास ने आहिस्ता से पीछे पलटकर देखा, अब जहाँ तक उनकी नज़र जा रही थी, दूर–दूर तक केवल रेगिस्तान की रेत उड़ती नजर आ रही थी।

अब वो उस जगह से इतना आगे आ चुके थे कि थोड़ी देर पहले जो रेत, उनके टखने को भी नहीं छू पा रही थी, उनके पीछे रेत के टीले खड़े होते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे धरती की कोख से निकलकर, वो रेगिस्तान हर पल जवान होता जा रहा हो। उनके पीछे रेत के टीले इतने ऊँचे होते जा रहे थे जैसे आसमान छूकर ही रुकेंगे। बिना कोई ज़्यादा बात किए, वो कुछ दूर और चले और उसके बाद ठहर गए।

'किताब में लिखा है–'तुम्हारे पाँवों से निकलने वाला रेगिस्तान जहाँ ख़त्म होगा, वहीं है वो पानी, जिसमें गीलापन नहीं है।' हम जितना आगे बढ़ते जा रहे हैं, ये रेगिस्तान भी हमारे पीछे उतना ही फैलता जा रहा है। इस तरह तो ये कभी ख़त्म ही नहीं होगा।' स्वाइली ने अपने कपड़ों से धूल झाड़ते हुए कहा।

'हम अपनी मंज़िल के बेहद क़रीब हैं, अब हमें और भी ज़्यादा सावधन होने की ज़रूरत है। सब लोग अपने आसपास नज़र रखो, हमें पूरी सावधनी से आगे बढ़ना होगा।' जरूस ने सामने दूर तक पैफले मैदान और अपने पीछे पसरे विशाल रेगिस्तान पर नज़र डालते हुए कहा।

अपने सामने का पूरा भू–दृश्य पार करने के बाद, अब वो जिस स्थान पर खड़े थे, वो चट्टानों का एक लम्बा सिलसिला था। दूर–दूर तक फैली नोकीली चट्टानें, जिनकी उँफचाई देखने के लिए ठोढ़ी ऊपर उठानी पड़ती। विशाल पत्थरों के बीच एक इतनी विशाल गुफा नज़र आ रही थी, जिसके मुहाने से सौ कैमल्योफ़ैण्ट भी अगल–बगल गुजरते तो शायद जगह बची रहती। गुफा की उँफचाई जैसे आसमान छू रही थी। उनमें से किसी ने भी अब तक इतनी ऊँची और चौड़ी गुफा नहीं देखी थी।

'ओह मेरे देवता, ये गुफा है या फिर धरती का मुँह?' हैबूला ने हैरत से अपनी आँखें पैफलाते हुए कहा।

गुफाद्वार पर खड़े हुए, वो चींटियों के छोटे जत्थे की तरह लग रहे थे। आगे बढ़कर चट्टानों पर पैर रखते ही उन्हें महसूस हुआ कि उनके पैरों से पैदा होने वाला रेगिस्तान अब थम गया है। कपड़ों से रेत झाड़ते हुए, वो गुफा के मुहाने पर आकर रुक गए।

'किताब में लिखा है–***'उसे छू सकता है केवल 'वो' जो गुज़रा हो 'जिस्मानी और रूहानी-कीमिया' से, उसके सिवा अगर किसी और ने उसे छूने की कोशिश की, तो उसके हाथ, पैर और गर्दन, उसी के धड़ में समा जाएँगे और अनन्त काल तक उसी दशा में ज़िन्दा रहेगा।'*** स्वाइली ने जैसे सबको रुकने का अज्ञात संकेत किया।

'हम भीतर जाएँगे, बाकी सबको बाहर ही ठहरना होगा।' जरूस ने निर्णायक स्वर में कहा।

'नहीं, हमें भी तुम्हारे साथ, भीतर चलना चाहिए। पता नहीं वहाँ कैसा खतरा तुम्हारा इंतजार कर रहा हो। हम इस तरह तुम तीनों को भीतर नहीं भेज सकते।' जिल्चोकाट ने जरूस की बात अनसुनी करते हुए कहा।

'नहीं, किताब में साफ लिखा है, उस पानी को केवल वही छू सकता है, जो 'जिस्मानी और रूहानी–कीमिया' से गुजरा हो। हमें निर्देशों का पालन करना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कोई छोटी–सी गड़बड़ी सारी मेहनत पर पानी फेर दे।' मकास ने जरूस की बात से सहमत होते हुए कहा।

'बेहतर यही होगा कि ये तीनों ही भीतर जाएँ, हमें बाहर नजर भी रखनी होगी और अगर कोई खतरा दिखाई देता है तो उससे निपटना भी होगा।' जडाकी भी मकास के साथ सहमत नजर आई।

उन्होंने आखिरी बार शिला–पुस्तक की तरफ देखा और तीनों ने उसे अपने हाथों में थाम लिया। शिला–पुस्तक पर उभरने वाले हर्फ, स्वाइली ने बहुत गौर से पढ़े।

> ***'गुफा में है झरना, जिसके नीचे रखा है खास पत्थर, पत्थर के भीतर है 'वो' जिसकी तलाश में तुम यहाँ तक पहुँचे हो। गुफा में केवल 'वो' प्रवेश कर सकते हैं, जो इसका हक रखते हैं। अब गुफा के भीतर कोई मुश्किल नहीं आएगी लेकिन बाहरी दुनिया इतनी आसान नहीं है...सावधान!'*** स्वाइली ने आखिरी लफ़्ज पढ़े और चुप हो गई।

तीनों ने एक शब्द भी नहीं कहा और एक बार सबकी तरफ देखकर आगे बढ़ गए।

तीनों भाइयों ने बेहद सधे हुए और सावधन कदमों से गुफा के विशाल मुहाने में प्रवेश किया। जैसे–जैसे वो अन्दर घुसते जा रहे थे, भीतर का रहस्यमय और अजीब माहौल उनकी रगों में सनसनी पैदा कर रहा था। पूरी गुफा की दीवारों पर काई जमी हुई थी, छत से होकर कुछ लताएँ ज़मीन तक लटक रही थीं। सबसे चौंकाने वाली और अजीब बात ये थी, गुफा के भीतर एक रहस्यमयी नीली रोशनी फैली थी। उन्होंने हर तरफ़ नज़र घुमाकर उजाले के स्रोत को ढूँढने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहे।

'यहाँ कितनी अजीब मनहूसियत है।' मकास ने फुसफुसाते हुए कहा।

दोनों में से किसी ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया, बस सहमति में हल्के से अपना सिर हिलाया। जितना भीतर वो प्रवेश करते जा रहे थे, गुफा का सन्नाटा उतना ही बेध्ने वाला होता जा रहा था।

आगे जाने के बाद, उन्हें कहीं से पानी की आवाज़ आई। ऐसा लग रहा था जैसे कुछ दूर, कोई झरना गिर रहा हो। हर तरफ नज़र रखते हुए, वो आहिस्ता–आहिस्ता आगे बढ़ रहे थे। जरूस के हाथ में तलवार, मकास के हाथ में उसका छुरा और सलार के हाथ में वो धनुष आ चुका था, जिस पर उसकी मुट्ठी पूरी ताक़त से कसी हुई थी।

काफ़ी भीतर जाने के बाद, उन्हें लगा पानी की आवाज़ें लगातार पास आती जा रही हैं। एक विशाल मोड़ मुड़ने के बाद, वो एक ऊँचे झरने के सामने खड़े थे। वहाँ पानी का इतना शोर था कि उन्हें अपने कानों पर दबाव पड़ता महसूस हो रहा था। उँचाई से गिरते पानी के छींटे, उनके जिस्मों पर भी पड़ रहे थे।

'क्या यही है वो झरना, जिसके बारे में शिला–पुस्तक में लिखा है?' सलार की आवाज़ में गहरा सवालिया पुट था।

'यक़ीनन...मगर वो पत्थर कहाँ है, जिसके भीतर वो पानी है?' जरूस ने उसे सवाल का उत्तर देते हुए, सवाल किया।

'हमें आगे बढ़कर देखना चाहिए।' मकास ने दोनों की तरफ़ देखा।

तीनों आहिस्ता–आहिस्ता आगे बढ़े। झरने का पानी जहाँ गिर रहा था, उस जगह एक बड़ा–सा पत्थर रखा हुआ था। पानी की धार ठीक उस पत्थर के ऊपर गिर रही थी।

'शायद यही है?' मकास की आवाज़ में अब हल्का कम्पन था।

'हाँ, मगर इसे बाहर निकालना होगा।' जरूस ने चारों तरफ़ देखते हुए कहा।

'मैं झरने से इस पत्थर को निकालता हूँ, तुम चारों तरफ़ नज़र रखना।' मकास ने उसकी तरफ़ देखते हुए कहा। अपनी बात पूरी करते ही वो झरने के पानी में उतर गया।

पानी की बूँदें, उसके सोने जैसे जिस्म को भिगोने लगीं। बेहद सावधनी से वो पत्थर के पास तक पहुँचा और उसे हिलाने की कोशिश की। पत्थर अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ। दूसरी बार की कोशिश में उसने पत्थर को थोड़ा हिला दिया।

'सावधनी से।' जरूस ने बाहर से उसे हौसला देते हुए कहा।

मकास की स्वर्ण–देह अब पूरी तरह पानी मे तर हो चुकी थी। उसने एक बार फिर ताकत लगाई और इस बार पत्थर अपनी जगह से हट गया। उसने पत्थर को उठाने की कोशिश की, पूरी ताकत लगाकर वो उसे उठा पाया और किसी तरह झरने से बाहर ले आया।

'संभालकर...' सलार ने पत्थर को सहारा देते हुए कहा।

उन्होंने पत्थर गुफा की ज़मीन पर रख दिया। पत्थर को उठाते वक़्त उन्हें साफ महसूस हो रहा था कि उसके भीतर, तरल हिलोर ले रहा है। जरूस ने अपनी तलवार को मूठ की तरफ से पकडा और उसकी नोक, पत्थर पर रखकर पूरी ताकत से दबाई। हैरतअंगेज़ रूप से तलवार पत्थर में धँस गई। उसने तलवार को गोल–गोल घुमाकर, पत्थर में एक छोटा छेद कर दिया।

मकास ने पत्थर को तिरछा किया और छोटे–से छेद से उसने साफ देखा, पत्थर के भीतर चाँदी की, एक छोटी *सुराही* साफ नज़र आ रही थी। उसने विजेता नजरों से दोनों भाइयों की तरफ देखा। उसने पत्थर ऊपर उठाया और पूरी ताकत से ज़मीन पर पटक दिया। नीचे गिरते ही पत्थर कई टुकड़ों में बँट गया और सुराही उसके भीतर से छिटककर एक तरफ गिर गई।

जरूस ने तेज़ी से आगे बढ़कर सुराही उठा ली। उसका छोटा मुँह मज़बूत ढक्कन से बन्द था। उसने अपनी मुट्ठी में भरकर, ढक्कन को घुमाने की कोशिश की लेकिन वो जरा भी नहीं हिला।

'अब हमें वक्त नही गँवाना चाहिए। हमें फ़ौरन वापस बाहर चलना चाहिए।' मकास की आवाज में इस वक्त उतावलापन साफ झलक रहा था।

जरूस ने ढक्कन खोलने की कोशिश बन्द की और अपनी तलवार संभाल ली। उन्हें इस बात से बहुत हैरत हो रही थी कि सुराही को हासिल करने के दौरान किसी तरह की कोई बाध नही आई, न ही किसी तरह के खतरे का उन्हें सामना करना पड़ा जबकि उन्हें लग रहा था कि सुराही तक पहुँचने से पहले उन्हें ज़रूर किसी भयानक खतरे का सामना करना पड़ेगा।

वापस लौटते वक़्त उनके पाँवों में जैसे उतावलापन लिपट गया। बहुत तेज़ी से कदम बढ़ाते हुए, वो गुफा के मुहाने की तरफ बढे। बाकी सब लोगों को साथ लेकर, वो जल्दी से जल्दी वहाँ से निकल जाना चाहते थे। गुफा का विशाल मुहाना दूर से ऐसा लग रहा था, जैसे वो किसी अजगर के पेट से बाहर निकल रहे हों।

प्रवेश–द्वार पर दिखती सूरज की रोशनी, जैसे उम्मीदों को गर्म कर रही थी। उन्हें इस बात को लेकर बेहद हैरत हो रही थी कि गुफा के मुहाने पर, उन सब में से कोई भी नज़र नहीं आ रहा था जबकि उन्हें द्वार पर इंतज़ार करते हुए मिलना चाहिए था। तेज़ी से आगे बढ़ते हुए, वो बाहर आ गए। चारों तरफ देखने के बाद भी उन्हें न तो कहीं जडाकी नज़र आई, न हैबूला, जिल्वोकाट, स्वाइली या पतला सींकड़ी।

'कहाँ गए सब? मकास की आवाज़ में हैरत गुलाटियाँ मार रही थी।

'उन्हें तो यहीं होना चाहिए था?' जरूस ने दूर तक फैले रेगिस्तान पर नज़र डालते हुए कहा।

सलार की आवाज़ में चिन्ता का पुट था–'वो किसी ख़तरे में तो नहीं हैं?'

हक्केबक्के से, वो हर तरफ देख रहे थे कि एक विशाल चट्टान के पीछे से कोई बाहर निकला। उन्होंने चौंककर उस तरफ देखा, वो लैनीगल था, शातिर लैनीगल। उसका ऊनी लबादा हवा की वजह से फड़फड़ा रहा था। होंठों पर एक धूर्त मुस्कराहट चिपकाए, वो पास आता जा रहा था। उसके हाथ में वही मुड़ा–तुड़ा डण्डा था, जिससे उसने कैटाकोटस पर वार किया था। उसके साथ कई नरसिंह भी थे।

'आहह...क्या दृश्य है? कब से मैं अपनी आँखों से ये दृश्य देखने की ख़्वाहिश लिए था। मेरे तीनों बहादुर योद्धा, उस सुराही के साथ, जिसे पाने की तमन्ना लिए मैंने जाने कितने बरसों इंतज़ार किया है।' वो आगे बढ़ता हुआ बहुत बेपरवाह नज़र आ रहा था।

'तुम...शा...ति...र...लैनीगल! तुम्हारा दुर्भाग्य आख़िर तुम्हें यहाँ तक ले ही आया। तुम्हारे हर दुष्कृत्य और षड़यन्त्रा का हिसाब आज चुकता किया जाएगा।' मकास के जबड़े एक–दूसरे के ऊपर कस गए।

'ओहह...तुम कितने भोले हो, सोने जैसे बदन वाले बहादुर मकास! बहादुरी, आवश्यक रूप से, थोड़ी मूर्ख होती ही है।' उसकी आवाज़ में ज़बरदस्त व्यंग्य का पुट था।

'नक्षत्रा–विद्या के महान ज्ञाता लैनीगल को धमकी देने की मूर्खता, ठीक ऐसी ही है, जैसे नदी में बहती कोई चींटी, मगरमच्छ को देख लेने की धमकी दे रही हो। तुम मेरे इंतजार का मीठा चीचमपोस हो, जिसे मैं बहुत सब्र के साथ खाना चाहूँगा लेकिन उससे पहले अपने साथियों की भी थोड़ी परवाह तुम्हें ज़रूर करनी चाहिए।' ऐसा लग रहा था जैसे व्यंग्य उसकी जबान पर मृगछाला बिछाकर पसर गया हो।

'अगर तुमने उनको खरोंच भी पहुँचाने की कोशिश की, तो तुम्हारी कई पुश्तें अफ़सोस करेंगी कि तुम उनके पुरखे थे लैनीगल! कहाँ हैं वो?' जरूस की आवाज क्रोध की अधिकता की वजह से काँप रही थी।

'हुम्मम...बेचैनी का लिबास...ठीक है। मैं तुम्हारी व्याकुलता शान्त कर देता हूँ, मेरे प्रिय तलवारबाज!' लैनीगल ने अपने शब्दों को धूर्तता में लपेटते हुए कहा।

लैनीगल ने उनकी व्यग्रता भाँप ली–'ओह...नक्षत्रों की कसम, तुम सब कितने बेरहम हो...**स्टॉडी**!' उसने एक नरसिंह की तरफ देखते हुए कहा। 'क्या तुम हमारे उन मेहमानों को बाहर नहीं ला सकते थे, जिनसे मिलने के लिए ये तीन बहादुर बेचैन हैं?'

स्टॉडी नाम का वो नरसिंह हल्के से मुस्कराया लेकिन उसके नोकीले दाँतों के बीच, मुस्कान विलुप्त ही रही। वो फिर से चट्टानों के पीछे चला गया और इस बार जब वो बाहर आया तो वो अकेला नहीं था।

चट्टानों के पीछे हलचल होनी शुरू हुई और एक विशाल कछुआ निकलकर बाहर आया। उसका आकार, हाथी से भी बड़ा था। उसकी पीठ पर एक नरभक्षी चिहानचोचस बैठा हुआ था। उसने अपने हाथ में वो रस्सी पकड़ी हुई थी, जो कछुए की नाक में बिंधी हुई थी।

तीनों को फौरन उस बिल्वू लोबामोस के कहे अल्फाज याद आ गए–'खोजार के वर्षा–वनों से, नरभक्षी *चिहानचोचस*... असीमित दुष्ट ताकतों के मालिक। वो जिसका मांस खाते हैं, उसकी रूह उनकी गुलाम हो जाती है। कछुओं की पीठ पर सवार रहने वाला खूंख्वार कबीला।'

कछुए के बाहर आने से एक अजीब–सी खड़–खड़ की आवाज़ हुई। तीनों ने चौंककर देखा, वो अपने पीछे एक विशाल पिंजरे को खींचकर ला रहा था, जिसकी सलाखें रेत की बनी हुई थीं। पिंजरे के भीतर, हैबूला, जिल्वोकाट, स्वाइली, पतला सींकड़ी और जडाकी थे। पिंजरा इतना विशाल था कि हैबूला जैसा ऊँचा दानव भी उसमें किसी बच्चे की तरह लग रहा था।

कछुए पर सवार उस चिहानचोचस के पीछे दो विशालकाय दानव भी बाहर आए, जिन्हें उन्होंने फौरन पहचान लिया, उनके हाथों में जैल्कोवा के तने से बनाए गए मुगदर थे। वो असनोच थे। उन्हें बिल्वू लोबामोस के वो शब्द याद आए–'इल्वीन के पठारों से, पर्वताकार देह वाले, हिंसक *असनोच*...जिनके जिस्म किसी पहाड़ की तरह ऊँचे और इतने चौड़े होते हैं कि दो हाथी उनके ऊपर से गुज़र सकते हैं।'

उनके वहाँ आते ही माहौल में उनकी साँस की बदबू फैल गई। दोनों ने गर्म चट्टान और जैल्कोवा के तने से बने अपने मुगदर पिंजरे के पास टिका दिए और ऐसे खड़े हो गए जैसे अगर किसी ने पिंजरे की तरफ़ नजर उठाकर भी देखने की कोशिश की तो वो मुगदर से उनकी खोपड़ी चकनाचूर कर देंगे। उनके पैर के तलवों पर उगे घने काले बाल, तीनों ने उस वक़्त साफ़ देखे, जब उन्होंने पिंजरे के पास आने के लिए अपने कदम बढ़ाए।

'हम्मम...अब शायद तुम्हें समझ आ गया होगा, नौजवान योद्धाओं कि लैनीगल को दुनिया का सबसे शातिर गुरु क्यों कहा जाता है। तुम्हे लग रहा होगा लैनीगल तुम्हें भूल गया। सफ़र की मुश्किलों को पार करते हुए, तुम आसानी से अपनी मंज़िल तक महज़ इस वजह से पहुँच गए क्योंकि लैनीगल ऐसा चाहता था। लैनीगल उससे पहले तुम्हारी कलाइयाँ नहीं पकड़ना चाहता था, जब तक तुम वो पानी न हासिल कर लो और अब, जबकि तुम्हारे पास वो अनमोल सुराही है, जिसका लैनीगल ने बरसों–बरस इंतज़ार किया है, अब तुम्हारी गर्दनें ज़्यादा देर पंजे से दूर नहीं रहनी चाहिए ना?' उसकी आवाज़ की लोच और सख़्ती किसी की भी रूह कँपा देने के लिए काफ़ी थी।

'तुमसे बहुत सारे हिसाब चुकता करने हैं लैनीगल!' सलार की आवाज़ में इस बार क्रूरता का पुट था।

उन्होंने भाँप लिया कि बात करते–करते ही कई नरसिंहों ने उनके चारों तरफ़ घेरा बना लिया। एक ख़ास बात और उन्होंने महसूस की, जिस पिंजरे के भीतर वो सब क़ैद थे, उसके आरपार देखा जा सकता था लेकिन पिंजरे के भीतर की कोई आवाज़ बाहर नहीं आ पा रही थी।

कछुए की पीठ पर बैठा हिंसक चिहानचोचस, अपना भयानक मुँह बार–बार खोल रहा था। उसकी बड़ी–बड़ी सुर्ख

आँखें इस वक्त तीनों भाइयों पर टिकी हुई थीं।

'तो अब...शायद यही बेहतर रहेगा कि तुम समझदारी का हाथ पकड़ लो और वो अनमोल सुराही मुझे सौंप दो, जिसके लिए मुझे जाने क्या–क्या करना पड़ा।' लैनीगल ने अपने हाथ में पकड़े डण्डे पर अपनी पकड़ सख्त करते हुए कहा। 'ताकि मैं तुम्हारे ये दुर्लभ जिस्म और ये पानी लेकर उसके पास जा सकूँ, जिसकी मुट्ठी में सारी दुनिया की लगाम आने ही वाली है। उस पानी पर तुम्हारा हक नहीं है। जानते हो लड़के, ताकत...किसी बिगडैल हाथी की तरह होती है। अगर किसी अनाड़ी महावत के हाथों में उसे सौंप दिया जाए तो वो खुद भी उसके पैरों तले कुचला जा सकता है और दूसरों की जान भी खतरे में डाल सकता है।'

मकास ने एक बार दूर–दूर तक पैफले रेगिस्तान पर नज़र डाली और बिजली की फुर्ती से तीनों भाई एक–दूसरे की तरफ पीठ करके खड़े हो गए। वो अब हमले की मुद्रा में आ गए।

'ओहह...ये *मूर्खता* भी कितनी अजीब चीज है। कभी भी किसी को जकड़ लेती है...यानि अब तुम मुकाबला करोगे? ये देखकर भी कि तुम कितनी मुश्किल में पँफस चुके हो, तब भी तुम मुकाबला करना चाहते हो संथाल के बेटों...आह...मैं तुम्हारे पंगु पिता को क्या मुँह दिखा पाउँफगा, जब तुम्हारी लाशें उस गाँव में पहुँचेंगी, जहाँ के भोले–भाले लोग आज भी उन तीन युवकों के लौटने का इंतजार कर रहे हैं, जो अपने पिता का कौल पूरा करने निकले हैं।' लैनीगल ने अपना वाक्य पूरा करते ही नरसिंहों को इशारा किया और वो अपना घेरा छोटा करने लगे।

तभी मकास के हाथ से निकला एक सनसनाता हुआ छुरा, उस नरसिंह के सीने मे पैवस्त हो गया, जो घेरा तोड़कर सबसे आगे आ गया था। उसके हाथ में थमा भारी पफरसा 'टन्न' की आवाज के साथ पथरीली चट्टान पर गिरा। सलार के धनुष की डोरी से निकला तीर, एक नरसिंह के पुट्ठे में गहराई तक धँस गया। जरूस ने पफरसे के उस वार को अपनी तलवार पर रोका, जो उस नरसिंह ने किया था, जिसकी लम्बी अयाल हवा की वजह से उसकी पीठ तक लहरा रही थी।

कुछ ही देर में वहाँ भयानक मारकाट मच गई। नरसिंहों की संख्या ज्यादा नहीं थी लेकिन वो फिर भी बहुत हिंसक तरीवेफ से लड़ रहे थे। लैनीगल अब भी अपने होठों पर एक शातिर मुस्कराहट लिए, इस लड़ाई को शान्ति से देख रहा था। कुछ ही देर में ज़्यादातर नरसिंह ध्राशायी हो चुके थे। तीनों के जिस्म पर कई गहरे घाव थे। बीच–बीच में नजर उठाकर उन्होंने देखा, पिंजरे के भीतर कैद पूरा जत्था, उसकी सलाखों के पास आ गया था। वो चीख–चीखकर कुछ कह रहे थे लेकिन उनकी आवाज़, तीनों तक नहीं आ पा रही थी।

तभी लैनीगल ने एक असनोच को इशारा किया, किसी पहाड़ की तरह उँफचे और चौड़े जिस्म वाला वो दानव, अपने भारी–भरकम मुगदर के साथ आगे बढ़ा। चट्टान पर उसका पाँव पड़ने से 'धम धम' की आवाज़ हो रही थी। उसने अपना एक हाथ आगे बढ़ाकर एक ही बार में तीनों को अपनी मुट्ठी में भींच लिया। उसकी मज़बूत पकड़, लोहे की जकड़ जैसी शक्तिशाली थी। वो अब चट्टानों से उतरकर रेत पर आ गया था।

तभी जरूस की सनसनाती हुई तलवार ने उसके एक गाल को गहरे चीर दिया। हालाँकि ये ज़ख्म उसके लिए किसी खरोंच से ज्यादा नहीं था लेकिन उससे रक्त की तेज़ धार फूट निकली। मकास ने एक लम्बे फल वाला छुरा, उस दैत्य की अँगूठे और उँगली के बीच वाली मुलायम जगह में पैवस्त कर दिया। उसके मुँह से एक भयंकर चिंघाड़ जैसी आवाज़ निकली और उसने बिलबिलाकर तीनों को ऊपर से ही छोड़ दिया। 'ध्प्प' की आवाज़ के साथ तीनों के जिस्म बहुत ज़ोर से रेत पर गिरे।

नीचे गिरते ही, तीनों फुर्ती के साथ खड़े हो गए और मकास के हाथ से निकला एक छुरा, लकड़ी के उस टेढ़े–मेढ़े डण्डे में झन्नाता हुआ गड़ गया, जिसे शातिर लैनीगल उनकी तरफ पेंफकना चाहता था।

'एक ही चाल, बार–बार नहीं चलती दुष्ट बौने!' मकास ने उसकी तरफ समझाने वाली नज़रों से देखा।

लैनीगल का हाथ अब भी झनझना रहा था। बौखलाए हुए असनोच ने अपना वज़नी मुगदर, पूरी शक्ति से मकास के जिस्म पर मारना चाहा लेकिन वो बेहद फुर्ती से उस जगह से हट गया। जहाँ मुगदर की चोट पड़ी थी, रेत में वहाँ गहरा गड्ढा हो गया। सलार के धनुष से निकला एक तीखा तीर, उस असनोच की गर्दन में गड़ गया। उसने अपने हाथ से खींचकर तीर बाहर निकाला और बेरहम तरीवेफ से उसे अपने पैर से कुचलना चाहा। बालों भरे उसके तलवे के नीचे, वो आते–आते बचा।

'ओहह...नहीं मूर्ख दैत्य! इन्हें मारना नहीं है।' लैनीगल तेज़ आवाज़ में चीखा।

उसकी आवाज सुनकर उस चिहानचोचस ने कछुए की पीठ पर रखा बड़ा जाल उनकी तरफ फेंका, जिससे बचते हुए सलार ने अपने एक तीर से उसकी पिण्डली बींध दी। वो दर्द से कराह उठा। चिहानचोचस पर वार करते देख, उसका विशाल कछुआ जैसे क्रोध से पागल हो गया। वो आगे बढ़कर उन पर हमला करना चाहता था लेकिन उसने थपकी देकर उसे रोक दिया। वरना वो शायद पिंजरे सहित, उनके जिस्मों को रौंदने के लिए चल पड़ता।

'तुम अपने दुर्भाग्य को तो बहुत पहले ही न्यौता दे चुके हो लड़को! मगर अब तुम अपनी दुर्गति को निमन्त्रण दे रहे हो।' लैनीगल की आवाज़ में इस वक़्त हिंसा और भयानकता तैर रही थी।

तीनों ने साफ देखा, पिंजरे के भीतर बन्दी पूरा जत्था, रेत की बनी उन सलाखों को तोड़ने और उससे निकलने की पूरी कोशिश कर रहा था लेकिन वो टस से मस नहीं हो रही थीं। तभी दूसरा असनोच गुस्से से दहाड़ता हुआ उनकी तरफ बढ़ा। अब वो तीनों, उन दोनों दैत्यों के बीच फँसे थे।

तभी जरूस ने मादा जलप्रेत जडाकी की कुहरेदार आकृति को, पिंजरे के फर्श में समाते देखा, ऐसा लगा जैसे वो किसी छोटे सुराख में समाती चली जा रही हो। एक ही पल बाद वो पिंजरे से बाहर, हवा में तैर रही थी। उसके कण्ठ से पानी की एक तेज धार निकली और पिंजरे की रेतीली सलाखों को ऐसे काटकर घोलती चली गई जैसे मोम की छड़ को गर्म लोहे से काट दिया हो। पिंजरे की रेतीली सलाखें भरभराकर ढह गईं।

अगले ही पल पूरा जत्था, पिंजरे से बाहर था। विशाल कछुए की पीठ पर सवार चिहानचोचस ने एक लम्बा भालेनुमा हथियार हैबूला के सीने की तरफ पूरी ताकत से फेंका, जिसे उसने तिनके की तरह पकड़कर तोड़ दिया। जडाकी और स्वाइली ने लैनीगल को घेर लिया। पतले सींकड़ी ने अपनी दोनों मुट्ठियों में रेत भरा और पूरी बहादुरी से दौड़ता हुआ, एक असनोच के जिस्म पर चढ़ गया। किसी को पता भी नहीं चल सका, कब उसने उस असनोच के सिर पर चढ़कर, मुट्ठी भर रेत उसकी आँखों में झोंक दिया। वो लगभग अंध–सा हो गया और बेतहाशा अपना मुगदर चारों तरफ घुमाने लगा।

जिल्चोकाट ने अपने जिस्म को बरगद की जटाओं की तरह, दूसरे असनोच के जिस्म के इर्द–गिर्द लपेटना शुरू कर दिया। उसका पूरा शरीर अब बरगद की जटा की तरह बढ़ता जा रहा था, कुछ ही पलों में उसने पर्वताकार देह वाले असनोच को, सीने से लेकर पैर तक अपने शिकंजे में कस लिया। उसका दबाव हर पल बढ़ता जा रहा था। जिल्चोकाट के बरगदाकार जिस्म की पकड़ इतनी कसती जा रही थी कि कुछ ही पलों में, असनोच अपनी चेतना खो बैठा।

हैबूला ने उस चिहानचोचस को अपनी चौड़ी हथेली से उठाया और रेगिस्तान में पटक दिया। चट्टानों पर खड़े उसके कछुए ने अपने मूत्र से ज़मीन को इतनी रपटीली कर दिया कि हैबूला उस पर खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। जब तक वो खुद को संभाल पाता, कछुए के सिर की एक ज़ोरदार टक्कर उसे लगी और वो पूरी तरह अपना संतुलन खोकर, रेत में जा गिरा। विशाल कछुआ, चिंघाड़ता हुआ उसकी तरफ बढ़ा और पूरी ताक़त लगाकर उसने लकड़ी के उस चबूतरे को भी तोड़ दिया, जिसके ऊपर रेत का पिंजरा बना था।

अंधे असनोच ने, जैल्कोवा की लकड़ी से बना अपना मुगदर ज़ोर से घुमाया और वो पूरी ताक़त से विशाल कछुए की पीठ पर पड़ा। पत्थर से पत्थर टकराने जैसी ज़ोरदार आवाज़ हुई, एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे कछुए का कवच टूट गया होगा लेकिन हैरतअंगेज़ रूप से उस पर इस वार का कोई असर नहीं पड़ा। कछुआ एक पल के लिए ठहरा और फिर, अपने मुँह से भयंकर बदबू छोड़ते असनोच की तरफ़ दौड़ा। शायद उसे ये लग रहा था कि वो असनोच भी दुश्मनों में से एक है, जिसने उसके कवच पर हमला किया है।

आँखों में रेत पड़ा होने की वजह से पर्वताकार असनोच उसे देख नहीं पाया और कछुए ने अपने चौड़े मुँह से उसका वज़नी मुगदर पकड़ लिया। पत्थर के टूटने और लकड़ी के चटखने की एक ज़ोरदार आवाज़ हुई और कछुए ने अपने जबड़े में भींचकर मुगदर का चूरा कर दिया। तब तक रेत पर पड़ा वो चिहानचोचस उठ खड़ा हुआ और दो–तीन छलाँगें लगाता हुआ दोबारा कछुए की पीठ पर सवार हो गया। उसने अपनी हथेली की थपकी से उसे असनोच पर हमला करने से रोका।

जडाकी और स्वाइली ने शातिर लैनीगल को उस जाल में बाँधने की कोशिश की, जो उस चिहानचोचस ने मकास के ऊपर फेंका था लेकिन वो आसानी से उनके क़ाबू में नहीं आ रहा था। उसने अपने मुड़े–तुड़े डण्डे का एक तेज़ वार जडाकी पर किया, डण्डा, मादा जलप्रेत के धुएँदार जिस्म को चीरता हुआ, पार निकल गया। तब तक तीनों भाई उसके पास आ पहुँचे।

'अब तुम हट सकती हो जडाकी, इसकी किस्मत का फैसला हमें ही करना है।' जरूस ने तलवार का एक सधा हुआ वार करते हुए कहा, जिसे लैनीगल ने बेहद सफ़ाई से बचा लिया।

हैबूला, उस विशाल कछुए और हिंसक चिहानचोचस से उलझा हुआ था और पतला सींकडी सबकी नजर बचाकर लैनीगल के कन्धे पर चढ़ गया। उसने आव देखा न ताव और अपने तीखे दाँत, उसके कान पर गड़ा दिए।

'आहह...दूर हटो गन्दे स्ट्रासोल! तुम्हारी इतनी हिम्मत कि लैनीगल पर हमला करो।' उसने एक तेज झटका दिया और पतला सींकडी 'ध्डाम' से पथरीली चट्टान पर जाकर गिरा।

लड़ाई का पासा अब पूरी तरह बदल चुका था। लैनीगल ने चिहानचोचस को कोई संकेत किया और वो कछुए को लेकर तेज़ी से उसके पास आ गया। उन्हें पता भी नहीं चल सका कि कब वो हवा में उठता हुआ कछुए की पीठ तक पहुँच गया। चिहानचोचस ने कछुए की पीठ थपथपाई और उसके कवच के दोनों तरफ से फडफड़ाते हुए पंख ऐसे निकल आए, जैसे किसी कवचदार कीड़े ने अपना कवच खोल दिया हो। पल भर में वो उसे लेकर ऊपर उठ गया।

'तुम बचोगे नहीं, संथाल के बेटो...तुम बचोगे नहीं।' उसने आसमान में उड़ते कछुए की पीठ से चीखते हुए कहा।

कछुआ उसे लेकर ऊपर और ऊपर उठता जा रहा था। कुछ ही पलों में वो आसमान में उड़ते किसी पक्षी की तरह छोटा नजर आने लगा। उन्होंने पलटकर देखा, दोनों असनोचों के विशाल जिस्म वहाँ से ग़ायब हो चुके थे। अब अगर वहाँ कुछ था, तो नरसिंहों के बेजान जिस्म और पूरी चट्टान पर फैला, विशाल कछुए का रपटीला मूत्र।

'भाग गया...कायर लैनीगल...' मकास ने अपने होंठ पर लगे रक्त को साफ करने की कोशिश करते हुए कहा। तब तक सब लोग एक जगह इकट्ठा हो गए।

'इस पिंजरे की भीतरी सतह पर मानसिक शक्तियों का इस्तेमाल किया गया था। मेरी जल–शक्तियाँ उस पर पूरी तरह बेअसर रहीं। वो तो शुक्र मानो सही वक्त पर मुझे लकडी के फ़र्श में बना वो छोटा सुराख नज़र आ गया, वरना ये दुष्ट पता नहीं कब तक हमें यूँ ही बन्दी बनाए रखता।' जडाकी ने आहिस्ता से कहा।

'बदबूदार उल्टी से उठती गंध जैसी उस कमबख़्त असनोच की साँस ने, गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फ़ैलीटस का भेजा सड़ा दिया और तुम सबको उस रेत के पिंजरे की पड़ी है...नामुरादो! उफ़्फ पता नहीं कभी दातुन भी करते हैं ये गोबर के पहाड़ या नहीं?' पतले सींकड़ी ने अपने अँगूठे और उँगली से नाक भींचते हुए कहा।

'हमें अब जल्दी से जल्दी यहाँ से निकलना चाहिए, हो सकता है ख़तरा अब किसी दूसरी शक्ल में लौटे।' जरूस ने निर्णायक स्वर में कहा।

'हाँ, दुष्ट जैल्डॉन को ये पता चल गया है कि पानी हमें मिल गया है। वो इसे पाने के लिए कुछ भी कर सकता है इसलिए जितना शीघ्र हो सके, हमें थोरोज़ की पहाड़ी तक पहुँच जाना चाहिए।' जिल्वोकाट ने उसकी बात का समर्थन करते हुए कहा।

उन्होंने फ़ौरन दूर तक पैफले रेगिस्तान की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा दिए। पूरा जत्था बहुत तेज़ी से आगे बढ़ता जा रहा था। चलते–चलते अब वो काफ़ी दूर निकल आए लेकिन रेगिस्तान ख़त्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

रेत के टीले इतने उँफचे हो गए थे कि उन पर चढ़ना और उन्हें पार करना बहुत थकाने वाला और मुश्किल भरा काम साबित हो रहा था। वो एक टीले से नीचे उतर ही रहे थे कि अपने पीछे उन्हें कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। सलार ने पीछे पलटकर देखा, जिध्र से वो चढ़े थे उस तरफ़ दूर–दूर तक केवल रेत ही रेत नज़र आ रही थी मगर वो आवाज़ उन्होंने सुनी थी, वो ऐसी थी जैसे पानी की कल–कल हो।

पूरा जत्था इस वक्त बहुत प्यासा था। उन्होंने ठहरकर पीछे देखा, नीचे उनके पाँवों के निशानों के पास, एक जगह रेत से हल्का–हल्का पानी निकल रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे रेत के नीचे कोई मीठे जल का सोता उबल रहा हो।

'अरे...वो देखो, पानी...स्वाइली!' जडाकी ने उसकी तरफ़ देखते हुए कहा।

जडाकी को तो पानी पीने की ज़रूरत नहीं थी लेकिन वो जानती थी, स्वाइली को इस वक्त पानी की कितनी सख़्त आवश्यकता थी। जिस टीले पर वो चढ़ रहे थे, उसी पर भागते हुए से वो वापस नीचे उतरने लगे। पास जाकर उन्होंने देखा, रेत के नीचे से साफ़ पानी उबल–उबल कर बहुत चौड़ी जगह में पैफल गया था।

हैबूला का कण्ठ, प्यास के मारे तड़क रहा था। वो वहीं बैठ गया और अपनी चौड़ी हथेलियों में उस पानी को समेटने की कोशिश करने लगा। तभी उसके दाहिनी तरफ़ भी रेत से पानी निकलना शुरू हो गया। गर्म रेत पर फैलता पानी अजीब–सी 'छुन–छुन' की आवाज़ कर रहा था। जिल्वोकाट ने हैरत से उध्र देखा कि उसके पाँवों के पास एक जगह, रेत से पानी निकलना शुरू हो गया।

'ओहह...ठण्डा पानी...ओह देवता...मेरा गला प्यास से कितना सूख रहा था।' जिल्वोकाट ने रेत पर बैठते हुए कहा।

कुछ ही पलों में उनके आसपास कई जगहों से रेत से पानी निकलना शुरू हो गया। गर्म, दहकते रेत को भिगोता वो पानी हर तरफ फैलता जा रहा था। उनमें से कोई भी अभी तक पानी पी नहीं पाया था क्योंकि वो रेत से इतना बाहर नहीं आ रहा था कि उसे इकट्ठा किया जा सके।

'न...नहीं...इस पानी को मत पीना।' जरूस ने चिल्लाकर सबको सावधन किया।

स्वाइली तब तक अपनी नन्ही हथेलियों में थोड़ा-सा पानी इकट्ठा कर चुकी थी।

'ये दुश्मन की चाल है दोस्तो...सावधन...रेत से कभी ऐसे पानी नहीं निकलता।' जरूस ने स्वाइली को उस जगह से पीछे हटने का इशारा करते हुए कहा, जहाँ से पानी निकल रहा था।

उसकी बात पूरी होने से पहले ही उन्होंने देखा, उनके चारों तरफ रेत से पानी की धरें निकलनी शुरू हो गई। आहिस्ता-आहिस्ता उनकी ऊँचाई बढ़ती ही जा रही थी।

'पीछे हटो...पीछे हटो...' जरूस ने जिल्चोकाट का हाथ पकड़कर खींचते हुए कहा।

वो सब सतर्क हो गए और तेजी से पीछे हटते चले गए। अब उनके पाँवों के पास से पानी ऐसे उबल-उबल कर बाहर निकल रहा था जैसे अन्दर से कोई पानी की झील ताकत लगा रही हो।

'सब...वापस टीले पर भागो...जल्दी करो...इस पानी से दूर हटो।' जिल्चोकाट जैसे गला फाड़कर चीखा।

हर कोई बहुत तेजी से वापस टीले की तरफ दौड़ने लगा। तब तक टीले का नीचे वाला पूरा हिस्सा पानी के छोटे तालाब में बदल चुका था। पूरी ताकत से दौड़कर वो सब उस उँफचे टीले पर चढ़ गए, जिससे वो नीचे उतरे थे।

ऊपर जाकर जो उन्होंने देखा, उसे देखकर ऐसा लगा जैसे हैरत भी ताज्जुब से बेहोश हो जाएगी। उनके पीछे, दूर रेगिस्तान में पानी का एक विशाल रेला उसी तरफ आ रहा था। दाहिने और बाएँ, जहाँ तक नजर जाती, दूर-दूर तक पानी का वो विशाल रेला पैफला हुआ था। गर्म रेत पर तेज़ी से बहते उस पानी से 'छनन छनन' की ऐसी आवाजें आ रही थीं जैसे सदियों से प्यासा रेत, जी भरकर उस पानी को पीकर अपना गला तर कर रहा हो।

'ओह...ये क्या है दोस्तो? **रेगिस्तान में बा...ढ़...**' हैबूला चूँकि सबसे उँफचा था, इसलिए वो सबसे दूर तक भी देख पा रहा था।

हहराते हुए पानी की आवाजें हर पल पास आती जा रही थीं। अब वो पानी इतना पास आ गया कि बस उनसे कुछ ही टीले दूर रह गया था। दो-दो कैमल्योपैफण्ट जितने उँफचे टीले भी उस पानी में ऐसे डूबते जा रहे थे जैसे रेत के मामूली घरौंदे हों। ऐसा लग रहा था जैसे समन्दर ने अपनी बाज़ू फैलाकर पूरी रेगिस्तान को अपने आग़ोश में ले लिया हो।

सब तेजी से टीले से नीचे की तरफ़ दौड़े मगर मकास ने चीखकर उन्हें रोक दिया। 'नहीं...ये ग़लती मत करना...टीले से नीचे जाते ही सब डूब जाएँगे, हमें यहीं उँफचाई पर रहना होगा।'

हैबूला ने पतले सींकड़ी और स्वाइली को झपटकर अपने कन्धें पर बैठा लिया। पानी का वो विशाल सैलाब, बस अब एक टीला दूर था, जो पूरे रेगिस्तान को निगलता हुआ आगे बढ़ रहा था।

जिस रेतीले टीले पर वो खड़े थे, पानी के सैलाब की ऊँचाई उससे भी ज्यादा थी। 'सब लोग कसकर एक-दूसरे का हाथ पकड़ लो, हमें अलग नहीं होना है।' जिल्चोकाट ने पानी के उस शोर के बीच चीखते हुए कहा।

हैबूला के कन्धे पर बैठी स्वाइली और पतले सींकड़ी ने भी कसकर एक-दूसरे के हाथ पकड़ लिए।

इससे पहले कि वो कुछ सोच पाते या बचने की कोशिश करते,एक विशाल लहर का ध्क्का लगा और उनके जिस्म पानी की गहराइयों में डूबते चले गए। पानी उनके सिरों से भी इतना ऊपर था कि पूरा जत्था पल भर में उसमें ग़र्वफ हो गया। कब उनके हाथ एक-दूसरे से अलग हो गए, उन्हें पता ही नहीं चल पाया। केवल जडाकी उस विशाल जल-प्रलय की सतह के ऊपर तैर रही थी।

ठण्डा पानी, उनकी नाक और गले में भर गया। किसी तरह ताक़त लगाकर उन्होंने ऊपर की तरफ़ तैरना शुरू किया। सबसे पहले हैबूला ऊपर सतह पर आया, उसने अपनी चौड़ी हथेली से अब भी पतले सींकड़ी को पकड़ा हुआ था लेकिन स्वाइली पानी में बह चुकी थी। फिर 'गुलप-गुलप' की एक आवाज़ हुई और जिल्चोकाट और सलार पानी की सतह पर छपाक से उभरे। कुछ ही पल बाद, जरूस और मकास भी एक झटके से सतह पर उभर आए लेकिन स्वाइली ग़ायब थी।

'स्वाइली...स्वाइली...स्वाइली कहाँ है?' हैबूला ने चीखते हुए पानी में इध्र-उध्र तलाशने की कोशिश की लेकिन वो उसे कहीं नज़र नहीं आई।

पतले सींकड़ी ने एक ही पल में हैबूला के कन्धे से पानी में छलाँग लगा दी और पानी के नीचे गुम हो गया। नीचे उसने चारों तरफ देखने की कोशिश की लेकिन गंदले पानी में उसे वो कहीं दिखाई नहीं दी। उसने दाहिने–बाँए हाथ फैलाकर देखने और टटोलने की कोशिश की लेकिन रवाइली उसे कहीं महसूस नहीं हुई।

वो साँस लेने के लिए दोबारा सतह पर आया। ऊपर भी उसे वो कहीं नहीं दिखी। तभी 'छपाक' की एक आवाज हुई और पानी की सतह के नीचे से उसका सिर तेज़ी से बाहर निकला–'हम्फ़फ...उफ्फ...'

उसके होठों से ऐसी आवाज निकली जैसे पूरी ताकत से साँस लेने की कोशिश कर रही हो–'हम्फ़फ...' ताज़ी हवा मिलते ही उसने खुद को थोड़ा संयत किया।

पानी का सैलाब कम होने की जगह बढ़ता ही जा रहा था। लहरें अब ऐसे उठ रही थीं जैसे समुद्र में भयंकर तूफान आ गया हो। रेगिस्तान का नामोनिशान मिट चुका था, अब दूर–दूर तक केवल हहराता हुआ समन्दर जैसा पानी नज़र आ रहा था, जिसमें बेहद ऊँची–ऊँफची लहरें उठ रही थीं।

फिर उन लहरों के बीच, उन्हें पानी से बनी कुछ आकृतियाँ दिखीं, जिनके आकार ऐसे थे जैसे पानी का लबादा ओढ़े कोई नक़ाबपोश हो। सिर से पैर तक पानी से बनी वो मानवाकृतियाँ...अपने विशाल मुँह खोले उन्हीं की तरफ आ रही थीं।

'उफ्फ...ये तो फ़्लडीसोल्स हैं। ओह देव...ये तो पूरी फौज है।' जडाकी के होठों से बेहद तेज़ चीख निकली।

हर किसी ने उसकी आवाज़ सुनी लेकिन लहरों के शोर में वो दबकर रह गई। इस बार जडाकी पूरी ताकत से चिल्लाई, 'बचो इनसे...ये फ़्लडीसोल्स हैं।'

इस बार उन्होंने उसकी आवाज़ सुन ली। लहरें उन्हें ऐसे उछाल रही थीं जैसे वो पानी पर तैरते नारियल हों।

पानी से बने हुए प्रेत जैसे फ़्लडीसोल्स उन लहरों में घुले हुए, उनके आसपास मँडरा रहे थे। उनकी खौफनाक आकृतियाँ हर पल पास आती जा रही थीं। फिर उन्होंने पूरे जत्थे के इर्द–गिर्द गोल–गोल घूमना शुरू कर दिया। पहले तो कोई समझ नहीं पाया कि वो क्या कर रहे थे लेकिन पल भर बाद ही उन्हें अहसास हो गया कि फ़्लडीसोल्स उनके आसपास एक विशाल भँवर बना रहे थे।

जैसे–जैसे उनके घूमने की रफ़्तार बढ़ती जा रही थी, भँवर और गहरा और चौड़ा होता जा रहा था। पूरे जत्थे के जिस्म अब पानी की गोलाई में तेज़ी से घूमने लगे। उनमें से कई जडाकी की तरफ़ झपटे और उसे पानी की सतह के नीचे खींचने की कोशिश करने लगे। जडाकी उनसे जमकर संघर्ष कर रही थी। तभी उन फ़्लडीसोल्स से बचते हुए जडाकी ने उस विशाल भँवर में छलाँग लगा दी, जिसमें वो सब गोल–गोल घूम रहे थे। वो भँवर को ऊपर से नीचे की तरफ काटती हुई, पार निकल गई। ऐसा लगा जैसे किसी ने तलवार से भँवर को दो हिस्सों में काट दिया हो।

हैरतअंगेज़ ढंग से भँवर कई हिस्सों में बिखर कर ख़त्म हो गई। अब वो सब फिर से उँफची लहरों के ऊपर उछल रहे थे। किसी की समझ में नहीं आ रहा था, इस मुसीबत से कैसे बचा जाए।

तभी जडाकी ने चीखकर कहा, 'जल्दी से सौ–परत–वाला–जलपोत निकालो, वरना तुम में से कोई नहीं बचेगा।'

मकास की चेतना को जैसे एक झटका लगा। उसने पानी के भीतर, अपने पेट से चिपकी मोटे कपड़े की झोली के भीतर हाथ डालकर टटोलने की कोशिश की लेकिन वो जलपोत कहीं उसके हाथ नहीं आया।

दोबारा कोशिश करने पर वो उसकी उँगलियों से टकरा गया। उसने उसे अपनी मुट्ठी में कस लिया और हाथ बाहर निकाला। अगले ही पल वो बित्ता भर का जलपोत, पानी की सतह पर तैर रहा था। जैसे ही उसकी तली, पानी की सतह से छुई, आश्चर्यजनक रूप से वो ऐसे खुलने लगा, जैसे *पैपरस* पौधे की मुड़ी–तुड़ी पत्तियाँ खुल जाती हैं। फूल की पंखुड़ियों की तरह, एक–एक करके उसकी परतें खुलती जा रही थीं और हर परत के साथ उसका आकार लगभग दोगुना होता जा रहा था।

चंद पलों में ही जलपोत का आकार इतना बड़ा हो गया कि उस पर पूरा जत्था सवार हो सकता था लेकिन वो अब भी खुले जा रही थी। जब उसका खुलना बन्द हुआ तो वो एक ऐसे विशाल जलपोत में तब्दील हो चुकी थी, जिसके मस्तूल पर ऊँचे–उँफचे पाल हवा में लहरा रहे थे। सुर्ख़ लाल और नीले रंग के रेशमी कपड़े से बुने पाल और सफ़ेद की लकड़ी से बने उस जलपोत की सुन्दरता अद्भुत लग रही थी। वो अब इतना बड़ा हो चुका था कि एक साथ सैंकड़ों लोगों को संभाल सके।

तभी विशाल जलपोत के ऊपर उन्हें एक ख़ूबसूरत, नौजवान युवती नज़र आई। उसने जलपोत का पीछे वाला हिस्सा खोल दिया, जहाँ से होकर एक बेहद चौड़ा तख़्ता लहरों के ऊपर तैरने लगा। अब पानी से लेकर, जलपोत तक, लकड़ी

के तख्ते का ढलान बन चुका था, जिस पर चढ़कर आसानी से जलपोत के ऊपर जाया जा सकता था।

खूबसूरत युवती ने चीखकर कहा, 'जल्दी करो...जल्दी से ऊपर आ जाओ।' अपनी बात पूरी करते-करते ही उसने कई मोटे रस्से भी पानी की तरफ फेंक दिए, जिनमें से कुछ पानी में लटकने लगे और कुछ उस चौड़े तख्ते के ऊपर जा गिरे।

सबसे पहले हैबूला ने एक रस्सा पकड़ा और तख्ते के सहारे होता हुआ वो ऊपर जलपोत पर चला गया। उसने अपना लम्बा हाथ बढ़ाकर, पतले सींकड़ी और रवाइली को भी ऊपर खींच लिया।

अब सारे फ़्लडीसोल्स तीनों भाइयों के इर्द-गिर्द इकट्ठा हो गए। जिल्वोकाट ने एक मोटा रस्सा पकड़ा और उसका सहारा लेकर, तख्ते पर चढ़ गया। कुछ ही पलों में वो भी जलपोत के ऊपर था। तभी कई फ़्लडीसोल्स ने जरूस को चारों तरफ से घेर लिया, वो उसकी कपड़े की झोली में से वो सुराही निकालना चाहते थे। जरूस खुद को उनसे बचा नहीं पा रहा था। फिर उनमें से एक ने उसकी गर्दन पकड़कर पानी में डुबा दी और एक झटके से, झोली में से सुराही खींच ली।

सुराही हाथ में आते ही वो सब, हवा की रफ़्तार से घूमे और एक जगह मँडराने लगे। जिस फ़्लडीसोल ने जरूस की गर्दन पकड़कर पानी में डुबाई थी, उसने भी उसे छोड़ दिया और लहरों पर होता हुआ अपने झुण्ड के पास जा पहुँचा। सुराही अब उनके पास थी। लहरें इतनी तेज़ी से उछाला ले रही थीं कि जलपोत उनके ऊपर पानी में पड़े तरबूज़ की तरह उछल रहा था।

जलपोत, पानी के ऊपर अब ठीक उस जगह तैर रहा था, जिसके ऊपर फ़्लडीसोल्स मँडरा रहे थे। तभी उस खूबसूरत युवती ने जलपोत के अगले सिरे में बने, काठ के एक नक्काशीदार खम्भे को छुआ, जिसकी ऊँचाई मुश्किल से तीन-चार हाथ रही होगी। उसने काठ के खम्भे के पास खड़े होकर, अपनी बाँहें आसमान की तरफ फैला दीं और आँखें बन्द करके, होठों में कुछ बुदबुदाने लगी।

फ़्लडीसोल्स, काठ के उस नक्काशीदार खम्भे की तरफ़ खिंचने लगे। ऐसा लगा जैसे उनके बीच खलबली मच गई हो। वो जैसे पूरी ताकत लगा रहे थे लेकिन उनका पूरा झुण्ड, उस खम्भे की तरफ़ खिंचता जा रहा था। उस खूबसूरत युवती की आँखें अब भी बन्द थीं और होठ बदस्तूर बुदबुदा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे दोनों तरफ़ से ज़बरदस्त *रस्साकशी* चल रही हो। फ़्लडीसोल्स पूरी कोशिश कर रहे थे लेकिन कामयाब नहीं हो पा रहे थे। वो न चाहते हुए भी जलपोत पर गड़े काठ के खम्भे की तरफ़ खिंच रहे थे।

फिर एक पल ऐसा भी आया, जब ऐसा लगा जैसे दोनों तरफ़ से खींची जा रही रस्सी टूट गई हो और सारे फ़्लडीसोल्स पूरी रफ़्तार से खम्बे की तरफ़ खिंचे चले आ रहे हों। वो पानी की एक धार के रूप में एक साथ काठ के खम्भे से टकराए और सब उसके भीतर समाते चले गए। सबसे आख़िर में वो आया, जिसके हाथ में सुराही दबी थी। वो खम्भे से टकराया, 'टन्न' की एक आवाज़ हुई और सुराही लकड़ी के फ़र्श पर गिर पड़ी। फ़्लडीसोल खम्भे में समा चुका था।

हैबूला ने अपने लम्बे-लम्बे हाथ आगे बढ़ाकर तीनों को ऊपर खींचा। पानी में भीगे उनके जिस्म धूप में दप-दप दमक रहे थे। लहरें अब शान्त होती जा रही थीं। दूर-दूर तक केवल फैला हुआ पानी ही नज़र आ रहा था। जरूस ने आगे बढ़कर वो सुराही उठा ली। वो ख़ूबसूरत युवती अब अपनी आँखें खोल चुकी थी।

जरूस ने उसकी तरफ़ देखा और नर्म लहज़े में कहा, 'शुक्रिया।'

खूबसूरत युवती के होठों पर केवल एक दिलवफ़श मुस्कान तैरकर रह गई।

'क्या हम अपनी मददगार का परिचय जान सकते हैं?' जरूस ने उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखों में देखते हुए कहा। सब लोग अब जलपोत के लकड़ी के फ़र्श पर एक जगह इकट्ठा हो गए। हर किसी की आँखों में एक कौतुहल था, जो शायद ये पूछना चाहता था कि 'वो' है कौन?

'मकाना...' उसके गुलाबी होंठ हिले और सफेद, मोतिया दाँत हल्के से चमक गए।

पतला सींकड़ी उसे ऐसे देखे जा रहा था जैसे कुछ कहना चाहता हो मगर वो चुप ही रहा।

'अ...आपने बहुत सही वक़्त पर आकर हमारी मदद की, वरना बहुत मुश्किल होती।' जरूस ने आभारी नज़रों से उसकी तरफ़ देखा।

उसने मुस्कराकर जरूस की तरफ़ देखा। 'आपने बहुत सही वक़्त पर मुझे बुलाया, इसीलिए मैं सही वक़्त पर आ सकी।'

जिल्वोकाट ने आगे बढ़कर उससे पूछा, 'हमें ख़ुशी होगी अगर आप अपने बारे में पूरा परिचय देंगी, हमारी अजनबी

मददगार।'

उसने एक बार अपनी बड़ी–बड़ी आँखों से सबकी तरफ देखा, फिर उसके होंठ आहिस्ता से हिले–'जिसे हम 'परिचय' कहते हैं, वो थोड़ी–सी गलतफहमियों और ढेर सारी खुशफहमियों के सिवाय कुछ भी नहीं होता। वैसे मैं एक जलपरी हूँ। मकाना...समन्दर में सब, इसी नाम से बुलाते हैं मुझे लेकिन अगर आप लोग चाहें तो **मकाना–कैसाकार–सटीनामैकोजी–नोसरहैलीबैहूता–नैजसमीगन** भी कह सकते हैं।' वो मुस्कुराई।

उसका नाम सुनकर पतला सींकड़ी तेजी से आगे बढ़ा और अपनी नाक पर अँगूठा रखकर, जीभ निकालकर उसका अभिवादन किया और उसके बिना पूछे ही, इस तरह सीना फुलाकर अपना पूरा नाम बताया जैसे नाम बताने की कोई शानदार प्रतियोगिता चल रही हो–'मैं गम्पूग्रास–वल्सटान–नीमोकीड–फैलीटस, मैं स्ट्रासोल हूँ, आपसे मिलकर खुशी हुई।'

सबको ये देखकर हैरानी हो रही थी कि बात–बात पर गालियाँ बकने वाला सींकडी, इतने अदब से कैसे बात कर रहा है।

'म...मगर आप कहीं से भी *जलपरी* जैसी नहीं दिखतीं?' जरूस की आवाज में थोड़ी हैरत थी।

'कम से कम एक सप्ताह तक तो नहीं...शायद उसके बाद दिखूँ।' उसकी आवाज में उदासी थी, जिसे उसने सफ़ाई से छिपा लिया।

'ओहह...मैंने अभी तक आप में से किसी का परिचय पूछा ही नहीं, सिवाय इन महाशय के, जिन्होंने अभी अपना सुन्दर–सा नाम बताया है।' उसने सींकड़ी की तरफ़ देखते हुए कहा। वो एक तरफ खड़ा चुपचाप अपने नाखून कुतर–कुतर कर खा रहा था। पानी से भीगा उसका पतला जिस्म अब सूखता जा रहा था।

मेरी गुफा के बाहर बहने वाली छोटी जलधरा भी अब सूखती जा रही है। कभी–कभी उस पर पानी पीने के लिए, एक छोटा *बटेर* आता है। संथाल के बेटे उस पानी की खोज में निकले, जिसमें 'गीलापन' नहीं होता लेकिन मुझे लगता है, हम सब 'पानी' की तलाश में होते हैं। बस, 'पानी' अलग–अलग तरह का होता है। हम सबकी प्यास अलग–अलग तरह की है इसलिए 'कोई एक' पानी प्यास नहीं बुझा सकता। महत्त्वाकांक्षा, ताक़त, सत्ता, उत्सुकता और जिज्ञासा...ये सब वो प्यास हैं, जिनके लिए हम, जिन्दगी भर 'पानी' खोजते रहते हैं। पानी जब मिल जाता है तो उसकी सुरक्षा की भी चिन्ता सताती है। जैसे सालन को उस पानी की हिफ़ाज़त की चिन्ता हुई, जिसे तीनों भाई हासिल करके लौटे और उन्होंने ऐसा विचित्र इंतज़ाम किया कि दुनिया में कोई भी, उस सुराही को न खोल सके।

मुझे मोम के वो चौखटे याद आते हैं, जिन पर उस 'महासभा' का ज़िक्र है, जिसमें संथाल के बेटे 'उनसे' मिले, जिनके बारे में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि दोबारा कभी उनसे मिल पाएँगे। एक सबसे ख़ास मिलन, जो इस दास्तान की ऐसी घटना है, जिसने बहुत–सी आँखें गीली कर दीं मगर वो आँसू खुशी के थे। ऐसा *'महामिलन'* जो पूरी एक प्रजाति के अस्तित्त्व के लिए संजीवनी बन गया।

महासभा

अध्याय चौबीस

जलपोत पर बहुत खुशी का माहौल था। उन्हें याद आया, रहस्यदर्शियों ने ये क्यों कहा था कि–'जलपोत के भीतर सोने वाली *ख़ूबसूरती,* तुम्हें हर *बदसूरती* से बचाएगी।' मकाना ने उन्हें अपने बारे में बताया, उसने बताया जलपरियों की उस दुनिया के बारे में, जिसके बारे में ज्यादातर लोगों ने या तो कहानियों में पढ़ा था या फिर लोगों की अफवाहों में सुना था। उसने उन्हें बताया जलपरियों और समन्दर की दुनिया के उन अनछुए रहस्यों के बारे में, जिन्हें बाहरी दुनिया के लोगों ने कभी जाना ही नहीं। वो बहुत बातूनी थी, साथ ही नरमदिल और खुशमिजाज भी। उन्हें ये समझ नहीं आया कि बिना किसी मल्लाह या चालक के, वो जलपोत चल कैसे रहा था। मकाना ने उन्हें बताया कि उसकी नाविक, **थैलोना–थैरस** नाम की, एक बेहद बदसूरत रूह है, जो सदियों से इस पोत को चलाती रही है। वो कभी किसी के सामने नहीं आना चाहती, लोगों से मिलने–जुलने और बात करने में सकुचाती है मगर वो बहुत शानदार नाविक है।

मकाना ने उन्हें अपने बारे में भी बताया, उसने बताया किस तरह जलपरियाँ छुपकर बाहरी दुनिया के समाज में भी चली जाती हैं मगर वो बस एक निश्चित वक़्त के लिए होता है। वो अधिक समय तक बाहर नहीं रह सकतीं। उसने बताया जलपरियों में नर बहुत कम होते हैं। वहाँ मादा ही सब कुछ संभालती हैं, भोजन से लेकर युद्ध तक, सारी जिम्मेदारियाँ उन्हीं के कन्धें पर होती हैं।

उसने उन्हें वो अजीब रहस्य भी बताया, जिसके बारे में उन्हें कभी सन्देह भी नहीं हो पाता। मकाना ने बताया–'समन्दर में ऐसी कोई नाव या जहाज़ कभी नहीं चला, जिसके ऊपर जलपरियों की नज़र न रहती हो। वो बिना दिखे, सब कुछ देखती रहती हैं।'

मकाना ने उनसे ये भी साझा किया कि–'इस वक़्त भी बहुत सारी जलपरियाँ इस जलपोत के साथ–साथ केवल इसलिए चल रही हैं क्योंकि उन्हें विश्वास है, मैं पानी में उतर जाऊँगी मगर उन्हें ये मालूम नहीं है कि मैं अभी पानी में नहीं जा सकती।'

उसने बताया, नियम तोड़कर समन्दर से बाहर जाने की वजह से उसे एक बरस के लिए पानी को न छूने की सज़ा मिली है। चूँकि जलपरियों की रानी **फ़रियाना**, रहस्यदर्शियों की पुरानी मित्रा है, इसीलिए बूढ़ी हैरीसिया ने उस ख़ूबसूरत जलपरी की, ज़मीन पर रहने की पीड़ा कम करने के लिए, उसे सौ–परत–वाले–जलपोत में सुला दिया। तब तक के लिए, जब तक जलपोत का इस्तेमाल न हो। बातचीत में उन्हें मालूम हुआ कि उस अवधि के पूरा होने में, अब बस एक सप्ताह का वक़्त ही बचा है। उसके बाद मकाना वापस समन्दर में जा सकती है।

हर कोई मकाना से बहुत घुलमिल गया। स्वाइली और जडाकी के लिए तो वो जैसे जन्म–जन्म की सहेली हो गई। सबसे अजीब बात ये थी कि पतला सींकड़ी इतना बाअदब हो गया था, जिसकी कोई उम्मीद भी नहीं कर सकता था। इसकी वजह तो किसी को मालूम नहीं थी मगर इस भयंकर बदलाव को महसूस सभी ने किया।

इस बातचीत में उन सबको ये भी पता चला कि रहस्यदर्शियों के गाँव का जलपरियों के साथ कितना निकटतम और घनिष्ठतम सम्बन्ध था। सौ परत वाले जलपोत से मकाना का क्या रिश्ता है, ये उसने नहीं बताया मगर उसने बूढ़ी रहस्यदर्शी हैरीसिया और सीकोस से लेकर ड्रीमोस तक हर किसी के बारे में उनसे ज़िक्र किया। बहुत कम वक़्त में वो हर किसी की पसन्दीदा हो गई।

मकाना ने जलपोत को उस नदी की तरफ़ पहुँचाया, जिसके बारे में नाविक की उस बदसूरत रूह ने उसके कान में ये बताया था कि उस नदी से होकर वो पूरा जत्था, बहुत कम वक़्त में वहाँ लौट सकता था, जहाँ उन्हें जाना था। नदी में तैरती जलपरियों ने, जलपरियों की प्राचीन भाषा **मर्मिश** में, मकाना को सन्देश दिया कि रानी बहुत बेसब्री से मकाना के

लौटने का इंतजार कर रही है।

'तुम्हारा सफ़र शायद पूरा हुआ?' मकाना ने तीनों भाइयों की तरफ़ देखते हुए कहा।

'इस सुराही और इसमें भरे पानी को हासिल करना, हमारी जिन्दगी का अंतिम लक्ष्य था और हम इस तक पहुँच ही गए।' मकास ने उसकी तरफ विजयी भाव से देखा।

मकाना ने एक बार तीनों की तरफ़ देखा और आहिस्ता से बोली, **'जो किसी एक मंजिल के लिए अपनी जिन्दगी झोंक देते हैं और उस लक्ष्य को अपने जीवन का अंतिम लक्ष्य बताते हैं, वो मासूम धेखेबाष होते हैं। कम से कम अपने प्रति...वो ख़ुद को तब तक भुलावे में रखना चाहते हैं, जब तक वो अपने लक्ष्य को पा न लें और जैसे ही वो उसे हासिल करते हैं, वो फिर ख़ुद से सवाल करते हैं 'अब और क्या'। अंतिम लक्ष्य' जैसी कोई चीष कभी इस धरती पर नहीं देखी गई।'**

हर कोई खुश था, उस पल तक, जब तक नदी के किनारे मकाना ने बदसूरत रूह को जलपोत रोकने का संकेत नहीं किया। सब उतर गए, सौ–परत–वाला–जलपोत...वापस उसी तरह, एक–एक परत करके सिमटना शुरू हो गया। उसकी परतें आहिस्ता–आहिस्ता बन्द होती जा रही थीं। सिमटते जलपोत से हाथ हिलाकर मकाना ने उनसे विदा ली और छोटा होते–होते, वो इतना छोटा हो गया कि मकास ने पानी में हाथ डालकर, आहिस्ता से उसे अपनी हथेली पर उठा लिया मगर इस बार उस जलपोत को उसने इतनी नाजुकी से उठाया, जैसे वो कोई जिन्दा, धड़कती हुई वस्तु हो।

मकाना बेरहम सत्य बोल रही थी या दयालु झूठ...ये मैंने कभी नहीं सोचा। केवल इसलिए, क्योंकि हम सबके जीवन के सत्य रोज़ बदलते हैं। कोई चीज़ अगर कभी नहीं बदलती तो वो है इंसानी फ़ितरत...वो शाश्वत रूप से उतनी ही अभिशापित है। उस शाप की तरह, जिसका सामना शातिर लैनीगल कर रहा था या फिर उस शाप की तरह, जिसे संथाल को सहना पड़ा, या फिर उन दो ख़ूबसूरत बहनों की तरह, शाप की वजह से जिनके सिर अपने ही धड़ में समा गए थे। मुझे कई बार लगता है, हम सब अपने–अपने हिस्से के वरदानों के साथ जीने के लिए शापित हैं।

नदी से चलने के बाद, जिल्चोकाट उन्हें उस घाटी तक ले गया, जहाँ थोरोज़ और सालन दोनों उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, उसी पत्थर के पास, जहाँ उन्होंने सबको विदा किया था।

'आओ...मेरे बच्चो! हम कब से तुम सबकी प्रतीक्षा कर रहे थे।' थोरोज़ की बारीक़ आवाज़, उन्हें बहुत गरमाहट भरा, अपनेपन का अहसास दे गई। 'हमें मालूम है, तुम 'उसे' हासिल करके लौटे हो, जिसे पाने गए थे। ओहह...तुम कैसी हो नन्ही बच्ची!' उन्होंने स्वाइली की तरफ़ देखते हुए पूछा।

'...और काठ–घर का तालाब, तुम्हारे बिना जम गया है जडाकी...शायद 'कोई और' भी तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है। तुम सब एक बड़ी उथल–पुथल से गुज़रे हो...ज़्यादा बात करने की जगह तुम्हें आराम की ज़रूरत होगी। बेहतर होगा हम बाक़ी बातें रात के खाने पर करें।' थोरोज़ ने एक हल्की मुस्कराहट के साथ उन्हें अपने साथ चलने का इशारा किया।

रात के खाने पर सब एक जगह इकट्ठा थे। स्वाइली, कैफ़ुआन पस्तर, हूनास्पॉटी, जिल्चोकाट, कास्टन ब्रूड, वुन्टनब्रॉस, पतला सींकड़ी, सालन और थोरोज़। गोचो राक्षसियाँ भोजन पकाने और परोसने की कला में निपुण थीं। उनके हाथ के बनाए गए स्वादिष्ट व्यंजन, सबको उँगलियाँ चाटने के लिए मजबूर कर रहे थे। खाना परोसते वक़्त स्वाइली ने जानपूछकर एक चमचा शोरबा सलार के लबादे की जेब में डाल दिया, उसने अपने लबादे की दूसरी जेब मुट्ठी में भींचकर बन्द कर ली ताकि स्वाइली अबकी बार उसकी जेब में चुपचाप शोरबा न डाल सके। मगर उसे ये पता नहीं लग सका कि स्वाइली ने चुपचाप, चूसे हुए एक आम के छिलके और गुठलियाँ, सलार के जूतों के भीतर डाल दिए थे।

हल्की–हँसी मज़ाक़ और क़िस्से–कहानी के बीच ये पता ही नहीं चल रहा था कि आने वाली एक भयानक जंग, उनका इंतज़ार कर रही है। भोजन की मेज़ पर बिल्चू लोबामोस भी मौजूद था। वो खा कम रहा था, खाने वालों को हैरत से ज़्यादा देख रहा था। थोरोज़ ने कुछ ख़ास फल जंगल से मँगवाए थे...जिन्हें भोजन के बाद परोसा जाना था।

भोजन समाप्त होते–होते, सबने लोफ़ा से आग्रह करना शुरु कर दिया कि वो अपनी कविताएँ सुनाए, लेकिन वो थोरोज़ और सालन की मौजूदगी की वजह से बहुत शरमा रहा था। फिर जब सालन ने उससे आग्रह किया, तो उसकी हिचकिचाहट थोड़ी कम हुई। उसने एक बार शरमाकर थोरोज़ की तरफ़ देखा, लेकिन जब उसने देखा, वो दूसरी तरफ़ देख रहे हैं तो उसका हौसला थोड़ा बढ़ा।

कमरे में गोचो राक्षसियों के अलावा, लम्बी नाक और फुँदनेदार टोपी वाले वो नाटे लोग भी थे, जिनके बारे में अभी नहीं बताया गया था कि वो कौन थे और कहाँ से आए थे। लोफ़ा ने अपने गले को खँखारकर साफ़ किया और बोला, '...

तो...दरअसल मुझे...इस...वक्त... कोई... अच्छी... कविता...याद... नहीं... आ... रही...बेहतर...हो... हम...कल...कोई कविता...सुना... दें।'

उसकी बात सुनकर जिल्वोकाट ने उसे घूरकर देखा तो वो एकदम से सकपका गया। वो चेहरे पर ऐसे भाव ला रहा था जैसे कुछ याद करने की कोशिश कर रहा हो।

'सुनाओ लोफ़ा! कोई ऐसी कविता जिसे सुनकर सबके रुके हुए दिल धड़कने लगें।' एक गोचो राक्षसी ने चटखारा लेकर कहा और फिर अपनी बात पर खुद ही शरमा गई।

हँसती हुई स्वाइली ने उसके कन्धे पर एक धैल मारा और फिर एकटक सब लोफ़ा की तरफ देखने लगे। दीवारों पर रेंगते रोशनीदार कीड़ों ने हल्की–हल्की रोशनी फैलाकर माहौल को बेहद खूबसूरत बना दिया था। लोफ़ा एक मेज के ऊपर खड़ा हो गया और कविता शुरू कर दी।

लोफ़ा की कविता ने वहाँ का माहौल ही बदल दिया। एक गोचो राक्षसी ने आगे बढ़कर उसको चूम लिया। बाकी राक्षसियाँ एक–दूसरे के गले लगकर अपनी खुशी का इजहार कर रही थीं। जिस राक्षसी ने लोफ़ा को चूमा था, उसने शरमाते हुए एक और कविता की फरमाइश की। लोफ़ा, ऐसे खुलेआम चूमे जाने की वजह से पानी–पानी हो रहा था।

हर कोई लोफ़ा के इस शानदार गीत पर मुग्ध हुआ जा रहा था। थोरोज़ और सालन भी इस तरह से उसकी धुन पर अपना सिर हिला रहे थे, जैसे सम्मोहित हो गए हों। जिल्वोकाट ने नजर घुमाकर देखा, स्वाइली हवा में तैरती हुई मेज़ के पास पहुँच गई थी, उसने अपने कपड़ों में छुपाकर रखा गया एक छोटा *स्वप्न-फूल* आहिस्ता से सलार के ऊपर गिरा दिया, हंगामे के बीच किसी ने इसे नहीं देखा लेकिन जिल्वोकाट ने इस शरारत को देख लिया था। वो केवल हल्के से मुस्कराकर रह गया। जैसे ही स्वाइली की नज़र उस पर पड़ी वो सकपका गई और हवा में तैरती हुई बेवजह ही दूसरी तरफ़ जाने लगी।

गीत खत्म हुआ तो सभी ने शानदार तालियों से लोफ़ा का स्वागत किया। मकास ने देखा, लम्बी नाक वाले, फुँदनेदार टोपी वाले, नाटे लोग भी खुश होकर तालियाँ बजा रहे थे। उनमें से एक अपने सीने पर हाथ रखकर लम्बी–लम्बी साँसें ले रहा था और एक, अब भी अपने सिर को ऐसे हिला रहा था जैसे गीत अब भी चल रहा हो। वुन्टनब्रॉस ने लोफ़ा को अपने हाथों में ऊपर उठा लिया और उसे हवा में उछाल दिया, वो कलाबाज़ियाँ खाता हुआ आराम से ज़मीन पर आ खड़ा हुआ।

जरूस ने लोफ़ा से उन नाटे लोगों के बारे में पूछा, जो अपने सिर पर हर वक्त पुँफदनेदार टोपी लगाए रहते थे। उसने बताया–'वो **मैडीसोर** हैं...दुनिया के सबसे बेहतरीन चिकित्सक। प्राचीन जड़ी–बूटियों और औषधियों की गहरी जानकारी रखने वाले। बरसों की साधना और मेहनत के बाद, किसी को मैडीसोर की उपाधि मिल पाती है।' उसने बताया, 'वो सब थोरोज़ के बुलावे पर यहाँ आए थे। उन्हीं के आग्रह पर उन्होंने क़िले में घायलों का उपचार किया।'

उस रात देर तक, सब हँसते–गाते रहे। हर कोई प्रसन्न और मस्ती में डूबा हुआ था। क़िले के बाहरी दरवाज़े पूरी तरह ख़ामोशी और सन्नाटे में डूबे हुए थे। जंगल की नीरवता को कीड़े–मकोड़ों की आवाज़ें ही भंग कर रही थीं। काठ–घर के पास वाले, घास के मैदान के एक किनारे पर, दो परछाइयाँ नज़र आ रही थीं। वो जडाकी और कैटाकोटस थे। वो मादा जल–प्रेत, जो स्वयं को, चाँदनी रातों के उस छलावे को समर्पित कर चुकी थी, जिसके बारे में ये कहा जाता था कि वो–है–भी–और–नहीं–भी।

क़िले के भीतर की शानदार दावत से दूर, पेड़ों से छनकर आती चाँदनी के बीच, वो एक–दूसरे के बहुत पास थे। कैटाकोटस अब पूरी तरह ठीक तो हो चला था लेकिन अभी भी, उसे इस बात का अफ़सोस होता था कि एक ज़रा–सी असावधनी या चूक की वजह से, वो उस ज़ंग में आख़िर तक साथ नहीं निभा पाया। कई बार वो पछतावे वाली भावदशा में आ जाता लेकिन फिर जडाकी उसे सामान्य कर देती।

सलार भी लोफ़ा की कविता में उतना ही डूबा हुआ था, जितना स्वाइली, सालन ने भी उसे उतनी ही ग़ौर से सुना था, जितने ध्यान से थोरोज़ ने, लेकिन कहीं कोई भारी अन्तर था, जो अहसासों की ज़मीन पर खड़ा था। सबके सुनने में कुछ मूलभूत फ़र्क थे और वो फ़र्क ही उस गहराई को तय कर रहे थे, जिस तक हर कोई जा रहा था।

भरपेट खाने और हंगामे के बाद, अब नींद सबको घेरने लगी थी। एक गोचो राक्षसी, एक मेज़ के पाए को पकड़ कर ऊँघ रही थी और दूसरी उसके कन्धे पर सिर टिकाए, उसके ऊपर अधलेटी हो रही थी। उसके होठों से बहने वाली लार, पहली वाली के कपड़ों को गीला कर रही थी। थोरोज़ ने अब भोजन समाप्त करके सोने की तैयारी करने की घोषणा की। सब लोग आहिस्ता–आहिस्ता अपने–अपने कमरों की तरफ़ बढ़ गए। सलार ने उठने की कोशिश की तो उसके ऊपर से, वो स्वप्न–फूल नीचे ज़मीन पर गिर गया, जो स्वाइली ने उसके ऊपर फेंका था।

सलार ने एक हल्की–सी मुस्कान के साथ, फूल अपने चोगे की जेब में रखने की कोशिश की लेकिन वो धगे से सिला हुआ था। इस वजह से उसने फूल को अपने हाथ में ही लिए रखा। उठने के लिए जैसे ही उसने अपने जूतों में पैर डाले, चूसे हुए आम की गुठलियाँ, उसके तलवों के नीचे फिसलने लगीं। उसने घूरकर स्वाइली की तरफ देखा, वो शरारत से मुस्कराकर दूसरी तरफ देखने लगी। वो समझ गया, ये हरकत उसी की थी।

उस रात सलार ने बहुत सारे अजीब–अजीब सपने देखे। एक सपने में उसने देखा, वो एक सुराही पानी लेकर जंगल में अकेला जा रहा है। रास्ते में उसे प्यास लगी और उसने उस सुराही में से दो घूँट पानी पी लिया लेकिन उसे हैरत हुई, जब उस पानी से उसका गला या होंठ तर नहीं हुए। उसने फिर कोशिश की लेकिन फिर भी कुछ नहीं हुआ। पानी के भीतर ज़रा भी गीलापन नहीं था।

वो खुशी से चिल्ला रहा था–'मुझे मिल गया, मुझे मिल गया।' लेकिन अचानक दृश्य बदल गया और उसने देखा, वो अपने गाँव के लोगों के बीच है और सारे गाँव वाले उसके वापस लौटने पर स्वागत कर रहे हैं।

फिर उसे सपने में स्वाइली दिखाई दी। वो अकेली एक पगडण्डी पर जा रही थी, सलार उससे बहुत पीछे था। अचानक उसने पलटकर देखा और वो एक मेंढक में परिवर्तित हो गया। वो फुदककर स्वाइली की तरफ बढ़ा और फिर इंसान में तब्दील हो गया। फिर उसने देखा, स्वाइली एक सफेद रंग की पोशाक पहनकर पेड़ पर चढ़ रही है और वो नीचे गिरे हुए फल उठाकर एक तरफ इकट्ठा करता जा रहा है।

अगली सुबह सब बहुत देर से उठे मगर उठते ही लोफ़ा सालन का सन्देश लेकर आ गया, 'तुम्हें नहा–धेकर महासभा की बैठक में जाना है।'

तीनों बहुत हैरान थे, महासभा की बैठक के बारे में उन्हें अब तक कुछ नहीं बताया गया था। यह सन्देश चौंकाने वाला था। सबसे ज्यादा हैरत की बात ये थी कि अगर महासभा की बैठक हो रही थी तो उसमें शामिल होने के लिए दूर–दूर से लोग आए होंगे मगर उन्होंने अब तक वहाँ कोई भी अजनबी या मेहमान नहीं देखा था।

कुछ पल सोचकर उन्होंने अपने सिर को झटका और लोफ़ा से सूचना भिजवाई कि वो तैयार होकर तुरन्त पहुँचते हैं। लोफ़ा ने उन्हें बताया कि महासभा की बैठक में भाग लेने के लिए उन्हें उसके साथ ही जाना होगा, बैठक–स्थल तक उन्हें पहुँचाने की जिम्मेदारी उसी की थी।

कुछ देर बाद लोफ़ा उन्हें लेकर निकला। क़िले के भीतर कुछ ऐसे भी हिस्से थे, जिन्हें उन्होंने कभी नहीं देखा था। एक बिल्कुल अनजान गलियारे से होते हुए, वो कई बार सीढ़ियाँ उतरे और चढ़े। हर गलियारे में रोशनी वाले कीड़े दीवारों पर रेंग रहे थे, जिसकी वजह से वहाँ पर्याप्त रोशनी थी। कई बार सीढ़ियाँ उतरने और चढ़ने की वजह से उन्हें पता ही नहीं चल पा रहा था कि वो अब क़िले के किस हिस्से में हैं। थोड़ा और आगे जाने के बाद तो उन्हें ये पता चलना भी मुश्किल हो गया कि वो *ऊपर* हैं या ज़मीन के *नीचे*।

'ये रास्ते पहले कभी नहीं देखे।' जरूस ने लोफ़ा की तरफ़ देखा।

'इन पर हर किसी को आने की इजाज़त नहीं है। थोरोज़ ख़ास मौक़ों पर ही उस सभागार का इस्तेमाल करते हैं, जहाँ हम जा रहे हैं। वैसे अब हम बस पहुँचने ही वाले हैं। बेहतर होगा तुम सब लोगों से मिलने के लिए खुद को तैयार कर लो।' लोफ़ा ने अपनी गर्दन मटकाते हुए कहा।

'क्या ये कोई ख़ास सभा है?' मकास की आवाज़ में उत्सुकता थी।

'ख़ास? ये कैसा सवाल है? ये उन सभाओं में सबसे ख़ास है, जो आज तक इस सभागार में हुई हैं और ये सभा नहीं महासभा है। बाकी बातें अब बाद में करना, हम पहुँच चुके हैं।' लोफ़ा ने गलियारे में एक जगह रुकते हुए कहा।

हर तरफ़ सन्नाटा था। आगे रास्ता बन्द था। पत्थर की एक भारी दीवार, ने उनके क़दम रोक दिए। थोड़ा–सा पास जाने पर उन्होंने देखा, वो पत्थर से बना एक भारी दरवाज़ा था।

'क्या हम भीतर जा सकते हैं **टैनीटम**?' लोफ़ा ने दरवाज़े की तरफ़ देखते हुए कहा।

उन्हें हैरत हुई, दरवाज़े के सामने या आसपास कोई नहीं था, फिर ये नन्हा राक्षस किससे बात कर रहा था। पल भर तक शान्ति छाई रही फिर उन्होंने देखा पत्थर की शिला में से निकलकर, एक शिलामानव बाहर आया। उसका रंग और जिस्म एकदम उस दरवाज़े के पत्थर से मिला हुआ था, जिसके सामने वो खड़े थे।

'हाँ, तुम सभी का इंतज़ार ही हो रहा है।' शिला–मानव ने, पत्थर के भारी दरवाज़े को अपने हाथ से भीतर की तरफ धकेलते हुए कहा।

पत्थर से पत्थर रगड़ने जैसी 'खरड़–खरड' की आवाज़ हुई और दरवाज़ा भीतर की ओर खुल गया। उन्होंने अन्दर प्रवेश किया तो उनका स्वागत एक भयंकर शोर ने किया। वो एक बेहद विशाल जगह थी। जैसे एक दूर–दूर तक फैला हुआ गोल कक्ष हो। वहाँ दीवारों के साथ, पत्थर के गोलाकर चबूतरे बने हुए थे जैसे किसी सार्वजनिक क्रीडा–स्थल में होते हैं। उसमें सैंकड़ों लोग बैठे हुए थे। हर तरफ़ बेहद शोर था।

विशाल गोलाकार कक्ष के बीचोबीच, पत्थर का एक चौड़ा और उँफचा चबूतरा था, जिस पर सालन और थोरोज़ खडे हुए थे। दोनों के जिस्म पर भारी कपडे का एक लबादा था, दीवारों और छत पर जगह–जगह मकडियाँ लटकी हुई थीं, जिनके जिस्मों से रोशनी निकलकर पूरे सभागार को रोशन कर रही थीं। उनके भीतर प्रवेश करते ही एक बार पूरी खुसुर–पुसुर और शोर बढ़ा और फिर कम होता चला गया। बैठने की जगहों के बीच से एक रास्ता उस चबूतरे तक जा रहा था, जिस पर सालन और थोरोज़ खडे हुए थे। वो आहिस्ता से उसी तरफ़ बढ़े।

'दोस्तो, जिन ख़ास मेहमानों का हमें इंतज़ार था, वो आप सबके बीच आ चुके हैं। कृपया शान्ति बनाए रखें और सब अपने स्थानों पर ठीक से बैठ जाएँ।' सालन की आवाज़ पूरे सभागार में ऐसे गूँज रही थी जैसे हर शब्द प्रतिध्वनित हो रहा हो।

चबूतरे से कुछ दूर बैठने की गोलाकर जगह बनी हुई थी। सालन ने उन्हें उसी पर बैठने का इशारा किया। अपनी पीठ पीछे, उन्होंने उस भारी दरवाज़े के बन्द होने की वज़नी आवाज सुनी, जिससे होकर वो भीतर आए थे।

भिनभिनाहट जैसी आवाज़ आहिस्ता–आहिस्ता बन्द होती चली गई और फिर वहाँ ऐसी शान्ति छा गई जैसे दुनिया भर की आवाज़े एकदम मौनव्रत पर चली गई हों। उन्होंने हर तरफ़ नज़रें घुमाकर देखा, वहाँ सैंकड़ों लोग थे, या ये भी कहा जा सकता है सैंकडों तरह के प्राणी थे। हर कोई दूसरे से अलग और इतना अजीब, जिसे देखकर सहसा विश्वास ही न हो। उनमें से कुछ चेहरे उनके पहचाने हुए भी थे और ज़्यादातर ऐसे थे, जिन्हें वो पहली बार ही देख रहे थे।

उन्होंने अगली पंक्ति वाली बैठने की जगह पर कुछ सेण्टीड्राफ़्स को भी देखा, वो गैल्जीडान था, सेण्टीड्राफ़्स का सरदार। एक जगह उन्हें कुछ स्ट्रासोल भी नज़र आए, जिनके नाम वो नहीं जानते थे मगर उन्हें देखकर, पता चल रहा था कि वो पतले सींकडी जैसे ही थे। एक कुछ दूरी पर उन्होंने कॉफ़ीनस स्पिनडल को भी बैठे देखा, उसे देखकर उनके दिल में खुशी की एक लहर दौड़ गई। उसके बग़ल वाली जगह पर बौनों का सरदार पियोनी, वुफछ बौनों के साथ बैठा हुआ था, जिसके साथ ऑथरडस्ट भी था। एक तरफ़ बिल्चुओं का सरदार सैल्गासीड अपने कुछ साथियों के साथ बैठा हुआ था, जिसके पास बूढ़ी रहस्यदर्शी हैरीसिया, ड्रीमोस और सीक्रोस बैठे हुए थे।

अपने दाहिनी तरफ़ नज़र डालते ही मकास का जिस्म जैसे बर्फ़ की शिला की तरह जमकर सुन्न हो गया। उसकी आँखें ऐसे जड़ होकर रह गईं जैसे पलकों को फ़ालिज़ मार गया हो। वो किसी बुत की तरह बस उध्र देखता ही रहा, अपलक, निश्चल। उसके दिल की ध्ड़कनें इतनी तेज़ी से बढ़ गईं कि वो सीने में उसके ध्ड़कने का अहसास कर सकता था। वो पर्सीना थी...पर्सीना...जिसे वो अपलक देखे जा रहा था। उसका दिव्य–सौन्दर्य, बाहरसिंघे जैसी बड़ी–बड़ी आँखें, उसका चेहरा, सब कुछ वैसा ही था। सलार ने उसे अपनी कोहनी से हल्का टहोका दिया तो उसे अहसास हुआ कि वो इस वक़्त कहाँ खड़ा हुआ था।

पर्सीना के चेहरे पर उसे देखकर खुशी का समन्दर हिलोर लेने लगा लेकिन वो बस ख़ामोश रही। उसने एक हल्की मुस्कराहट से उसकी तरफ़ देखा। मकास समझ नहीं पा रहा था इस हालत में कैसी प्रतिकिया दे। उसके चेहरे पर खुशी का एक समन्दर आकर चला गया और उसने दूसरी तरफ़ देखना शुरू कर दिया। जहाँ पर्सीना थी, वहीं उसके बगल में एक बोहिया–हक़ूक भी खड़ा था। बोहिया–हक़ूक...जिसके बारे में सलार ने प्राचीन गैडीग्लास्ट लिपि में लिखी, अर्द्ध–मानवों और मिश्रित प्रजाति के प्राणियों के रहस्यों की उस किताब में पढ़ा था, जो उसे काठ–घर में मिली थी।

सलार ने उसकी हथेलियों में उगे दो लम्बे सींगों की तरफ़ देखा तो उसने खड़े–खड़े पैर ऐसे बदला जैसे ख़ून जम गया हो। वहाँ कैफ़ुआन पस्तर, हूनास्पॉटी, वुन्टनब्रॉस और जिल्वोकाट भी थे। तीनों ने देखा, सबसे आगे वाली पंक्ति में वो भी थे, जिनके यहाँ होने की उन्हें उम्मीद ही नहीं थी। वो पाँचों, पाँच बूढ़े फ़कीर। फ़ैगुअस के बाक़ी भाई, रेत–विद्या के माहिर वो बूढ़े, जिनका सालन और थोरोज़ भी बेपनाह सम्मान करते थे।

उनकी ये सम्मोहक तन्द्रा थोरोज़ की गूँजती आवाज़ से भंग हुई–'...साथियो! क्यों न मैं अब उस बात को विस्तार से सबके सामने रख दूँ, जिसके बारे में अभी तक केवल अंदाज़ा लगाया जा रहा है। जैसा कि आप सबको सन्देश मिल गया है कि दुष्ट जैल्डॉन और शातिर लैनीगल दोनों एक साथ मिल गए हैं। साथ ही यह भी आपको मालूम हो गया है कि वो ताक़तकवर किताब **सिद्ध** कर ली गई है, जो सारी दुनिया का भविष्य तय कर सकती है। बिल्चुओं के सरदार सैल्गासीड ने

खबर दी है कि इदिया–इमीन टापू पर उसने अपनी खौफनाक फौज तैयार की है। उसकी फौज में शामिल ताकतों के बारे में हम आपसे पहले ही चर्चा कर चुके हैं लेकिन हमें ये भी तय करना होगा कि इस महायुद्ध को रोका जा सकता है या नहीं। आम–नक्षत्रा–में–पैदा–हुए–ये–ख़ास–बच्चे और वो पानी, जिसमें गीलापन न हो, दोनों उसे चाहिएँ।' बोलते–बोलते एक बार उन्होंने दूर तक सबके चेहरों की तरफ देखा।

'हमें खबर मिली है, वो सप्ताह भर में अपनी फौज के साथ बूफच करेगा, जो प्रजातियाँ, कबीले और प्रदेश उसका आधित्य स्वीकार कर लेंगे, वो सुरक्षित होंगे, जो नहीं करेंगे, उनको उसकी अजेय फौज से जंग लड़नी होगी। चूँकि अब उसका सबसे पहला हमला, उस पानी को हासिल करने के लिए होगा, जिसे ये तीन नौजवान हासिल करके लौटे हैं, इसलिए हमें इनकी हिफाज़त का भी सोचना होगा। यहाँ पूरी धरती से आए लोग इकट्ठा हैं, हमने हर कबीले और हर प्रजाति को सन्देश भिजवाया है, जो नहीं आ पाए, उनके प्रतिनिधि यहाँ मौजूद हैं। ये जंगल–युद्ध, इस जमीन के वर्तमान को, पूरी तरह तब्दील कर देगा।' हर कोई साँस रोके उनकी बात सुन रहा था।

उन्होंने बोलना जारी रखा–'**आम–नक्षत्रा–में–जन्मे–ये–ख़ास–बच्चे**, **जिस्मानी–कीमिया** और **रूहानी–कीमिया** से होकर गुज़रे हैं।'

उनकी बात पूरी होते ही पूरे सभागार में एकदम खुसर–पुसर शुरू हो गई। थोरोज की आवाज़ ने एक बार फिर सभा के शोर को तमाचा–सा लगाया और सब चुप हो गए।

'इससे आगे की रणनीति और योजना पर विचार करने के लिए, उन्हें यहाँ बुलाना चाहूँगा, जिनका केवल मैं ही नहीं, आप सब भी उतना ही सम्मान करते हैं, **थैमीनल फैगुअस...**'

तीनों को आज पहली बार फैगुअस का पूरा नाम पता चला था। सभा के शोर के बीच फैगुअस ने अपनी जगह से उठकर, उस गोल चबूतरे की तरफ कदम बढ़ाए, जिस पर सालन और थोरोज़ खड़े हुए थे। उनके कदमों की आवाज पूरे सभागार में 'टक–टक, टक–टक' गूँज रही थी।

चबूतरे के ऊपर पहुँचकर, उन्होंने एक बार खँखारकर अपना गला साफ किया और फिर अपनी सफेद दाढ़ी को सलीवेफ से सँवारती उँगलियों को रोककर, बोलना शुरू किया–'साथियो!' उनकी आवाज उस विशाल सभागार में गूँजने लगी। 'महान सालन और थोरोज़ की चिन्ताएँ...पूरी दुनिया के भविष्य को लेकर हैं। आप में से बहुत से लोग यहाँ मौजूद हैं, जिन्होंने जंगल–युद्ध की तबाहियाँ अपनी आँखों से देखी हैं। जैल्डॉन के वो इक्कीस गुरु भी यहाँ मौजूद हैं, जिनकी हत्या का प्रयास उसने किया मगर वो बच गए। उसके गुरुओं में, केवल शातिर लैनीगल उसके साथ है। जैसा कि पता चला है, वो एक हफ़्ते के भीतर जंग के लिए कूच करेगा मगर उससे पहले हमें सारी तैयारियाँ तो करनी ही होंगी, साथ ही उस पानी की हिफाज़त भी करनी होगी, जिसे वो पाना चाहता है, एक शर्तिया मौत से बचने के लिए। जैसा कि आपको पता है, एल्गा–गोरस की ताक़तों का कोई तब तक इस्तेमाल नहीं कर सकता, जब तक वो उस किताब को पूरा न कर ले और यदि कोई उसे धेखे से पूरा करता है तो वो केवल दो ही हालात में बच सकता है, या तो वो जिस्मानी और रूहानी–कीमिया से गुज़रा हो या फिर उसने वो पानी हासिल कर रखा हो, जिसमें गीलापन नहीं होता।' उन्होंने एक बार तीनों भाइयों की तरफ देखा और खामोश हो गए।

फैगुअस ने दोबारा बोलना शुरू किया–'अब वो एक तीर से दो शिवफार करना चाहता है। वो उस दुर्लभ पानी को भी हासिल करना चाहता है और उन्हें भी ख़त्म करना चाहता है, जो एल्गा–गोरस की ताकत को काबू में करके इस्तेमाल कर सकते हैं और इस वक़्त दुनिया में ऐसे केवल ये तीन नौजवान हैं।' उन्होंने तीनों की तरफ इशारा करते हुए कहा।

'उसकी काली ताक़तों से निपटने के लिए हमें ताक़त एकजुट करनी होगी और उसके लिए दुनिया भर से ताक़तवर योद्धा यहाँ आए हुए हैं। पिछले एक पखवाड़े से लगतार हो रही सभाओं में आप सब भाग लेते रहे हैं लेकिन चूँकि अब वो तीन योद्धा लौट आए हैं, जो इस जंग की धुरी होंगे, इसलिए अब ज़रूरी है कि हम किसी अंतिम निर्णय पर पहुँचें। जैल्डॉन का सामना अगर नहीं किया गया तो ये दुनिया यक़ीनन लाशों के ढेर से पट जाएगी और मुझे विश्वास है, ऐसा यहाँ मौजूद कोई नहीं चाहेगा।' फैगुअस की बात पर हरेक सिर सहमति में हिलता महसूस हुआ।

'दो दिन के भीतर दुनिया भर के योद्धाओं की टुकड़ियाँ, यहाँ पहुँचनी शुरू हो जाएँगी। आप में से अगर अब भी कोई इस जंग से खुद को अलग करना चाहे तो खामोशी से अलग कर सकता है, उससे कोई वजह या सवाल नहीं पूछा जाएगा। अब मैं उन तीनों नौजवानों को बुलाना चाहूँगा, जिनकी वजह से दुनिया उस ख़तरे के प्रति सतर्क हो पाई, जो दबे पाँव, अपना विशाल मुँह खोले आ रहा था।' फैगुअस के चुप होते ही पूरी सभा तीनों की तरफ देखने लगी। तीनों भाई अपनी जगह से उठे और चबूतरे तक पहुँचे।

तीनों के गठीले जिस्म और उनकी खास रंगत पूरी सभा के लिए आकर्षण का केन्द्र थी। ऊपर पहुँचकर उन्होंने पूरी सभा का अभिवादन किया और फिर मकास ने बोलना शुरू किया–'महासभा के सम्मानित योद्धाओ, पर्याप्त जमीन और पर्याप्त जिन्दगी, धरती के हर प्राणी का बराबर हक है। अगर इस अधिकार को कोई कम करने या छीनने की कोशिश करता है तो वो सम्पूर्ण अस्तित्त्व का अपराधी है। ये दुनिया, ऐसे टुकड़ों में बँटी हुई है, जहाँ लोग शान्ति से अपनी जिन्दगी को जी रहे हैं, और उन हिस्सों में भी जहाँ अराजकता, हिंसा और कत्लोगारत फैले रहते हैं लेकिन निर्दोष लोगों की ज़िन्दगियाँ छीनने का हक किसी को नहीं है। हमारे जन्म से भी पहले, जो षड़यन्त्रा रचा गया, वो अब पक चुका है। मगर वो किसी पफोड़े की तरह पका है, जिसे पफोडकर उसके भीतर भरी गन्दगी बाहर निकालना जरूरी है। अगर हमला किया जाता है, तो हम जंग के लिए तैयार हैं, चाहे वो कोई भी दुश्मन क्यों न हो।' इतना कहकर वो एक पल के लिए रुका। पूरी सभा ने सहमति की तालियों से उसका स्वागत किया।

'इस महायुद्ध में जो ताकतें भाग लेंगी, उनसे महाविनाश की भी संभावना दस्तक दे रही है लेकिन ऐसा केवल तब होगा, जब दुश्मन 'हमारी' जमीन पर आकर जंग लडेगा। उस वक्त तबाही भी हमारी ही जमीन पर पैफलेगी। जंग का फ़ैसला बेशक जैल्डॉन की तरफ से हो लेकिन जंग के मैदान का चुनाव 'हम' करेंगे। हम उससे बस्तियों, गाँवों और कबीलों के बीच जंग नहीं लड़ेंगे बल्कि मैदानों में जंग करेंगे, जहाँ मासूमों की जान को कोई खतरा न हो।' मकास की इस बात पर पाँचों बूढ़े फकीर और सभा के सदस्यों की गर्दनें सहमति में हिलती दिखीं।

'हम...हर कीमत पर इस जंग को रोकने की कोशिश करेंगे और अगर न रोक सके तो इस जंग को जंग से खत्म करेंगे।'

मकास की इस बात पर पूरे सभागार में जोश का शोर शुरू हो गया। पूरा सभागार उनकी हुंकारों से गूँजने लगा। अपनी बात पूरी करके वो चुप हो गया।

'साथियो! दो दिनों के भीतर, दुनिया भर के योद्धाओं की टुकड़ियाँ यहाँ पहुँच जाएँगी। तब तक यहाँ पहुँचे सारे योद्धा हमारे मेहमान हैं। इन दो दिनों में हमें और कई सभाएँ करनी हैं, जिनमें आप सबको हिस्सा लेना है। तब तक आप सब सैनिक–छावनी में विश्राम करें। दो दिन बाद, घाटी में बनी छावनी में सब योद्धाओं का आपसी परिचय होगा।' थोरोज ने उँफची आवाज में कहा।

'अगली सूचना तक, सभा विसर्जित की जाती है, तब तक आप सब अपने–अपने शिविरों में विश्राम करें।' सालन ने सभा विसर्जन की औपचारिक घोषणा करते हुए कहा।

पूरे सभागार में भारी गहमागहमी और शोरशराबा शुरू हो गया। उन्होंने देखा, सभागार के प्रवेशद्वार से थोड़ा हटकर, दाहिनी तरफ एक बेहद विशाल और उँफचा दरवाज़ा खोला गया और सब उससे होकर बाहर जाने लगे। वहाँ खड़े होकर भी, बाहर एक लम्बा–चौड़ा मैदान साफ नज़र आ रहा था।

'ये हम किस जगह पर हैं?' जरूस ने मकास की तरफ देखते हुए पूछा।

'मुझे लगता है, हम थोरोज़ की पहाड़ी के सबसे नीचे वाले हिस्से में हैं। ये सामने शायद घाटी नजर आ रही है।' मकास ने उसी तरफ नज़र गड़ाए हुए कहा, जिध्र वो सब लोग बाहर निकल रहे थे।

'तुमने सही कहा, तुम इस वक्त पहाड़ी के गर्भ में हो, बाहर घाटी में सबके ठहरने की व्यवस्था की गई है। सबके लिए अलग–अलग शिविरों का इंतज़ाम किया गया है।' लोफा ने उनकी बातचीत में फुसफुसाकर हिस्सा लिया।

मकास की नज़रें इस वक़्त बहुत बेसब्री से पर्सीना को खोज रही थीं। मगर इस भीड़ में वो कहीं नजर नहीं आ रही थी। उसने देखा, पर्सीना के बगल वाला बोहिया–हकूक अपने चारों पैरों को झटकता हुआ, उस विशाल पथरीले द्वार से बाहर जा रहा था। कुछ ही देर में सभागार लगभग खाली हो गया, उसे ताज्जुब हुआ कि वो सब लोग भी बिना उनसे बात किए बाहर चले गए, जिनसे वो भली तरह परिचित भी थे और मित्रा भी।

'लोफा, यहाँ कोई भी व्यक्ति...' मकास ने कुछ कहना चाहा लेकिन लोफा ने अपने होठों पर उँगली रखकर उसकी बात बीच में ही काट दी।

'शशशशश...' उसने चुप रहने का संकेत करते हुए कहा। 'यहाँ, महासभा के विषयों के अलावा और किसी भी विषय पर बात करने की मनाही है अगर किसी ने देख लिया तो इसे तुम्हारी गुस्ताखी समझेगा।' उसने बेहद धीमी आवाज में पफुसफुसाकर कहा।

'मगर...' मकास ने दोबारा कुछ कहना चाहा लेकिन लोफा ने उसे अपने पीछे आने का इशारा किया।

उसने उस तरफ देखा, जिधर पाँचों बूढ़े फकीर, सालन और थोरोज के साथ खड़े हुए थे लेकिन अब वहाँ कोई नहीं था। उसने चारों तरफ देखा मगर उसे कहीं ऐसा कोई रास्ता नजर नहीं आया, जिससे वो निकल गए हों। उसने सवालिया नजरों से लोफा की तरफ देखा, लोफा ने दोबारा उन तीनों को अपने पीछे आने का संकेत किया और आगे बढ़ गया।

वो चारों, उस विशाल गोल कक्ष में एक तरफ बढ़े, लोफा सबसे आगे चल रहा था। तीनों को लगा कि वो उन्हें उसी रास्ते से वापस लेकर जाएगा, जिससे वो लोग भीतर दाखिल हुए थे लेकिन वो तो उस तरफ जा ही नहीं रहा था। जरूस ने पीछे मुड़कर देखा, सभागार अब पूरी तरह खाली हो चुका था। पत्थर का विशाल द्वार बन्द हुआ और अपने पीछे उन्हें एक भारी–भरकम आवाज सुनाई दी।

काफी आगे जाकर उन्हें सफेद पत्थर से बना एक विशाल और ऊँफचा खम्भा दिखाई दिया, जो ऊपर की तरफ जा रहा था। उसका आखिरी सिरा तो उन्हें नजर नहीं आ रहा था लेकिन उसके इर्द–गिर्द साँप की तरह लिपटी हुई गोल सीढ़ियाँ जरूर दिख रही थीं। लोफा ने उन्हें अपने पीछे आने का इशारा किया और सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। वो तीनों भी उसके पीछे–पीछे चढ़ रहे थे। सीढ़ियों पर चढ़ते हुए उन्हें एक खास बात महसूस हुई, वो एक सीढ़ी पर पाँव रखते मगर जब दूसरा पाँव अगली सीढ़ी पर रखने के लिए आगे बढ़ाते तो देखते कि वो एक नहीं, आठ–दस सीढ़ी आगे होते। उन्हें पता ही नहीं चल पा रहा था कि ये आखिर हो कैसे रहा था। सलार ने कई बार सावधनी से पैर उठाकर अगली सीढ़ी पर रखने की कोशिश की लेकिन जैसे ही उसका कदम पूरा हुआ, उसने हर बार यही महसूस किया कि वो एक नहीं, कई सीढ़ी ऊपर चढ़ चुका है। उन्हें ऊपर चढ़ते मुश्किल से कुछ ही पल हुए थे लेकिन नीचे झाँककर देखा तो फ़र्श दिखना बन्द हो चुका था।

उन्होंने देखा लोफा अब लगभग आखिरी सीढ़ी पर नज़र आ रहा था। ऊपर उन्हें हल्की रोशनी नज़र आई, फिर एक लकड़ी के दरवाज़े के चरमराने की आवाज़ आई और लोफ़ा दिखना बन्द हो गया। वो तेज़ी से ऊपर चढ़े। वहाँ वाक़ई एक दरवाज़ा था, जो खुला हुआ था।

'जल्दी से आ जाओ दोस्तो!' दूसरी तरफ़ से लोफ़ा की आवाज़ आई।

मकास ने दरवाज़े के भीतर देखा। अन्दर लकड़ी के फ़र्श और लकड़ी की दीवारों से बना एक कमरा था। उसने भीतर पैर रखा और चारों तरफ नज़र दौड़ाई। तब तक जरूस और सलार भी अन्दर आ गए। लोफ़ा ने आगे बढ़कर लकड़ी का वो दरवाज़ा बन्द कर दिया और उन्हें अपने पीछे आने का इशारा किया।

'क्या अब तुम हमें बताओगे लोफ़ा कि ये बोलने की पाबन्दी ख़त्म हो चुकी है या नहीं?' मकास की आवाज़ में एक अजीब–सी झल्लाहट साफ़ नज़र आ रही थी।

'...बहुत देर पहले।' लोफ़ा ने मुस्कराते हुए उसकी तरफ़ देखा।

'हम आख़िर हैं कहाँ?' जरूस ने उससे पूछा।

'खुद ही बाहर जाकर देख लो।' लोफ़ा ने अपने कन्धे उचकाते हुए जवाब दिया।

जरूस ने एक दरवाजे से होते हुए दूसरे कमरे में प्रवेश किया तो वो भौंचक्का रह गया। वो इस वक़्त काठ–घर के उस कमरे में खड़े थे, जिसमें वो थोरोज़ की पहाड़ी पर आने के बाद, पहली बार आए थे।

'ये...ये तो काठ–घर है?' जरूस की आवाज़ में हैरत का पुट था।

'हाँ, यकीनन ये काठ–घर ही है।' लोफ़ा ने सहजता से जवाब दिया।

'मगर हम...यहाँ...कैसे?' वो कुछ पूछना चाहता था लेकिन फिर चुप हो गया।

उसने बड़ी खिड़की से बाहर झाँका, बाहर हरी घास का मैदान और साफ़ पानी का तालाब वैसा ही था जैसा उन्होंने छोड़ा था। तालाब के पानी में किसी जलप्रेत ने डुबकी ली और शान्त सतह पर लहरें फैल गईं। खिड़की से होकर एरोमाब्रीस के फूलों की सुगन्ध उसके ज़ेहन में उतरती चली गई।

'वो सीढ़ियाँ?' मकास की आवाज़ में हैरत और सवाल दोनों थे। 'वो **समय–संकुचन–सीढ़ी** हैं। एक सीढ़ी पर पैर रखते ही, वो अगली दस सीढ़ियों तक जाने के समय का आकलन करके, उस समय को संकुचित कर देती हैं। इससे ऊपर चढ़ने वाले व्यक्ति के लिए दस गुना कम समय और शक्ति लगती है। बढ़िया बात ये है कि चढ़ने वाले को इसका कभी पता नहीं चल पाता कि वो पहली सीढ़ी से दसवीं तक कब पहुँच गया। दरअसल, समय को न हम महसूस कर सकते हैं, न देख सकते हैं और न ही माप सकते हैं। हम बस उसके 'भीतर' हो सकते हैं।' मकास को समय की उसकी ये व्याख्या रत्ती भर समझ नहीं आई मगर उसने कुछ नहीं कहा।

'कुछ ही देर में सालन, थोरोज़ और वो पाँच बूढ़े फकीर भी यहाँ पहुँचने वाले हैं, जिन्हें तुमने सभागार में देखा था। वो तुम्हें कुछ ख़ास चीज़ दिखाना चाहते हैं। जब तक वो यहाँ आएँ, तब तक तुम आराम से बैठ सकते हो।' लोफ़ा ने कहा और काठ–घर की सीढ़ियाँ उतरता हुआ नीचे चला गया।

सलार ने खिड़की से बाहर देखा, उसे जडाकी कहीं नज़र नहीं आई। फिर जंगल की तरफ़ से आने वाली पगडण्डी से, उसे सालन, थोरोज़ और पाँचों बूढ़े फकीर आते दिखाई दिए। वो अभी काफ़ी दूर थे। उसने लोफ़ा को उस तरफ़ बढ़ते देखा। वो शायद उनकी अगवानी करना चाहता था। उनकी चाल की तेज़ी बता रही थी कि वो जल्दी से काठ–घर पहुँचना चाहते हैं। कुछ ही वक्त में काठ–घर का दरवाजा चरमराया और सबसे पहले, उस अजीब कीड़े बैडल ने भीतर प्रवेश किया। उसके पीछे–पीछे बाकी लोग भी भीतर आ गए।

'कैसे हो नौजवानो?' फैगुअस ने मुस्कराते हुए उनकी तरफ़ देखा।

'आप सब को देखकर ख़ुशी हुई।' जरूस ने मुस्कराहट का जवाब मुस्कराहट से देते हुए कहा।

सबके भीतर आ जाने के बाद लोफ़ा ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। बैडल अपनी पतली–पतली टाँगों पर भागता हुआ, लोफ़ा के कन्धे पर चढ़ गया। सब लोगों को बैठने का इशारा करते हुए सालन ने अपने छोटे लबादे की जेब से चमड़े का एक मुड़ा–तुड़ा टुकड़ा निकाला। उसकी तहें खोलकर उन्होंने उसे सामने रखी लकड़ी की तिपाई पर रख दिया। तीनों अब साफ़ देख सकते थे कि उस पर कुछ लिखा हुआ है मगर वो क्या था, ये वो नहीं पढ़ पा रहे थे।

'जंग की चेतावनी दी जा चुकी है। जैल्डॉन ने दुनिया भर के क़बीलों और सरदारों को सन्देश भिजवाया है, जिसके मिलने के बाद यहाँ लगातार कई सभा हो चुकी हैं। मेरे ख़्याल से ये सही रहेगा कि तुम लोग भी इस सन्देश को समझ लो।' सालन ने उनकी तरफ़ देखते हुए कहा। उन्होंने लोफ़ा की तरफ़ संकेत किया और उसने आगे बढ़कर चमड़े का वो टुकड़ा उनके हाथ से ले लिया।

लोफ़ा ने ऊँची आवाज़ में पढ़ना शुरू किया–

> **'दुनिया के क़बीलों के सरदारों, सारी अफ़वाहें आख़िरकार सच साबित होंगी। एक तयशुदा जंग तुम्हारी तरफ़ बढ़ रही है, जिन्हें अपनी और अपने लोगों की हिफ़ाज़त की चिन्ता थी, वो पहले ही अपना सिर झुका चुके हैं। जिन्हें अपने लोगों की लाशें और अपनी बस्तियों की तबाही देखनी बाक़ी है, वो बेवकूफ़, अदृश्य पहाड़ी पर कुछ बूढ़ों के साथ सभा कर रहे हैं। जो ताक़तें तुम्हारी गर्दनों की तरफ़ बढ़ रही हैं, उनसे तुम सब भली तरह परिचित हो। मौत भी उस फ़ौज के सामने घुटने टेक देगी, जिसके साथ जैल्डॉन तुम्हारी तरफ़ बढ़ रहा है। एक सप्ताह के भीतर हर क़बीले का सरदार अपने-अपने निवास पर एक मरा हुआ नेवला टाँगकर, हमारी हुकूमत कुबूल कर ले वरना तुम्हारी लाशें हमारे पैरों की धूल पर अपने ख़ून सने माथे टिकाएँगी। वक्त बहुत कम है... मौत बहुत नज़दीक है- जैल्डॉन।**

लोफ़ा ने सन्देश ख़त्म करके सबकी तरफ़ ऐसे देखा जैसे 'बस' कहना चाहता हो।

सबकी नज़रें उसी पर गड़ी हुई थीं।

'ये सन्देश दुनिया भर के सरदारों तक पहुँचाया गया है। बहुत से लोगों ने उसके डर से, बिना लड़े हार मान ली है और उसकी गुलामी कुबूल कर ली है। सारी ज़मीन पर भय और असुरक्षा का माहौल है। ऐसे में आश्वस्त करने वाली बात ये है, बड़ी तादाद में क़बीलों ने उसकी हुकूमत को चुनौती दी है। योद्धाओं की टुकड़ियाँ पहले ही निकल चुकी हैं। बहुत से लोग आ चुके हैं, जो बचे हैं वो भी दो दिन के भीतर यहाँ होंगे। ये महायुद्ध अब दरवाज़े पर आ चुका है। क्या तुम पूरी तरह इसके लिए तैयार हो?' सालन ने उनकी तरफ़ सवालिया नज़रों से देखते हुए कहा।

'हम ऐसा कभी नहीं होने देंगे सालन! दुष्ट जैल्डॉन को रक्त के उस हर क़तरे का हिसाब देना होगा, जो उसकी महत्त्वाकांक्षाओं की तलवार से ज़मीन पर टपका है या टपकेगा।' सलार ने उनकी आँखों में आँखें डालकर कहा।

'हमें कुछ ज़रूरी इंतज़ामात करने हैं, सबसे पहला काम है उस पानी की हिफ़ाज़त, जो इस वक्त उसके लिए सबसे अनमोल है और साथ ही तुम्हारी भी।' फैगुअस ने अपनी जगह से खड़े होते हुए कहा।

'उस सुराही को केवल वो खोल सकता है, जिसने उसे हासिल किया हो लेकिन उसके साथ–साथ कुछ और सुरक्षा–उपाय भी करने आवश्यक हैं। बेहतर होगा तुम तीनों पास आकर बैठ जाओ।' थोरोज़ ने उनकी तरफ़ देखते हुए कहा।

तीनों लकड़ी के फर्श पर आकर बैठ गए और सुराही निकालकर अपने बीच में रख ली। सालन ने तीनों से सुराही एक साथ पकड़ने को कहा। तीनों ने एक साथ सुराही को अपनी हथेलियों में कस लिया। सालन ने अपने हाथ उनके हाथों के ऊपर रख दिए और आँखें बन्द कर लीं।

कुछ ही पलों में उनके सिर के आसपास हरे रंग की एक धुंध दिखने लगी, जो हर पल बढ़ती जा रही थी। आहिस्ता–आहिस्ता वो उनके चेहरे और गर्दन से होती हुई दोनों हाथों तक उतर आई। हरे कुहरे के दो गोल छल्ले, उनकी दोनों बाजुओं से होते हुए, नीचे सरक रहे थे। धीरे–धीरे वो सालन की कलाइयों तक उतर आए और फिर हथेलियों और उँगलियों से होते हुए तीनों के हाथों पर आकर रुक गए। अब उनके हाथों को उस हरी धुंध ने पूरी तरह ढँक लिया। धुंध के बीच उनके हाथ और सुराही, दोनों दिखने बन्द हो गए। कुछ पलों तक वो हरा कुहरा वैसा ही रहा फिर आहिस्ता–आहिस्ता कम होने लगा।

सालन ने उनसे हाथ हटाने के लिए कहा। उन्होंने देखा, सुराही को उस हरे कुहरे ने अपनी आगोश में समेट रखा था। सालन ने उनकी तरफ देखा–'अब इस सुराही को केवल तब खोला जा सकता है, जब तुम तीनों इसे **एक साथ** खोलने की कोशिश करो। अगर जंग में ये किसी तरह उसने हासिल कर भी ली, तो भी वो कुछ हासिल नहीं कर पाएगा। इस लड़ाई में हो सकता है, तुम में से किसी एक पर वो हमला करे, हो सकता है एक साथ तीनों पर लेकिन वो तब तक इस पानी को हासिल नहीं कर सकता, जब तक तुम एक साथ ये पानी उसे न सौंपना चाहो। इस जंग में वैसे तुम तीनों एक साथ नहीं रहोगे, तुम्हें अलग–अलग मोर्चे पर लड़ना होगा।' सालन ने गम्भीर आवाज में अपनी बात खत्म की।

'तुम्हारे पैदा होने का इंतजार काली ताकतें सदियों तक करती रहीं, ये महायुद्ध तुम्हारे आसपास ही लड़ा जाएगा, तुम कोई दिव्य–शक्ति नहीं हो, न ही बेपनाह ताकतों के मालिक हो, तुम एक आम इंसान हो, जिसके भीतर विशेषताएँ हैं। असली चीज़ वो ताकतें नहीं होतीं, जो हम हासिल करते हैं, असली ताकतें वो होती हैं, जो हमारे भीतर पहले से ही होती हैं मगर हम उन्हें इस्तेमाल नहीं करते। यही भीतरी ताकतें तुम्हें ख़ास बनाती हैं। एक बड़ा खतरा दुनिया को निगलने के लिए बढ़ा आ रहा है। तुम्हें हथियारों से ज़्यादा, अपनी बुद्धि और तरकीबों का इस्तेमाल करना चाहिए। बिना बुद्धि की ताकत, शेरों के झुण्ड में फँसे अन्धे हाथी जैसी होती है।' फैगुअस ने उनकी तरफ देखते हुए कहा।

'हम दुश्मन को उसकी भाषा में जवाब देंगे फैगुअस...हम योद्धा हैं। जिस तरह वार करने के लिए हिम्मत और बहादुरी की ज़रूरत होती है, उसी तरह बचने के लिए चतुराई और युक्तियों की। हम इंतजार करेंगे, वो अपने अंजाम को खुद चुन चुका है।' जरूस ने सधे हुए स्वर में जवाब दिया।

'कल सुबह, तुम्हें योद्धाओं की छावनी में ले जाया जाएगा ताकि तुम उन ताकतों का सही अंदाज़ा लगा सको, जो इस जंग में हिस्सा लेंगी और अपने साथियों के बारे में बेहतर जान सको। उसके बाद ऐसे किसी परिचय का अवसर नहीं मिलेगा। लोफा तुम्हें छावनी में लेकर जाएगा और सरदारों से तुम्हारा व्यक्तिगत परिचय कराया जाएगा। हमें कुछ जरूरी काम निपटाने हैं इसलिए आज रात के खाने पर मुलाक़ात नहीं हो सकेगी।' थोरोज़ ने उठने की कोशिश करते हुए कहा। लोफ़ा ने ऐसे सहमति में सिर हिलाया जैसे सब समझ गया हो। बैडल उसके कन्धे से उतरकर दौड़ा और थोरोज के जिस्म पर चढ़ गया।

उनके जाने के बाद, वो काफ़ी देर तक काठ–घर में अकेले रहे। लोफा उनके साथ ही जा चुका था। सलार ने उस कमरे में जाकर देखा, जहाँ उन्हें शिला–पुस्तक मिली थी लेकिन उस कोने में अब एक भी किताब नहीं थी। पूरे घर में अजीब–सा सन्नाटा पसरा था। काठ–घर से उतरकर तीनों तालाब के पास पहुँचे, पानी में उठती लहरें, वहाँ जलप्रेतों की मौजूदगी का अहसास करा रही थीं लेकिन उनमें से कोई भी सतह पर नहीं दिख रहा था। मकास ने जडाकी की खोज में नज़र दौड़ाई मगर वो कहीं नहीं थी।

जंग की आशंकाओं से भरे, इन दो दिनों की सबसे ख़ास बात मुझे वो लगती है, जब थोरोज़ की पहाड़ी ने एक दुर्लभ मिलन देखा। एक ऐसा मिलन, जिसमें मुहब्बत की खुशबू तो थी ही, साथ ही एक पूरी प्रजाति के अस्तित्त्व का कवच भी था। मैं जिनकी बात कर रहा हूँ, वो यकीनन न तो मकास और पर्सीना का मिलन है और न ही उस मादा जलप्रेत जडाकी और चाँदनी रातों के उस छलावे, कैटाकोटस मैगनडोला का...वो मिलन था उनका, बौने–भी–जिन्हें–बौना– कहते–थे। नन्हे फॉ...चेचकोप्लाग नाम की बीमारी की वजह से जिनकी ज्यादातर मादाएँ ख़त्म हो गईं। नन्हे फॉ, जिन्होंने शब्दहीन–शब्दकोश की मदद से संथाल के तीनों बेटों को वो इशारा दिया, जो इस दास्तान की धुरी है।

फॉ मादाओं और पुरुषों का मिलन, उनका राजकुमार डल...जो कुछ समय बाद राजा बनने ही वाला था, डल और उसके सारे साथियों को थोरोज़ ने पहाड़ी के ऊपर आमन्त्रित किया मगर अकेले नहीं, डिग्गीडस्ट बौनों के साथ। डल और

उसके साथी, काठ–घर में पहुँचाए गए। वो बेसब्री से उस पल का इंतज़ार कर रहे थे, जिसके बारे में उन्हें सन्देश दिया गया था कि काठ–घर में उन्हें 'वो' मिलेगा, जिसके बाद फॉ बौनों के अस्तित्त्व का संकट हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा।

पियोनी ने सबको बताया कि वो सब बेहद खुश हैं लेकिन बस ये नहीं समझ पा रहे कि आख़िर ऐसी चीज़ क्या हो सकती है। भोले–भाले उन फॉ बौनों के ज़ेहन में कहीं दूर–दूर तक ये नहीं था कि उनकी मुलाकात फॉ मादाओं से होगी। चूँकि इकोइ–चामन भाषा का जानकार केवल बौनों का सरदार पियोनी था, इसलिए वही सबको उनसे मिले सन्देश के बारे में बता रहा था। काठ–घर में इस वक़्त तीनों भाइयों के अलावा सालन, थोरोज़, पतला सींकडी, पाँचों बूढ़े फकीर, वुन्टनव्रॉस, जिल्वोकाट, कैफ़ुआन पस्तर, जडाकी और स्वाइली भी थी।

'ये लोफ़ा अब तक आया क्यों नहीं?' कैफ़ुआन परस्तर ने जिल्वोकाट की तरफ देखते हुए कहा।

'उसे अब तक आ जाना चाहिए था।' जिल्वोकाट की अवाज में एक व्यग्रता साफ झलक रही थी।

तभी काठ–घर की लकड़ी की सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने की आवाज सुनाई दी। वुन्टनव्रॉस ने तेज़ी से आगे बढ़कर दरवाज़ा खोल दिया। बाहर लोफ़ा ही था, उसके साथ एक डिग्गीडस्ट बौना भी था, जिसने अपने हाथ में एक बेहद छोटी संदूकची ले रखी थी, जिसका आकार उस बौने की हथेली से भी कई गुना छोटा था। संदूकची का ऊपर वाला ढक्कन पारदर्शी काँच का बना था, जिसमें से होकर भीतर का दृश्य साफ दिख सकता था।

इंसानी आँख से देखने पर तो उसमें केवल एक छोटा–सा, मुलायम रेशमी कपडा बिछा नज़र आ रहा था मगर उसे लाने वाला डिग्गीडस्ट बौना साफ देख पा रहा था कि उस रेशम के छोटे–से कपड़े के ऊपर, नन्ही फॉ मादाओं का पूरा हुजूम है। काठ की एक तिपाही की तरफ सबकी निगाहें थीं, जिस पर पियोनी ने फॉ बौनों के बैठने, या फिर ये कहा जाए घूमने की जगह बनाई थी। हर किसी ने लोफ़ा और उस डिग्गीडस्ट बौने का स्वागत किया, जिसका नाम **कारासीचा** था।

पियोनी बीच–बीच में सबको बता रहा था कि फॉ बौने अब तक नहीं समझ पा रहे कि आख़िर ये मामला क्या है। हर किसी के चेहरे पर खुशी और सुकून की झलक थी। लोफ़ा ने बताया कि अभी तक फॉ मादाओं को भी ये नहीं बताया गया है कि उन्हें कहाँ ले जाया जा रहा है। बस उन्हें इतना बताया गया था कि किसी उत्सव में शामिल होने के लिए, थोरोज ने उन्हें बुलावा भेजा है। उत्सव में शामिल होने के नाम पर वो सब पूरी तरह सज–ध्ज कर तैयार थीं। हालाँकि ये अलग बात थी कि उनका ये श्रंगार, केवल वो देख सकते थे, जिनसे मिलाने उन्हें लाया गया था। बाक़ी किसी को तो वो नज़र भी नहीं आने वाली थीं। ऐसा केवल सबका मानना था। बौनों के अलावा भी कई जोडी आँखें थीं, जो उन्हें देख सकती थीं और उनमें सालन, थोरोज़ और पाँच बूढ़े फ़क़ीरों के अलावा जडाकी भी शामिल थी।

कारासीचा ने, काठ की वो बेहद छोटी संदूकची, बड़ी नज़ाकत से अपनी हथेली पर रखी हुई थी। सालन और थोरोज़ ने अपनी गर्दन हिलाकर, मुस्कराते हुए इशारा किया और उसने आगे बढ़कर, बेहद सावधनी के साथ, संदूकची उस तिपाई पर रख दी, जिस पर राजकुमार डल, अपने सारे साथियों के साथ मौजूद था।

कारासीचा ने हल्के–हल्के मुस्कराते हुए, संदूकची की एक छोटी दीवार, जो नक़्क़ाशीदार लकड़ी की बनी हुई थी, एक तरफ़ सरका दी। अब तिपाई की सतह से होकर, संदूकची के भीतर जाने के लिए काफी जगह बन गई। कुछ पल तक कुछ नहीं हुआ, जिन्हें फॉ नज़र नहीं आ सकते थे, वो सब अपने चेहरे पर हैरत और उत्सुकता के भाव लिए, संदूकची की तरफ़ देख रहे थे और जिन्हें वो नज़र आ रहे थे, वो सब बस मन्द–मन्द मुस्करा रहे थे।

फिर अचानक जडाकी की खुशी से चीखने की आवाज़ ने सबको चौंका दिया। सालन, थोरोज़ और पाँच बूढ़े फ़क़ीर मुस्कराते हुए उठकर बाहर चले गए। पियोनी और सारे डिग्गीडस्ट बौने, खुशी के मारे तालियाँ बजा रहे थे। पियोनी ने सबको बताया कि फॉ मादाएँ और सारे पुरुष, जैसे खुशी से पागल होकर, एक–दूसरे से गले मिल रहे हैं। वो सब भौंचक्के भी हैं और खुशी से पागल भी। वो सब रेशम के उस मुलायम कपडे पर लोटपोट हो रहे हैं। उनमें से कुछ की आँखें, खुशी के आँसुओं से भीग गई थीं और कुछ अब भी पत्थर की तरह जड़वत् खड़े थे। उन्हें जैसे अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि जो कुछ वो देख रहे हैं वो सपना नहीं सच है।

पतला सींकड़ी पहले तो कुछ समझ नहीं पाया मगर जब पूरी बात उसकी समझ में आई तो उसके पतले–पतले होठों पर एक शरमाई हुई मुस्कराहट रेंग गई। वो धीरे–से आगे बढ़ा और संदूकची के काँच से होकर अन्दर झाँकने की कोशिश की, तभी लोफ़ा ने उसे एक हल्की–सी धैल जमाई, जैसे कह रहा हो–'तुम्हें कुछ नहीं दिखेगा तिनके, मगर वो सब जरूर शरम से पानी हो जाएँगे, जो इस वक़्त भीतर हैं।'

सींकडी शरमाकर पीछे हट गया। वो अब बेहद खुश नज़र आ रहा था। पूरे काठ–घर में दो जोडी आँखें ऐसी भी थीं, जो इस वक़्त कहीं खोई हुई थी। जडाकी और मकास, दोनों बेहद खुश थे लेकिन कैटाकोटस और पर्सीना के बारे मे

सोचकर कुछ खोए हुए थे।

उन दो दिनों में ये अकेली घटना थी, जिसमें कोई भी चिन्तित नहीं था वरना हर तरफ चर्चाओं, परामर्शों, योजनाओं और चिन्ताओं की ही गरमाहट थी। अगले दिन तक बहुत सारे सरदार और कबीले सैनिक–छावनी तक पहुँच चुके थे। पहाड़ी के नीचे वाले मैदान में शिविर बढ़ते जा रहे थे। सुरक्षा हर दिन और कड़ी की जा रही थी। बिल्लू लोबामोरा खबर लाया था कि इदिया–इमीन टापू पर भी हलचल बढ़ गई है और दुष्ट जैल्डॉन और शातिर लैनीगल, दोनों वहीं मौजूद हैं।

माहौल में एक अजीब तनाव फैला हुआ था। इस बीच कई तरह की अफवाहें और चर्चाएँ, दबे पाँव चारों तरफ घूमती रही लेकिन ये तय हो चुका था, एक खौफनाक जंग मुँह खोले दुनिया की तरफ आ रही है। बीच–बीच में कई बार सालन और थोरोज ने शिविर और पहाड़ी की चौकसी का मुआयना किया। हर तरफ सुरक्षा बहुत कड़ी थी। कुछ खबरें आ रही थी कि यदि बहुत जल्द जैल्डॉन को पानी नहीं मिला तो वो खुद–ब–खुद खत्म हो जाएगा। इस बात में कितनी सच्चाई थी, इसकी पुष्टि किसी जानकार व्यक्ति ने नहीं की लेकिन अफवाहें हवाओं पर सवार होकर, हर तरफ चौकड़ी भर रही थीं। लग रहा था, फुसफुसाहटें दोनों तरफ के विश्वास का जायजा ले रही थीं।

मैं भी पहले उस गुफा का जायजा लेता हूँ, जिसमें मुझे इस दास्तान के नए हिस्से खोदने होते हैं। दरअसल पत्थर की अलग–अलग किस्में होती हैं। पत्थर कभी एक जैसे नहीं होते। हर तरह का पत्थर, एक अलग तरह की खासियत लिए होता है। चाहे वो 'एगस्टोन' हो, जिसे खाकर, हूनास्पॉटी, वुण्टनब्रॉस और तीनों भाइयों ने अपनी भूख मिटाई या फिर थोरोज की पहाड़ी के वो पत्थर हो, जिनके भीतर उँगली से छेद करके पानी निकाला जा सकता था। वो कोरा पत्थर भी एक पत्थर ही था, जिसके भीतर 'खास' पानी ने जन्म लिया। वो पत्थर जिसने पानी के 'गीलेपन' को भी बाहर ही रोक दिया, बस 'शुद्ध' पानी को ही भीतर प्रवेश करने की इजाज़त दी। शिला–पुस्तक भी एक पत्थर से ही बनी थी और शिला–मानव भी। इसीलिए मैं कहता हूँ, पत्थर कभी एक जैसे नहीं होते।

फिलहाल मैं उस पथरीले सभागार की तरफ चलना चाहूँगा, जिसके भीतर इस महागाथा के कुछ बेहद खास पल उकेरे गए हैं। वो पल, जिनमें ज़िक्र है, बोहिया–हकूक सरदार का, जिसका खुर अगर कहीं टूटकर गिर जाए तो वहाँ अकाल पड़ने लगता। जिसमें दर्ज है, वो **चल्कागा** जिसके कन्धे पर हर वक्त बैठा रहने वाला काला कौवा, अगर किसी के ऊपर बीट कर दे तो उसकी सारी हड्डियाँ सीने में गठरी बनकर सिमट जाएँ। वो **बजाईबैगा** दानव, जिनकी नसों का खून, हर वक्त कढ़ाह में उबलते काढ़े की तरह खौलता रहता और जिस्म से पसीने की जगह भाप निकलती रहती। वो **लैसनार** जो अपनी अँतड़ियाँ अपने हलक से उगलकर, दुश्मन के गले में उनका फन्दा कस देते। वो रहस्यमयी **सूँसलीखेड़ा** जो किसी के भी जिस्म से सारा अँधेरा सोखकर, उसे मौत के घाट उतार सकते और सुदूर पूर्व से आए, वो पवित्रा **अंशदेव** जिन पर हमला करने वाले के मन में सघन वैराग्य जन्म ले लेता और वो जंग त्यागकर जंगलों में निकल जाता।

योद्धाओं की छावनी

अध्याय पच्चीस

अगली सुबह लोफा बहुत जल्दी आ गया। तीनों चलने के लिए तैयार थे। वो रात उन्हें काठ–घर में ही गुजारने के लिए कहा गया। उन्हें पता नहीं था बाकी लोग कहाँ हैं मगर इतना जरूर मालूम था, हर कोई किले के अलग–अलग हिस्सों में है। पर्सीना को देखने के लिए मकास की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। महासभा के बाद न तो वो उसे देख पाया और न ही कोई बात हो सकी। उन्हें हैरत थी कि वो पहले भी इतने दिन काठ–घर में रहे मगर 'वो' दरवाजा उन्हें कभी नहीं दिखा, जिससे होकर वो नीचे पहाडी के गर्भ में जा सकते थे।

'...तो क्या मैं ये समझूँ कि अब तुम तीनों चलने के लिए तैयार हो?' लोफ़ा ने अपने लबादे को नीचे की तरफ खींचते हुए कहा।

'...शायद...या फिर यूँ कहूँ कि पूरी तरह तैयार।' जरूस ने उसकी तरफ देखा।

'क्या सोने जैसे बदन वाला ये बहादुर नौजवान भी तैयार है, जिसने अभी तक कलेवा भी नहीं किया है?' लोफ़ा ने मकास की तरफ देखते हुए भौंहें चढ़ाई।

'ह...हाँ...मैं तैयार हूँ लोफ़ा...वैसे भी मुझे कुछ नहीं खाना था, इतनी सुबह कोई भूख लगती है क्या?' उसने सवाल के जवाब में सवाल करते हुए कहा।

'फिर ठीक है...तो फिर चलो...हमें देर नहीं करनी चाहिए।' लोफ़ा ने आगे बढ़कर वो दरवाजा खोल दिया, जिससे होकर वो नीचे जाने वाले थे।

लोफा सबसे आगे था, उसने समय–संकुचन–सीढ़ी पर पैर रखा और वो एकदम दस सीढ़ी नीचे पहुँच गया। उसके पीछे तीनों सीढ़ी पर आए, गोल–गोल घूमते हुए वो कब नीचे पहुँच गए, उन्हें पता ही नहीं चला। वो बड़ा और गोल कक्ष इस वक्त बिल्कुल ख़ाली था। उसकी नक़्क़ाशीदार मेहराबों को देखते हुए, वो आगे बढ़ते रहे। कक्ष में इस वक़्त इतना सन्नाटा था कि उनके क़दमों की आवाज़ भी वहाँ नगाड़े की तरह गूँज रही थी।

बेहद ऊँफचे और विशाल दरवाज़े के पास जाकर, लोफ़ा ने एक पत्थर को भीतर की तरफ़ दबाया। एक भारी गड़गड़ाहट के साथ पथरीला दरवाज़ा खुलता चला गया। दरवाज़ा खुलते ही ठण्डी हवा का एक ताज़ा झोंका उन्हें झकझोरता चला गया। दूसरी तरफ़ दूर–दूर तक पैफला हुआ मैदान उनका स्वागत कर रहा था, जिसमें बड़े–बड़े रंगीन शिविर लगे हुए थे। जहाँ तक नज़र जा रही थी, वो शिविरों का एक अंतहीन सिलसिला नज़र आ रहा था। सब कुछ बेहद व्यवस्थित लग रहा था। शिविरों के बीच से कुछ सरदार और उनके सहयोगी आ–जा रहे थे।

'सारे सरदार केन्द्रीय–शिविर में तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं, हमें वहीं चलना चाहिए।' लोफ़ा ने शिविरों के बीच से निकलते हुए, आगे बढ़ना शुरू कर दिया।

तीनों ने महसूस किया, वहाँ हर कोई उनको उत्सुकता की नज़र से देख रहा था। थोड़ा आगे जाने पर उन्हें दूर से एक विशाल शिविर नज़र आया, जिसके बाहर योद्धाओं की पोशाक पहने, दो बौने पहरा दे रहे थे। उन्हें आता देख, बौनों ने अदब से अभिवादन किया और शिविर का कपड़े का पर्दा हटाकर, भीतर जाने का सम्मानपूर्ण इशारा किया।

सबसे पहले लोफ़ा ने भीतर प्रवेश किया, तीनों उसके पीछे–पीछे अन्दर आए। भीतर बहुत सारे लोग बैठे हुए थे। वहाँ, जिल्चोकाट, वुन्टनब्रॉस, हूनास्पॉटी, कैफ़ुआन पस्तर और बहुत सारे लोग भी थे। मकास ने देखा, पर्सीना भी वहाँ थी। उनके आते ही सभी ने खड़े होकर स्वागत किया। उन्हें लगा, वो सब उनके सम्मान में खड़े हुए हैं लेकिन वो तीनों और लोफ़ा भी ये देखकर चौंक गया कि उनके पीछे–पीछे ही, पर्दा हटाकर, पाँचों बूढ़े फ़कीर, सालन और थोरोज़ ने भी प्रवेश किया।

'आप लोग अपने स्थान पर बैठें साथियो, ये व्यक्तिगत परिचय कराने का हमारा उद्देश्य केवल इन्हें ही नहीं, बल्कि आप सब को भी ये जानकारी मुहैया कराना है कि हमारी फौज की ताक़तें क्या–क्या हैं?' सालन ने सबकी तरफ़ देखते हुए कहा।

सबके बैठ जाने के बाद थोरोज़ ने वुन्टनब्रॉस को संकेत किया और वो उठकर तम्बू के बीच में आ गया। अब वो ऐसी जगह खड़ा हुआ था, जहाँ से वो सबको देख सकता था और बाक़ी सब लोग भी उसे देख सकते थे।

'साथियो!' वुन्टनब्रॉस ने सबको सम्बोधित करते हुए कहा। 'हमारे बहादुर सरदारो और योद्धाओ! जिस ख़तरे से निपटने के लिए हम सब यहाँ इकट्ठा हुए हैं, उसके बारे में आप सबको बख़ूबी मालूम है। महान थोरोज़ की तरफ़ से चूँकि यह जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई कि मैं आप सभी का एक व्यक्तिगत परिचय कराऊँ ताकि महायुद्ध की अग्रिम तैयारियाँ बेहतर ढँग से की जा सकें।' उसने एक बार विशाल शिविर का जायजा लिया और फिर साँस लेने को रुका।

'तो परिचय के इस महत्त्वपूर्ण कार्य को मैं आरम्भ करना चाहूँगा, दाहिने से बाँयी तरफ़। मेरे दाहिनी तरफ़, जिस योद्धा को आप देख रहे हैं, वो हैं **गैल्जीडान**।' वुन्टनब्रॉस ने पत्थर के एक आसन पर बैठे सेण्टीड्राफ़्स के सरदार गैल्जीडान की तरफ़ इशारा करते हुए कहा–'कई सदियों से दुनिया ये मानती रही है कि सेण्टीड्राफ़्स ख़त्म हो चुके हैं क्योंकि ये बहादुर लोग अब ज्यादातर वक्त, बाहरी दुनिया से कटकर गुजारते हैं। जन्म से ही ये तिलिस्मी–विद्याओं और रूहानी–ताक़तों के मालिक होते हैं। सेण्टीड्राफ़्स की ताक़त इनके भाले में समाई होती है, जो हर वक्त, हर सेण्टीड्राफ़ के हाथ में थमा होता है। सैनिकों की अपनी फौज के साथ, सरदार गैल्जीडान, सैनिक–छावनी का हिस्सा बन चुके हैं। इतिहास गवाह है, बहादुरी और हिम्मत में किसी सेण्टीड्राफ़ का मुक़ाबला कोई हाथी भी नहीं कर सकता।' उसकी बात पूरी होते ही, गैल्जीडान ने अपना छोटा भाला, पत्थर के आसन में गाड़कर, उसे ठकठकाया और ये अहसास दिलाया कि वो पूरी ताक़त से दुश्मन को कुचलने के लिए बेचैन है। हर किसी की नज़रों में सरदार गैल्जीडान और उसके सैनिकों के लिए प्रशंसा के भाव थे।

तिनके जैसे मोटे, एक स्ट्रासोल की तरफ़ इशारा करके उसने फिर बोलना शुरू किया–'अगले क्रम पर उपस्थित हैं स्ट्रासोल्स के महान सरदार **जैस्टीफ़्लच**। जैसा कि आप सबको मालूम है, स्ट्रासोल्स की सूँघने की ताक़त का कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता। खाने के लिए आपको केवल अपने नाख़ून ही पसन्द हैं, जो बहुत तेजी से हर दिन बढ़ते हैं। खुद्दारी हर स्ट्रासोल के भीतर कूट–कूटकर भरी होती है। बात–बात पर विचित्रा गालियाँ देना और कहावतों का इस्तेमाल करना इनकी आदत में शुमार होता है लेकिन दिल के उतने ही नरम, हैरतअंगेज शक्तियों के स्वामी और बेहद जज़्बाती भी। स्ट्रासोल्स की ताक़तें अद्भुत होती हैं, बहादुरी, हिम्मत और जोश की मीनार और निर्भीक। सरदार जैस्टीफ़्लच, अपने हज़ारों सैनिकों के साथ इस जंग का नक़्शा बदलने के लिए तैयार होकर आए हैं।' वुन्टनब्रॉस की बात पूरी होते ही, सरदार जैस्टीफ़्लच ने अपने परम्परागत विचित्रा ढंग से सबका अभिवादन किया।

जैस्टीफ़्लच से अगला क्रम पियोनी का था। बौनों का सरदार पियोनी...वो बड़े अजीब ढंग से गैल्जीडान को देखे जा रहा था। वुन्टनब्रॉस ने पियोनी की तरफ़ देखा–'बौनों के सरदार **पियोनी**...जैसा कि जंगल गवाह है बौनों और दानवों के उस भयानक युद्ध का, जिसमें दानवों की हार इस वजह से हुई कि वो अपने ही वज़न से उस दलदल में डूब गए, जिस तक महान सरदार पियोनी उन्हें पीछे हटाते हुए ले गए। सैंकड़ों जंगों और लड़ाइयों का तजुर्बा समेटे। अपने शानदार हथियारों और कुशल नेतश्त्व के लिए मशहूर, सरदार पियोनी, किसी भी सेना को उल्टे पाँव वापस भागने के लिए मजबूर कर देने वाले योद्धा हैं। अपने सैंकड़ों बहादुर जंगबाजों के साथ, आप महासभा की सेना को मज़बूत करने के लिए उपस्थित हुए हैं।' पियोनी ने अपने हाथ में पकड़ा वज़नी पफरसा, उस पत्थर पर रगड़ा, जिस पर वो बैठा हुआ था। ऐसा लगा जैसे वो बिना बोले ये सन्देश देना चाहता हो कि वो दुश्मन को काटकर रख देगा।

'महाबली **कॉफ़ीनस स्पिनडल**...' पियोनी की बग़ल में बैठे स्पिनडल की तरफ़ देखते हुए, वुन्टनब्रास ने धैर्य के साथ अपने होंठ हिलाए, 'स्पिनडल किसी सेना के साथ नहीं हैं, लेकिन वो अपने–आप में एक चलती–फिरती सेना हैं। इतिहास के सबसे ख़ास हिस्से में दर्ज़, उस मशहूर प्रकाश–स्तम्भ के रक्षक, जिसे बनाना जंगल की गरिमा और निष्ठा से तो जुड़ा ही था, साथ ही क़बीलों की बहादुरी और हिम्मत का भी प्रतीक था। अपने पुरखों से चली आ रही बलिदान और बहादुरी की एक अद्भुत परम्परा के वाहक। हज़ारों वहशी याहूनों का सिर अपने मुगदर से कुचलने वाले योद्धा, स्पिनडल ने इस जंग के कुछ बेहद ख़ास पलों को इतिहास में दर्ज़ कराने का फ़ैसला किया है। महासभा उनकी इस भावना का सम्मान करती है और विश्वास व्यक्त करती है, वो दुष्ट ताक़तों को अपने मुगदर से परिचित कराकर ही आकाश की यात्रा पर भेजेंगे।'

'गीगा–टर्सिया की राजकुमारी, **पर्सीना पार्सो हूफ...'** वुन्टनव्रास ने पर्सीना की तरफ सम्मान से देखते हुए कहा–'बहादुर बुजुर्ग योद्धा, ग्लैडीलस हूफ की पुत्री...जो इस समय गीगा–टर्सिया की साम्राज्ञी भी बनने वाली हैं। अचूक धनुर्धर और हवा की रफ्तार से युद्धभूमि को मापने वाली, हजारों स्टैगार्टॉर्स की सेना के साथ, यहाँ उपस्थित हैं। स्टैगार्टॉर्स, जिनमें सैंकडों ऐसे योद्धा हैं, जिनकी तलवारें और तीर, पलक झपकते ही दुश्मन के सीने के आरपार हो जाते हैं। हम तहेदिल से गीगा–टर्सिया की राजकुमारी का यहाँ स्वागत करते हैं।' वुन्टनव्रॉस ने हल्के से खाँसकर अपना गला साफ किया। मकास की नज़रें पर्सीना के चेहरे पर गडी हुई थीं।

'बल्चार कबीले के सरदार, बोहिया–हकूक **बैलाहूस**, किसी जंग का नक्शा पलटने के लिए, जिस कबीले का एक योद्धा भी पर्याप्त से अधिक माना जाता है, वहाँ से अपनी सैंकड़ों योद्धाओं की फौज लेकर, यहाँ पहुँचने वाले सरदार बैलाहूस का हम स्वागत करते हैं और उम्मीद करते हैं, दुश्मन के नापाक सीने, उनकी हथेलियों में उगे पवित्रा सींगों से जरूर रू–ब–रू होंगे।' उस बोहिया–हकूक ने, जिसका नाम वुन्टनव्रास ने बैलाहूस बताया था, अपनी गैंडे जैसी पीठ पर लम्बी झब्बेदार पूँछ घुमाते हुए, अदब से सिर हिलाया।

'हर जगह से ताकतवर लोग यहाँ आए हुए हैं...जिनसे आप परिचित भी हैं। दूर सीनिया से, **कैफूआन पस्तर**, रोशनी जिनकी उँगलियों की गाँठों में कैद रहती है। उजाले की ताकतों का इस्तेमाल करके, किसी भी चीज़ के भीतर छिपी, अंधेरे की चादर को चिथड़ों में बदल सकने की ताकत रखने वाला योद्धा। बैल्जोनिया से **हूनास्पॉटी**, आग की लपटों को मुट्ठी में जकड़कर, किसी भी दुश्मन की नसों में अलाव सुलगाने की ताकत रखने वाला, कैजो प्रजाति का योद्धा।

गैल्नास के जंगलों से, **जिल्वोकाट**...जंगली जीवों से लेकर चींटियों तक को अपने हुक्म पर नचाने की वुफव्वत रखने वाला, बहादुर वृक्षमानव। बैम्बूस प्रजाति के सरदार **कैलोबा** और मैं हल्वरनेसिया से, **वुन्टनव्रॉस**।' अपनी बात पूरी होते ही उसने एक बार पूरी सभा का मुआयना किया। अभी बहुत से सरदार और प्रतिनिधि बाकी बचे हुए थे।

'महान **सालन**, **थोरोष** और हम सबके लिए सम्माननीय पाँच फ़कीरों से आप सब भली तरह परिचित हैं और उनकी असीम शक्तियों से भी। हमारा सौभाग्य है दोस्तो कि हम उन पवित्रा आत्माओं के साथ इस महायुद्ध में शामिल होंगे, जिनका दो पल का साथ भी विरलों को ही मिलता है लेकिन इसके साथ–साथ, मैं उन ख़ास योद्धाओं से भी आपका परिचय कराना चाहूँगा, जिनकी फौज अभी यहाँ आनी बाक़ी है। हमारे ख़ास बुलावे पर जो यहाँ पिछले सप्ताह से आए हुए हैं और लगातार सभाओं में भी शिरकत कर रहे हैं। उनकी सेनाएँ वूफच कर चुकी हैं और अगले तीन दिन में, वो यहाँ मौजूद होंगी।' वुन्टनव्रॉस ने बाईं तरफ़ पंक्तिबद्ध रूप से बैठे सरदारों की तरफ़ सम्मान से देखते हुए कहा।

'इसके बाद मैं परिचय कराना चाहूँगा, **एन्वानेच** कबीले के सरदार **नैसानैल** का...सरदार नैसानैल...' वुन्टनव्रॉस की बात बीच में ही रह गई। अचानक बाहर बहुत तेज़ शोर उठा, उसने चौंककर तम्बू के द्वार की तरफ देखा मगर पता नही चल पाया कि ये शोर किस बात का है। हर कोई एकदम चौंक गया। बाहर से ऐसी आवाजें आनी शुरू हो गईं जैसे बहुत सारे लोग बदहवास हों। चीखने–चिल्लाने और शोर की आवाज़ एकदम से बढ़ गई। हर कोई अपनी जगह से खड़ा हो गया और तेजी से कपडे के दरवाज़े की तरफ़ झपटा। पाँचों बूढ़े फ़कीर, सालन और थोरोज़ सबसे पहले बाहर निकल गए।

उनके पीछे–पीछे वुन्टव्रॉस और बाक़ी सब लोग बाहर भागे। बाहर निकलकर सबने देखा, वहाँ का माहौल भयंकर अफ़रा–तफ़री वाला था। हर तम्बू से बाहर निकलकर योद्धा इध्र–उध्र दौड़ रहे थे। मकास ने एक स्टैगार्टॉर को रोककर उससे इस अफ़रा–तफ़री की वजह जाननी चाही। उसने हवाइयाँ उड़े चेहरे से बस उस तरफ़ इशारा कर दिया, जिस तरफ़ शिविरों का सिलसिला समाप्त होकर, पथरीला मैदान शुरू होता था।

सब तेज़ी से उध्र दौड़े, वहाँ का नज़ारा देखकर उनकी आँखें हैरत से फटी रह गईं। मैदान के पूरे आसमान पर सैंकड़ों साये मंडरा रहे थे। उनके जिस्म ऐसे थे, जैसे किसी मुर्दे को क़ब्र से निकालकर हवा में टाँग दिया हो। लम्बे बाँस जैसे जिस्म, जिन पर जगह–जगह चीथड़े झूल रहे थे। भयावह चेहरे, जिस्म के आरपार दिखाई देती हड्डियाँ और पीठ तक झूलते लम्बे बाल। कभी लगता, वो कंकाल जैसा शरीर हैं और कभी लगता उनके आरपार देखा जा सकता है। सैनिक–छावनी के बाहर सेना की एक टुकड़ी उन पर तीरों से हमला करने की कोशिश कर रही थी लेकिन वो इतनी उँफचाई पर थे कि कोई तीर वहाँ तक पहुँच ही नहीं पा रहा था।

'ये क्या है?' पर्सीना ने वुन्टनव्रॉस की तरफ़ देखते हुए पूछा।

'पता नहीं...मैंने ऐसी कोई आफ़त पहली बार देखी है।' वुन्टनव्रॉस की आवाज़ में अनभिज्ञता थी।

'सब लोग पीछे हो जाएँ...' बूढ़े फकीर फैगुअस की ज़ोरदार गम्भीर आवाज़ ने भय को तोड़ा। सैनिकों ने अपने धनुष नीचे कर लिए और पीछे हट गए। बिल्चू लोबामोस भी एक तम्बू से निकलकर बाहर आ गया।

'ये...ये तो उजड़े–प्रेत हैं। नष्ट हो चुकी सभ्यता एटनोर के खण्डहरों में रहने वाले...ये दुष्ट जैल्डॉन की सबसे अगली पंक्ति के लड़ाकों में शामिल हो गए हैं।' लोबामोस की तेज़ आवाज़ सभी ने सुनी।

'हाँ, इन उजड़े–प्रेतों को हम सदियों से जानते हैं बिल्यू लोबामोस...इनसे दूरी बनाकर रखो। अगर इनका थूक किसी के ऊपर गिर गया तो उसे कोई नहीं बचा सकता।' फैगुअस ने हर किसी को सावधन करते हुए कहा।

'मगर ये न तो हमला कर रहे हैं और न ही आगे बढ़ रहे हैं, आखिर ये चाहते क्या हैं?' मकास ने उनकी तरफ़ देखते हुए कहा।

'जैल्डॉन ने अपनी ताकत का नमूना दिखाने के लिए इन्हें भेजा है। वो हमें बताना चाहता है कि जब वो हमारी सैनिक–छावनी तक पहुँच सकता है तो कोई भी चीज़ उसके लिए मुश्किल नहीं है।' सालन ने अपने चौड़े माथे पर सलवटें डालते हुए कहा।

तभी उनमें से एक आगे बढ़ा, जो बाकियों से कुछ ज़्यादा ही लम्बा था। उसके जिस्म पर झूलते चीथड़े और हवा में लहराते उसके सिर के लम्बे–लम्बे बाल, उसे और भयानक बना रहे थे। वो आसमान में तैरता हुआ, मैदान में खड़े एप्रूस के एक बेहद ऊँफचे पेड़ तक आया और उसके इर्द–गिर्द चक्कर लगाकर, उसके ऊपर थूक दिया। पलक झपकते ही पेड़ से सारे पत्ते झड़कर नीचे गिरने लगे और वो सूखता चला गया। चंद पलों में ही पेड़ की शाखाएँ और तना काले पड़ने शुरू हो गए। देखते ही देखते पेड़, लकड़ी के एक उजड़े तने में बदल चुका था।

उसने वापस लौटना चाहा लेकिन वो अब आगे नहीं बढ़ पा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे हवा में ही उसे किसी ने जकड़ लिया हो। थोरोज और पाँच बूढ़े फकीरों को छोड़कर, हर कोई हैरत से इस नज़ारे को देख रहा था। वो बस सालन की तरफ़ देखे जा रहे थे, जिनके माथे पर इस वक़्त एक उभरी हुई सलवट साफ़ नज़र आ रही थी। उजड़ा–प्रेत जैसे किसी अदृश्य पकड़ से छूटने के लिए कसमसा रहा था मगर वो ज़रा भी आगे नहीं जा पा रहा था। उससे कुछ दूरी पर आसमान में तैरते उसके बाकी साथी भी स्तब्ध से उसे देख रहे थे।

सालन के माथे पर उभरी सलवट अब और चौड़ी होती जा रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने अपनी मानसिक शक्तियों से उसे जकड़ लिया था। अब हवा में एक ऐसी चीख उभरने लगी थी जैसे किसी छोटे पिल्ले को किसी लकड़बग्घ ो ने दबोच लिया हो। फिर एक तेज़ झटका लगा और वो तेज़ी से ज़मीन पर आकर गिरा। ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उसे ज़मीन पर दे मारा हो। उसके बाकी साथियों में भी हलचल मच गई।

फिर बैंगनी लपटों का एक भभका उठा और उजड़ा–प्रेत आग के एक गोले में तब्दील हो गया। पल भर में ही घास पर अब केवल राख की एक छोटी ढेरी पड़ी थी। फिर ऐसा लगा जैसे आसमान से फटे–पुराने चीथड़ों की बारिश शुरू हो गई हो। ऊपर से गन्दे कपड़ों के छोटे–छोटे टुकड़े ऐसे नीचे गिरने लगे जैसे ऊपर कपड़ों का पतझर आ गया हो। हर तरफ़ काले–काले, छोटे–छोटे कपड़े बिखर गए। सारे उजड़े–प्रेत पीछे हटते जा रहे थे। वो अब काफ़ी दूर हो गए थे लेकिन चीथड़ों का ज़मीन पर गिरना बन्द नहीं हुआ था। वो दूर होते जा रहे थे और कुछ ही पलों में वो दिखाई देने भी बन्द हो गए।

फैगुअस ने आगे बढ़कर उनमें से एक चीथड़ा उठा लिया। काले रंग के उस गले हुए कपड़े पर एक छोटी–सी इबारत उभरी हुई थी–***'मौत तुम सबकी तरफ़ बढ़ रही है। वो सुराही मुझे सौंप दो और घुटने टेको बूढ़ों...वरना तुम्हारी रूहें तुम्हारे जिस्म से खींच ली जाएँगी। ये लड़के भी अब ज़्यादा दिन ज़िन्दा नहीं बचेंगे। ज़मीन पर एल्मा-गोरस की ताकत को संभालने वाली केवल एक आत्मा होगी...और दूसरी कोई नहीं-जैल्डॉन'***

सालन ने आगे बढ़कर, एक लम्बी लकड़ी की मदद से एक चीथड़ा उठा लिया, हर किसी पर एक ही इबारत थी। एक पल बाद ही सबने देखा, चीथड़ा काले रंग की राख में तब्दील हो गया।

'वो हमें अपनी ताक़त का अहसास कराना चाहता है।' जरूस ने अपने जबड़े भींचते हुए कहा।

'उसे मालूम है, हम यहाँ फ़ौज इकट्ठा कर रहे हैं। तैयारियाँ तेज़ करनी होंगी और चौकसी भी बढ़ानी होगी।' थोरोज ने अपनी पतली आवाज़ में कहा।

परिचय–सभा स्थगित हो गई और उस दिन शाम तक छावनी और पहाड़ी के ऊपर भी केवल उजड़े–प्रेतों के उस हमले की ही चर्चा रही। छावनी की चौकसी पहले से ज़्यादा बढ़ा दी गई। किसी को भी अकेले कहीं न जाने की सख़्त हिदायतें दी गईं। शाम तक सैनिक–छावनी का विस्तार पहले से लगभग दो गुना हो गया। योद्धाओं और जत्थों का लगातार आना जारी था। अब मैदान में दूर–दूर तक शिविरों की संख्या बढ़ती ही जा रही थी। महायुद्ध में शमिल होने वाली

उन टुकड़ियों को जरूस ने हवाओं के हाथ सन्देश भिजवाया कि जितनी शीघ्र संभव हो सके, वो सैनिक–छावनी तक पहुँचें। सन्देश वापस आया कि हर टुकडी ने अपना रात्रि–विश्राम स्थगित करके लगातार चलने का फैसला किया है और अगले दिन तक, लगभग सब पहुँच जाएँगे।

इस जंग की शुरुआत से लेकर अंत तक, सब कुछ मैंने अपने हाथों से इन दीवारों पर खोदा है। कई बार मुझे लगता है किसी भी युद्ध को केवल स्थगित किया जा सकता है, रोका नहीं जा सकता। मेरी समझ हमेशा ये कहती है–युद्ध प्रकृति की व्यवस्था है। वो हम सबके भीतर छिपा है, बस मौके फ ढूँढता है बाहर आने के और इसके लिए वो किसी भी बहाने का इस्तेमाल कर सकता है। युद्ध हमारे जिस्म के रोंये–रोंये में जिन्दा होता है, किसी न किसी रूप में।

एक खास बात और...कई बार हम जंग के नायक के सिर पर ताजपोशी करते हैं लेकिन मुझे लगता है, **किसी जंग का कोई नायक नहीं होता। किसी जंग का कोई नायक, हो नहीं सकता। नायकत्व, जंग में गिरी उस लाश के नीचे भी कसमसा सकता है, जो हारने वाले किसी आम सैनिक की हो और उस शव के ऊपर भी भिनभिना सकता है, जो जीतने वाली सेना के किसी खास योद्धा का हो। नायकत्व किसी एक जगह निवास नहीं करता, वो उस हर कतरे में धड़कता है, जो रक्त की बूँदों के रूप में ज़मीन पर गिरती हैं। फिर वो रक्त इस पार वालों का हो या उस पार वालों का। किसी युद्ध में लूटी गई, सबसे सस्ती चीज़, विजय होती है।** इसलिए मैं इस जंग को एक दूसरे रूप में देखता हूँ, उस रूप में, जिसमें इस जंग में शामिल केवल एक योद्धा देख सकता है। वो है, दुनिया का सबसे बुजुर्ग शिशु...सालन। ऐसा मुझे क्यों लगता है, इस बात की चर्चा मैं बाद में करूँगा, फिलहाल मैं मोम के उन चौकोर टुकड़ों को पत्थर पर खोद रहा हूँ, जिन पर सैनिक–छावनी की वो रहस्यमयी घटनाएँ उकेरी हुई हैं, जो अगले दो दिनों में वहाँ घटीं।

तीसरे दिन कबीलों के कई बड़े जत्थे वहाँ पहुँचे। शाम होते–होते ऐसा लगने लगा, जैसे मैदान छोटा पड़ जाएगा। सैनिकों की टुकड़ियाँ और योद्धा, दूर–दूर तक फैले थे। सालन ने मैदान और पहाड़ी के आसपास विशेष सुरक्षा–उपाय किए थे ताकि उजड़े–प्रेतों के आगमन जैसी किसी घटना की पुनरावृत्ति न हो सके। वो शाम, बहुत सुर्ख थी, जब आखिरी जत्थे ने अपनी आमद कराई। उसके बाद आहिस्ता–आहिस्ता, अँधेरा आसमान को अपने आगोश में समेटने लगा।

उस रात बड़े गोल कक्ष में एक और सभा हुई। सैनिक–छावनी के सारे सरदार उसमें शामिल हुए। आज की सभा इन मायनों में खास थी कि उसमें वो हर कोई मौजूद था, जो इस युद्ध से कहीं भी जुड़ा हुआ था। उसमें संथाल के तीनों बेटे तो थे ही, पाँचों बूढ़े फक़ीर, सालन और थोरोज़ भी मौजूद थे। महासभा के सारे सदस्यों, लकड़हारा वुन्टनब्रॉस, वृक्षमानव जिल्चोकाट, रोशनी–पुत्रा कैफुआन पस्तर, मादा जल–प्रेत जडाकी, दानव हैबूला, चाँदनी रातों का छलावा कैटाकोटस, गोचो राक्षसी स्वाइली, नन्हा राक्षस लोफ़ा, पर्सीना, बौनों का सरदार पियोनी और हिममानव यति के साथ मणिधर साँप भी और एक ख़ास मेहमान, जो पूरी दुनिया में अपनी तरह का अकेला था...एल्फ़ैण्टॉर।

वो सारे सरदार भी वहाँ मौजूद थे, जिनका परिचय शिविर में हो चुका था और वो सब भी, जिनका परिचय नहीं हो पाया था। बिल्वुओं का सरदार सैल्गासीड भी अपने सबसे शातिर भेदिए, लोबामोस के साथ वहाँ था। पहाड़ी के गर्भ में मौजूद गोल कक्ष के बाहर, मैदान में दूर–दूर तक शिविर लगे हुए थे। मशालों की रोशनी, पूरे इलाके को जगमग कर रही थी। गोल कक्ष के भीतर की दीवारों पर रेंगती, रोशनी वाली मकड़ियों की तादाद आज बहुत बढ़ गई थी, जिनकी वजह से भीतर पर्याप्त रोशनी थी।

बूढ़े फ़क़ीर फ़ैगुअस की गम्भीर आवाज़ पूरे गोल कक्ष में गूँज रही थी–'दूर–दराज के क़बीलों, बस्तियों और प्रदेशों से आए सरदारों, उनके प्रतिनिधियों और योद्धाओ! आप सभी के पास भी वो सन्देश पहुँचा है, जिसमें सिर झुकाकर गुलामी कुबूल करने और जैल्डॉन को दुनिया का शासक स्वीकार करने की इबारत लिखी है। जैसा कि आप सब जानते हैं, दुश्मन बरसों से इस महायुद्ध की तैयारी कर रहा है और हमें इसकी तैयारी के लिए बस कुछ ही समय मिल पाया है लेकिन हमारी ताकत किसी भी फ़ौज से कम नहीं है। हम लड़ेंगे...अपनी आजादी और खुद्दारी के लिए। हम लड़ेंगे...मासूम ज़िन्दगियों की हिफ़ाज़त और दुष्ट ताक़तों की खिलाफ़त के लिए।' एक पल के लिए वो साँस लेने के लिए रुके और पूरे गोल कक्ष में नज़र दौड़ाई।

'हम अपने साथियों को बता देना चाहते हैं, ये महायुद्ध जिन ताक़तों के बीच लड़ा जाएगा, उसका असर पूरी धरती पर पड़ेगा। हम शक्ति का एक आनुपातिक विवरण आपके सामने रखना चाहते हैं, जिसमें हमारी फ़ौज के योद्धाओं और दुश्मन के लड़ाकों का ब्यौरा होगा। इस काम के लिए हमने दो ख़ास लोगों को नियुक्त किया है। दुनिया का सबसे शातिर भेदिया, बिल्वू लोबामोस, जो अपने सरदार सैल्गासीड के साथ यहाँ मौजूद है, हमें दुश्मन की ताक़त और उसकी सेना के

बारे में जानकारी देगा और दूसरा रोशनी–पुत्रा कैफुआन पस्तर, हमें हमारे योद्धाओं की ताकत के बारे में बताएँगे।' फैगुअस की आवाज शान्त होते ही, बिल्चू लोबामोस और कैफुआन पस्तर अपने–अपने स्थान से उठे और उस गोल चबूतरे पर पहुँच गए, जिस पर फैगुअस, थोरोज और सालन खड़े थे।

लोबामोस ने बोलना शुरू किया, उसकी आवाज पूरे गोल कक्ष में गूँज रही थी–'वहाँ इतनी बड़ी फौज इकट्ठा है, जिसका अनुमान लगाना भी मुश्किल है। एल्गा–गोरस की ताकतों से, वो सैकड़ों कबीलों और प्रजातियों को अपने साथ मिला चुका है, जिन्हें उसने अपने साथ मिला लिया है, उनमें हैं–कैबूनिन के जंगलों के ख़तरनाक लड़ाके, **कोहान–कोहस**, जिनकी ताकतवर मांसपेशियाँ, पत्थर से ज्यादा सख्त और जिस्म चट्टान की तरह मजबूत होते हैं। पिछले जंगल–युद्ध में, इक्कीस पेड़ों को भी चीरकर निकल जाने वाली अपनी ताकत से, उन्होंने कोहराम मचा दिया था। राक्षसों के साथ हुए युद्ध में वो अपनी उस बर्बरता के लिए कुख्यात हुए, जब उन्होंने हारे हुए राक्षसों की आँतों से, अपने लिए पोशाकें सिली थीं।

इल्वीन के पठारों से, पर्वताकार देह वाले, हिंसक **असनोच**...जिनके जिस्म किसी पहाड़ की तरह उँफचे और इतने चौड़े होते है कि दो हाथी उनके ऊपर से गुजर सकते हैं। गर्म चट्टान और जैल्कोवा की लकड़ी को मिलाकर बनाए गए, उनके भारी–भरकम मुगदर, शिलाओं तक को चकनाचूर करने की ताकत रखते हैं। उनकी साँस से हमेशा इतनी बदबू आती है कि दुश्मन ज्यादा देर तक उनके सामने टिक नहीं सकता। कहते हैं उनके पैर के तलवों पर घने बाल उगे होते हैं, अगर उनका पैर अपने किसी जख्मी साथी के खून पर पड़ जाए तो उस घायल का घाव एकदम भर जाता है। इसीलिए किसी जंग में उन्हें ज्यादा घाव नहीं लगते।

कैसी–बुगनान के मैदानों से, वीभत्स और घिनौने **वरमोस**...जिनका कमर से नीचे का हिस्सा, किसी लिजलिजे, घिनौने सपेफद गिंडार जैसा होता और ऊपर का ध्ड इंसान जैसा। वो इतनी तेजी से रेंगते हैं, जैसे कोई साँप दौड़ रहा हो। कच्चा मांस खाने वाले वरमोस, दुश्मन के ऊपर गन्दी उल्टी करने के लिए मशहूर हैं, जिसमें सैंकड़ों छोटे–छोटे अण्डे होते हैं। हवा के सम्पर्क में आते ही वो फूट जाते हैं और उनके भीतर से हज़ारों और निकल आते हैं। अपने लम्बे नाखूनों से, वो बैलीबोसिया के पेड़ को भी दो टुकड़ों में चीर सकते हैं।

नष्ट हो चुकी सभ्यता, एटनोर के खण्डहरों में रहने वाले **उजड़े–प्रेत**...जो किसी को भी छूकर, उसके जिस्म को जीते–जागते खण्डहर में तब्दील कर सकते हैं। उनका थूक अभिशापित होता है, अगर वो किसी के ऊपर थूक दें तो उस प्राणी का जिस्म गलना शुरू हो जाता है। किंवदंतियाँ हैं, उजड़े–प्रेत चमगादड़ों की बीट के सिवा और कुछ नहीं खाते, इसलिए वो सदियों से एटनोर के खण्डहरों में ही रहते हैं क्योंकि वहाँ लाखों चमगादड़ लटके रहते हैं। उनसे तो आप दो दिन पहले सैनिक–छावनी पर हुए हमले में मिल ही चुके हैं।

कल्सूस की घाटियों से, **बर्फ़ीले सर्पमानव**...जिनके काटने के बाद खून बर्फ़ के रूप में जम जाता है और दो पल में मौत हो जाती है। उनकी फुफकार में, बर्फ़ की धरदार और नोकीली किरचें निकलती हैं, जो सामने वाले प्राणी के जिस्म को तीरों की तरह बेध्कर रख देती हैं। कहा जाता है, बर्फ़ीले सर्पमानव...जिसकी आँखों में देख लेते हैं, वो फौरन बर्फ़ की शिला में बदल जाता है।

खोजार के वर्षा–वनों से, नरभक्षी **चिहानचोचस**...असीमित दुष्ट ताक़तों के मालिक। वो जिसका मांस खाते हैं, उसकी रूह उनकी गुलाम हो जाती है। कछुओं की पीठ पर सवार रहने वाला ख़ूंख़्वार क़बीला। उन्होंने ही जैल्डॉन को वो विशाल कछुआ तोहफ़े में दिया है, जिसकी पीठ पर वो बरसों से सवार है। उनके बारे में दंतकथाएँ हैं कि उनके कछुए, अपने मालिकों के लिए जान तक दे देते हैं। अगर किसी कछुए के सवार को मार दिया जाए, तो जब तक वो अपने मालिक की मौत का बदला नहीं ले लेता, तब तक हत्यारे का पीछा नहीं छोड़ता। चिहानचोचस के कछुए अपने मूत्रा से, ज़मीन को इतनी रपटीली कर देते हैं कि उनसे जंग करने वाला दुश्मन उस पर खड़ा ही न हो सके। उनके कछुओं के दाँत, हाथी की टाँग की हड्डी को भी काटकर अलग कर सकते हैं।

खूनी **डैरकोस**...जिनके बारे में कहा जाता था, वो क्रोध में जन्म लेते हैं और क्रोध में ही मरते हैं। कोई डैरकोस कभी शान्त नहीं होता, वो हर वक़्त क्रोध में होता है। पाँच साल की उम्र तक वो हर बच्चे को परखते हैं, अगर वो स्वभाव से शान्त और अमनपसन्द नज़र आता, तो मार दिया जाता। क्रोध करने के लिए किसी डैरकोस को वजह की ज़रूरत नहीं होती। वो पहले क्रोध करते हैं और बाद में वजह खोजते हैं। किसी न किसी बहाने से, वो अपने भीतर गुस्से की आग को ध्काए रखते हैं। डैरकोस का मानना है, क्रोध चरम ऊर्जा और परम सृजनात्मक शक्ति है। विध्वंस, सृजन की बुनियाद है और क्रोध विध्वंस की नींव। वो कभी भी, किसी भी बहाने से क्रोध्ति हो सकते हैं।

लोबामोस ने एक–एक करके सबकी तरफ देखा और फिर एक गहरी साँस ली। ऐसा लग रहा था जैसे उसके पास

जानकारियों का ऐसा खजाना है, जो कभी खत्म ही नहीं होगा–'...और उकोरास की काली झीलों में रहने वाले, **जल–पिशाच**...जिनकी बेहद लम्बी जीभ, झील की तलहटी पर रेंगते जल–पिस्सू तक को चाट सकती है।' लोबामोस के चुप होते ही वहाँ पैफला सन्नाटा और भी भारी हो गया।

'दुष्ट जैल्डॉन की खुफिया फौज...**फलडीसोल्स**, उनकी ताकतों के बारें में कोई नहीं जानता। बस इतना पता लग सका है कि वो जल–विद्या के ज्ञाता हैं। जल की ताकतों पर उन्होंने पूरी तरह काबू किया हुआ है। उनकी फौज किसी चलते–फिरते समन्दर की तरह है। सालों तक उसके विशाल कछुए को भी उन्होंने ज़मीन पर पैर नहीं रखने दिया। वो बस जल में ही तैरता रहा, जैल्डॉन को अपनी पीठ पर लिए हुए। हमारे भेदियों ने जानकारी दी है कि ये तीनों नौजवान और इनके साथी, फलडीसोल्स का सामना कर चुके हैं और उनकी जल–विद्या का सामना भी कर चुके हैं। इसके अलावा, निद्रा–शास्त्र के ज्ञाता प्रफोगाप्रफोस और शिला–मानवों की पूरी बस्ती अपने सरदार **बूजाचल** के साथ, उसकी तरफ हो चुकी है।' बिल्चू लोबामोस ने सबकी तरफ देखते हुए कहा।

पूरी सभा उनकी तरफ देखने लगी, उन्होंने बस सहमति में सिर हिलाया। लोबामोस ने फिर बोलना आरम्भ किया–'ये वो मुख्य ताकतें हैं, जो उसके साथ मिल गई हैं लेकिन ये तो केवल नाम की मुख्य हैं, इनके अलावा सैंकड़ों ऐसे छोटे–छोटे कबीले और योद्धा हैं, जिन्हें वो एल्गा–गोरस की ताकतों का इस्तेमाल करके काबू कर चुका है। उन लड़ाकों और उनकी ताकतों के बारे में कोई कुछ नहीं पता लगा पाया लेकिन इतना तय है, उस फौज में शामिल हर लड़ाका, अद्भुत ताकतों का मालिक है।'

'मेरे खयाल से, आप सबको अंदाजा हो गया होगा कि हमें किस दुश्मन से टकराना है लेकिन दुश्मन की ताकत को जान लेने का हमारा मकसद सिर्फ इतना है ताकि हम उसे उसी तरह की शिकस्त भेंट कर पाएँ जैसी का वो हकदार है।' बूढ़े फकीर फैगुअस की आवाज पर वहाँ मौजूद सरदारों और योद्धाओं के हुजूम ने, हुँकार भरकर अपनी सहमति दी।

'अब मैं रोशनी–पुत्रा कैफुआन पस्तर से गुजारिश करूँगा कि वो हमारे बहादुर साथियों को परिचित कराएँ उन योद्धाओं से, जो इस महायुद्ध में **गठबन्धन–सेना** की तरफ से लड़ेंगे।' फैगुअस ने पहली बार इस शब्द का इस्तेमाल किया था, इसलिए चबूतरे पर मौजूद हर किसी ने, उसकी तरफ देखा। कैफुआन पस्तर ने एक बार पूरे गोल कक्ष पर नज़र दौड़ाई और फिर एक बार छत से लटकती रोशनीदार मकड़ियों की तरफ देखा।

'साथियो, इस महायुद्ध में शामिल होने वाले सरदारों और योद्धाओं के परिचय का चरण, पूरा होने से पहले ही अधूरा रह गया। उजड़े–प्रेतों के हमले की वजह से, उस दिन केवल कुछ ही सरदारों और लड़ाकों का परिचय कराया जा सका लेकिन आज हम उन सबसे भी रू–ब–रू होंगे, जो उन सब सम्मानित सरदारों के अलावा इस जंग में भाग लेंगे, जिनका परस्पर परिचय उस दिन दिया जा चुका है।'

'सबसे पहले मैं बताना चाहता हूँ, **डैरोसा** के जंगलों से आए, **लैसनार** के बारे में। बहादुर लैसनार, हज़ारों की फ़ौज के रूप में सैनिक–छावनी का हिस्सा बन चुके हैं। लैसनार, अपनी अंतड़ियाँ, अपने मुँह से निकालकर, दुश्मन के गले में कसने के लिए बदनाम हैं। हर लैसनार के गले में आँख की पुतलियों की एक माला होती है, जो उन दुश्मनों की होती है, जिन्होंने डैरोसा के जंगलों की तरफ आँख उठाकर देखा। अपने हाथ में थमे तीखे बरछे से, लैसनार ज़मीन में छेद करके उसमें समा सकते हैं और अपने मुँह से उगली गई अंतड़ियों में कसकर, किसी भी दुश्मन को ज़मीन के भीतर खींच सकते हैं। ज़मीन के भीतर–भीतर कई कोस तक निकल सकने की ताकत रखने वाले ये बहादुर लड़ाके, अपने बरछे से दुश्मनों के तलवों को बींध डालने के लिए मशहूर हैं। हम आप सबको बता दें, लैसनार के सरदार **लैरोका**...अपने पूरे जत्थे के साथ, सैनिक–छावनी में आ चुके हैं।'

कैफुआन पस्तर की बात पूरी होते ही, सामने बैठे सरदारों में से एक उठा, उसके जिस्म पर केवल एक लकड़बग्घे की खाल बँधी थी। मुँह बहुत अजीब ढँग से चौड़ा था, चौड़े–चौड़े होठ, पैफला हुआ चेहरा, भारी–भरकम सिर और बड़ी–बड़ी गोल–गोल आँखें, जिनमें हिंसा कूट–कूटकर भरी हुई थी। उसने अपने गले में, आँख की पुतलियों की एक माला पहनी हुई थी और हाथ में एक लम्बा बरछा थामा हुआ था। उसने हल्के से सबका अभिवादन किया और अपनी जगह पर बैठ गया।

'**खल्काच** के बीहड़ों से, विशालकाय देह वाले **चल्कागा**...जिनके कन्धे पर हर वक्त एक काला कौवा बैठा रहता है। जब कोई चल्कागा जंग में उतरता है तो उसका कौवा, उसके सिर के ठीक ऊपर, आसमान में मँडराता रहता है। वो दुश्मन के ऊपर बीट करने की कोशिश करता है, जिस पर चल्कागा के काले कौवे की बीट गिर जाती है, उसके जिस्म की सारी हड्डियाँ, उसी के सीने में गठरी बन जाती हैं। मौत दो ही पल में उसे दबोच लेती है। इसके अलावा, चल्कागा लड़ाके कील–विद्या के माहिर माने जाते हैं। हर चल्कागा के हाथों में लकड़ी का एक भारी हथौड़ा और गोह के चमड़े से

बनी मशकनुमा झोली में ढेर सारी लोहे की कील होती हैं। ये पल भर में दुश्मन के पैरो में कील गाड़कर उसे जमीन पर चिपका देने में माहिर हैं। पलक झपकते, कोई चल्कागा किसी भी दुश्मन के पूरे जिस्म को अपने हथौडे की मदद से कीलों से बींध सकता है। साथियों, चल्कागा सरदार **चबला–गलच**...सैनिक–छावनी में अपने बहादुर सैनिकों की दो टुकड़ियों के साथ, दो दिन पहले ही आ चुके हैं।'

सामने बैठी सरदारों की भीड़ में से, भारी–भरकम जिस्म वाला एक सरदार उठा, जिसके कन्धे पर इस वक्त भी एक बेहद काला कौवा बैठा था, जिसकी चोंच आम कौवों से बहुत बड़ी और तीखी थी। उसने अपने जिस्म पर गोह के चमडे से बनी एक मशक लपेट रखी थी, जिसमें शायद कीलें भरी हुई थीं और हाथ में, लकडी का एक भारी हथौड़ा पकड़ा हुआ था। कैफुआन पस्तर की बात पूरी होते ही, वो अपनी जगह से उठ गया और पूरी सभा का हल्के से अभिवादन करके, अपने स्थान पर बैठ गया।

'**गस्तामाथ** की पहाड़ियों से दानवों की दुर्लभ प्रजाति **बजाइबैगा**...जिनके जिस्म हर वक्त, कढ़ाह में उबलते काढ़े की तरह फदकते रहते हैं। उनके जिस्म की रगों में बहता रक्त, हमेशा खौलता रहता है। इसी वजह से उनके रोमछिद्रों से कभी पसीना नहीं निकलता, केवल भाप निकलती रहती है। बजाइबैगा बहुत अजीब तरकीब से जंग करते हैं। हरेक बजाइबैगा की पीठ पर एक बड़ी गठरी बँधी होती है, जिसमें सोने का बारीक बुरादा भरा होता है। वो दुश्मन की आँखों में सोने का बुरादा झोंक देते हैं और फिर अपने ताकतवर बाजुओं से उसे भींचकर मार डालते हैं। हथियार के तौर पर बजाइबैगा, पत्थर की एक गदा का इस्तेमाल करते हैं, जिसमें छोटे–छोटे कांटे निकले होते हैं और गदा के भीतर हजारों टीथॉय का ज़हर भरा होता है। टीथॉय वो रेगिस्तानी कीड़ा है, जिसके भीतर सुन्न कर देने वाले ज़हर की बड़ी मात्रा होती है। बजाइ बैगा की पथरीली गदा का एक भी वार, किसी को लकवाग्रस्त बनाने के लिए काफी होता है। बजाइबैगा दानवों के सरदार **होलोगा–होला**...अपने सैंकड़ों बहादुर दानवों के साथ, सैनिक–छावनी में आ चुके हैं।'

सामने बैठे सरदारों में से एक बेहद विशाल जिस्म वाला दानव उठा, जिसका पूरा जिस्म हल्के नीले रंग का था। उसके उठने से पत्थर का वो चबूतरा भी हिल गया, जिस पर वो बैठा था। लम्बे–लम्बे ताकतवर बाजू और कमर पर बँधी एक भारी गठरी, ये इशारा कर रही थी कि उसके भीतर सोने का बुरादा भरा हुआ है। उसके हाथ में एक भारी–भरकम पथरीला मुगदर थमा था। सिर के बाल छोटे–छोटे मगर एकदम खड़े थे। दानव के पूरे जिस्म से इस वक्त भी भाप निकल रही थी, जिससे पता चल रहा था कि उसकी नसों का खून अब भी खौल रहा है। उसने एक बार पूरे गोल कक्ष की तरफ अपनी नज़र दौड़ाई और बिना अभिवादन किए अपनी जगह बैठ गया।

'**कैलीमसान** की अँधेरी गुफाओं से, रहस्यमय **सूँसलीखेड़ा**...जिनके बारे में दुनिया के बहुत कम लोग जानते हैं। सूँसलीखेड़ा अँधेरी गुफाओं को अपनी बस्ती बनाते हैं। अँधेरे में घुलने की अपनी ताकत के बल पर वो हर उस जगह पल भर में पहुँच सकते हैं, जहाँ ज़रा–सा भी अँधेरा हो। अगर उन्हें तम–पुत्रा कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। सूँसलीखेड़ा किसी भी जगह पल भर में अँध्कार पैदा कर सकते हैं। इसके अलावा वो आसमान में अँधेरे का विस्पफोट करके, किसी भी बड़े भू–भाग को, ऐसी अँधेरी रात में तब्दील कर सकते हैं, जिसमें हाथ को हाथ भी न दिखाई दे। सूँसलीखेड़ा मानते हैं कि कोई भी प्राणी केवल तब तक जीवित है, जब तक उसके जिस्म में अँधेरा मौजूद है और अगर किसी के जिस्म से सारा अँधेरा चूसा जा सके तो वो प्राणी तत्काल प्राण त्याग देगा और ऐसा करने में उन्हें महारथ हासिल है। दुश्मनों के जिस्म का सारा अँधेरा सोखकर, उन्होंने अब तक हज़ारों जंग जीती हैं। सूँसलीखेड़ा सरदार **बोरियाबिस**...अपने पूरे जत्थे के साथ दुश्मन का मुकाबला करने के लिए, हमारे बीच मौजूद हैं।'

कैफुआन पस्तर ने सामने मौजूद सरदारों की तरफ देखा, रोशनी वाली मकड़ियों की वजह से सारे गोल कक्ष में भरपूर रोशनी थी लेकिन सभागार के बीचोबीच एक ऐसी जगह भी थी, जहाँ इतनी रोशनी के बावजूद भी, एक छोटे क्षेत्रा में बिल्कुल अँधेरा था। अँधेरे के उस छोटे–से टुकड़े में कोई बैठा हुआ दिख तो रहा था लेकिन वो केवल एक परछाई जैसा ही लग रहा था। सबने देखा, अँधेरा अपनी जगह से हिला और ऐसा लगा जैसे किसी इंसान ने अँधेरे का कम्बल अपने चारों तरफ लपेट रखा हो। सबने मुड़कर उध्र देखा, सरदार बोरियाबिस का अँधेरे में डूबा जिस्म सबको दिख रहा था मगर बस ऐसा, जैसे किसी इंसानी जिस्म का प्रतिभास हो। उसने अपनी आकृति को हल्की–सी जुम्बिश दी और आहिस्ता से अपनी जगह पर बैठ गया। रोशनीदार कक्ष में अँधेरे का ये टुकड़ा, बहुत रहस्यमयी आभा अपने चारों तरफ समेटे हुए था। उसके पास बैठे कुछ सरदारों के जिस्म पर भी उस अँधेरे की परछाई पड़ रही थी।

'सुदूर पूर्व के, खण्डहर हुए पूजास्थलों में रहने वाले **अंशदेव**...माना जाता है, अंशदेव उन पूजा–स्थलों को अपना निवास बनाते हैं, जो मानवीय आकमणों, आस्थागत उपेक्षा और धर्मिक हमलों की वजह से नष्ट होने के कगार पर पहुँच

जाते हैं। जिन पूजास्थलों में सदियों से कोई दीप भी प्रज्वलित नहीं होता, उनके भीतर बैठकर, वो सदियों तक अपने आन्तरिक दीप को जलाने के लिए साधनारत रहते हैं। अंशदेव केवल उस दशा में किसी युद्ध का हिस्सा होते हैं, जब संकट पूरी धरती के लिए खड़ा हो जाए। वो मानव ही हैं लेकिन मानव की उस उच्चतर चेतना को उपलब्ध हैं, जिसकी आत्मा में देवत्व निवास करता है। अंशदेव कभी कोई अस्त्रा या शस्त्रा नहीं उठाते...वो अपनी मानसिक शक्तियों के बल पर युद्ध करते हैं। उन पर किसी भी अस्त्रा का कोई असर नहीं होता। यदि कोई उनके जिस्म पर हमला करता है, जैसे ही उसका अस्त्रा किसी अंशदेव को छुएगा, फौरन उसके मन में सघन वैराग्य जन्म ले लेगा और वो युद्ध–भूमि त्यागकर, किसी पूजास्थल की खोज में चल देगा। इस तरह अंशदेव बिना किसी पर हमला किए, किसी भी युद्ध को जीत सकते हैं। हमारे निमन्त्राण पर अंशदेवों के सबसे युवा देव...**स्वर्णात्मा** हमारे बीच हैं। अपने चवालीस साथियों के साथ, वो सैनिक–छावनी के शिविर में आ चुके हैं।'

सामने बैठे सरदारों के बीच से एक बेहद खूबसूरत नौजवान उठ खड़ा हुआ, जिसके पतले होंठों पर बारीक मुस्कराहट थी। उसका पूरा जिस्म एक हल्की–हल्की सुनहरी आभा से दमक रहा था। बलिष्ठ शरीर के साथ, उसका मन्त्रामुग्ध कर देने वाला सौन्दर्य देखकर हर कोई एकदम शान्त था। अंशदेव ने सबकी तरफ देखकर हाथ जोड़कर अभिवादन किया और फिर बहुत सादगी से उसी आसन पर बैठ गया, जिससे वो उठा था।

कैफ़ुआन पस्तर एक–एक करके सबका परिचय करता जा रहा था। तीनों भाई और सभा का हर सदस्य, उन सबके बारे में जानने के लिए उत्सुक था, जो उनके साथ इस महायुद्ध का हिस्सा होने जा रहे थे। पाँचों बूढ़े फकीर एकदम शान्त और धैर्यपूर्ण दशा में बैठे, उन सबकी तरफ देख रहे थे, जिनका परिचय दिया जा रहा था। क्रम आगे बढ़ता रहा। तीनों पूरी सभा पर अपनी दृश्टि डाल रहे थे और खड़े होने वाले हर योद्धा को देख रहे थे। उन्होंने एक बार फिर कैफ़ुआन पस्तर की तरफ देखा, जो सरदारों को सम्बोधित कर रहा था।

'साथ ही, जलपरियों की रानी **फ़रियाना** की तरफ से हमें सन्देश आया है कि उनकी एक बड़ी फौज, समन्दर की लहरों पर हमारे इशारे का इंतज़ार कर रही है। समुद्र–शास्त्रा की ज्ञाता, हज़ारों जलपरियाँ, इदिया–इमीन टापू पर नज़र भी रख रही हैं और उस संकेत की प्रतीक्षा में हैं, जो उन्हें हमारी तरफ से मिलेगा। उनके उस रहस्यमय भाले के बारे में शायद आप सभी ने सुन रखा होगा, जो समन्दर की लहरों को चीरता हुआ, तलहटी तक जा सकता है। जिसका एक ही वार, किसी भी टापू की तलहटी को हिलाकर उसे डुबाने की ताक़त रखता है। जलपरियों की राजकुमारी मकाना इस वक़्त इस सभा में मौजूद हैं और यहाँ होने वाली हर बात को सुन रही हैं। चूँकि किसी ख़ास वजह से वो अभी बाहर नहीं आ सकती, इसलिए वो सौ–परत–वाले–जलपोत के भीतर से ही यहाँ जलपरियों का प्रतिनिध्वि कर रही हैं। शायद आप सबको न मालूम हो मगर वो जलपोत इस वक़्त, सुनहरे बदन वाले इस योद्धा मकास की झोली में मौजूद है।'

हर कोई नज़र मकास की तरफ उठ गई। वो खुद भी इस बारे में लगभग भूल ही गया था। कैफ़ुआन पस्तर के कहने से उसे याद आया मकाना अभी सौ परत वाले उस जलपोत में थी और वो छोटा–सा जलपोत इस वक़्त मकास की झोली में ही था। न चाहते हुए भी उसका हाथ झोली के भीतर रेंग गया। उसकी उँगलियाँ, उस छोटे जलपोत से टकराईं, ऐसा लगा जैसे वो मकाना को सन्देश देना चाहता हो कि–'हम तुम्हें महसूस कर सकते हैं।'

'थोरोज़ की पहाड़ी से, **हिममानव यति** और **मणिध्र सर्प** भी इस जंग में हिस्सा लेंगे। हिममानव यति की रहस्यमयी शक्तियों के बारे में ये दुनिया बहुत कम जानती है मगर वो पहाड़ों को भी चूर–चूर करने की ताकत रखते हैं। उनके बालोंदार जिस्म पर आसानी से किसी अस्त्रा का असर नहीं होता। अपने विशाल जिस्म की ताक़त का इस्तेमाल करके किसी वज़नी चिल्टाचिलोंग को भी उठाकर आकाश में पेंफक सकते हैं। उनकी मानसिक शक्तियाँ, बर्फ के पहाड़ों को भी पल भर में पिघला सकती हैं। अपने मित्रा मणिध्र सर्प के साथ वो इस जंग में हिस्सा लेंगे। मणिध्र सर्प के बारे में मैं आपको बता दूँ, केवल सुदूर पूर्व के जंगलों में मणिध्र सर्प पाए जाते हैं। करोड़ों में कोई एक सर्प मणिवाला होता है, जो अपनी इच्छानुसार देह परिवर्तित कर सकता है। कोई भी मणिध्र सर्प, हज़ारों शक्तिशाली नागों और सर्पों की हर प्रजाति पर भारी पड़ सकता है। उनकी रहस्यमयी शक्तियाँ किसी भी जंग का नक़्शा पल भर में बदल सकती हैं।'

हर किसी ने चारों तरफ देखा मगर उन्हें न तो कहीं हिममानव यति नज़र आया और न ही मणिध्र सर्प। कैफ़ुआन पस्तर ने गोल कक्ष के सबसे पीछे वाले हिस्से की तरफ संकेत करते हुए कहा–'वो दोनों आप सब सरदारों और योद्धाओं के पीछे मौजूद हैं।'

हर किसी ने पलटकर देखा, जो लोग सामने खड़े थे, वो तो पहले से ही उस तरफ देख रहे थे। कक्ष के सबसे पीछे, जहाँ पत्थर के चबूतरे खत्म हो रहे थे, वहाँ दूध जैसे सपेफद जिस्म वाला, विशाल यति बैठा हुआ था। उसका आकार इतना

बड़ा था कि छत से लटकती रोशनी वाली मकड़ियों को छूता हुआ महसूस हो रहा था। लम्बे-लम्बे सफेद बालों वाला उसका जिस्म, हल्की नीली रोशनी में एक अजीब-सी दिव्यता का अहसास करा रहा था।

'...और मणिध्र सर्प को आप अपने ऊपर देख सकते हैं।' कैफूआन पस्तर ने छत से लटकती रोशनी वाली मकड़ियों की तरफ देखते हुए कहा। हर किसी की नज़र ऊपर छत की तरफ उठ गई। छत से हज़ारों मकड़ियाँ, अपने रेशमी धगों से लटकी हुई थीं। कुछ छत पर रेंग रही थी, उनके बीच एक बेहद विशाल सर्प सरक रहा था, जिसकी लम्बाई और मोटाई देखकर बहुत सारे सरदारों ने मुँह पर हाथ रख लिया। उसके चौड़े फन के ऊपर एक तेज़ रोशनी थी, जो यकीनन उस मणि की थी, जो उसके फन पर चिपकी हुई थी। एक तेज फुफकार की आवाज हर किसी ने सुनी जैसे मणिध्र सर्प अपनी स्वीकृति दे रहा हो।

पूरी सभा में जोश और भरोसा तैरने लगा। हर आँख, विश्वास और ऊर्जा से भरी थी। इस जंग में हिस्सा लेने के लिए, पूरी दुनिया से 'वो' ताकतें वहाँ इकट्ठा हुई, जो जंग की विभीजिका से भली तरह परिचित थीं लेकिन जंग की ढीठता भी अपने चरम पर दिख रही थी। उनमें से बहुत से ऐसे थे, जो एक-दूसरे से पूर्व परिचित थे और बहुत से ऐसे, जो किसी को नहीं जानते थे, सालन, थोरोज और उन बूढ़े फकीरों के सिवाय, जिनके निमन्त्राण पर वो वहाँ आए थे।

उस रात योद्धाओं के परिचय का ये सिलसिला सुबह तक चलता रहा। थोरोज़ की पहाड़ी के गर्भ में स्थित उस गोल कक्ष ने, उस रात उन ताकतों को अपने भीतर समेट रखा था, जो आने वाले वक्त में पूरी धरती की तकदीर का फ़ैसला करने वाली थीं। बिल्चू लोबामोस, जो अब तक कुछ डरा-डरा लग रहा था, अब काफी निश्चिन्त नज़र आ रहा था। ऐसा लग रहा था, जो कुछ वो देखकर आया था, उसका भय, इन योद्धाओं को देखकर कम हो गया। वो रात बहुत जल्दी गुज़री, परिचय के इस दौर में किसी को ये पता नहीं चला, कब सुबह का सूरज, आसमान पर लाली बिखेरने लगा।

लाल रंग आसमान पर भी फैला था और ज़मीन पर भी फैलने वाला था मगर दोनों रंगों में वाक़ई 'ज़मीन-आसमान' का फ़र्क था। मेरी बूढ़ी उँगलियाँ, इस दास्तान के उस हिस्से को खोदने जा रही हैं, जो ज़मीन को रक्त से लाल करने की तैयारियों की तरफ ले जा रहा है। उस विशाल सेना का वो 'कूच' जिसने ज़मीन पर मौजूद, हर ज़िन्दगी के महत्त्व को समझा और उसकी हिफ़ाज़त के लिए रवाना हुए।

कूच

अध्याय छब्बीस

छद्मावरण वाले योद्धाओं से लेकर, मोर्चाबन्दी और व्यूहरचना तक सब तैयारियाँ और योजनाएँ पूरी हो चुकी थीं। इन तीन दिनों में मकास को पर्सीना केवल एक बार मिल सकी, वो भी बस चलते–चलते। दो पल की इस मुलाकात में पर्सीना ने महज़ इतना कहा–'मैं 'तुम्हारी' प्रतीक्षा कर रही थी और जंग 'हम दोनों' की।'

जलपरियों की रानी फ़रियाना की तरफ़ से सन्देश आया कि दुष्ट जैल्डॉन की पूरी सेना कूच के लिए तैयार है। समुद्र के सीने पर हलचल बढ़ गई है। सैनिक–छावनी में इस सन्देश के पहुँचते ही गहमागहमी और तेज़ हो गई। जंग के लिए तीन मोर्चे तैयार किए गए थे। तीनों मोर्चों के लिए बस सेनापतियों का चयन होना बाकी था।

थोरोज़ ने सैनिक–छावनी के सब लड़ाकों और महासभा के सदस्यों को मैदान में इकट्ठा होने के लिए कहा। वो लोग अब तक केवल पहाड़ी के गर्भ में बने उस गोल कक्ष में ही गए थे, जो बाहर से दिखाई नहीं देता था। उस जगह बस हमेशा एक हल्का कोहरा ही दिखता। थोरोज़ की कछुए जैसी छोटी–छोटी आँखें, ऊपर आसमान की तरफ़ देख रही थीं और आहिस्ता–आहिस्ता कोहरे के आग़ोश में से वो विशाल पहाड़ी निकलकर बाहर आती जा रही थी। जैसे–जैसे कोहरा कम होता जा रहा था, वैसे–वैसे पहाड़ी का आकार बाहर निकलता जा रहा था।

थोरोज़ की पहाडी अदश्श्य थी लेकिन सदियों में पहली बार समय की आँखों ने ये दश्श्य देखा, जब वक़्त की धुँध में लिपटी वो विशाल पहाड़ी नुमायां होती जा रही थी। उसकी ऊँचाई और विशाल आकार देखकर सबकी आँखें हैरत से फटी जा रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे पहाड़ी का आख़िरी सिरा ऊपर आकाश में समाया हुआ है। कुछ ही पलों में पहाड़ी पूरी तरह प्रकट हो गई। देखने वाली हर आँख जैसे जड़ हो गई थी। पहाड़ी के चारों तरफ़, कुछ परछाइयाँ तैर रही थीं, वो क्या थीं, ये तो साफ़ नहीं हो पा रहा था क्योंकि वो इतनी उँफचाई पर थीं कि उनका सही रूप देख पाना मुश्किल था लेकिन ये पता चल रहा था कि कुछ परछाइयाँ निरन्तर पहाड़ी की परिक्रमा कर रही हैं।

'ओह देवता...' पहाड़ी की विशालता देखकर जाने कितने मुँह से केवल यही शब्द निकला। विशाल चट्टानों में बड़े–बड़े पेड़ और झाड़ियाँ उगी हुई थीं, जो पहाड़ी की उँफचाई तक जा रही थीं। लाखों सैनिकों और योद्धाओं की आँखों में इस वक़्त वही सम्मोहक दश्श्य समाया हुआ था।

'अब इसको अदश्श्य रखने की आवश्यकता नहीं है। हम दुश्मन को यह सन्देश नहीं देंगे कि हम उससे छिपे हुए हैं।' थोरोज़ की बारीक़ आवाज़ ने सबकी तन्द्रा भंग की। उनकी कमर का कवच अब लगभग पूरी तरह बनकर तैयार हो गया था और अब वो पहले की ही तरह स्वस्थ नज़र आ रहे थे।

'उसे मालूम है कि हमने यहाँ सैनिक–शिविर स्थापित किया है। उसे इस पहाडी की मौजूदगी का भी पता है, हम उस पर सामने से वार करेंगे।' सालन ने सहमति में अपना सिर हिलाते हुए कहा।

'जलपरियों की रानी फ़रियाना की तरफ़ से आया सन्देश बता रहा है कि दुश्मन वूफच का नगाड़ा बजा रहा है। हमें अपनी रणनीति पर अमल शुरू कर देना चाहिए।' बूढ़े फ़क़ीर फैगुअस ने लकड़ी के अपने डण्डे को मुट्ठी में कसकर भींचते हुए कहा।

बिल्चुओं के सरदार सैल्गासीड ने सन्देश भिजवाया, सबसे शातिर भेदिया लोबामोस, कोई ज़रूरी ख़बर लेकर आया है। ख़बर इतनी हैरतअंगेज़ थी, जिसने सबकी चिन्ताएँ बढ़ा दीं।

उसने बताया, शातिर लैनीगल को मालूम हो गया कि जलपरियों की रानी फ़रियाना उनकी निगरानी करा रही है। जलपरियों को धेखा देने के लिए, उसने ऐसा बन्दोबस्त किया कि इदिया–इमीन टापू पर हलचल महसूस होती रहे, जबकि

उसकी चार बड़ी सेनाएँ, गुपचुप तरीवेफ से समन्दर किनारे पहुँच गई हैं और बाकी फौज भी वूफच कर चुकी है।

'वो हमें धेखे में रखकर हमला करना चाहता है।' लोबामोस ने दुनिया के सबसे बुजुर्ग–शिशु की आँखों में आँखें डालते हुए कहा।

'वो ऐसा नहीं कर पाएगा।' सालन के चेहरे पर सख़्ती के भाव थे। 'वो पूरी सेना यहाँ पहुँचने से पहले हमला नहीं करेगा। चार बडी टुकड़ियाँ भेजने के पीछे उसका मक़सद, पीछे आनी वाली सेना के लिए तैयारियाँ करना है ताकि उस विशाल फौज को किनारे पर पहुँचकर पड़ाव डालने में असुविध न हो। उसकी बाक़ी सेना भी वूफच कर चुकी है। हम अगर कल सुबह यहाँ से रवाना होते हैं और वो भी अपनी रफ़्तार से चलता है तो चार दिन बाद, **बल्टान** के विशाल मैदान में दोनों सेनाएँ एक–दूसरे के सामने होंगी।'

'हम सुबह यहाँ से वूफच करेंगें।' थोरोज की आवाज में फैसला झलक रहा था।

'आप...यहीं ठहरेंगे, इस जंग के लिए हम ही काफी से अधिक हैं महान थोरोज।' मकास ने अपनी जगह से एक क़दम आगे बढ़ते हुए कहा।

'नहीं, मेरे बच्चो, अभी मैं इतना उम्रदराज़ भी नहीं हुआ कि मुझे जंग के वक़्त में आराम करना पडे। मुझे साथ चलना ही होगा।' उनकी आवाज़ में एक रहस्यमयी निर्णायकता थी।

'मगर इस तरह पहाड़ी को अकेला छोड़कर...' सलार ने उनकी तरफ़ सवालिया नज़रों से देखा।

'पहाडी सुरक्षित रहेगी। हमारी मर्ज़ी के बिना कोई इस पर पैर भी नहीं रख सकता। उसकी हिफ़ाज़त के लिए बहुत–सी ताकतें हर वक़्त पहरा दे रही हैं।' थोरोज़ ने ऊपर पहाड़ी के शिखर की तरफ देखते हुए कहा, जहाँ अब भी हवा में बहुत सारी परछाइयाँ तैर रही थीं। उनका काला रंग और अजीब आकृति, सब कुछ बहुत रहस्यमय था लेकिन वो कौन थे, ये थोरोज़ ने किसी को नहीं बताया।

अगली सुबह सैनिक–छावनी में भारी हलचल थी। सूरज निकलने से पहले ही, पूरी सेना कूच के लिए तैयार थी। दूर–दूर तक, जहाँ तक नज़र जा रही थी, योद्धा ही योद्धा नज़र आ रहे थे। भारी शोर–शराबे के बीच, उन्होंने थोरोज़ की पहाड़ी के उस मैदान से कूच किया। इतनी विशाल फ़ौज और ऐसे जांबाज़ लड़ाके, शायद ज़मीन पर कभी एक साथ इकट्ठा नहीं हुए थे। योद्धाओं के उस जमावड़े का आख़िरी सिरा देखने में, दश्ष्टि असहाय दिख रही थी।

वो सब आगे बढ़े। एक साथ लाखों क़दमों की आवाज़ और उनसे उठने वाली गर्द ने, ज़मीन का आँचल छोड़कर, आसमान की तरफ़ बढ़ना शुरू कर दिया। कुछ ही पलों में धूल का वो गुबार, इतना ऊपर उठ गया कि कोसों दूर से उसे देखा जा सकता था। वो हर कोई उस सेना का हिस्सा था, जो इस दास्तान की पोशाक में रेशों के रूप में बुना हुआ था।

वो आगे बढ़ते रहे, उन ख़बरों के बीच, जो ये बता रही थीं कि जैल्डॉन की फ़ौज अब समन्दर किनारे उतर चुकी है और अब आगे रवाना हो चुकी है। उन ख़बरों के बीच, जो ये बता रही थीं कि इतनी विशाल और दुर्दान्त फ़ौज, इस ज़मीन पर पहले कभी नहीं देखी गई। ख़बर लाने वाले बिल्चुओं के पीले चेहरे इस बात की गवाही दे रहे थे कि जो कुछ वो देखकर आ रहे हैं, वो उनकी रूह की सारी हिम्मत, निचोड़ ले रहा है मगर बिल्चू कोई योद्धा नहीं थे। वो केवल हुनरमन्द भेदिये थे, जो अपने काम को बख़ूबी अंजाम दे रहे थे। असली लड़ाकों के पैर तो उस हर भय के फन पर अपनी एड़ी मसल रहे थे, जो छुपकर उन्हें देख रहा था।

तीन दिन तक चलते रहने और छोटे–छोटे विश्राम–स्थलों के बाद, वो बल्टान के मैदान से बस एक दिन की दूरी पर थे।

लोबामोस ने ख़बर दी, 'जैल्डॉन की फ़ौज भी लगातार उनकी तरफ़ वूफच कर रही है मगर वे बल्टान के मैदान से दो दिन की दूरी पर है। उसकी फौज के रास्ते में जो भी चीज़ आ रही है, वो उसे नेस्तनाबूद करते जा रहे हैं। रास्ते में पड़ने वाले ज्यादातर क़बीले अपनी ज़मीन छोड़कर गहरे जंगलों की तरफ़ निकल गए हैं या फिर गुप्त गुफाओं में छुपे हुए हैं।'

उसने ये भी ख़बर दी, 'उसकी सेना, पेड़–पौधों और फ़सलों तक को नष्ट करती हुई आगे बढ़ रही है। जहाँ–जहाँ से वो गुज़र रहा है, अपने पीछे केवल तबाही और विनाश छोड़ता जा रहा है। ऐसे ख़ूंख़्वार जीव, ऐसे हिंसक लड़ाके और प्रजातियाँ कभी उन आँखों ने नहीं देखीं, जो छुपकर उस सेना की निगरानी कर रही हैं। उसने बताया, 'शातिर लैनीगल सेना के साथ है। वो हर पल अपनी सेना को और ज़्यादा तबाही और ज़्यादा विनाश का पाठ पढ़ा रहा है।'

लोबामोस भयभीत था मगर उसकी ख़बर पाकर पूरी सेना में जैसे जोश की लहर दौड़ गई। योद्धाओं की भुजाएँ जैसे फड़कने लगीं। क्रोध और उत्साह हर तरफ़ की हवा में घुल गए। फिर वो वक़्त भी आया, जब मित्रा–सेना, बल्टान के

विशाल मैदान पर पहुँच गई। जमीन का सबसे बड़ा मैदान, जिसके विस्तार और विशालता को देखकर, हैरत भी दाँतों तले उँगली दबा ले। दूर–दूर तक सूखी घास और समतल ज़मीन। पता नहीं कहाँ तक पैफला था वो, नजर तो जहाँ तक देख सकती थी, वहाँ तक उस मैदान का कोई सिरा नहीं दिख रहा था।

एक और खबर आई, जिसने ये बताया कि कल सुबह दिन निकलने तक, जैल्डॉन की सेना, बल्टान के मैदान पर कदम रख देगी। दूर, आसमान तक जाती गर्द ये बता रही थी कि वो लगातार आगे बढ़ रहा है। उनके पास जंग की आखिरी रणनीति और बचीखुची तैयारी के लिए बहुत थोड़ा वक्त बाकी था। मित्रा–सेना मैदान के एक छोर पर रुकी और दूसरी तरफ से आगे बढ़ती धूल का इंतज़ार किया।

उस रात सेना के तीन मोर्चे तय हुए, *दाहिनी* तरफ का मोर्चा, *बाँई* तरफ का मोर्चा और *सामने* वाला मोर्चा। तीनों मोर्चे, तीनों भाइयों को सौंपे गए। मकास सामने, जरूस दाहिनी तरफ और सलार बाँई तरफ की सेना का नेतत्त्व कर रहा था। सालन ने खास हिदायत देकर, वो खास सुराही जरूस को सौंपी और जरूस की हिफाज़त का जिम्मा, सुदूर पूर्व के खण्डहर हुए पूजास्थलों से आए चवालीस अशदेवों को सौंपा ताकि उस पर हुए किसी भी हमले से वो हिफाजत कर सकें।

शिविर में इस वक़्त केवल तीनों भाई थे। मोटे कपड़े की छत पर रेंगते रोशनी वाले कीड़े, हल्की–हल्की रोशनी दे रहे थे।

'जंग बहुत पास है। सुबह तक जैल्डॉन की भयानक सेना, यहाँ पहुँच जाएगी। क्या दुनिया इस ख़तरे से उबर पाएगी?' मकास के माथे पर चिन्ता की लकीरें थीं।

'जंग कभी दूर नहीं होती...वो हमेशा बहुत पास होती है। बस उसके ऊपर ढँका कपड़ा उघाड़ने की देर होती है। दुनिया इस ख़तरे में डूबी है मगर मुझे विश्वास है, काली ताक़तें कभी इतनी ताक़तवर नहीं हो सकतीं कि रोशनी को समूचा निगल जाएँ।' जरूस ने एक गहरी साँस के साथ उसकी तरफ़ देखा।

'ये सब कुछ हमारे जन्म से भी पहले योजनाबद्ध किया जा रहा था लेकिन इसका अहसास भी कितनी देर बाद हो पाया। हमारे सफर की शुरुआत में, जब बर्फ की नदी के नीचे उड़ते जल–गरुड़ को, तुमने देखा था, उस वक्त कहीं ये गुमान भी नही था कि वो हमारा आगा क्यों कर रहा है। उसके बाद मत्स्य–नाग, ग़ायब–गिद्ध और वो सारी चीज़ें, जो एक–एक कड़ी की तरह जुड़ती चली गईं। हम पहले दिन से ही इस षड़यन्त्रा का हिस्सा थे।' सलार ने छत पर लटकते एक कीड़े की तरफ़ देखते हुए कहा।

'सालन का कहना है कि हमारे पिता पंगु–शाप से थोड़ा उबर तो चुके हैं लेकिन वो अब भी पूरी तरह बेबस और लाचार होकर बिस्तर पर लेटे हुए हैं। उनका ये भी कहना है कि 'ये' पानी, शातिर लैनीगल को तो उसके शाप से मुक्त करा ही सकता है, साथ ही हमारे पिता को भी पंगु–शाप से ये ही मुक्त कराएगा। यही पानी दुष्ट जैल्डॉन को उस शर्तिया–मौत से बचाएगा, जो उसने अनजाने में ही चुन ली। उसे एल्मा–गोरस को धेख़े से हासिल करने का हक़ नहीं था, किताब को पूरा करने से पहले उसे ये भी मालूम नहीं था कि अगर कोई व्यक्ति धेख़े से उसे पूरा करेगा तो अंतिम पश्ष्ठ पूरा करने के बाद, एक शर्तिया–मौत उसकी तरफ़ बढ़ने लगेगी। ये रहस्य पता चलने के बाद उसने इस पानी को पाने के लिए ये सब योजना रची लेकिन अगर एक शर्तिया–मौत उसका इंतज़ार कर रही थी तो वो अब तक मरा क्यों नहीं?' मकास की आवाज़ में एक साथ जैसे कई प्रश्न खड़े हो गए।

'इस सवाल का जवाब तो शायद सालन या थोरोज़ ही दे सकें।' जरूस ने उनकी तरफ़ देखा। 'इस पानी को केवल हम ही उस गुफा से बाहर ला सकते थे, हमारे अलावा अगर किसी और ने ऐसा करने की कोशिश की होती तो वो इसे हासिल नहीं कर पाता। इसीलिए गुफा से ये पानी बाहर आते ही उसने हम पर हमला करवाया, पहले वो शातिर लैनीगल और फिर वो ख़तरनाक फ़लडीसोल्स...'

'सालन ने बताया कि वो पानी के साथ–साथ, हम तीनों को भी अपने क़ब्ज़े में लेना चाहता है। उसे तीन ऐसे जिस्म चाहिएँ, जो जिस्मानी और रूहानी कीमिया से गुज़र चुके हों। शायद इसीलिए उन्होंने हम तीनों को अलग–अलग मोर्चों पर मौजूद रहना तय किया है।' मकास ने आहिस्ता से कहा।

'ये जंग कभी भी केवल हमारी नहीं थी। उन महत्त्वाकांक्षाओं और ताक़त की भूख ने इसे शायद बरसों पहले रच दिया था, जिन्होंने दुष्ट जैल्डॉन को वो रहस्यमयी किताब चुराने और उसके रखवालों की हत्या करने के लिए उकसाया। वो पूरी दुनिया पर क़ब्ज़ा करना चाहता है। उसकी फ़ौज अपने आख़िरी हमले के लिए निकल चुकी है, हम उसे रोकेंगे, उसके वजूद को नेस्तनाबूद करने के लिए हमें उसका सामना करना ही होगा। शायद सालन सही कहते हैं, अगर उसे नहीं रोका गया तो केवल हमारा गाँव ही नहीं, दुनिया की कोई भी बस्ती, कोई क़बीला या कोई गाँव सलामत नहीं रहेगा।' सलार की

आवाज़ में जैसे समन्दर जैसी गहराई उतर आई थी।

'हो सकता है इस जंग के बाद, हम में से कोई भी न बचे, या हो सकता है कुछ लोग बचे रह जाएँ, जो भी हो, जैल्डॉन की शिकस्त ही पूरी ज़मीन की फ़तह है और उसकी जीत, सारी धरती की पराजय।' जरूस ने अपनी जगह से उठकर चहलकदमी करते हुए कहा।

'क्या तुमने सितारों से बातें की?' मकास की आवाज़ में एक जिज्ञासा थी।

'नहीं...' जरूस की आवाज़ में सख़्ती का पुट था। **'असली भविष्य वो नहीं होता, जिसकी संभावनाएँ, भाविष्यवाणियाँ तय करती हैं, बल्कि हमारे वर्तमान का हर पल, भविष्य के पल का जन्मदाता होता है। भविष्य, वर्तमान में किए गए चुनावों और पैफसलों के गर्भ से जन्म लेता है, ये कभी भी इतना सख़्त और जड़ नहीं होता कि इसकी भविष्यवाणी की जा सके।'**

'शायद तुम सही कहते हो नौजवान।' इस नई आवाज़ ने एक बार तीनों को चौंका दिया। ये फैगुअस था। शिविर का कपड़े का पर्दा हटाकर वो आहिस्ता से भीतर दाख़िल हुआ, उसके हाथ में पकड़ा लकड़ी का डण्डा शायद ओस में भीगा हुआ था।

'वर्तमान के आख़िरी सिरे पर भविष्य पैदा होता है और इस आख़िरी सिरे को मनचाहा रूप देने की आषादी, कभी–कभी हमारे हाथों में होती है और कभी–कभी इसे दूसरी घटनाएँ तय करती हैं लेकिन वक़्त की पैमाइश, अच्छे–बुरे पैमाने से नहीं हो सकती। वो बस है...उस पर पोता गया कोई भी रंग, उसके चेहरे की सतह के ऊपर चढ़ा 'रंग मात्रा' ही होगा, वक़्त की ख़ाल तब भी उससे अनछुई रह जाती है।' फैगुअस ने शिविर के बीचोबीच रुकते हुए कहा।

'ये जंग, अब बहुत दूर नहीं है। काली ताक़तें और भी ज़्यादा स्याह हो चुकी हैं। क्या तुम इस महायुद्ध के लिए पूरी तरह तैयार हो? फैगुअस की आवाज़ में उत्सुकता ज़्यादा और सवाल कम था।

तीनों ने एक बार ख़ामोशी से उसकी तरफ़ देखा। मकास ने आहिस्ता से खँखारकर अपना गला साफ़ किया–'क्या ये सवाल किया जाना वाकई ज़रूरी था?

'हाँ, शायद यही सही वक़्त है, जब ये सवाल किया जाना चाहिए था।'

'लेकिन हमें ऐसा नहीं लगता, शायद हम इस युद्ध के लिए तब से तैयार हैं, जब हमारा जन्म भी नहीं हुआ था। सही शब्दों में कहूँ तो ये 'तैयारी' की बात नहीं, जंग का हिस्सा होने की बात है। आप ही ने हमसे कहा था–'जंग कभी नहीं मरती, केवल योद्धा मरते हैं। वो समय कभी नहीं था, जब इस षमीन पर युद्ध नहीं था। वो वक़्त भी कभी नहीं होगा, जब इस षमीन पर युद्ध नहीं होगा। ये हमेशा मौजूद रहता है, किसी न किसी रूप में। हम इस जंग का हिस्सा हैं और ये सत्य है।' मकास ने अपनी जगह से बिना हिले–डुले कहा।

'अपने पिता को दिया क़ौल, हम उसी वक़्त पूरा कर चुके थे, जब हमने वो पानी हासिल किया, जिसके लिए हमारे क़दम, जंगल में बसे उस छोटे–से गाँव की सीमा से बाहर निकले थे।' जरूस की आवाज़ में एक निर्णायकता झलक रही थी।

'तो फिर शायद वो वक़्त भी आ गया है, जब मैं तुम्हे ये बता सकूँ कि जिस्मानी और रूहानी कीमिया से गुज़रना किसलिए ख़ास है?' बूढ़े फ़कीर ने जैसे एक बार फिर रहस्य का लबादा ओढ़ लिया।

'आपका मतलब किस बात से है?' सलार ने अपने माथे पर उभर आई सलवटों को खोलने की कोशिश करते हुए कहा।

'उसी बात से, जिसको जानना तुम्हारें लिए उतना ही ज़रूरी है, जितना ये जानना था कि तुम्हारे जन्म से भी पहले इस जंग की पटकथा लिखी जा चुकी थी। तुम्हें उन महान गुरुओं तक पहुँचाने की वो ख़ास वजह...जिसने लैनीगल को तुम्हारे पिता के पास भेजा, शायद अब ये बात तुम्हें जान लेनी चहिए।' फ़ैगुअस ने अपनी बड़ी–बड़ी सपेफद पलकें झपकाते हुए कहा।

'ह...हम समझे नहीं?' तीनों के मुँह से जैसे एक साथ निकला।

'हाँ, ये ख़ास बात तुम्हें ज़रूर जान लेनी चाहिए।' फ़ैगुअस ने तीनों की तरफ़ भेदने वाली नज़र से देखते हुए कहा। उनकी उत्सुकता और सवाल कसमसाने लगे।

बूढ़ा फ़कीर पल भर को साँस लेने के लिए रुका और फिर बोला, 'सैंकड़ों सालों से एल्गा–गोरस की कोई ख़बर कहीं नहीं थी, हर कोई जब निश्चिंत हो गया कि अब कहीं से ऐसी कोई ख़बर नहीं आएगी, उस वक़्त उसने ख़ुद सामने न

आकर, लैनीगल को तुम्हारे गाँव भेजा ताकि तुम्हारे पिता को सहमत करके, तुम्हें उन तीन गुरुओं के पास भेजा जा सके, जिनके पास तुम्हें जिस्मानी और रूहानी–कीमिया से गुजरना था। एल्गा–गोरस को पूरा करने की शर्त में एक ये भी उपाय किया गया था कि बिना अनुमति के उसे केवल वो पूरा कर सकता है, जो जिस्मानी और रूहानी–कीमिया से गुज़रा हो। वो तुम तीनों के जिस्म हासिल करना चाहता है। तुम तीनों के जिस्मों को संयुक्त करके, वो उन पर क़ब्ज़ा करने की जुगत में है ताकि उसकी आत्मा, तुम्हारी 'संयुक्त–देह' में निवास कर सके। वो ख़ास पानी उसे शाश्वत–जीवन प्रदान करेगा और एल्गा–गोरस अनन्त शक्ति देगी। उसके बाद उसकी असीम शक्तियों का मुकाबला इस ज़मीन पर कोई नहीं कर पाएगा।'

तीनों अपलक बूढ़े फ़कीर की बात सुन रहे थे। उसने फिर बोलना आरम्भ किया–'इस जंग में तुम तीनों की हिफ़ाज़त उतनी ही ज़रूरी है, जितना उस ख़ास पानी की।'

'हमें अपनी सुरक्षा की फिक्र नहीं है। इस जंग के आख़िरी पृष्ठ पर हमें हस्ताक्षर करने हैं और उस पन्ने पर जैल्डॉन की मौत का ज़िक्र होगा।' सलार की आवाज़ में एक अजीब ठहराव था।

'दूर से आती भारी कदमों की आवाज़ तुम सुन सकते हो। वो अब ज़्यादा दूर नहीं है। सूरज की गर्मी, ओस की बूँदों को सुखा पाए, इससे पहले वो बल्टान के मैदान में होगा। अब मुझे चलना चाहिए नौजवानो! आज के लिए इतनी ही बातचीत काफ़ी है।' अपनी बात पूरी करके वो तेज़ी से शिविर से बाहर चला गया।

अपनी गुफा से मैं बहुत कम बाहर जाता हूँ। कई बार सूखी लकड़ियाँ और जलावन लेने के लिए मुझे निकलना पड़ता है। कभी–कभी उन फलों की तलाश में, जिन्हें मैं 'जीवन–फल' कहता हूँ। वैसे उस फल का नाम *एम्ब्रॉटस* है। उसे खाकर कई महीनों के लिए, भूख गायब हो जाती है। जब मैं एम्ब्रॉटस के पेड़ के समाने खड़ा होता हूँ तो मुझे लगता है जैसे इस जीवन–युद्ध में, वो मेरी बहुत बड़ी ताकत है।

युद्ध अपनी पुकार को और ज़्यादा तेज़ कर रहा था। मैं उस मोम के चौखटे को बहुत देर से निहार रहा हूँ, जिस पर चाँदी की गरम सलाइयों से उकेरा गया है 'वो पल' जब दोनों सेनाएँ, एक–दूसरे के आमने–सामने थीं। मैं हर सीने में नगाड़े की तरह बजती, धड़कनों को महसूस कर सकता हूँ। बल्टान के उस मैदान में, जहाँ अपने वक्त का सबसे ख़ौफ़नाक युद्ध, दोनों सेनाओं का इंतज़ार कर रहा था।

आमने-सामने

अध्याय सत्ताईस

अगले दिन, धूप के साथ-साथ आसमान छूती गर्द भी, बल्टान के मैदान की तरफ बढ़ रही थी। दूर क्षितिज पर एक लम्बी, काली रेखा, किसी स्याह नाग की तरह दिख रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे धरती और आकाश के मिलन-बिन्दु पर एक लम्बी, काली लकीर खींच दी गई हो। ये जैल्डॉन की सेना थी, खूंख्वार, हिंसक, वहशी और रक्त-पिपासु लड़ाकों की सेना। मित्रा-सेना का हर योद्धा, पूरी तरह तैयार होकर मैदान पर था। पाँचों बूढ़े फकीर और थोरोज सामने वाले मोर्चे पर मकास के साथ थे। दाहिनी तरफ वाले मोर्च पर जरूस के साथ चवालीस अंशदेवों की टुकड़ी, हिम-मानव यति, मणिध्र सर्प और सालन खुद थे। बाँई तरफ सलार के साथ कैफुआन पस्तर, जिल्चोकाट और उसके साथी वृक्षमानव, वुन्टनब्रॉस, हैबूला और हूनास्पॉटी थे।

अपनी अंतड़ियाँ, मुँह से निकालकर, दुश्मन के गले में कसने के लिए बदनाम, डैरोसा के जंगलों से आए, बहादुर लैसनार की हजारों की फौज, अपने सरदार, लैरोका के साथ एक क़तार में सामने खड़ी थी। उनके बगल में, खल्काच के बीहड़ों से आए, विशालकाय देह वाले चल्कागा थे...जिनके हर लड़ाके के कन्धे पर इस वक़्त भी एक काला कौवा बैठा था कील-विद्या के माहिर, हर चल्कागा के हाथों में लकड़ी का एक भारी हथौड़ा कसा था और पीठ पर गोह के चमडे से बनी मशकनुमा झोली, जिसमें लोहे की कीलें भरी थीं। चल्कागा सरदार चबला-गलच...अपने बहादुर सैनिकों की दो टुकड़ियों के साथ, बार-बार लकड़ी के भारी हथौड़े को मुट्ठी में भींच रहा था।

चबला-गलच के दाहिनी तरफ, बजाइबैगा दानवों का सरदार होलोगा-होला, अपने साथियों के साथ था। गस्तामाथ की पहाड़ियों के दानवों की दुर्लभ प्रजाति...उनके जिस्म इस वक़्त भी कढ़ाह में फदकते काढ़े की तरह खौल रहे थे। उनकी पीठ पर वो भरी गठरी बँधी थी, जिसमें दुश्मन की आँखों में झोंकने के लिए सोने का बुरादा भरा था। हाथ में पत्थर की वो भारी गदा, जिसके छोटे-छोटे काँटों में, हज़ारों टीथॉय का ज़हर भरा था। बजाइबैगा सरदार होलोगा-होला और उसके साथियों के जिस्म से इस वक़्त भी भाप निकल रही थी।

होलोगा-होला की बगल में, कैलीमसान की अँधेरी गुफाओं से आए, रहस्यमय सूँसलीखेड़ा थे। अँधेरे में घुलने और दुश्मन के जिस्म का सारा अँधेरा सोखकर, उसे मौत के घाट उतारने वाले सूँसलीखेड़ा...जिनका सरदार बोरियाबिस अपने पूरे जत्थे के साथ मैदान में मौजूद था। सूरज की रोशनी पैफली होने के बाद भी, हर सूँसलीखेड़ा के जिस्म के चारों तरफ, अँधेरे का एक घेरा था।

उनके अलावा भी सैंकड़ों क़बीले और प्रजातियाँ उस विशाल फ़ौज में शामिल थे। सेण्टीड्राफ़्स का सरदार गैल्जीडान अपनी पूरी सेना के साथ मैदान में मौजूद था। उनके हाथों में थमा तिलिस्मी भाला, इस वक़्त जमीन में गड़ा हुआ था। बौनों का सरदार पियोनी, अपनी पूरी टुकड़ी के साथ आसमान में उड़ती उस धूल को देख रहा था, जो आहिस्ता-आहिस्ता बल्टान के मैदान की तरफ बढ़ती आ रही थी। सबसे छोटे सैनिकों की इस क़तार में स्ट्रासोल्स सरदार जैस्टीफ़्रलच, अपने हज़ारों साथियों के साथ था। तिनके जैसे पतले, हज़ारों स्ट्रासोल्स की सेना, अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से मैदान का जायज़ा ले रही थीं। उन सबके हाथों में बेहद अजीब-अजीब हथियार थमे थे। किसी के हाथ में *रस्सी* का एक टुकड़ा था तो किसी के हाथ में पेड़ की *टहनी*, कोई अपनी मुट्ठियों में चमकदार *कंकड़* भरे था तो कोई फटा हुआ *जूता* हाथ में थामे था। हर कोई जानता था कि किसी स्ट्रासोल के साधरण से हथियार में भी असीमित ताक़तें छुपी होती हैं इसलिए उन्हें अगली पंक्ति में लड़ने के लिए रखा गया था। पतला सींकड़ी, गम्पूग्रास इस वक़्त अपने सरदार जैस्टीफ़्रलच की बगल में मुस्तैदी से खड़ा हुआ था।

कॉफ़ीनस स्पिनड़ल, इस वक़्त सामने वाले मोर्चे में, पर्सीना की फ़ौज के उन हज़ारों स्टैगाटॉर्स के साथ था, जिनके

कन्धे पर टँगे शक्तिशाली लम्बे धनुष, रह–रह कर दुश्मन से लोहा लेने के लिए कसमसा रहे थे। पर्सीना के पास वाली टुकड़ी में बल्चार कबीले का सरदार, बोहिया–हकूक बैलाहूस...अपने सैंकड़ों साथियों के साथ, रह–रहकर पैर बदल रहा था। गैंडे और इंसान जैसे उनके भारी जिस्म, धूप में दमकने लगे थे। बाँई तरफ़ का सबसे आख़िरी किनारा, बैम्बूस प्रजाति के सरदार कैलोबा ने अपने बहादुर लड़ाकों की फौज के साथ संभाला और दाहिनी तरफ़ का आखिरी किनारा, अंशदेवों के नौजवान सेनापति स्वर्णात्मा ने। सामने वाली क़तार में बेहद ख़ास, इक्कीस लोग थे। दुष्ट जैल्डॉन के इक्कीस गुरु, जो उसके खिलाफ़ जंग में हिस्सा लेने वहाँ पहुँचे थे।

'बदहवास कछुए के गोबर में सना, वो शातिर लैनीगल...आपकी महान ठोकर, अपने घटिया नितम्ब पर खाने के लिए आ पहुँचा है महाराज।' पतले सींकड़ी ने अपनी गोल–गोल आँखें घुमाते हुए, अपने से भी पतले, सरदार जैस्टीफ़्लच की तरफ़ पूरी इज़्ज़त से देखा। सींकड़ी के हाथ में इस वक़्त भी, रस्सी का वो छोटा टुकड़ा दबा हुआ था, जिससे उसने उल्लूखदेड़ों को बेबस कर दिया था।

जैस्टीफ़्लच ने मुस्कराते हुए उसकी तरफ़ देखा–*'गीले-लबादे-से-सूखी- लँगोटी-भली*। हम भी उस शैतान का उतनी ही बेताबी से इंतज़ार कर रहे हैं गम्पू! उसके पिछवाड़े पर लातें बरसाने में हमें वाक़ई बेहद मज़ा आएगा। *गुठली-लेकर-हाथ-चूहा-चला-बरात*।' जैस्टीफ़्लच ने अजीबोगरीब मुहावरा बोलते हुए, अपना छटाँक भर का सीना चौड़ाने की कोशिश की।

सेना के बीचोबीच, सामने वाले मोर्चे पर, मकास की सोने जैसी देह, अब तेज़ धूप में दमकने लगी थी। अब जैल्डॉन की सेना का विशाल आकार साफ़ दिखने लगा था। वो अब इतनी ही दूर रह गए थे कि बस उनके चेहरे नज़र नहीं आ रहे थे, उनके विशाल जिस्म और हुँकारें एकदम स्पष्ट सुनाई दे रही थीं।

'हमारे इशारे का इंतज़ार करना, जब तक हम न कहें, हमले का आदेश मत देना।' फैगुअस ने मकास की तरफ़ बिना देखे कहा।

उसकी बूढ़ी आँखें, उस सेना पर टिकी हुई थीं, जिसका कोई ओरछोर नज़र नहीं आ रहा था। फिर आहिस्ता–आहिस्ता वो और पास आते गए। हर पल ऐसा लग रहा था जैसे सदियों की तरह गुज़र रहा हो।

इससे पहले बूढ़े फ़क़ीर के होंठ, हमले का संकेत कर पाते, भारी शोरशराबे की वो आवाज़ एकदम थम गई। एक निश्चित दूरी बनाकर, जैल्डॉन की सेना एकदम से थम गई। ऐसा लगा जैसे किसी ने शोर का गला घोंट दिया हो, एकदम सन्नाटा छाता चला गया। दोनों तरफ़ के योद्धा जैसे एक–दूसरे को तौल रहे थे। टिड्डी–दल की तरह दूर–दूर तक फैली दोनों विशाल सेनाएँ, एक–दूसरे के सामने थीं। तेज़ हवा के बीच, केवल उन ध्वजों के फड़फड़ाने की आवाज़ें बाक़ी रह गईं, जो हर सैनिक टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे।

जैल्डॉन की विशाल सेना की सबसे अगली पंक्ति में, इल्चीन के पठारों से आए, पर्वताकार देह वाले, वो हिंसक असनोच थे, जिनके हाथ में जैल्कोवा की लकड़ी से बना, भारी मुगदर थमा था। सैंकड़ों की तादाद में असनोच अगली क़तार में खड़े थे। उनके बग़ल में, कैबूनिन के जंगलों से आए, ख़तरनाक लड़ाके कोहान–कोहस, जिनकी मांसपेशियाँ, पत्थर से भी सख़्त और जिस्म चट्टान से मज़बूत दिख रहे थे और जिस्म पर, राक्षसों की आँतों से सिली पोशाकें झूल रही थीं।

सैनिकों की आगे वाली क़तार के ऊपर, नष्ट हो चुकी सभ्यता, एटनोर के खण्डहरों में रहने वाले सैंकड़ों उजड़े–प्रेत... मँडरा रहे थे। उनके खण्डहर जैसे जिस्म और भयावह आकृति, उनकी भयानकता की कहानी चीख–चीख कर कह रही थी। दाहिनी तरफ़, कैसी–बुगनान के मैदानों से आए, वीभत्स और घिनौने वरमोस...खड़े थे, जिनका कमर से नीचे का हिस्सा, लिजलिजे, सफ़ेद गिंडार जैसा और ऊपर का धड़ इंसान जैसा था, जिनके बारे में कहा जाता था कि उनकी उल्टी में निकलने वाले सैंकड़ों छोटे अण्डों के भीतर से, उतने ही और निकल आते हैं।

बाँई तरफ़, कल्सूस की घाटियों के हज़ारों बर्फ़ीले सर्पमानव थे, जिनकी फुफकार से निकलने वाली बर्फ़ की नोकीली किरचें, किसी की भी जान ले सकती थीं। उन्हीं के बग़ल में थे, खोजार के वर्षा–वनों के, नरभक्षी चिहानचोचस...कछुओं की पीठ पर रहने वाला नरभक्षी क़बीला। सैंकड़ों विशाल कछुए, आगे बढ़ने के लिए कसमसा रहे थे, जिनका आकार हाथी से बड़ा था। सबसे आगे वाली क़तार में थे, ख़ूनी डैरकोस...जिनके बारे में कहा जाता था, वो क्रोध में जन्म लेते हैं और क्रोध में ही मरते हैं। डैरकोसों के ऊपर, उकोरास की काली झील में रहने वाले जल–पिशाच मँडरा रहे थे, जिनकी बेहद लम्बी जीभ, लगभग ज़मीन तक पहुँच रही थी।

प्रफोगाप्रफॉस सरदार इलासटंग, अपने सैंकड़ों मेंढक जैसे सैनिकों के साथ, सामने वाली क़तार में था, जिसके पास

शिला–मानवों की एक पूरी टुकड़ी खड़ी थी। उन्हीं के पास था, थैजोथार...उसकी लम्बी पूँछ, बार–बार किसी चाबुक की तरह हवा में लहरा रही थी। उस विशाल सेना के सामने, जमीन पर खड़ा था 'वो', जिसके हाथ में लकड़ी का अजीब–सा मुड़ा–तुड़ा डण्डा था।

शातिर लैनीगल...उसका भारी लबादा हवा की वजह से फड़फड़ा रहा था। अपने पीछे खड़े पर्वताकार देह वाले असनोचों के सामने वो किसी छोटे कीड़े की तरह लग रहा था। वो सेना, पीछे कहाँ तक पैफली हुई थी, ये देखना संभव नहीं था लेकिन उसका विस्तार आँखों की पुतलियाँ फैला देने वाला था।

'शातिर लैनीगल...' थोरोज़ के होठ आहिस्ता से हिले।

'हाँ, ये वही है।' फैगुअस ने हवा में लहराते अपने लबादे को संभालते हुए कहा।

'हमें मालूम था, जैल्डॉन इस जंग के लिए इसी को भेजेगा।' थोरोज़ ने दूर खड़े शातिर बौने की तरफ देखते हुए कहा।

'किसी को भी भेजकर, वो अपने निश्चित अंत से नहीं बच सकता।' फैगुअस की आवाज़ में बला का ठहराव था।

लैनीगल ने ऊपर आसमान की तरफ़ इशारा किया और उजड़े–प्रेतों में से एक, हवा में तैरता हुआ आगे बढ़ा। दोनों सेनाओं के बीच की विशाल ख़ाली जगह के ऊपर उड़ता हुआ वो लगभग बीच में पहुँच गया। एक पल के लिए वो ठिठका और फिर तेज़ी से आगे उड़ा। हर कोई बेहद सतर्क था। मकास के होठ सख़्ती से एक–दूसरे पर कसे हुए थे।

उजड़े प्रेत के जिस्म पर लहराते काले चीथड़े, हवा की वजह से उड़–उड़कर सूखी ज़मीन पर गिर रहे थे। वो हवा में ठीक उस जगह तैरने लगा, जहाँ सबसे आगे वाली पंक्ति में मकास, फैगुअस और थोरोज़ थे। एक निश्चित दूरी बनाए रखते हुए, वो हवा में एक जगह ठहर गया।

'तुम...' उसके गले हुए होठ हिले और कण्ठ से ऐसी खरखराती हुई आवाज़ निकली, जैसे कोई रुकी हुई नाली अचानक चल पड़ी हो।

'...तुम सब...मरने के लिए यहाँ तक तो आ गए हो लेकिन महान स्वामी, तुम बेवकूफ़ों को एक मौका देना चाहते हैं। तुम में से एक, जो बाक़ी मूर्खों से ज़्यादा समझदार हो, आगे आए और महान सेनापति के सामने पहुँचकर, उनकी गुलामी वुफबूल करे या फिर कीड़ों की ये पूरी फ़ौज, एक दर्दनाक मौत के लिए तैयार हो जाए।' उसकी भयानक शक्ल, इस सन्देश को सुनाते–सुनाते और भयानक हो गई।

मकास का हाथ उस लम्बे छुरे पर कस गया, जो आहिस्ता से उसकी हथेली में सरक गया था। फैगुअस ने उसका कन्धा दबाकर, चुप रहने का संकेत किया और थोरोज़ की तरफ़ गहरी नज़रों से देखा। दोनों की आँखें पल भर के लिए मिलीं और फिर सहमति में सिर हिले। अगली क़तार तोड़कर फ़ैगुअस ने एक क़दम आगे बढ़ाया और उजड़ा–प्रेत नफ़रत से उन्हें देखता हुआ, वापस लौट गया। जिस तेज़ी से वो अपने साथियों से अलग हुआ था, उसी तेज़ी से उनमें जाकर मिल गया।

फ़ैगुअस बेहद सधे हुए क़दमों से आगे बढ़ा। आगे बढ़ते हर क़दम के साथ, शातिर लैनीगल भी एक–एक क़दम आगे बढ़ता जा रहा था। दोनों सेनाओं के ठीक बीच स्थान पर दोनों एक–दूसरे के सामने थे। लैनीगल का क़द इस वक़्त भी एक छोटे बौने की ही तरह था। दोनों एक–दूसरे के सामने बस एक क़दम की दूरी पर आकर रुक गए।

'कम से कम *तुम्हें*, यहाँ इस तरह नहीं होना चाहिए था **थैमीनल फ़ैगुअस**...' उसने जैसे एक–एक शब्द को बेहरमी से चबाते हुए कहा।

'ज़्यादा से ज़्यादा, तुम यहीं मिल सकते थे...**डेवियन लैनीगल**...' बूढ़े फ़क़ीर ने जैसे उसी के अंदाज़ में उसका मखौल–सा उड़ाते हुए कहा।

'तुम्हें और उन दोनों तथाकथित महान आत्माओं, थोरोज़ और सालन को शायद मेरे सीने वो पुराने ज़ख़्म याद होंगे फ़ैगुअस, जिन्हें आज तक नक्षत्रा भी नहीं भर पाए।' उसने त्यौरियाँ चढ़ाई।

'किसी भी ज़ख़्म पर मरहम लगाने के लिए रणभूमि कोई अच्छी जगह नहीं है डेवियन!' फैगुअस ने उसकी खिल्ली उड़ाई। 'मुझे तभी समझ जाना चाहिए था, जब तीनों लड़के छेदरहित–बाँसुरी बजाने वाले पाँच फ़कीरों को ढूँढते हुए पहुँचे थे मगर तुम्हारी ख़राब क़िस्मत शायद तुम्हें अच्छा बनकर दिखा रही थी। इसी वजह से सारे षड़यन्त्रा को सामने आने में इतना वक़्त लग गया।' फ़ैगुअस की आवाज़ में एक पथरीला ठहराव था।

'ओह...तुम आज, भी उतने ही अहंकारी हो फ़ैगुअस, जितने बरसों पहले थे। क्या ये बेहतर नहीं होगा कि वक़्त के

इशारे को समझो और इन सब कीड़ों के साथ, मेरे महान शिष्य जैल्डॉन के कदमों को चूमने का सिलसिला शुरू कर दो।' लैनीगल की आवाज में इस वक्त व्यंग्य के बारीक–बारीक रेशे तैर रहे थे।

'मेरे ख्याल से वो वक्त आ गया है, जब उस भगोड़े को अपने किए की सज़ा मिलनी चाहिए और वो महान किताब हिफाजत से वापस लौटा देनी चाहिए, जिसे वो सदियों पहले ले भागा था।'

'ओहहो...तुम्हें शायद ये बताने की जरूरत है कि ये जमीन अब केवल एक हुकूमत को जानेगी और तुम सब, या तो अपने घुटने टेककर सिर झुकाओगे या फिर तुम्हारी लाशों का वजूद ढूँढने में, मुर्दाखोर कीड़ों को भी पसीना आ जाएगा।' लैनीगल ने अपने चहेरे पर तैरते क्रोध को संभालने की कोशिश करते हुए कहा।

'हम तुम्हें आखिरी मौका देते हैं लै...नी...ग...ल!' बूढ़े फकीर की आवाज़ में इस वक्त सख्ती का पुट था। 'इसके बाद शायद तुम्हें वो अवसर भी न मिले, जब तुम अपने अपराधें की क्षमा माँग सको। बेहतर होगा, तुम अपने डरे हुए शागिर्द से कहो कि वो अपने अपराध की माफी माँग ले और वो महान किताब लौटा दे।'

'तुम...भी...हमेशा की तरह...कमाल हो फैगुअस! अपराध, स्थानीय कायदों को तोड़ने के सिवाय और कुछ नहीं होता और ये 'स्थानीयता' इस बात पर खड़ी होती है कि कोई भीड़ अपना फैफलाव, कहाँ तक मानती है। ये देखने के बाद भी कि सारी दुनिया की ताकतें अब एक झण्डे के नीचे आ चुकी हैं, उन सब मकोड़ों के खिलाफ, जो इस ज़मीन को हज़ारों कबीलों और बस्तियों में बाँटे हुए हैं। इस विशाल सेना और एल्गा–गोरस की ताकतों को भली तरह जानते हुए भी तुम 'धमकी' देने की कोशिश कर रहे हो। वो भी...लै...नी...ग..ल को?' उसकी आवाज़ गुस्से की वजह से काँप रही थी।

फैगुअस के पतले होंठ आहिस्ता से मुस्कराए, उसने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। उस मुस्कराहट में तैरते व्यंग्य ने लैनीगल को जैसे और भी तिलमिला दिया। 'मेरे खयाल से हमें वापस लौट जाना चाहिए और इस सूखी घास को, तुम सबके रक्त में घुला नमक चखने का मौका देना चाहिए।' वो गुस्से से दाँत पीसता हुआ बोला।

'अब नहीं, तुम्हें बहुत पहले वापिस लौट जाना चाहिए था लैनीगल! लेकिन नक्षत्रा तुम्हें वहीं ले आए हैं, जहाँ तुम्हारी नक्षत्रा–विद्या भी कोई मदद नहीं कर पाएगी।' फैगुअस के चेहरे पर इस वक्त बला की निश्चिन्तता झलक रही थी।

'ओह...लैनीगल को लगा वो तुम्हें मौत के पंजों से बचा सकता है लेकिन वाकई, मौत सबसे पहले समझ को चाटती है।' उसने दाँत पीसे। 'हमें पीछे मुड़ना चाहिए, इंतज़ार की तानाशाही सत्ता, अब ख़त्म होती है।' मुस्कुराकर वो अपनी एड़ियों पर घूम गया।

दोनों सेनाओं के बीच, इस वक्त दो आकृतियाँ वापस अपनी–अपनी तरफ लौट रही थीं। जैसे–जैसे दोनों के कदम अपनी सेनाओं के पास पहुँचते जा रहे थे, दोनों तरफ हल्की–हल्की हलचल होने लगी। फैगुअस आहिस्ता से मकास के दाहिनी तरफ जाकर रुका और थोरोज़ की आँखों में देखा। ऐसा लगा, बिना कुछ कहे ही दोनों में सारी बात हो गई हो।

लैनीगल, एक विशाल असनोच के पास पहुँचा और उसने उसे उठाकर, एक विशाल कछुए की पीठ पर बैठा दिया। उसने एक पल के लिए जैसे पूरी सेना का निरीक्षण किया और फिर मुट्ठी बाँधकर, पूरी ताकत से चीखा–**'ह...म...ला।'** जैल्डॉन की सेना इस तरह दौड़ी, जैसे हर चीज़ को पीसकर रख देगी।

मैंने इस दास्तान के जितने भी हिस्से, इन गुफाओं की दीवारों पर खोदे हैं, उनमें कभी इतनी बेचैनी महसूस नहीं हुई, जितनी इस जंग को छेनी से उकेरते वक्त हुई। वैसे अगर ठीक से कहा जाए तो इस महायुद्ध के बारे में, मोम के उन चौकोर टुकड़ों पर भी पूरी तरह नहीं लिखा गया। शायद लिखा भी नहीं जा सकता था। उसे महसूस किया जा सकता है, उसे पढ़ा जा सकता है, उन हर्फों के बीच, जिनमें उस हिंसा और क़त्लोग़ारत का जिक्र है, जो इस जंग के बारे में लिखे गए हैं। ज़मीन पर हुए इस महायुद्ध की लरज, बाद की सदियों में भी महसूस की जाती रही। दरअसल कोई चीष कभी इस तरह ख़त्म नहीं होती कि उसका असर हमेशा के लिए ख़त्म हो जाए।

इस जंग का असर हमेशा दुनिया पर रहा, आज जब मैं कैल्टिकस की इन पहाड़ियों में महसूस करता हूँ तो भी मुझे वो असर यहाँ महसूस होता है। किसी भी प्राणी को फुसलाने की सबसे बड़ी ताक़त महत्त्वाकांक्षा के भीतर होती है और किसी भी प्राणी को समझाने की सबसे बड़ी शक्ति उसकी अपनी आत्मा के भीतर मगर हम हमेशा अपनी आत्मा की आवाज़ अनसुनी करते हैं, शायद इसी वजह से हमारी आत्मा भी फिर हमारी आवाज़ अनसुनी करने लगती है।

जैल्डॉन की महत्त्वाकांक्षा की नदी, उसकी अच्छाइयों की सारी तलछट को बहाकर, जंग के समन्दर तक ले गई। वो समन्दर, जिसके गर्भ में उससे पहले भी लाखों योद्धा समाकर गुम हो चुके थे। बल्टान का वो विशाल मैदान, एक जंग का गवाह बनने जा रहा था, जैसी जंग धरती ने उससे पहले कभी नहीं देखी थी। वो जंग, जो पूरी धरती की आज़ादी और

गुलामी का फैसला करने वाली थी, जिसकी हर नस में केवल हिंसा और मारकाट तैर रही थी।

हिंसा और मारकाट, हम सबके भीतर अपने तीखे नाखून छुपाए बैठी होती है। वो बस अलग–अलग रूपों में बाहर आती है। हमने जंग की कुछ अलग तरह की परिभाषाएँ निर्मित की हैं लेकिन जंग परिभाषाओं के दायरे से बाहर होती है। वो हर पल घट रही है, हर जगह है, वहाँ भी, जहाँ हम देख सकते हैं और उसमें शामिल हो सकते हैं और वहाँ भी जहाँ हम देख भी नहीं सकते और उसमें शामिल भी नहीं हो सकते।

अब एक गहरा सुवूफन मेरे जेहन में घर बनाता जा रहा है। आहिस्ता–आहिस्ता ये किताब, अपने उस मुकाम की तरफ बढ़ती जा रही है, जिसे अभी केवल मैं जानता हूँ। मेरे पुरखों ने इस दास्तान को जिस विश्वास से मुझे सौंपा, वो विश्वास मैंने सँजोए रखा। फिलहाल मैं इस जंग को देखना चाहता हूँ, अपनी छेनी और हथौड़ी की आँखों से, इसलिए अब मुझे फिर से काम शुरू कर देना चाहिए।

मेरी बूढ़ी आँखें उस जंग को साफ देख सकती हैं, जो कई सन्दूकों में बन्द, मोम के इन चौखटों पर चाँदी की दहकती सलाइयों से उकेरी गई हैं। मोम के वो चौखटे, जिन पर उस महायुद्ध की कत्लोगारत दर्ज है, जो बल्टान के मैदान में हुआ। वैसा युद्ध, जमीन पर पहले कभी नहीं देखा गया था, जिन पर दर्ज है वो घटना, जिसने संथाल के बेटों के अब तक के सारे सफर की मेहनत पर पानी पेफर दिया। वो घटना, जब अग्नि–योद्धा हूनास्पॉटी ने इस कहानी के दो सबसे अहम किरदारों को जलाकर राख कर दिया और उस खास पानी के अतीत का सबसे बड़ा रहस्य भी, जंग के उस मैदान में सामने आया, जिसे बस चन्द लोग ही जानते थे।

महायुद्ध

अध्याय अट्ठाईस

जैल्डॉन की सेना पूरी ताकत से हमले के लिए मित्रा–सेना की तरफ दौड़ रही थी लेकिन मकास ने अभी हमले का आदेश नहीं दिया था। उसकी आँखें अब भी फैगुअस की तरफ एकटक देख रही थीं। फैगुअस ने कहा था, 'जब तक मैं हमले का संवेफत न करूँ, तब तक आदेश मत देना।' किसी काली बाढ़ की तरह, वो विशाल सेना आगे बढ़ती आ रही थी। पूरी मित्रा–सेना में कसमसाहट थी। हमले का आदेश न मिलने की वजह से हर योद्धा हैरत से उस तरफ देख रहा था, जिध्र मकास की तरफ से 'आ...क...म...ण' बोला जाना था।

फैगुअस ने हमले का संकेत नहीं दिया। एक पल तक वो अपनी जगह शान्त खड़ा रहा और फिर आहिस्ता से चार–पाँच कदम आगे बढ़कर ठहर गया। सेना लगातार आगे बढ़ती आ रही थी, विशालकाय असनोचों और दानवाकार कछुओं के पैरों की धम–धम से जमीन में थरथराहट हो रही थी।

बूढ़े फकीर फैगुअस का भारी लबादा, हवा की वज़ह से पफड़फड़ कर रहा था। फिर उसके दोनों हाथ ऐसे पैफलने शुरू हुए जैसे उस सेना को गले लगाने के लिए उतावला हो। उसके हाथ में थमा, लकड़ी का लम्बा डण्डा अब बिना किसी सहारे के जमीन पर खड़ा था। जैल्डॉन की सेना, लगभग उस मध्य–बिन्दु तक आ गई, जो दोनों सेनाओं के बीचोबीच था।

बाकी चारों बूढ़े फकीर भी, अब उस क़तार में आकर खड़े हो गए, जिसके बीचोबीच फ़ैगुअस खड़ा था। उनकी भुजाएँ भी उसी तरह पैफली हुई थीं जैसे जैल्डॉन की सेना को सीने से लगाना चाहती हों। फिर वो हुआ, जिसके बारे में लोग तो केवल अनुमान लगाते थे मगर थोरोज़ और सालन अच्छी तरह जानते थे और संथाल के बेटों ने, उसे क़िस्सागो बौने ऑथरडस्ट के मुँह से सुना था। रेत–विद्या के परमज्ञाता, कीलन जैसी काली ताक़त का दिल अपनी मुट्ठी में भींचकर, उसे ख़त्म कर देने वाले, पाँचों बूढ़े फ़कीर, उस सेना के सामने दीवार की तरह खड़े थे।

दोनों सेनाओं के बीचोबीच, ज़मीन तिड़कनी शुरू हुई और धरती का सीना चीरकर रेत की एक बाढ़, एक लम्बी लकीर के रूप में बाहर निकलनी शुरू हो गई। ऐसा लग रहा था जैसे ज़मीन के भीतर से रेत के फ़ौव्वारे निकल रहे हों। रेत की वो बाढ़ ऐसे निकल रही थी, जैसे दोनों सेनाओं के बीच कोई विभाजन–रेखा खींच दी हो। ज़मीन से निकलने वाले रेत के फ़ौव्वारे हर पल ऊँचे होते जा रहे थे। कुछ ही पलों में दोनों सेनाओं के बीच, रेत की एक उँफची दीवार खड़ी हो गई। ज़मीन के भीतर से रेत अब भी उबल–उबलकर बाहर निकल रहा था। रेत की वो लहर, किसी समुद्री लहर की तरह बढ़ती ही जा रही थी।

कुछ पलों तक तो इस तरफ़ खड़ी सेना को, रेत की उस विशाल लहर के पीछे जैल्डॉन की सेना दिखी लेकिन अब उस लहर की उँफचाई इतनी हो चुकी थी कि उसने उस विशाल सेना को पूरी तरह अपने पीछे छिपा लिया। रेत की वो बाढ़, किसी समुद्री लहर की तरह व्यवहार कर रही थी। उसमें से उठने वाली बड़ी–बड़ी लहरें जैसे बेकाबू होकर पूरी सेना को बहा ले जाना चाहती थीं।

पाँचों फ़कीरों के लबादे, तेज़ हवा की वजह से उनके बदन से चिपके जा रहे थे। रेत और तेज़ हवा ने, जैल्डॉन की पूरी सेना को जैसे जड़ से उखाड़ दिया। हाथी जैसे विशाल कछुए, रेत के अंध्ड़ में उड़कर लुढ़कते जा रहे थे। हवा में उड़ते जल–पिशाच और उजड़े–प्रेत उस तूफ़ान में ऐसे तैर रहे थे जैसे घास के तिनके। किसी को कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। दानवाकार जिस्म वाले असनोचों की भारी देह के नीचे दबकर सैंकड़ों सैनिक पिस गए। रेत की वो लहर, किसी बाढ़ की तरह उन्हें पीछे ध्केलती और अपने साथ बहाती ले जा रही थी।

हर कोई आँखें फाड़–फाड़ कर ये देखने की कोशिश कर रहा था कि रेत की दीवार के पीछे गुम हुई उस विशाल

सेना का क्या हो रहा है लेकिन रेतीला अंध्ड इतना घना था कि उस तरफ़ का पूरा दश्श्य साफ़ दिखना असंभव था। आहिस्ता–आहिस्ता रेत का तूफ़ान कम होना शुरू हुआ। रेत जिस तरह से ज़मीन से निकलना आरम्भ हुआ था, उसी तरह से ज़मीन के भीतर समाने लगा। लग रहा था जैसे कोई नीचे बैठकर उस सारे रेत को वापस चूस रहा हो। जैसे–जैसे दिखना शुरू हुआ, लाखों आँखें जैसे हैरत से फट पड़ने को तैयार थीं।

जैल्डॉन की पूरी विशाल सेना को अंध्ड़ नेस्तनाबूद कर चुका था। पूरी सेना को तहस–नहस करके वो इतनी दूर ले गया था कि विशाल मैदान के सुदूर सिरे पर एक काला ढेर जैसा नज़र आ रहा था। रेत का एक–एक कण ज़मीन के भीतर समाता चला गया। पाँचों अब भी उसी तरह खड़े थे। आहिस्ता–आहिस्ता उनकी भुजाएँ नीचे आने लगीं और फ़ैगुअस ने ज़मीन पर बिना किसी सहारे खड़े अपने लम्बे डण्डे को अपनी मुट्ठी में कस लिया।

पूरी सेना में जैसे खुशी की लहर दौड़ गई। उनकी हुँकारों और जोशीले विजय–नाद ने, आसमान को गुँजाकर रख दिया। बिना एक भी योद्धा की जान गँवाए, बिना रक्त की एक भी बूँद बहाए, इस तरह जंग का नक्शा बदल जाएगा, ये किसी ने सोचा भी नहीं था। पाँचों बूढ़े फ़कीर अपनी जगह पर वापस लौट आए।

'सदियों बाद, तुम्हारी ताकत देखने का मौका मिला है। मुझे तो लग रहा था कि तुम अब बूढ़े हो चुके हो फ़ैगुअस!' थोरोज़ ने एक हल्की मुस्कराहट अपने होंठों पर लाकर, फ़ैगुअस की तरफ़ देखा।

फ़ैगुअस ने उस मुस्कराहट का जवाब केवल मुस्कराहट से दिया, बाकी चारों फ़कीर भी बस थोरोज़ की तरफ़ देखकर मुस्करा दिए। पूरी सेना में खुशी की लहर दौड़ गई मगर ये खुशी ज़्यादा देर कायम न रह सकी। दूर मैदान के उस सिरे पर फिर हलचल बढ़ गई। जैल्डॉन की सेना, जो दूर पड़े एक काले ढेर की तरह नज़र आ रही थी, अब दोबारा पैफलती जा रही थी। वो फिर संभलकर इकट्ठा हो रहे थे। दूर से आती शोर और हुँकारों की आवाज़ अब बहुत तेज़ होने लगी।

कुछ ही देर में उन्होंने फिर, दुनिया के सबसे विशाल मैदान को ढँक लिया। वो लगातार आगे बढ़ते आ रहे थे। उनकी रफ़्तार इस बार पहले से ज़्यादा तेज़ और हुँकारें पहले से अधिक हिंसक थीं। पास आने पर उन्होंने देखा, शातिर लैनीगल एक विशाल कछुए की पीठ पर सवार था, जो सेना के आगे–आगे बेहद तेज़ गति से दौड़ रहा था। वो जैसे बार–बार हमले के लिए आदेश दे रहा था।

'शायद इन्हें दोबारा इनकी गुस्ताखी का दण्ड देना पड़ेगा।' फ़ैगुअस के होंठ एक बार फिर हिले और पाँचों बूढ़े फ़कीर दोबारा सेना की अगली पंक्ति से आगे बढ़ गए।

इस बार पूरी सेना इतनी तेज़ी से आगे बढ़ी चली आ रही थी जैसे हर किसी को बहाकर ले जाना चाहती हो लेकिन इस बार एक अजीब चीज़ थी, जो पहले नहीं थी।

शातिर लैनीगल के सिर के ऊपर, जहाँ पिछले हमले के वक़्त, उजड़े–प्रेत और जल–पिशाच हवा में तैर रहे थे, इस बार उनकी जगह 'उन्होंने' ले ली थी, जिनका सामना संथाल के तीनों बेटे पहले भी कर चुके थे। वो थे भयानक और ख़तरनाक फ़्लडीसोल्स...उनके पूरे जिस्म से इस वक़्त भी बेतहाशा पानी टपक रहा था। वो बहुत बड़ी तादाद में थे।

इस बार पाँचों ने उन्हें नज़दीक आने का मौक़ा नहीं दिया। फ़कीरों ने अपने बाज़ू ऊपर आसमान की तरफ़ उठाए और ज़मीन चटखने लगी। एक बड़ी दरार पूरे मैदान का सीना चीरती हुई पैदा हुई और उससे जैसे रेत की बाढ़ बाहर आने लगी मगर उसके बाद जो हुआ, उसे देखकर हर कोई सकते में आ गया। जैल्डॉन की पूरी सेना इस बार काफ़ी दूर थी लेकिन जो हो रहा था, वो इतनी दूर से भी साफ़ देखा जा सकता था।

सारे फ़्लडीसोल्स एक जगह इकट्ठा हुए और तेज़ी से ज़मीन से टकराए। जिस तेज़ी से उस विशाल दरार से रेत का सैलाब बाहर आ रहा था, उसी तेज़ी से पानी का एक विशाल बहाव, उस दरार में समाने लगा। जैल्डॉन की समूची फ़ौज अब पानी के एक भयंकर बहाव के पीछे थी। उनकी तरफ़ से आने वाली ये तेज बाढ़, पूरी रफ़्तार से उस विशाल दरार में समाती जा रही थी, जिसमें से रेत का वो अंतहीन बहाव निकल रहा था।

हैरतअंगेज़ ढँग से पानी के उस सैलाब ने उस विशाल दरार को ऊपर तक लबालब पानी से भर दिया। ऐसा लगा जैसे रेत का गला घोंटकर उसे वापस दरार में ध्केल दिया गया हो। उस सैलाब के बीच में से बार–बार सिर उठाते भयानक फ़्लडीसोल्स साफ़ दिखाई दे रहे थे। पानी से बना उनका जिस्म पल भर में ही दोबारा पानी में घुल जाता।

रेत के उस अंध्ड़ को नेस्तनाबूद करने के बाद कुछ ही पलों में पानी वापस सिमटने लगा और सारे फ़्लडीसोल्स दोबारा आकार लेने लगे। अब वो उड़कर वापस सेना के ऊपर मँडराने लगे। आश्चर्यजनक रूप से पूरा मैदान दोबारा इतना सूख गया था कि वहाँ अब पानी की एक बूँद तक नज़र नहीं आ रही थी।

लैनीगल ने एक बार सामने खड़ी पूरी सेना की तरफ़ देखा और पूरी ताक़त से आदेश दिया–'**ह...म...ला!**'

उसका आदेश मिलते ही पूरी सेना, जैसे बाँध टूटे पानी की तरह आक्रमण के लिए टूट पड़ी। इस बार फ़ैगुअस ने अपनी गर्दन हिलाकर मकास को संकेत दिया और उसका इशारा पाते ही, मकास ने पूरी शक्ति से सेना का आह्वान किया–'**आ...क...म...ण!**' और उस आवाज़ के साथ ही पूरी सेना, एक अंतहीन समन्दर की तरह, जैल्डॉन की फ़ौज टूट पड़ी। बस चंद पल गुज़रे और दोनों तरफ़ के लड़ाके, एक–दूसरे से टकरा गए।

मकास के हाथ से निकला एक लम्बा छुरा, एक पर्वताकार असनोच की श्वाँस–नली को काटता हुआ पार निकल गया। वो पल भर के लिए हवा में लहराया और उसका भारी–भरकम जिस्म कटे पहाड़ की तरह ढह गया। उसकी देह के नीचे दबकर कई वरमोस...किसी नाज़ुक गिंडार की तरह कुचल गए। हर तरफ़ कत्लोग़ारत मच गई।

अपनी अंतड़ियाँ, अपने मुँह से बाहर निकालकर दुश्मन के गले पर कस देने वाले लैसनारों का पूरा जत्था, कोहान–कोहस की टुकड़ी से भिड़ गया। पत्थर जैसी सख़्त मांसपेशियों वाले कोहान–कोहस पर उनके किसी हथियार का कोई असर नहीं हो रहा था। बहुत सारे लैसनारों ने अपनी अंतड़ियों को कोहान–कोहस लड़ाकों के गले में लपेटकर उनके प्राण छीन लिए थे। इक्कीस पेड़ों को एक साथ चीरकर निकल जाने की ताक़त रखने वाले कोहान–कोहस, कई लैसनारों के जिस्मों को चीरते हुए आरपार निकल गए। ज़मीन में छेद करके, कई लैसनार भीतर प्रवेश कर गए और उन्होंने अचानक ज़मीन के नीचे से निकलकर, कई कोहान–कोहसों के तलवों में अपने भालों से छेद कर दिए।

हाथी से भी विशाल कछुओं की पीठ पर रहने वाले नरभक्षी क़बीले चिहान–चोचस की टुकड़ी, गस्तामाथ की पहाड़ियों से आए बजाईबैगा दानवों से युद्ध कर रही थी। चिहान–चोचसों के कछुओं ने अपने मूत्र से ज़मीन को इतनी रपटीली बना दिया कि बजाइबैगा दानव उस पर खड़े भी नहीं हो पा रहे थे। उनका खौलता रक्त और जिस्म से उठती भाप ये बता रही थी कि इस वक़्त वो कितने जोश और क्रोध में थे। उनमें से कई ने अपने भारी–भरकम मुगदर से कई कछुओं को सुन्न कर दिया था। मुगदर में उगे काँटों में भरे टीथॉय के ज़हर के कारण, कछुओं को फ़ौरन लक़वा मार गया। अब वो बस अपनी जगह खड़े हुए छटपटा रहे थे।

एक विशाल कछुए ने आगे बढ़कर, बजाइबैगा सरदार होलोगा–होला को ज़बरदस्त टक्कर मारी, जिसकी वजह से उसका संतुलन बिगड़ गया लेकिन पल भर में ही उसने ख़ुद को संभाल लिया और कछुए की पीठ पर बैठे चिहान–चोचस का अपने मुगदर से कचूमर बना दिया। चिहान–चोचस के मरते ही उसका कछुआ, सरदार होलोगा–होला के पीछे पड़ गया। वो उसे अपने भारी–भरकम पैरों के नीचे कुचल देना चाहता था मगर उसने तेज़ी से ख़ुद को बचा लिया। तब तक एक दूसरे बजाइबैगा दानव के मुगदर का वार, उस कछुए के पैर पर पड़ा और टीथॉय के ज़हर से भरे काँटों ने, पल भर में उसे लक़वाग्रस्त कर दिया।

ख़ूनी डैरकोस...जिनके बारे में कहा जाता था, वो क्रोध में जन्म लेते हैं और क्रोध में ही मरते हैं। उनकी विशाल टुकड़ी, खल्काच के बीहड़ों से, विशालकाय देह वाले चल्कागा जत्थे से जंग कर रही थी। क्रोध में फुफकारते डैरकोसों की ख़ूनी तलवारें, जैसे हर चल्कागा को चाट जाना चाहती थीं। ढेर सारे काले कौवे, डैरकोसों के सिर पर मँडराने लगे थे, जो बार–बार उनके सिर पर बीट करना चाहते थे ताकि उनकी सारी हड्डियाँ, पल भर में उनके सीने में इकट्ठी हो जाएँ।

चल्कागाओं का पूरा जत्था, अपने हाथ में पकड़े लकड़ी के भारी हथौड़े से डैरकोसों पर हमला कर रहा था। उन्होंने कई डैरकोसों के पूरे जिस्म को लोहे की कीलों से बींध दिया था। कील–विद्या के माहिर चल्कागा सरदार चबला–गलच ने पलक झपकते, डैरकोसों की टुकड़ी में खलबली मचा दी। एक डैरकोस ने चल्कागा पर अपनी तलवार से वार किया, एक ही वार में तलवार उसके कन्धे को चीरती हुई बाहर निकल गई। जब तक वो तलवार वापस खींच पाता, उसके सिर पर मँडराते काले कौवे ने उस पर बीट कर दी। हैरतअंगेज़ ढँग से उस डैरकोस के जिस्म की सारी हड्डियाँ उसके सीने में इकट्ठा हो गईं ओर वो ख़ाल की बनी किसी गेंद की तरह एक तरफ़ लुढ़क गया।

स्ट्रासोल्स और सेण्टीड्राफ़्स के जत्थों ने एक साथ मिलकर जंग शुरू की। उन्होंने कैसी–बुगनान के मैदानों से आए, घिनौने वरमोसों को घेर लिया, जिनका कमर से नीचे का हिस्सा, लिजलिजे, सफ़ेद गिंडार जैसा और ऊपर का धड़ इंसान जैसा था। उनके छोटे आकार की वजह से वरमोस उन पर किसी हथियार से सही से हमला नहीं कर पा रहे थे। बैलीबोसिया के पेड़ को भी दो टुकड़ों में चीर देने की ताक़त रखने वाले वरमोस, इन छोटे–छोटे योद्धाओं के हमलों से बुरी तरह झुँझला गए।

'ओहह...मांसाहारी होकर, मांसाहारी से टक्कर लेते हो, दुष्ट कीड़े! अभी तुम्हें मज़ा चखाता हूँ।'

एक सेण्टीड्राफ़ 'ने बेहद फुर्ती से, उस वरमोस की गिंडार जैसी पूँछ में अपना नन्हा भाला घुसेड़ दिया, जो उस पर

हमला करने की कोशिश कर रहा था। नन्हा भाला उसकी पूँछ में धँस गया और उसके भीतर से तेजी से सपेफद रंग का तरल निकलने लगा। जब तक वरमोस संभल पाता, तब तक सैंकड़ों सेण्टीड्राफ उसके ऊपर चढ़ गए और उसका खात्मा कर दिया। तभी उसके पास वाले एक वरमोस ने तेजी से सरदार गैल्जीडान के ऊपर गन्दी उल्टी कर दी। उसमें से ढेर सारे सपेफद अण्डे निकलकर चारों तरफ़ बिखर गए। हवा के सम्पर्क में आते ही अण्डे फूटने लगे और उनके भीतर से सैंकड़ों वरमोस निकलकर, तेज़ी से बढ़ने लगे।

'सपेफद गिंडार की नाक पर उगे इन दुष्ट सींगों को हम देखते हैं, तुम ज़रा पीछे हो जाओ सरदार गैल्जीडान!' पतले सींकड़ी ने अपने साथियों के साथ उस वरमोस पर हमला कर दिया, जो सेण्टीड्राफ सरदार गैल्जीडान को अपने तेज नाखूनों से चीरने की कोशिश कर रहा था। अजीब–अजीब हथियार हाथ में लिए हुए, ढेर सारे पतले स्ट्रासोल्स उस वरमोस पर टूट पड़े।

सींकड़ी ने अपने हाथ में थमा रस्सी का टुकड़ा बेहद फुर्ती से उसकी पूँछ पर कस दिया। वरमोस वहीं का वहीं जड होकर रह गया। अपने हाथ में एक फटी हुई लँगोटी पकडे हुए, सींकडी उस वरमोस के ऊपर चढ गया। वरमोस ने उसे पकड़ने और खाने के लिए अपना चौडा मुँह खोला लेकिन उस नन्हे शैतान ने कमाल कर दिया। उसने इतनी तेजी से, अपने हाथ में पकडी फटी हुई बदबूदार लँगोटी, उस वरमोस की नाक में ठूँस दी कि वो समझ ही नहीं पाया, ये हुआ क्या। दो ही पल में उसकी बदबू से वो घिनौना वरमोस बेहोश होकर ज़मीन पर लुढक गया।

'मक्खी-की-नाक-में-मकड़ी-की-झिल्ली, तुमने तो कमाल कर दिया गम्पू! वापस लौटने पर हम तुम्हें इस बहादुरी का ऐसा ईनाम देंगे, जिसके बारे में तुमने सोचा भी नहीं होगा।' स्ट्रासोल्स के सरदार जैस्टीफ़लच ने पतले सींकडी के पतले कन्धे पर एक धौल जमाते हुए गर्व से कहा। सींकडी ने अपना बित्ते भर का सीना चौड़ा दिया।

हिममानव यति और मणिध्र साँप इस वक्त, बर्फ़ीले सर्पमानवों से उलझे हुए थे। उनकी फुफकारों से, बर्फ की धरदार, नोकीली किरचें निकल रही थीं लेकिन हिममानव यति के बालों भरे जिस्म से टकराकर, वो भाले जैसी तेज़ किरचें, बेकार हो रही थीं।

एक बर्फ़ीले सर्पमानव ने अपनी शक्तिशाली पूँछ का वार यति पर किया। पूँछ पूरी ताकत से उसके जिस्म पर पडी, वो बुरी तरह लडखड़ाया लेकिन फिर खुद को संभाल लिया। उस सर्पमानव की वापस जाती पूँछ अपने शक्तिशाली हाथों से पकड़कर, यति ने उसे गोल–गोल घुमाना शुरू किया और पूरी शक्ति से हवा में उछाल दिया। हवा में तैरता हुआ वो युद्ध–भूमि पर गिरा और एक विशाल कछुए ने अपने भारी पैर से, उसकी खोपड़ी कुचल दी।

मणिध्र सर्प ने अपनी विशाल कुण्डली में एक साथ दस–बारह सर्पमानवों को कस लिया और कुण्डली को कसना शुरू कर दिया। उन्होंने उस पर अपनी फुफकार से निकलने वाली भाले जैसी तीखी बर्फ़ीली किरचें छोडीं मगर मणिध्र सर्प ने झुकाई देकर अपने फन को बचा लिया। सर्पमानवों ने अपना आख़िरी हथियार इस्तेमाल किया, जिसके बारे में कहा जाता था कि वो जब किसी की आँखों में देख लेते हैं, वो उसी पल बर्फ़ की शिला में तब्दील हो जाता है। सारे सर्पमानवों ने मणिध्र सर्प की गोल–गोल आँखों में अपनी आँखें गड़ा दीं लेकिन हैरतअंगेज़ ढँग से परिणाम एकदम उल्टा हुआ। मणिध्र सर्प की आँखों में आँखें डालते ही सर्पमानव उसनी माया में क़ैद हो गए।

जरूस वाले मोर्चे पर हिममानव यति और मणिध्र सर्प ने, दुश्मन की फ़ौज में खलबली मचा रखी थी। उजड़े–प्रेतों का एक झुण्ड, हवा में उड़ता हुआ उसकी तरफ़ लपका। तलवार के एक भरपूर वार से, जरूस ने उस उजड़े–प्रेत को दो टुकड़ों में बाँट दिया, जो सबसे आगे था मगर खण्डहर जैसा उसका जिस्म, अगले ही पल फिर से आपस में जुड़ गया। जरूस की तलवार, तूफ़ान की रफ़्तार से चल रही थी। उसके आसपास कटे हुए जिस्मों वाले उजड़े–प्रेत हवा में तैर रहे थे लेकिन कुछ ही पलों में वो आपस में जुड़ जा रहे थे।

अंशदेव, जरूस के चारों तरफ़ एक सुरक्षित घेरा बनाए हुए थे। वो युद्ध नहीं कर रहे थे मगर उनकी सतर्क आँखें जैसे हर उजड़े–प्रेत की निगरानी कर रही थीं। तभी एक उजड़े–प्रेत ने पीछे से आकर, पूरी ताक़त से जरूस के जिस्म से टकराना चाहा मगर एक अंशदेव, जरूस और उस उजड़े–प्रेत के बीच में आ गया। उजड़े–प्रेत का जिस्म अंशदेव से टकराया, एक पल के लिए तो वो हक्का–बक्का चारों तरफ़ देखता रहा, फिर चुपचाप आसमान में उड़कर ऐसे, युद्ध–भूमि से दूर चला गया जैसे तपस्या करने के लिए कोई संन्यासी जा रहा हो।

जंग अपने पूरे उफान पर थी। हर तरफ़ शोर और मारकाट मची थी। अजीबोग़रीब जानवर और योद्धा एक–दूसरे पर हमला कर रहे थे। बल्टान का वो विशाल मैदान, उस महायुद्ध का गवाह था, जिसने आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत कुछ विरासत में छोडा। जंग अपनी विरासत में केवल जंग ही सौंप सकती है लेकिन जंग का सत्त्व भी सीखने के लिए बहुत

कुछ देकर जाता है।

मादा स्टैगाटॅर पर्सीना, अपने बहादुर साथियों के साथ, पूरी हिम्मत से उन पर्वताकार असनोचों पर अपने तीखे तीरों से हमला कर रही थी, जो सब वुफछ कुचलते हुए आगे बढ़ते आ रहे थे। गर्म चट्टान और जैल्कोवा की लकड़ी से बने उनके भारी मुगदर, एक वार में सब तहस–नहस कर दे रहे थे। पर्सीना ने अपने बाणों से उस असनोच को धराशायी कर दिया, जो स्पिनडल के सिर पर अपने मुगदर का प्रहार करने की कोशिश कर रहा था। स्पिनडल की टखनों तक लटकती शक्तिशाली भुजाएँ और बालों भरा बेहद लम्बा जिस्म, घूमकर उसकी तरफ़ आया और हवा में उड़ते एक जल–पिशाच की उस लम्बी जीभ को पकड़ लिया, जो अपनी जीभ से पर्सीना की गर्दन लपेटने की कोशिश कर रहा था।

जल–पिशाच की लाल जीभ लगातार बढ़ती जा रही थी। वो ऊपर हवा में ताकत लगाकर छूटने की कोशिश कर रहा था लेकिन स्पिनडल की मजबूत पकड़ से छूट नहीं पा रहा था। तभी एक–दूसरे जल–पिशाच ने पीछे से स्पिनडल की गर्दन में अपनी लम्बी जीभ लपेट दी। इससे पहले वो संभल पाता, चारों तरफ़ से जल–पिशाचों ने उस पर हमला कर दिया। उनकी लम्बी–लम्बी लाल जीभों ने, स्पिनडल के पूरे जिस्म को किसी मजबूत रस्सी की तरह लपेट लिया।

उसका दम घुटता जा रहा था। अपने वजनी मुगदर से उसने जल–पिशाचों पर हमले की कोशिश की लेकिन वो इतनी दूर थे कि उन तक उसके वार पहुँच ही नहीं पा रहे थे। ऐसा लगा जैसे उसकी आँखें उबल कर बाहर निकल पड़ेंगी। पर्सीना उसकी मदद के लिए आगे आना चाहती थी लेकिन पथरीले जिस्म वाले एक कोहान–कोहस ने उसे उलझा लिया। स्पिनडल उस जकड़ से जितना छूटने की कोशिश कर रहा था, वो अपनी जीभ का कसाव उतना ही और बढ़ाते जा रहे थे।

वो धराशायी हो गया मगर उनकी जीभ की पकड़ कमज़ोर नहीं हुई। तभी हवा में सनसनाते हुए कई परछाइयों जैसे जिस्म, जल–पिशाचों पर टूट पड़े। ये कैलीमसान की अँधेरी गुफाओं से आए, रहस्यमयी सूँसलीखेड़ा थे। तम–पुत्रा सूँसलीखेड़ा...जिनके बारे में कहा जाता था कि वो अँधेरे का विस्फ़ोट करके, दुश्मन के जिस्म से सारा अँधेरा सोखकर, उसके प्राण ले सकते हैं। आसमान में, जिस जगह जल–पिशाच तैर रहे थे, वहाँ एक विस्फ़ोट हुआ और उस हिस्से में एकदम अँधेरा छा गया। सारे जलपिशाच, अँधेरे की उस चादर में एकदम छुप गए।

सूँसलीखेड़ों का पूरा जत्था, जल–पिशाचों पर हमला कर रहा था। पल भर में आसमान पर छाया अँधेरा छटा और ऊपर से निर्जीव जल–पिशाच ऐसे ज़मीन पर गिरने लगे जैसे मरे हुए परिन्दे गिर रहे हों। पूरी ताक़त लगाकर अब स्पिनडल भी उठ खड़ा हुआ। हर तरफ़ भारी मारकाट मची हुई थी। इस अफ़रातफ़री में एक शख़्स, रास्ता बनाता हुआ, दाहिनी तरफ़ वाले मोर्चे की तरफ़ बढ़ रहा था। वो शातिर लैनीगल था, उसकी निगाहें बहुत पैनेपन के साथ किसी को खोज रही थीं। फिर जैसे ही उसे जरूस दिखाई दिया, उसकी शातिर आँखों में और चमक आ गई।

जिस कछुए की पीठ पर वो बैठा था, वो दबे पाँव जरूस की तरफ़ बढ़ता जा रहा था। उसने अपने हाथ में एक रस्सी पकड़ी हुई थी, जिसका पफन्दा बनाकर वो निशाना लगाने की कोशिश कर रहा था। वो पफन्दा फैंकने ही वाला था कि उसकी नज़र अचानक उस घेरे पर पड़ी, जो अंशदेवों ने जरूस के चारों तरफ़ बनाया हुआ था। कुछ सोचकर उसने पफन्दा नहीं फैंका और आसमान में उड़ते जल–पिशाचों और उजड़े–प्रेतों को इशारा किया।

उन्होंने जरूस को चारों तरफ़ से घेर लिया। कुछ उजड़े–प्रेतों और जल–पिशाचों ने जरूस पर हमला किया, जिसे अंशदेवों ने रोक दिया। अंशदेवों से टकराते ही, वो ऊपर आसमान की तरफ़ उड़ गए और युद्ध–भूमि से ग़ायब हो गए।

शातिर लैनीगल ज़ोर से चीखा–'ऐसी बेवक़ूफ़ी मत करो, जन्मजात मूर्खो, इन अंशदेवों से बचकर रहो। अगर कोई भी इन्हें छू गया तो उसके मन से जंग ख़त्म हो जाएगी और वो वैराग्य लेकर जंगलों की तरफ़ निकल जाएगा।'

लैनीगल की चेतावनी सुनकर, सारे जल–पिशाच और उजड़े–प्रेत थोड़ा पीछे हट गए और उन्होंने हमला करना बन्द कर दिया मगर अब भी जरूस को उन्होंने चारों तरफ़ से घेरा हुआ था। लैनीगल के पीछे–पीछे दो चिहान–चोचस अपने विशाल कछुओं पर सवार होकर उन्हीं की तरफ़ बढ़ रहे थे। उसने एक पल के लिए सोचा और फिर उन दोनों को इशारा किया।

दोनों चिहान–चोचस अपने कछुओं को हाँकते हुए, तेज़ी से उस घेरे की तरफ़ बढ़ने लगे, जिसे अंशदेवों ने जरूस के चारों तरफ़ बनाया हुआ था। कछुओं ने पूरी ताक़त से अंशदेवों के घेरे को टक्कर मारी और पूरा सुरक्षा–चक्र बिखर गया। टक्कर लगते ही दोनों कछुए, किसी सीधी–सादी गाय की तरह, चुपचाप मैदान से बाहर जाने लगे लेकिन इस टक्कर की वजह से लैनीगल को कुछ पलों का वक़्त मिल गया। उसने जरूस के सिर के ऊपर मँडराते उजड़े–प्रेतों और जल–पिशाचों को इशारा किया और जरूस को रस्सी के उस पफन्दे में कस दिया।

जरूस ने तलवार का एक भरपूर वार किया और रस्सी को सूत के कच्चे धगे की तरह काट दिया। इस बार एक जल–पिशाच ने अपनी लम्बी जीभ, जरूस की उस कलाई पर कस दी, जिसमें उसने तलवार पकड़ी हुई थी। इससे पहले वो संभल पाता, दूसरे जल–पिशाच की जीभ उसकी दूसरी कलाई से लिपट गई और कुछ ही पलों में, उसका पूरा जिस्म उन्होंने अपने बन्धन में ले लिया।

'ओह लैनीगल...इतनी भी क्या जल्दी है?' इस नई आवाज से लैनीगल चौंका और उसने, उस तरफ देखा, जिधर से आवाज़ आई थी।

ये सालन और थोरोज़ थे, जो एक–एक बोहिया–हकूक की पीठ पर सवार थे।

सालन ने अपने बच्चे जैसे छोटे–छोटे हाथ ऊपर आसमान की तरफ उठाए और जरूस को जकड़ने वाले सारे जल–पिशाच और उजड़े–प्रेत 'टप–टप' करके नीचे ज़मीन पर गिरने लगे। कोई समझ भी नहीं पाया कि अचानक ये हुआ क्या। पल भर में ही जरूस बन्धनमुक्त हो गया।

'मुझे तुम्हारा ही इंतजार था सालन...या फिर महान...*सालन हीस* कहूँ?' लैनीगल की आवाज़ में इस वक्त बला का व्यंग्य तैर रहा था।

'हम भी तुमसे मिलने के लिए सदियों से बेचैन थे लैनीगल...तुम्हारे तलवे तुम्हें वहाँ खींच ही लाए, जहाँ तुम्हारे गुनाहों का फ़ैसला होना है।' सालन की आवाज में सख्ती झलक रही थी।

'...और आप...महान थोरोज...क्या बात है? कितने महान लोग इकट्ठा हुए हैं, उस किताब को दोबारा हासिल करने के लिए, जो अब कभी उनकी उँगलियों को नहीं छुएगी। वैसे मुझे तो लगा था कि आप एक सदी पहले ही इस धरती से विदा ले चुके हैं मगर इतने दिनों बाद, आपको ज़िन्दा देखकर, मुझे कोई *ख़ास* खुशी नहीं हो रही।' लैनीगल ने बात करते–करते अपने हाथ में थमा लकड़ी का डण्डा सीध किया और उसके सिर के आसपास रोशनी उभरने लगी।

'ये नक्षत्रा–विद्या का इस्तेमाल कर सकता है सालन...सावधन रहना।' थोरोज़ की बारीक आवाज़ ने सालन को चेताया।

लैनीगल के सिर के आसपास उभरने वाली रोशनी अब तेज़ होती जा रही थी। तब तक उजड़े–प्रेतों का एक और जत्था आकर उसके सिर पर मँडराने लगा, जिनके साथ कुछ जल–पिशाच भी थे।

तभी आसमान में भारी गड़गड़ाहट होने लगी और जरूस के चारों तरफ़ रोशनी का एक घेरा पैदा होने लगा, जिसका आकार किसी कुप्पी जैसा था। उसके पाँव ज़मीन छोड़ने लगे, ऐसा लग रहा था जैसे वो कुप्पी जैसी रोशनी उसे अपने भीतर खींच रही हो।

'ये...नक्षत्रों की शक्ति का इस्तेमाल करके, उसे आसमान में खींच ले जाना चाहता है।' थोरोज़ ने सालन की तरफ देखकर, तेज़ आवाज़ में कहा।

तब तक जरूस के पैर पूरी तरह ज़मीन छोड़ चुके थे। उजड़े–प्रेत अब उस रोशनी के चारों तरफ़ मँडरा रहे थे। वो अब लगभग हवा में तैरने लगा, हर पल ऊपर उठता उसका जिस्म, अब उस घेरे में आ गया था, जो ऊपर उजड़े–प्रेतों ने हवा में बनाया हुआ था।

सालन के माथे पर एक मोटी सलवट उभरी और ऐसा लगा जैसे उन्होंने अपनी मानसिक शक्ति का इस्तेमाल किया हो। ज़मीन से एक साथ कई जोड़ी हाथ बाहर निकले और उन्होंने कसकर जरूस को जकड़ लिया। अब वो बीच हवा में लटक गया था। अगले ही पल एक 'छनाका' हुआ और कुप्पी जैसी रोशनी का वो घेरा बिखर गया। उन हाथों ने जरूस को सावधनी से ज़मीन पर उतार दिया।

'मेरे ख़याल से तुम्हें ये खेल बन्द करना चाहिए लैनीगल...और अपनी उम्र का ख़याल करते हुए, वापस लौट जाना चाहिए।' थोरोज़ की छोटी–छोटी गोल आँखें लैनीगल के चेहरे पर गड़ गईं।

लैनीगल ने क्रोध में, उजड़े–प्रेतों की तरफ़ देखा और सारा जत्था एकदम थोरोज़ पर टूट पड़ा। इससे पहले वो थोरोज़ तक पहुँच पाते, उस बोहिया–हकूक की हथेलियों में उगे सींगों से, एक के बाद एक, ढेर सारे नोकीले सींग पूरी रफ्तार से निकले और उजड़े–प्रेतों को ढेर कर दिया।

'ओहह...लैनीगल...तुम्हें कुछ और मज़बूत साथी खोजने चाहिए थे।' थोरोज़ ने मुस्कराते हुए कहा।

इस व्यंग्य पर वो जैसे तिलमिला गया। उसने अपने हाथ में पकड़ा लकड़ी का डण्डा सीध किया और उस कछुए को आगे की तरफ़ हाँका, जिस पर वो बैठा हुआ था। कछुआ, अपने भारी पाँवों से बोहिया–हकूक को कुचलने के लिए आगे बढ़ा। तभी सालन की भौंह थोड़ी तिरछी हुई, ज़मीन से निकलकर, मिट्टी से बनी ज़ंजीरों ने कछुए के चारों पैरों को जकड़

लिया।

जंजीरें, कछुए को जमीन के भीतर खींच रही थीं। विशाल कछुआ छूटने के लिए पूरी ताकत लगा रहा था लेकिन उसके पाँव, जमीन में धँसने लगे। कुछ ही पलों में वे घुटनों तक जमीन में समा गया। जितना वो भीतर समा रहा था, मिट्टी की जंजीरें उतना ही उसे और कसती जा रही थीं। कुछ ही देर में कछुआ गर्दन तक जमीन में समा गया। लैनीगल, छलाँग मारकर उसके कवच से कूद गया। अब वो जमीन पर खड़ा था।

जंग की भयानकता और ताकत इतनी ज्यादा थी कि लगभग दोनों ही तरफ की सेनाओं की सारी योजनाएँ असफल हो गईं। तीनों मोर्चे, जिन पर जरूस, मकास और सलार तैनात थे, खत्म हो चुके थे। अब जिसके सामने जो दुश्मन पड़ रहा था, वो उससे जूझ रहा था। बाँई तरफ सलार के साथ कैफुआन पस्तर, वृक्षमानव जिल्वोकाट, वुन्टनब्रॉस, हैबूला और हूनास्पॉटी थे। पूरी टुकड़ी, इस वक्त उस झुण्ड से जूझ रही थी, जिसमें कुछ कोहान–कोहस और कुछ पर्वताकार असनोच थे।

जंग लड़ते–लड़ते, मकास और पर्सीना एक–दूसरे के बहुत पास आ गए। पर्सीना इस वक्त एक जल–पिशाच से जूझ रही थी, जो उसे अपनी लम्बी जीभ में लपेटना चाहता था और मकास उस उजड़े–प्रेत का सामना कर रहा था, जो कई बार उसके ऊपर थूकने की कोशश कर चुका था। एक पल ऐसा भी आया, जब दोनों एक–दूसरे के इतने पास आ गए कि उनके जिस्म आपस में छू गए।

मकास ने चौंककर उसकी तरफ देखा। एक जल–पिशाच पर्सीना को असावधन पाकर उस पर हमला करने वाला था। उसकी हथेली में दबा एक लम्बा छुरा सनसनाता हुआ निकला और उस जल–पिशाच के कण्ठ में गड़ गया, जिसकी जीभ, पर्सीना को बस जकड़ने ही वाली थी। उसने पलटकर देखा, हवा में उड़ते उस जल–पिशाच के कण्ठ में धँसा वो तीर झनझना रहा था, जो पर्सीना के धनुष की डोरी से निकला था।

उसने शुक्रिया अदा करने वाली नज़रों से, पर्सीना की तरफ़ देखा और उस वरमोस पर हमला करने लगा, जो तेज़ी से उसकी तरफ़ लपक रहा था। दोनों एक बार फिर अपनी–अपनी जंग में शामिल हो गए।

जैल्डॉन के इक्कीस गुरुओं ने लैनीगल को चारों तरफ़ से घेर रखा था। उसका हर वार, हर कोशिश बेकार जा रही थी। लैनीगल की मदद के लिए, डैरकोसों का एक जत्था आगे बढ़ा। क्रोध में फूफलते–पिचकते उनके नथुने और सुर्ख़ आँखें देखकर, किसी का भी दिल दहल सकता था। वो पूरी ताक़त से टूट पड़े। डैरकोसों को उनके साथ उलझाकर, लैनीगल आहिस्ता से दूसरी तरफ़ खिसक गया।

वृक्षमानव जिल्वोकाट और हूनास्पॉटी एक अलग मोर्चे पर उलझे हुए थे। ढेर सारे वरमोस उनके पीछे पड़े थे। उनमें से कई ने हमला करते–करते उल्टी कर दी, जिसमें से निकलने वाले सफेद अण्डे फूट गए और उनमें से दूसरे वरमोस निकलकर बड़े होने लगे।

'ये तो खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहे।' हूनास्पॉटी ने झल्लाकर जिल्वोकाट की तरफ़ देखा।

'जितनों को निपटाते हैं, उतने ही और निकल आते हैं।' जिल्वोकाट ने एक वरमोस से जूझते, उसकी बात का जवाब दिया।

इस बार दो वरमोस ने उन पर हमला करके उल्टी करनी चाही लेकिन जिल्वोकाट की पेड़ की जड़ जैसी उँगलियाँ, वरमोस की गर्दन पर कस गईं। उसकी उँगलियाँ लगातार बढ़ती जा रही थीं। वरमोस का गला भिंचकर रह गया। दूसरी तरफ़ हूनास्पॉटी भी उनमें कई को निपटा चुका था।

ये जंग सुबह से शाम होने तक चलती रही। युद्ध का कोई परिणाम नहीं निकल रहा था। दोनों तरफ़ भारी नुक़सान हुआ था लेकिन जंग ख़त्म होने का नाम नहीं ले रही थी। सूरज आहिस्ता–आहिस्ता अपनी रोशनी समेटकर, रात के दुशाले में दुबकना चाहता था। आसमान पर छाई लाली और रक्त से लाल ज़मीन में कोई ख़ास फ़र्क़ नज़र नहीं आ रहा था। फिर अचानक जैसे चमत्कार हुआ...नीली रोशनी का एक तेज़ झपाका हुआ और जैल्डॉन की पूरी सेना, पलक झपकते ग़ायब हो गई। उनसे लड़ने वाले योद्धा तब हक्के–बक्के रह गए, जब अपने सामने खड़ा दुश्मन, पलक झपकते ही उन्होंने ग़ायब पाया।

'ये क्या हुआ? एकदम पूरी सेना कैसे ग़ायब हो सकती है?' मकास ने पर्सीना की तरफ़ देखते हुए कहा।

उसने ऐसी नज़रों से उसकी तरफ़ देखा, जैसे खुद भी यही सवाल उससे करना चाहती हो। हर कोई हैरान था, इतना भयानक युद्ध इस तरह अचानक बीच में कोई सेना नहीं छोड़ सकती। आहिस्ता–आहिस्ता सब एक जगह एकट्ठा हुए।

'हैरानी की बात है...बिना किसी वजह, इस तरह वो भाग नहीं सकते। जरूर इसमें दुश्मन की कोई चाल है।' सलार ने थोरोज की तरफ सवालिया नजरों से देखते हुए कहा। थोरोज ने फैगुअस और बाकी चार बूढ़े फकीरों की तरफ देखा, जो चलकर उनके पास तक आ गए थे।

'कोई भी असावधान न हो। दुश्मन फिर हमला कर सकता है।' फैगुअस ने योद्धाओं की तरफ देखते हुए कहा। घायलों को एक तरफ लिटाया जा रहा था। मकास, सलार और जरूरा तीनों अब एक साथ थे।

'उन्होंने उस पानी को हासिल करने की पूरी कोशश की लेकिन सफल नहीं हो सके, हो सकता है इसी वजह से उन्हें वापस लौटना पड़ा हो?' कैफूआन पत्तर ने सालन की तरफ देखते हुए कहा।

'नहीं...ये वजह नहीं हो सकती। वो इस तरह वापस भागने वालों में नहीं हैं। इसमें जरूर शातिर लैनीगल की ही कोई चाल है। जिस तरह से पूरी सेना गायब हुई, उससे ऐसा लगता है कि लड़ने वालों को भी नहीं पता था कि उन्हें गायब किया जा रहा है। वो पूरी ताकत से जूझ रहे थे।' सालन के होठ आहिस्ता से हिले

'**पानी**...वो पानी...वो पानी कहाँ गया? सुराही गायब है।' जरूस ने बदहवासी में अपनी झोली को टटोलते हुए कहा।

वो पागलों की तरह अपनी झोली में खोज रहा था, जिसे उसने कसकर अपने जिस्म से बाँध हुआ था। हर किसी ने चौंककर जरूस की तरफ देखा, उसके चेहरे पर बदहवासी ने अपनी चादर बिछा दी थी।

'ठीक से देखो...' मकास ने तेज आवाज में कहा।

'कहीं नहीं है...वो सुराही हर पल मेरे पास थी। एक–एक पल मेरा ध्यान उसी पर था, ऐसे कैसे गायब हो सकती है।' जरूस के चेहरे पर अब चिन्ता नजर आने लगी।

'सुराही, मैदान में कहीं नहीं है, हम महसूस कर सकते हैं।' सालन की आवाज ने हर किसी की शंकाओं को जगा दिया।

'ओहह...इसका मतलब वो इसी वजह से गायब हो गए, क्योंकि उनका काम पूरा हो गया।' पर्सीना ने अपनी बड़ी–बड़ी पलकें झपकाते हुए कहा।

'नहीं...ऐसा नहीं लगता, वो उसे इस तरह बीच में नहीं रोकने वाला। जरूर इसके पीछे कोई खास वजह है।' थोरोज़ ने दूर पैफले अँधेरे की तरफ देखते हुए कहा।

'हम महसूस कर सकते हैं, जैल्डॉन की सेना, अब दूर–दूर तक कहीं नहीं है।' फैगुअस ने गम्भीर आवाज में कहा।

हर किसी की चिन्ताएँ बढ़ती जा रही थीं। आहिस्ता–आहिस्ता रात का अँधेरा मैदान को घेरने लगा। आसमान पर चमकता चाँद, आज एक अजीब–सी लाली लिए हुए निकला।

'वो सुराही को हासिल कर चुका है, लेकिन उस पानी को अब भी हासिल नहीं कर सकता।' सालन की आवाज़ में सख्ती थी। 'उसे ये नहीं मालूम, ऐसा इंतज़ाम किया गया है, अब उस सुराही को केवल तब खोला जा सकता है, जब ये तीनों नौजवान उसे एक साथ खोलने की कोशिश करें। इनके सिवा अब उस सुराही को दुनिया की कोई ताकत नहीं खोल सकती। जैसे ही उसे इस बात का अहसास होगा, वो दोबारा हमला करेगा। हमें बेहद सावधन रहना होगा और तैयार भी।'

तीनों के ज़ेहन में वो पल दौड़ गए, जब काठ–घर में सालन ने अपनी मानसिक शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए, सुराही को बन्धित करते हुए कहा था–'अब इस सुराही को केवल तब खोला जा सकता है, जब तुम तीनों इसे एक साथ खोलने की कोशिश करो। अगर जंग में ये किसी तरह उसने हासिल कर भी ली, तो भी वो कुछ हासिल नहीं कर पाएगा।

'हमें सुराही वापस हासिल करनी होगी। अगर जैल्डॉन ने किसी तरह उस पानी को हासिल कर लिया तो फिर उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं *हरा* सकती।' थोरोज़ की आवाज़ पर हर कोई चौंक गया।

'हाँ, अगर उसने वो पानी पी लिया, जिसमें गीलापन नहीं होता तो फिर उसे कोई ख़त्म नहीं कर सकता।' फैगुअस ने आहिस्ता से आगे बढ़ते हुए कहा।

तीनों इस बात को जानते थे कि जैल्डॉन एक शर्तिया–मौत से बचने के लिए उस पानी को हासिल करना चाहता है मगर ये जानकारी उनके लिए एकदम नई थी कि उसके बाद उसे कोई हरा नहीं पाएगा। केवल वो तीनों ही नहीं, बहुत सी आँखें सवालिया नज़रों से फैगुअस और थोरोज़ की तरफ देख रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे सालन को भी वो बात पता है, जिसका वो दोनों ज़िक्र कर रहे थे।

'सदियों पहले, एक जलता हुआ विशाल पत्थर ज़मीन पर गिरा था। वो बेहद विशाल था मगर ज़मीन तक

पहुँचते–पहुँचते उसका ज्यादातर हिस्सा जलकर राख में तब्दील हो गया। वो बेहद खास पत्थर था, बेहद ख़ास...इतना खास कि पूरी धरती पर उसके जैसा एक भी पत्थर नहीं है। दस हजार साल तक, वो एक झरने के नीचे पड़ा रहा और उस पर लगातार पानी गिरता रहा। कहते हैं, हज़ारों साल तक उसके ऊपर पानी गिरने के बाद, उस पत्थर के भीतर कुछ पानी इकट्ठा हुआ, जो बहुत कम मात्रा में था लेकिन हैरतअंगेज रूप से, पत्थर ने पानी के **'गीलेपन'** को बाहर ही रोक दिया था। रहस्यमय पत्थर के भीतर, जो थोड़ा–सा पानी पहुँचा, वो पानी का वो शुद्धतम रूप था, जिसमें *'पानी'* के सिवा और कुछ भी नहीं था, *गीलापन* भी नहीं। रहस्यदर्शियों ने खोजा कि उस पानी को पीने वाला *'अपराजेय'* हो सकता है। उसके बाद पूरी दुनिया के रहस्यदर्शी और वो सब ताकतें उसकी खोज में जुट गईं, जो किसी न किसी वजह से उसे हासिल करना चाहते थे।' सालन ने एक बार नजर उठाकर सबकी तरफ देखा।

एक गहरी साँस लेकर उन्होंने फिर बोलना शुरू किया, 'सदियों तक किसी को पता नहीं चला कि वो पत्थर दुनिया के किस कोने में है। दुनिया भर की काली ताकतें उसे खोजने की कोशिश कर रही थीं लेकिन फिर रहस्यदर्शियों के एक समूह ने उसे खोज निकाला। उन्होंने उस पानी को एक सुराही में किया और उसे छुपाने का एक अदभुत तरीका खोजा। वो पानी, किसी के भीतर महत्त्वाकांक्षा, ताकत और शाश्वत–जीवन की भूख पैदा कर सकता था, इसलिए इतना कठिन इंतज़ाम किया गया कि किसी भी हालत में कोई दुष्ट ताकत उसे हासिल न कर सके। रहस्यदर्शियों ने तीन ऐसी शर्तें तय कीं, जिनका संगम इस जमीन पर इससे पहले कभी नहीं हुआ था। उन्होंने व्यवस्था की, केवल वही इसे हासिल कर सकता है, जो *आम-नक्षत्र में जन्मा ख़ास-बच्चा* हो, दूसरा, जो *रूहानी* और *जिस्मानी-कीमिया* से गुजरा हो और तीसरी शर्त ये सोचकर उन्होंने रखी कि इसे केवल समय ही पूरा कर सकता है और कोई नहीं और वो शर्त थी कि ऐसा करने वाले *'तीन'* लोग हों। रहस्यदर्शियों ने सैंकड़ों सदियों आगे तक के सारे रहस्यों की सीवन जैसे उधेड़ डाली लेकिन भविष्य के गर्भ में कहीं भी उन्हें ऐसा कोई संकेत नहीं मिला, जब ये तीनों शर्तें पूरी करने वाला कोई बच्चा जन्म ले रहा है। हज़ारों बरसों के भविष्य में झाँकने पर भी, उन्हें कोई एक बच्चा तक नहीं दिखा। फिर तीन बच्चे, जो इन शर्तों को पूरा कर रहे हों, उनके होने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता था।' सालन ने एक बार *गहरी* नज़रों से थोरोज़ की तरफ देखा।

पाँचों बूढ़े फकीर, सालन और थोरोज़ के चेहरों को छोड़कर हर चेहरा, इस रहस्यमयी दास्तान को अवाक्–सा सुन रहा था। सालन वक्त के चेहरे पर चढ़ी सदियों पुरानी गर्द को झाड़कर साफ़ कर रहे थे। जंग के उस मैदान में सामने आने वाला ये रहस्य, हर किसी को अचम्भित कर गया। सब उनके चेहरे की तरफ़ इस तरह देख रहे थे जैसे उनके मुँह से निकले एक–एक शब्द को अपने कानों से पी जाना चाहते हों।

'...लेकिन वक्त के कुएँ में कितना भी गहरा जाओ, उसकी तली कभी हाथ नहीं आती। जहाँ तक रहस्यदर्शियों ने भविष्य में झाँका था, उससे अगली ही सदी में ऐसे तीन बच्चे जन्म लेने वाले थे, जो इन तीनों शर्तों को पूरा कर रहे थे। वक्त गुजरता गया और ये रहस्य समय की गर्द में दबता चला गया कि ऐसा पानी कहीं छुपाया गया है, जिसमें गीलापन न हो। सदियों बाद जब जैल्डॉन उस रहस्यमयी किताब को लेकर भागा तो उसे पता चला, किताब को धेखे से पूरा करने की वजह से एक शर्तिया–मौत उसका इंतज़ार कर रही है। वो जानता था कि उस मौत से उसे केवल वो पानी बचा सकता है। उसने सौ साल पहले इस षडयन्त्रा की शुरुआत की, जो आज इस जंग के होने तक जारी है।' सालन बोलते–बोलते रुक गए और फिर से थोरोज़ की तरफ़ *अजीब* नज़रों से देखने लगे।

हर कोई ख़ामोशी से सदियों पुरानी इस दास्तान को सुन रहा था। तभी सैनिकों की भीड़ से बिल्चू लोबामोस निकलकर बाहर आया। उसके पूरे जिस्म पर इस वक़्त, धूल जमी हुई थी।

उसने एक बार सबकी तरफ़ देखा और अपने पतले होंठ खोले, 'शातिर लैनीगल को कुछ देर पहले इदिया–इमीन टापू पर देखा गया है। भेदियों ने ख़बर दी है कि पूरा टापू, सेना से लगभग ख़ाली हो गया है। कहीं कोई सैनिक और योद्धा नज़र नहीं आ रहा।

'...इसका मतलब उसने पूरी सेना को वापस बुला लिया है मगर इसकी वजह क्या हो सकती है? सेना टापू पर नहीं गई तो कहाँ गायब हो गई?' वृक्षमानव जिल्चोकाट ने जैसे खुद से ही सवाल किया।

'वजह चाहे जो भी हो, उसने वो पानी हासिल कर लिया है, जो उसे शाश्वत–जीवन प्रदान कर सकता है। किसी न किसी तरह वो उसे उस सुराही से बाहर निकालकर इस्तेमाल भी कर ही लेगा।' वुन्टनब्रॉस ने चिन्तित आवाज़ में कहा।

'नहीं...वो ऐसा हरगिज़ नहीं कर पाएगा। उस सुराही को इन तीनों के सिवा अब कोई और नहीं खोल सकता।' सालन ने जैसे पथरीले स्वर में कहा।

'अब हमें क्या करना चाहिए?' मकास ने सालन की तरफ़ देखा।

सालन ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया और *सवालिया* नजरों से थोरोज की तरफ देखा।

'वो सुराही को खोल नहीं सकता लेकिन ऐसी कोई न कोई युक्ति ज़रूर खोज सकता है, जिसका इस्तेमाल करके वो सुराही से पानी बाहर निकाल सके।' फैगुअस ने अपने पतले होठों को आपस में भींचते हुए कहा।

'लेकिन उससे पहले ये जरूर है महान *थोरोज़* कि आपको आपके किए की सज़ा दे दी जाए।' दुनिया के सबसे बुजुर्ग शिशु के चेहरे पर इस वक्त क्रोध और पथरीलापन तैर रहा था। हर किसी ने चौंक कर सालन की तरफ देखा।

'हाँ, और साथ ही चाँदी जैसी रंगत वाले इस नौजवान को भी इसके किए की सजा मिलनी ही चाहिए।'

सालन की बात सुनकर हर कोई हैरान था। सलार और थोरोज अजीब–सी आँखों से सालन की तरफ देख रहे थे। तभी सालन की पलकें हिलीं और सलार और थोरोज के इर्द–गिर्द पत्थर की मोटी–मोटी सलाखें, ज़मीन से निकलनी शुरू हो गई। जब तक वो संभल पाते या कुछ कह पाते, तब तक दोनों पत्थर के मजबूत पिंजरे में कैद हो गए।

'ये क्या गुस्ताखी है सालन?' फैगुअस ने गुस्से से सालन की तरफ देखते हुए कहा। 'महान थोरोज़ हम सभी के लिए सम्माननीय हैं।' उसकी आवाज में जैसे गुर्राहट शामिल हो गई थी।

तभी पिंजरे के भीतर वाली जमीन से मिट्टी के बने, कई जोडी हाथ बाहर निकले और उन्होंने सलार और थोरोज़ के पैरों को कसकर जकड लिया।

मकास की आवाज क्रोध की अधिकता से धक रही थी। 'आप हमारे साथ इस तरह का व्यवहार नहीं कर सकते सालन...इससे पहले कि हमें बेअदबी करनी पड़े, सलार और महान थोरोज से अपने किए की माफी माँगनी चाहिए आपको।' हर कोई इस घटनाक्रम पर हैरान था।

'माफी तो ये दोनों माँगेंगे और अपने किए की नहीं, अपनी जान बख़्श देने की माफी।' सालन की आवाज जैसे किसी अँधेरे कुएँ से आ रही थी।

'शायद आप *सही* कहते हो सालन...' इस बार हूनास्पॉटी की आवाज़ सुनकर हर किसी की पेशानी पर बल पड गए।

सलार और थोरोज अब तक एकदम चुपचाप पिंजरे में खड़े थे। हूनास्पाटी ने आगे बढ़कर दोनों पिंजरों की पथरीली सलाखें अपने दोनों हाथों में कस लीं और अगले ही पल सलाख़ें दहकनी शुरू हो गईं। दो पल में ही पत्थर की बनी सलाखें लोहे की तरह दहकने लगीं। पिंजरे के भीतर खड़े सलार और थोरोज़ के होठों से चीखें निकलनी शुरू हो गई। इससे पहले, कोई उसे रोक पाता या कुछ कह पाता 'भक्क' की एक आवाज़ हुई, सलार और थोरोज़ के जिस्म आग की लपटों में घिर गए। एक पल में आग बुझ गई और अब वहाँ सलार और थोरोज़ की जगह पिंजरे में क़ैद, दो उजड़े–प्रेत खड़े थे।

'कैसे हो दोस्तो?' सालन ने व्यंग्य से उन उजड़े–प्रेतों की तरफ देखते हुए कहा।

हर किसी की आँखों में जैसे सवालों की झड़ी लगी हुई थी। वो दोनों अब भी उन हाथों से छूटने के लिए कसमसा रहे थे, जो ज़मीन से निकलकर उन्हें जकड़े हुए थे।

'महान थोरोज़ और सलार को बन्दी बना लिया गया है। उनकी जगह ये दो बहुरूपिये चुपचाप शामिल हो गए।' हूनास्पॉटी की आवाज़ ने जैसे एकदम उस रहस्य के मुँह पर तमाचा मार दिया, जिससे वो सब जूझ रहे थे। दोनों उजड़े–प्रेत उस बन्धन से मुक्त होने के लिए बुरी तरह व्याकुल थे।

सालन की आँखें थोड़ी तिरछी हुई और उन हाथों ने, दोनों उजड़े–प्रेतों को ज़मीन के भीतर खींचना शुरू कर दिया। वो बुरी तरह छटपटा रहे थे लेकिन किसी भी तरह उस जकड़ से निकल नहीं पा रहे थे। कुछ ही पलों में दोनों उजड़े–प्रेत ज़मीन के भीतर समा गए।

'ज़रूर उन्हें तभी बन्दी बनाया गया है, जब पूरी सेना एक साथ ग़ायब हुई।' पर्सीना ने अपने एक पैर का वज़न दूसरे पैर पर डालते हुए कहा।

'हमें इदिया–इमीन टापू जाना होगा।' फैगुअस ने जैसे निर्णायक स्वर में कहा।

'महान थोरोज़ और उस नौजवान को बन्दी बनाने के पीछे, शायद उसका भी यही उद्देश्य है फैगुअस।' वुन्टनव्रास ने बूढ़े फ़कीर की तरफ एकटक देखते हुए कहा।

'वो अपने गढ़ में सुरक्षित है और शायद वो यही चाहता है कि हम इदिया–इमीन जाने की ग़लती करें और उसे अपनी योजना में सपफलता मिल जाए।' कैफुआन पस्तर ने ठहरे हुए स्वर में कहा।

'जो भी हो...हम उन दोनों को मौत के मुँह में नहीं छोड़ सकते।' मकास के होंठों से जैसे फैसला निकला।

'कहीं ऐसा तो नहीं, जो वो चाहता है, न चाहते हुए भी हम उसी जाल में फँसते जा रहे हों?' वुन्टनव्रास ने जैसे कैफुआन पस्तर की बात का समर्थन किया।

'वो चाहे कोई भी जाल बिछा ले लेकिन हमें उन्हें छुड़ाना ही होगा। चाहे इसके लिए हमें अपने प्राण ही क्यों न त्यागने पड़ें।' जरूस की आवाज़ में तैर रहा जज़्बा हर किसी ने साफ़ महसूस किया।

'हमें एक सही योजना चाहिए।' मकास ने सबकी तरफ देखते हुए कहा।

'...और उसके लिए इंतज़ार की नहीं, विचार की ज़रूरत है।' फैगुअस की आवाज़ में गम्भीरता थी।

'हमें इसी वक्त हर पहलू को जाँच-परखकर, सब कुछ तय करना होगा।' मकास ने आगे बढ़ते हुए कहा। हर सिर ऐसे सहमति में हिला जैसे पूरी बेचैनी से अगली योजना जानना चाहते हों।

उस रात उन्होंने बस सुबह होने का इंतज़ार किया। वो रात बहुत बेचैन भी थी और ख़ास भी। एक तरफ़ जहाँ तीनों भाई जीवन में कभी एक-दूसरे से अलग नहीं हुए थे, वहीं ऐसे भी बहुत से थे, जो कभी थोरोज से एक पल के लिए भी अलग नहीं हुए थे। उनमें से कई बहुत बेचैन थे, कोटाकोटस भी उन्हीं में से एक था, चाँदनी रातों का छलावा। दिन में हुए युद्ध में वो हिस्सा नहीं ले सकता था लेकिन उस तक ये खबर पहुँचने में देर नहीं लगी कि थोरोज़ को बन्दी बना लिया गया है। जितनी व्याकुलता मकास और जरूस के सीने में थी, उतनी ही बेचैनी कैटाकोटस के भीतर भी थी। उस रात वो जंग के मैदान पर देर तक इधर-उधर दिखाई देता रहा।

इस जंग में भारी खून-खराबा हुआ। सबसे हैरान करने वाली बात ये थी कि अपने चरम पर पहुँची ये जंग, अचानक इस तरह खत्म कर दी गई, जिसके बारे में कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। जैल्डॉन की पूरी सेना का अचानक ऐसे गायब हो जाना और उसके बाद सलार और थोरोज़ को रहस्यमय तरीक़े से बन्दी बनाया जाना, इन दो बातों ने पूरे युद्ध की तस्वीर ही बदल दी। ये तय किया गया कि इदिया-इमीन टापू पर जाना होगा लेकिन वहाँ जाने वाले कौन-कौन होंगे, ये फैसला होना अभी बाक़ी था। हर आँख पूरी बेचैनी से सुबह के सूरज का इंतज़ार कर रही थी।

मेरी सफेद पलकें और बूढ़ी आँखें भी पूरी बेचैनी से इंतज़ार कर रही हैं। उन पलों का इंतज़ार, जब मेरी छेनी, टाँकी और हथौड़ा, इस दास्तान को खोदकर विश्राम की मुद्रा में आएँगे। कितने बरसों से सुबह के कितने सूरज मैंने देखे और सैंकड़ों सुबह ऐसी भी थीं, जिन्हें मैं देख ही नहीं पाया क्योंकि उस वक्त मेरी उँगलियाँ, मोम के उन चौखटों को इन गुफाओं में खोदने में मसरूफ़ थीं, जिन पर इस गाथा की हैरअंगेज़ घटनाएँ दर्ज हैं।

आज की सुबह भी मैं बाहर नहीं निकला। मेरी हथौड़ी मोम के उन चौखटों को पत्थर पर खोद रही है, जिन पर संथाल के बेटों और उन योद्धाओं के समुद्री सफ़र की दास्तान लिखी है। वो समुद्री सफ़र, जो उन्होंने 'सौ-परत वाले-जलपोत' में पूरा किया। जिन पर दर्ज है, वो पहली ख़ौफ़नाक मुलाक़ात, जो 'उससे' हुई, जो इस पूरे षड़यन्त्रा का सूत्राधार था। वो चौखटे, जिन पर लिखी है वो घटना, जिसने उस ख़ास पानी को सुराही से बाहर निकाल दिया।

जैल्डॉन

अध्याय उनतीस

रात भर के विचार–विमर्श और योजनाओं के बाद, तय किया गया, बन्धकों को छुड़ाने और जैल्डॉन से पानी और एल्गा–गोरस हासिल करने के लिए, इदिया–इमीन टापू जाना होगा। सरदारों और महासभा के सदस्यों का मत था कि पूरी सेना लेकर टापू पर हमला किया जाए लेकिन इस राह में सबसे बडी मुश्किल, उस विशाल सेना को समन्दर पार कराने की थी। लाखों की तादाद में सैनिकों और योद्धाओं को टापू तक पहुँचाना लगभग असंभव कार्य था। बहुत सोचने पर भी इस समस्या का कोई हल नहीं मिल पा रहा था। कोई हल न मिलने पर तय किया गया कि योद्धाओं का एक जत्था टापू पर हमला करे मगर इस विचार को ये कहकर खारिज कर दिया गया कि उसकी सेना और जैल्डॉन की ताकतों से मुट्ठी भर योद्धा कैसे लड़ पाएँगे।

'हमें योद्धाओं के जत्थे के साथ ही टापू पर हमला करना होगा। समझने वाली बात ये है, जितनी विशाल सेना उसने टापू पर इकट्ठा की है, वो केवल सेना का एकत्रीकरण–केन्द्र है, जंग का कोई मैदान नहीं। सेना को लड़ने के लिए जगह चाहिए। इदिया–इमीन टापू पर उसने बड़ी तादाद में सेना इकट्ठा की है क्योंकि वहाँ ऊँची पहाड़ियों में बनी हजारों गुफाएँ हैं, जो सैनिक जमावड़े के लिए सबसे सही जगह है लेकिन अगर वहाँ उसके साथ जंग होगी तो वो पूरी सेना एक साथ हमारे ख़िलाफ़ नहीं उतार सकता। मजबूरन उसे टुकड़ियों में अपने सैनिक भेजने होंगे। केवल उतने सैनिक, जितने आसानी से लड़ सकें। अगर उस छोटे टापू पर उसने पूरी सेना हमारे ख़िलाफ़ उतार दी, तो लड़ना तो दूर, सैनिकों को खड़े होने तक के लिए पर्याप्त जगह नहीं बचेगी।' पर्सीना ने सभा के सदस्यों की तरफ़ देखते हुए कहा।

'हम गीगा–टर्सिया की राजकुमारी से सहमत हैं।' सालन ने अपनी पलकें बन्द करते हुए कहा। 'लेकिन सेना गायब होकर टापू पर नहीं पहुँची। एल्गा–गोरस का शाप उसे भीतर से कमज़ोर कर रहा है। उसकी ताक़तें ढीली पड़ी हैं और योद्धा यहाँ से गायब होकर वापस अपने–अपने क़बीले पहुँच चुके हैं।' सालन ने आहिस्ता से अपनी आँखें खोलीं।

'ये तो शानदार खबर है लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि अगर हमारे योद्धाओं का जत्था वहाँ फँस गया तो कोई बाहरी मदद जब तक पहुँचेगी, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।' हूनास्पाटी ने अपने माथे पर सलवट डालते हुए कहा।

'मदद...हाँ, तुम सही कहते हो अग्नि–योद्धा हूनास्पाटी...अगर ऐसा हुआ तो कोई उनकी मदद के लिए नहीं पहुँच पाएगा।' वुन्टनब्रास ने हूनास्पाटी के साथ सहमति देते हुए कहा।

'हमें पूरी योजना बनाकर चलना होगा, मेरे पास इस बारे में एक योजना है अगर महासभा के सदस्यों और तमाम सरदारों की इजाज़त हो तो मैं उसे सामने रखना चाहूँगा।' मकास ने सबकी तरफ़ देखते हुए कहा।

'ज़रूर...अगर ऐसी कोई योजना है तो सभी उसे सुनना चाहेंगे नौजवान!' सालन के चेहरे पर जिज्ञासा के भाव थे।

मकास ने उन्हें उस योजना से अवगत कराया, जिसके अनुसार वो बिना किसी संभावित नुक़सान के, टापू पर भी जा सकते थे और दुश्मन को उसी के घर में शिकस्त भी दे सकते थे। बहुत देर तक सब उस योजना के एक–एक पहलू पर विचार करते रहे और उस हर ख़ामी को दूर करने की कोशिश करते रहे, जिसकी वजह से कोई भी अड़चन आ सकती थी। एक लम्बे विमर्श और तैयारी के बाद लगभग सब इस बात पर सहमत हुए कि योद्धाओं का एक जत्था इदिया–इमीन टापू पर जाएगा।

'तो दोस्तो, वो वक़्त आ गया है, जब हमें कूच करना होगा। वो सारे योद्धा एक तरफ़ हो जाएँ, जिन्हें इस मोर्चे के लिए चुना गया है और बाक़ी पूरी सेना और सरदार, समुद्र–तट पर हमारे लौटने का इंतजार करेंगे। अगर हफ़्ते भर में जत्था वापस नहीं लौट पाता तो फिर आप सब टापू की तरफ़ कूच करेंगे।' फैगुअस ने हर चेहरे को गौर से देखते हुए

कहा। उसकी बात सुनकर वो सब निकलकर एक तरफ होने लगे, जिन्हें जत्थे में जाने के लिए चयनित किया गया था।

जत्थे में शामिल होने वालों में, सालन, मकास, जरूस, फैगुअस, पतला सींकड़ी, ऑथरडस्ट, गैल्जीडान, कैटाकोटस, लैसनार सरदार लैरोका, चल्कागा सरदार चबला–गलच, बजाइबैगा दानवों का सरदार होलोगा–होला, सूँसलीखेड़ा सरदार बोरियाबिस और अंशदेवों के सबसे युवा देव...स्वर्णात्मा। तेरह लोगों का ये जत्था, समन्दर किनारे तक पहुँचा और सालन ने मकास से 'सौ–परत–वाला–जलपोत' निकालने के लिए कहा। मकास ने अपनी झोली में हाथ डालकर, वो छोटा–सा जलपोत बाहर निकाला, जिसका आकार मुश्किल से उसकी हथेली के बराबर था।

उसने आहिस्ता से उसे समन्दर के पानी में छोड़ दिया। पानी को छूते ही जलपोत की परतें ऐसे खुलने लगीं जैसे एक–एक करके सैंकड़ों तहों में लिपटा हो। कुछ ही पलों में उसका आकार इतना विशाल हो गया कि अब पूरा जत्था उस पर सवार हो सकता था। जैसे ही जलपोत अपने पूर्ण रूप में आया, जरूस को उस पर 'वो' खड़ी दिखाई दी, जिसने पहले भी उनकी मदद की थी। समन्दर की जलपरी...मकाना...वो हाथ हिलाकर सबको ऊपर आने का इशारा कर रही थी।

'ऊपर आ जाओ दोस्तो! मैं कब से दोबारा समन्दर में जाने की राह देख रही थी।' मकाना के पंखुरी जैसे नाजुक होठ आहिस्ता से हिले और लकड़ी के तख़्ते से होते हुए पूरा जत्था, जलपोत के ऊपर पहुँच गया।

सबसे मिलकर मकाना बहुत खुश दिख रही थी। उसने बताया कि परिचय–सभा से लेकर युद्ध तक, हर बात उसने सुनी भी है और देखी भी है। उसे ये भी मालूम था कि इदिया–इमीन टापू पर पहुँचने के लिए, क्या योजना बनाई गई थी। सब समझ गए कि मकास की झोली में रखे जलपोत के भीतर से, वो हर घटना को देखती और महसूस करती रही है। सबके ऊपर आते ही मकाना ने इशारा किया और जलपोत को चलाने वाली रूह ने जलपोत आगे बढ़ा दिया, नीले समन्दर के सीने पर, हिचकोले लेता हुआ वो जलपोत, बहुत तेज़ी से आगे बढ़ने लगा।

जलपोत पर सवार होते ही पतला सींकड़ी गुस्से से बड़बड़ाने लगा, 'गुमनाम तिलचट्टे का ये मशहूर अण्डा जैल्डॉन... अब मेरे हाथों से बचेगा नहीं। वरमोस के मुँह से निकली गन्दी उल्टी जैसा वो शातिर लैनीगल, बदहवास बटेर का, खोया हुआ चूजा, भूखे तीतर का अफ़रा हुआ पेट...उसकी इतनी हिम्मत कि वो थोरोज़ जैसे महान व्यक्ति को बन्दी बनाए। मरे हुए मुर्गे की नाक का बाल, बेहोश कछुए के दाँत में रेंगता वो कीड़ा, अब गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फैलीटस के हाथों से नहीं बचेगा।' उसने गुस्से में मुट्ठी बाँधते हुए कहा। उसकी इन बातों पर बाकी सब, केवल मुस्कराकर रह गए।

मकाना उस बदसूरत रूह को इदिया–इमीन टापू का जलमार्ग समझाने गई थी, जिसका नाम उसने थैलोना–थैरस बताया था। जलपोत अपनी तेज़ रफ़्तार से लगातार आगे बढ़ता जा रहा था। तेज़ हवाओं और उँफची लहरों की वजह से, हिचकोले बहुत बढ़ गए।

'तुमने सब ठीक से समझ लिया है न?' सालन ने मकास की तरफ़ देखते हुए पूछा।

'हाँ, पूरी तरह से, कहीं कोई गड़बड़ नहीं होगी।' उसने पूरे विश्वास के साथ कहा।

जलपोत अब इतना आगे आ चुका था कि दूर–दूर तक कहीं न तो ज़मीन नज़र आ रही थी और न ही किनारा।

काफ़ी आगे आने के बाद, मकाना ने उनकी तरफ़ देखा–'अब हम वहाँ आ चुके हैं, जहाँ से रानी फरियाना, जलपरियों की पूरी सेना के साथ, हमारे आगे–आगे चलेंगी।'

उसने नीचे समुद्र में झाँककर देखा, कहीं कुछ नहीं दिख रहा था। सब लोग जलपोत की लकड़ी की दीवार के पास आ गए। हर कोई समुद्र में ग़ौर से देख रहा था।

'क्या तुम उन्हें देख सकती हो?' मकास ने मकाना की तरफ़ देखते हुए कहा।

'अभी सिर्फ़ महसूस कर सकती हूँ, वो सब यहीं हैं।' उसने आहिस्ता से जवाब दिया।

कुछ दूर और चलने के बाद, मकास को लहरों के बीच कुछ हलचल दिखाई दी। कुछ परछाइयाँ, जलपोत के साथ–साथ तैर रह थीं। उनकी रफ़्तार हैरतअंगेज़ रूप से तेज़ थी। सब लोग जलपोत की किनारी से देख रहे थे। वो दूर तक फैली थीं। जहाँ तक नज़र जा रही थी, वो वहाँ तक दिख रही थीं, वो शायद हज़ारों थीं। फिर उनमें से एक, पानी की सतह से ऊपर उछली, उसका आध जिस्म पानी से बाहर आ गया। वो एक बेहद ख़ूबसूरत जवान स्त्री का चेहरा था। उसने डुबकी ली और कमर से नीचे का उसका जिस्म सतह पर उभरा। वो एक जलपरी थी, जलपरी...जिनके बारे में बहुतों ने तो केवल किताबों और किस्से–कहानियों में ही पढ़ा था।

फिर एक–एक करके वो सब पानी की सतह पर उछलने लगीं। सब बला की ख़ूबसूरत और गठीले जिस्म वाली योद्धा। उनके हाथों में एक लम्बा भाला था, जिसका अगला सिरा बहुत अजीब ढँग से मुड़ा हुआ था। चेहरे का रंग हल्का

हरा, लम्बे–लम्बे बाल, बड़ी–बड़ी आँखें, जिन पर पलकें नहीं थीं। उनमें से कुछ जलपोत के एकदम पास आ गईं, जिसकी वजह से गर्दन से चिपके उनके कान और लम्बी नाक साफ दिखने लगी। उनके हाथों की उँगलियों में मेंढक जैसी झिल्ली थी और पूँछ पर हरे रंग के शल्क।

जरूस ने देखा, मकाना उनकी तरफ देखकर तेज–तेज अपना हाथ हिला रही थी। उनमें से कई ने अपना लम्बा भाला हवा में लहराकर जैसे उसका अभिवादन स्वीकार किया। फिर बहुत सारी जलपरियों के बीच से एक जलपरी उभरी, जिसके जिस्म पर काई जैसे रंग के, खूबसूरत आभूषण और सिर पर अजीब–सा एक मुकुट था। बहुत सारी जलपरियों ने उसके चारों तरफ एक बड़ा घेरा बनाया हुआ था।

'वो रानी फरियाना है।' फैगुअस ने उसकी तरफ देखते हुए कहा।

'हाँ, वही है। पिछले सौ सालों में दूसरी बार हम उसे देख रहे हैं।' सालन ने समुद्र की लहरों पर अपनी नजर गड़ाते हुए कहा।

'हमें उन्हें ऊपर बुलाना चाहिए।' मकास ने मकाना की तरफ देखते हुए कहा। उसकी इस बात पर वो बस मुस्कराकर रह गई।

'वो ऊपर नहीं आ सकतीं, हमें यहीं से उनसे बात करनी होगी।'

'ओहह...शायद तुम सही कहती हो।' मकास ने पानी में तैरती, रानी फरियाना को देखते हुए कहा।

'हम आपका स्वागत और अभिवादन करते हैं फरियाना...' सालन ने तेज आवाज में कहा। 'आपका सन्देश मिल गया था। दुनिया को तबाही से बचाने के लिए, इस जंग में आपका साथ बहुत जरूरी था।'

रानी फरियाना ने एक हाथ ऊपर उठाकर, उनका अभिवादन स्वीकार किया और एक गहरी मुस्कराहट उसके होंठों पर बिखर गई। लहरों पर तैरती जलपरियों ने एक साथ अपने भाले ऊपर उठाकर, जैसे विजय–संकेत दिया और फिर सब एक–एक करके पानी की सतह के नीचे गुम हो गईं।

'तुम अपनी माँ की ही तरह खूबसूरत हो बच्ची।' सालन ने मकाना की तरफ देखते हुए नेह से कहा। उनकी इस बात पर मकाना बस आहिस्ता से मुस्कराकर रह गई।

'माँ!' जरूस के चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे।

'हाँ, वो मेरी माँ हैं।' मकाना ने उसके चेहरे को एकटक देखते हुए कहा।

'मगर...तुम।' जरूस कुछ कहना चाहता था लेकिन उससे पहले ही मकाना ने उसकी बात पूरी कर दी।

'हाँ, तुम यही कहना चाहते हो ना कि मैं उनके जैसी क्यों नहीं दिखती? इस सवाल का जवाब तुम्हें मिल जाएगा, मगर अभी नहीं। अभी इससे ज्यादा ज़रूरी काम हैं, जो मुझे निपटाने हैं।' अपनी बात पूरी करते ही मकाना उस बदसूरत रूह की तरफ चली गई, जो जलपोत को लगातार चला रही थी।

'वो सब, अब भी हमारे साथ ही हैं, बस सतह के नीचे हैं।' बौने ऑथरडस्ट ने लहरों के नीचे होती हलचल को देखते हुए कहा।

'क्या तुम्हें मालूम है, 'वो' अपनी बाकी साथियों से अलग क्यों दिखती है?' जरूस ने ऑथरडस्ट की तरफ सवालिया नज़रों से देखा।

'हाँ, दुनिया में ऐसा कोई किस्सा नहीं, जिसे ऑथरडस्ट खानदान के बौने न जानते हों। अगर कभी कोई दास्तान घटी है, तो हम उसे जानते हैं और जिसे हम नहीं जानते, वो कभी किसी दास्तान में घटा ही नहीं।'

बौने ऑथरडस्ट ने वही पुरानी बात दोहराई, जिसे सुनकर जरूस को दोबारा वो उसका बड़बोलापन ही लगी लेकिन उसने इस बात को ज़ाहिर नहीं होने दिया।

पूरे दिन और एक पूरी रात वे समन्दर में सफर करते रहे। अगले दिन मकाना ने उन्हें बताया कि इदिया–इमीन टापू अब ज़्यादा दूर नहीं है। जलपरियों की रानी और उनकी पूरी सशस्त्रा–सेना अब भी जलपोत के आसपास ही थी। बीच–बीच में कभी–कभी मकाना उन जलपरियों की तरफ हाथ हिलाती, जिन्हें उसने अपनी बचपन की सहेलियाँ बताया था।

जरूस खुर्दबीन से, दूर समन्दर में देख रहा था, तभी उसे बहुत कुछ काला–काला नजर आया। उसने फैगुअस और सालन को पास बुलाया और उसके बारे में बताया। मकाना ने लहरों में तैरती जलपरियों को इसकी जानकारी दी। दूर

तैरने वाली वो चीज आहिस्ता–आहिस्ता पास आती जा रही थी। जलपरियों की तरफ से कुछ ही पलों में सन्देश वापस आया कि जैल्डॉन के जंगी जहाजों का एक विशाल बेड़ा उनकी तरफ आ रहा है।

खुर्दबीन से देखने पर अब साफ दिखने लगा था, वो बहुत विशाल जहाज था। दूर से देखने पर वो एक ही नजर आया लेकिन कुछ ही देर बाद उसके आसपास तैर रहे बाकी जहाज भी दिखने शुरू हो गए। वो सैंकड़ो की तादाद में थे, ऐसा लग रहा था जैसे पूरे समन्दर की छाती पर उन्ही का कब्जा हो। सामने जहाँ तक नजर जा रही थी, बस जंगी जहाज ही नजर आ रहे थे।

'क्या इस जलपोत पर कोई हथियार है?' बजाइबैगा दानवों के सरदार होलोपा–होला ने मकाना की तरफ देखते हुए कहा।

'नहीं...ये लड़ाकू जहाज नही है, इस पर चूहा मारने के लिए भी कुछ नहीं मिलेगा।' मकाना ने उसकी तरफ देखते हुए सहजता से जवाब दिया।

'हमें जल्दी ही कुछ करना होगा, वरना एक बार हम उनकी जद में आ गए तो बहुत मुश्किल हो जाएगी।' सूँसलीखेड़ा सरदार बोरियाबिस ने दूर नजर आते काले धब्बों की तरफ देखते हुए कहा।

'हम मुकाबला करेंगे, वो चाहे जितने भी हों।' मकास ने अपने होंठों को सख्ती से भींचते हुए कहा।

'ये समन्दर है नौजवान, बल्टान का मैदान नहीं। मैं अपने कौवे को पूरी खबर लाने भेजता हूँ।' चल्कागा सरदार चबला–गलच ने अपने कन्धे पर बैठे काले कौवे को उड़ने का संकेत करते हुए कहा।

कौवा अभी उसके कन्धे से उड़ा ही था कि मकाना ने तेज आवाज में उसे रोक दिया। 'नहीं...ऐसी गलती मत करना, ये समन्दर है। यहाँ किसी परिन्दे के होने का मतलब है, जमीन कहीं आसपास ही है और वो इस बात को बखूबी समझते होंगे कि यहाँ दूर–दूर तक जमीन का नामोनिशान तक नहीं है। वो इस कौवे को देखते ही समझ जाएँगे कि हम आसपास ही हैं।'

चबला–गलच ने उसकी बात सुनकर सहमति में सिर हिलाया और कौवे को अपने हाथ से संकेत किया, वो दोबारा उसके कन्धे पर आकर बैठ गया।

सब लोग, जलपोत के आगे वाले हिस्से में आकर इकट्ठा हो गए, जहाँ से दूर समन्दर पर उभरते वो विशाल जलपोत अब साफ नजर आने लगे थे। पूरा जत्था मुकाबले के लिए तैयार हो गया। जंगी बेड़ा अभी बहुत दूर था लेकिन इतना पक्का था कि उस दूरी से उन्होंने भी जलपोत को देख लिया था।

पतले सींकड़ी ने समन्दर की तरफ देखा–'काले कौवे की बीट से निकला वो अधमरा केंचुआ जैल्डॉन...चाहे कितनी भी सेना भेज ले लेकिन इस बार वो गम्पूग्रास के हाथों से बचेगा नहीं। तितली के खोल में छिपा वो लार्वा, चींटी के अण्डे से झाँकता नवजात चींटा, कमबख्त ने नाक में दम कर दिया। आने दो इन नामुरादों को, पानी में डुबा–डुबा कर न मारा तो मेरा नाम गम्पूग्रास वल्स...' इससे पहले सींकड़ी की बात पूरी हो पाती, मकाना ने बीच में ही उसकी बात काट दी।

'शान्त...शान्त मेरे पतले दोस्त...इतने क्रोध की कोई जरूरत नहीं है। हमें उनसे लड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी।' मकाना के खूबसूरत होंठों पर एक बारीक–सी मुस्कराहट थी। उसकी इस बात पर हर कोई एकदम चौंक गया।

'हाँ, आप बस मजबूती से पकड़कर खड़े रहिए। मैं अभी इन जंगी जहाजों से बचने का इंतजाम करती हूँ।' उसने कहा और तेजी से उस तरफ चली गई, जहाँ वो बदसूरत रूह, थैलोना–थैरस, जलपोत को चला रही थी।

कुछ पल बाद वो वापस लौटी और मुस्कुराते हुए कहा, 'उन्होंने हमें देख लिया है लेकिन घबराने वाली कोई बात नहीं है, वो अभी इतनी दूर हैं कि कुछ समझ नहीं पाएँगे।'

मकाना की रहस्यमयी बातें किसी की समझ में नहीं आ रही थीं, न ही ये समझ आ रहा था कि वो क्या करने जा रही है।

फिर कुछ पल बाद उनकी समझ में आ गया कि वो आखिर क्या करने जा रही थी। सौ–परत–वाला–जलपोत, जिस तरह से खुलकर विशाल हुआ था, उसी तरह उसकी तहें 'खट–खट' करके सिमटती जा रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे कोई कपड़े को तहों में लपेटता जा रहा हो। हैरानी की बात ये थी कि वो सब जलपोत पर थे लेकिन सिमटती तहों से न तो उन्हें कोई नुकसान हो रहा था और न ही ये पता चल रहा था कि छोटे होते जलपोत के साथ–साथ उनके जिस्म भी उसकी अनुपात में घटते जा रहे हैं।

कुछ ही पलों में जलपोत की सारी परतें उसके भीतर सिमट गईं और उसका आकार अब मात्र इतना रह गया,

जितना किसी भी साधरण इंसान की हथेली पर समा सके। शान्त समन्दर की सतह पर वो नन्हा जलपोत तेज़ी से आगे तैर रहा था। वो सब ये महसूस तो कर रहे थे कि जलपोत अब तहों में सिमटकर छोटा हो गया है लेकिन अपने जिस्मों के छोटे होने को वो समझ नहीं पा रहे थे, सिवाय सालन और फ़ैगुअस के।

दुश्मन का जंगी बेड़ा अब बेहद पास आ गया था। उनके विशाल जहाज़ और उन पर सवार हिंसक सैनिक वो साफ़ देख पा रहे थे। सबसे आगे वाले जहाज़ पर शातिर लैनीगल खड़ा था, जिसके हाथों में बाँस की बनी एक लम्बी दूरबीन थी, जिसकी मदद से वो दूर समन्दर में देखने की कोशिश कर रहा था लेकिन शायद वो कुछ हैरान था। जिस जलपोत को उसने अभी–अभी समन्दर की सतह पर तैरते देखा था, वो अचानक कहाँ ग़ायब हो सकता है, ये बात शायद उसकी समझ से बाहर हो रही थी।

फिर जहाज़ों का वो विशाल बेड़ा इतना पास आ गया कि वो उनमें से एक जहाज़ की पानी में आधी डूबी तली को पार करते हुए, आगे की तरफ़ बढ़ने लगे। उस विशाल समन्दर की सतह पर जंगी जहाज़ों के बीच, वो नन्हा–सा जलपोत किसी को नजर नहीं आ सकता था। जहाज़ आगे बढ़ते जा रहे थे और वो उनके बीच से तैरते हुए इदिया–इमीन टापू की तरफ़। थोड़ी ही देर में पूरा बेड़ा उनके अगल–बगल से गुज़र गया।

बेहद सफ़ाई से वो उन जंगी जहाज़ों के बीच से निकल गए, जिन पर सवार हिंसक सेना उन्हें समन्दर के सीने पर खोज रही थी। काफ़ी आगे जाकर मकाना ने दोबारा थैलोना–थैरस नाम की उस बदसूरत रूह को संकेत किया और जलपोत दोबारा खुलने लगा। समन्दर की सतह पर वो ऐसे खुलता जा रहा था जैसे सौ पंखुड़ियों वाला कोई कमल, सूरज की धूप में अँगड़ाई ले उठा हो।

फिर जलपरियों ने सन्देश भिजवाया कि वो अब इदिया–इमीन टापू से बस थोड़ा ही दूर हैं। पूरे टापू पर सख़्त पहरा और चौकसी थी, इसलिए रानी फ़रियाना ने उन्हें अपने पीछे आने का संकेत किया। ये एक सुनसान तट था, जहाँ कोई सैनिक या पहरा नहीं था। टापू के उस किनारे पर अब जलपरियाँ ही जलपरियाँ नज़र आ रही थीं। जलपोत, आहिस्ता से किनारे लग गया और एक–एक कर सब उसमें से उतर गए।

सबसे आख़िर में मकाना ने उन्हें विदा दी और जलपोत से समन्दर में छलाँग लगा दी। पानी को छूते ही, उसका जिस्म जलपरी में तब्दील हो गया।

उसने उनकी तरफ़ हाथ हिलाया–'हम सब यहाँ तुम्हारा इंतज़ार करेंगे।'

जरूस ने उसकी तरफ़ देखा, जलपोत अब अपनी तहों में सिमटता जा रहा था। उसने पानी की सतह पर तैरते छोटे जलपोत को उठाकर, मोटे कपड़े की अपनी भारी झोली में रख लिया। बिना एक भी शब्द बोले, वो सब ख़ामोशी से आगे बढ़ने लगे।

दूर तक फैला रेतीला तट और उस पर उगे अजीब–अजीब क़िस्म के पेड़, अनमने ढँग से उन घुसपैठियों का स्वागत कर रहे थे। चलते–चलते उन्हें दूर पहाड़ी पर बना एक ऊँचा क़िला दिखाई दिया, जिसकी उँफची–उँफची मीनारें और कंगूरे, दूर से ही चमक रहे थे। क़िले की उँफचाई, उन्हें थोरोज़ की पहाड़ी की उँफचाई की याद दिला रही थी। बेहद सावधनी के साथ, पूरा जत्था दबे पाँव आगे बढ़ता रहा मगर कहीं उन्हें कोई पहरा या सैनिक नज़र नहीं आया। हर कोई इस तरह चारों तरफ़ नज़र रखे था जैसे किसी भी दिशा से किसी भी पल हमला हो सकता हो।

'यहाँ से हमें दो हिस्सों में बँटना है।' मकास ने फुसपुफसाते हुए कहा।

जैसा *तय* किया गया है, उसके अनुसार चलना।' फ़ैगुअस ने धीमी आवाज़ में कहा।

दूसरा जत्था, पतला सींकड़ी, सेण्टीड्राफ़ सरदार गैल्जीडान, छलावा कैटाकोटस मैगनडोला, सूँसलीखेड़ा सरदार बोरियाबिस और बौने पियोनी...का था। वो तेज़ी के साथ जत्थे से अलग हो गए और दाहिनी तरफ़ निकल गए। अब पहले जत्थे में केवल सालन, मकास, जरूस, फ़ैगुअस, लैरोका, चबला–गलच, होलोगा–होला, और अंशदेव...स्वर्णात्मा बाक़ी रह गए थे।

रेतीले तट पर पहला जत्था पूरी सावधनी से आगे बढ़ रहा था। तभी उन्हें अपने सामने बहुत सारे असनोच दिखाई दिए। पूरे जत्थे ने तेज़ी से पेड़ों के एक झुरमुट के पीछे जगह ले ली। असनोचों के निकल जाने के बाद, वो अब खुले में आ गए। काफ़ी दूर उँफची–उँफची पहाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं। क़िला अब दिखना बन्द हो गया था।

वो थोड़ा आगे बढ़े ही थे कि उन्हें अपने पीछे शोर सुनाई दिया। उन्होंने तेज़ी से पलटकर देखा। समन्दर में तैरता जंगी जहाज़ों का बेड़ा लगभग किनारे पर पहुँच गया था। कुछ जहाज़ ठहर भी चुके थे, जिनसे उतर–उतर कर सैनिकों

की एक बड़ी टुकड़ी दौड़ती हुई उनकी तरफ आ रही थी। इससे पहले वो संभल पाते, उनके सामने की तरफ से दस–पन्द्रह असनोच, अपने भारी–भरकम मुगदर हाथ में लेकर निकल आए।

कुछ ही पलों में उन्होंने पूरे जत्थे को दोनों तरफ से घेर लिया। सब एक–दूसरे की पीठ से पीठ सटाकर हर हमले के लिए तैयार थे। सैनिकों और असनोचों ने उन्हें केवल घेरा हुआ था, वो पकड़ने के लिए आगे नहीं बढ़ रहे थे।

उन्होंने देखा, रेत पर तेजी से चलता हुआ लैनीगल उन्हीं की तरफ आ रहा था। कुछ ही पलों में वो बेहद पास आ गया।

'अहा...तुम्हारा स्वागत है, महान सालन...और फैगुअस...मुझे चकमा देकर तुम यहाँ तक तो आ गए मगर तुम्हारी किस्मत इस वक्त लैनीगल के दरबार में चाकरी कर रही है, दोस्तो।' उसकी आवाज़ में बेपनाह व्यंग्य घुला था।

उसका चेहरा क्रोध और नफ़रत की वजह से काला पड़ता जा रहा था–'क्यों न तुम सबको तुम्हारी असली जगह पहुँचा दिया जाए?'

'ठहरो लैनीगल...तुम्हारे करने के लिए अभी और भी जरूरी काम बाकी हैं। कहीं ऐसा न हो, अपने दो सौ गुरुओं की हत्या करने वाला, तुम्हारा शिष्य एक और गुरु की हत्या कर दे, क्योंकि अब तक उसे पता चल गया होगा कि उस सुराही को हम तीनों के सिवाय दुनिया में और कोई नहीं खोल सकता।' मकास की आवाज़ में इस वक्त बला का आत्मविश्वास और ठहराव था।

'क्या ये तुम्हारी कोई *नई दुष्टता* है, बूढ़े फैगुअस...जो इस बच्चे के मुँह से बाहर आ रही है?' लैनीगल अब पल भर के लिए ठिठक गया।

'नहीं लैनीगल...ये तुम्हारी *पुरानी मूर्खता* है, जो इस नौजवान के होंठों से बाहर निकल आई है। जिस सुराही को हासिल करके तुम और तुम्हारा वो भगोड़ा शिष्य इतरा रहे हैं, उसे इन तीन नौजवानों के सिवाय कोई नहीं खोल सकता। इस बात का पता अब तक तुम्हें या उस धोखेबाज़ को नहीं चला, ये हैरत की बात है।' फैगुअस ने उसकी तरफ एकटक देखते हुए कहा।

'ओह नहीं...ये बात तो वाक़ई सही कही तुमने। काफ़ी कोशिशों के बाद भी सुराही खोली नहीं जा सकी। तुम्हारी वजह से ही हर चीज़ मुझसे इतना दूर होती चली गई वरना अब तक इन तीनों लड़कों और उस हर ताकत को लैनीगल हासिल कर चुका होता, जो उसे चाहिए थी।' उसके होंठ क्रोध की वजह से फड़क रहे थे।

'तो फिर तुम जो चाहो, वो कर सकते हो लैनीगल...लेकिन हम यहाँ जंग करने नहीं *समझौता* करने आए हैं।' सालन ने उसकी आँखों में आँखें गड़ाते हुए कहा।

'तुम...' लैनीगल ने उन्हें गहरी नज़रों से घूरा। '...*समझौता* करने के हालात में नहीं हो महान सालन...तुम इस वक्त उस जगह हो, जहाँ मौत भी लिखित इजाज़त के बिना दाख़िल नहीं हो सकती।'

'शायद इसी वजह से तुम्हारी इजाज़त के बिना भी हम यहाँ दाख़िल हो पाए...अपने सपनों की दुनिया से बाहर निकलो लैनीगल...और उस सच को देखो, जिसे तुम अपनी मूर्खता की वजह से भूल आए हो।' जरूस ने उसकी तरफ़ देखकर तेज आवाज़ में कहा।

'उस पानी को सुराही से बाहर केवल हम तीनों निकाल सकते हैं लैनीगल...अगर उसे पानी चाहिए तो सलार और महान थोरोज़ को हिफ़ाज़त से हमें लौटा दे। हम वादा करते हैं, हम पानी उसे सौंपकर यहाँ से निकल जाएँगे।' जरूस ने उसकी तरफ अपलक देखते हुए कहा।

'तुम लोग...' उसने दाँत पीसते हुए कहा। '...इतने भोले भी नहीं हो, जितना दिखने की कोशिश कर रहे हो लड़को! लेकिन तुम्हारी तक़दीर का फ़ैसला, किसी और को करना है।'

'ये जंग हमारी जान ले सकती है लैनीगल...लेकिन हमें इस बात के लिए मजबूर नहीं कर सकती कि हम वो पानी उस दुष्ट जैल्डॉन को सौंप दें, जिसके लिए वो सदियों से षड़यन्त्र रच रहा है ताकि दुनिया उसके क़दमों पर माथा टेक सके।' मकास ने निर्णायक आवाज़ में कहा। 'और ये भी याद रखना, अगर हमारी जान जाती है तो सुराही से उस पानी को कोई बाहर नहीं निकाल पाएगा।'

'हम्मम...' उसने जैसे सोचने वाले अंदाज़ में सबको घूरा और फिर सैनिकों की टुकड़ी और असनोचों की तरफ़ देखकर तेज आवाज़ में बोला, 'हमारे धूर्त मेहमानों को सावधनी से घाटी में लेकर चलो **मैटास**! उसने उस असनोच को आदेश दिया, जो दानवों की टुकड़ी में सबसे आगे खड़ा था।

पूरी टुकड़ी ने उन्हें घेर लिया, असनोच अपने भारी–भरकम मुगदर लेकर सावधानी से साथ चल रहे थे। किसी ने कोई हरकत नहीं की, लैनीगल उन्हें लेकर आगे बढ़ गया। थोड़ा आगे चलने के बाद पथरीला इलाका शुरू हो गया। कुछ टेढ़े–मेढ़े रास्तों से गुज़रते हुए, वो अब ढलान पर उतरते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वो किसी गहरे गड्ढे की तली की तरफ़ जा रहे हों। पथरीले रास्तों से नीचे उतरते हुए, उन्हें एक विशाल मैदान दिखाई दिया, जिसके चारों तरफ़ ऊँची–उँफची चट्टानें थीं।

केवल एक चौड़ा रास्ता मैदान में जा रहा था। वो किसी क्रीड़ा–स्थल की तरह ज़्यादा लग रहा था, जो चारों तरफ़ से घिरा हुआ था। मैदान के सामने वो विशाल महलनुमा किला था, जिसकी बुर्जियाँ और मीनारें आसमान से बातें कर रही थीं। उस गगनचुम्बी किले का भारी–भरकम फाटक मैदान की तरफ़ खुल रहा था, जहाँ अब भी कई पर्वताकार दानव खड़े थे। मैदान के बीचोबीच, पत्थर का एक खम्भा गडा हुआ था, जिससे ढेर सारी लोहे की जंजीरें लटक रही थीं।

मैदान से होकर, वो उस महाविशाल महल की तरफ़ बढ़े। द्वार पर खड़े दानवों ने, लैनीगल को देखते ही द्वार खोलना शुरू कर दिया। फाटक इतना भारी था कि कई दानव मिलकर भी उसे नहीं खोल पा रहे थे। जैसे–जैसे वो पास आते जा रहे थे, फाटक खुलता जा रहा था। एक भारी गड़गड़ाहट के साथ महल का प्रवेश–द्वार खुल गया।

पूरे जत्थे ने उस लम्बे और चौडे गलियारे में कदम रखा, जो भीतर इतनी दूर तक जा रहा था कि उसका आखिरी सिरा नज़र नहीं आ रहा था। महल की छत इतनी उँफची थी कि ऊपर लटकता विशाल झूमर भी उन्हें बहुत छोटा नजर आ रहा था। दाहिनी तरफ़ मुड़ने के बाद, एक बड़े द्वार से होकर उस विशाल कक्ष में पहुँचे, जिसमें पहले से ही सैंकड़ों सरदार और योद्धा खड़े थे। हर कोई उनकी तरफ़ देख रहा था।

पत्थर के विशाल खम्भों और मेहराबदार छत के नीचे उन सरदारों की दो लम्बी कतारें थीं, जिन्हें जैल्डॉन ने अपने साथ मिलाया था। लैनीगल को देखने के बाद, वहाँ मौजूद हर किसी ने अपना सिर झुकाकर अभिवादन किया, जिसका उसने कोई उत्तर नहीं दिया। ऐसा लग रहा था जैसे वो उन सबको अपने सामने बहुत हीन और तुच्छ समझ रहा हो।

वो विशाल कक्ष किसी शासक के कक्ष जैसा लग रहा था लेकिन जिस जगह सिंहासन जैसा कोई स्थान होना चाहिए था, वहाँ एकदम ख़ाली जगह थी। उस जगह के पीछे एक इतना विशाल द्वार था, जिसमें होकर कई हाथी अगल–बगल निकल सकते थे। दाहिनी और बाँई, दोनों क़तारों के बीचोबीच सैनिकों ने उन सबको रुकने का इशारा किया। विशाल देह वाले असनोच भी अब चुपचाप एक तरफ़ खड़े हो गए थे।

'महान जैल्डान...तुम्हारी ही राह देख रहे हैं, घुसपैठियो!' उसने एक बार उनकी तरफ़ देखा और फिर उस विशाल दरवाजे की तरफ़ देखने लगा, जिसका असामान्य आकार वहाँ मौजूद हर चीज़ से अजीब था। लैनीगल ने एक बार दोनों तरफ़ की क़तारों में खड़े सरदारों की तरफ़ देखा और फिर ऐसे खड़ा हो गया जैसे बस द्वार खुलने ही वाला हो।

कुछ ही पल बाद, एक गड़गड़ाहट जैसी चरमराहट के साथ, वो विशाल दरवाज़ा अहिस्ता–आहिस्ता खुलना शुरू हुआ। उसे खोलने वाला कोई दिखाई नहीं दे रहा था लेकिन द्वार खुलता जा रहा था। कुछ ही पलों में दरवाज़ा पूरा खुल गया। ऐसा लग रहा था जैसे उस द्वार के पीछे कोई लम्बा–चौड़ा बरामदा हो। उस तरफ़ से ऐसी आवाज़ें आ रही थीं जैसे 'धम–धम' करता हुआ कोई बेहद भारी जीव आ रहा हो।

पूरा कक्ष उस 'धम–धम' की आवाज़ से काँप रहा था। उस आवाज़ को सुनते ही, दोनों क़तारों में खड़े सरदारों ने ज़मीन पर पेट के बल लेटकर, किसी अजीब–सी भाषा में कुछ उच्चारित करना शुरू कर दिया। केवल लैनीगल और पूरा जत्था अब उस दिशा में देख रहा था, जिधर से आवाज आ रही थी। उन्होंने पीछे पलटकर देखा, विशाल देह वाले असनोच तक फ़र्श पर पेट के बल लेटकर, अपना मुँह ज़मीन में गड़ाए हुए थे।

जैसे–जैसे आवाज़ पास आती जा रही थी, धम–धम के उस कम्पन को, पत्थर के खम्भों और फ़र्श तक में साफ़ महसूस किया जा सकता था। फिर उस विशाल दरवाज़े से होकर, 'जो' भीतर आया, उसे देखकर उन्हें जैसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। वो एक विशाल कछुआ था, जिसकी पीठ पर एक शानदार काठी लगी हुई थी। कछुए का आकार इतना बड़ा था कि वो सब भी उसके सामने किसी छोटे बच्चे की तरह लग रहे थे।

कछुए पर कसी, सिंहासननुमा काठी में 'वो' बैठा था, जिसका नाम और ज़िक्र, संथाल के दोनों बेटे, जाने कब से सुनते आ रहे थे। **जैल्डॉन**...अपने दो सौ गुरुओं का हत्यारा, एल्गा–गोरस को धेखे से हासिल करने वाला, दुनिया पर कब्ज़ा करने की ख़्वाहिश रखने वाला जैल्डॉन। आहिस्ता–आहिस्ता आगे बढ़ता हुआ कछुआ ठहर गया और सारे सरदारों ने उस अजीब भाषा का उच्चारण और भी तेज़ कर दिया।

वो कछुए की पीठ पर कसी काठी में बैठा हुआ था मगर साफ़ दिख रहा था कि वो बेहद लम्बा और वज़नी है। उसका चेहरा किसी भयानक मुर्दे जैसा मगर आम इंसान से लगभग दोगुना बड़ा था। मुँह इंसानी मगर बेहद लम्बूतरा था। उसके चौड़े कन्धे पर दो बेहद चौड़े सींग उगे हुए थे, जो उसके सिर की ऊँचाई तक जाकर, आगे की तरफ़ मुड़े हुए थे। बड़े और शक्तिशाली सिर पर बेहद सख़्त बालों का एक मोटा गुच्छा था, जो गैंडे के सींग की तरह लग रहा था। बेहद लाल और भयानक आँखें, जिनमें दो ख़ूनी पुतलियाँ नज़र आ रही थीं। उसके पूरे जिस्म पर योद्धाओं जैसा कवच और पोशाक थी। जगह–जगह से झाँकती उसकी ताकतवर मांसपेशियाँ, उसके बलिष्ठ जिस्म की गवाही दे रही थीं।

'थैमीनल फैगुअस और सालन हीस...' उसके मोटे और भद्दे होठ हिले और किसी हिंसक जीव के गुर्राने जैसी आवाज़, उसके गले से निकली। 'आपका स्वागत है...पुराने साथियो!' उसने संकेत किया और कछुआ पथरीले फ़र्श पर आहिस्ता से बैठ गया।

'कितना ख़ास मौका है, इस टापू के लिए। इतने बहादुर सरदार और महान सालन...यहाँ, इस उजाड़ और वीरान टापू पर! शायद तुम्हें लगा होगा, तुम हमें धेखा देकर यहाँ तक आ गए हो लेकिन तुम्हारी नासमझी भी उतनी ही ताकतवर है सालन, जितनी तुम्हारी मानसिक शक्तियाँ। जिस पल हमें ये अहसास हुआ था कि सुराही पर तुमने अपनी मानसिक शक्तियों का इस्तेमाल करके, उसे इन तीनों लड़कों के साथ बन्धित कर दिया है, उसी पल तुम्हारा यहाँ आना तय हो गया था।' उसकी आवाज़ की भयानकता, किसी की भी रूह में सिहरन पैदा करने के लिए काफ़ी थी लेकिन पूरा जत्था, एकदम स्थिर खड़ा हुआ था।

'जगह तुमने बहुत गुप्त और गुमनाम चुनी जैल्डॉन...और उससे भी ज़्यादा तारीफ़ हमें उस युक्ति की करनी चाहिए, जिसने सदियों तक किसी को तुम्हारा पता नहीं चलने दिया। अगर तुम कहीं भी धरती पर पैर रखते तो यक़ीनन हमारी मानसिक ताकतें तुम्हें दबोच लेतीं लेकिन बरसों तक *'कछुए-की-पीठ'* पर रहने का विचार कमाल का था।' सालन ने उसकी तरफ़ देखते हुए हल्के सख़्त लहज़े में कहा।

'ये तो वाक़ई कमाल हो गया...वाक़ई चमत्कार हो गया ये तो।' उसने मज़ाक उड़ाने वाले लहज़े में कहा। 'सालन... दुनिया–का–सबसे–बुजुर्ग–शिशु, जैल्डॉन की *प्रशंसा* कर रहा है। महासभा के सदस्य सुनेंगे तो विश्वास नहीं करेंगे इस चमत्कार पर। वैसे ही...जैसे उन नासमझों को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ था कि एल्गा–गोरस की ताकतों का ऐसे भी इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसे जैल्डॉन करना चाहता था।'

'एल्गा–गोरस की ताकतें हर पल कमज़ोर पड़ रही हैं जैल्डान, ये बात हम उसी पल जान गए, जब तुम्हारी पूरी सेना मैदान से गायब होकर अपने–अपने ठिकानों पर पहुँच गई।' सालन की निगाहों में तंज़ था।

'हम्म...तुम्हारी जानकारियाँ वाक़ई बढ़िया हैं मगर अफ़सोस, तुम्हारी जानकारियों में हम इतना इज़ाफ़ा और कर दें कि इस टापू पर अभी भी इतनी फ़ौज मौजूद है, जो तुम सबको भुनगों की तरह मसलने के लिए काफ़ी है... महान जांबाज़ो।' उसकी आवाज़ में सालन से ज़्यादा व्यंग्य झलक रहा था।

फ़ैगुअस ने उसकी तरफ़ गहरी नज़रों से देखा–'तुम्हें अपने किए हर दुष्कृत्य का हिसाब देना होगा जैल्डॉन...लेकिन शायद अभी नहीं। वो हर लाश तुमसे हिसाब माँगेगी, जो तुम्हारे हाथों से इस ज़मीन पर गिरी है या फिर तुम्हारी वजह से।'

'तुम्हारे जैसा *ज्ञानी* इस तरह की बेवक़ूफ़ाना बातें करे तो बहुत...दुःख होता है फ़ैगुअस! तुमसे बेहतर इस बात को कौन समझेगा कि धरती पर *कोई* लाश *किसी* की वजह से नहीं गिरती। ये ज़मीन हर मुर्दे को अपनी तरफ़ खींचती है और अगर मैं उन्हें न भी मारता तो भी क्या वो हमेशा रहने वाले थे...नहीं...फ़ैगुअस...महान उपलब्धियाँ, महान परिश्रम और योजना चाहती हैं और मैंने ताकत पाने के लिए सदियों प्रतीक्षा भी की है और अद्भुत योजना के साथ चमत्कारी मेहनत भी की है। वो तो उन धेखेबाज़ों ने एल्गा–गोरस के साथ छेड़छाड़ की, जिस वजह से ये राज़ सबसे बाद में खुला कि बिना उन मूर्खों की इजाज़त के एल्गा–गोरस को पूरा करने वाला एक शर्तिया-मौत की तरफ़ बढ़ने लगेगा, जिसका वक़्त अब पूरा होने वाला है।' जैल्डॉन के भयानक चेहरे पर वहशियाना भाव थे।

तभी उस विशाल कक्ष के भीतर नीले चींटों की एक लम्बी क़तार दाख़िल हुई, वो सब लैनीगल के आसपास आकर चक्कर काटने लगे।

उसने उनकी तरफ़ देखा और फिर जैसे एकदम चौंक गया, उसने एक बार जैल्डॉन की तरफ़ देखा–'एक...अच्छी ख़बर है। मुझे जाकर वापस आना होगा।'

जैल्डॉन ने उसकी तरफ देखकर सहमति में सिर हिलाया और वो तेजी से कक्ष से बाहर चला गया। नीले चीटों की फौज उसके पीछे–पीछे बाहर चली गई।

'हम तुमसे एक *समझौता* चाहते हैं जैल्डॉन...' मकास ने बोलने के लिए पहली बार मुँह खोला।

'ओहह...तुम अभी इतने ताकतवर नहीं हुए हो लडके कि जैल्डॉन से सीधे संवाद स्थापित कर सको और मैंने इससे बचकानी बात आज तक कभी नहीं सुनी कि जंगली कबीले का एक मामूली लडका, जैल्डॉन से 'समझौता' करना चाहता है।' उसके होंठों पर एक विषैली मुस्कराहट तैरकर लुप्त हो गई।

'शायद तुम ये चाहोगे कि वो पानी उस सुराही से बाहर आ जाए, तब, जबकि तुम ये जानते हो कि उसे हमारे सिवाय और कोई बाहर नहीं निकाल सकता, तब अगर तुम ऐसी नासमझी की बात करो तो इससे बडा ताज्जुब दूसरा नहीं हो सकता।' मकास ने जैसे खुद पर नियन्त्रण करते हुए कहा।

ओह...तो अब तुम जैसे मकोडे, जैल्डॉन को समझदारी सिखाएँगे।' ऐसा लगा जैसे वो बहुत गुस्से में आ गया हो। 'लेकिन नहीं...इस बात में थोडी समझदारी जरूर है, सोने जैसे रंग वाले मूर्ख लडके। तुम तीनों को आज रात से पहले, वो पानी उस सुराही से बाहर लाना होगा।'

'तुम हमें दोनों बन्दियों को सौंपोगे और हम तुम्हें वो पानी...उसके बाद तुम बिना किसी हमले या जंग के, हमें यहाँ से जाने दोगे।' जरूस ने उसकी बडी–बडी आँखों में आँखें डालते हुए कहा।

'हम्म...शायद *यही* ठीक रहेगा, या फिर ये कहें *'यही'* ठीक रहेगा, लडके।' उसने जैसे सोचने वाली मुद्रा में कहा। 'फैगुअस जैसा रेत–विद्या का जानकार और सालन जैसा मानसिक शक्तियों का पर्वत, आज जैल्डॉन के दरबार में समझौते के लिए खडे हैं, उस महान किताब की ताकतों का इससे बडा सुबूत और क्या हो सकता है और ऐसी ताकतों पर अगर पहला हक किसी का बनता है तो वो जैल्डॉन का, जो उस ताकत को पाने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। जानते हो सालन...**ताकत, किसी नख़रीली सुन्दरी की तरह होती है, वो केवल उसी को अपने–आप को सौंपती है, जो उसे पाने के लिए दीवानगी की हद तक जाने का माद्दा रखता हो।** हमें, 'हमारा' किया हुआ ये समझौता मंजूर है लडको...तुम उस पानी को सुराही से मुक्त करोगे और हम तुम्हारे उस भाई और महान थोरोज को अपनी कैद से मुक्त करेंगे मगर याद रखना, धेखा, जैल्डॉन के कछुए के पाँव में, लोहे की नाल लगाने का काम करता है, कोई चालाकी मत करना।' उसने उन्हें गुस्से से घूरा।

तभी लैनीगल जितनी तेज़ी से गया था, उतनी ही तेज़ी से वापस लौटा। उसने एक बार पूरे जत्थे की तरफ क्रोधित नजरों से देखा और फिर जैल्डॉन की तरफ मुख़ातिब होकर इज़्ज़त से बोला, 'सन्देह सही निकला, इनकी एक टुकडी, जिसमें एक गन्दा स्ट्रासोल, एक बित्ते भर का सेण्टीड्राफ, एक बदबूदार बौना और अँधेरे में चमगादड की तरह रहने वाला एक सूँसलीखेडा शामिल है, वो बन्दी–गश्ह के आसपास मँडराते हुए देखे गए। हमारे लडाकों ने उनका पीछा किया और उन्हें घेरकर **चरम–बन्धन–कक्ष** में घुसने के लिए मजबूर कर दिया।

उन्हें ये जानकर झटका लगा कि दूसरा जत्था बन्दी बना लिया गया मगर एक बात ग़ौर करने की थी, लैनीगल ने कैटाकोटस मैगनडोला का नाम नहीं लिया था। इसका मतलब वो अब भी आज़ाद था और उन्हें नहीं दिख पाया था।

'दुष्टता का चूज़ा, महानता के अण्डे के भीतर ज्यादा देर तक नहीं रह पाता फैगुअस...तुम लोग जैल्डॉन को मूर्ख समझते हो? तुम यहाँ समझौते की आड लेते हो और तुम्हारे वो बदशक्ल साथी, जैल्डॉन के किले में घुसकर, उसकी नाक के नीचे से बन्दियों को निकालकर ले जाएँगे? ताज्जुब होता है...तुम्हारी इन बेवकूफ़ियों पर।'

वो पल भर के लिए रुका और गुर्राहट भरी आवाज़ में बोला, 'अब कोई समझौता नहीं होगा जंगली लड़के...अब तुम तीनों, सुराही से पानी बाहर लाओगे और तुम्हारे ये सब साथी भी मारे जाएँगे। तुम्हें एल्गा–गोरस की ताकतों का अंदाज़ा नहीं है छोकरो...तुम सब गुलाम बनकर, जैल्डॉन के कछुए की लीद साफ करोगे, यहीं, इसी टापू पर।' वो जैसे क्रोध से पागल हो रहा था। 'उस बूढे थोरोज़ और छोकरे को फौरन यहाँ लेकर आओ।' उसने क़तार में खड़े सरदारों की तरफ चीखते हुए कहा। तुरन्त भय से काँपते कुछ सरदार तेज़ी से वहाँ से निकल गए।

हर कोई इस नई मुसीबत से निकलने के लिए दिमाग लगा रहा था लेकिन किसी को कुछ नहीं सूझ रहा था। अचानक घटे इस घटनाक्रम ने पूरी बाजी पलटकर रख दी। बना–बनाया खेल इस तरह बिगड़ जाएगा, ये किसी ने सोचा तक नहीं था। कुछ ही पल में, दो जल–पिशाच, हवा में तैरते हुए वहाँ पहुँचे। वो उस कछुए के साथ–साथ आ रहे थे, जिसका आकार ज्यादा बड़ा तो नहीं था लेकिन इतना ज़रूर था कि वो मकास के सिर की ऊँचाई तक ज़रूर आता।

कछुए के कवच पर लकड़ी के दो बड़े–बड़े लट्ठे कसे हुए थे, जो दोनों तरफ, उसके कवच से भी काफी बाहर निकले हुए थे। कछुआ एक आदमकद पिंजरे को खींचकर ला रहा था, जिसकी तली में लकड़ी के छोटे–छोटे पहिए लगे हुए थे। फ़र्श पर लकड़ी के पहियों के चरमराने की आवाज वहाँ की शान्ति को भंग कर रही थी। पिंजरे के भीतर सलार और थोरोज थे, उनका पूरा जिस्म, लोहे की मोटी–मोटी जंजीरों में कैद था। थोरोज को इस दशा में देखकर, उनका मन क्रोध और कष्ट की अनुभूतियों से भर गया।

'जैल्डॉन...तुम्हें इस गुस्ताखी का भी हिसाब देना होगा।' फैगुअस के होठों से जैसे क्रोध की गुर्राहट निकली।

'हिसाब? हैरत की बात है फैगुअस...तुम्हारे जैसा दार्शनिक हिसाब–किताब की भाषा कब से बोलने लगा? जैल्डॉन के होठों पर एक भयानक भाव आकर चला गया। 'कहीं तुम ये तो नहीं सोच रहे कि इतनी महान ताकतों के होते हुए भी, थोरोज़ जैसे शक्तिशाली को हमने कैसे बन्दी बना लिया? अहा...हम तुम्हारे इस सवाल का फन अपने जवाब के पैरों से खुद ही कुचल देते हैं। उसी महान किताब की ताकत है ये, जिसे रचने में तुमने और उन सैंकड़ों ताकतवर लोगों ने अपनी शक्तियाँ निचोड़ दी थीं, जिन्हें इस किताब के रचयिता होने का दंभ था।' उसके लहजे में व्यंग्य और क्रोध दोनों झलक रहे थे।

जैल्डॉन ने संकेत किया और पिंजरे की सलाखें गायब हो गई। उसने अपनी भृकुटि टेढ़ी की और लोहे की ज़ंजीरें किसी साँप की तरह रेंगती हुई, सलार के जिस्म से नीचे उतर गई। थोरोज अब भी बन्दी थे मगर सलार आजाद हो चुका था।

'तो अब...तुम तीनों यहाँ हो...जंगली छोकरो...तुरन्त उस पानी को सुराही से बाहर लाओ...वरना तुम सबकी लाशें, इस फ़र्श को गन्दा कर रही होंगी, जिस पर हमारे कछुए के पाँव पड़ने वाले हैं।' उसने कछुए की पीठ पर कसी काठी में से वो सुराही निकाली और मकास की तरफ उछाल दी। उसने सधे हुए हाथों से उसे हवा में ही लपक लिया।

सलार आहिस्ता से चलता हुआ, उनके पास आया। लैनीगल की धूर्त निगाहें, उनमें से हर किसी के चेहरे को बहुत बारीकी से घूर रही थीं।

'हम...पानी तुम्हें सौंप देंगे जैल्डॉन मगर...' जरूस की बात अधूरी रह गई क्योंकि लैनीगल ने बीच में ही उसकी बात काट दी।

'तुम...किसी अगर–मगर का इस्तेमाल नहीं करोगे जंगली...तुम केवल वो करोगे...जो तुमसे करने के लिए कहा जाएगा। अगर फौरन ऐसा नहीं हुआ तो केवल तुम सब ही नहीं...वो कीड़े भी एक भयानक मौत मरने वाले हैं, जिन्हें बन्दी बनाना भी लैनीगल की तौहीन है।'

सालन ने उसे संकेत किया और तीनों फ़र्श पर घुटनों के बल बैठ गए। सुराही अब उनके बीचोबीच रखी थी। तीनों ने अपनी हथेलियाँ सुराही के ऊपर रख लीं और आँखें बन्द कर लीं। कुछ ही पलों में उनकी गर्दन के पास हरे रंग की रोशनी का एक घेरा उभरने लगा, जो तीनों के कन्धें से होता हुआ, कोहनियों तक आ गया। आहिस्ता–आहिस्ता रोशनी का वो घेरा, उनकी कलाइयों तक उतरा और फिर उँगलियों से होता हुआ, सुराही की गर्दन तक पहुँच गया।

अब हरी रोशनी के तीन छल्ले सुराही की गर्दन के पास तैर रहे थे। एक बार वो तेज़ी से चमके और फिर गायब हो गए। मकास ने आहिस्ता से सुराही के मुँह पर चढ़ा चाँदी का ढक्कन घुमाया, एक हल्की–सी आवाज़ के साथ वो घूम गया और सुराही का मुँह खुल गया।

'आहहा...शाश्वत–जल...' शातिर लैनीगल के होठों से जैसे एक खुशी से भरी आह निकली।

जैल्डॉन की बड़ी–बड़ी लाल आँखें अब और लाल हो गईं। उसके चेहरे पर एक भयानक चमक आ गई। हर कोई एकदम साँस रोके खड़ा हुआ था।

'जल्दी करो...वो सुराही हमारे पास लेकर आओ...' जैल्डॉन के सब्र का प्याला जैसे छलक पड़ना चाहता था।

लैनीगल सुराही लेने के लिए आगे बढ़ा लेकिन मकास ने उसे रोक दिया।

'ठहरो लैनीगल...' उसके बढ़ते कदम एकदम रुक गए।

'क्यों न इस जल को एकदम **सही** तरीवेफ से तुम्हें सौंपा जाए।' मकास की आवाज़ में पथरीली निर्णायकता झलक रही थी।

जब तक कोई कुछ समझ पाता, मकास ने जल से भरी सुराही अपने हाथ में ऊपर उठाई और उसे फ़र्श पर उल्टा कर दिया। एक पल में उसके भीतर भरा पानी फ़र्श पर बिखर गया।

नहीं...' जैल्डॉन के कण्ठ से जैसे एक भयानक चीख निकली।

'तुम में से कोई जिन्दा नहीं बचेगा...मार डालो इन सबको।' वो इतनी भयानक आवाज़ में चीखा, जैसे गले में नरक उग आया हो।

पल भर में उस विशाल कक्ष में अफ़रा–तफ़री मच गई। कतार में खड़े सारे सरदार, जत्थे के सदस्यों पर टूट पड़े। भयानक लड़ाई छिड़ गई, चल्कागा सरदार चबला–गलच ने कइयों को कीलों से बींधकर रख दिया। फैगुअस के हाथ में थमे लकड़ी के डण्डे से, इस वक्त अजीब–सी नीली रोशनी निकल रही थी। उसने एक विशाल असनोच पर वार किया और वो एक ही वार में फर्श पर ढेर हो गया। लैसनार सरदार लैरोका और दानव होलोगा–होला ने पल भर में जैसे कहर बरपा दिया। एक जल–पिशाच ने अंशदेव स्वर्णात्मा को अपनी जीभ में लपेटने की कोशिश की लेकिन उसे छूते ही, वो ऐसे कक्ष से बाहर उड़ गया जैसे अब कभी लौटकर नहीं आएगा।

इस अफ़रा–तफ़री और लड़ाई के बीच जैल्डॉन का कछुआ, कब गायब हो गया, किसी को पता नहीं चला। लैनीगल, इस वक्त सालन और फैगुअस के बीच फँसा था। उसने अपने हाथ में पकड़ा मुड़ा–तुड़ा डण्डा सीधा किया और सालन पर वार करना चाहा, सालन के जिस्म को छूते ही डण्डा 'भक्क' से जल उठा।

मकास और जरूस दौड़कर उस पिंजरे के पास पहुँचे, कछुआ जिसे लेकर वापस भागने की कोशिश कर रहा था। जरूस ने तलवार के एक भरपूर वार से उस ज़ंजीर को काट दिया, जिससे पिंजरा कछुए के साथ बँधा हुआ था। उन्होंने पूरी ताकत लगाकर उन ज़ंजीरों को खोलने की कोशिश की लेकिन वो उन्हें टस से मस भी नहीं कर पाए।

तभी एक जल–पिशाच ने उन दोनों पर हमला कर दिया। उन्होंने झुकाई देकर खुद को बचा लिया लेकिन थोरोज़ के पास से नहीं हटे। तभी एक जानी–पहचानी आवाज़ ने उनका ध्यान अपनी तरफ खींच लिया।

'कहाँ है वो अबाबील की बीट से निकली कील? झींगुर की मूँछ का तिरछा बाल, मछली के अण्डे का फोड़ा...कब्ज वाले तिलचट्टे का मल...वो दुष्ट जैल्डॉन...आज मैं उसे छोड़ूँगा नहीं।'

मकास ने देखा, पतला सींकड़ी दूसरे जत्थे के साथ, उस विशाल कक्ष में दाखिल हो रहा था। उसके साथ सेण्टीड्राफ सरदार गैल्जीडान, कैटाकोटस मैगनडोला, सूँसलीखेड़ा सरदार बोरियाबिस और पियोनी...भी थे।

इस नई टुकड़ी के आने से जैसे लड़ाई का नक़्शा ही बदल गया। लड़ते–लड़ते लैनीगल पत्थर के एक विशाल खम्भे के पीछे गायब हुआ और फिर दिखाई नहीं दिया। ज्यादातर सरदार धराशायी हो गए, जो बचे वो ज़ख्मी हालत में महल से बाहर भाग गए।

'तुम सब कैसे वहाँ से निकले?' मकास की आवाज़ में जैसे भारी उत्सुकता करवट ले रही थी।

'ये सब इस छलावे ने किया है। वरना हम पता नहीं कब तक, उस कक्ष से बाहर नहीं निकल पाते।' सूँसलीखेड़ा सरदार ने कैटाकोटस की तरफ देखते हुए कहा, जो अब एक पारदर्शी आकृति की तरह दिख रहा था। थोरोज़ को ज़ंजीरों में जकड़ा देख, उसने ज़ंजीरें तोड़ने के लिए पूरी ताक़त लगा दी और एक झटके में उन्हें तोड़ दिया।

'क्या अब तक *'उन्हें'* पता नहीं चल पाया कि एल्मा–गोरस कहाँ है?' फैगुअस ने पियोनी की तरफ देखते हुए पूछा।

'वो सारे महल में फैल चुके हैं, कभी भी पता चल सकता है।' पियोनी ने तेज आवाज़ में कहा।

हर कोई जानता था, फैगुअस ने किसके बारे में पूछा था। वो नन्हे *फॉ* थे, योजना के अनुसार उन्हें पियोनी की पोशाक में छुपकर रहना था और मौका पाते ही पूरे महल में फैलकर ये पता करना था, एल्मा–गोरस को उसने कहाँ छुपा रखा है। वो सब तभी पियोनी की पोशाक से उतर गए थे, जब दूसरा जत्था महल में दाखिल हुआ था।

तभी क़िले के बाहर भारी शोर और हंगामे की आवाज़ें आने लगीं। ऐसा लगा जैसे बड़ी तादाद में फौज इकट्ठा हो रही हो। हर कोई तेज़ी से क़िले के विशाल द्वार की तरफ़ दौड़ा। फाटक बाहर से बन्द कर दिया गया था। पतले सींकड़ी ने लकड़ी की दरार से आँख सटाकर देखा, बाहर मैदान पर काफ़ी फ़ौज इकट्ठा हो गई थी। वो हर प्रजाति और लड़ाके उसमें थे, जिनसे वो बल्टान के मैदान पर जंग लड़ चुके थे। पहाड़ियों से उतर–उतरकर वो ऐसे नीचे आ रहे थे जैसे पूरे मैदान को भर डालेंगे। मकास ने आगे बढ़कर दरवाज़े की झिरी से देखा, शातिर लैनीगल बाहर मैदान में था। वो चीख–चीखकर सबको निर्देश दे रहा था।

तभी बौनों का सरदार पियोनी तेज आवाज़ में चीखा–'पता चल गया, पता चल गया, उन्होंने खोज लिया।'

हर किसी ने चौंककर उसकी तरफ देखा। पियोनी की उँगलियों में एक पतला धगा लटका था और वो उसकी तरफ देखकर प्राचीन इकोइ–चामन भाषा में कुछ बोल रहा था। हर कोई समझ गया कि इस वक्त उस धगे पर कोई फॉ लटका

है, जो पियोनी को एल्मा–गोरस के बारे में कुछ बता रहा है।

'क्या हुआ? जल्दी बताओ?' जरूस ने तेज आवाज में पूछा।

'उन्होंने खोज लिया, वो एल्मा–गोरस की खबर ले आए।' पियोनी की आवाज़ में बेहद उत्साह था।

'कहाँ छुपाया है उसने, उसे?' सालन ने पियोनी की तरफ देखा।

'उसी के साथ है, उसने अपने विशाल कछुए की पीठ पर कसी *काठी* में ही छुपाया हुआ है।'

'ओहह...कोई भी समझदार दुष्ट ऐसा ही करता।' थोरोज ने पियोनी की तरफ देखा।

'वो सब बेहद सावधनी से, कछुए के जिस्म से चिपके हुए हैं। वो इस वक्त महल की सबसे ऊपर वाली बुर्जी में है।' पियोनी ने चीखकर कहा।

तभी उस विशाल किलेनुमा महल की छत का एक बड़ा हिस्सा ढहकर नीचे गिर गया। धूल और गुबार ने उन सबको ढँक लिया। ऐसा लग रहा था जैसे पूरे किले में आग फैल गई हो। बाहर पूरी सेना उनका इंतज़ार कर रही थी और भीतर हर तरफ आग पैफलती जा रही थी।

'हमें बाहर निकलना होगा, वो किले के भीतर ही हमारी कब्र बना देना चाहता है।' होलोगा–होला ने थोरोज की तरफ देखते हुए कहा।

किसी ने न तो हाँ में सिर हिलाया और न ही ना में।

'बाहर तो पूरी फौज हमारा इंतजार कर रही है।' सूँसलीखेड़ा सरदार बोरियाबिस ने सालन की तरफ देखा।

'उन्हें हम संभालते हैं, तुम तीनों को वो काम करना होगा, जिसके लिए समय इतनी सदियों से प्रतीक्षा कर रहा है।' सालन ने तीनों भाइयों के चेहरे की तरफ देखते हुए कहा।

'उसे मालूम है, शाश्वत–जल नष्ट हो चुका है, एक शर्तिया–मौत से उसे अब कोई नहीं बचा सकता मगर उसकी आत्मा अब भी देह को नहीं छोड़ना चाहती। वो एल्मा–गोरस को लेकर भागने की फिराक में है।' फैगुअस ने उनकी तरफ ऐसे देखा जैसे कहना चाहता हो–'जल्दी जाओ, कहीं देर न हो जाए।'

'दरवाज़ा तोड़ दो, हमें बाहर निकलकर मुकाबला करना होगा, जाओ मेरे बच्चों, उसका वक्त, किले की सबसे उँफची बुर्जी में तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।' थोरोज़ ने मकास के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा।

बजाइबैगा दानवों के सरदार होलोगा–होला ने पूरी ताकत लगाकर विशाल दरवाज़े को तोड़ने की कोशिश की लेकिन वो हिला भी नहीं।

'ये ऐसे नहीं टूटेगा, आप सब पीछे हट जाएँ।' सूँसलीखेड़ा सरदार बोरियाबिस ने दरवाज़े की तरफ बढ़ते हुए कहा।

उसके जिस्म के आसपास तैरने वाला अँधेरा अब बढ़ता जा रहा था। फिर वो तूफान की गति से दरवाजे से टकराया और पूरा द्वार अँधेरे की एक गहन चादर के नीचे गुम हो गया। अँधेरे का एक ज़ोरदार विस्फोट और दरवाज़ा, लकड़ी की छोटी–छोटी किरचों में बिखर गया। सब एकदम बाहर आ गए। किले की दीवारों और दूसरे हिस्सों में अब भी आग भड़क रही थी।

बाहर निकलते ही मकास ने 'उसका' आह्वान किया, जो पूरी दुनिया में अपनी तरह का अकेला था...एल्फैण्टार। हाथी जैसा उसका विशाल जिस्म और किसी खूबसूरत नौजवान जैसा चेहरा सामने खड़ा था। मैदान में खड़ी पूरी फौज पूरी ताकत से उन सबकी तरफ दौड़ी। फैगुअस के दोनों हाथ ऊपर आसमान की तरफ उठे और मैदान के बीचोबीच, रेत का एक विशाल बवण्डर उठना शुरू हो गया। पूरे मैदान के सीने को चीरती एक एक विशाल दरार उभरी और उसमें से जैसे रेत का समन्दर बाहर आने लगा। सैंकड़ों सैनिक और लड़ाके पल भर में उस दरार में समा गए। मकास, जरूस और सलार, तीनों भाई एल्फैण्टार की पीठ पर सवार होकर, ऊपर आसमान में उठ गए।

ऊपर से उन्होंने देखा, नीचे भयंकर मारकाट मच चुकी थी। अचानक पूरे मैदान पर अँधेरे का एक विस्पफोट हुआ और उस गहन परत के नीचे, उन्हें कुछ भी दिखाई देना बन्द हो गया। वो समझ गए कि तम–पुत्रा बोरियाबिस ने मैदान को ढँक लिया है। एल्फैण्टॉर ऊपर और ऊपर उठता जा रहा था। इस वक्त केवल मकास और जरूस के हाथों में छुरा और तलवार थे, सलार खाली हाथ था। तभी उजड़े–प्रेतों के दल ने हमला कर दिया।

जैसे ही उजड़े–प्रेत पास पहुँचे, एल्फैण्टार ने उन्हें अपने हाथों में भींचकर नीचे मैदान की तरफ पेंफक दिया। ऊपर उठते वक्त उन्होंने देखा, पूरे किले के भीतर आग और विस्पफोट हो रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वो किले को नष्ट

करके जल्दी से जल्दी निकल जाना चाहता हो। किले की सबसे ऊँची मीनार के पास पहुँचकर इससे पहले, वो जैल्डॉन और लैनीगल को ढूँढने की कोशिश करते, उनकी मुट्ठियाँ आपस में भिंच गईं।

मीनार के भीतर से एक विशाल कछुआ, उड़ता हुआ बाहर निकला, जिसकी पीठ पर जैल्डॉन और लैनीगल सवार थे। उनके पास पहुँचने से पहले ही, कछुए ने अपने लम्बे पंख पैफला दिए और वो मीनार से दूर होने लगा।

'वो भागने की कोशिश कर रहे हैं।' सलार ने उनकी तरफ देखा।

'मगर भाग नहीं पाएँगे...' जरूस ने दाँतों पर दाँत कसते हुए कहा। उन्होंने देखा, नीचे पूरा जत्था भयंकर जंग में जूझ रहा था।

पिछली कई रातों से मैं सोया नहीं हूँ। मेरी बूढ़ी आँखों में सुर्खी और सूजन आ गई है। पूरा जिस्म थकान से चूर है लेकिन मैं आराम नहीं कर सकता। मुझे इस महागाथा के खास अध्याय, पत्थर पर खोदने हैं। मेरी छेनी की धर, पूरी तरह कुन्द हो चुकी है, टाँकी दो जगह से टूट गई है और हथौडे का हत्था बार–बार निकल जाता है। मेरे बूढ़े बाजू थकान से ढहे जा रहे हैं मगर एक पागल धुन है, जो लगातार मुझे धकेल रही है, उन औजारों की तरफ, जो मेरी थकी हुई उँगलियों के पास पड़े हैं। मैंने अपने हुनर का एक–एक कतरा, इस युग–गाथा को खोदने में निचोड़ दिया। वो हुनर, जो किसी संगतराश की उँगलियों और उसकी रूह में भी तैरता है। वो आग, जो हुनर के रूप में नसों में रेंगती रहती है।

मुझे आज उस *आग* की दास्तान, इन दीवारों पर उकेरनी है, जो उस हर चीज़ को अपने भीतर खींच लेती, जो भी उसके पास आती। आग के वो सात घेरे, जिन्हें एल्गा–गोरस को जलाकर राख करने के लिए खींचा गया। साथ ही वो घ टना भी, जब एल्गा–गोरस पर एल्गा–गोरस की ही ताक़तों से वार किया गया। मुझे उन रहस्यों के ऊपर से सरकती लफ़्ज़ों की चादर भी दिख रही है, जिन्हें इस दास्तान के चन्द किरदारों के सिवाय कोई नहीं जानता।

एल्गा-गोरस

अध्याय तीस

नीचे भयंकर मारकाट मची हुई थी। किले की आखिरी बुर्जी के पास तक पहुँचते-पहुँचते, जैल्डॉन और लैनीगल काफी ऊँचाई तक उड़ चुके थे। लैनीगल कछुए को उड़ा रहा था और जैल्डॉन ने लकड़ी की काठी कसकर पकड़ी हुई थी। उसने एक हाथ से संतुलन बनाया हुआ था और दूसरे हाथ से एक किताब को कसकर सीने से लगा रखा था। एल्फैण्टार ने अपनी रफ्तार बढ़ाई और वो कछुए के काफी पास पहुँच गए।

तीनों अब इतना पास थे कि किताब के ऊपर लिखे गए नाम को साफ देख सकते थे। वो बेहद वजनी, मोटी और विशालकाय पुस्तक थी, जिस पर एकदम लाल हर्फों में लिखा हुआ था...**एल्गा-गोरस**। तेज हवा की वजह से हाथी के कान से बने उसके चौड़े-चौड़े पश्ष्ठ फड़फड़ कर रहे थे। उन्हें आता देख, जैल्डॉन ने किताब उनकी तरफ सीधी की और किताब से ऊर्जा और रोशनी का एक बड़ा गोला बाहर निकलने लगा। इससे पहले वो संभल पाते, तेज रोशनी और ऊर्जा का वो शक्तिशाली प्रहार एल्फैण्टार के जिस्म पर पड़ा और वो कटे पँछी की तरह नीचे गिरने लगा।

तेज धक्के की वजह से तीनों के जिस्म नीचे गिरते-गिरते बचे। एल्फैण्टार लगातार नीचे गिरता जा रहा था। वो खुद को संभालने की कोशिश कर रहा था लेकिन संभाल नहीं पा रहा था। तीनों हैरत में थे, एल्फैण्टार...जिसे सालन और थोरोज भी दुनिया के सबसे रहस्यमय और ताकतवर प्राणियों में मानते थे, वो एल्गा-गोरस का एक प्रहार भी नहीं सह पाया। तीनों के अवचेतन में कहीं ये बात थी कि अगर ये वार सीध उन पर पड़ा होता तो अब तक वो मौत के मुँह में समा गए होते।

जमीन लगातार नज़दीक आती जा रही थी। कई बार एल्फैण्टार किले की दीवारों से टकराते-टकराते बचा। जिस रफ्तार से वो नीचे गिर रहे थे, ऐसा लग रहा था ज़मीन से टकराते ही उनके चिथड़े बिखर जाएँगे। तीनों की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। फिर ऐसा लगा जैसे एल्फैण्टार ने खुद को संभाला हो। एक हल्का-सा झटका लगा और जमीन से मुश्किल से कुछ गज़ ऊपर, उसने अपने विशाल पंख खोले और खुद को ऊपर उठा लिया।

अब वो दोबारा बहुत तेज़ी से ऊपर मीनार की तरफ उठता जा रहा था। जैल्डॉन का कछुआ अब काफी दूर निकल गया था।

'हमें उस तक पहुँचना होगा।' मकास ने एल्फैण्टार के जिस्म को कसकर पकड़ते हुए कहा।

'और तेज़...अगर एक बार वो निकल गए तो कभी हाथ नहीं आएँगे।' जरूस ने तेज़ हवा के बीच चीखते हुए कहा।

एल्फैण्टार ने अब अपनी गति आश्चर्यजनक रूप से बढ़ा दी। जैल्डॉन का कछुआ अब समन्दर के ऊपर आ चुका था। तभी उसे सामने हवा में कैटाकोटस मैगनडोला दिखा। वो ठीक उसके सामने था। उसका पारदर्शी जिस्म इस तरह सामने अड़ा था जैसे वो किसी भी क़ीमत पर उन्हें भागने नहीं देना चाहता हो।

जैल्डॉन ने अपने हाथ सीधे किए और किताब के भीतर से रोशनी का बना एक विशाल जाल, निकलकर तेज़ी से कैटाकोटस की तरफ़ झपटा। पल भर में ही वो जाल के भीतर कैद हो चुका था। किसी गठरी की तरह वो नीचे गिरा लेकिन एक ही पल में जाल में बने सुराख़ों से उसका जिस्म बाहर निकल आया। उसने अपने पारदर्शी हाथ सीधे किए और ऐसा लगा जैसे आसमान से समन्दर तक, एक पारदर्शी दीवार बन गई हो। कछुआ पूरी ताकत से जाकर उस पारदर्शी दीवार से टकराया। वो लचीली दीवार, किसी कपड़े की तरह आगे खिंचती चली गई मगर, ध्वस्त नहीं हुई। तब तक पीछे से एल्फ़ैण्टार भी तीनों को लेकर वहाँ आ चुका था। कछुआ बुरी तरह लड़खड़ाकर, नीचे समन्दर की तरफ़ गिर रहा था।

तभी उन्हें नीचे समन्दर की सतह पर जलपरियों की पूरी सेना दिखाई दी। जलपरियों की राजकुमारी मकाना ने पानी

के ऊपर एक उछाल ली और उसके हाथ से छूटा अजीब भाला, पूरी शक्ति से सनसनाता हुआ, कछुए की गर्दन पर चढ़े लौह–कवच पर जाकर लगा। कछुआ तेजी से नीचे गिर रहा था लेकिन जल्दी ही संभल गया। वो अब वापस टापू की तरफ उड़कर निकल जाना चाहता था लेकिन एक तरफ उसका रास्ता कैटाकोटस ने रोका हुआ था और दूसरी तरफ तीनों भाइयों ने।

'तुमने अपनी मौत को खुद न्यौता दिया है, गन्दे कीड़ो! अब तुम सबको मसलना ही होगा।' जैल्डॉन के गले से जैसी कोई ज़ख्मी गुर्राहट निकली।

किताब के फड़फड़ाते पश्ष्ठों से एक आसमानी रोशनी निकली और कछुए के चारों तरफ सुरक्षा–कवच जैसा बन गया। नीचे से जलपरियों के फेंके भाले, लगातार कछुए की तरफ आ रहे थे लेकिन उस आसमानी रोशनी से टकराकर बेकार हो रहे थे।

जैल्डॉन ने समन्दर की लहरों की तरफ अपने हाथ उठाकर कुछ बुदबुदाना शुरू किया और लहरें ऊपर उठने लगीं। उनके बीच से जो चेहरे उभरकर सामने आए, उन्हें वो सब पहले देख भी चुके थे और उनसे जूझ भी चुके थे। वो फ्रलडीसोल्स थे, जैल्डॉन की सबसे ताकतवर और खतरनाक फौज। समन्दर के पानी से हजारों की तादाद में वो उभरते जा रहे थे। जलपरियों और फ्रलडीसोल्स के बीच एक भयानक जंग छिड़ गई। दोनों तरफ के हमलों से पानी की बड़ी–बड़ी लहरें उठ रही थीं।

कछुए को लेकर वो वापस ढहते, जलते किले की मीनारों तक पहुँच गया। एल्फैण्टार अब भी तीनों के लेकर उसके पीछे था। नीचे मैदान में रेत का अंधड़ इतना घना हो चुका था कि केवल भागते–दौड़ते सैनिक ही नजर आ रहे थे। मैदान दो हिस्सों में फट चुका था। मैदान के बीच उभरी चौड़ी दरार हर पल और गहरी होती जा रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे वो पाताल में ही जाकर समाप्त होगी। उन्होंने देखा, जमीन पर खड़े सालन के दोनों हाथ आसमान की तरफ उठे हुए थे और उन्होंने अपनी मानसिक शक्तियों से, बहुत सारे जल–पिशाचों और उजड़े–प्रेतों की एक गेंद–सी बना रखी थी। ऐसा लग रहा था जैसे हिचकोले लेती उस गेंद को, वो अंदर की तरफ दबा रहे हों और उसके भीतर वो सब मसले जा रहे हों।

पहाड़ियों से उतरकर अब भी, लड़ाके मैदान की तरफ दौड़ रह थे। जैल्डॉन ने पूरे मैदान का एक चक्कर लिया और फिर किले के गुम्बद की तरफ देखा। इस वक्त सालन और थोरोज़ के साथ, जत्थे के कई सदस्य किले के ठीक नीचे खड़े हुए थे। उसने अपनी कलाइयाँ किले की तरफ सीधी कीं और ऊर्जा और रोशनी का एक बड़ा धक्का, किले के गुम्बद से टकराया। एक ही पल में विशाल गुम्बद ऐसे नीचे गिरने लगा जैसे कच्ची मिट्टी का बना हो।

नीचे खड़े लोगों के पास भागने का भी समय नहीं था। गुम्बद हर पल नीचे आता जा रहा था। एल्फैण्टार की पीठ पर सवार तीनों को ऐसा लगा जैसे वो गुम्बद के नीचे दबकर कुचल जाएँगे। तभी उन्होंने थोरोज़ के पतले हाथों को ऊपर आसमान की तरफ उठते देखा और गुम्बद के ठीक नीचे एक विशाल बुलबुला पैदा हुआ, जत्थे के सारे सदस्य उस बुलबुले के भीतर थे। बुलबुला इतना विशाल था कि गिरता हुआ गुम्बद भी उससे कई गुना छोटा लग रहा था।

पूरे वेग से, गुम्बद बुलबुले से आकर टकराया और इस तरह उछलकर मैदान में जाकर गिरा जैसे किसी गेंद के ऊपर कोई दूसरी गेंद गिरी हो। बहुत सारे सैनिक, भारी गुम्बद के नीचे दब गए। धूल का एक नया गुबार, रेत के पुराने गुबार के साथ घुल गया।

लैनीगल ने एक पल भी गँवाए बिना, कछुए को किले की छत की तरफ उड़ा दिया। विशाल कछुआ अब हर पल ऊपर उठता जा रहा था। एल्फैण्टार पर सवार तीनों भाई जब तक कुछ समझ पाते, तब तक वो ऊपर जाकर गुम हो चुका था। वो हर तरफ उसे खोज रहे थे लेकिन वो कहीं दिखाई नहीं दिया।

नीचे खड़े पूरे जत्थे ने जैल्डॉन के इस हमले को भी देख लिया और ये भी कि वो किले की छत की तरफ उड़कर गया है। सालन और थोरोज़ ने पहाड़ियों से उतरते लड़ाकों और सेना को निशाना बनाना शुरू किया। उनके मस्तिष्क से निकली ऊर्जा अब पहाड़ियों की चोटियों और गुफा–द्वारों को ध्वस्त कर रही थी। मैदान बीच में से इतना गहरा फट चुका था कि मैदान से होकर अब किले तक पहुँचना लगभग असंभव हो गया। कुछ ही पलों में कई पहाड़ियाँ पूरी की पूरी जमींदोज़ हो गईं।

'हमें ऊपर जाना होगा, वो अकेले उसे नहीं संभाल सकते।' फ़ैगुअस ने सालन और थोरोज़ की तरफ़ देखते हुए कहा।

'हाँ, वो दोनों बहुत ताकतवर भी है और चालाक भी।' सालन ने उसकी बात का जवाब देते हुए कहा।

'यहाँ संभालना गम्पू...हमें ऊपर किले की छत पर जाना होगा।' थोरोज़ ने पतले सींकड़ी की तरफ देखकर चीखते हुए

कहा, जो एक वरमोस की गिंडार जैसी पूँछ पर, अपने हाथ में पकड़ी रस्सी का पफंदा कस रहा था।

उसने ऐसी नज़रों से उनकी तरफ़ देखा जैसे कहना चाहता हो–'आप जाइये, इनके लिए तो मैं अकेला ही काफ़ी हूँ।' खुद को इस ज़िम्मेदारी के लायक़ समझे जाने की भावना ने उसके भीतर जैसे और जोश भर दिया।

मकास, जरूस और सलार जब तक ऊपर पहुँचे, जैल्डॉन टूटे हुए गुम्बद के आसपास कहीं नज़र नहीं आ रहा था। वो और ऊपर पहुँचे, सामने पैफली विशाल छत के बीचोबीच उन्हें आग की लपटें उठती दिखाई दीं। रोशनी में उन्होंने देखा, जैण्टर प्रजाति का वो विशाल कछुआ वहीं खड़ा था। आग की लपटों की रोशनी में लैनीगल और जैल्डॉन भी उन्हें दिखाई दिए। उनके पास दो उजड़े–प्रेत भी खड़े थे।

उन्हें हैरत हुई जब एल्फ़ैण्टार छत पर उतरा, लेकिन उनमें से किसी ने भी भागने या हमला करने की कोशिश नहीं की। पास जाकर उन्होंने देखा, एल्गा–गोरस एक पत्थर पर रखी हुई थी। उसके इर्द–गिर्द आग के *सात* घेरे थे, जिनसे लपटें निकल रही थीं।

'आ गए तुम लोग...मुझे तुम चूहों को सबक सिखाना ही होगा। तुमने शाश्वत–जल को नष्ट कर दिया, तुमने मेरी बरसों की योजना पर पानी पेफर दिया, तुमने उस शाप से मुक्त होने का अंतिम अवसर भी मुझसे छीन लिया, जो एल्गा–गोरस को धेखे से छीनने और पूरा करने की वजह से लगा।' उसकी आवाज़ में दहशत पैदा कर देने वाली गुर्राहट थी।

'तुम्हारे कर्म, तुम्हारे वर्तमान और भविष्य के निर्णायक हैं जैल्डॉन...खून का वो हर कतरा, तुमसे जवाब माँगने, इस किले की दुर्भाग्यशाली छत तक आ चुका है, जो तुमने अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए बहाया है।' मकास ने उसे देखकर तेज़ आवाज़ में कहा।

'तुम सबकी मौत इस भाग्यशाली टापू की गवाह बनेगी, जंगली, लेकिन उससे पहले तुम्हारी आख़िरी ख़्वाहिश ज़रूर पूरी कर दी जाएगी। जाओ...एल्गा–गोरस तुम्हारा इंतज़ार कर रही है। ले लो उसे।' उसने सात जलते घेरों के बीच रखी किताब की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

'तुमने शाश्वत–जल नष्ट कर दिया। अब वो अभिशाप अपना काम करेगा, जो एल्गा–गोरस को धेखे से पूरा करने वाले के लिए नियत किया गया था लेकिन याद रखना, मौत के नाख़ून केवल जैल्डॉन की रूह को नहीं खरोंचेंगे...वो सब भी साथ मरेंगे, जिन्होंने इस किताब को बनाने में अपनी रूहानी ताक़तों का इस्तेमाल किया है। वो हर ज़िन्दगी, मौत के नर्क में झुलसेगी, जो इस किताब को रचते वक़्त इससे जुड़ी थी। तुम्हारे वो पाँचों बूढ़े फ़कीर, दुनिया का सबसे बुजुर्ग–शिशु, वो महान सालन और साथ ही वो दूसरा तथाकथित महान बूढ़ा थोरोज़ भी।।' ऐसा लग रहा था जैसे उस पर पागलपन और वहशीपन का दौरा पड़ा हो।

'तुम किसी का कुछ नहीं कर सकते जैल्डॉन...वो शाप तुम्हें खुद ही ख़त्म कर देगा, जिसे तुमने खुद अपने लिए धेखे से चुन लिया। इसलिए अगर एक आसान मौत चाहते हो, तो एल्गा–गोरस को, उसके रखवालों को सौंप दो और अपनी नियति की प्रतीक्षा करो।' जरूस ने उसकी तरफ़ चेतावनी भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

तभी किले की सीढ़ियों से होते हुए, सालन, थोरोज़ और फ़ैगुअस ऊपर आ गए। उनके लबादे इस वक़्त बुरी तरह धूल में लिथड़े हुए थे। उनके ऊपर आते ही लैनीगल और जैल्डॉन ने उनकी तरफ़ देखा। लैनीगल के पतले होठ हिले–'तुम्हारा ही इंतज़ार था थोरोज़...तुम सबकी मौत, मैं भी अपनी इन बूढ़ी आँखों से देखने के लिए बेचैन हूँ।'

'तुम्हें तुम्हारे किए का दण्ड सही मात्राा में मिलेगा लैनीगल...और तुम्हारे इस भगोड़े शिष्य को भी, जो तुम्हारे जैसे ही, अपने दो सौ गुरुओं का हत्यारा है।' थोरोज़ ने स्थिरता से कहा।

जैल्डॉन ने अपनी वहशी आँखों से उनकी तरफ़ देखा। 'एल्गा–गोरस अपनी दी हुई हर ताक़त को वापस चूस रही है, वो हर ताक़त भी सोख ली जाएगी, जिसके बल पर जैल्डॉन ने सदियों में अपनी ये सल्तनत खड़ी की लेकिन अब न तो ये किताब बचेगी, न इसके बल पर पूरी दुनिया में अमन पैफलाने का सपना देखने वाले लोग। कोई भी नहीं बचेगा, ये किताब भी जलकर ख़ाक होगी और तुम सब भी, ढीठ बूढ़ों।'

'एल्गा–गोरस को हिफ़ाज़त से हमें सौंप दो जैल्डॉन...और अपने दुष्कर्मों की माफ़ी माँगो।' फ़ैगुअस ने सख़्त और तेज़ आवाज़ में कहा।

'एल्गा–गोरस...हाँ, मुझे एल्गा–गोरस तुम्हें सौंप ही देनी चाहिए।' उसने पास खड़े उजड़े–प्रेत की तरफ़ देखा और कहा–'किताब, इन बूढ़ों को सौंप दो **जरनास...**' उजड़े–प्रेत ने हैरत से उसकी तरफ़ ऐसे देखा, जैसे समझ ना पा रहा हो

कि वो आखिर कह क्या रहा है।'

जैल्डॉन ने दोबारा उसकी तरफ देखा और सख्ती से आदेश दिया। 'जाओ...किताब ले जाकर इन बूढ़ों को सौंप दो जरनास।'

उजड़ा-प्रेत हिचकता हुआ उस तरफ बढ़ा, जिधर आग के सात घेरों के बीच, एल्गा-गोरस रखी हुई थी। वो सब भी हैरत से जैल्डॉन की तरफ़ देख रहे थे कि आखिर अचानक ये परिवर्तन कैसे?

उजड़ा-प्रेत, आग के घेरों के पास पहुँचा और जैसे ही उसने, भीतर प्रवेश करना चाहा, लपटों ने उसे अपनी चपेट में ले लिया और वो पल भर में जलकर राख हो गया। अब लपटें हर पल बढ़ती जा रही थीं। ऐसा लग रहा था वो कुछ ही पलों में एल्गा-गोरस को भी जलाकर राख कर देंगी।

'...अब उनमें से कोई नहीं बचेगा सालन...' वो जोर से हँसा। 'जिन्होंने अपनी रूहानी ताकतों से इस किताब की रचना की। इस किताब के जलते ही वो सब भी जलकर राख हो जाएँगे। ये *वृषकाग्नि* उस हर चीज को चूस लेगी, जो इसके आसपास आएगी, फिर वो चाहे कोई भी ताकत क्यूँ न हो...बिल्कुल इस मूर्ख प्रेत की तरह।' उसने अपनी लम्बी उँगली से राख के उस ढेर की तरफ इशारा करते हुए कहा, जो आग के घेरे के पास पड़ा था।

आग की लपटें हर पल बढ़ती जा रही थीं। उन लपटों के बीच कभी-कभी एल्गा-गोरस दिख जा रही थी मगर ऐसा लग रहा था जैसे बहुत जल्द आग उसे अपनी चपेट में ले लेगी।

'ये किताब जली तो वो हर इंसान भी इस किताब के साथ ही जलकर राख हो जाएगा दुष्ट बूढ़ो, जिसने इस किताब को रचने में अपनी ताकत इस्तेमाल की है और अब इसे नष्ट होने से कोई नहीं बचा सकता। अगर किसी ने इस आग के पास भी आने की कोशिश की तो उसका हश्र वही होगा, जो ये राख की ढेरी कह रही है।' उसने गुर्राते हुए कहा।

हर कोई अचानक घटी इस घटना से स्तब्ध रह गया। किसी को समझ नहीं आ रहा था, इस घटनाक्रम को कैसे रोका जाए। आग की लपटें जैसे-जैसे एल्गा-गोरस के पास पहुँचती जा रही थीं। सालन, थोरोज और फैगुअस ने लबादों पर नीली आग की बारीक-बारीक लकीरें तैरने लगी थीं। वो उन्हें जला तो नहीं पा रही थी लेकिन उन लकीरों की मोटाई हर गुज़रते पल के साथ बढ़ती जा रही थी। उन तीनों के चेहरे और बदन से अब बुरी तरह पसीना छलछलाने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे उनके भीतर गरमी का कोई सैलाब उमड़ रहा हो।

तीनों भाई कुछ समझ नहीं पा रहे थे, कैसे एल्गा-गोरस को जलने से बचाएँ और किस तरह उन सबको, जिन्हें वो आग कुछ ही पलों में जलाकर राख करने वाली थी। सालन, थोरोज़ और फ़ैगुअस ने अपनी मानसिक शक्तियों का इस्तेमाल करके अपने जिस्मों पर उभरने वाली आग को काबू करने की कोशिश की लेकिन कुछ नहीं हुआ। आग अब इतनी ज़्यादा बढ़ चुकी थी कि उन तीनों के लबादों पर उभरने वाली लपटें किसी अजगर की तरह बल खाने लगीं।

'कुछ करो, वरना अनर्थ हो जाएगा।' मकास ने दोनों भाइयों की तरफ़ देखते हुए कहा।

'लेकिन क्या?' जरूस ने उसी तरह चीखकर उससे पूछा, जैसे उसने सवाल किया था। ऐसा लग रहा था जैसे उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा हो। फिर एक तेज़ भभका उठा और उन्होंने सालन, थोरोज और फैगुअस के जिस्म के आसपास पहले से बड़ी लपटें देखीं।

अचानक वो हुआ, जिसके बारे में न तो जैल्डॉन ने उम्मीद की थी और न ही लैनीगल ने। तीनों भाई एक साथ, आग के उस घेरे की तरफ़ बढ़ रहे थे, जिसके भीतर एल्गा-गोरस लपटों में घिरी हुई थी।

'नहीं...' सालन के होठों से एक चीख जैसी निकली। 'उससे दूर रहो, वो तुम्हें एक पल में राख में तब्दील कर देगी।'

मगर ऐसा लगा जैसे उन पर इस आवाज़ का कोई असर न हुआ हो। वो लगातार उसी तरह आगे बढ़ते रहे।

'उन्हें रोको फ़ैगुअस...हमें बचाने के लिए वो अपनी ज़िन्दगी क़ुर्बान करने जा रहे हैं।' थोरोज़ ने उस जलन से छटपटाते हुए कहा।

'...ये तो बहुत बढ़िया है।' वो बेरहमी से मुस्कुराया। 'एक तीर से इतने शिकार...अच्छा है जंगलियो! जाओ...जाओ, निकाल लो किताब इस आग से। तुम सब एक साथ जलकर राख होगे तो जैल्डॉन की आँखों को ज़्यादा सुकून मिलेगा।' जैल्डॉन के चेहरे पर इस वक़्त वहशत तैर रही थी।

वो लगातार आग के घेरे की तरफ बढ़े और जैसे ही उनके क़दम घेरे के नज़दीक पहुँचे, ऐसा लगा जैसे आग की लपटें किसी साँप की तरह आगे बढ़कर उनके जिस्मों से लिपट गई हों। तीनों के जिस्म धू-धू कर लपटों में जलने लगे लेकिन वो रुके नहीं।

'ओहह...मेरे बच्चो...' थोरोज के बूढ़े होठों से एक आह निकली और नीली आग का एक भभका उनके जिस्म के चारों तरफ तैर गया।

कुछ पलों के लिए तीनों भाई आग के घेरे में धू-धू कर जलते दिखे और फिर लपटों के बीच गायब हो गए।

'कछुए को संभालो, अब हमें निकलना होगा, इन बेवकूफों ने खुद ही मौत को चुन लिया।' जैल्डॉन ने लैनीगल की तरफ देखा और कछुए की तरफ बढ़ा।

तभी आग की लपटों के बीच से उसे तीन जलते जिस्म बाहर निकलते दिखाई दिए, जो ऊपर से नीचे तक, आग का गोला नज़र आ रहे थे। उनमें से एक के जलते हाथों में एल्गा-गोरस थी।

जैसे ही वो घेरे से बाहर निकले, आग के सातों घेरों की लपटें बुझ गईं लेकिन उनके जिस्म अब भी जल रहे थे। फिर आहिस्ता-आहिस्ता लपटें कम होती चली गईं। तीनों के जिस्म की आग बुझ चुकी थी, उनकी देह की चमक और आभा, अब पहले से ज़्यादा दिख रही थी। उनके बलिष्ठ जिस्म अब और भी ज़्यादा दप-दप दमक रहे थे। एल्गा-गोरस उनके पास थी, तीनों में से किसी के जिस्म पर हल्का-सा झुलसने तक का निशान नहीं था।

'ये नहीं हो सकता।' जैल्डॉन के होंठों से, हैरत और क्रोध में डूबी एक तेज़ आवाज़ निकली। 'ये हो ही नहीं सकता... इस आग से कैसे बच सकते हैं ये।'

सालन, थोरोज और फैगुअस के लबादों पर तैरती नीली आग भी अब खत्म हो गई थी। तीनों संभलकर खड़े हुए और एक साथ जैल्डॉन पर हमला किया। तीनों के हाथों से ऊर्जा और रोशनी का सैलाब एक साथ निकला और आपस में मिश्रित होकर, रोशनी के एक घेरे की तरह जैल्डॉन से टकराया। तीनों की संयुक्त ताक़त के बाद भी, उस हमले से वो केवल लड़खड़ाकर रह गया।

'तुम केवल तीन हो सालन, और जैल्डॉन के भीतर, इस वक़्त उन सैंकड़ों लोगों की रूहानी ताक़तें हैं, जिन्होंने एल्गा-गोरस की रचना की है। अब बहुत हुआ, अपनी ज़िन्दगी का आख़िरी आसमान देखने के लिए तैयार हो जाओ।' जैल्डॉन ने बात पूरी की और रोशनी के तीन बवण्डर, गोल-गोल घूमते हुए, सालन, थोरोज और फ़ैगुअस से टकराए। तीनों उस वार से बुरी तरह उछलकर दूर जा गिरे। उनके होंठों से सुर्ख़ रक्त की बारीक़ लकीरें बहकर बाहर आ रही थीं।

जरूस और सलार दौड़कर उनके पास पहुँचे और उन्हें उठाने की कोशिश की। तीनों की नाक और होंठों से रक्त बाहर आ रहा था। तब तक मकास भी दौड़कर पास आ गया, एल्गा-गोरस उसने कसकर अपने सीने से चिपकाई हुई थी। उसने झुककर फ़ैगुअस को उठाने की कोशिश की।

'अब तुम सब नरक में जाकर एक-दूसरे की कुशलता पूछना जंगली छोकरो!' जैल्डॉन की क्रोधित गर्जना ने उनको पलटकर देखने के लिए मजबूर कर दिया।

इससे पहले वो संभल पाते, उसने एक बार फिर अपने हाथ सीधे किए और ऊर्जा और रोशनी का एक विशाल बवण्डर, किसी भाले की तरह पूरी गति से, उनकी तरफ़ लपका।

अब न तो बचने का कोई रास्ता था और न ही कुछ करने का। जरूस केवल इतना चीख सका-'बचो मकास' लेकिन बचने के पल ख़र्च हो चुके थे।

ऊर्जा और रोशनी का वो भाले जैसा बवण्डर सनसनाता हुआ मकास से बस कुछ ही अँगुल दूर था, जब उसने अपने चेहरे को बचाने के लिए, एल्गा-गोरस को आड़ की तरह इस्तेमाल किया।

रोशनी का बवण्डर पूरी रफ़्तार से, एल्गा-गोरस से टकराया और जिस गति से मकास की तरफ़ आया था, उससे दोगुनी रफ़्तार से वापस जैल्डॉन की तरफ़ लौटा।

संभलने के लिए एक भी पल नहीं था, बवण्डर पूरी ताक़त से जैल्डॉन से टकराया और रोशनी का एक जबरदस्त विस्फोट हुआ। कुछ पलों के लिए, कुछ भी दिखना बन्द हो गया। आँखें जब देखने लायक हुईं तो उन्होंने जो देखा, वो हैरतअंगेज़ था। जैल्डॉन का पूरा जिस्म उस रोशनी से झुलस चुका था और वो एकदम बेदम-सा होकर ठण्डी छत पर पड़ा था।

सबसे ज़्यादा हैरानी उन्हें ये देखकर हुई कि लैनीगल कहीं नज़र नहीं आ रहा था। वो दौड़ते हुए पास पहुँचे, जैल्डॉन पूरी तरह अचेत और ज़ख्मी था। लैनीगल कहीं नहीं दिख रहा था। फिर जरूस को अपने पाँवों के पास कुछ छोटा-सा पड़ा दिखा। उनकी हैरत का ठिकाना न रहा। वो लैनीगल था...जिसका जिस्म अब इतना छोटा हो गया था कि इंसानी हाथ का *अँगूठा* भी उससे बड़ा लगता। वो बुरी तरह बवण्डर की चपेट में आया था लेकिन वो जैल्डॉन की तरह ज़्यादा

झुलसा हुआ नहीं दिख रहा था। इस वक्त वो भी पूरी तरह अचेत होकर छत पर पड़ा हुआ था। तब तक सालन और फैगुअस भी लड़खड़ाते हुए उन तक आ गए।

'ये क्या हुआ?' सलार के होंठों पर सवालिया लफ़्ज, जैसे पपड़ी की तरह चिपक गए।

दोनों भाई भी बुरी तरह झुलसे, अचेत जैल्डॉन और अँगूठे भर के लैनीगल को देख रहे थे।

सालन ने लैनीगल और जैल्डॉन के जिस्मों की तरफ देखा। 'ये केवल बेहोश हैं, मरे नहीं हैं। *एल्गा-गोरस* की ताकत, खुद *एल्गा-गोरस* से टकरा गई और वापस लौटती ऊर्जा के वार ने, इनकी सारी शक्तियाँ सोख लीं।'

क्या ये होश में आने पर फिर हमला करेगा?' जरूस ने फैगुअस की तरफ देखते हुए पूछा।

'नहीं...अब ये बहुत कमजोर है। एल्गा–गोरस से इसने जो ताकतें हासिल की थीं, वो वापस उस किताब में समा चुकी हैं।'

तभी उनकी नजर थोरोज पर पड़ी, वो अभी भी अपनी जगह से उठने की कोशिश कर रहे थे लेकिन कामयाब नहीं हो पा रहे थे। वो सब, जैल्डॉन और लैनीगल को अचेत पड़ा छोड़कर, दौड़ते हुए उन तक पहुँचे।

'आहह...' थोरोज के मुँह से एक कराह निकली।

मकास ने अपनी हथेली से उनके होंठों से बहता रक्त साफ किया।

'उसकी सारी ताकतें नष्ट हो चुकी हैं महान थोरोज...' फैगुअस ने उनको सहारा देते हुए कहा। 'वो अब किसी को नुकसान नहीं पहुँचा सकता, देखिए उसका बेदम जिस्म वहाँ पड़ा है।' फैगुअस ने हाथ से उस तरफ इशारा किया, जहाँ जैल्डॉन अचेत पड़ा था।

उस तरफ मुड़कर देखते ही उनकी नजर उस विशाल कछुए पर पड़ी, जो इस वक्त जैल्डॉन के अचेत जिस्म के पास तक आ गया था।

इससे पहले वो कुछ समझ पाते, कछुए ने उसकी पोशाक को अपने मुँह में दबाया और ऊपर आसमान में उठता चला गया। वो दौड़कर वहाँ तक आए लेकिन कछुआ जैल्डॉन का अचेत जिस्म लेकर दूर होता चला गया। कुछ समझने से पहले ही वो अँधेरे में गायब हो गया।

'वो उसे ले गया।' जरूस ने बदहवास, तेज़ आवाज़ में कहा।

'वो जैण्टर कछुआ है, चिहानचोचसों ने उसे सौंपा है। वो अपने मालिक के लिए जान तक दे सकता है। अब उसे पकड़ना या खोजना मुश्किल है।' सालन ने एक गहरी साँस लेते हुए कहा।

'इसे उठाकर अपने पास रख लो।' सालन ने अचेत पड़े लैनीगल की तरफ इशारा करते हुए कहा।

जरूस ने कुछ समझते हुए, सहमति में गर्दन हिलाई और अपनी कमर से बँधी झोली से, एक बड़ी–सी काँच की डिबिया निकालकर, लैनीगल को उसमें रख लिया। वो अब भी अचेत था। जरूस ने डिबिया झोली में रख ली और दूर आसमान की तरफ़ देखा। कछुआ, जैल्डॉन को लेकर ऐसे ग़ायब हो चुका था जैसे कभी वहाँ था ही नहीं।

'फ़ैगुअस...ये सब?' मकास कुछ पूछना चाहता था लेकिन फैगुअस ने उसकी बात बीच में ही काट दी।

'हर सवाल का जवाब मिलेगा लेकिन अभी नहीं...अब यहाँ से निकलने की सोचो। एल्गा–गोरस की ताक़तों से बना ये क़िला अब नष्ट होने वाला है।'

उन्होंने सहारा देकर थोरोज़ को खड़ा किया और छत से नीचे झाँककर देखा। मैदान में जंग लड़ने वाले जैल्डॉन के सब लड़ाके और योद्धा ग़ायब हो चुके थे। नीचे बस जत्थे के कुछ सदस्य क़िले के दरवाजे के नीचे बने चबूतरे पर नजर आ रहे थे।

वो सब एल्फ़ैण्टार की पीठ पर सवार होकर नीचे आए। हर तरफ़ तबाही और बर्बादी का मंज़र नज़र आ रहा था। जत्थे के सदस्यों को साथ लेकर वो टेढ़े–मेढ़े रास्ते से ऊपर चढ़ाई की तरफ़ दौड़े। एल्फ़ैण्टार ग़ायब हो चुका था।

क़िले की बुर्जियाँ अब बहुत तेज़ी से टूट–टूटकर नीचे गिर रही थीं। पूरा क़िला आग की लपटों में घिर चुका था। क़िले के सामने बना मैदान, अपने ही अंदर धँसने लगा। सब तेज़ी से वहाँ से निकले और तट की तरफ़ भागे। उनके पीछे एक तेज़ गड़गड़ाहट के साथ, पूरा क़िला ज़मींदोज़ हो गया।

'जल्दी सौ–परत–वाला–जलपोत निकालो, वक़्त बहुत कम है।' जरूस ने चीखकर मकास से कहा। उन्होंने देखा, जलपरियों की रानी फ़रियाना, किनारे के आसपास अपनी पूरी सेना के साथ अब भी तैर रही थी। फ़्रलडीसोल्स गायब हो

चुके थे।

मकास ने झोली में हाथ डालकर, सौ परत वाला जलपोत बाहर निकाला और समन्दर के पानी में छोड़ दिया। कुछ ही पलों में जलपोत खुलता चला गया और अपने विशाल आकार में आ गया। अब उनके पैरों के पास, किनारे की रेत भी भीतर धँसने लगी। सब बेहद तेजी से जलपोत में सवार हुए, इस बार जलपोत को दिशा–निर्देशन करने के लिए, मकाना उस पर नहीं थी। एक झटके के साथ, जलपोत आगे बढ़ गया।

टापू से दूर जाते ही सालन ने जलपरियों की रानी फरियाना को एक खास संकेत किया, जिसका मतलब था, टापू की तलहटी पर, उस रहस्यमय भाले का प्रहार, जो किसी भी द्वीप को समन्दर में गर्वफ कर सकता था। फरियाना ने पानी से बाहर उछाल लेकर, एक बार टापू की तरफ देखा और फिर पूरी शक्ति से, अजीब ढँग से मुडा हुआ वो भाला, टापू की तलहटी की तरफ फेंका। हवा में सनसनाता हुआ भाला, पूरी रफ्तार से पानी में समाया और समन्दर को चीरता हुआ, उसकी गहराइयों में समाता चला गया। खारे पानी को चीरता हुआ भाला, पूरी ताकत से टापू की तलहटी से टकराया। पानी के भीतर एक जोरदार विस्पफोट हुआ और टापू की पथरीली नींव, ढहती चली गई। पूरा टापू अपने ही भीतर ढहता चला जा रहा था, जिसकी वजह से पानी में तेज़ लहरें और उछाल पैदा हो रही थी।

टापू के गर्वफ होने की वजह से समन्दर के उस बड़े हिस्से में जैसे तूफ़ान आ गया। जलपरियाँ भी अब टापू से दूर होती जा रही थीं। पानी का जबरदस्त विस्पफोट हुआ और लहरें आसमान में बेहद ऊँचाई तक चली गईं। पूरा टापू, समन्दर के गर्भ में समा चुका था। दूर जाते जलपोत से उन्होंने देखा, टापू अब पूरी तरह नष्ट हो चुका था। उन्होंने एक बार पूरे जत्थे के सदस्यों का निरीक्षण किया, हर कोई आ गया था लेकिन पतला सींकड़ी गायब था। पूरे जलपोत पर वो कहीं नज़र नहीं आ रहा था।

'*असली* सुराही तुम्हारे पास सुरक्षित है ना?' सालन ने जरूस की तरफ़ देखते हुए शान्त आवाज़ में पूछा।

'हाँ, पूरी तरह सुरक्षित।' उसने बेहद सुकून से जवाब दिया।

'घास का वो सूखा हुआ तिनका कहाँ है?' पियोनी ने सबकी तरफ़ देखते हुए कहा।

'समन्दर किनारे तो वो था, कहीं ऐसा तो नहीं वो जलपोत पर चढ़ न पाया हो और...' सलार ने अपनी बात बीच में ही अधूरी छोड़ दी।

'नहीं...नहीं...मैंने भी उसे किनारे पर जलपोत के पास खड़ा देखा था, मगर उसके बाद वो कहीं नहीं दिखा।' जरूस ने उसकी बात पर गौर न करते हुए कहा।

'ढूँढो उसे।' फ़ैगुअस ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाते हुए कहा।

तभी उन्हें नीचे पानी में से एक आवाज़ सुनाई दी–'ततैये के छत्ते से गिरे अण्डो...चल्कागा के कौवे की छितराई हुई बीट, कछुए की लीद में से निकलते गुबरैलो...मैं यहाँ हूँ नामुराद पियोनी...मुझे ऊपर खींचो।'

हर किसी ने दौड़कर जलपोत की किनारी से नीचे झाँका। पतला सींकड़ी एक टूटी हुई रस्सी को पकड़कर जलपोत के साथ खिंचा चला आ रहा था।

जलपोत के आसपास तैरती जलपरियों ने उसे देख लिया और उनमें से बहुत सारी अब उसके पास आ गईं। वो सब उसे इस हालत में देख–देखकर मुस्करा रही थीं और पतला सींकड़ी एक हाथ से अपनी लँगोटी को संभालने की कोशिश कर रहा था, जो पानी के बहाव की वजह से बार–बार नीचे खिसक रही थी और दूसरे हाथ से उस रस्सी को पकड़े था।

दो जलपरियों ने उसे पकड़ा और एक झूला–सा देकर, एक साथ ऊपर जलपोत की तरफ़ उछाल दिया। वो हवा में कलाबाज़ियाँ खाता हुआ, लकड़ी के फ़र्श पर जाकर गिरा।

'तुम...वहाँ क्या कर रहे थे, झाड़ू की सींक?' बौनों के सरदार पियोनी ने उसकी तरफ़ देखकर मजाक उड़ाने वाले अंदाज़ में पूछा।

वो पहले तो खिसियाया–सा सबको देखता रहा, फिर गुस्से में जलपोत चलाने वाली रूह पर नाराज़ होता हुआ बोला, 'उस कमबख़्त को नाव चलाने तक की अक्ल नहीं है। मछली के पेट में पड़े, उस अध्खाए पिस्सू ने ऐन उसी वक़्त जलपोत आगे बढ़ाया, जब मैं चढ़ने वाला था और कमबख़्त ने एक बार पीछे मुड़कर ये तक नहीं देखा कि महान स्ट्रासोल गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फ़ैलीटस का पाँव फिसल गया है।' उसने गुस्से में अपनी गोल–गोल आँखें घुमाते हुए कहा। हर कोई उसकी बात पर हँस–हँसकर दुहरा हुआ जा रहा था।

जलपोत आहिस्ता–आहिस्ता आगे बढ़ता जा रहा था। पीछे अब केवल शान्त और असीम समन्दर रह गया था। जरूस

ने समन्दर के पानी पर नजर डालकर देखा, मकाना अपनी सहेलियों के साथ, जलपोत से दूरी बनाकर साथ–साथ चल रही थी। उसने एकटक देखते जरूस को देख लिया और आहिस्ता से मुस्करा दी। अंशदेव स्वर्णात्मा ने जरूस की तरफ देखा, तो वो झेंप कर दूसरी तरफ देखने लगा।

लगातार उस लम्बी यात्रा को तय करके, सौ–परत–वाला–जलपोत किनारे पर पहुँचा। पूरी सेना और सारे लड़ाके वहाँ बेसब्री से उनका इंतजार कर रहे थे। जलपोत के रुकते ही, हर तरफ से सब इस तरह उसकी तरफ दौड़े जैसे पूरी व्याकुलता से जानना चाहते हों कि आखिर वहाँ क्या हुआ? सब एक–एक करके किनारे पर उतर गए। हर किसी ने चारों तरफ से जैसे सवालों की झड़ी लगा दी।

फैगुअस ने सबकी तरफ देखते हुए विजयी ढंग से कहा, 'जैल्डॉन और लैनीगल परास्त हुए, एल्गा–गोरस अब हिफाजत से हमारे पास है।'

लाखों की उस फौज ने एक जोरदार विजय–नाद करके उनका स्वागत किया।

शिविर में सालन ने दूर–दराज से आए सरदारों और योद्धाओं का तहेदिल से शुक्रिया अदा किया और थोरोज ने उस शानदार जीत का श्रेय उस एकता और संगठन की शक्ति को दिया, जिसके बल पर पूरी दुनिया से आए योद्धाओं ने, इस जंग को जीतकर एक सुनहरा भविष्य रचने में सहायता की।

मकास की आँखें उस भीड़ में उस चेहरे को खोज रही थीं, जिसे देखने के लिए वो न जाने कब से व्याकुल था। मगर पर्सीना उसे कहीं दिखाई नहीं दी। सैनिकों के बीच में उसे ढेर सारे स्टैगाटॅर तो नजर आ रहे थे लेकिन पर्सीना नहीं दिखी। उसने एक स्टैगाटार को रोककर उससे पूछना चाहा लेकिन फिर कुछ सोचकर ये विचार बदल दिया।

पर्सीना उसे शिविर से कुछ दूर बैलीबोसिया के एक पेड़ के पास दिखी। वो तेजी से उसके पास पहुँचा। दोनों कुछ पलों तक एक–दूसरे को देखते रहे और फिर पास आकर पर्सीना ने झुककर, गीगा–टर्सिया के उस आखिरी चुम्बन को जगा दिया, जिसका मखमली अहसास, उस सफर में हमेशा उसके साथ रहा। आँखें बन्द करके, दोनों एक–दूसरे में खोए रहे, जाने कितनी देर तक। वक्त ने भी जैसे उनकी सहूलियत के हिसाब से, अपने तेज़ रफ़्तार पाँवों को धीमा कर लिया।

आज एक बहुत खुशनुमा सुबह है। गुफा के बाहर वसन्त का मौसम है। मेरे लरजते हाथों में मोम के वो आखिरी चौखटे हैं, जिन पर इस दास्तान के अंतिम पल उकेरे गए हैं। मैं आनन्दित कर देने वाले, एक ख़ालीपन से लबालब भरा हूँ। मेरी थकी हुई नसों और मांसपेशियों को, सुकून ने ऐसे संभाला हुआ है, जैसे किसी माँ ने, ताज़ा जन्मे अपने पहलौठे को पहली बार अपनी हथेलियों में संभाला हो। बरसों से, जिस युग–गाथा को मैं कैल्टिकस की इन गुफाओं में खोदता रहा, वो वापस उस गाँव की तरफ बढ़ रही है, जहाँ से संथाल के बेटों का ये सफ़र शुरू हुआ था। भोले आदिवासियों का वो गाँव, जहाँ के लोग पूरी बेचैनी से उन नौजवानों का इंतज़ार कर रहे थे, जो अपने पिता का कौल पूरा करने निकले।

. . . . .

योद्धा, सेनाएँ और लड़ाके, अपने कबीलों और प्रदेशों की ओर रवाना होने से पहले, सरदार और महासभा के सदस्य, थोरोज की पहाड़ी की तरफ की तरफ रवाना हुए। उस दिन थोरोज़ की पहाड़ी पर बने उस विशाल किले में सब एक साथ थे। बहुत से सवाल सबके मन में थे, जिनका उत्तर जानने के लिए हर कोई बेचैन था। उस बड़े क़क्ष में मौजूद वो लोग, उस हर बात को जानना चाहते थे, जो उनकी अनुपस्थिति में इदिया–इमीन टापू पर घटी और वो लोग, जो टापू पर मौजूद थे, वो उस हर बात को जानना चाहते थे, जो उनकी समझ से परे घटीं। सारे सवालों के जवाब अगर किसी के पास थे तो वो सालन, फैगुअस और थोरोज ही थे। थोरोज़ की आवाज़ उस बड़े कक्ष में गूँज रही थी–

'...उसने किताब के रखवालों की हत्या करके, किताब तो हथिया ली और इस रहस्य से भी वाकिफ़ था कि एल्गा–गोरस की ताकतों को तब तक इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, जब तक उसके आखिरी अध्याय तक को पूरा न कर लिया जाए। इसके लिए बहुत वक्त की ज़रूरत थी और इतने वक्त तक दुनिया की नज़रों और एल्गा–गोरस खोजने में लगे महासभा के सदस्यों की नज़रों से बचना नामुमकिन था। उसने बहुत शानदार चालाकी से काम लिया, उसने चिहानचोचसों के साथ मिलकर वो विशाल कछुआ हासिल किया, जिसकी पीठ पर रहकर वो किताब को पूरी करता रहा। इस बात का पता उसे अंतिम अध्याय पर पहुँचने के बाद चला कि अगर धेखे से किताब को पूरा करने की कोशिश की जाती है तो ये प्रयास करने वाला, अभिशापित हो जाएगा। उसी किताब की वजह से अपनी सारी शक्तियाँ खोने के लिए। वो इस ख़तरनाक रहस्योद्‌घाटन से स्तब्ध और ठगा–सा रह गया। इस शाप से बचने के लिए, उसके पास केवल एक ही रास्ता था, जो उसे नक्षत्रा–विद्या के उसके गुरु लैनीगल ने बताया। लैनीगल जानता था कि आसमान से गिरी उस उल्का में, ऐसा पानी मौजूद है, जो दुनिया के हर शाप को समाप्त करने की शक्ति रखता है। वो खुद बरसों उस पानी की तलाश

में रहा, लेकिन उसे केवल वही हासिल कर सकता था, जो *जिस्मानी* और *रूहानी-कीमिया* से गुजरा हो और *आम-नक्षत्रा-में-पैदा-हुआ-ख़ास-बच्चा* भी हो। सदियों तक धरती पर ऐसा कोई इंसान नहीं था, जो जिस्मानी और रूहानी–कीमिया से गुजरा हो, सिवाय उन तीन महान गुरुओं के, जिनके पास लैनीगल इन तीनों बच्चों को लेकर गया।' वो पल भर के लिए रुके और फिर कहना शुरू किया–

'मगर यहाँ भी एक समस्या थी, वो तीनों महान गुरु जिस्मानी और रूहानी–कीमिया के महान ज्ञाता तो जरूर थे लेकिन 'आम–नक्षत्रा–में–पैदा–हुए –ख़ास–बच्चे' नहीं। इसके लिए उन्हें बरसों तक इंतजार करना पड़ा, तब तक, जब तक ये तीनों पैदा नहीं हो गए। इनके जन्म से ही वो इन पर दृष्टि गड़ाए थे। लैनीगल खुद उस शाप से ग्रस्त था, जिसने उसकी ज़िन्दगी मौत से भी बदतर बना रखी थी। एक बैम्बूस प्रजाति के बच्चे की हत्या करने की वजह से, उसकी माँ ने लैनीगल को शाप दिया कि उसका कद, इंसानी अँगूठे जितना रह जाएगा। इस शाप से छुटकारा पाने के लिए उसने अपनी सारी शक्तियों का इस्तेमाल किया लेकिन बस इतना कर पाया कि एक बरस तक उसका कद एक साधरण इंसान जैसा रहता और दूसरे बरस एक बौने जितना। एक आम इंसान जैसा कद पाने की उसकी हसरत, एक हीन–ग्रन्थि में तब्दील होती गई, जिसके लिए, वो किसी भी हद तक जा सकता था और गया भी। उसे पता चला खूबसूरत औरत के बारे में, जो तिलिस्मी–विद्याओं की अद्भुत जानकार थी। उसने बिना किसी चेतावनी, उसे बन्दी बना लिया और यातनाएँ देकर, अपना कद बढ़ाने के लिए मजबूर किया। वो उसकी दी हुई यातनाएँ सहती रही मगर अपनी तिलिस्मी ताकतों का इस्तेमाल करके, एक माँ का दिया शाप काटने से इंकार कर दिया। लैनीगल ने क्रोधित होकर उसे छोड़ दिया लेकिन एक शाप के साथ, जिसकी वजह से वो खूबसूरत औरत, आधी–बुढ़िया और आधी–जवान होकर रह गई। उससे ये तीनों भाई, अपने सफ़र की शुरूआत में मिल चुके हैं, जिसे ये यैन्गोल्डा के नाम से जानते हैं।'

तीनों भाई हैरत से थोरोज के कहे, एक–एक शब्द को सुन रहे थे। उन्हें याद आया वो दिन, जब बाँसों के झुरमुट में उनकी मुलाकात यैन्गोल्डा से हुई थी। जिसके लम्बे केश, बाँसों में उलझे हुए थे। उन्हें याद आए उसके कहे वो शब्द, जो उसने विदा लेते वक्त कहे थे–'कोई है, जिसने अपने साथियों को धेखा दिया है और अपने दो सौ गुरुओं की हत्या की है, वो तुम्हें भी धेखा देकर अपना मकसद हल करना चाहता है, उससे होशियार रहना। मैं उसकी मौजूदगी महसूस कर रही हूँ।' उस वक्त वो इस बात का मतलब नहीं समझ पाए थे लेकिन अब उन्हें समझ आ रहा था कि उस चेतावनी का क्या महत्त्व था।

'सेण्टीड्राफ़्रस कुलगुरु, रुआन ने भी उस गंध को महसूस कर लिया था, जो इनके आसपास थी। उन्होंने इनसे विदा लेते वक्त सचेत किया, मगर चूँकि इन्हें खुद उस षड्यन्त्रा के बारे में नहीं पता था, इसलिए उस चेतावनी की तरफ़ ख़याल नहीं गया।' थोरोज़ ने वहीं बैठे सरदार गैल्जीडान की तरफ़ प्रशंसनीय दृष्टि से देखा।

तीनों को याद आया, रुआन ने चलते वक्त उनसे कहा था–'एक खास बात और है...अपने दो सौ गुरुओं की हत्या करने वाले गुरुहंता से होशियार रहना, तुम्हारे आसपास की हवा में उसकी दुष्ट मौजूदगी की महक है।' मगर उन्हें तब भी कुछ समझ नहीं आया कि आखिर वो किसके बारे में बात कर रहा है।

'इस रहस्य का असली संकेत महासभा को तब मिला, जब तुम लोग फैगुअस और उन चार भाइयों तक पहुँचे, जिन्हें सारी दुनिया, छेदरहित बाँसुरी बजाने वाले बूढ़े फ़कीरों के रूप में जानती है। जब इन्होंने बताया कि वो उस पानी की तलाश में जा रहे हैं, जिसमें गीलापन नहीं होता तो उनका माथा ठनका और फैगुअस ने इनके साथ चलने का फैसला किया ताकि उस हर संकेत को समझा जा सके, जो उस सफ़र में मिल सकते थे। लेकिन जब गीगा–टर्सिया पहुँचने और स्पिनडल के प्रकाश–स्तम्भ तक साथ जाने के बाद भी, किसी तरह का कोई संकेत नहीं मिला तो वो वापस लौट गया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि दुष्ट जैल्डॉन और शातिर लैनीगल जानते थे कि अगर फैगुअस को उनके वहाँ होने की ख़बर भी लगी तो वो ज़्यादा देर तक छुपकर नहीं रह सकते और उनकी सारी योजना बीच में ही ध्राशायी हो जाएगी लेकिन जैसे ही फैगुअस ने विदा ली, जैल्डॉन ने एक ग़ायब–गिद्ध को इनकी निगरानी पर लगा दिया, जिसका पता इन्हें *संयोगवश* तब चला, जब ऑथरडस्ट के लबादे पर उसकी बीट गिर गई। ऑथर ने भाँप लिया कि ग़ायब–गिद्ध को बिना एल्गा–गोरस की ताक़त, काबू नहीं किया जा सकता। उसने ख़तरे को समझते हुए, खोखले पत्थर से दुनिया भर में संदेश भेजा और महासभा की बैठक बुलाई गई।' थोरोज़ ने महासभा के सदस्यों की तरफ़ देखते हुए कहा।

'उसके बाद की सारी घटनाएँ आपके सामने ही घटीं मगर कुछ ख़ास बातें हैं, जिन्हें बताया जाना बाकी है। गद्दार स्ट्रासोल क्लेवरसीथ को, स्ट्रासोल्स के सम्मानित सरदार जैस्टीफ़्लच को सौंप दिया गया है। उसे उनके नियमों और कानूनों के हिसाब से वही दण्डित करेंगे। क्लेवरसीथ ने महासभा की बैठक के दौरान, सदस्यों को गुमराह करने की

कोशिश की ताकि किसी को ये आभास न हो सके कि ये सब जैल्डॉन का रचा षड्यन्त्र है।'

तीनों भाइयों को याद आया, माथेल्टन की गुफा में जब मकास ने महासभा को बताने की कोशिश की कि—'हम संथाल–पुत्र, जरूस, सलार और मकास, अपने पिता के दिए वचन को पूरा करने के लिए सफर पर निकले हैं। हमारे महान पिता ने किसी से वायदा किया है, वो उसे एक सुराही...' तो क्लेवरसीथ ने ये कहकर उसकी बात बीच में ही काट दी कि–'हमें ये जानने में कोई दिलचस्पी नहीं है कि तुम अपने *किस* वायदे को पूरा करने के लिए, *कहाँ* जा रहे हो?'

'*बैरीसब्लोच कुहाको-सीलन*...रहस्यदर्शियों की उस सभा के अध्यक्ष थे, जिन्होंने उस खास पानी को दुनिया की नजरों से छुपाने के लिए, इंतजाम किए। उन्होंने ही शिला–पुस्तक की रचना की। वो खास किताब सदियों से थोरोज की पहाड़ी पर सुरक्षित थी ताकि उसे किन्हीं गलत हाथों में पड़ने से बचाया जा सके। किताब ने तुम्हें खुद चुना और आखिरकार तुम उस पानी तक पहुँचे, जिस तक केवल 'तुम' ही पहुँच सकते थे।' उन्होंने तीनों भाइयों की तरफ देखते हुए कहा।

'एक और खुशखबरी हमें आप सब तक पहुँचानी है, जिसे किसी खास वजह से नहीं बताया गया था। आपसे मिलने के लिए कुछ खास मेहमान आए हैं। लोफा...उन्हें भीतर लेकर आओ।' थोरोज ने नन्हे राक्षस की तरफ देखते हुए, मुस्कराकर कहा।

हर कोई असमंजस से देख रहा था कि वो किन मेहमानों की बात कर रहे हैं।

लोफा ने कक्ष के बगल वाला दरवाजा खोला और उससे होकर 'जो' भीतर आए, उन्हें देखकर जाने कितने मुँह खुले के खुले रह गए और आँखें हैरत से पैफल गईं।

वो स्कीनिया ब्राज, फैग्यूला फ़्लॉट और रैक्टिकस ड्रॉन थे। उन्हें ज़िन्दा देख हर कोई स्तब्ध और अवाक् था।

'पायथोफैण्ट...भी काठ–घर के पास वाले मैदान में उतर चुका है।' थोरोज़ ने उन सबकी तरफ़ देखते हुए कहा।

किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि ये चमत्कार कैसे हुआ। थोरोज़ ने उनकी जिज्ञासा को ज़्यादा न बढ़ाते हुए अपनी बात पूरी की।

'हाँ, वो सब ज़िन्दा हैं, जिनके बारे में आप में से कुछ को लगता था कि आप उन्हें हमेशा के लिए खो चुके हैं। आपको सूचना दी गई थी कि एक विशाल गर्म उल्का पायथोफैण्ट से टकराई और चारों के जिस्म, हूजा की अंधी दलदलों में समा गए लेकिन ये पूरा सत्य नहीं था। उल्का पायथोफैण्ट से ज़रूर टकराई थी लेकिन वो बस बहुत हल्की–सी टक्कर थी, जिससे सब साफ़ बच गए। दूर–दराज के योद्धाओं और सैंकड़ों कबीलों तक गुप्त रूप से ये सन्देश पहुँचाना, सबसे कठिन काम था कि जैल्डॉन अंतिम युद्ध के लिए सेना इकट्ठी कर रहा है और उसका सामना करने के लिए, मित्रा–सेना, इस पहाड़ी के मैदान में इकट्ठा होगी। हम नहीं चाहते थे कि जैल्डॉन तक ये खबर पहुँचे कि उससे निपटने के लिए, पूरी दुनिया के कबीले एक हो रहे हैं। इसीलिए योजनाबद्ध तरीवेफ से, इन तीनों को गायब किया गया ताकि उसे शवफ भी न हो और हर जगह सही वक्त पर संदेश भी पहुँच जाए।' थोरोज़ ने ऐसे रहस्य से पर्दा हटाया था, जिसने हर किसी को खुशी से भर दिया।

'इसका सबसे बड़ा फ़ायदा ये हुआ, उस हर टुकड़ी और सेना को यहाँ पहुँचने के लिए पर्याप्त वक्त मिल गया, जिसे इस जंग में अपनी भूमिका निभानी थी। जब तक तुम लोग, वो पानी हासिल करने के सफ़र पर थे, तब तक यहाँ फौज का जमावड़ा होने लगा था। जिल्वोकाट लगातार उनके सम्पर्क में रहा, इसके लिए उसे ख़ासी भागदौड़ भी करनी पड़ी' थोरोज़ ने मुस्कराकर कहा।

उन्हें याद आया, कई बार जिल्वोकाट जब किले में वापस लौटा तो उसके जिस्म पर धूल जमी हुई थी। उस वक्त वो उसका कारण नहीं पूछ सके लेकिन अब समझ में आया वो उन्हीं से मिलने जाता रहा।

'...और इस जंग की सबसे ख़ास बात।' फैगुअस ने खड़े होते हुए कहा, **'त्याग, कुर्बानी।'** हर किसी ने चेहरे पर प्रश्न चिपकाकर उसकी तरफ़ देखा।

'हाँ, त्याग...जिसने एल्गा–गोरस को जलने से बचाया और साथ ही उन सबको भी, जिनकी रूहानी ताकतों से इस रहस्यमयी किताब का निर्माण हुआ। वो पल, जब वो अद्भुत आग, एल्गा–गोरस के पास जाने वाली हर चीज़ को जलाकर नष्ट करने वाली थी। उस वक्त इन तीन बहादुर नौजवानों ने, ये जानते हुए भी कि उस आग को छूने भर से इनके जिस्म राख के ढेर में तब्दील हो जाएँगे, उस आग में प्रवेश किया। इसलिए ताकि उन सब ज़िन्दगियों को बचाया जा सके, जो वहाँ मौजूद नहीं थीं लेकिन उन सबके प्राण जाने ही वाले थे। वो उस आग में उतरे ताकि बेगुनाह ज़िन्दगियों की हिफाजत की जा सके, चाहे उनकी अपनी जान ही क्यों न चली जाए। वो आग, उस हर चीज़ को जलाकर राख कर रही थी, जो

उसके पास जा रही थी। यदि एल्गा–गोरस जलती, तो उसके साथ ही वो हर शख्स भी जलकर राख हो जाता, जिसकी ताकतें इसमें समाई हुई थीं। एक जानकारी ऐसी थी, जिससे ये तीन नौजवान भी अनभिज्ञ थे। वो थी, जिस्मानी और रूहानी–कीमिया। उस आग से ये नौजवान केवल इसलिए बच सके क्योंकि ये उन जिस्मानी और रूहानी–कीमिया की दुलर्भ विधियों से गुजरे हैं। उसे छूने के बाद जहाँ एक आम इंसान जलकर राख हो जाता, वहीं इनके भीतर की ताकतें और निखरकर उठ खड़ी हुई मगर इन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि ये उस आग से बच सकते हैं।' फैगुअस की बात सुनकर हर आँख तीनों भाइयों के प्रति इज्जत और कृतज्ञता से भर उठी।

स्ट्रासोल सरदार जैस्टीफ़्लच ने पतले सींकडी से, जंग में किया अपना वो वादा पूरा किया, जिसके लिए उन्होंने कहा था कि इस बहादुरी के लिए तुम्हें उचित ईनाम दिया जाएगा। सरदार ने अपनी इकलौती बेटी, **पैरीब्लास जानामीडस वैलोनेसा कैस्टीफ़्लच** का *पैर*, पतले सींकडी के *पैर* में *उलझाने* का ऐलान किया क्योंकि स्ट्रासोल्स में विवाह का *यही* तरीका था।

हर तरफ खुशी की लहर दौड गई, सबने पास आकर सींकडी को बधइयाँ दीं। वो बार–बार शर्म से दुहरा हुआ जा रहा था, मगर लग रहा था कि काफी खुश है।

सर्वसम्मति से तय किया गया कि 'एल्गा–गोरस' और वो खास पानी, अब थोरोज की पहाडी पर हिफाजत से रखे जाएँगे। पहाडी के इर्द–गिर्द सुरक्षा करने वाली अदश्श्य ताकतें और उस पवित्रा स्थान की शक्तियाँ, उसके लिए खास सुरक्षा–चक्र होंगी। सालन, थोरोज और दुनिया भर से आए सरदारों ने, अपनी खुफिया ताकतों से, किताब के लिए सुरक्षा–कवच तैयार किया और पहाडी दोबारा दुनिया की नज़रों से ओझल कर दी गई।

सरदारों और योद्धाओं को सम्मान के साथ विदा किया गया। उस दिन तीनों भाई थोरोज की पहाडी पर ही रुके। वो रात जश्न की रात थी। कैटाकोटस और जडाकी उस सारी रात चाँदनी में साथ रहे और मकास और पर्सीना भी। ओस में भीगी सुबह, विदा के लिए पलकें भिगोने के लिए भी तैयार थी। पर्सीना को विदा करने से पहले, मकास ने वादा किया, वो वापस गीगा–टर्सिया लौटेगा। वो अपनी पूरी सैनिक टुकड़ी के साथ, वापस रवाना हो गई लेकिन बारहसिंघे जैसी एक जोडी आँखें, अपने भीतर खुशी और इंतजार दोनों समेटकर वापस गईं। हर कोई थोरोज की पहाड़ी के ऊपर बने, उस विशाल मैदान में एकत्रा था, जहाँ विशाल पायथोफ़ैण्ट तीनों भाइयों का इंतज़ार कर रहा था। तय किया गया था कि फैगुअस, तीनों भाइयों को उनके गाँव लेकर जाएगा।

. . . . .

ढीले हत्थे वाला मेरा हथौड़ा, कुन्द धार वाली मेरी छेनी और कई जगह से फट चुकी लोहे की टाँकी, अब एक पत्थर पर रखी हैं। मैं एक चौडी और ठण्डी शिला पर लेटा हूँ। मेरी सपेफद पलकें, एक–दूसरे के ऊपर ऐसे टिकी हैं, जैसे सुकून को कसकर अपने बाजुओं में भींच लेना चाहती हों। वो किताब, जिसे मेरे पुरखों ने इस उम्मीद के साथ सौंपा था कि मैं उसे हिफ़ाज़त से आने वाली नस्लों तक पहुँचाऊँगा, वो कैल्टिकस की इन गुफाओं में भीतर तक पैवस्त हो चुकी है।

मुझे सुकून है कि मैं उस विश्वास को पूरा कर सका, जो पिछली पीढ़ियों ने मुझमें व्यक्त किया। अब गर्म लूओं का कोई तूफ़ान, इस युग–गाथा को पिघला नहीं पाएगा। मेरी पलकें बन्द हैं और कानों में मेरे संगतराश पिता के वो अल्फाज तैर रहे हैं, जब उन्होंने कहा था–'अपनी उँगलियों को इन पत्थरों से कम सख्त मत रहने देना, वरना तुम वो नहीं कर पाओगे, जिसके लिए तुम्हें चुना जाना अभी बाक़ी है।' मगर अभी मेरा काम खत्म नहीं हुआ, अभी ये दास्तान केवल उस मोड़ तक पहुँची है, जब संथाल के तीनों बेटे वापस अपने गाँव के लिए निकले। अभी मेरे पास पुरखों से मिले, लकडी के वो **दो** संदूक हिफ़ाज़त से हैं, जिनमें इस दास्तान के उन हौलनाक पड़ावों का ज़िक्र है, जिन्होंने उस हर ज़िन्दगी को बदल दिया, जो इस युग–गाथा के बेहद ख़ास किरदार हैं। एक लम्बे विश्राम के बाद, मुझे काठ के उन संदूकों के, ज़ंग लगे क़ब्ज़ों को खोलना है, जिनके भीतर मोम के वो सैंकड़ों चौखटे अनछुए रखे हैं, जो इस दास्तान को इसके अंजाम तक ले जाएँगे। फिलहाल मैं उस तरफ़ चलता हूँ, जहाँ इसका एक पडाव, सुकून से अपनी पलकें बन्द कर रहा है।

उस दिन जब तीनों भाई, पायथोफ़ैण्ट की पीठ पर सवार होकर अपने गाँव के लिए उड़े, थोरोज़ की पहाडी पर हर आँख नम थी। नन्हे फॉ, हैबूला, जडाकी, लोफ़ा, स्वाइली, यति, मणिध्र, जल–प्रेत, कैटाकोटस, महासभा के सदस्य–कैफ़ुआन पस्तर, हूनास्पॉटी, फैग्यूला फ़्लॉट, जिल्चोकाट, कास्टन ब्रूड, वुन्टनब्रॉस, स्कीनिया ब्राज, रैक्टिकस ड्रॉन, पतला सींकडी, सालन, थोरोज और पाँचों बूढे फकीर। हर कोई उन खूबसूरत और बहादुर नौजवानों से जुड़ा था, जिन्हें अब उनसे विदा लेनी थी।

पायथोफैण्ट के उड़ते वक्त उन्होंने बस इतना कहा, 'हम फिर मिलेंगे और *ज़रूर* मिलेंगे।'

इस आवाज में जितनी दृढ़ता और इच्छाशक्ति थी, उसने हर दिल पर बहुत नाजुक दस्तक दी। उसके बाद वो आहिस्ता–आहिस्ता आसमान में उठते चले गए। वुफछ देर तक दिखाई देने के बाद, पायथोफ़ैण्ट दिखना भी बन्द हो गया। अब आसमान के नीचे, बस वो विशाल पहाड़ी विदा–मुद्रा में खड़ी थी।

जब वो अपने गाँव के निकट बहने वाली नदी के पास पहुँचे, फ़ैगुअस ने उन्हें बताया–'यैन्गोल्डा, अपने वास्तविक ख़ूबसूरत रूप में आ चुकी है। लैनीगल की सारी शक्तियाँ समाप्त होते ही, उसका दिया शाप भी खुद–ब–खुद ख़त्म हो गया। अब वो वापस 'अपने जंगल' में लौट चुकी है।'

'फिर तो हमारे पिता का शाप भी खुद–ब–खुद समाप्त हो चुका होगा?' सलार ने आशा भरी खुश नज़रों से फ़ैगुअस की तरफ़ देखा।

'हो गया होता...अगर वो केवल लैनीगल का शाप होता। उसने उन्हें उस शाप के साथ बाँधकर *जुड़वाँ-शाप* बना दिया, जिससे वो खुद शापित है। जब तक उसको मिला शाप समाप्त नहीं होगा, तब तक उनका शाप भी नहीं टूटेगा।' फ़ैगुअस ने नीचे जंगल की तरफ़ देखते हुए कहा।

जंगल के ऊपर एक चक्कर लेने के बाद, पायथोफ़ैण्ट गाँव के बीच बने उस खुले स्थान के ऊपर मँडराया, जिसे गाँव के वो भोले आदिवासी, सरदार का सम्बोधन सुनने के लिए इस्तेमाल करते थे।

गाँव के ऊपर मँडराते इस विशाल पक्षीनुमा जीव को देखकर, पूरे गाँव की भीड़ वहाँ इकट्ठा हो गई। एक पल के लिए उन्हें लगा कि वो उन पर हमला करने वाले हैं लेकिन जब ऊपर से मकास ने खुशी में चीखकर उन्हें बताया कि वो लौट आए हैं तो नीचे जैसे उत्सव का माहौल पैदा हो गया। उनके नीचे उतरते–उतरते ही, गाँव में गोह के चमड़े से मढ़े विशाल ढोल, अपनी आवाज बिखेरने लगे।

पायथोफ़ैण्ट ने अपने विशाल पंख फड़फड़ाए और सावधनी से उस खुली जगह में उतर गया। तीनों उसकी पीठ से नीचे आए तो गाँव भर के बच्चों और युवाओं ने उन्हें चारों तरफ़ से घेर लिया। हर कोई उनसे कुशलता और उनके सफ़र की दास्तान पूछना चाहता था लेकिन इतने शोर और भावनात्मक मिलन में किसी को कुछ भी बताया जाना संभव ही नहीं लग रहा था। लोगों का प्रथम–मिलन का उत्साह कुछ कम हुआ तो उन्होंने बूढ़े फ़ैगुअस की तरफ़ देखा, जो अपना लकड़ी का डण्डा हाथ में थामे चुपचाप पायथोपैफण्ट के पास खड़ा था।

तब तक किसी बुजुर्ग ने झोंपड़ी के भीतर जाकर संथाल को ये सूचना दे दी कि 'तीनों' लौट आए हैं। उस शोरगुल को सुनकर वो वैसे भी, लड़खड़ाता हुआ बाहर आ ही रहा था। गाँव के ही दो बलिष्ठ नौजवान उसके कमज़ोर जिस्म को सहारा दे रहे थे। झोंपड़ी के सरकण्डी दरवाज़े के पास आकर उसने अपनी मिचमिचाती आँखें खोलीं, तीनों भाई उसके सामने खड़े थे। तीनों दौड़कर अपने पिता से लिपट गए।

उस ख़ाली जगह पर बने मुल्तानी मिट्टी के चबूतरे पर संथाल को सहारा देकर बैठाया गया। सारा गाँव वहाँ एक हुजूम की शक्ल में इकट्ठा हो गया था। मकास ने अपनी झोली से, काँच की वो छोटी डिबिया निकाली, जिसमें लैनीगल के नन्हे जिस्म को रखा गया था। वो बेहद थका और पराजित–सा उसकी तली में बैठा था।

'हमने आपका **कौल** पूरा किया...' मकास ने मुस्कराते हुए, अपने पिता की तरफ़ देखा।

ऐसा लगा जैसे इस एक वाक्य से, बूढ़े संथाल के वट–वक्ष जैसे जिस्म में नई कोंपलें फूट आई हों। जरूस ने अपनी झोली से वो सुराही निकाली, जिसमें वो पानी था, जिसमें गीलापन नहीं था। तीनों ने आगे बढ़कर, सुराही संथाल के काँपते हाथों में सौंपी।

संक्षेप में उसे बताया कि ये सब कुछ; बरसों पुराने षड़यन्त्रा का हिस्सा था और इसका असली सूत्राधार लैनीगल और जैल्डॉन थे। संथाल को लैनीगल की धूर्तता का पता था लेकिन जैल्डॉन के बारे में जानकर उसकी पुतलियाँ हैरत से पैफल गईं। मकास ने काँच की वो डिबिया खोली और नन्हे लैनीगल को बाहर निकाला। उसका इतना छोटा क़द देखकर, हर गाँववाला, हैरत के समन्दर में डुबकियाँ खा रहा था। मकास ने उसे अपनी हथेली पर उठाया और संथाल ने सुराही उसकी तरफ़ बढ़ाई।

'इसकी ज़्यादातर दुष्ट शक्तियाँ अब नष्ट हो चुकी हैं, ये अब उस शाप से मुक्ति का हक़दार है, जिसके लिए इसे सदियों भटकना पड़ा।' फ़ैगुअस के बूढ़े होंठ आहिस्ता से हिले।

संथाल ने सुराही के पानी में अपनी उँगली डुबाकर, एक बूँद पानी लैनीगल के खुले मुँह में डाला, जिसे उसने ऐसे पिया जैसे एक बड़ा घूँट भर रहा हो। संथाल ने महसूस किया और हर किसी ने देखा, आश्चर्यजनक रूप से, उसकी

उँगली का पोरवा गीला नहीं हुआ था। पानी गले से नीचे उतरते ही, लैनीगल के नन्हे जिस्म में हैरतअंगेज परिवर्तन होने लगे। उसका आकार हर पल बढ़ता जा रहा था। पहले वो किसी बौने जितने कद का हुआ और फिर बढ़ते–बढ़ते मकास के कन्धे जितनी उँफचाई तक हो गया।

अब वो एक सामान्य कद में आ चुका था। उसके पूरे चेहरे और लबादे से बाहर झाँकते जिस्म पर हल्की–हल्की झुलसन के निशान थे, जो उस रात की दास्तान कह रहे थे, जब वक़्त ने अपना फैसला सुनाया। उसकी आँखों में आँसू और चेहरे पर पश्चात्ताप के भाव थे। उसका शाप समाप्त होते ही संथाल के लक़वाग्रस्त काँपते जिस्म में स्वस्थ हरकत होने लगी। कुछ ही पलों में वो उसी बलिष्ठ और ताक़तवर रूप में आ चुका था, जिसमें गाँववालों ने हमेशा उसे देखा था।

लैनीगल ने संथाल के कन्धे पर अपना वँफपवँफपाता हाथ रखा और बिना कुछ कहे जंगल की तरफ मुड़ गया।

संथाल कुछ कहना चाहता था लेकिन मकास ने उसे रोक दिया–'उसे जाने दीजिए...शायद अब वो अपने दुष्कर्मों से पीछा छुड़ाकर, एक सही जिन्दगी की तलाश कर सके।'

लैनीगल आगे बढ़ता गया और पेड़ों के बीच गायब हो गया। जाने से पहले उसने एक बार पीछे मुड़कर देखा, उसके होठों पर एक *शातिर* मुस्कराहट तैर रही थी और आँखों में एक *दुष्ट* चमक।

गाँव वाले, अब वापिस अपनी झोंपड़ियों की तरफ बढ़ गए। एक बूढ़ा अपने पोते के कन्धे का सहारा लेकर, गाँव के किनारे बनी, पूफस की झोंपड़ी की तरफ जा रहा था।

उसके झुर्रीदार होठ, बच्चे को बता रहे थे–'**जिम्मेदारी कभी किसी को 'सौंपने' से पूरी नहीं होती, वो हमेशा किसी के 'स्वीकारने' से अंजाम तक पहुँचती है।**'

शब्दावली

अहोआरा वृक्षों की एक प्रजाति

अरेमिकस एक प्राचीन भाषा

असनोच विशालकाय और चौडी देह वाली एक दानव–प्रजाति, जिसके ऊपर से दो हाथी एक साथ गुजर जाएँ

अटेरियन एक रेगिस्तानी कबीला

अंशदेव सुदूर पूर्व के पूजास्थलों में रहने वाले दिव्य मनुष्य, जिन पर हमला करने वाले के मन में सघन वैराग्य जन्म ले लेता और वो जंग त्यागकर जंगलों में निकल जाता

ऑथरडस्ट एक खानदानी किस्सागो बौना

आइसनेरिया एक बर्फीला, उजाड इलाका

आइनोकैरस बिना आँखों वाले प्राणियों का एक झुण्ड, जो केवल तब दिखाई देते, जब वो दौड़ रहे होते, जिनसे लड़ने वाला 'हारने' के लिए अभिशापित होता

इकोइ–चामन फॉं बौनों की एक दुर्लभ, प्राचीन भाषा

इलोपीयर अपने जिस्म से दस गुना बडे कान वाला, इंसानी आँख से न दिखाई देने वाला एक बेहद छोटा प्राणी

इलोसान हमेशा दिये की तरह झिलमिलाने वाला और बहुत उलझी हुई भाषा प्रयोग करने वाला एक सितारा

इदिया–इमीन समन्दर का एक टापू

इल्वीन एक पठार

ईलस्ट लताओं की एक प्रजाति

उकोरास एक काली झील, जिसमें जल–पिशाच रहते हैं

उल्लूखदेड़ा दुनिया के सबसे धूर्त प्राणियों में से एक, जिसके आसपास के इलावेफ में आने वाले हर प्राणी के नाखून गायब हो जाते

उल्टे पेड़ आसमान की तरफ जड़ वाले वृक्षों की एक प्रजाति

उजड़े–प्रेत एक प्रेत, जिसका थूक यदि किसी के ऊपर गिर जाए तो उस इंसान की देह जीते–जागते खण्डहर में तब्दील हो जाती

एम्बरलीफ़ तलवों को झुलसा देने वाली, एक प्रकार की घास

एरोमाब्रीस पूफलों की एक प्रजाति, जिसकी खुशबू काठ में प्रवेश कर जाती है।

एरोमाहैल दुनिया का सबसे दुर्गन्ध्युक्त पौध

एगस्टोन खाया जा सकने वाला, दुनिया का सबसे मुलायम पत्थर

एल्गा–गोरस मुर्दा हाथी के कान पर, शुतुरमुर्ग के नाखूनों से लिखी गई, दुनिया की हर प्राणी–प्रजाति को काबू करने की ताकत रखने वाली एक किताब

एल्फैण्टॉर	एक रहस्यमय प्राणी, जो आधा हाथी और आधा मनुष्य है, जिसकी उम्र लगभग दस हजार साल होती। किंवदंतियाँ और दंतकथाएँ कहती हैं कि एक वक्त में, जमीन पर केवल एक एल्फैण्टॉर होता है, जो 'लगभग–अमर' होता है
एटनोर	एक नष्ट हो चुकी सभ्यता, जहाँ लाखों चमगादड़ लटके रहते हैं
ओ	'छलावा–शास्त्रा के गुप्त रहस्य' पुस्तक का रचयिता
कचुआकैचस	अदृश्य वृक्षों की एक प्रजाति, जिनका आकार इतना विशाल और ऊँचाई इतनी ज्यादा होती कि मकड़ी भी चढ़ते–चढ़ते हाँफ जाए
कैगीनस	एक फल, जिसे दुनिया की सबसे लम्बी नदी के तट पर रहने वाली माताएँ, अपने बच्चों को इसलिए खिलाती है, ताकि उनकी जबान में मिठास आ सके।
कैलोकच	जूँओं के बालों में रहने वाली एक सूक्ष्म जूँ
कैल्टियन	भैंसों की एक प्रजाति
कैल्टिकस	वो गुफाएँ, जिनकी दीवारों पर एल्गा–गोरस की दास्तान संगतराश द्वारा छेनी–हथौड़ी से उकेरी गई
कैमल्योपैफण्ट	ऊँट और हाथी की एक मिश्रित प्राणी–प्रजाति, जिसके पेट में तीव्र गर्मी होती है
कैमीव्रूफड	पश्चिम में दूधिया रोशनी वाला एक सितारा
कैण्डीनल	एक खबरी
कैरीबरगस	एक जंगल–रूह
कास्टन ब्रूड	टिड्डों से लेकर पक्षियों तक, हर उड़ने और रेंगने वाले प्राणी को सम्मोहित करने की ताकत रखने वाला, टैक्सिन कबीले का एक खानाबदोश।
कीलीस	हिरन की टाँगों और ऊदबिलाव जैसी पूँछ वाली, एक तरह की पहाड़ी छिपकली
कैटाकोटस–मैगनडोला	चाँदनी रातों में निकलने वाला एक छलावा, एक अस्तित्व–जो–है–भी–और–नहीं–भी
क्लामाऊथ	छह पैर वाला एक प्राणी, जिसके पंजों में छह मुँह होते हैं, जिसके जिस्म पर न तो कोई हथियार जख्म बना सकता और न ही उसे कोई हरा सकता, सिवाय उसके, जो दुनिया में 'अपनी तरह का अकेला' हो
क्लारूट	भाले की तरह आँखों पर वार करने वाले एक वृक्ष की जड़ें
क्लेवरसीथ	एक पतला और बूढ़ा स्ट्रासोल, जो ज़मीन पर हथेलियाँ रखकर बता सकता था कि कोई इंसान, किस वक़्त, जमीन के किस कोने पर खड़ा है
क्लोचान	प्राचीन लोक–साहित्य में वर्णित एक बहादुर योद्धा, जिसने अकेले ही पाँच सौ सैनिकों की टुकड़ी को ख़त्म कर दिया
क्लूजीनी, हिन्टनटिप, स्पीकोस	दक्षिण की तरफ तीन सितारों का एक समूह
क्वीलिन	मेंढकों की एक प्रजाति
क्यूटिन	जीभ की नोक से लिखी जाने वाली एक प्राचीन लिपि
कॉफीनस स्पिनडल	एड़ी तक लम्बे बाजू और जैल्कोवा की लकड़ी से बना मुगदर रखने वाला एक बहादुर योद्धा। प्रकाश–स्तम्भ का रक्षक
किप्टन	लताओं की एक प्रजाति
कस्टहोल	कनखजूरे की एक प्रजाति
केश–वृक्ष	केवल हड्डियाँ खाने वाले, एक प्रकार के पेड़, जिनकी शाखों की जगह, लटकते हुए लम्बे केश होते हैं
कैफुआन पस्तर	उजाले की ताकतों का इस्तेमाल करके, किसी भी आत्मा के भीतर छिपी अँधेरे की चादर को चीथड़ों में बदल सकने वाला, एक योद्धा, रोशनी जिसकी उँगलियों की गाँठों में कैद थी
कैरसटैस	दुनिया का सबसे लचीला साँप

कैलोबा	बैम्बूस कबीले का सरदार
कारासीचा	एक डिग्गीडस्ट बौना
कीलन	रेत–विद्या और दुष्ट ताकतों का एक ज्ञाता
कैलूगस	लोक–साहित्य में वर्णित, दुनिया की सबसे बदसूरत रूह
कोहानकोहस	कैबूनिन के जंगलों के खतरनाक लड़ाके, जिनकी शक्तिशाली मांसपेशियाँ पत्थर से भी ज्यादा सख्त और जिस्म चट्टानों की तरह थे
गायब–गिद्ध	अपनी ही प्रजाति का भक्षण करने वाले अदृश्य दिव्य गिद्ध, जिन्हें केवल वो देख सकता, जिसके ऊपर उनकी बीट गिर जाए
गैचावूफ	अदृश्य कबूतरों की एक प्रजाति
गैडीग्लास्ट	एक प्राचीन लिपि
गैल्जीडान	सैण्टीड्राफ़स का सरदार
गम्पूग्रास	गम्पूग्रास वल्सटान नीमोकीड फैलीटस नाम का, एक गालीबाज़ स्ट्रासोल
गरगॉल	एक प्रफोगाप्रफोस
गैलूचिन	एक तरह के प्राचीन मन्त्रा
गैलूमा	पाँच पैर वाला एक पौराणिक प्राणी, जिसके सींग में एक विशाल कनखजूरा रहता है
गैनास्पॉटी	हूनास्पॉटी के पिता
गैरोगनग्लीपफ	दुनिया की सबसे कठिन लिपि, जिसमें केवल बारह चित्रा होते हैं
गीगा–टर्सिया	स्टैगाटॉर्स की बस्ती
गिल्वीमिलोचा	प्रफोगाप्रफोसों का एक देवता
ग्लैडीलस हूफ	गीगा–टर्सिया का बूढ़ा शासक
ग्लाफ़ोरीस	कैमीन के पठारों की खोई हुई लिपि
गोचो	नन्हे राक्षसों की एक प्रजाति
गोरखमुण्डी	काँटेदार घास की एक प्रजाति
ग्रीलिन	मुलायम घास की एक प्रजाति
ग्रीसम	वृक्षों की एक प्रजाति
गल्टन	चिड़ियों की एक प्रजाति
चबलागलच	चल्कागाओं का सरदार
चगूचाथा	एक दिव्य कीड़ा, जिसके जिस्म के बालों में ख़तरनाक ज़हर होता है
चलती–पगडण्डी	अपने स्थान से आगे की तरफ सरकने वाली, रहस्यमयी पगडण्डी
चल्कागा	खल्काच के बीहड़ों का एक कबीला, जिनके कन्धे पर हर वक़्त एक काला कौवा बैठा रहता, जब कोई चल्कागा जंग में उतरता तो उसका कौवा, उसके सिर के ठीक ऊपर, आसमान में मँडराता रहता, जिसके ऊपर चल्कागा के कौवे की बीट गिर जाती, उसके जिस्म की हड्डियाँ, उसी के सीने में गठरी बन जातीं
चैनो	एक भेदिया– बिल्चू
चैज़	फॉ प्रजाति बौनों के राजकुमार डल का दिवंगत पिता
चेचकोप्लाग	छूने से पैफलने वाली एक ख़तरनाक महामारी
चीचमपोस	दुर्लभ महामारी चेचकोप्लाग का उपचार करने वाला फल
चिहानचोचस	विशाल कछुओं की पीठ पर सवार रहने वाला, खोजार के वर्षा–वनों का एक ख़ूंख़्वार कबीला, वो जिसका मांस खाते उसकी आत्मा उनकी गुलाम हो जाती

चिल्टाचिलोंग	किसी को भी अपनी साँस से बर्फ की शिला के रूप में जमा सकने वाला, एक मांसाहारी हिम–पशु
छुप्पाछाया	केवल इंसानी परछाइयाँ खाने वाली, एक चलती–फिरती छाया, जो न इन्सान है न जानवर, न मानव है और न ही अर्द्धमानव, न वो पक्षी है, न पेट के बल रेंगने वाली और न ही कोई प्रेतात्मा
जरनास	एक उजड़ा–प्रेत
जडाकी	एक मादा जलप्रेत
जरूस	संथाल का बड़ा पुत्र
जल–गरुड़	पानी के नीचे भी उड़ने की क्षमता रखने वाली एक पक्षी–प्रजाति
जल–पिशाच	पिशाच, जिनकी लम्बी जीभ, झील की तली पर तैरने वाले जल–पिस्सू तक को चाट सकती थी
जल–प्रेत	पानी में रहने वाले, एक तरह के प्रेत
जम्हाई–लेने–वाली–पहाड़ियाँ	पहाड़ियाँ, जो रात को जम्हाई लेती
जैनजी–जैनजी–जैनजिक–जैन	आठ अंक की रहस्यमयी शक्तियों के बारे में एक किताब
जैल्कोवा	वृक्षों की एक प्रजाति
जैल्डॉन	एक दुष्ट शिष्य, जिसने अपने दो सौ गुरुओं की हत्या की और एल्गा–गोरस को चुराया
जैल्कीप्रफॉस	स्पिनडल के दादा
जैण्टर	उड़ने वाले विशालकाय कछुओं की एक प्रजाति
जैरीगन	एक प्रकार की झाड़ियाँ, जिनके पत्ते हथेली से भी ज्यादा मोटे और मांस के टुकड़े के आकार के होते और स्वाद बिल्कुल ताज़े मांस की तरह होता है
जैस्टीफ्रलच	स्ट्रासोल्स का सरदार
जिल्चोकाट	जंगली जीवों से लेकर चींटियों तक को अपने हुक्म से नियंत्रित करने की ताकत रखने वाला, एक बहादुर वृक्षमानव
जीमीज़	एक भेड़िया– बिल्चू
जुमासिनस	सीलनार कबीले का एक ओझा
जुड़वाँ–शाप	एक शापित स्थिति, जिसमें दो शाप मिश्रित होकर एक हो जाते हैं
जिस्मानी–कीमिया	दैहिक–कीमिया की एक विद्दि
टैनीटम	एक शिला–मानव
टीथॉय	अपने शिकार के केवल दाँत खा जाने वाला, एक कीड़ा
टैलासॉल्ट	प्राचीन लोक–साहित्य में वर्णित, एक साथ चौदह चट्टानों को काट सकने वाली तलवार
टैंगीसक मॉरटल	उछलने वाले जीवों की एक प्रजाति, जो एक लचीली, लिजलिजी जीभ जैसे दिखते
ट्रीमोनी स्किनटस	एक तरह का वृक्ष, जिसकी तिरछी जड़ें मीटोटीथ चींटियों को पास नहीं आने देतीं
डल	फॉ बौनों का राजकुमार
डैलोस	माहूज़ों का सम्राट
डैरकोस	एक कबीला, जिसके बारे में कहा जाता है कि वो क्रोध में ही जन्म लेते हैं और क्रोध में ही मरते हैं।
डैल्टिन	एक जंगली मैदान
डिग्गीडस्ट	खुदाई करने और सुरंगें बनाने में माहिर बौनों की एक प्रजाति
डोथ्रोन	काँटेदार वृक्षों की एक प्रजाति

ड्रीमीड्रग	एक स्वप्नद्रष्टा
ड्रीमोस	एक स्वप्नद्रष्टा
ड्रोसेफिला	मक्खियों की एक प्रजाति
डस्टीपीड	सैण्टीड्राफ्रस का एक प्राचीन योद्धा
तकलामकानास	एक दहकता हुआ रेगिस्तान
थैजोथार	हूनास्पॉटी का एक पुराना दुश्मन
थैलोना–थैरस	सौ–परत–वाले–जलपोत को चलाने वाली, एक नाविक की बदसूरत रूह
थार्नेल बाजों की एक प्रजाति	
दृश्टि–बन्धित–पहाड़ी	एक अदृश्य पहाडी
नागकेसर	एक प्रकार का पौध
नैलबोन	एक उल्लूखदेड़ा
नरसल नॉट	बैम्बूस प्रजाति का एक योद्धा
नार्सिसा	एक प्रकार का फूल
नैण्टाकॉनर्स	चीता, चिम्पैंजी और चमगादड की मिश्रित प्रजाति का एक जीव, जिसकी पूँछ से बिच्छू जैसे डंक बरसते
नैटकॉर्ड	एक प्रकार की बेल
नरसिंह	आधे शेर और आधे इंसान की एक मिश्रित प्रजाति
पल्वास	एक रेगिस्तानी कबीला
पैरीक्लॉट	दुनिया का सबसे स्वादिष्ट पूफल
पैरीब्लास	पैरीब्लास जानामीडस वैलोनेसा कैस्टीफ्लच नामक मादा स्ट्रासोल
पर्सीना पार्सो हूफ	गीगा–टर्सिया की राजकुमारी
पैसीक्लस्ट	पूर्व का एक सितारा
पियोनी	बौनों का सरदार
पोजन	मकड़ी की एक प्रजाति
पोसायफन	चूहे को पूँछ से पकड़कर, आसमान में उछाल देने वाला, प्राचीन लोक–साहित्य में वर्णित, एक बहादुर सेण्टीड्राफ–योद्धा
पायथोफैण्ट	चिड़िया, हाथी, अजगर और चील की मिश्रित प्रजाति का विशाल जीव
फैगुअस	पाँचों बूढ़े फकीरों में, बोलने वाला एकमात्रा फकीर
फैग्यूला फ्लॉट	उँफट को भी रेत की रस्सियों का प्रयोग करके बैठा देने की ताकत रखने वाला, तकलामकानास के रेगिस्तान का एक बन्जारा
फैलामूडस	प्राचीन लोक–साहित्य मे वर्णित एक योद्धा, जिसने अपनी कुल्हाड़ी से बत्तीस दानवों का संहार किया
फरियाना	जलपरियों की रानी
फैरोसिया	बैलीमारास की पुत्री
फारसीलिया	कैजो कबीले की अग्नि–देवी
फारसीथिया	एक प्रकार की झाडी
फ्रयूडन–ट्री	एक जीव, जिसकी देह पर हज़ारों आँखें होती हैं
फ्लेगर	एक प्रफोगाप्रफोस
फ्लेमास	एक पीला सितारा, जो हमेशा एक लपट की तरह चमकता

फ्लडीसोल्स जलविद्या का ज्ञाता, आत्माओं का समूह

प्रैफगोडाइष दुनिया का सबसे खुशबूदार फूल

प्रफोगाप्रफोस मेंढक, गिद्ध और मानव की एक मिश्रित प्रजाति,निद्राशास्त्रा के ज्ञाता और दुष्ट ताकतों के हिमायती

बर्फीले–सर्पमानव आधे सर्प और आधे मानवों की, कल्सूस की घाटियों के साँपों की एक प्रजाति, जिनके काटने के बाद खून बर्फ की तरह जम जाता

बैडल एक कीड़ा

बैरीसब्लोच

कुहाको–सीलन रहस्यदर्शियों और स्वप्नद्रष्टाओं की सभा के मुखिया

बजाईबैगा गरतामाथ की पहाडियों से आए दानवों की दुर्लभ प्रजाति, जिनकी नसों का खून, हर वक्त कढाह में उबलते काढ़े की तरह खौलता रहता और जिस्म से पसीने की जगह भाप निकलती रहती।

बल्चनबाक एक रेगिस्तानी कबीला

बल्टान धरती का सबसे बडा मैदान

बन्टीबोलन हर चीज के भीतर की नमी सोखने की ताकत रखने वाली एक रेगिस्तानी रूह, जिसे पागलपन के समय–चक्र मे बाँध दिया गया।

बरगलबीट केवल चट्टानें और हड्डियाँ खाने वाले रंगीन कीडे

बसलाबार्क भेड़िया, मगरमच्छ और चमगादड की एक मिश्रित प्रजाति के, उड़ने वाले वो बेरहम प्राणी, जो काजल–से अँधेरे में भी दिन के उजाले की तरह साफ देख सकते

बैक्टिन मधुमक्खी की एक प्रजाति

बीरीसीरी एक खजूर, जिसे खाने वाले को बरसों तक भूख नहीं लगती

बैलाडबोल्ग लोगों के कपडे चुराकर पहनने वाली एक चिड़िया

बैलाहूस बल्चार कबीले के बोहिया–हकूकों का सरदार

बैल्डूहा गेंहूँ के दानों की तरह मोटे रेत और नीले रंग वाला रेगिस्तान

बैलीबोसिया वृक्षों की एक प्रजाति

बैलीमारास रेगिस्तान में बनी पवनचक्की का रक्षक–योद्धा

बैलोबामैचस चिड़िया की एक प्रजाति, जिसके नाखून पिघलाकर, स्ट्रासोल्स के रहने के लिए पासे बनाने में प्रयोग किए जाते

बर्टीब्रास खाने लायक मीठी जडों वाले वृक्षों की एक प्रजाति

बिल्चू एक जन्मजात भेदिया, सतह के हिसाब से रंग बदलने में माहिर, जो आईनों को इतना पसन्द करते कि अपने प्राणों की कीमत पर भी वो उसे पाना चाहते

बोहिया–हवूफक गैंडे, घोड़े और इंसान की मिली–जुली नस्ल वाली, दुनिया के सबसे प्राचीन अर्द्ध–मानवों की एक रहस्यमयी प्राणी–प्रजाति, जिनका खुर जहाँ टूटकर गिर जाता, वहाँ अकाल पड़ने लगता

बूगाबगोस प्राचीन स्वर्ण–फल, जिसे हाथ में लेने मात्रा से, हथेली सुनहरी हो जाती। जिस्मानी–कीमिया की विधियों पर काम करने वाले प्राचीन गुरु, अपने शिष्यों को जिसे चुपके से खिलाते

बोरियाबिस सूँसलीखेड़ा योद्धाओं का सरदार

ब्रोसेनिया अमरता देने वाला अमृत

बूजाचल शिला–मानवों का सरदार

माहूज़ एक क्रूर कबीला, जिसमे बैल्जोनिया पर आक्रमण किया

मकाना मकाना–कैसाकार–सटीनामैकोजी–नोसरहैलीबैहूता–नैजसमीगन नामक, जलपरियों की राजकुमारी

मकास संथाल का सबसे छोटा पुत्रा

मकड़ा–मानव मानवों और मकड़ों की एक मिश्रित प्रजाति

मायाना	एक तरह के प्राचीन मन्त्रा
मणिध्र साँप	अपने फन पर मणि धरण करने वाला, एक दुर्लभ सर्प
मीटोटीथ	करोड़ों के झुण्ड में रहने वाली, मांसभक्षी चींटियों की एक प्रजाति
मैडीसोर	दुनिया के सबसे श्रेष्ठ चिकित्सक
मैगाबोलियन	एक कबीला
मैगनीगैलिया–एपलीकॉट	एक प्रकार का फल
मैटास	एक असनोच
मैगूमोला	हमेशा सूत कातने वाला, स्ट्रासोल्स की बस्ती का एक देवता
मर्मिश	जलपरियों की एक प्राचीन भाषा
मैसानस	एक बहादुर युवक, जिसे माहूजों की पराजय के बाद हूनास्पॉटी ने सिंहासन पर बैठाया
मैसोडा–मोडस	हाथी को भी अपने पंजों में दबाकर उड़ सकने वाला, विशाल पक्षी
मॉलबैक	मेंढकों की एक प्रजाति
मरमोसिया	बैलीमारास की पुत्री
मत्स्य–नाग	जमीन के नीचे सरकने वाला, मछली और सर्प की मिश्रित प्रजाति का एक जीव
याहून	मकड़ी, बिच्छू और मानवों की एक मिश्रित प्रजाति
यार्नायार्न	भेड़ों की एक प्रजाति
यैन्गोल्डा	तिलिस्मी ताकतों वाली एक महिला, जिसे एक शाप ने आधी जवान और आधी बुढ़िया बना दिया।
यूथोलीच	एक सितारा
रैक्टिकस ड्रॉन	शापों और वरदानों को अपने मन्त्रों से शुभ या अशुभ में बदल सकने वाला, बैम्बूस कबीले का एक लम्बा और पतला जंगबाज़
रैंडल	चूहों की एक प्रजाति
रीनीस	'हाथी की केंचुली' पुस्तक का रचयिता
रैटाटॉस्कर	हर जख़्म को ठीक करने की ताक़त रखने वाली, एक घास
रुआन	सेण्टीड्राफ़स कुलगुरु
रूहानी–कीमिया	आत्मिक–कीमिया की एक विधि
लटकता कमरा	हवा में लटकने वाला एक कमरा
लैनॉर	पश्चिम का एक सितारा
लैसनार	डैरोसा के जंगलों का एक क़बीला
लैनीगल	नक्षत्रा–विद्या का ज्ञाता और जैल्डॉन का गुरु
लैण्टाना	एक प्रकार की लता
लैवोलीसिया	पूफलों की एक प्रजाति जो केवल उन प्रेमियों को दिखाई देती, जिनका प्रेम सच्चा होता
लैरोका	लैसनारों का सरदार
लैट्यूस	एक प्रकार का पौध
लोबामोस	सबसे शातिर भेदिया–बिल्चू
लोफ़ा	कविताएँ लिखने वाला एक नन्हा गोचो राक्षस
वेडोक	एक उल्लूखदेड़ा
वैल्किन	गिद्धों की एक प्रजाति

वॉयवॉर्न	अपने ही जीवित साथी के पेट में रहने वाला एक प्राणी, जिसके जिस्म में चमकीला तरल भरा होता
वल्टी	एक प्रफोगाप्रफोस
वुन्टन ब्रॉस	एक लकड़हारा, जो अपने क्यूटिन लिपि मन्त्रों से, मिश्रित प्रजाति के हर जीव को काबू करने की ताकत रखता था
वरमोस	कैसी–बुगनान के मैदानों से, मिश्रित प्रजाति के प्राणी, जिनकी कमर से नीचे का हिस्सा एक लिजलिजे गिडार जैसा और ऊपर का जिस्म इंसानों जैसा होता
शिला–शाप	किसी के भीतरी अंगों को पत्थर में तब्दील कर देने वाला शाप
शिला–मानव	चट्टानों से बने जिस्म वाला एक कबीला
शाश्वत–जल	पानी, जो अमरत्व प्रदान कर सकता है
सेण्टीड्राफ	अंगूठे के आकार का एक नन्हा प्राणी, जिसका कमर से नीचे का हिस्सा कनखजूरे का और ऊपर का जिस्म इंसानी होता, जो बोलते वक्त अपने लिए 'हम' या 'मैं' का इस्तेमाल नहीं करते, बल्कि 'मैं' की जगह 'तुम' कहते, जिनकी बस्ती में केवल सरदार और कुलगुरु को ये हक होता कि वो अपने लिए 'मैं' या 'हम' शब्द का इस्तेमाल कर सकें।
सौ–परत–वाला–जलपोत	सौ परत में लपेटा जा सकने वाला, एक विशाल जलपोत
सैगन	पल्वास कबीले के सरदार का बेटा
सैफाल	क्यूटिन लिपि में लिखी पुस्तकों और मन्त्रों का ज्ञाता, एक लुहार
सालन	सदियों से जिन्दा, दुनिया–का–सबसे–बुजुर्ग–शिशु
सलार	संथाल का मंझला पुत्रा
समय–संकुचन–सीढ़ी	समय और स्थान को सिकोड़ देने वाली सीढ़ियाँ
सैण्डोज	नीले पूफलों की एक प्रजाति
सैण्टनग्रॉस	वुण्टन ब्रॉस का पिता
संथाल	तीनों नौजवानों का पिता, आदिवासियों के गाँव का सरदार
सर्पगन्ध	एक प्रकार का पौध
सत्यानाशी	एक प्रकार का पौध
सीकोस कैसन	एक बूढ़ा रहस्यदर्शी
सीलनार	एक रेगिस्तानी कबीला
सैल्गासीड	आईने पसन्द करने वाला, बिल्चुओं का सरदार
सैल्टीना	पानी पर तैरने वाले कीटों की एक प्रजाति
सैंक्टीलैग	प्राचीन लोक–साहित्य में वर्णित, सैण्टीड्राफ्स का एक योद्धा, जिसने टिड्डियों के हमले के वक्त, चौंसठ टिड्डों की गर्दन, अपने धरदार भाले से चीर दी
सिरमेटा	मुलायम तने वाले वृक्षों की एक प्रजाति
सूँसलीखेड़ा	किसी के भी जिस्म से सारा अँधेरा सोखकर, उसे मौत के घाट उतार सकने की ताकत रखने वाले, कैलीमसान की काली गुफाओं में रहने वाले रहस्यमय योद्धा
स्कीनिया ब्राज	अपनी देह के बालों से छूकर किसी भी प्राणी को खड़िया के बुत में तब्दील कर सकने की ताकत रखने वाला, खोखले पहाड़ों से आया एक खाल–मानव
स्लॉपी	एक टाँग वाले झींगुर की एक प्रजाति
स्मथनैक	दुनिया का सबसे चिकना साँप
स्कार्पीडथ	किसी मकड़ी या बिच्छू के जिस्म को पिघला सकने वाला, एक पौध

स्वप्न–पुष्प एक पफूल, रात को सोने से पहले अगर इसे तकिए के नीचे रखा जाए, तो सोने वाले को बहुत खूबसूरत, आनन्ददायक और हैरतअंगेज सपने दिखाई देते। साथ ही वो सब सपने भी पूरे होते दिखते, जो उसने जागती आँखो से अपने लिए देखे हों

स्टैगाटॉर्स इंसानों और बारहसिंघे की एक मिश्रित प्रजाति

स्टारोग्लैक्स एक नवजात सितारा

स्टॉडी एक नरसिंह

स्टोनबैक कछुओं की एक प्रजाति

स्ट्रासोल तिनके जैसे पतले प्राणियों की एक प्रजाति, जो छोटी–छोटी बातों पर अजीब–अजीब गालियाँ देते और बाचचीत में अजीब कहावतों का इस्तेमाल करते

स्वर्णात्मा अंशदेवों का युवा सरदार

स्वाईली दुर्लभ लिपियों और भाषाओं की ज्ञाता, एक नन्ही मादा राक्षसी

हारा–हरास प्राचीन लोक–साहित्य मे वर्णित एक योद्धा, जिसने अपनी बुद्धि से पेड़ों की टहनियों को धनुष में तब्दील करके मुर्दाखोरों की छावनी को तबाह कर दिया था

हायनाटॉर्स आधे लकड़बग्घे और आधे इंसानों की एक प्रजाति

हैबूला–हूचस किताबें पढ़ने का शौकीन, एक दानव

हैरीट सिर के बालों को खा जाने वाला, एक रेगिस्तानी जीव

हैरीसिया एक रहस्यदर्शी स्त्री

हिप्नोसा पाँचों बूढ़े फ़कीरों का पिता

होलोगा–होला बजाईबैगा दानवों का सरदार

होरीन एक प्रकार की लता, जो शहद जैसे द्रव से भरी होती है

हूनास्पॉटी दुश्मन की कलाई पकड़कर, उनकी नसों में अलाव की लपटें पैदा करने की ताकत रखने वाला, कैजो कबीले का एक योद्धा